बयानुल क़ुरान

हिस्सा चहारम (चार)
तर्जुमा व मुख़्तसर तफ़सीर
सूरह युनुस
से
सूरह कहफ़ तक

अज़
डॉक्टर इसरार अहमद

तरतीब

अर्ज़े मुरत्तब 3

सूरह युनुस 6

सूरह हूद 48

सूरह युसुफ़ 98

सूरह रअद 144

सूरह इब्राहीम 164

सूरतुल हिज्र 188

सूरह नहल 217

सूरह बनी इस्राईल 271

सूरतुल कहफ़ 329

फुटनोट्स 295

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अर्ज़े मुरत्तब

बयानुल क़ुरान के हिस्सा चहारम (चार) की इशाअत (पब्लिकेशन) पर हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर सज्दा-ए-शुक्र बजा लाते हैं। इस काम की रफ़्तार के सिलसिले में मुरत्तिबीन व मुअल्लिफ़ीन दो तरफ़ा दबाव में हैं। एक तरफ़ "जलाल-ए-इसरारी" के फ़लक बोस गुम्बद से गूंजती हुई "हुदा रा तेज़ तरमी खवां" की सदाये पेहम है तो दूसरी तरफ़ हज़ार हा शाएक़ीन के इन्तेज़ार का हँगामा आफ़रीन मदु जज़र! चुनाँचे तमाम मुतल्लिक़ीन के दरमियान एक ख़ामोश समझौता आप से आप तय पा गया कि हरचे बादा बाद, हर साल रमज़ानुल मुबारक में बयानुल क़ुरान की नयी जिल्द की रूनुमाई का इल्तज़ाम करना ही होगा। अल्लाह तआला मुरत्तिबीन की टीम को तौफ़ीक़, हिम्मत और मोहलत अता फ़रमाये कि वह इस काम को जल्द-अज़-जल्द पाया-ए-तकमील तक पहुँचा सकें। आमीन!

डॉक्टर साहब (रहि.) के अपने फ़रमान के मुताबिक़, क़ुरान की तफ़सीर लिखने का कोई मंसूबा कभी भी आपके हाशिया-ए-ख्याल में नहीं था। लेकिन जब मशीयत-ए-ऐज़दी से बयानुल क़ुरान की पहली जिल्द शाया हुई तो उसकी ग़ैर मामूली मक़बूलियत और पज़ीराई ने डॉक्टर साहब को इसके बक़िया काम के बारे में एक ख़ुशगवार इज़्तराब (चिंता) की कैफ़ियत से दो-चार कर दिया। दरअसल डॉक्टर साहब के मिशन और उसकी तरवीज में

जो मरकज़यत क़ुरान करीम हासिल है बैअयनही वही मरकज़ी और इम्तियाज़ी हैसियत अंजुमन और तंज़ीम की दीगर (अन्य) मत्बूआत (प्रकाशन) में बयानुल क़ुरान रखती है। यही वजह थी कि आप इन्ज़ार व तब्शीर और तशवीक़ व तरगीब के इस क़ुरानी मिम्बा को जल्द-अज़-जल्द उसके शाएक़ीन की पहुँच में देखना चाहते थे। बहरहाल डॉक्टर साहब की यह ख्वाहिश आपकी दुनियवी ज़िन्दगी में मतलूबा दर्जे में अपनी तस्कीन हासिल ना कर सकी!

डॉक्टर साहब के बक़ौल जो "पहाड़ जैसा भारी काम" बाक़ी था, अब उसको पाया-ए-तकमील तक पहुँचाने के लिये हम अपनी सी कोशिश में लगे हैं। हम अल्लाह की मदद और तौफ़ीक़ से इसमें कामयाबी के ख्वाहाँ भी हैं और उसकी रहमत से "अज्र" के उम्मीदवार भी! इस बारे में हम अपने अल्लाह से मुसबत गुमान रखते हैं। यह सब कुछ तो इन्शा अल्लाह हमारे गुमान के मुताबिक़ हो ही जायेगा! मगर एक "खला" है कि जिसका तसव्वुर मुसलसल गमनाक किये जाता है! इस "होमवर्क" के मुकम्मल करने पर आख़िर हमें एक ख़ुसूसी "शाबाश" का लालच भी तो था! अल्लाह तआला के लुत्फ़-ओ-करम से क्या बईद है कि डॉक्टर साहब से मुलाकात का अरमान भी पूरा हो और हमारा यह लालच भी!!!

जुमातुल मुबारक
22 शाबान अल मौअज्ज़म 1433 हिजरी

लेफ्टिनेंट कर्नल (रिटा) आशिक़ हुसैन

सूरह युनुस

तम्हीदी कलिमात

सूरह युनुस के आगाज़ के साथ ही क़ुरान हकीम की तीसरी मंज़िल भी शुरू हो रही है और यहीं से मक्की-मदनी सूरतों के तीसरे ग्रुप का आग़ाज़ भी हो रहा है। इस लिहाज़ से क़ुरान का यह मक़ाम गोया "क़िरानस्स साअदैन" है। मक्की सूरतों का यह सिलसिला जो सूरह युनुस से शुरू होकर सूरतुल मोमिनून (अट्ठारवें पारे) तक फैला हुआ है, हुज्म के ऐतबार से तवील तरीन है। (अलबत्ता तेईसवें पारे की सूरतें चूँकि छोटी-छोटी हैं इसलिये तादाद के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा मक्की सूरतें आखरी ग्रुप में हैं।) इस ग्रुप में शामिल सूरतुल हिज्र और सूरतुल हज के बारे में बाज़ मुफ़स्सिरीन की राय है कि ये दोनों मदनियात हैं, मगर इस सिलसिले में मुझे उन मुफ़स्सिरीन से इत्तेफ़ाक़ है जो इन दोनों को मक्कियात मानते हैं।

इन पहले तीन ग्रुप्स में शामिल सूरतों की मक्की और मदनी तक़सीम के हवाले से बात की जाए तो जिस तरह पहले ग्रुप में सूरतुल बक़रह से लेकर सूरतुल मायदा तक सवा छ: पारों पर मुश्तमिल छ: सूरतें मदनी थीं, इसी तरह अब इस ग्रुप में आईन्दा सात पारों पर मुश्तमिल मुसलसल चौदह सूरतें मक्की हैं, जबकि दरमियानी ग्रुप दो मक्की (अल अनआम और अल आराफ़) और दो मदनी (अल अनफ़ाल और अत्तौबा) सूरतों पर मुश्तमिल था।

इस ग्रुप की इन चौदह सूरतों में अक्सर व बेशतर तीन-तीन सूरतों के ज़ेली ग्रुप भी बनते हैं, जिनमें से हर ग्रुप की पहली दी सूरतों के माबैन निस्बते ज़ौजियत पाई जाती है, जबकि तीसरी सूरत मुनफ़रिद है। पहले ज़ेली ग्रुप में शामिल तीन सूरतें निस्बतन तवील हैं, इनके बाद तीन निस्बतन छोटी सूरतों का एक ज़ेली ग्रुप है और इसके बाद फ़िर तीन सूरतों का एक ज़ेली ग्रुप है जो क़दरे तवील हैं। पहला ज़ेली ग्रुप सूरह युनुस, सूरह हूद और सूरह युसुफ़ पर मुश्तमिल है। इनमें सूरह युनुस और सूरह हूद का आपस में ज़ौजियत का बिल्कुल वैसा ही ताल्लुक़ है जैसा कि सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ में है। चुनाँचे सूरह युनुस के ग्यारह रुकुओं में से सिर्फ़ दो रुकूअ अम्बिया अर्रुसुल से मुताल्लिक़ हैं और बाक़ी नौ रुकूअ अल तज़कीर बि आला इल्लाह पर मुश्तमिल हैं, जबकि दूसरी तरफ़ सूरह हूद के दस रुकुओं में से साढ़े छः रुकूअ अम्बिया अर्रुसुल (अत्तज़कीर बि अय्यामिल्लाह) से मुताल्लिक़ हैं और सिर्फ़ साढ़े तीन रुकुओं में दूसरे मज़ामीन हैं, जिनमें कुफ्फ़ार के साथ रद्दो क़दह भी है और अल तज़कीर बि आला इल्लाह का मज़मून भी है। इस ज़ेली ग्रुप में सूरह युसुफ़ की हैसियत गोया एक ज़मीमे की है, जो इनसे अलग और बिल्कुल मुनफ़रिद है।

सूरह युनुस और सूरह हूद में ज़ौजियत के ताल्लुक़ में एक अजीब मुतलज़िम (reciprocal) निस्बत भी है कि सूरह युनुस में अम्बिया अर्रुसुल के दो रुकुओं में से सिर्फ़ आधे रुकूअ (चंद आयात) में हज़रत नूह अलै. का ज़िक्र है और बाक़ी डेढ़ रुकूअ हज़रत मूसा अलै. के बारे में है, जबकि दरमियान के किसी रसूल का कोई ज़िक्र नहीं है। इसके बिल्कुल बरअक्स सूरह हूद में पूरे दो रुकूअ हज़रत नूह अलै.

के ज़िक्र पर मुश्तमिल हैं। यह मक़ाम हज़रत नूह अलै. के ज़िक्र के ऐतबार से पूरे क़ुरान में जामेअ तरीन भी है और अफ़ज़ल भी। (अगरचे उनत्तीस्वें पारे में सूरह नूह मुकम्मल आप (अलै.) ही के ज़िक्र पर मुश्तमिल है, मगर वहाँ वह तफ़ासील नहीं हैं जो यहाँ पर हैं।) हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र इस सूरत में चंद आयात में सिर्फ़ हवाले के लिये ही आया है, जबकि दरमियान में अम्बिया अर्रुसुल के सिलसिले में एक-एक रुकूअ में एक-एक रसूल का ज़िक्र है।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आयात 1 से 10 तक

الۗرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝١ اَكَانَ لِلنَّاسِ
عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ
وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ڼ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢ اِنَّ
رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَي الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ مَا مِنْ
شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ
جَمِيْعًا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ۭ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ
بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ

ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ
السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ۭ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ
يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ
لِقَاۗءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ
هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧ۙ اُولٰۗىِٕكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا
سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ
دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ۧ

आयत 1

"अलिफ़, लाम, रा।"

الٓرٰ ۣ

ये हरूफ़-ए-मक़त्तआत हैं। यहाँ पर एक क़ाबिले ज़िक्र नुक्ता यह है कि इससे पहले सूरतुल बक़रह, सूरह आले इमरान और सूरतुल आराफ़ तीन सूरतों का आगाज़ हुरूफ़-ए-

मुक़त्तआत (अलिफ़ लाम मीम, अलिफ़ लाम मीम साद) से होता है और इन तीनों मक़ामात पर हुरूफ़-ए-मुक़त्तआत पर आयत मुकम्मल हो जाती है, मगर यहाँ इन हुरूफ़ पर आयत मुकम्मल नहीं हो रही है, बल्कि यह पहली आयत का हिस्सा है। बहरहाल ये तौफ़ीक़ी अमूर (हुज़ूर ﷺ के बताने पर मौक़ूफ़) हैं। ग्रामर, मन्तिक़, नह्व बयान वगैरह के किसी असूल या क़ायदे को यहाँ दख़ल नहीं है।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ①

"ये बड़ी हिकमत भरी किताब की आयात हैं।"

आयत 2

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ

"क्या लोगों को बहुत तअज्जुब हुआ है कि हमने वही भेज दी एक शख्स पर उन्हीं में से"

اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ

"कि आप लोगों को ख़बरदार कर दीजिये और अहले ईमान को बशारत दे दीजिये कि उनके लिये उनके रब के पास बहुत ऊँचा मरतबा है।"

قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ②

"(इस पर) काफ़िरों ने कहा कि यह तो एक खुला जादूगर है।"

यानि यह तो अल्लाह की मर्ज़ी पर मुन्हसिर (depend) है। उसका फ़ैसला है कि वह इस मंसब (position) के लिये इंसानों में से जिसको चाहे पसंद फ़रमा कर मुन्तखिब कर ले। अगर उसने मोहम्मद ﷺ का इन्तेखाब करके आप ﷺ को ब-ज़रिया वही इन्ज़ार और तबशीर की ख़िदमत पर मामूर किया है तो इसमें तअज्जुब की कौनसी बात है!

आयत 3

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

"यक़ीनन तुम्हारा रब वह अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन की तख्लीक़ फ़रमाई छ: दिनों में"

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ

"फ़िर वह अर्श पर मुतम्मकिन हो गया, (और) वह तदबीर करता है हर मामले की।"

अल्लाह तआला अपनी मशियत और मंसूबा बंदी के मुताबिक़ पूरी कायनात का इंतेज़ाम संभाले हुए है। क़ब्ल अज़ भी ज़िक्र हो चुका है कि शाह वलीउल्लाह देहलवी रह. ने अपनी शहरह-ए-आफ़ाक़ तसनीफ़ "हुज्जतुल्लाह अलबालगा" के बाबे अव्वल में अल्लाह तआला के तीन

अफ़आल के बारे में बड़ी तफ़सील से बहस की है: (1) इब्दाअ (creation ex nehilo) यानि किसी चीज़ को अदम महज़ से वजूद बख्शना, (2) खल्क़, यानि किसी चीज़ से कोई दूसरी चीज़ बनाना, और (3) तदबीर, यानि अपनी मशियत और हिकमत के मुताबिक़ कायनाती निज़ाम की मंसूबा बंदी (प्लानिंग) फ़रमाना।

مَا مِنۡ شَفِيۡعٍ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ اِذۡنِهٖ ؕ

“नहीं है कोई भी शफ़ाअत करने वाला मगर उसकी इजाज़त के बाद।”

कोई उसका इज़्न हासिल किये बगैर उसके पास किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकता। इससे पहले आयतल कुर्सी (सूरतुल बक़रह) में भी शफ़ाअत के बारे में इसी नौइयत का इस्तशना आ चुका है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ۝۳

“वह है अल्लाह तुम्हारा रब, पस तुम उसी की बंदगी करो। तो क्या तुम नसीहत अखज़ नहीं करते!”

आयत 4

اِلَيۡهِ مَرۡجِعُكُمۡ جَمِيۡعًا ؕ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ

“तुम सबका लौटना उसी की जानिब है। यह वादा है अल्लाह का सच्चा।”

اِنَّهٗ يَبۡدَؤُا الۡخَلۡقَ ثُمَّ يُعِيۡدُهٗ

"वही है जो खल्क़ का आग़ाज़ करता है, फ़िर वही उसका इआदा (repeat) कर देगा"

पहले पहल किसी काम का करना या इब्तदाई तौर पर किसी चीज़ को तख्लीक़ करना मुश्किल होता है जबकि उसका इआदा (repeat) करना निस्बतन आसान होता है। यह एक माक़ूल और मन्तक़ी बात है कि अगर अल्लाह तआला ही ने यह सब कुछ पैदा फ़रमाया है और पहली बार उसे इस तख्लीक़ में कोई मुश्किल पेश नहीं आई तो दोबारा पैदा करना उसके लिये क्यों कर मुश्किल हो जाएगा! बहरहाल वह तमाम इंसानों को दोबारा पैदा करेगा:

لِيَجۡزِىَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالۡقِسۡطِ

"ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे अमल किये इन्साफ़ के साथ।"

वह अहले ईमान जिन्होंने अल्लाह और उसके दीन के लिये ईसार (त्याग) किया है, उनकी क़ुर्बानियों और मशक्क़तों के बदले में उन्हें ईनामात से नवाज़ा जाएगा और उनके इन आमाल की पूरी-पूरी क़दर की जाएगी।

وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَهُمۡ شَرَابٌ مِّنۡ حَمِيۡمٍ

"और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके पीने के लिये होगा खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब, उस कुफ़्र की पादाश में जो वह करते रहे।"

وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ۝۴

आयत 5

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ
الشَّمْسَ ضِيَاۗءً وَّالْقَمَرَ
نُوْرًا

"वही है जिसने बनाया सूरज को चमकदार और चाँद को नूर"

यहाँ यह नुक्ता क़ाबिले गौर है कि सूरज के अन्दर जारी अहतराक़ यानि जलने (combustion) के अमल की वजह से रौशनी पैदा (generate) हो रही है इसके लिये "ज़िया" जबकि मनअक्स (reflect) होकर आने वाली रौशनी के लिये "नूर" का लफ्ज़ इस्तेमाल हुआ है। सूरज और चाँद की रौशनी के लिये क़ुरान हकीम ने दो मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं, इसलिये कि सूरज की अपनी चमक है और चाँद की रौशनी एक इनअकास (reflection) है।

وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ
لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ۭ

"और उसने उस (चाँद) की मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम्हें मालूम हो गिनती बरसों की और तुम (मामलाते ज़िंदगी में) हिसाब कर सको।"

مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ⑤

"अल्लाह ने ये सब कुछ पैदा नहीं किया मगर हक़ के साथ, और वह तफ़सील बयान करता है अपनी आयात की उन लोगों के लिये जो इल्म हासिल करना चाहें।"

यानि यह कायनात एक बेमक़सद तख्लीक़ नहीं बल्कि एक संजीदा, बामक़सद और नतीज़ाखेज़ तख्लीक़ है।

आयत 6

اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ⑥

"यक़ीनन रात और दीन के अदलने-बदलने में और जो कुछ अल्लाह ने बनाया है आसमानों में और ज़मीन में, यक़ीनन निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जिनके अंदर तक़वा है।"

इन निशानियों से वही लोग सबक़ हासिल करके मुसतफ़ीज़ (benefited) हो सकते हैं जिनके अंदर ख़ौफ़-ए-ख़ुदा है और उनकी अख्लाक़ी हिस्स बेदार होती है।

आयत 7

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا

"बेशक़ वह लोग जो हमसे मुलाक़ात के उम्मीदवार नहीं हैं"

यहाँ पर यह नुक्ता नोट करें कि ये अल्फ़ाज़ इस सूरत में बार-बार दोहराए जायेंगे। असल में यह ऐसी इंसानी सोच और नफ़सियाती कैफ़ियत की तरफ़ इशारा है जिसके मुताबिक़ इंसानी ज़िंदगी ही असल ज़िंदगी है। इंसान को गौर करना चाहिये कि यह इंसानी ज़िंदगी जो हम इस दुनिया में गुज़ार रहे हैं इसकी असल हक़ीकत क्या है! इसे मुहावरतन "चार दिन की ज़िंदगी" क़रार दिया जाता है। बहादुर शाह ज़फर ने भी कहा है:

उम्र-ए-दराज़ माँग कर लाए थे चार दिन
दो आरज़ू में कट गए, दो इंतेज़ार में!

अगर इंसान इस दुनिया में तवील तबई उम्र भी पाये तो उसका एक हिस्सा बचपन की नासमझी और खेल-कूद में ज़ाया हो जाता है। शऊर और जवानी की उम्र का थोडा सा वक़्फ़ा उसके लिये कारआमद होता है। इसके बाद जल्द ही बुढ़ापा उसे अपनी गिरफ़्त में ले लेता है और वह देखते ही देखते {لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا} (सूरह नहल:70) की जीती-जागती तस्वीर बन कर रह जाता है। तो क्या इंसानी ज़िन्दगी की हक़ीक़त बस यही है? और क्या इतनी सी ज़िन्दगी के लिये ही इन्सान को अशरफ़ुल मख्लूक़ात का लक़ब दिया जाता है? इन्सान गौर करे तो उस पर यह हक़ीक़त वाज़ेह होगी कि इंसानी ज़िन्दगी महज़ हमारे सामने के चंद माह व साल का मज्मुआ नहीं है बल्कि यह एक कभी ना ख़त्म होने वाले सिलसिले का नाम है। अल्लामा इक़बाल के बक़ौल:

तू इसे पैमाना-ए-मर्ज़ो फ़र्दा से ना नाप
जावेदां, पैहम दवां, हर दम जवां है ज़िन्दगी!

और इक़बाल ही ने इस सिलसिले में इंसानी नासमझी और कमज़र्फी की तरफ़ इन अल्फ़ाज़ में तवज्जोह दिलाई है:

तू ही नादाँ चंद कलियों पर क़नाअत कर गया
वरना गुलशन में इलाजे तंगई दामाँ भी है!

इस लामतनाही (अन्तहीन) सिलसिला-ए-ज़िंदगी में से एक इन्तहाई मुख्तसर और आरज़ी वक़्फ़ा ये दुनियवी ज़िंदगी है जो अल्लाह ने इंसानों को आज़माने और जाँचने के लिये अता की है: {الَّذِیۡ خَلَقَ الۡمَوۡتَ وَالۡحَیٰوۃَ لِیَبۡلُوَکُمۡ اَیُّکُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ؕ} (सूरह मुल्क:2) जबकि असल ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी है और वह बहुत तवील है। जैसे कि फ़रमाया: {وَاِنَّ الدَّارَ الۡاٰخِرَۃَ لَہِیَ الۡحَیَوَانُ ۘ لَوۡ کَانُوۡا یَعۡلَمُوۡنَ} (सूरह अनकबूत:64) "और यक़ीनन आख़िरत का घर ही असल ज़िंदगी है, काश कि इन्हें मालूम होता!" मगर वह लोग जिनका ज़हनी उफ़क़ तंग और सोच महदूद है, वह इसी आरज़ी और मुख़्तसर वक़्फ़ा-ए-ज़िंदगी को असल ज़िंदगी समझ कर इसकी रअनाईयों (चकाचौंध) पर फ़रयफ्ता (मुग्ध) और इसकी रंगीनियों में गुम रहते हैं। बक़ौल अल्लामा इक़बाल:

काफ़िर की यह पहचान कि आफ़ाक़ में गुम है
मोमिन की यह पहचान है कि गुम उसमें हैं आफ़ाक़!

असल और दाइमी ज़िंदगी की अज़मत और हक़ीक़त ऐसे लोगों की नज़रों से बिल्कुल ओझल हो चुकी है।

وَرَضُوۡا بِالۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا وَاطۡمَاَنُّوۡا بِہَا وَالَّذِیۡنَ

"और वह दुनिया की ज़िंदगी पर ही राज़ी और उसी पर मुत्मईन हैं, और जो हमारी आयात से गाफ़िल हैं।"

هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝

इन्सानों के अन्दर और बाहर अल्लाह की बेशुमार निशानियाँ मौजूद हैं और उनकी फ़ितरत उन्हें बार-बार दावत-ए-फ़िक्र भी देती है:

खोल आँख, ज़मीं देख, फ़लक देख, फिज़ा देख!
मशरिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख!

मगर वह लोग शहवाते नफ़सानी के चक्करों में इस हद तक गलता व पेचा हैं कि उन्हें आँख खोल कर अन्नफ्स व आफ़ाक़ में बिखरी हुई लातादाद आयाते इलाही को एक नज़र देखने की फ़ुरसत है ना तौफ़ीक़।

आयत 8

أُولَٰٓئِكَ مَأْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨

"यही वह लोग हैं जिनका ठिकाना आग है, अपनी उस कमाई के सबब जो वह कर रहे हैं।"

जिस शख्स ने अपनी पूरी दुनयवी ज़िंदगी में ना अल्लाह की तरफ़ रुजूअ किया और ना आख़िरत ही की कुछ फ़िक्र की, सारी उम्र 'बाबर ब-ऐश कोश कि आलम दोबारा नीस्त' जैसे नारे को अपना मोटो (moto) बनाए रखा, हलाल व हराम और ज़ायज़ व नाज़ायज़ की क़ैद से बेनियाज़ होकर झूठी मसरतें और आरज़ी खुशियाँ जहाँ से मिलें, जिस क़ीमत पर

मिलें हासिल कर लें, तो ऐसे शख्स का आख़री ठिकाना आग के सिवा भला और कहाँ हो सकता है!

आयत 9

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ⑨

“यक़ीनन वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किये, उनका रब उनके ईमान के बाअस उनको पहुँचा देगा नेअमतों वाले बागात में, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी।”

आयत 10

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ

“उसमें उनका तराना होगा: ऐ अल्लाह तू पाक है”

वह लोग जन्नत के अन्दर भी अल्लाह तआला की तस्बीह व मुनाजात करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार, तू हर ज़ौअफ़ (कमज़ोरी) से पाक है, हर ऐब और हर नुक़्स से मुबर्रा (रहित) है और अहतियाज के हर तसव्वुर से अरफ़अ व आला है।

وَ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ

"और उसमें उनकी (आपस की) दुआ 'सलाम' होगी।"

अहले जन्नत आपस में एक-दूसरे को मिलते हुए अस्सलामु अलैकुम के अल्फ़ाज़ कहेंगे, इस तरह वहाँ हर तरफ़ से सलाम, सलाम की आवाज़ें आ रही होंगी। जैसे सूरतुल वाक़िआ में फ़रमाया: {لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا} {اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا} (आयात: 25-26) "वहाँ ना बेहुदा बात सुनेंगे और ना गाली गलोच। वहाँ उनका कलाम सलाम-सलाम होगा।"

وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰﴾

"और उनकी दुआ और मुनाजात का इख्तताम (हमेशा इन कलिमात पर) होगा कि कुल हम्द और कुल तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जो तमाम जहानों का रब है।"

आयात 11 से 20 तक

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۭ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَاۗىِٕمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ۭ

كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلۡمُسۡرِفِيۡنَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲﴾ وَلَقَدۡ
اَهۡلَكۡنَا الۡقُرُوۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَمَّا ظَلَمُوۡا ۙ وَجَآءَتۡهُمۡ
رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوۡا لِيُؤۡمِنُوۡا ؕ كَذٰلِكَ
نَجۡزِى الۡقَوۡمَ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۱۳﴾ ثُمَّ جَعَلۡنٰكُمۡ خَلٰٓئِفَ
فِى الۡاَرۡضِ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ لِنَنۡظُرَ كَيۡفَ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۴﴾
وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيۡنَ لَا
يَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا ائۡتِ بِقُرۡاٰنٍ غَيۡرِ هٰذَاۤ اَوۡ بَدِّلۡهُ ؕ قُلۡ
مَا يَكُوۡنُ لِىۡۤ اَنۡ اُبَدِّلَهٗ مِنۡ تِلۡقَآئِ نَفۡسِىۡ ۚ اِنۡ اَتَّبِعُ
اِلَّا مَا يُوۡحٰۤى اِلَىَّ ۚ اِنِّىۡۤ اَخَافُ اِنۡ عَصَيۡتُ رَبِّىۡ عَذَابَ
يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۱۵﴾ قُلۡ لَّوۡ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوۡتُهٗ عَلَيۡكُمۡ
وَلَاۤ اَدۡرٰٮكُمۡ بِهٖ ۖ فَقَدۡ لَبِثۡتُ فِيۡكُمۡ عُمُرًا مِّنۡ قَبۡلِهٖ ؕ
اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفۡلِحُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۱۷﴾
وَيَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا
يَنۡفَعُهُمۡ وَيَقُوۡلُوۡنَ هٰٓؤُلَاۤءِ شُفَعَآؤُنَا عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ قُلۡ
اَتُنَبِّـُٔوۡنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعۡلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى

الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ⑱ وَمَا كَانَ
النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ
⑲ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا
الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ
⑳

आयत 11

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ

"और अगर अल्लाह जल्दी कर देता लोगों के लिए शर, जैसे कि वह जल्दी चाहते हैं खैर"

इंसान जल्दबाज़ है, वह चाहता है कि उसकी कोशिशों के नतीजे जल्द अज़ जल्द उसके सामने आ जाएँ। मगर अल्लाह तो बड़ा हकीम है, उसने हर काम और हर वाक़िये के लिये अपनी मशियत और हिकमत के मुताबिक़ वक़्त मुक़र्रर कर रखा है। वह ख़ूब जानता है कि किस काम में खैर है और किसमें खैर नहीं है। अगर अल्लाह इंसान की गलतियों और बुराइयों के बदले और नतीजे भी फ़ौरन ही उनके सामने रख दिया करता और उनके जराएम (जुर्मों) की सज़ाएँ भी फ़ौरन ही उनको दे दिया करता तो:

لَقُضِیَ اِلَیۡہِمۡ اَجَلُہُمۡ ؕ

"उनकी अजल पूरी हो चुकी होती"

यानि उनकी मोहलत-ए-उम्र कभी की ख़त्म हो चुकी होती।

فَنَذَرُ الَّذِیۡنَ لَا یَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا فِیۡ طُغۡیَانِہِمۡ یَعۡمَہُوۡنَ ﴿۱۱﴾

"फ़िर हम उन लोगों को छोड़ देंगे जो हमसे मुलाक़ात के उम्मीदवार नहीं, कि वह अपनी सरकशी में अंधे होकर बढ़ते चले जाएँ।"

फिर वही बात दोहराई गई है। इस अंदाज़ में एक शान-ए-इस्तगना (mock) है कि अगर वह हमें मिलने के उम्मीदवार नहीं तो हमारी नज़रे अलतफ़ात को भी उनसे कोई दिलचस्पी नहीं।

आयत 12

وَ اِذَا مَسَّ الۡاِنۡسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنۡۢبِہٖۤ اَوۡ قَاعِدًا اَوۡ قَآئِمًا ۚ

"और इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है पहलु के बल (लेटे हुए) या बैठे हुए या खड़े हुए।"

فَلَمَّا کَشَفۡنَا عَنۡہُ ضُرَّہٗ مَرَّ کَاَنۡ لَّمۡ یَدۡعُنَاۤ اِلٰی ضُرٍّ مَّسَّہٗ ؕ

"फ़िर जब हम उससे उसकी तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसे चल देता है जैसे उसने हमें कभी पुकारा ही ना था कोई तकलीफ़ पहुँचने पर।"

كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑫

"ऐसे ही मुज़य्यन कर दिया गया है उन हद से बढ़ने वालों के लिये उनके आमाल को।"

इनके अन्दर इतनी ढिठाई पैदा हो गई है कि ज़रा तकलीफ़ आ जाए तो गिडगिडा कर दुआएँ माँगेंगे, हर हाल में हमें पुकारेंगे और गिरया वज़ारी में रातें गुज़ार देंगे। लेकिन जब वह तकलीफ़ रफ़ा हो जाएगी तो ऐसे भूल जायेंगे गोया हमें जानते ही नहीं।

आयत 13

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ

"और हम तुम लोगों से पहले भी बहुत सी नस्लों और क़ौमों को हलाक़ कर चुके हैं, जब उन्होंने ज़ुल्म की रविश इख्तियार की"

وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ۭ

"और उनके पास (भी) आए थे उनके रसूल वाज़ेह तालीमात लेकर, लेकिन वह नहीं थे ईमान लाने वाले।"

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ⑬

"इसी तरह हम बदला दिया करते हैं मुजरिम लोगों को।"

आयत 14

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰۗىِٕفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ⑭

"फिर उनके बाद हमने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बना दिया, ताकि हम देखें कि तुम क्या करते हो!"

यहाँ हर शख्स इन्फ़रादी तौर पर भी अपनी महदूद उम्र में इम्तेहान दे रहा है और क़ौमें और उम्मतें भी अपने-अपने वक़्फ़ा-ए-मोहलत में इस इम्तेहान गाह से गुज़र रही है। अल्लामा इक़बाल के बक़ौल:

क़ुलज़ुमे हस्ती से तू उभरा है मानिन्दे हबाब
इस ज़ियाखाने में तेरा इम्तेहान है ज़िन्दगी!

आयत 15

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ۭ

"और जब इनको पढ़ कर सुनाई जाती हैं हमारी रौशन आयात तो कहते हैं वह लोग जो हमसे मुलाक़ात के उम्मीदवार नहीं हैं कि (ऐ मोहम्मद ﷺ) इसके अलावा आप कोई और क़ुरान पेश करें या इसमें कोई तरमीम करें।"

यहाँ वही अल्फ़ाज़ फिर दोहराए जा रहे हैं, यानि जो लोग हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं रखते वह हमारे कलाम को संजीदगी से सुनते ही नहीं और कभी सुन भी लेते हैं तो

इस्तहज़ाइया (मज़ाकिया) अंदाज़ में जवाब देते हैं कि यह क़ुरान बहुत सख्त (rigid) है, इसके अहकाम हमारे लिये क़ाबिले क़ुबूल नहीं। इसमें कुछ मदाहनत (compromise) का अंदाज़ होना चाहिये, कुछ दो और कुछ लो (give and take) के असूल पर बात होनी चाहिये। चुनाँचे आप (صلی اللہ علیہ وسلم) इस किताब में कुछ कमी-बेशी करें तो फिर इसकी कुछ बातें हम भी मान लेंगे।

قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَاۗئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ

"(ऐ नबी صلی اللہ علیہ وسلم!) कह दीजिये कि मेरे लिये हरगिज़ यह मुमकिन नहीं कि मैं इसमें अपनी तरफ़ से कोई तब्दीली कर लूँ, मैं तो पैरवी करता हूँ उसी की जो मेरी तरफ़ वही किया जा रहा है।"

मैं तो खुद वही-ए-इलाही का पाबन्द हूँ। मैं अपनी तरफ़ से इसमें कोई कमी-बेशी, कोई तरमीम व तन्सीख़ करने का मजाज़ नही हूँ।

اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

"मैं डरता हूँ बड़े दिन के अज़ाब से, अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी करूँ।"

आयत 16

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ

"आप (इनसे) कहिये कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं ना यह क़ुरान तुम्हें पढ़ कर सुनाता और ना वह तुम्हें इससे वाक़िफ़ करता"

فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝16

"मैं तुम्हारे दरमियान एक उम्र गुज़ार चुका हूँ इससे पहले। तो क्या तुम लोग अक़्ल से काम नहीं लेते!"

मैं पिछले चालीस बरस से तुम्हारे दरमियान ज़िंदगी बसर कर रहा हूँ। तुम मुझे अच्छी तरह से जानते हो। तुम जानते हो कि मै शायर नहीं हूँ, तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि मैं काहिन (priest) या जादूगर भी नहीं हूँ, तुम्हें यह भी इल्म है कि मुझे इन चीज़ों से कभी कोई दिलचस्पी नहीं रही और मैंने इन चीज़ों को सीखने के लिये कभी मश्क़ या रियाज़त भी नहीं की। तुम इस हक़ीक़त को भी ख़ूब समझते हो कि कोई शख्स एक दिन में कभी शायर या काहिन नहीं बन जाता। इन तमाम हक़ाइक़ का इल्म रखने के बावजूद भी तुम मुझे ऐसे इल्ज़ामात देते हो, तो क्या तुम लोग तअस्सुब की बिना पर अक़्ल से बिल्कुल ही आरी हो गए हो?

आयत 17

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ

"तो उस शख्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जिसने अल्लाह की तरफ़ झूठ बात मंसूब की या झुठलाया उसकी आयात को!"

यानि यह क़ुरान जो मैं तुम लोगों को सुना रहा हूँ, अगर यह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है और मैं इसे अपनी तरफ़ से घड कर पेश कर रहा हूँ तो मुझसे बढ़ कर ज़ालिम कोई नहीं, और अगर ये वाक़िअतन अल्लाह की आयात हैं तो तुम लोगों को मालूम होना चाहिये कि जो शख्स अल्लाह की आयात को झुठला दे, उससे बढ़ कर ज़ालिम और गुनाहगार कोई दूसरा नहीं हो सकता। अब इस मैयार-ए-हक़ीक़त को सामने रखते हुए तुम में से हर शख्स को चाहिये कि वह अपनी सोच और अपने अमल का जायज़ा ले और देखे कि वह कौनसी रविश इख्तियार कर रहा है।

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ⑰

"यक़ीनन मुजरिम लोग फ़लाह नहीं पाया करते।"

आयत 18

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّھُمْ وَلَا يَنْفَعُھُمْ وَيَقُوْلُوْنَ

"और ये लोग परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की जो ना इन्हें कोई नुक़सान पहुँचा सकती हैं और ना नफ़ा दे सकती हैं, और कहते हैं कि ये हमारे सिफारशी हैं अल्लाह के यहाँ।"

هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

इससे मुशरिकीने मक्का का बुनियादी अक़ीदा ज़ाहिर हो रहा है। वह लोग मानते थे कि इस कायनात का खालिक़ और मालिक अल्लाह है। वह अपने बुतों को कायनात का खालिक़ व मालिक नहीं बल्कि अल्लाह के क़ुर्ब का वसीला समझते थे। उनका ईमान था कि जिन हस्तियों के नाम पर ये बुत बनाए गए हैं वह हस्तियाँ अल्लाह के यहाँ बहुत मुक़र्रब और महबूब होने के बाइस उसके यहाँ हमारी सिफारश करेंगी।

قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ

"आप कहिये कि क्या तुम अल्लाह को बताना चाहते हो वह शय जो वह नहीं जानता, ना आसमानों में और ना ज़मीन में?"

क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देना चाहते हो जिसका उसको खुद पता नहीं? यह वही बात है जो आयतल कुर्सी (सूरह बक़रह: 255) की तशरीह के ज़िमन में बयान हो चुकी है कि ऐसी किसी शफ़ाअत का आख़िर जवाज़ क्या होगा? अल्लाह तो गायब और हाज़िर सब कुछ जानने वाला है: {يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ} तो फिर आख़िर कोई सिफ़ारशी अल्लाह के सामने खड़े होकर क्या कहेगा? किस बुनियाद पर वह किसी की सिफ़ारिश करेगा? क्या वह ये कहेगा कि ऐ अल्लाह! तू इस आदमी को ठीक से नहीं जानता, मैं इसे बहुत अच्छी तरह

जानता हूँ, यह बहुत अच्छा और नेक आदमी है! तो क्या वह अल्लाह को वह कुछ बताना चाहेगा (माज़ अल्लाह) जिसको वह खुद नहीं जानता?

سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ۝۱۸

"वह बहुत पाक और बुलंद है उन चीज़ों से जिनको वह उसका शरीक ठहराते हैं।"

आयत 19

وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّاۤ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخۡتَلَفُوۡا ؕ

"और नहीं थे लोग मगर एक ही उम्मत, फिर (बाद में) उन्होंने इख्तलाफ़ किया।"

यह मज़मून सूरतुल बक़रह में भी गुज़र चुका है। हज़रत आदम अलै. से इंसानों की नस्ल चली है, चुनाँचे जिस तरह तमाम इंसान नस्लन एक थे उसी तरह नज़रियाती तौर पर भी वह सब एक ही उम्मत थे। बनी नौए इंसानी के माबैन तमाम नज़रियाती इख्तलाफ़ात बाद की पैदावार हैं।

وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ

"और अगर एक बात तेरे रब की तरफ़ से पहले से तय ना पा चुकी होती"

अल्लाह तआला ने हर फ़र्द और हर क़ौम के लिये एक अजल (वक़्त) मुक़र्रर फरमा दी है। इसी तरह पूरी कायनात की अजल भी तय शुदा है। अगर ये सब कुछ तय ना हो चुका होता:

لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

"तो फ़ैसला कर दिया जाता इनके माबैन उन तमाम चीज़ों में जिनमें ये इख्तलाफ़ कर रहे हैं।"

आयत 20

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ

"और वह कहते हैं क्यों ना उतारी गई कोई निशानी (मौज्जज़ा) इस (रसूल) पर इसके रब की तरफ़ से?"

فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾

"आप कह दीजिये कि गैब का इल्म तो बस अल्लाह ही को है, पस इंतेज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहा हूँ।"

अपनी इस ज़िद और हठधर्मी के बाद इंतेज़ार करो कि मशियते इज़दी (divine orders) से कब, क्या शय ज़हूर में आती है।

आयात 21 से 24 तक

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ
إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ

رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ الَّذِيْ
يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ حَتّٰٓي اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ
وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَاۗءَتْهَا رِيْحٌ
عَاصِفٌ وَّجَاۗءَھُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا
اَنَّھُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڬ لَىِٕنْ
اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ
اَنْجٰىھُمْ اِذَا ھُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ يٰٓاَيُّھَا
النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۡ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاۗءٍ اَنْزَلْنٰهُ
مِنَ السَّمَاۗءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ
النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ
زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّھُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ
اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ
تَغْنَ بِالْاَمْسِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

आयत 21

وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً مِّنۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِىٓ ءَايَاتِنَا ۚ

"और जब हम लोगों को रहमत का मज़ा चखाते हैं उस तकलीफ़ के बाद जो उन पर आ गई थी तो फ़ौरन ही वह हमारी आयात के बारे में साज़िशें करने लगते हैं।"

पहली उम्मतों में भी ऐसा होता रहा है और हुज़ूर ﷺ की बेअसत के बाद अहले मक्का पर भी छोटी-छोटी तकालीफ़ आती रही हैं जैसे रिवायात में है कि आप ﷺ की बेअसत के बाद मक्का में शदीद नौईयत का क़हत पड़ गया था। ऐसे हालात में मुशरिकीने मक्का कुछ नरम पड़ जाते थे। हुज़ूर ﷺ के पास आकर बैठते भी थे और आप ﷺ की बातें भी सुनते थे। मगर ज्योंहि तकलीफ़ रफ़ा हो जाती तो वह फिर से अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के ख़िलाफ़ साज़िशें शुरू कर देते।

قُلِ ٱللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

"आप कहिये कि अल्लाह अपनी तदबीरों में कहीं ज़्यादा तेज़ है। यक़ीनन हमारे फ़रिश्ते लिख रहे हैं जो कुछ भी साज़िशें तुम लोग कर रहे हो।"

आयत 22

هُوَ الَّذِیْ یُسَیِّرُكُمْ فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ

"वही है जो तुम्हें सैर कराता है खुश्की और समन्दर में।"

यानि अल्लाह तआला ने मुख्तलिफ़ क़वानीन तबई के तहत मुख्तलिफ़ चीज़ों को सवारियों के तौर पर इन्सानों के लिये मुसख्खर कर दिया है।

حَتّٰۤی اِذَا كُنْتُمْ فِی الْفُلْكِ ۚ وَجَرَیْنَ بِهِمْ بِرِیْحٍ طَیِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا

"यहाँ तक कि जब तुम किश्तियों में होते हो, और वह चल रही होती हैं उन्हें (सवारों को) लेकर खुशगवार (मुवाफिक़) हवा के साथ और वह बहुत खुश होते हैं"

جَآءَتْهَا رِیْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ اُحِیْطَ بِهِمْ ۙ

"कि अचानक तेज़ हवा का झकड़ चल पड़ता है और हर तरफ़ से मौजें उनकी तरफ़ बढ़ने लगती हैं और वह गुमान करने लगते हैं कि वह इन (लहरों) में घेर लिये गए हैं"

हर तरफ़ पहाड़ जैसी लहरों को अपनी तरफ़ बढ़ते देख कर उन्हें यक़ीन हो जाता है कि बस अब वह लहरों में घिर गए हैं और उनका आख़री वक़्त आन पहुँचा है।

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۲۲﴾

"(उस वक़्त) वह पुकारते हैं अल्लाह को, उसके लिये अपनी इताअत को ख़ालिस करते हुए कि (ऐ अल्लाह!) अगर तूने हमें इस मुसीबत से निजात दे दी तो हम लाज़िमन हो जायेंगे बहुत शुक्र करने वालों में से।"

ऐसे मुश्किल वक़्त में उन्हें सिर्फ़ अल्लाह ही याद आता है, किसी देवी या देवता का ख्याल नहीं आता। इस सिलसिले में अबु जहल के बेटे अकरमा के बारे में बहुत अहम वाक़िया तारीख़ में मिलता है कि फ़तह मक्का के बाद वह हिजाज़ से फरार होकर हब्शा जाने के लिये बाज़ दूसरे लोगों के साथ कश्ती में सवार थे कि कश्ती अचानक तूफ़ान में घिर गई। कश्ती में तमाम लोग मुशरिकीन थे, लेकिन इस मुसीबत की घडी में किसी को भी लात, मनात, उज्ज़ा और हुबल याद ना आए और उन्होंने मदद के लिये पुकारा तो अल्लाह को पुकारा। इसी लम्हे अकरमा को इस हक़ीक़त के इन्कशाफ़ ने चौंका दिया कि यही तो वह पैग़ाम है जो मोहम्मद (صلى الله عليه وسلم) हमें दे रहे हैं। चुनाँचे वह वापस लौट आए और रसूल अल्लाह صلى الله عليه وسلم की ख़िदमत में हाज़िर होकर हल्क़ा बगोश-ए-इस्लाम हो गए और शर्फ़े सहाबियत से मुशरफ़ हुए। इसके बाद यही अकरमा रज़ि. इस्लाम के ज़बरदस्त मुजाहिद साबित हए, और हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ रज़ि. के दौरे खिलाफत में मुन्करीने ज़कात और मुरतदीन के ख़िलाफ़ जिहाद में इन्होंने कारहाये नुमाया अंजाम दिये।

दरअसल अल्लाह की मारफ़त (पहचान) इंसान की फ़ितरत के अन्दर समो दी गई है। बाज़ अवक़ात बातिल ख्यालात व नज़रियात का मलमअ (मिश्रण) इस मारफ़त की क़ुबूलियत में आड़े आ जाता है, लेकिन जब ये मलमअ उतरने का कोई सबब पैदा होता है तो अन्दर से इंसानी फ़ितरत अपनी असली हालत में नुमाया हो जाती है जो हक़ को पहचानने में लम्हा भर को देर नहीं करती।

आयत 23

فَلَمَّاۤ اَنۡجٰىهُمۡ اِذَا هُمۡ يَبۡغُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَقِّ‌ؕ

"फ़िर जब वह इन्हें निजात दे देता है तो फ़ौरन ही बग़ावत करने लगते हैं ज़मीन में ना हक़।"

ज्योंहि ख़तरे की घड़ी टल जाती है तो फिर इन्हें देवियाँ, देवता याद आ जाते हैं और फिर से अल्लाह से सरकशी शुरू हो जाती है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغۡيُكُمۡ عَلٰٓى اَنۡفُسِكُمۡ‌ۙ مَّتَاعَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا‌ ثُمَّ اِلَيۡنَا مَرۡجِعُكُمۡ

"ऐ लोगों! तुम्हारी इस बग़ावत का वबाल तुम्हारी अपनी ही जानों पर आएगा, यह दुनिया की ज़िंदगी का साज़ो-सामान है (इसे बरत लो), फिर हमारी ही तरफ़ तुम सबको लौटना है, फिर हम तुमको बतला देंगे जो कुछ तुम करते रहे थे।"

فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝۲۳

आयत 24

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ
نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا
يَاْكُلُ النَّاسُ
وَالْاَنْعَامُ ؕ

"इस दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल तो ऐसे है जैसे पानी, जो हम बरसाते हैं आसमान से, फिर उसके साथ निकल आता है ज़मीन का सब्ज़ा, जिसमें से खाते हैं इंसान भी और चौपाये भी।"

पानी के बगैर ज़मीन बंजर और मुर्दा होती है, उसमें घास, हरियाली वगैरह कुछ भी नहीं होता। ज्योंहि बारिश होती है उसमें से तरह-तरह का सब्ज़ा निकल आता है, फ़सलें लहलहाने लगती हैं, बाग़ात हरे-भरे हो जाते हैं।

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ
الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا
وَازَّيَّنَتْ

"यहाँ तक कि जब ज़मीन अच्छी तरह अपना सिंगार कर लेती है और ख़ूब मुज़य्यन हो जाती है"

यहाँ पर बहुत ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में ज़मीन की शादाबी की तस्वीरकशी की गई है। छोटे-बड़े नबातात की नुमाइश, सब्ज़ पोश खूबसूरती की बहार और रंगा-रंग फूलों की ज़ेबाईश के साथ जब ज़मीन पूरी तरह अपना बनाव-सिंगार कर लेती है, फ़सलें अपने जोबन (यौवन) पर आ जाती हैं और बाग़ात फलों से लद जाते हैं:

وَظَنَّ اَهۡلُهَاۤ اَنَّهُمۡ قٰدِرُوۡنَ عَلَيۡهَاۤ ۙ

"और इसके मालिक समझते हैं कि अब हम इस पर क़ादिर हैं"

ज़मीन वाले लहलहाती फसलों को देख कर खुश होते हैं और समझते हैं कि बस अब चंद दिन की बात है, हम अपनी फ़सलों की कटाई करेंगे, फलों को पेड़ों से उतारेंगे और हमारी ज़मीन की ये पैदावार हमारी खुशहाली का ज़रिया बनेगी। मगर होता क्या है:

اَتٰىهَاۤ اَمۡرُنَا لَيۡلًا اَوۡ نَهَارًا فَجَعَلۡنٰهَا حَصِيۡدًا كَاَنۡ لَّمۡ تَغۡنَ بِالۡاَمۡسِ ؕ

"तो अचानक हमारा एक हुक्म आता है इस (खेत या बाग़) पर रात के वक़्त या दिन के वक़्त और हम इसे कर देते हैं कटा हुआ जैसे कि कल वहाँ कुछ था ही नहीं।"

अल्लाह के हुक्म से ऐसी आफ़त आई कि देखते ही देखते सारी फ़सल तबाह हो गई, बाग़ उजड़ गया, सारी मेहनत अकारत गई, तमाम सरमाया डूब गया। दुनिया की बेसबाती की इस मिसाल से वाज़ेह किया गया है कि यही मामला इंसान का है। इंसान इस दुनिया में दिन-रात मेहनत व मशक्क़त और भाग-दौड़ करता है। अगर इंसान की यह

सारी मेहनत और तगो-दो अल्लाह की मर्ज़ी के दायरे में नहीं है, इससे शरियत के तक़ाज़े पूरे नहीं हो रहे हैं तो यह सब कुछ इसी दुनिया की हद तक ही है, आख़िरत में इनमें से कुछ भी उसके हाथ नहीं आएगा। मौत के बाद जब उसकी आँख खुलेगी तो वह देखेगा कि उसकी ज़िंदगी भर की सारी मेहनत अकारत चली गई: *"जब आँख खुली गुल की तो मौसम था खज़ा का!"*

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

"इसी तरह हम अपनी आयात की तफ़सील करते हैं उन लोगों के लिये जो गौर व फ़िक्र से काम लेते हैं।"

आयात 25 से 30 तक

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۭ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى
وَزِيَادَةٌ ۭ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۭ اُولٰۗىِٕكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ
كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَاۗءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ۭ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ
وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ

النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ
جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ
وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا
كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿۲۹﴾
هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ
مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۳۰﴾

आयत 25

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۭ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۵﴾

"और अल्लाह बुला रहा है तुम्हें सलामती के घर की तरफ़, और वह हिदायत देता है जिसको चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़।"

आयत 26

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۭ

"जो लोग अहसान की रविश इख्तियार करेंगे, उनके लिये हसना (भलाई) है और मज़ीद भी।"

उन्हें नेकी का बदला भी बहुत अच्छा मिलेगा और मज़ीद बराआँ उन्हें ईनामात से भी नवाज़ा जाएगा।

وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۭ

"और नहीं मुसल्लत होगी उनके चेहरों पर स्याही और ना ज़िल्लत।"

أُولَٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٦

"यही होंगे जन्नत वाले, और रहेंगे उसमें हमेशा-हमेशा।"

आयत 27

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَاۗءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثْلِهَا ۙ

"और जिन लोगों ने बुराईयाँ कमाईं तो (उनके लिये) बदला होगा बुराई का वैसा ही"

यानि जैसी उनकी बुराई होगी वैसा ही उसका बदला होगा, उसमें कुछ इज़ाफ़ा नहीं किया जाएगा।

وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ

"और उन पर ज़िल्लत छा जाएगी। नहीं होगा उन्हें अल्लाह (की पकड़) से कोई भी बचाने वाला।"

كَاَنَّمَاۤ اُغۡشِيَتۡ وُجُوۡهُهُمۡ قِطَعًا مِّنَ الَّيۡلِ مُظۡلِمًا ؕ

"गोया उनके चेहरों पर तारीक रात के टुकड़े उढ़ा दिये गए हों।"

اُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ۝۲۷

"यही लोग होंगे जहन्नमी, ये रहेंगे उसी में हमेशा-हमेशा।"

आयत 28

وَيَوۡمَ نَحۡشُرُهُمۡ جَمِيۡعًا ثُمَّ نَقُوۡلُ لِلَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡا مَكَانَكُمۡ اَنۡتُمۡ وَشُرَكَآؤُكُمۡ ۚ

"और जिस दिन हम इन सबको जमा करेंगे, फ़िर हम कहेंगे उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया था कि खड़े रहो अपनी जगह पर तुम भी और तुम्हारे शरीक भी।"

यूँ मालुम होता है कि यह लात, मनात, उज़्ज़ा वगैरह की बात नहीं हो रही जिनके बारे में किसी को पता नहीं कि उनकी असल क्या थी, बल्कि यह औलिया अल्लाह, नेक और बरगज़ीदा बन्दों की बात हो रही है जिनके नामों पर मूर्तियाँ और बुत बना कर उनकी पूजा की गई होगी। जैसे क़ौमे नूह ने वुद, सवाअ और यगोश वगैरह औलिया अल्लाह की पूजा के लिये उनके बुत बना रखे थे (इस बारे में तफ़सील सूरतुल

नूह में आएगी)। हमारे यहाँ सिर्फ़ यह फ़र्क़ है कि बुत नहीं बनाए जाते, क़ब्रें पूजी जाती हैं।

इस सिलसिले में हज़रत ईसा अलै. से अल्लाह तआला के ख़िताब की एक झलक हम सूरतुल मायदा के आखरी रुकूअ में देख आए हैं। इसलिये यहाँ यह ख्याल नहीं आना चाहिये कि ऐसे बुलंद मरतबा लोगों को इस तरह का हुक्म क्यों कर दिया जाएगा कि ठहरे रहो अपनी जगह पर तुम भी और तुम्हारे शरीक भी! बहरहाल अल्लाह तआला की शान बहुत बलंद है, जबकि एक बंदा तो बंदा ही है, चाहे जितनी भी तरक्क़ी कर ले: अर्रब्बु रब्बुन वइन तनज़्ज़ल! वल अब्दु अब्दुन वइन तरक्क़ा!

فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ۲۸

"तो हम उनके दरमियान रिश्ते मुनक़तअ कर देंगे और कहेंगे उनके शरीक (उनसे) कि तुम हमको तो नहीं पूजा करते थे।"

वह नेक लोग जिन्हें अल्लाह का शरीक बनाया गया वह इस शिर्क से बरी हैं, क्यूंकि उन्होंने तो अपनी ज़िन्दगियाँ अल्लाह की इताअत में गुज़ारी थी। जैसे सूरतुल बक़रह (आयत: 134) में बहुत वाज़ेह अंदाज़ में फ़रमाया गया है: {تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ} "वह एक जमात थी जो गुज़र गई, उनके लिये है जो उन्होंने कमाया और तुम्हारे लिये है जो तुमने कमाया।" अगर कोई शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह. को पुकारता है या किसी मज़ार पर जाकर मुशरिकाना हरकतें करता है तो इसका वबाल साहिबे मज़ार पर क़तअन नहीं होगा। उन पर तो उल्टा ज़ुल्म हो रहा है कि उन्हें

अल्लाह के साथ शिर्क में मुलव्विस किया जा रहा है। चुनाँचे अल्लाह के वह नेक बन्दे अल्लाह के यहाँ इन शिर्क करने वालों के ख़िलाफ़ इस्तगासा (शिकायत) करेंगे, कि वह लोग अल्लाह को छोड़ कर उन्हें पुकारते थे और उनके नामों की दुहाइयाँ देते थे। वह उन शिर्क करने वालों से कहेंगे:

आयत 29

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

"पस अल्लाह काफ़ी है (बतौर) गवाह हमारे और तुम्हारे माबैन, हम तो तुम्हारी इस इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे।"

यानि अगर तुम हमारी पूजा करते भी रहे हो तो हमें बिल्कुल इसकी ख़बर नहीं, हम पर इसका कुछ इल्ज़ाम नहीं। हम तुम्हारे इन घिनौने फ़अल से बिल्कुल बरी हैं।

आयत 30

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ

"उस वक़्त हर जान को पता चल जाएगा कि उसने क्या आगे भेजा था, और वह लौटा दिए जाएँगे अल्लाह की तरफ़ जो उनका बरहक़ मौला है, और ग़ुम हो जाएगा उनसे वह सब कुछ जो

الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝۳۰

वह इफ़तरा (मानहानि) करते थे।"

यानि उस दिन जब शफ़ाअत की उम्मीदों के सारे सहारे हवा हो जायेंगे तो उनके हाथों के तोते उड़ जायेंगे। तब उन्हें मालूम होगा कि: *"ख्वाब था जो कुछ कि देखा, जो सुना अफ़साना था!"*

आयात 31 से 39 तक

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ
السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْـحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَيُخْرِجُ الْـمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ
فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝۳۱ فَذٰلِكُمُ
اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ښ فَاَنّٰى
تُصْرَفُوْنَ ۝۳۲ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَي
الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّھُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝۳۳ قُلْ هَلْ مِنْ
شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۭ قُلِ اللّٰهُ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝۳۴ قُلْ هَلْ

مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ۭ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ
لِلْحَقِّ ۭ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا
يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ٣٥
وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُھُمْ اِلَّا ظَنًّا ۭ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ
الْحَقِّ شَـيْـــًٔـا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ٣٦ وَمَا كَانَ
هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ
تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا
رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۣ ٣٧ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ
اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٣٨ بَلْ
كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ۭ
كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ٣٩

आयत 31

قُلۡ مَنۡ یَّرۡزُقُکُمۡ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الۡاَرۡضِ اَمَّنۡ یَّمۡلِکُ السَّمۡعَ وَ الۡاَبۡصَارَ

"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) पूछिए कि कौन है जो तुम्हें रिज़्क़ पहुँचाता है आसमान और ज़मीन से या कौन है जिसके क़बज़ा-ए-क़ुदरत में है तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें?"

وَ مَنۡ یُّخۡرِجُ الۡحَیَّ مِنَ الۡمَیِّتِ وَ یُخۡرِجُ الۡمَیِّتَ مِنَ الۡحَیِّ وَ مَنۡ یُّدَبِّرُ الۡاَمۡرَ ؕ

"और कौन है जो निकालता है ज़िन्दा को मुर्दा से, और मुर्दा को ज़िन्दा से, और कौन है तदबीरे अम्र करने वाला?"

فَسَیَقُوۡلُوۡنَ اللّٰہُ ۚ

"तो वह कहेंगे अल्लाह!"

मुशरिकीने मक्का अल्लाह को इन तमाम सिफ़ात के साथ मानते थे और इस बारे में उनके ज़हनों में कोई अबहाम (doubt) नहीं था। वह इस हक़ीक़त को तस्लीम करते थे कि अल्लाह सुबहाना व तआला ना सिर्फ़ इस कायनात का खालिक़ है बल्कि इसका निज़ाम भी वही चला रहा है।

فَقُلۡ اَفَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿۳۱﴾

"तो आप फ़रमाइये कि क्या फिर तुम (उस अल्लाह से) डरते नहीं हो?"

जब तुम लोग अल्लाह तआला को अपना खालिक़, मालिक और राज़िक़ मानते हो, जब तुम मानते हो कि कायनात का

यह सारा निज़ाम अल्लाह ही अपने हुस्ने तदबीर से चला रहा है तो फिर इसके बाद तुम्हारे इन मुशरिकाना नज़रियात और देवी देवताओं की इस पूजा-पाठ का क्या जवाज़ है? क्या तुम्हें कुछ भी खौफ़-ए-ख़ुदा नहीं है?

आयत 32

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٣٢

"तो वही है अल्लाह तुम्हारा रब बरहक़। तो हक़ के बाद क्या रह जाता है सिवाय गुमराही के? तो कहाँ से तुम फेरे जा रहे हो?"

यही हक़ है जिसको तुम अपनी फ़ितरत की नज़र से पहचान चुके हो। अब इसी को मज़बूती से थाम लो और फिर से गुमराही में मुब्तला होने से बच जाओ। यानि तुम्हारी फ़ितरत के अन्दर हक़ की पहचान मौजूद है। इसकी गवाही खुद तुम्हारी अपनी ज़बानें दे रही हैं। तुम अल्लाह को अपना और इस कायनात का खालिक़ व मालिक मानते हो, ज़बान से इसका इक़रार करते हो। तो यहाँ तक पहुँच कर फिर क्यों गुमराही में औंधे मुँह गिर जाते हो। तुम्हारी अक़्ल कहाँ उलट जाती है?

आयत 33

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٣

"इसी तरह तेरे रब की बात सच साबित हुई नाफ़रमान लोगों पर कि वह ईमान नहीं लाएँगे।"

आयत 34

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۭ

"इनसे पूछिए क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा भी है जो तख्लीक़ करता हो पहली मरतबा और फिर उसे दोबारा भी बनाए?"

قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝٣٤

"आप कहिये सिर्फ़ अल्लाह ही है जो पहली मरतबा भी पैदा करता है, फिर वह उसे दोबारा भी बनाएगा, तो फिर तुम कहाँ से पलटाए जा रहे हो?"

फिर तुम यह किस उल्टी राह पर चलाए जा रहे हो? तुम कहाँ औंधे हुए जाते हो?

आयत 35

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ۭ

"इनसे पूछिए कि है कोई तुम्हारे शरीकों में से जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई कर सके?"

قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ۭ

"आप कहिये कि अल्लाह ही है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है।"

اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ

"तो क्या जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है वह ज़्यादा मुस्तहिक़ है इसका कि उसकी पैरवी की जाए या वह जो खुद हिदायत नहीं पा सकता, इल्ला यह कि उसकी रहनुमाई की जाए?"

तमाम मख्लूक़ को हिदायत देने वाला अल्लाह है। चुनाँचे हिदायत व रहनुमाई के लिये सब उसी के सामने दस्ते सवाल दराज़ करते हैं। खुद नबी मुकर्रम ﷺ भी अल्लाह ही से यह दुआ माँगते थे {اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ}। तो भला वह जो हिदायत देता है उसकी बात मानी जानी चाहिये या उनकी जो खुद हिदायत के मोहताज हों?

فَمَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝۳۵

"तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले करते हो!"

आयत 36

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ۭ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْــًٔـا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝

"और नहीं पैरवी कर रहे इनमें से अक्सर मगर गुमान की, और यह गुमान किसी भी दर्जे में (इंसान को) हक़ से मुस्तगना नहीं कर सकता। यक़ीनन अल्लाह जानता है जो कुछ ये कर रहे हैं।"

आयत 37

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰي مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

"और यह क़ुरान ऐसी शय नहीं है जिसको अल्लाह के सिवा (कहीं और) घड लिया गया हो"

यह क़ुरान किसी इंसान के हाथों तसनीफ़ (publish) की जाने वाली किताब नहीं है।

وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

"बल्कि यह तो तस्दीक़ (करते हुए आया) है उसकी जो इसके सामने है और (इसमें तमाम) शरीअत की तफ़सील है, इसमें कोई शुबह नहीं है कि यह तमाम जहानों के रब की तरफ़ से है।"

आयत 38

اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَرٰٮهُ‌ؕ

“क्या ये कहते हैं कि इसको पैगम्बर ने ख़ुद घड लिया है?”

ये लोग इस क़ुरान के बारे में कहते हैं कि यह मोहम्मद (ﷺ) की अपनी तसनीफ़ है। इन्होंने ख़ुद ये कलाम मौज़ूं कर लिया है।

قُلۡ فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّثۡلِهٖ وَادۡعُوۡا مَنِ اسۡتَطَعۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝۳۸

“आप (इनसे) कहिये कि ले आओ तुम भी एक सूरत इस जैसी और (इसके लिये) बुला लो जिसको बुला सकते हो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो।”

यह चैलेंज सूरतुल बक़रह में भी है जो कि मदनी है, जबकि मक्की सूरतों में तो इसे मुतअद्दिद बार दोहराया गया है। सूरह हूद में इस जैसी दस सूरतें बना कर ले आने का चैलेंज दिया गया है और यहाँ इस सूरत में यह चैलेंज गोया बरसबीले तनज़्ज़ल आख़री दर्जे में पेश किया गया है कि चलो इस जैसी एक सूरत ही बना कर दिखा दो।

आयत 39

بَلۡ كَذَّبُوۡا بِمَا لَمۡ يُحِيۡطُوۡا بِعِلۡمِهٖ وَلَمَّا يَاۡتِهِمۡ تَاۡوِيۡلُهٗ‌ ؕ

“(नहीं) बल्कि इन्होंने तकज़ीब की है उस चीज़ की जिसके इल्म का ये इहाता नहीं कर सके और अभी नहीं आई इनके पास इसकी तावील।”

यानि ये लोग क़ुरान के उलूम का इदराक और इसके पैग़ाम का शऊर हासिल नहीं कर सके। इसके अलावा अज़ाब के बारे में इनको दी गई धमकियों का मिस्दाक़े खारज़ी भी अभी इन पर ज़ाहिर नहीं हुआ, इसलिये वह इस सब कुछ को महज़ डरावा और झूठ समझ रहे हैं। क़ुरान में इन लोगों को बार-बार धमकियाँ दी गई थीं कि अल्लाह का इन्कार करोगे तो उसकी पकड़ में आ जाओगे, उसकी तरफ़ से बहुत सख्त अज़ाब तुम पर आएगा। यह अज़ाबे मौऊद चूँकि ज़ाहिरी तौर पर उन पर नहीं आया, इसी लिये वह क़ुरान को भी झुठला रहे हैं।

كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٩

“इसी तरह झुठलाया था उन लोगों ने भी जो इनसे पहले थे, तो देखो कैसा अंजाम हुआ ज़ालिमों का!”

आयात 40 से 52 तक

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ۭ
وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝٤٠ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ
لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْۗـــُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا
بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٤١ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ

إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ
﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ
وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ
شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ
يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ
يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ
اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾ وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ
الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ ۖ
فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا
إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا
يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾ قُلْ
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَاذَا
يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ

اٰمَنۡتُمۡ بِهٖ ؕ آٰلۡـٰٔنَ وَقَدۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ
قِيۡلَ لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ذُوۡقُوۡا عَذَابَ الۡخُلۡدِ ۚ هَلۡ تُجۡزَوۡنَ
اِلَّا بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡسِبُوۡنَ ﴿۵۲﴾

आयत 40

وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يُّؤۡمِنُ بِهٖ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ لَّا يُؤۡمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعۡلَمُ بِالۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۴۰﴾

"इनमें वह भी हैं जो इस पर ईमान ले आयेंगे और वह भी हैं जो ईमान नहीं लायेंगे, और आपका रब इन मुफ़सिदों से ख़ूब वाक़िफ़ है।"

आयत 41

وَاِنۡ كَذَّبُوۡكَ فَقُلۡ لِّىۡ عَمَلِىۡ وَلَكُمۡ عَمَلُكُمۡ ۚ

"और अगर ये लोग आपको झुठला दें तो आप कहिये कि मेरे लिये मेरा अमल है और तुम्हारे लिये तुम्हारा अमल।"

اَنۡتُمۡ بَرِيۡٓـُٔوۡنَ مِمَّاۤ اَعۡمَلُ وَاَنَا بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۴۱﴾

"तुम बरी हो मेरे अमल की ज़िम्मेदारी से और मै बरी हूँ तुम्हारे आमाल की ज़िम्मेदारी से।"

ना मेरे अमल की कोई ज़िम्मेदारी तुम लोगों पर है और ना तुम्हारे किये का मैं ज़िम्मेदार हूँ।

आयत 42

وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّسۡتَمِعُوۡنَ اِلَيۡكَ ؕ

"और इनमें ऐसे लोग भी हैं जो बड़ी तवज्जोह से सुनते हैं आप (की बातों) को।"

اَفَاَنۡتَ تُسۡمِعُ الصُّمَّ وَلَوۡ كَانُوۡا لَا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿۴۲﴾

"तो क्या आप बहरों को सुना सकते हैं चाहे वह अक़्ल से काम ना लेते हों!"

ये लोग तो पहले से ही ना सुनने का तहिया (निश्चय) किये हुए हैं, इसलिये इनके कान हक़ की तरफ़ से बहरे हो चुके हैं। इनका आपकी बातों को सुनना सिर्फ़ दिखावे का सुनना है ताकि दूसरे लोगों को बता सकें कि हाँ जी हम तो मोहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) की महफ़िल में भी जाते हैं, सारी बातें भी सुनते हैं मगर इनमें ऐसी कोई बात है ही नहीं जिसे माना जाए।

आयत 43

وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّنۡظُرُ اِلَيۡكَ ؕ

"और इनमें ऐसे भी हैं जो आपको देखते हैं।"

اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْىَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾

"तो क्या आप अंधों को हिदायत देंगे ख्वाह वह देखते ना हों!"

चुनाँचे जब इन लोगों की नीयत ही हिदायत हासिल करने की नहीं है, जब इनके दिल ही अंधे हो चुके हैं तो आपकी मजलिस में आना और आपकी सोहबत में बैठना, उनके लिये हरगिज़ मुफ़ीद नहीं हो सकता।

आयत 44

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

"यक़ीनन अल्लाह इंसानों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं करता, बल्कि लोग ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म ढाते हैं।"

आयत 45

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً

"और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा (तो वह महसूस करेंगे) जैसे नहीं रहे वह मगर दिन की एक घड़ी, वह एक-दूसरे को पहचान रहे होंगे।"

مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ

उन्हें दुनिया और आलम-ए-बरज़ख़ में गुज़रा हुआ वक़्त ऐसे महसूस होगा जैसे कि वह एक दिन का कुछ हिस्सा था।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝۴۵

"वह लोग बड़े ख़सारे का शिकार हुए जिन्होंने झुठला दिया अल्लाह की मुलाक़ात को और ना हुए वह हिदायत पाने वाले।"

आगे अज़ाब की उस धमकी का ज़िक्र आ रहा है जिसके बारे में आयत 39 में फ़रमाया गया था {وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيْلُهٗ} कि इसकी तावील अभी उनके पास नहीं आई।

आयत 46

وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ

"और अगर हम दिखा दें आपको उसमें से कुछ (अज़ाब) जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या (इससे पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें"

فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ۝٤٦

"पस इन्हें हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है, फिर अल्लाह गवाह है उस पर जो वह कर रहे हैं।"

यानि आख़री मुहासबा तो इनका क़यामत के दिन होना ही है, मगर हो सकता है कि यहाँ दुनिया में भी सज़ा का कुछ हिस्सा इनके लिये मुख़तस कर दिया जाए। जैसा कि बाद में मुशरिकीने मक्का पर अज़ाब आया। उन पर आने वाले इस अज़ाब का अंदाज़ पहली क़ौमों के अज़ाब से मुख्तलिफ़ था। इस अज़ाब की पहली क़िस्त जंगे बदर में इनके सत्तर सरदारों के क़त्ल और ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त की सूरत में सामने आई, जबकि दूसरी और आख़री क़िस्त 9 हिजरी में वारिद हुई जब इन्हें अल्टीमेटम दे दिया गया: (सूरह तौबा: 2) {فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ.....} कि अब तुम्हारे लिये सिर्फ़ चंद माह की मोहलत है, इसमें ईमान ले आओ वरना क़त्ल कर दिए जाओगे। अहले मक्का के साथ अज़ाब का मामला पहली क़ौमों के मुक़ाबले में शायद इसलिये भी मुख्तलिफ़ रहा कि पहली क़ौमों की निस्बत इनके यहाँ ईमान लाने वालों की तादाद काफ़ी बेहतर रही। मसलन अगर हज़रत नूह अलै. की साढ़े नौ सौ साल की तब्लीग से अस्सी लोग ईमान लाए (मेरी राय में वह लोग अस्सी भी नहीं थे) तो यहाँ मक्का में हुज़ूर ﷺ की बारह साल की मेहनत के नतीजे में अहले ईमान की तादाद इससे दो गुना थी और इनमें हज़रत अबु बकर, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत

उस्मान, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत उमर और हज़रत हम्ज़ा रज़ि. जैसे बड़े-बड़े लोग भी शामिल थे।

आयत 47

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ

"और हर उम्मत के लिये एक रसूल (भेजा गया) है।"

فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

"फिर जब आया उनका रसूल तो उनके माबैन अद्ल के साथ फ़ैसला कर दिया गया और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया गया।"

इसकी वज़ाहत के लिये हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत शोएब, हज़रत लूत और हज़रत मूसा अलै. की क़ौमों के मामलात को ज़हन में रखिये।

आयत 48

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

"और वह कहते हैं कि कब यह (अज़ाब का) वादा पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो?"

आयत 49

قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ

"(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये कि मैं तो ख़ुद अपनी जान के लिये भी कोई इख्तियार नहीं रखता, ना किसी ज़र्र का ना नफ़े का, सिवाय इसके जो अल्लाह चाहे।"

لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ

"हर उम्मत के लिये एक वक़्त मुअय्यन है।"

जैसे हर उम्मत के लिये एक रसूल है, इसी तरह हर उम्मत के लिये उसकी अजल (मोहलत की मुद्दत) भी मुक़र्रर कर दी गई है। अल्लाह की मशियत और हिकमत के मुताबिक़ उनके लिये मुक़र्रर करदा वक़्त बहरहाल पूरा होकर रहता है।

اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۴۹﴾

"जब उनका वक़्त आ जाता है तो फिर ना तो वह उसको एक घड़ी मौअख्खर कर सकते हैं और ना ही उसे पहले ला सकते हैं।"

आयत 50

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कहिये क्या तुमने गौर किया कि अगर तुम्हारे ऊपर अल्लाह का अज़ाब (नागहाँ) आ धमके रात को या दिन के वक़्त, तो वह क्या शय है

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ۵۰

जिसके बल पर यह मुजरिम जल्दी मचा रहे हैं?"

यानि यह जो तुम सीना तान कर कहते हो कि ले आओ अज़ाब! और फिर कहते हो कि आ क्यों नहीं जाता हम पर अज़ाब! और फिर इस्तहज़ाइया (मज़ाकिया) अंदाज़ में इस्तफ़सार (सवाल) करते हो कि यह अज़ाब का वादा कब पूरा होने जा रहा है? तो कभी तुम लोगों ने इस पहलु पर भी गौर किया है कि अगर वह अज़ाब किसी वक़्त अचानक तुम पर आ ही गया, रात की किसी घड़ी में या दिन के किसी लम्हे में, तो उससे हिफ़ाज़त के लिये तुमने क्या बंदोबस्त कर रखा है? आख़िर तुम लोग किस बल बूते पर अज़ाब को ललकार रहे हो? किस चीज़ के भरोसे पर तुम इस तरह जसारतें कर रहे हो?

आयत 51

اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ۭ اٰۗلْــٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۵۱

"फिर क्या जब वह (अज़ाब) वाक़ेअ हो जाएगा तब तुम लोग इस पर ईमान लाओगे? (उस वक़्त कहा जाएगा) क्या अब (ईमान ला रहे हो)? और इसी की तो तुम जल्दी मचा रहे थे।"

अज़ाब जब वाक़िअतन ज़ाहिर हो जाएगा तो उस वक़्त ईमान लाने का कोई फ़ायदा नहीं होगा।

आयत 52

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾

"फिर कहा जाएगा इन ज़ालिमों से कि अब दाइमी अज़ाब का मज़ा चखो। तुम्हें बदला नहीं दिया जा रहा है मगर तुम्हारे अपने ही करतूतों का।"

आयात 53 से 60 तक

وَيَسْتَنْبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ۭ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ڤ وَمَآ
اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي
الْاَرْضِ لَافْـتَدَتْ بِهٖ ۭ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا
الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ
﴿٥٤﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ
اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَھُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُـحْيٖ
وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾ يٰٓاَيُّھَا النَّاسُ قَدْ
جَاۗءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَاۗءٌ لِّمَا فِي
الصُّدُوْرِ ڏ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ

اللّٰهِ وَبِرَحۡمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلۡيَفۡرَحُوۡا ؕ هُوَ خَيۡرٌ مِّمَّا
يَجۡمَعُوۡنَ ﴿۵۸﴾ قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ مَّاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ لَكُمۡ مِّنۡ رِّزۡقٍ
فَجَعَلۡتُمۡ مِّنۡهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلۡ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمۡ اَمۡ
عَلَى اللّٰهِ تَفۡتَرُوۡنَ ﴿۵۹﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِيۡنَ يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى
اللّٰهِ الۡكَذِبَ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوۡ فَضۡلٍ عَلَى
النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿۶۰﴾

आयत 53

وَيَسۡتَنۡۢبِـُٔوۡنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ

"और (ऐ नबी ﷺ!) ये लोग आपसे पूछते हैं कि क्या ये वाक़ई हक़ है?"

जैसे क़ुरान बार-बार अपने मुखाल्फ़ीन से मुतजस्साना अंदाज़ में सवाल (searching questions) करता है, इसी तरह मुशरिकीन भी हुज़ूर ﷺ से searching अंदाज़ में सवाल करते थे। यहाँ उनका यह सवाल नक़ल किया गया है कि जो कुछ आप कह रहे हैं क्या वाक़ई यह सच है? क्या आपको खुद भी इसका पूरा-पूरा यक़ीन है?

قُلۡ اِىۡ وَرَبِّىۡۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ
وَمَاۤ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ﴿۵۳﴾

"आप कह दीजिये कि हाँ मेरे रब की क़सम! यक़ीनन वह हक़ है, और तुम (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते।"

इन अल्फ़ाज़ में बहुत ज़्यादा ताकीद और शिद्दत है।

आयत 54

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ

“और अगर किसी गुनाहगार जान के पास ज़मीन की सारी दौलत भी हो तो वह उसे उस (अज़ाब) के बदले में दे डाले।”

وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ

“और वह अपनी नदामत को छुपायेंगे जब वह देखेंगे अज़ाब को।”

وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝۵۴

“और उनके दरमियान इन्साफ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा।”

आयत 55

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

“आगाह हो जाओ! जो कुछ भी है आसमानों और ज़मीन में वह अल्लाह ही की मिलकियत है।”

اَلَآ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰہِ حَقٌّ وَّلٰکِنَّ اَکۡثَرَھُمۡ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۵۵﴾

"आगाह हो जाओ! यक़ीनन अल्लाह का वादा हक़ है लेकिन इनकी अक्सरियत इल्म नहीं रखती।"

आयत 56

ھُوَ یُحۡیٖ وَیُمِیۡتُ وَاِلَیۡہِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۵۶﴾

"वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है और उसी की तरफ़ तुम्हें लौट कर जाना है।"

अगली दो आयात अज़मते क़ुरान के ज़िमन में एक बेश बहा ख़ज़ाना और इफ़ादियत (उपयोगिता) के ऐतबार से निहायत जामेअ आतात हैं।

आयत 57

یٰۤاَیُّھَا النَّاسُ قَدۡ جَآءَتۡکُمۡ مَّوۡعِظَۃٌ مِّنۡ رَّبِّکُمۡ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوۡرِ ۬ۙ

"ऐ लोगों! आ गई है तुम्हारे पास नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से और तुम्हारे सीनों (के अमराज़) की शिफ़ा"

وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٧

"और अहले ईमान के लिये हिदायत और (बहुत बड़ी) रहमत।"

इस आयत के अल्फ़ाज़ की तरतीब (मौएज़ा, शिफ़ा, हिदायत और रहमत) बहुत पुर हिकमत है। सूरह बक़रह की आयत 74 में इन्सान के दिल की सख्ती का ज़िक्र इस तरह किया गया है: {ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ....}। दरअसल दिल की सख्ती ही वह बुनियादी मर्ज़ है जिसके बाइस आला से आला कलाम भी किसी इन्सान पर बेअसर होकर रह जाता है: *"मर्दे नादाँ पर कलामे नर्म व नाज़ुक बेअसर।"* चुनाँचे क़ुबूले हिदायत के लिये सबसे पहले दिलों की सख्ती को दूर करना ज़रूरी है। जैसे बारिश से फ़ायदा उठाने के लिये ज़मीन को नर्म करना पड़ता है, सख्त ज़मीन बारिश से कुछ फ़ायदा नहीं उठा सकती, बारिश का पानी ऊपर ही ऊपर से बह जाता है, उसके अंदर जज़्ब नहीं होता। इसी तरह अगर इन्सान का माअदा (पेट) ही ख़राब हो तो कोई दूसरी दवाई अपना असर नहीं दिखाती। लिहाज़ा इन्सान की किसी भी बीमारी के इलाज के लिये पहले उसके माअदे को दुरुस्त करना ज़रूरी है।

दिलों की सख्ती को दूर करने के लिये मौअस्सर तरीन नुस्खा वाअज़ व नसीहत (मौअज़ा) है। जब वाअज़ और नसीहत से दिलों में गुदाज़ पैदा होगा तो फिर क़ुरान उन पर दवाई की मानिन्द असर करके तकब्बुर, हसद, बुग्ज़, हुब्बे दुनिया वगैरह तमाम अमराज़ को दूर कर देगा। हुब्बे दुनिया में दौलत, औलाद, बीवी, शोहरत वगैरह की तमाम

मोहब्बतें शामिल हैं। मुलाहेज़ा हो सूरह आले इमरान की आयत 14:

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ

आयत ज़ेरे मुताअला में अल्फ़ाज़ की तरतीब पर गौर किया जाए तो यह हक़ीकत सामने आती है कि एक इन्सान के हक़ में क़ुरान सबसे पहले वाअज़ और नसीहत है, फिर तमाम अमराज़े क़ल्ब के लिये शिफ़ा और फिर हिदायत। क्योंकि जब दिल से बीमारी निकल जाएगी, दिल शिफ़ायाब होगा तब ही इंसान क़ुरान की हिदायत और रहनुमाई को अमलन इख्तियार करेगा, और जब इंसान ये सारे मराहिल तय करके क़ुरान की हिदायत के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी को ढाल लेगा तो फिर उसको ईनामे ख़ास से नवाज़ा जाएगा और वह है अल्लाह की ख़ुसूसी रहमत। क्योंकि यह क़ुरान रब्बे रहमान की रहमानियत का मज़हरे अतम है: {اَلرَّحْمٰنُ} {عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ}।

आयत 58

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ

"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कह दीजिये कि यह (क़ुरान) अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से (नाज़िल हुआ) है।"

यह क़ुरान अल्लाह के फ़ज़ल और रहमत का मज़हर और बनी नौए इंसान पर उसका बहुत बड़ा अहसान है। यह सबसे

बड़ी दौलत है जो अल्लाह तआला ने नौए इंसानी को अता की है।

"तो चाहिये कि लोग इस पर ख़ुशियाँ मनाएँ!" فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ۭ

"फ़रह" के मायने हैं ख़ुशी से फूले ना समाना, यानि ख़ुशी के जज़्बे में हद से बढ़ जाना, इस लिहाज़ से यह जज़्बा शरीअत-ए-इस्लामी में क़ाबिले मज़म्मत है और यही वज़ह है कि यह लफ्ज़ क़ुरान में ज़्यादातर मनफ़ी मफ़हूम में आया है। जैसे सूरह अल क़सस (आयत: 76) में क़ारून के ज़िक्र में ये अल्फ़ाज़ आए हैं: {اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ}। लेकिन यहाँ पर तो ऐलाने आम हो रहा है कि अगर "फ़रह" करना ही है तो दौलते क़ुरान पर करो! अगर तुम्हें इतराना ही है तो नेअमते क़ुरान पर इतराओ! और अगर जश्न ही मनाना है तो जश्ने क़ुरान मनाओ!

"वह कहीं बेहतर है उन चीज़ों से जो वह जमा करते हैं।" هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝۵۸

ये माल व दौलते दुनिया, ये सामाने अराईश व ज़ेबाईश, ये आश्याए आसाईश, ये रंगा-रंग नेअमतें, गर्ज़ इस दुनिया में इंसान अपने लिये जो कुछ भी इकठ्ठा करता है, उस सब कुछ से कहीं बेहतर क़ुरान की दौलत है।

इन दो आयात में क़ुरान की अहमियत व अज़मत के बयान में जो ताकीद और जलाल है उसकी क़दरदानी का तक़ाज़ा है कि तमाम मुसलमान इस तस्सवुर को हर्ज़े जान बना लें, इन आयात को ज़बानी याद करें, अल्फ़ाज़ की तरतीब को मद्देनज़र रखते हुए इनसे इस्तफ़ादा की कोशिश करें और क़ुरान की तालीम व तफ़हीम के ज़रिये से दिल को

नर्म और गुदाज़ करने का सामान करें, ताकि इसके असरात दिल के अन्दर जज़्ब होकर अपना रंग जमाएँ (*चूं बजां दर रफ्त जां दीगर शूद*)। और इस तरह क़ुरान के ज़रिये अपनी दुनिया-ए-दिल व जान में इन्क़लाब बरपा करें, ताकि यह इनके लिये शिफ़ा, हिदायत और रहमत बन जाए। आमीन!

आयत 59

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ

"इनसे कहिये कि तुमने कभी गौर किया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये जो रिज़्क़ उतारा है तुमने उसमे से (अज़ ख़ुद) किसी को हराम क़रार दे दिया और किसी को हलाल!"

قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۹﴾

"इनसे पूछिये क्या अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर इफ़तरा कर रहे हो?"

सूरतुल अनआम में उन चीज़ों की तफ़सील बयान हुई है जिन्हें वह लोग अज़ ख़ुद हराम या हलाल क़रार दे लेते थे। सूरतुल मायदा में भी उनकी ख़ुद साख्ता शरीअत का ज़िक्र है।

आयत 60

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

"और जो लोग अल्लाह से झूठी बातें मंसूब करते हैं, क़यामत के दिन के बारे में उनका क्या गुमान है?"

वह क्या ख्याल रखते हैं कि उस दिन इस जुर्म के बदले में उनके साथ कैसा सुलूक होगा?

اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۠ ۝ ٦٠

"यक़ीनन अल्लाह तो इन्सानों के हक़ में बहुत फज़ल वाला है, लेकिन उनकी अक्सरियत शुक्र गुज़ार नही है।"

आयात 61 से 70 तक

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا
تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ
تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ
ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاۗءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ
وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ ٦١ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهِ

لَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۶۲﴾ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
وَكَانُوۡا يَتَّقُوۡنَ ﴿۶۳﴾ لَهُمُ الۡبُشۡرٰى فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا
وَفِى الۡاٰخِرَةِ‌ ؕ لَا تَبۡدِيۡلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ‌ ؕ ذٰ لِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ
الۡعَظِيۡمُ ﴿۶۴﴾ وَلَا يَحۡزُنۡكَ قَوۡلُهُمۡ‌ ۘ اِنَّ الۡعِزَّةَ لِلّٰهِ
جَمِيۡعًا‌ ؕ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۶۵﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَنۡ فِى
السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ‌ ؕ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيۡنَ
يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ‌ ؕ اِنۡ يَّتَّبِعُوۡنَ اِلَّا الظَّنَّ
وَاِنۡ هُمۡ اِلَّا يَخۡرُصُوۡنَ ﴿۶۶﴾ هُوَ الَّذِىۡ جَعَلَ لَـكُمُ
الَّيۡلَ لِتَسۡكُنُوۡا فِيۡهِ وَالنَّهَارَ مُبۡصِرًا‌ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰ لِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّسۡمَعُوۡنَ ﴿۶۷﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا
سُبۡحٰنَهٗ‌ ؕ هُوَ الۡغَنِىُّ‌ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ‌ ؕ
اِنۡ عِنۡدَكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍۢ بِهٰذَا‌ ؕ اَتَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ مَا
لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶۸﴾ قُلۡ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ
الۡكَذِبَ لَا يُفۡلِحُوۡنَ ﴿۶۹﴾ مَتَاعٌ فِى الدُّنۡيَا ثُمَّ اِلَيۡنَا
مَرۡجِعُهُمۡ ثُمَّ نُذِيۡقُهُمُ الۡعَذَابَ الشَّدِيۡدَ بِمَا كَانُوۡا
يَكۡفُرُوۡنَ ﴿۷۰﴾

आयत 61

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ

"और (ऐ नबी ﷺ!) नहीं होते आप किसी भी कैफ़ियत में और नहीं पढ़ रहे होते आप क़ुरान में से कुछ और (ऐ मुसलमानों!) तुम नहीं कर रहे होते कोई भी (अच्छा) अमल"

اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ

"मगर यह कि हम तुम्हारे पास मौज़ूद होते हैं जब तुम उसमें मसरूफ़ होते हो।"

इस अंदाज़े तखातब (speech) में एक ख़ास कैफ़ है। पहले वाहिद के सीगे (एकवचन) में हुज़ूर अकरम ﷺ से ख़िताब है और आप ﷺ को ख़ुशख़बरी सुनाई जा रही है कि आप जिस कैफ़ियत में भी हों, क़ुरान पढ़ रहे हों या पढ़ कर सुना रहे हों, हम ब-ज़ाते ख़ुद आपको देख रहे होते हैं, आपकी आवाज़ सुन रहे होते हैं। फिर इसी खुशख़बरी को जमा के सीगे (बहुवचन) में तमाम मुसलमानों के लिये आम कर दिया गया है कि तुम लोग जो भी भलाई कमाते हो, क़ुर्बानियाँ देते हो, ईसार (त्याग) करते हो, हम खुद उसे देख रहे होते हैं। हम तुम्हारे एक-एक अमल के गवाह और क़दरदान हैं। हमारे यहाँ अपने बन्दों के बारे में तगाफ़िल या नाक़दरी नहीं है।

وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٦١﴾

"और नहीं गायब होती आपके रब से ज़मीन में एक ज़र्रा के बराबर भी कोई शय और ना आसमानों में, और ना ही इससे कमतर कोई शय और ना बड़ी, मगर यह कि वह एक रौशन किताब में दर्ज है।"

कोई ज़र्रा बराबर चीज़ या उससे छोटी या बड़ी आसमानों और ज़मीन में ऐसी नहीं है जो कभी रब्बे ज़ुल जलाल की नज़रों से पोशीदा हो गई हो और वह एक रौशन किताब में दर्ज ना हो। यह रौशन किताब अल्लाह तआला का इल्मे क़दीम है।

आयत 62

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

"आगाह हो जाओ! अल्लाह के दोस्तों पर ना कोई खौफ़ है और ना वह ग़मगीन होंगे।"

ये औलिया अल्लाह कौन लोग हैं? ये कोई अलैहदा नौअ (species) नहीं हैं, और ना ही इसके लिये कोई ख़ास लिबास ज़ेब तन करने या कोई मख्सूस हुलिया बनाने की

ज़रूरत है, बल्कि औलिया अल्लाह वह लोग हैं जो ईमाने हक़ीकी से बहरामंद हों, उनके दिलों में यक़ीन पैदा हो चुका हो और वह अल्लाह के फ़ज़लो करम से दर्जा-ए-"अहसान" पर फ़ाएज़ हो चुके हों, जिसका ज़िक्र "हदीसे जिब्राइल" में हुआ है:((اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ فَاِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهٗ يَرَاكَ))[1] अल्लाह तआला अपने इन ख़ास बन्दों की जिस तरह पज़ीराई फ़रमाता है इसका अंदाज़ सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 257 में इस तरह बयान हुआ है: {اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ} "अल्लाह वली है अहले ईमान का, उन्हें निकालता है अंधेरों से रोशनी की जानिब।" आयत ज़ेरे नज़र में भी उन्हें खुशख़बरी सुनाई गई है कि ऐसे लोग खौफ़ और हुज़्न से बिल्कुल बेनियाज़ होंगे। बहरहाल इस सिलसिले में एक बहुत अहम नुक्ता लायक़-ए-तव्वजो है कि जो अल्लाह का दोस्त होगा उसके अंदर अल्लाह की गैरत व हमियत भी होगी। वह अल्लाह के दीन को पामाल होते देख कर तड़प उठेगा। वह अल्लाह के शाएर की बेहुरमती को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकेगा। वह अल्लाह के दीन को ग़ालिब करने के लिये अपना तन-मन-धन क़ुर्बान कर देगा। गोया दुनियवी ज़िंदगी में ये मैयार और तर्ज़े अमल औलिया अल्लाह की पहचान है। अगली आयत में मज़ीद वज़ाहत फरमा दी गई कि ये औलिया अल्लाह कौन लोग हैं:

आयत 63

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَکَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾

"वह लोग जो साहिबे ईमान हों और तक़वा की रविश इख्तियार करें।"

और यह तक़वा किस तरह अहले ईमान को दर्जा-ब-दर्जा बुलंद करता चला जाता है इसकी तफ़सील हम सूरतुल मायदा की इस आयत के ज़िमन में पढ़ चुके हैं: {اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ} (आयत 93)।

आयत 64

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۭ

"उनके लिये दुनिया की ज़िन्दगी में भी बशारतें हैं और आख़िरत में भी।"

इन बशारतों के बारे में हम सूरतुल तौबा की आयत नम्बर 52 में पढ़ चुके हैं: {قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۭ} यानि हमारे लिये तो दो अच्छाईयों के सिवा किसी तीसरी चीज़ का तस्सवुर ही नहीं है, हमारे लिये तो बशारत ही बशारत है। अगर बिलफर्ज़ दुनिया में कोई तकलीफ़ आ भी जाए तो भी कोई गम नहीं, क्योंकि हमारे ऊपर जो भी तकलीफ़ आती है वह हमारे रब ही की तरफ़ से आती है। जैसे फ़रमाया गया: {قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ} (सूरह तौबा:51) चुनाँचे इसमें घबराने की क्या बात है? वह

हमारा दोस्त है, और दोस्त की तरफ़ से अगर कोई तकलीफ़ भी आ जाए तो सिर आँखों पर। हमें मालूम है कि इस तकलीफ़ में भी हमारे लिये खैर और भलाई ही होगी।

لَا تَبۡدِیۡلَ لِکَلِمٰتِ اللّٰہِ ؕ ذٰلِکَ ہُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِیۡمُ ﴿ؕ۶۴﴾

"अल्लाह की बातों में कोई तब्दीली नहीं हो सकती। यही तो है बहुत बड़ी कामयाबी।"

आयत 65

وَ لَا یَحۡزُنۡکَ قَوۡلُہُمۡ

"और (ऐ नबी ﷺ!) इनकी बातें आपको रंजीदा ना करें।"

اِنَّ الۡعِزَّۃَ لِلّٰہِ جَمِیۡعًا ؕ ہُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ ﴿۶۵﴾

"इज्ज़त कुल की कुल अल्लाह के इख्तियार में है, वह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।"

आयत 66

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰہِ مَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنۡ فِی الۡاَرۡضِ ؕ

"आगाह हो जाओ! अल्लाह ही के (ममलूक) हैं जो कोई भी आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं।"

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ

"और ये लोग जो अल्लाह के अलावा (उसके) शरीकों को पुकार रहे हैं वह किसी चीज़ का इत्तेबाअ नहीं कर रहे।"

اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾

"वह तो ज़न्न व तखमीन ही के पीछे पड़े हैं और सिर्फ़ अटकल से काम लेते हैं।"

आयत 67

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ

"वही है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो और दिन को बना दिया रौशन।"

रात को पुरसुकून बनाया ताकि रात के वक़्त आराम करो, और दिन को रौशन बनाया ताकि उसमें अपनी मआशी ज़िम्मेदारियाँ निभाओ और दूसरे काम-काज निपटाओ।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

"यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।"

आयत 68

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبۡحٰنَهٗ ؕ هُوَ الۡغَنِیُّ ؕ

"इन्होंने कहा कि अल्लाह ने औलाद इख्तियार की है, (वह ऐसी बातों से) पाक है। वह बेनियाज़ है।"

अल्लाह की शान इससे बहुत बुलंद है कि उसे औलाद की हाजत हो। यहाँ "गनी" का लफ्ज़ इस लिहाज़ से बहुत अहम है। औलाद की तमन्ना आदमी इसलिये करता है कि उसका सहारा बने और मरने के बाद उसके ज़रिये दुनिया में उसका नाम बाक़ी रह जाए। अल्लाह तआला ऐसी हाजतों से पाक है। वह हमेशा बाक़ी रहने वाला है, वह हर हाजत से गनी और बेनियाज़ है, उसे औलाद समेत किसी चीज़ की ज़रूरत और हाजत नहीं।

لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ

"उसी का है जो कुछ है आसमानों में और जो कुछ है ज़मीन में।"

اِنۡ عِنۡدَكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ

"नहीं है तुम्हारे पास कोई सनद (दलील) इसके लिये।"

اَتَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶۸﴾

"क्या तुम अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर रहे हो वह चीज़ जिसके मुतल्लिक़ तुम्हें इल्म ही नहीं!"

तुम्हारे पास कोई इल्मी सनद या अक़्ली दलील इस बात के हक़ में नहीं है जो तुम अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर रहे हो।

आयत 69

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۞۶۹

"(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये कि जो लोग अल्लाह की तरफ़ झूठ बातें मंसूब करते हैं वह कभी फ़लाह नहीं पायेंगे।"

आयत 70

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ

"दुनिया में (इनके लिये) बरतने की कुछ चीज़ें हैं, फिर हमारी ही तरफ़ इनका लौटना है"

दुनिया की चंद रोज़ा ज़िंदगी का फायदा उठाने के लिये इन्हें कुछ साज़ो-सामान दे दिया गया है, फिर हमारी ही तरफ़ इनकी वापसी होगी।

ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۞۷۰

"फिर हम इन्हें मज़ा चखाएंगे बहुत सख्त अज़ाब का, उस कुफ़्र की वजह से जो वह करते रहे हैं।"

आयात 71 से 74 तक

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ
كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَي
اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَاۗءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ
﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا
عَلَي اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ
خَلٰۗىِٕفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ
بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَاۗءُوْھُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا
كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۭ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ
عَلٰي قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾

अब अम्बिया रुसुल के बारे में दो रुकूअ आ रहे हैं, जिनका आगाज़े सूरत में ज़िक्र हुआ था कि इनमें पहले हज़रत नूह अलै. का ज़िक्र बहुत इख्तेसार (संक्षेप) के साथ (आधे रुकूअ में) है बाद में हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र क़दरे

तफ़सील से (डेढ़ रुकूअ में) आया है। दरमियान में सिर्फ़ हवाला दिया गया है कि हमने मुख्तलिफ़ क़ौमों की तरफ़ रसूलों को भेजा, इस सिलसिले में किसी रसूल का नाम नहीं लिया गया।

आयत 71

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ

"और इनको सुनाइये नूह अलै. की ख़बर।"

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

"जब उसने कहा अपनी क़ौम से कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अगर तुम पर बड़ा भारी गुज़र रहा है मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयात के साथ नसीहत करना"

मेरा दावते हक़ के साथ खड़ा होना और तब्लीग व तज़कीर का मेरा ये अमल अगर तुम पर बहुत शाक़ गुज़र रहा है कि तुम मेरा मज़ाक़ उड़ाते हो और मुझ पर आवाज़े कसते हो तो मुझे तुम्हारी मुखालफ़त की कोई परवाह नहीं।

فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَاۗءَكُمْ

"तो मैंने बस अल्लाह पर तवक्कुल कर लिया है, पस तुम जमा करलो अपने सारे ज़राए और अपने शरीकों को (भी बुला लो)"

ثُمَّ لَا يَكُنۡ اَمۡرُكُمۡ عَلَيۡكُمۡ غُمَّةً ثُمَّ اقۡضُوۡۤا اِلَيَّ وَلَا تُنۡظِرُوۡنِ ۝۷۱

"फिर तुम पर तुम्हारा मामला किसी इश्तेबाह (error) में ना रह जाए, फिर जो फ़ैसला मेरे बारे में करना है कर गुज़रो और मुझे कोई मोहलत ना दो।"

इस तर्ज़े तखातब से अंदाज़ा हो रहा है कि हज़रत नूह अलै. का दिल अपनी क़ौम के रवैये की वजह से किस क़दर दुखा हुआ था, और ऐसा होना बिल्कुल फ़ितरी अमल था। अल्लाह के उस बन्दे ने साढ़े नौ सौ साल तक अपनी क़ौम को समझाने और नसीहत करने में दिन-रात एक कर दिया था, अपना आराम व सुकून तक क़ुर्बान कर दिया था, मगर वह क़ौम थी कि टस से मस नहीं हुई थी। बहरहाल इन अल्फ़ाज़ में अल्लाह के रसूल की तरफ़ से एक आखरी बात चैलेन्ज के अंदाज़ में कही जा रही है कि तुम लोग अपनी सारी क़ुव्वतें मुजतमा कर लो, तमाम वसाइल इकट्ठे कर लो और फिर मेरे साथ जो कर सकते हो कर गुज़रो!

आयत 72

فَاِنۡ تَوَلَّيۡتُمۡ

"फिर अगर तुम (इससे) ऐराज़ करो"

فَمَا سَاَلۡتُكُمۡ مِّنۡ اَجۡرٍؕ

"तो मैंने तुम लोगों से (कभी) कोई अज्र तो नहीं माँगा।"

यानि फिर अगर तुम इस चैलेंज का सामना ना कर सको और मेरे ख़िलाफ़ आखरी अक़दाम करने का हौसला भी ना कर पाओ तो फिर ज़रा ठंडे दिमाग से सोचो तो सही कि मैं

पिछले साढ़े नौ सौ साल से तुम्हें राहे रास्त पर लाने की जो जद्दो-जहद कर रहा हूँ उसके एवज़ मैंने तुम लोगों से कोई मुआवज़ा, कोई उजरत, कोई तारीफ़ व तौसीफ़, कोई शाबाश, अलगर्ज़ कुछ भी तलब नहीं किया। तो क्या मेरे इस तर्ज़े अमल से तुम लोगों को इतनी सी बात भी समझ में नहीं आती कि इसमें मेरा कोई ज़ाती मफ़ाद नहीं है? मालूम होता है कि वह लोग हज़रत नूह अलै. का चैलेंज क़ुबूल करके उनके ख़िलाफ़ अक़दाम करने से गुरेज़ाँ (अनिच्छुक) थे। उन्हें डर था कि अगर हमने इन्हें क़त्ल कर दिया तो हम पर कोई बड़ी मुसीबत नाज़िल हो जाएगी।

إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٧٢﴾

"मेरा अज्र तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं उसके फ़रमाबरदार बन्दों में से रहूँ।"

आयत 73

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلَائِفَ

"तो इन्होंने (फिर भी) झुठला दिया उसको, तो हमने निजात दे दी उसको और जो भी उसके साथ थे कश्ती में और उनको बना दिया जानशीन"

उन्ही लोगों को हमने ज़मीन में ख़िलाफ़त अता की।

وَاَغۡرَقۡنَا الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ۝۷۳

"और ग़र्क़ कर दिया हमने उन लोगों को जिन्होंने हमारी आयात की तकज़ीब की थी, तो देखो कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जिन्हें ख़बरदार कर दिया गया था!"

आयत 74

ثُمَّ بَعَثۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوۡمِهِمۡ فَجَآءُوۡهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ

"फिर हमने भेजा उनके बाद बहुत से रसूलों को उनकी (अपनी-अपनी) क़ौमों की तरफ़, तो वह (सबके सब) आए उनके पास रौशन दलीलें लेकर"

فَمَا كَانُوۡا لِيُـؤۡمِنُوۡا بِمَا كَذَّبُوۡا بِهٖ مِنۡ قَبۡلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطۡبَعُ عَلٰى قُلُوۡبِ الۡمُعۡتَدِيۡنَ ۝۷۴

"लेकिन वह (सारी रौशन दलीलें देखने के बावजूद भी) उस चीज़ पर ईमान लाने वाले ना बने जिसका पहले इन्कार कर चुके थे। इसी तरह हम मुहर कर दिया करते हैं हद से तजावुज़ करने वालों के दिलों पर।"

आयात 75 से 82 तक

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَمَلَا۟ىِٕهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ
﴿۷۵﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا
لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷۶﴾ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا
جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿۷۷﴾ قَالُوْٓا
اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ
لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ
﴿۷۸﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿۷۹﴾ فَلَمَّا
جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ
﴿۸۰﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ
﴿۸۱﴾ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۸۲﴾

आम तौर पर क़ुरान हकीम में अम्बिया अर्रुसुल के ज़िमन में छ: रसूलों का तज़किरा बार-बार आया है, लेकिन यहाँ इख्तसार (संक्षेप) के साथ हज़रत नूह अलै. का सिर्फ़ तीन आयात में ज़िक्र किया गया है। फिर इस एक आयत (74) में बाक़ी तमाम रसूलों का नाम लिए बग़ैर सिर्फ़

हवाला दे दिया गया है और इसके बाद हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र क़दरे तफ़सील से हुआ है।

आयत 75

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ بِاٰيٰتِنَا

"फिर भेजा हमने इनके बाद मूसा और हारून (अलै.) को फ़िरऔन और उसके सरदारों की जानिब अपनी निशानियों के साथ"

فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝75

"तो उन्होंने तकब्बुर किया और वह थे मुजरिम लोग।"

आयत 76

فَلَمَّا جَاۗءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝76

"तो जब उनके पास हक़ आया हमारी तरफ़ से तो उन्होंने कहा यह तो खुला जादू है।"

आयत 77

قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ

“मूसा ने कहा कि क्या तुम लोग हक़ के बारे में यह कह रहे हो जबकि वह तुम्हारे पास आ पहुँचा है।”

اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝۷۷

“क्या यह जादू है? और जादूगर तो कभी फ़लाह नहीं पाया करते।”

आयत 78

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا

“उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो कि हमें फेर दो उन तरीक़ों से जिन पर पाया हमने अपने आबा व अजदाद को”

وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝۷۸

“और तुम दोनों की बड़ाई क़ायम हो जाए ज़मीन में? और हम हरगिज़ तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं।”

यानि तुम दोनों (हज़रत मूसा और हारून अलै.) यहाँ अपनी बादशाही क़ायम करना चाहते हो। इस अंदेशे की वजह यह थी कि हज़रत मूसा अलै. अहले मिस्र को बंदगी-ए-रब की जो दावत दे रहे थे उससे वह मुशरिकाना निज़ाम ख़तरे में था जिस पर फिरऔन की बादशाही, उसके सरदारों की सरदारी और मज़हबी पेशवाओं की पेशवाई क़ायम थी।

आयत 79

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝٧٩

"और फ़िरऔन ने कहा कि ले आओ मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को।"

आयत 80

فَلَمَّا جَاۗءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝٨٠

"और जब वह जादूगर आ गए तो मूसा ने उनसे फ़रमाया कि डालो जो तुम डालने वाले हो।"

आयत 81

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ۭ

"और जब उन्होंने डाल दिया तो मूसा ने फ़रमाया कि तुम लोग जो कुछ लाए हो ये जादू है।"

यानि जादू वह ना था जो मैंने दिखाया था, बल्कि जादू यह है जो तुम दिखा रहे हो।

اِنَّ اللّٰهَ سَيُبۡطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصۡلِحُ عَمَلَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝۸۱

“यक़ीनन अल्लाह इसे अभी बातिल कर देगा। बेशक अल्लाह मुफ़सिदों के अमल को कामयाब नहीं करता।”

अल्लाह तआला अभी तुम्हारी शअब्दाबाज़ी (magic trick) का बातिल होना साबित कर देगा. इसे नेस्तोनाबूद कर देगा, مَنْثُوْرًا هَبَآءً कर देगा। अल्लाह तआला फ़साद बरपा करने वालों के अमल को नतीजा खेज़ नहीं होने देता।

आयत 82

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الۡحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوۡ كَرِهَ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ۝۸۲

“और अल्लाह तो हक़ को हक़ साबित करता है अपने कलिमात से, ख्वाह यह मुजरिमों को कितना ही नागवार हो।”

आयात 83 से 93 तक

فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوۡسٰۤى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنۡ قَوۡمِهٖ عَلٰى خَوۡفٍ مِّنۡ
فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۟ئِهِمۡ اَنۡ يَّفۡتِنَهُمۡ ؕ وَاِنَّ فِرۡعَوۡنَ لَعَالٍ
فِى الۡاَرۡضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ۝۸۳ وَقَالَ مُوۡسٰى
يٰقَوۡمِ اِنۡ كُنۡتُمۡ اٰمَنۡتُمۡ بِاللّٰهِ فَعَلَيۡهِ تَوَكَّلُوۡۤا اِنۡ كُنۡتُمۡ

مُّسۡلِمِیۡنَ ﴿۸۴﴾ فَقَالُوۡا عَلَی اللّٰہِ تَوَکَّلۡنَا ۚ رَبَّنَا لَا
تَجۡعَلۡنَا فِتۡنَۃً لِّلۡقَوۡمِ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿ۙ۸۵﴾ وَ نَجِّنَا بِرَحۡمَتِکَ
مِنَ الۡقَوۡمِ الۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۸۶﴾ وَ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلٰی مُوۡسٰی
وَ اَخِیۡہِ اَنۡ تَبَوَّاٰ لِقَوۡمِکُمَا بِمِصۡرَ بُیُوۡتًا وَّ اجۡعَلُوۡا
بُیُوۡتَکُمۡ قِبۡلَۃً وَّ اَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ ؕ وَ بَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ
﴿۸۷﴾ وَ قَالَ مُوۡسٰی رَبَّنَاۤ اِنَّکَ اٰتَیۡتَ فِرۡعَوۡنَ وَ مَلَاَہٗ
زِیۡنَۃً وَّ اَمۡوَالًا فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا ۙ رَبَّنَا لِیُضِلُّوۡا عَنۡ
سَبِیۡلِکَ ۚ رَبَّنَا اطۡمِسۡ عَلٰۤی اَمۡوَالِہِمۡ وَ اشۡدُدۡ عَلٰی
قُلُوۡبِہِمۡ فَلَا یُؤۡمِنُوۡا حَتّٰی یَرَوُا الۡعَذَابَ الۡاَلِیۡمَ ﴿۸۸﴾
قَالَ قَدۡ اُجِیۡبَتۡ دَّعۡوَتُکُمَا فَاسۡتَقِیۡمَا وَ لَا تَتَّبِعٰٓنِّ
سَبِیۡلَ الَّذِیۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۹﴾ وَ جٰوَزۡنَا بِبَنِیۡۤ
اِسۡرَآءِیۡلَ الۡبَحۡرَ فَاَتۡبَعَہُمۡ فِرۡعَوۡنُ وَ جُنُوۡدُہٗ بَغۡیًا
وَّ عَدۡوًا ؕ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَدۡرَکَہُ الۡغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنۡتُ اَنَّہٗ لَاۤ
اِلٰہَ اِلَّا الَّذِیۡۤ اٰمَنَتۡ بِہٖ بَنُوۡۤا اِسۡرَآءِیۡلَ وَ اَنَا مِنَ
الۡمُسۡلِمِیۡنَ ﴿۹۰﴾ آٰلۡـٰٔنَ وَ قَدۡ عَصَیۡتَ قَبۡلُ وَ کُنۡتَ
مِنَ الۡمُفۡسِدِیۡنَ ﴿۹۱﴾ فَالۡیَوۡمَ نُنَجِّیۡکَ بِبَدَنِکَ

لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ
عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا
حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۳﴾

आयत 83

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ

"तो कोई ईमान नहीं लाया मूसा पर मगर चंद नौजवान उसकी क़ौम में से"

عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ

"डरते हुए फ़िरऔन और अपने सरदारों से कि वह उनको मुसीबत में मुब्तला ना कर दें।"

उस वक़्त मिस्र पर क़िब्ती क़ौम हुक्मरान थी, जिसे क़ुरान ने "आले फ़िरऔन" कहा है और इसराइली उनके महकूम (वश में) थे। हज़रत मूसा अलै. अपनी क़ौम बनी इसराइल की आज़ादी के अलम्बरदार थे, लेकिन इसके बावजूद बनी इसराइल में से भी सिर्फ़ चंद नौजवान लड़कों ने ही आपकी दावत पर लब्बैक कहा था। दरअसल गुलाम होने की वजह से वह लोग फ़िरऔन और उसके सरदारों के मज़ालिम से खौफ़ज़दा थे। आम तौर पर हर महकूम क़ौम के साथ इसी

तरह होता है कि उसके कुछ लोग अपनी क़ौम से गद्दारी करके हुक्मरानों से मिल जाते हैं और हुक्मरान उन्हें मराआत (प्रोत्साहन) और खिताबात से नवाज़ कर उनकी वफ़ादारियाँ ख़रीद लेते हैं। चुनाँचे बनी इसराइल में से भी कुछ लोग फ़िरऔन के एजेंट बन चुके थे। इसकी सबसे बड़ी मिसाल क़ारून की है। वह हज़रत मूसा अलै. की क़ौम में से था, मगर फ़िरऔन का दरबारी और उसका एजेंट था। यही वजह थी कि वह हज़रत मूसा अलै. के ख़िलाफ़ साज़िशें करता रहता था (इसका तफ्सीली ज़िक्र सूरतुल क़सस में है)। बहरहाल बनी इसराइल के आम लोग ऐसे मुखबिरों के डर से हज़रत मूसा अलै. के क़रीब होने से गुरेज़ करते थे। नौजवान चूँकि बाहिम्मत और पुरजोश होते हैं, इसलिये वह इस तरह की इन्क़लाबी आवाज़ पर लब्बैक कहने का ख़तरा मोल ले लेते हैं, जबकि इसी क़ौम के अधेड़ उम्र लोग कम हिम्मती और मसलहतों का शिकार होते हैं। यह पूरा फ़लसफ़ा इस आयत में मौजूद है। इन आयात के नुज़ूल के वक़्त अहले मक्का में से भी मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ का साथ देने के लिये जो लोग आगे बढ़ रहे थे वह चंद बाहिम्मत नौजवान ही थे, ना कि मसलहत कोश बूढ़े।

وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِی الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿۸۳﴾

“और यक़ीनन फ़िरऔन ज़मीन में बहुत सरकशी कर रहा था, और वह यक़ीनन हद से बढ़ जाने वालों में से था।”

आयत 84

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾

"और मूसा ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अगर तुम अल्लाह पर ईमान ले आए हो तो अब उसी पर तवक्कुल भी करो अगर तुम वाक़िअतन फ़रमाबरदार बन गए हो।"

आयत 85

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾

"तो उन्होंने कहा कि हमने अल्लाह पर तवक्कुल किया। ऐ हमारे रब! तू हमें इन ज़ालिमों के लिये तख्ता-ए-मश्क़ ना बना दे।"

अल्लाह पर तवक्कुल करते हुए हम अपना मामला उसी के हवाले करते हैं। परवरदिगार! अब ऐसा ना हो कि हमारे ज़रिये से तू इनको आज़माए। जैसे अबु जहल अगर आले यासिर पर ज़ुल्म ढहाता था तो अल्लाह के यहाँ यह उसकी भी आज़माइश हो रही थी, लेकिन इस आज़माइश में तख्ता-ए-मश्क़ हज़रत यासिर और हज़रत सुमैय्या रज़ि. बन रहे थे।

आयत 86

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

“और हमें अपनी रहमत से इस काफ़िर क़ौम से निजात अता फ़रमा।”

आयत 87

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا

“और हमने वही की मूसा और उसके भाई (हारून) को कि तुम अपनी क़ौम के लिये मिस्र में कुछ घर मुअय्यन कर लो”

इन घरों में जमा होकर तुम लोग अल्लाह की इबादत किया करो। इसी तरह का इंतेज़ाम हुज़ूर ﷺ ने भी अपनी दावत के इब्तदाई ज़माने में किया था जब आप ﷺ ने दारे अरक़म को दावती और तन्ज़ीमी सरगरमियों के लिये मुख्तस (allocated) फ़रमाया था।

وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً

“और बनाओ अपने घरों को क़िब्ला रुख”

फ़िरऔन के डर से वह लोग मस्जिद तो बना नहीं सकते थे, इसलिये उन्हें हुक्म दिया गया कि अपने घरों को तामीर ही क़िब्ला रुख करो, ताकि वहाँ तुम नमाज़ें पढ़ा करो। इससे यह भी मालूम होता है कि हज़रत मूसा अलै. के ज़माने में भी क़िब्ला मुअय्यन था जबकि बैतुल मक़दस तो अभी बना ही नहीं था। बैतुल मक़दस तो हज़रत मूसा अलै. के ज़माने से एक हज़ार साल बाद हज़रत सुलेमान अलै. ने तामीर

फ़रमाया था। चुनाँचे हज़रत मूसा अलै. और आपकी क़ौम का क़िब्ला यही बैतुल्लाह था। तौरात में उनकी क़ुरबान गाहों के खैमों के बारे में तफ़सील मिलती है कि यह खैमे इस तरह नसब (installed) किये जाते थे कि जब कोई शख्स क़ुर्बानी पेश करता था तो उसका रुख सीधा क़िब्ले की तरफ़ होता था।

وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝87

“और नमाज़ क़ायम रखो, और अहले ईमान को बशारत दे दो।”

आयत 88

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ

“और मूसा ने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे परवरदिगार! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को सामाने ज़ेब व ज़ीनत और अमवाल अता कर दिये हैं दुनिया की ज़िंदगी में”

رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ

“परवरदिगार! इसलिये कि वह लोगों को गुमराह करे तेरे रास्ते से!”

इनके पास ताक़त है, इक़तदार है, इख्तियार है, दौलत है, जाह व हश्म है। लोग उनके रौब व दबदबे के खौफ़ और माल व दौलत के लालच से गुमराह हो रहे हैं। परवरदिगार!

क्या तूने उन्हें यह सब कुछ इसलिये दे रखा है कि वह तेरे बन्दों को तेरे सीधे राते से गुमराह करें?

رَبَّنَا اطۡمِسۡ عَلٰۤی اَمۡوَالِہِمۡ وَ اشۡدُدۡ عَلٰی قُلُوۡبِہِمۡ

"ऐ हमारे रब! इनके अमवाल को बरबाद कर दे और इनके दिलों में सख्ती पैदा कर दे"

فَلَا یُؤۡمِنُوۡا حَتّٰی یَرَوُا الۡعَذَابَ الۡاَلِیۡمَ ﴿۸۸﴾

"कि ये ईमान ना लाये, जब तक कि ये खुल्लम-खुल्ला देख ना लें अज़ाबे अलीम को।"

और जब वह अज़ाब को देख लेंगे तो फिर इनका ईमान इन्हें कुछ फ़ायदा नहीं देगा, क्योंकि उस वक़्त का ईमान अल्लाह के यहाँ मौअतबर नहीं है। यह हज़रत मूसा अलै. की आले फ़िरऔन से बेज़ारी की आखरी हद है। अगरचे नबी एक-एक फ़र्द के लिये ईमान का ख्वाहिशमंद होता है, मगर फ़िरऔन और उसके सरदार अहले ईमान को सताने और अज़ीयतें देने में इस हद तक आगे जा चुके थे कि हज़रत मूसा अलै. ख़ुद अल्लाह तआला से दुआ माँग रहे हैं कि ऐ अल्लाह! अब इन लोगों के दिलों को सख्त कर दे, इनके दिलों पर मुहर लगा दे, ताकि तेरा अज़ाब आने तक इन्हें ईमान नसीब ही ना हो। इसलिये कि जो कुछ इन्होंने अल्लाह और अहले ईमान की दुश्मनी में किया है उसकी सज़ा इन्हें मिल जाए।

आयत 89

قَالَ قَدۡ اُجِیۡبَتۡ دَّعۡوَتُکُمَا فَاسۡتَقِیۡمَا

"अल्लाह ने फ़रमाया कि (ठीक है) तुम दोनों की दुआ क़ुबूल कर ली गई, अब तुम दोनों भी क़ायम रहो"

ऐसा ना हो कि वक़्त आने पर तुम्हारा दिल पसीज जाए और फिर दुआ करने लगो कि ऐ अल्लाह अब इनको माफ़ फ़रमा दे!

وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِیۡلَ الَّذِیۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۹﴾

"और उन लोगों के रास्ते की पैरवी मत करना जो इल्म नहीं रखते।"

आयत 90

وَجٰوَزۡنَا بِبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ الۡبَحۡرَ

"और हमने बनी इसराइल को पार उतार दिया समंदर (या दरिया) के"

فَاَتۡبَعَہُمۡ فِرۡعَوۡنُ وَجُنُوۡدُہٗ بَغۡیًا وَّعَدۡوًا ؕ

"फिर उनका पीछा किया फ़िरऔन और उसके लश्करों ने सरकशी और ज़्यादती के गर्ज़ से।"

حَتّٰۤی اِذَاۤ اَدۡرَکَہُ الۡغَرَقُ ۙ

"यहाँ तक कि जब पा लिया उसे ग़र्क ने"

यानि जब फ़िरऔन ग़र्क होने लगा तो:

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِیْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۰﴾

"कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि कोई मअबूद नहीं सिवाय उसके जिस पर बनी इसराइल ईमान लाए हैं, और मैं)उसके(फ़रमा बरदारों में से हूँ।"

आयत 91

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۹۱﴾

"क्या अब (तू ईमान ला रहा है)? हालाँकि इससे पहले तू नाफ़रमानी करता रहा है और तू फ़साद बरपा करने वालों में से था।"

आयत 92

فَالْیَوْمَ نُنَجِّیْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰیَةً ؕ

"तो आज हम तुम्हारे बदन को बचायेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिये एक निशानी बना रहे।"

यानि तुम्हारे जिस्म तो महफ़ूज़ रखा जाएगा, इसको गलने-सड़ने नहीं दिया जाएगा ताकि बाद में आने वाले इसे देख कर इबरत हासिल कर सकें। चुनाँचे गर्क़ होने के कुछ अरसे

बाद फ़िरऔन की लाश किनारे पर पाई गई थी, सिर्फ़ उसके नाक को किसी मछली वगैरह ने काटा था, बाक़ी लाश सही सलामत थी और आज तक क़ाहेरा के अजाएब घर (म्यूज़ियम) में मौजूद है।

وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾

"और यक़ीनन बहुत से लोग हमारी आयात से गफ़लत ही बरतते रहते हैं।"

आयत 93

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰھُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ

"और हमने बनी इसराइल को बहुत ही उम्दा जगह फ़राहम कर दी और हमने उन्हें पाकीज़ा रोज़ी दी।"

فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَاۗءَھُمُ الْعِلْمُ ۭ

"फिर उन्होंने इख्तलाफ़ नहीं किया यहाँ तक कि उनके पास इल्म आ गया।"

यानि उन्होंने उस वक़्त इख्तलाफ़ किया और तफ़रक़े बरपा किये जबकि उनके पास इल्म आ चुका था। उन्होंने ऐसा नावाक़फ़ियत की बुनियाद पर मजबूरन नहीं किया था, बल्कि ये सब कुछ उनके अपने नफ्स की शरारतों का नतीजा था।

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۳﴾

"यक़ीनन आपका रब फ़ैसला करेगा उनके माबैन क़यामत के दिन, जिन चीज़ों में वह इख्तलाफ़ करते रहे थे।"

आयात 94 से 103 तक

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْــَٔـلِ الَّذِيْنَ
يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ
﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا
الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۹۷﴾ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ
فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۭ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا
عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ
اِلٰى حِيْنٍ ﴿۹۸﴾ وَلَوْ شَاۗءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ
كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۭ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا

مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾
قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي
الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ
يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ
قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ
نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا
نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

आयत 94

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ

"फिर अगर आपको कोई शक है उस चीज़ के बारे में जो हमने आप पर नाज़िल की है"

यहाँ ख़िताब बज़ाहिर मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ से है, लेकिन इस बात का तो क़तअन कोई इम्कान नहीं कि आप ﷺ को इसमें कोई शक होता, लिहाज़ा असल में रुए सुखन अहले मक्का की तरफ़ है। बाज़ अवक़ात जिससे बात करना मक़सूद होता है उसके रवैय्ये की वजह से उससे इस क़दर नफ़रत हो जाती है कि उसे बराहे रास्त मुखातिब करना मुनासिब नहीं समझा जाता। ऐसी सूरत में किसी दूसरे शख्स

से बात की जाती है ताकि असल मुखातिब बिलवास्ता तौर पर उसे सुन ले। चुनाँचे इसका मतलब यही है कि ऐ मुशरिकीने मक्का! अगर तुम लोगों को इस किताब के बारे में कोई शक है जो हमने अपने रसूल ﷺ पर नाज़िल की है:

فَسۡـَٔلِ الَّذِيۡنَ يَقۡرَءُوۡنَ الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكَ‌ۚ

"तो पूछ लीजिये उन लोगों से जिनको किताब दी गई थी आप से पहले।"

لَقَدۡ جَآءَكَ الۡحَـقُّ مِنۡ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمُمۡتَرِيۡنَ ۙ‏ ﴿۹۴﴾

"(ऐ नबी ﷺ!) आपके पास हक़ आया है आपके रब की तरफ़ से, तो हरगिज़ ना हो जाएँ आप शक करने वालों में से।"

यह उसी अंदाज़े तखातब का तसल्सुल है कि हुज़ूर ﷺ को मुखातिब करके मुशरिकीने मक्का को सुनाया जा रहा है।

आयत 95

وَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوۡنَ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۹۵﴾

"और मत हो जाना उन लोगों में से जिन्होंने अल्लाह की आयात को झुठलाया, वरना तुम हो जाओगे ख़सारा पाने वालों में से।"

आयत 96

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

"यक़ीनन जिन लोगों पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है वह ईमान नहीं लायेंगे।"

जो लोग अपनी ज़िद और हठधर्मी की वजह से क़ानूने ख़ुदावंदी की ज़द में आ चुके हैं और उनके दिलों पर आखरी मोहर लग चुकी है, अब ऐसे लोगों को ईमान नसीब नहीं होगा।

आयत 97

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

"और चाहे उनके पास सारी ही निशानियाँ आ जाएँ (अब वह ईमान नहीं लाएंगे) जब तक कि अज़ाबे अलीम को देख ना लें।"

जैसा कि फ़िरऔन का मामला हुआ कि जब गर्क़ होने लगा तब ईमान लाया।

आयत 98

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ

"तो क्यों ना हुई कोई बस्ती ऐसी जो ईमान लाती और उसे उसका ईमान नफ़ा पहुँचाता सिवाय क़ौम-ए-युनुस के?"

हज़रत युनुस अलै. नैनवा की तरफ़ मबऊस हुए थे। आपकी दावत के मुक़ाबले में आपकी क़ौम इन्कार पर अड़ी रही। जब आखरी हुज्जत के बाद उन लोगों पर अज़ाब का फ़ैसला हो गया तो हज़रत युनुस अलै. हमियते दीनी के जोश में उन्हें छोड़ कर चले गए और जाते-जाते उन्हें यह ख़बर दे गए कि अब तीन दिन के अंदर-अंदर तुम पर अज़ाब आ जाएगा, जबकि अल्लाह की तरफ़ से आपको अपनी क़ौम को छोड़ कर जाने की अभी बाज़ाबता (officially) तौर पर इजाज़त नहीं दी गई थी। अल्लाह तआला की सुन्नत यह रही है कि ऐसे मौक़ों पर रसूल अपनी मरज़ी से अपनी बस्ती को नहीं छोड़ सकता जब तक कि अल्लाह तआला की तरफ़ से बाक़ायदा हिजरत का हुक्म ना आ जाए (नबी का मामला इस तरह से नहीं होता)। मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की मिसाल हमारे सामने है कि आप ﷺ ने मुसलमानों को मदीना हिजरत करने का हुक्म दे दिया था मगर आप ﷺ ने ख़ुद उस वक़्त तक हिजरत नहीं फ़रमाई जब तक आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से बाज़ाबता तौर पर इसकी इजाज़त नही मिल गई थी। सीरत की किताबों में यहाँ तक तफ़सील मिलती है कि हज़रत अबु बकर रज़ि. ने दो ऊँटनियाँ इस मक़सद के लिये तैयार कर रखी थीं और

रोज़ाना आपसे इस्तफ़सार करते थे कि हुज़ूर! इजाज़त मिली या नहीं?

बहरहाल हज़रत युनुस अलै. के जाने के बाद अज़ाब के आसार पैदा हुए तो पूरी बस्ती के लोग अपने बच्चों, औरतों और माल-मवेशी को लेकर बाहर निकल आए और अल्लाह के हुज़ूर गिडगिडा कर तौबा की। अल्लाह के क़ानून की मुताबिक़ तो अज़ाब के आसार ज़ाहिर हो जाने के बाद ना ईमान फायदामंद होता है और ना तौबा क़ुबूल की जाती है, मगर हज़रत युनुस अलै. के वक़्त से पहले हिजरत कर जाने की वजह से उस क़ौम के मामले में नरमी इख्तियार की गई और उनकी तौबा क़ुबूल करते हुए उन पर से अज़ाब को टाल दिया गया। यूँ इंसानी तारीख़ में एक इस्तसना (exception) क़ायम हुआ कि उस क़ौम के लिये क़ानूने खुदावंदी में रियायत दी गई।

لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

"जब वह ईमान ले आए तो हमने हटा दिया उनसे दुनिया की ज़िंदगी में वह रुसवाकुन अज़ाब और एक वक़्ते मुअय्यन के लिये हमने उन्हें (फ़वायदे दुनियवी से) बहरामंद होने का मौक़ा दे दिया।"

आयत 99

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ

"और (ऐ नबी ﷺ!) अगर आपका रब चाहता तो ज़मीन में जितने लोग भी हैं सबके सब ईमान ले लाते।"

ये मज़मून सूरतुल अनआम में बड़े शद्दो-मद्द के साथ आ चुका है। हुज़ूर ﷺ की शदीद ख्वाहिश थी कि यह सब लोग ईमान ले आएँ, मगर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि इस सिलसिले में हमारा अपना क़ानून है और वह यह कि जो हक़ का तालिब होगा उसे हक़ मिल जाएगा और जो तअस्सुब, ज़िद और हठधर्मी पर उतर आएगा, उसे हिदायत नसीब नहीं होगी। अगर लोगों को मुसलमान बनाना ही मक़सूद होता तो अल्लाह के लिये यह कौनसा मुश्किल काम था। वह सबको पैदा ही ऐसे करता कि सब मोमिन, मुत्तक़ी और परहेज़गार होते। आख़िर उसने फ़रिश्ते भी तो पैदा किये हैं जो कभी गलती करते हैं ना उसकी मअसियत (अवहेलना)। जैसा कि सूरतुल तहरीम में फ़रमाया: {لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ} (आयत:6) "वह अल्लाह के अहकाम की नाफ़रमानी नहीं करते और वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है।" लेकिन इंसानों को उसने पैदा ही इम्तिहान के लिये किया है। सूरतुल मुल्क के आग़ाज़ में ज़िन्दगी और मौत की तख्लीक़ का यही मक़सद बताया गया है: {خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ} (आयत:2) "उसने ज़िन्दगी और मौत को पैदा किया ताकि तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन हुस्ने अमल का रवैय्या इख्तियार करता है।" लिहाज़ा ऐ नबी (ﷺ) आप इस मामले में अपना फ़र्ज़ अदा

करते जाएँ, कोई ईमान लाए या ना लाए इसकी परवाह ना करें, किसी को हिदायत देने या ना देने का मामला हमसे मुताल्लिक़ है।

اَفَاَنۡتَ تُكۡرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٩٩﴾

"तो क्या आप लोगों को मजबूर कर देंगे कि वह ज़रूर ईमान ले आएँ!"

असल में यह सारी बातें हुज़ूर ﷺ के दिल का बोझ हल्का करने के लिये की जा रही हैं कि आप हर वक़्त दावत व तब्लीग की जद्दो-जहद में मसरूफ़ हैं, फिर आप ﷺ को यह अंदेशा भी रहता है कि कहीं इस ज़िमन में मेरी तरफ़ से कोई कोताही तो नहीं हो रही। जैसे सूरतुल आराफ़ (आयत 2) में फ़रमाया: {فَلَا يَكُنۡ فِىۡ صَدۡرِكَ حَرَجٌ مِّنۡهُ} कि आप ﷺ के दिल में फराएज़ रिसालत के सिलसिले में किसी क़िस्म की तंगी नहीं होनी चाहिए। और इन लोगों के पीछे आप ﷺ अपने आपको हलकान ना करें।

आयत 100

وَمَا كَانَ لِنَفۡسٍ اَنۡ تُؤۡمِنَ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِؕ

"किसी जान के लिये मुमकिन नहीं है कि वह ईमान लाए मगर अल्लाह के इज़्न से।"

وَيَجۡعَلُ الرِّجۡسَ عَلَى الَّذِيۡنَ لَا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾

"और वह गंदगी मुसल्लत कर देता है उन लोगों पर जो अक़्ल से काम नहीं लेते।"

आयत 101

قُلِ انۡظُرُوۡا مَاذَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ

"इनसे कहिये कि देखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है।"

ज़मीन व आसमान में अल्लाह तआला की बेशुमार निशानियाँ हैं, इनको ब-नज़र-ए-ग़ाएर देखने की ज़रूरत है।

وَمَا تُغۡنِی الۡاٰیٰتُ وَالنُّذُرُ عَنۡ قَوۡمٍ لَّا یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۰۱﴾

"लेकिन यह निशानियाँ और डरावे उन लोगों के कुछ काम नहीं आते जो ईमान नहीं लाना चाहते।"

आयत 102

فَهَلۡ یَنۡتَظِرُوۡنَ اِلَّا مِثۡلَ اَیَّامِ الَّذِیۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ

"तो क्या ये मुंतज़िर हैं उसी तरह के दिनों के जैसे इनसे पहले लोगों पर गुज़र चुके हैं?"

रसूलों की तकज़ीब करने वाली क़ौमों पर आने वाले अज़ाबे इस्तेसाल वाले दिनों को क़ुराने हकीम में "अय्यामुल्लाह" क़रार दिया गया है। तो क्या ये लोग ऐसे दिनों के मुंतज़िर हैं जो क़ौमे नूह या क़ौमे हूद या क़ौमे सालेह या क़ौमे लूत को देखने पड़े थे?

قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝١٠٢

"कह दीजिये कि पस इंतेज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार करने वालों में हूँ।"

आयत 103

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٣ ع

"फिर निजात देते रहे हैं अपने रसूलों को और अहले ईमान को। इसी तरह हमारे ऊपर हक़ है कि हम अहले ईमान को निजात दें।"

जैसे हज़रत नूह, हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलै. की क़ौमों में से जो लोग ईमान ले आए उन्हें बचा लिया गया। आमुरा और सदुम की बस्तियों में से कोई एक खुश किस्मत भी ना निकला कि उसे बचाया जाता। हज़रत लूत अलै. सिर्फ़ अपनी दो बेटियों को लेकर वहाँ से निकले थे, जबकि उनकी अपनी बीवी भी पीछे रह जाने वालों के साथ रह गई और अज़ाब का निशाना बनी।

आयात 104 से 109 तक

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ
اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ
اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ښ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ١٠٤ۙ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا
تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ١٠٥ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا
مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ١٠٦ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا
كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَاۗدَّ لِفَضْلِهٖ ۭ
يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ١٠٧ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ
ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ
١٠٨ۭ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ښ
وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ١٠٩ۧ

आयत 104

قُلۡ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنۡ كُنۡتُمۡ فِیۡ شَكٍّ مِّنۡ دِیۡنِیۡ

"(ऐ नबी ﷺ!) कह दीजिये कि ऐ लोगों! अगर तुम्हें मेरे दीन के बारे में कोई शक है"

अब सूरत के आख़िर में फ़ैसलाकुन अंदाज़ में ख़िताब किया जा रहा है कि ऐ लोगों! ये जो तुम मुझ पर दबाव डाल रहे हो, कि मैं अपने मौक़फ़ में कुछ नरमी पैदा कर लूँ या तुम्हारे साथ किसी हद तक मदाहनत (compromise) का रवैय्या इख्तियार करूँ, तो इसका मतलब तो यह है कि तुम्हें मेरे दीन के बारे में अभी तक शक है। अगर ऐसा है तो तुम लोग अपना यह शक दूर कर लो:

فَلَاۤ اَعۡبُدُ الَّذِیۡنَ تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلٰكِنۡ اَعۡبُدُ اللّٰهَ الَّذِیۡ یَتَوَفّٰىكُمۡ ۚۖ

"तो (जान लो कि) मैं हरगिज़ नहीं पूजने वाला उनको जिनको तुम पूजते हो अल्लाह के सिवा, बल्कि मैं तो पूजूंगा उसी अल्लाह को जो तुम्हें क़ब्ज़ करेगा।"

وَاُمِرۡتُ اَنۡ اَكُوۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱۰۴﴾

"और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं ईमान लाने वालों में से हो जाऊँ।"

आयत 105

وَاَنۡ اَقِمۡ وَجۡهَكَ لِلدِّيۡنِ حَنِيۡفًا ۚ

“और यह कि आप अपना रुख सीधा रखिये दीन की तरफ़ यक्सु होकर।”

पूरे हनीफ़ यानि यक्सु होकर दीन की तरफ़ मुतवज्जह हों।

وَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ۝١٠٥

“और हरगिज़ ना हों इन मुशरिकों में से।”

आयत 106

وَلَا تَدۡعُ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنۡفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنۡ فَعَلۡتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيۡنَ ۝١٠٦

“और मत पुकारिये अल्लाह के सिवा उसको जो ना तुम्हें नफ़ा दे सके ना नुक़सान, और अगर (बिलफ़र्ज़) आपने ऐसा किया तो फिर आप भी जालिमों में से हो जायेंगे।”

आयत 107

وَاِنۡ يَّمۡسَسۡكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ

“और अगर अल्लाह आपको कोई ज़रर पहुँचाये, तो कोई नहीं है उसको दूर करने वाला सिवाय अल्लाह के।”

وَاِنۡ يُّرِدۡكَ بِخَيۡرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضۡلِهٖ‌ؕ

"और अगर वह इरादा कर ले आपके साथ भलाई का तो उसके फ़ज़ल को लौटाने वाला कोई नहीं।"

يُصِيۡبُ بِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖ‌ؕ وَهُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ۞١٠٧

"वह पहुँचाता है इस (फ़ज़ल) को अपने बन्दों में से जिसे चाहे, और वह बख्शने वाला, रहम करने वाला है।"

आयत 108

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدۡ جَآءَكُمُ الۡحَـقُّ مِنۡ رَّبِّكُمۡ‌ۚ فَمَنِ اهۡتَدٰى فَاِنَّمَا يَهۡتَدِىۡ لِنَفۡسِهٖ‌ۚ

"कह दीजिये कि ऐ लोगों! तुम्हारे पास हक़ आ चुका है तुम्हारे रब की तरफ़ से। तो अब जो कोई भी हिदायत पायेगा वह अपने भले को ही हिदायत पायेगा।"

इस हिदायत का फ़ायदा उसी को होगा, आक़बत (आख़िरत) उसी की सँवरेगी और अल्लाह की रहमत उसके शामिले हाल होगी।

وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيۡهَا‌ ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيۡكُمۡ بِوَكِيۡلٍ ؕ‏ ﴿۱۰۸﴾

"और जो कोई भटक जाएगा तो वह भी अपनी जान पर ही वबाल लेगा। और मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ।"

मुझे तुम्हारे ऊपर कोई दरोगा मुक़र्रर नहीं किया गया। मैं तुम्हारे बारे में मसऊल नहीं हूँ। अल्लाह के यहाँ तुम्हारे बारे में मुझसे बाज़पुर्स नहीं होगी कि ये ईमान क्यो नहीं लाये थे? {وَّلَا تُسۡـئَلُ عَنۡ اَصۡحٰبِ الۡجَحِیۡمِ} (सूरह बक़रह:119) "और आपसे नहीं पूछा जाएगा जहन्नमियों के बारे में!"

आयत 109

وَاتَّبِعۡ مَا يُوۡحٰۤى اِلَيۡكَ وَاصۡبِرۡ

"और (ऐ नबी ﷺ!) आप पैरवी करते जाइये उसकी जो आपकी तरफ़ वही किया जा रहा है और सब्र कीजिये"

अपने मौक़फ़ पर जमे रहिये और डटे रहिये, मुश्किलात के दबाव को बर्दाश्त कीजिये।

حَتّٰى يَحۡكُمَ اللّٰهُ ۖ‌ۚ وَهُوَ خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۱۰۹﴾

"यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और यक़ीनन वह बहतरीन फ़ैसला करने वाला है।"

بارك الله لى ولكم فى القرآن العظيم ونفعنى وايا كم بالآيات والذكر الحكيم۔

सूरह हूद

तम्हीदी कलिमात

सूरह हूद के दस रुकूअ हैं, जिनमें से छ: रुकूअ अम्बिया अर्ररुसुल पर मुश्तमिल हैं। यह सूरत चूँकि सूरह युनुस के साथ मिलकर जोड़ा बनाती है इसलिये सूरह युनुस के बरअक्स इसमें हज़रत नूह अलै. का ज़िक्र बहुत तफ़सील के साथ हुआ है जबकि हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र बिल्कुल सरसरी अंदाज़ में है (सूरह युनुस में हज़रत नूह अलै. का ज़िक्र सरसरी अंदाज में है और हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र तफ़सील के साथ है) इन दोनों पैगम्बरों के ज़िक्र के दरमियान में बाक़ी रसूलों का ज़िक्र इस सूरत में बिल्कुल सूरतुल आराफ़ वाले अंदाज में है, यानि एक-एक रुकूअ में एक-एक रसूल का तज़किरा है।

हदीस में आता है कि हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने नबी मुकर्रम ﷺ से अर्ज़ किया: "या रसूल अल्लाह! आप पर बुढ़ापे के आसार नुमायाँ हो गये हैं" जवाब में हुज़ूर ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: ((شَيَّبَتْنِيْ هُوْدٌ وَاَخَوَاتُهَا))(2) "मुझे सूरह हूद और उसकी हम मज़मून सूरतों ने बूढ़ा कर दिया है।" इससे अंदाज़ा होता है कि जब इन सूरतों में पै दर पै तम्बीहात नाज़िल हो रही थीं तो आप ﷺ को हर वक़्त यह अंदेशा घुलाए देता होगा कि कहीं अल्लाह की दी हुई मोहलत ख़त्म ना हो जाये और वह आख़री साअत (घड़ी/वक़्त) ना आ जाये

जब अल्लाह तआला किसी क़ौम को अज़ाब में पकड़ लेने का फ़ैसला सादर फ़रमा देता है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आयात 1 से 8 तक

الٓرٰ ۟ کِتٰبٌ اُحۡکِمَتۡ اٰیٰتُہٗ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِنۡ لَّدُنۡ حَکِیۡمٍ
خَبِیۡرٍ ۙ﴿۱﴾ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّا اللّٰہَ ؕ اِنَّنِیۡ لَکُمۡ مِّنۡہُ نَذِیۡرٌ
وَّ بَشِیۡرٌ ۙ﴿۲﴾ وَّ اَنِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّکُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَیۡہِ
یُمَتِّعۡکُمۡ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی وَّ یُؤۡتِ کُلَّ
ذِیۡ فَضۡلٍ فَضۡلَہٗ ؕ وَ اِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنِّیۡۤ اَخَافُ عَلَیۡکُمۡ
عَذَابَ یَوۡمٍ کَبِیۡرٍ ﴿۳﴾ اِلَی اللّٰہِ مَرۡجِعُکُمۡ ۚ وَ ہُوَ عَلٰی
کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۴﴾ اَلَاۤ اِنَّہُمۡ یَثۡنُوۡنَ صُدُوۡرَہُمۡ
لِیَسۡتَخۡفُوۡا مِنۡہُ ؕ اَلَا حِیۡنَ یَسۡتَغۡشُوۡنَ ثِیَابَہُمۡ ۙ
یَعۡلَمُ مَا یُسِرُّوۡنَ وَ مَا یُعۡلِنُوۡنَ ۚ اِنَّہٗ عَلِیۡمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوۡرِ ﴿۵﴾ وَ مَا مِنۡ دَآبَّۃٍ فِی الۡاَرۡضِ اِلَّا عَلَی اللّٰہِ
رِزۡقُہَا وَ یَعۡلَمُ مُسۡتَقَرَّہَا وَ مُسۡتَوۡدَعَہَا ؕ کُلٌّ فِیۡ
کِتٰبٍ مُّبِیۡنٍ ﴿۶﴾ وَ ہُوَ الَّذِیۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَاۗءِ
لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَلَىِٕنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ
مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْـرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَلَىِٕنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ
الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ۭ اَلَا
يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ ۧ

आयत 1

الۗرٰ ۣ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝ ۙ

"अलिफ़, लाम, रा। यह वह किताब है जिसकी आयात (पहले) पुख़्ता की गई हैं, फिर उनकी तफ़सील बयान की गई है उस हस्ती की तरफ़ से जो हकीम है और ख़बीर है।"

इसका एक मफ़हूम यह भी हो सकता है कि क़ुरान मजीद में शुरू-शुरू में जो सूरतें नाज़िल हुई हैं वो हुज्म के ऐतबार से तो छोटी, लेकिन बहुत जामेअ और गहरे मफ़हूम की हामिल हैं, जैसे कूज़े में समुन्दर को बंद कर दिया गया हो। मसलन सूरतुल अस्र जिसके बारे में इमाम शाफ़ई रहिमुल्लाह फ़रमाते हैं: لَوْلَمْ يُنَزَّلْ مِنَ الْقُرْآنِ سِوَاهَا لَكَفَتِ النَّاسِ यानि "अग़र इस सूरत के अलावा क़ुरान मजीद में कुछ भी नाज़िल ना

होता तो भी यह सूरत लोगों की हिदायत के लिये काफ़ी थी।" इमाम शाफ़ई रहि. सूरतुल अस्र के बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं: لَوْ تَدَبَّرَ النَّاسُ هٰذِهِ السُّوْرَةَ لَوَسِعَتْهُمْ "अग़र लोग इस सूरत पर ही तदब्बुर करें तो यह उनकी हिदायत के लिये काफ़ी हो जायेगी।" चुनाँचे क़ुरान मजीद की इब्तदाई सूरतें और आयात बहुत मोहकम और जामेअ हैं और बाद में उन्हीं की तफ़सील बयान हुई है। और इस किताब का बुनियादी पैग़ाम यह है:

आयत 2

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ Ą

"कि मत इबादत करो किसी की सिवाय अल्लाह के। यक़ीनन मैं हूँ तुम्हारे लिये उसी की जानिब से ख़बरदार करने वाला और बशारत देने वाला।"

अम्बिया और रुसुल के लिये क़ुरान मजीद में बशीर और नज़ीर के अल्फ़ाज़ बार-बार आते हैं। जैसे सूरह अन्निसा की आयत नम्बर 168 में फ़रमाया: رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا और सूरह अनआम में फ़रमाया: {وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ} (आयत 48)।

आयत 3

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ

"और यह कि अपने रब से इस्तगफ़ार करो, फिर उसकी जनाब में तौबा करो, वह तुम्हें

مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۭ

(दुनियवी ज़िन्दगी में) माल व मताअ देगा बहुत अच्छा एक वक़्ते मुअय्यन तक और हर साहिबे फ़ज़ल को उसके हिस्से का फ़ज़ल अता करेगा।"

यहाँ ذِيْ فَضْلٍ से मुराद है 'मुस्तहिक़े फ़ज़ल'। यानि जो भी फ़ज़ल का मुस्तहिक़ होगा, अल्लाह तआला उसे अपना फ़ज़ल ज़रूर अता फ़रमाएगा।

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ③

"और अग़र तुम फिर जाओगे तो मुझे अंदेशा है तुम पर एक बड़े हौलनाक दिन के अज़ाब का।"

आयत 4

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ④

"अल्लाह ही कि तरफ़ तुम्हें लौट कर जाना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।"

आयत 5

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ

"आग़ाह हो जाओ यह लोग अपने सीनों को दुहरा करते हैं ताकि अल्लाह से छुप जायें।"

यह मक़ाम मुश्किलातुल क़ुरान में से है और इसके बारे में बहुत से अक़वाल हैं। يَثْنِيْ ثَنْى के मायने फेरने, मोड़ने और लपेटने के हैं। मक्का में रसूल अल्लाह ﷺ की दावत के मुख़ालफ़ीन में से कुछ लोगों का रवैया ऐसा था कि आप ﷺ को आते देखते तो रुख़ बदल लेते या कपड़े की ओट में मुँह छुपा लेते, ताकि कहीं आमना-सामना ना हो जाये और आप ﷺ उन्हें मुख़ातिब करके कुछ अपनी बातें ना कहने लगें। यहाँ ऐसे लोगों की तरफ़ इशारा है कि यह लोग हक़ का सामना और हक़ीकत का मुवाजह (interface) करने से घबराते हैं, हालाँकि किसी के गुरेज़ करने से हक़ीक़त ग़ायब नहीं हो जाती। शुतुरमुर्ग तूफ़ान के दौरान अगर रेत में सर छुपा ले तो इससे तूफ़ान का रुख़ तब्दील नहीं हो जाता।

इसके अलावा एक राय वह है जो बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. के हवाले से नकल हुई है कि कुछ अहले ईमान पर हया का बहुत ज़्यादा ग़लबा था (मसनल हज़रत उस्मान रज़ि. इन अस्हाब में बहुत नुमायाँ थे) ऐसे लोग कभी गुस्ल के वक़्त भी उरिया (नंगा) होना पसंद नहीं करते थे और ऐसे मौक़ो पर इस अंदाज़ से झुक जाते थे कि जहाँ तक मुम्किन हो सतर छुपा रहे। इसी तरह क़ज़ाए हाजत (टॉयलेट में जाने) के वक़्त भी पूरे सतर का अहतमाम करते थे। इस हवाले से इस हुक्म का मंशा यह है कि तुम इस

सिलसिले में जो कुछ भी कर लो, अल्लाह तआला की निगाहों से तो नहीं छुप सकते हो। लिहाज़ा सतर छुपाने के बारे में जो भी अहकमात हैं उनकी मारूफ़ तरीक़े से पैरवी करो। इस तरह के किसी भी मामले में गुलु की ज़रुरत नहीं है।

اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑤

"आगाह हो जाओ कि जब वो अपने ऊपर अपने कपड़े लपेटते हैं तब भी अल्लाह जानता है जो कुछ वो छुपा रहे होते हैं और जो कुछ ज़ाहिर कर रहे होते हैं। वह तो उसको भी जानता है जो कुछ सीनों के अंदर है।"

आयत 6

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

"और नहीं है कोई भी चलने-फिरने वाला (जानदार) ज़मीन पर, मगर उसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे है।"

अल्लाह तआला ने इस कायनात के अंदर तक़सीम-ए-रिज़्क़ का जो निज़ाम वज़अ (प्रारूप तैयार) किया है उसमें उसने हर जानदार के लिये उसकी ज़रूरियाते ज़िन्दगी फ़राहम कर दी हैं। बच्चे की पैदाईश बाद में होती है मगर उसके लिये

माँ की छातियों में दूध पहले पैदा हो जाता है। लेकिन जहाँ कोई इंसान या इंसानों का कोई गिरोह अल्लाह के इस निज़ाम और उसके क़वानीन को पसे पुस्त डाल कर कोई ऐसा निज़ाम या ऐसे क़वानीन वज़अ करे जिनके तहत एक फ़र्द के हिस्से का रिज़्क़ किसी दूसरे के झोली में चला जाये, तो रिज़्क़ या दौलत की तक़सीम का ख़ुदाई निज़ाम दरहम-बरहम हो जायेगा। इस लूट-खसोट का लाज़मी नतीजा यह होगा कि कहीं दौलत के बेजा अम्बार लगेंगे और कहीं बेशुमार इंसान फ़ाक़ों पर मजबूर हो जायेंगे। लिहाज़ा जहाँ कहीं भी रिज़्क़ की तक़सीम में कोई कमी-पेशी नज़र आये तो समझ लो कि इसका ज़िम्मेदार ख़ुद इंसान है।

وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ

"और वह जानता है उसके मुस्तक़िल ठिकाने को भी और उसके आरज़ी तौर पर सौंपे जाने की जगह को भी।"

मुस्तक़र और मुस्तवदअ दोनों अल्फ़ाज़ की तशरीह सूरतुल अनआम की आयत 98 में तफ़सील के साथ हो चुकी है। वहाँ इन अल्फ़ाज़ के बारे में तीन मुख़्तलिफ़ अक़वाल भी ज़ेरे बहस आ चुके हैं।

كُلٌّ فِي كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦

"यह सब कुछ एक रौशन किताब में (दर्ज) है।"

वही रौशन और वाज़ेह किताब जो इल्मे इलाही की किताब है।

आयत 7

وَهُوَ الَّذِیۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ فِیۡ سِتَّۃِ اَیَّامٍ وَّکَانَ عَرۡشُہٗ عَلَی الۡمَآءِ

"और वही है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को छ: दिनों में और उसका तख़्त था पानी पर"

मेरे नज़दीक यह आयत आज भी मुतशाबेहात में से है, लेकिन शायद यह उस दौर की तरफ़ इशारा है जब यह दुनिया मअरिज़े वुजूद में आई। ज़मीन की तख़्लीक़ के बारे में साइंसी और तारीख़ी ज़राय से अब तक मिलने वाली मालूमात को मुज्तमा (इकट्ठा) करके जो आरा (बहुत सी राय) सामने आयी हैं उनके मुताबिक़ ज़मीन जब ठंडी होनी शुरु हुई तो उससे बुखारात और मुख़्तलिफ़ अक़साम की गैसें ख़ारिज हुईं। इन्हीं गैसों में से हाईड्रोजन और ऑक्सीजन के मिलने से पानी पैदा हुआ जो लाखों साल तक बारिशों की सूरत में ज़मीन पर बरसता रहा। फिर जब ज़मीन ठंडी होकर सुकड़ी तो उसकी सतह पर नशेब व फ़राज़ (उतार-चढ़ाव) पैदा होने से पहाड़ और समुद्र वुजूद में आये। उस वक़्त तक किसी क़िस्म की कोई मख्लूक़ पैदा नहीं हुई थी। यह वह दौर था जिसके बारे में कहा जा सकता है कि इस ज़मीन की हद तक अल्लाह तआला का तख़्ते हुकूमत (इसका तसव्वुर इंसानी ज़हन से मा वराअ [बहुत ऊपर] है) पानी पर था। फिर वह दौर आया जब ज़मीन की आबो-हवा ज़िन्दगी के लिये मुवाफ़िक़ हुई तो मिट्टी और पानी से वुजूद में आने वाले दलदली इलाक़ों में नबाताती (वनस्पति) या

हैवानी (पशु) मख्लूक़ की इब्तदाई शक्लें पैदा हुईं (वल्लाहु आलम!)

لِيَبۡلُوَكُمۡ اَيُّكُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ؕ

"ताकि तुम्हें आज़माए कि कौन है तुममें से अच्छे अमल करने वाला।"

यानि इंसानी ज़िन्दगी का वह हिस्सा जो इस दुनिया में गुज़रता है उसका असल मक़सद इम्तिहान है। अल्लामा इक़बाल ने इस शेअर में इस आयत की बहुत खूबसूरत तर्जुमानी की है:

क़ुल्ज़ुम-ए-हस्ती से तू उभरा है मानिन्द-ए-हबाब
इस ज़ियाँ ख़ाने में तेरा इम्तिहान है ज़िन्दगी!

وَلَئِنۡ قُلۡتَ اِنَّكُمۡ مَّبۡعُوۡثُوۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِ الۡمَوۡتِ لَيَقُوۡلَنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا سِحۡرٌ مُّبِيۡنٌ ۝

"और अग़र आप कहें कि तुम्हें उठाया जायेगा मरने के बाद तो कहेंगे वो लोग जिन्होंने कुफ्र किया कि यह तो खुला जादू है।"

आयत 8

وَلَئِنۡ اَخَّرۡنَا عَنۡهُمُ الۡعَذَابَ اِلٰۤى اُمَّةٍ

"और अगर मुअख़्खर किए रखें हम उनसे अज़ाब को एक ख़ास

مَّعۡدُوۡدَةٍ لَّيَقُوۡلُنَّ مَا يَحۡبِسُهٗ ؕ

मुद्दत तक तो वो कहते हैं कि किस चीज़ ने रोक रखा है उसे?"

कि इतने अरसे से आप (صلی اللہ علیہ وسلم) हमें धमकियाँ दे रहे हैं कि तुम पर अज़ाब आने वाला है, मगर अब तक वह अज़ाब आया क्यों नहीं? आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है?

اَلَا يَوۡمَ يَاۡتِيۡهِمۡ لَيۡسَ مَصۡرُوۡفًا عَنۡهُمۡ وَحَاقَ بِهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۸

"आगाह हो जाओ! जिस दिन यह उन पर आ जायेगा तो उनकी तरफ़ से फेरा नहीं जायेगा, और उनको घेरे में ले लेगी वही चीज़ जिसका यह लोग इस्तेहज़ा किया करते थे।"

आयात 9 से 24 तक

وَلَٮِٕنۡ اَذَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنَّا رَحۡمَةً ثُمَّ نَزَعۡنٰهَا مِنۡهُ ۚ اِنَّهٗ
لَيَـــُٔوۡسٌ كَفُوۡرٌ ۹ وَلَٮِٕنۡ اَذَقۡنٰهُ نَعۡمَآءَ بَعۡدَ ضَرَّآءَ
مَسَّـتۡهُ لَيَقُوۡلَنَّ ذَهَبَ السَّـيِّاٰتُ عَنِّىۡ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ
فَخُــوۡرٌ ۱۰ اِلَّا الَّذِيۡنَ صَبَرُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ
اُولٰٓٮِٕكَ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّاَجۡرٌ كَبِيۡرٌ ۱۱ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ
بَعۡضَ مَا يُوۡحٰۤى اِلَيۡكَ وَضَآٮِٕقٌۢ بِهٖ صَدۡرُكَ اَنۡ

يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ
اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۱۲﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ
مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۳﴾ فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ
فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ
فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ
وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا
وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ
الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ
اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ
﴿۱۷﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ

يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ
﴿۱۸﴾ ۙ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا
عِوَجًا ۭ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۹﴾ اُولٰۗىِٕكَ لَمْ
يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۭ مَا
كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿۲۰﴾
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا
كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۱﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ
الْاَخْسَرُوْنَ ﴿۲۲﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۳﴾ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى
وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ
اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾ ۧ

आयत 9

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

"और अगर हम मज़ा चखाते हैं इंसान को अपनी तरफ़ से रहमत का"

ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ كَفُوْرٌ ۝

"फिर (जब) हम उससे वह छीन लेते हैं तो वह हो जाता है बिल्कुल मायूस, निहायत नाशुक्रा।"

इंसान बुनियादी तौर पर कोताह नज़र और नाशुक्रा है। किसी नेअमत, कामयाबी या खुशी के बाद अगर उसे कोई मुश्किल पेश आती है तो उस वक़्त वह भूल जाता है कि उस पर कभी अल्लाह की नज़रे करम भी थी। चाहिये तो यह कि अच्छे हालात में इंसान अल्लाह का शुक्र अदा करे और जब कोई सख़्ती आ जाये तो उस पर सब्र करे और साथ ही साथ दिल में इत्मिनान रखे कि हर तरह के हालात अल्लाह तआला की तरफ़ से आते हैं, अगर आज सख़्ती है तो कल आसाइश भी तो थी।

आयत 10

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ

"और अगर हम मज़ा चखाएँ उसे नेअमतों का किसी तकलीफ़ के बाद जो उसको पहुँची हुई थी तो ज़रूर कहेगा कि मेरे तो सारे दिलद्दर दूर हो गये।"

إِنَّهُۥ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝١٠

"बेशक वह इतराने वाला और फ़ख्र जताने वाला है।"

जब किसी सख़्ती के बाद इंसान को आसाइश या कोई नेअमत मिल जाती है तो बजाय इसके कि उसे अल्लाह की रहमत और उसका ईनाम समझते हुए सजदा-ए-शुक्र बजा लाए, वह उस पर इतराना और डींगे मारना शुरू कर देता है और उसे अपनी तदबीर का नतीजा और अपनी मेहनत का सिला क़रार देता है।

आयत 11

إِلَّا ٱلَّذِينَ صَبَرُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ ط

"सिवाय उन लोगों के जिन्होंने सब्र की रविश इख़्तियार की और नेक आमाल किये।"

यानि सब इंसान एक जैसे नहीं, कुछ ऐसे भी हैं जिनको अल्लाह ने हक़ीकी ईमान की नेअमत से नवाज़ रखा है और ईमान के नतीजे में उनके दिल सब्र की दौलत से मालामाल हैं और उनके किरदार से आमाले सालेहा के नूर की किरणें फूटती हैं।

أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝١١

"उन्हीं के लिये मग़फिरत और बहुत बड़ा अज्र है।"

आयत 12

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعۡضَ مَا يُوۡحٰۤى اِلَيۡكَ

"तो (ऐ नबी ﷺ!) शायद आप कुछ चीज़ें छोड़ दें उसमें से जो आपकी तरफ़ वही की जा रही है"

وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدۡرُكَ اَنۡ يَّقُوۡلُوۡا لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ كَنۡزٌ اَوۡ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ

"और आपका सीना उससे तंग हो रहा है जो वो कह रहे हैं, कि क्यों नहीं उनके ऊपर उतार दिया गया कोई ख़जाना या क्यों नहीं आया उनके पास कोई फ़रिश्ता।"

यह मज़मून इससे पहले बड़ी वज़ाहत के साथ सूरतुल अनआम में आ चुका है, लेकिन ज़ेरे मुताअला ग्रुप की मक्की सूरतों में भी जा-बजा मुशरिकीन की ऐसी बातों का ज़िक्र मिलता है। इसलिये कि इन दोनों ग्रुप्स में शामिल यह तमाम मक्की सूरतें एक ही दौर में नाज़िल हुई हैं।

यहाँ मक्की सूरतों की तरतीब-ए-मुस्हफ़ के बारे में एक अहम नुक्ता समझ लें। रसूल अल्लाह ﷺ के क़याम-ए-मक्का के बारह साल के अरसे को अग़र चार-चार साल के तीन हिस्सों में तक़सीम करें तो पहले हिस्से यानि पहले चार साल में जो सूरतें नाज़िल हुईं वो क़ुरान मजीद के आखरी दो ग्रुपों में शामिल हैं, यानि सूरह क़ॉफ़ से लेकर आख़िर तक। दरमियानी चार साल के दौरान नाज़िल होने वाली सूरतें दरमियानी ग्रुपों में शामिल हैं और आखरी चार साल में जो सूरतें नाज़िल हुई हैं वो शुरू के दो ग्रुपों में शामिल हैं। एक ग्रुप में सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ जबकि इस दूसरे ग्रुप में सूरह यूनुस से सूरतुल मोमिनून (इसमें सिर्फ़ एक इस्तसना [exception] है जिसका ज़िक्र बाद में आयेगा)।

اِنَّمَآ اَنۡتَ نَذِيۡرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ وَّكِيۡلٌ ؕ﴿۱۲﴾

"(ऐ नबी ﷺ!) आप तो सिर्फ़ खबरदार करने वाले हैं, और हर चीज़ का ज़िम्मेदार अल्लाह है।"

इस दौर की सूरतों में मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में बार-बार हुज़ूर ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि आप ﷺ का फ़र्ज़े मन्सबी यही है कि आप ﷺ इन लोगों को ख़बरदार कर दें। इसके बाद तमाम मामलात अल्लाह के हवाले हैं। वह बेहतर जानता है कि ईमान या हिदायत की तौफ़ीक़ किसे देनी है और किसे नहीं देनी। कोई मौजज्ज़ा दिखाना है या नहीं, नाफ़रमानों को कब तक मोहलत देनी है और कब उन पर अज़ाब भेजना है। यह सब कुछ अल्लाह तआला ही के इख़्तियार में है।

आयत 13

اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَرٰىهُ ؕ

"क्या वो कहते हैं कि यह (क़ुरान) उस ﷺ ने ख़ुद गढ़ लिया है।"

قُلۡ فَاۡتُوۡا بِعَشۡرِ سُوَرٍ مِّثۡلِهٖ مُفۡتَرَيٰتٍ

"आप ﷺ कहिए कि अच्छा तुम लोग भी ले आओ इस जैसी दस सूरतें गढ़ी हुई"

मुशरिकीन को यह चैलेंज मुख़्तलिफ़ दर्जों में बार-बार दिया गया था। इससे पहले उन्हें कहा गया था कि इस जैसा क़ुरान

तुम भी बनाकर दिखाओ (बनी इस्राईल:88) यहाँ दूसरे दर्जे में 10 सूरतों का चैलेंज दिया गया। फिर इसके बाद बर सबीले तनज़्ज़ुल सिर्फ़ एक सूरत बनाकर लाने को कहा गया, जिसका तज़किरा सूरह युनुस (आयत 38) में भी है और सूरतुल बक़रह (आयत 23) में भी।

وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⑬

"और (इसके लिये) बुला लो तुम जिसको भी बुला सकते हो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो।"

आयत 14

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ

"फिर अगर वो (तुम्हारे मददगार) तुम्हारी इस दुआ को क़ुबूल ना करें"

यानि अगर वो इस चैलेंज को क़ुबूल करने की जुर्रत ना कर सकें और तुम्हारी मदद को ना पहुँच सकें:

فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ⑭

"तो जान लो कि यह अल्लाह ही के इल्म से नाज़िल हुआ है और यह कि कोई मअबूद नहीं है सिवाय उसके। तो क्या अब तुम सरे तस्लीम खम करते हो?"

यह कुफ्फ़ार ही से ख़िताब है कि तुम लोग इस चैलेंज का जवाब देने के लिये अपने मअबूदों को पुकार देखो, कुछ खुद मेहनत करो और कुछ उनसे कहो कि वो अल्क़ाअ और इल्हाम करें और इस तरह मिल-जुल कर 10 सूरतें बना लाओ। और अगर तुम्हारे यह मअबूद तुम्हारी इस दरख़्वास्त को क़ुबूल ना कर सकें तो जान लो कि ना सिर्फ़ यह क़ुरान अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुआ है बल्कि अल्लाह के सिवा कोई और मअबूद भी नहीं। तो इस सब कुछ के बाद भी क्या तुम मानने वाले नहीं हो? ज़ोरे इस्तदलाल मुलाहिज़ा हो कि एक ही दलील से क़ुराने हकीम के कलामे इलाही होने का सुबूत भी दिया गया है और अल्लाह तआला की तौहीद का भी।

आयत 15

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا

"जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ेब व ज़ीनत के तालिब हों"

जिन लोगों का मक़सदे हयात ही दुन्यवी माल व मताअ को हासिल करना हो और उसी के लिये वो रात-दिन दौड़-धूप में लगे हों तो:

نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝١٥

"हम उनके आमाल का पूरा-पूरा बदला उन्हें इसी (दुनिया की ज़िन्दगी) में दे देते हैं और इसमें उनकी हक़तल्फ़ी नहीं की जाती।"

इन लोगों के दिल व दिमाग पर दुनिया परस्ती छाई हुई है, और इन्होंने अपनी तमामतर सलाहियतें दुन्यवी ज़िन्दगी को हसीन व दिलकश बनाने के लिये ही सर्फ़ कर दी हैं। उनकी सारी मन्सूबाबंदी इसी दुनिया के माल व मताअ के हसूल के लिये है। चुनाँचे उनकी ऊँची-ऊँची इमारतें भी बन गई हैं, कारोबार भी खूब वसीअ हो गये हैं, हर क़िस्म का सामाने असाइश भी उनकी दस्तरस में हैं, ऐशो इशरत के मौक़े भी हस्बे ख़्वाहिश उन्हें मयस्सर हैं। लेकिन उन्हें मालूम होना चाहिये कि:

आयत 16

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ

"यही लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कुछ नहीं है सिवाय आग के।"

इनकी सारी मेहनत और भाग-दौड़ इसी दुनिया के लिये थी, लिहाज़ा हमने इनकी मेहनत का सिला इसी दुनिया में देकर इनका हिसाब चुका दिया है।

وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝١٦

"और इस (दुनिया) में उन्होंने जो कुछ किया वो सब हब्त हो जायेगा और जो आमाल उन्होंने किए वो भी ज़ाया हो जायेंगे।"

रोज़े महशर उन्हें मालूम होगा कि जो कुछ उन्होंने दुनिया में बनाया और जिसके लिये अपनी तमामतर इस्तअदादात (कोशिशें) और सलाहियतें सर्फ़ कीं वो सब मलिया-मेट हो चुका है, और अगर उन्होंने अपने दिल को बहलाने के लिये कोई झूठी-सच्ची नेकी की होगी तो वह भी बे-बुनियाद साबित होगी।

आयत 17

اَفَمَنۡ کَانَ عَلٰی بَیِّنَۃٍ مِّنۡ رَّبِّہٖ

"तो भला वह शख़्स जो अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह दलील पर हो"

बय्यिना (वाज़ेह दलील) से मुराद इंसान की फ़ितरते सलीमा है। इंसान के अंदर जो रूहे रब्बानी फूँकी गई है उसकी वजह से अल्लाह की मारफ़त उसके अंदर मौजूद है। मगर यह मारफ़ते इलाही इंसान के अंदर ख़्वाबीदा (dormant) होती है। फिर जब वही के ज़रिये वाज़ेह हिदायत उस तक पहुँचती है तो ख़्वाबीदा मारफ़त फौरन जाग जाती है।

وَیَتۡلُوۡہُ شَاہِدٌ مِّنۡہُ

"और उसके पीछे आए अल्लाह की तरफ़ से एक गवाह भी"

यानि एक सलीमुल फ़ितरत शख़्स जिसको ख़ुद अपने वुजूद में और ज़मीन व आसमान की साख़्त और कायनात के नज़्म व नस्क़ में तौहीद बारी तआला की वाज़ेह शहादत मिल रही थी, जब उसके पास क़ुरान की सूरत में अल्लाह की तरफ़ से एक गवाही भी आ गई, तो यह "नूरुन अला नूर" वाला

मामला हो गया। और फिर उस पर मुस्तज़ाद तौरात की तस्दीक़।

وَمِنۡ قَبۡلِهٖ كِتٰبُ مُوۡسٰۤى اِمَامًا وَّرَحۡمَةً ؕ

"और उससे पहले किताबे मूसा भी मौजूद थी जो इमाम (रहनुमा) भी थी और रहमत भी।"

ऐसा सलीमुल फ़ितरत शख़्स क्योंकर ईमान नहीं लाएगा? यह तम्सील ज़्यादा वज़ाहत के साथ सूरतुन्नूर में बयान हुई है।

اُولٰٓئِكَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ ؕ

"यही लोग हैं जो इस (क़ुरान) पर ईमान लाएँगे।"

وَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بِهٖ مِنَ الۡاَحۡزَابِ فَالنَّارُ مَوۡعِدُهٗ ۚ

"और जो इसका इंकार करेगा उन गिरोहों में से तो आग ही उसके वादे की जगह है।"

तो अब जो भी इस किताब के मुन्कर हों चाहे वो मुशरिकीने मक्का में से हों, दूसरे कुफ्फ़ार में से, या अहले किताब में से, उनका मौऊद (वादा किया हुआ) ठिकाना बस दोजख़ है।

فَلَا تَكُ فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّنۡهُ ۚ

"तो आप इसके बारे में किसी शक में ना पड़ें"

اِنَّهُ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝۱۷

"यक़ीनन यह हक़ है आप के रब की तरफ़ से लेकिन अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं।"

आयत 18

وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا‌ؕ

"और उस शख़्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा।"

जिसने ख़ुद कोई चीज़ गढ़ कर अल्लाह की तरफ मन्सूब कर दी।

اُولٰٓـئِكَ يُعۡرَضُوۡنَ عَلٰى رَبِّهِمۡ

"यह वो लोग हैं जो पेश किए जायेंगे अपने रब के सामने"

وَيَقُوۡلُ الۡاَشۡهَادُ هٰٓؤُلَۤاءِ الَّذِيۡنَ كَذَبُوۡا عَلٰى رَبِّهِمۡ‌ۚ

"और गवाही देने वाले कहेंगे कि यह हैं वो लोग जिन्होंने झूठ कहा था अपने रब पर।"

اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۸

"अगाह हो जाओ! ऐसे ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।"

उन झूठ गढ़ने वालों में गुलाम अहमद क़ादयानी आँजहानी और उस जैसे दूसरे मुद्दईयाने नुबूवत भी शामिल होंगे।

आयत 19

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۭ

"जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कजी तलाश करते हैं।"

तालिमाते हक़ और तरीक़े हिदायत पर ख़्वाह-म-ख़्वाह के ऐतराज़ात करते हैं ताकि लोग इस रास्ते को इख़्तियार ना करें।

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝۱۹

"और यही लोग आख़िरत के मुन्कर हैं।"

यह वही बात है जो हम सूरह युनुस में बार-बार पढ़ आए हैं: {لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا} कि उन्हें हमसे मुलाक़ात की उम्मीद ही नहीं और उनकी असल बीमारी भी यही है कि वो दिल से आख़िरत के मुन्कर हैं और इसी वजह से उनकी अक़्लों पर पर्दे पड़े हुए हैं।

आयत 20

أُولَٰٓئِكَ لَمۡ يَكُونُواْ مُعۡجِزِينَ فِي ٱلۡأَرۡضِ

"यह लोग ज़मीन में (अल्लाह को) हरगिज आजिज़ करने वाले नहीं हैं"

यह लोग अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं हैं और अल्लाह और उसके रसूल ﷺ को हरग़िज शिकस्त नहीं दे सकते।

وَمَا كَانَ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِنۡ أَوۡلِيَآءَۘ

"और ना ही अल्लाह के सिवा उनका कोई हिमायती है।"

يُضَٰعَفُ لَهُمُ ٱلۡعَذَابُۚ

"उनके लिये अज़ाब दोगुना किया जाता रहेगा।"

مَا كَانُواْ يَسۡتَطِيعُونَ ٱلسَّمۡعَ وَمَا كَانُواْ يُبۡصِرُونَ ٢٠

"(इसलिये कि) ना तो वो सुनने की सलाहियत रखते थे और ना ही देखते थे।"

वो बिल्कुल अंधे और बहरे हो गये थे। सूरतुल बक़रह में ऐसे लोगों की कैफ़ियत इस तरह बयान की गई है: {صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡيٌ فَهُمۡ لَا يَرۡجِعُونَ}। हक़ के लिये उन लोगों के इसी रवैय्ये की वजह से उनका अज़ाब बढ़ाया जाता रहेगा।

आयत 21

أُولَٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ خَسِرُوۡٓا اَنۡفُسَهُمۡ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ ۝٢١

"यह वो लोग हैं जिन्होंने अपने आपको बरबाद कर लिया और उनसे गुम हो गया जो कुछ वो इफ़तरा किया करते थे।"

तब उन्हें अपने झूठे मअबूद और सिफ़ारशी, मनघड़त अक़ाइद व नज़रियात और अल्लाह तआला पर इफ़्तरा परदाज़ियों में से कुछ भी नहीं सूझेगा। यह सब कुछ पादर हवा हो जायेगा।

आयत 22

لَا جَرَمَ اَنَّهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ هُمُ الۡاَخۡسَرُوۡنَ ۝٢٢

"कुछ शक नहीं कि आख़िरत में सबसे बढ़ कर ख़सारा पाने वाले यही लोग होंगे।"

वाजेह रहे कि "अख्सरु" अफ़आले तफ़सील का सीगा है।

अहले जहन्नम के तज़किरे के बाद फ़ौरी तक़ाबुल (simultaneous contrast) के लिये अब अहले जन्नत का ज़िक्र किया जा रहा है।

आयत 23

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۞ ٢٣

"(इसके बरअक्स) वो लोग जो ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किए और अपने रब के सामने आजिज़ी की, वो होंगे जन्नत वाले और उसमें रहेंगे हमेशा-हमेशा।"

आयत 24

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ

"इन दोनों गिरोहों की मिसाल ऐसे है जैसे एक शख़्स अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला।"

هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۞ ٢٤

"क्या यह दोनों बराबर हैं मिसाल के ऐतबार से? तो क्या तुम नसीहत अख़ज़ नहीं करते!"

भला दोनों का हाल यक्सा हो सकता है? क्या तुम इस मिसाल से कोई सबक़ हासिल नहीं करते?

अब अगले छ: रुकूअ अम्बिया अर्रुसुल पर मुश्तमिल हैं। इनमें उन्हीं छ: रसूलों और उनकी क़ौमों के हालात बयान

हुए हैं जिनका ज़िक्र हम सूरतुल आराफ़ में पढ़ आए हैं। यानि हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत शुऐब, हज़रत लूत और हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिम अस्सलातु वस्सलाम। यह छः रसूल हैं जिनका ज़िक्र क़ुरान हकीम में बहुत तकरार के साथ आया है। इस तकरार की वजह यह है कि क़ुरान के अव्वलीन मुख़ातिब (अहले अरब) इन सब रसूलों और इनकी क़ौमों के हालात से बख़ूबी वाक़िफ़ थे। जिस ख़ित्ते में यह रसूल अपने-अपने ज़माने में मबऊस हुए उसके बारे में कुछ तफ़सील हम सूरतुल आराफ़ में पढ़ आए हैं। यहाँ इनमें से चीदह-चीदह (arranged) मालूमात ज़हन में फिर से ताज़ा कर लें।

अगले सफ़े पर जो नक़्शा दिया गया है यह गोया "अर्ज़ुल क़ुरान" का नक़्शा है। क़ुरान मजीद में जिन रसूलों के हालात का तज़किरा है वो सबके सब इसी ख़ित्ते के अंदर मबऊस किए गये। नक़्शे में जज़ीरा नुमाए अरब के दाएँ तरफ़ ख़लीज फ़ारस और बाएँ तरफ़ बहरा-ए-क़ुल्ज़म (बहरा-ए-अहमर /Red Sea) है, जो ऊपर जाकर ख़लीज अक़बा और ख़लीज स्वेज़ में तक़सीम हो जाता है।

नक़्शे पर ख़लीज फ़ारस से ऊपर सीधी लकीर खींची जाये और ख़लीज अक़बा के शिमाली कोने से भी एक लकीर खींची जाये तो जहाँ यह दोनों लकीरें आपस में मिलेंगी, यह वह इलाक़ा है जहाँ पर हज़रत नूह अलै. की क़ौम आबाद थी। यहीं से ऊपर शिमाल की जानिब अरारात का पहाड़ी सिलसिला है, जिसमें कोहे जूदी पर आपकी कश्ती लंगर अंदाज़ हुई थी। इस इलाक़े में सैलाब की सूरत में हज़रत नूह अलै. की क़ौम पर अज़ाब आया, जिससे पूरी क़ौम हालाक़ हो गई। उस वक़्त तक पूरी नस्ले इंसानी बस यहीं पर आबाद

थी, चुनाँचे सैलाब के बाद नस्ले इंसानी हज़रत नूह की औलाद ही से आगे चली।

हज़रत नूह अलै. के एक बेटे का नाम साम था, वह अपनी औलाद के साथ ईराक़ के इलाक़े में आबाद हो गये। उस इलाक़े में उनकी नस्ल से बहुत सी क़ौमें पैदा हुईं। उन्हीं में से एक क़ौम अपने मशहूर सरदार “आद” के नाम की वजह से मशहूर हुई। क़ौमे आद जज़ीरा नुमाए अरब के जुनूब में अहक़ाफ़ के इलाक़े में आबाद थी। इस क़ौम में जब शिर्क आम हो गया तो अल्लाह तआला ने उनकी इस्लाह के लिये बहुत से नबी भेजे।

नक़्शा “अर्ज़ल क़ुरान”

(उन क़ौमों के इलाक़े जिनका ज़िक्र क़ुरान में बार-बार आया है)

इन अम्बिया के आखिर में हज़रत हूद अलै. उनकी तरफ़ रसूल मबऊस होकर आये। आपकी दावत को रद्द करके जब यह क़ौम भी अज़ाबे इलाही की मुस्तहिक़ हो गई तो हज़रत हूद अलै. अपने अहले ईमान साथियों को साथ लेकर अरब के वस्ती इलाक़े हिज्र की तरफ़ हिजरत कर गये। यहाँ फिर उन लोगों की नस्ल आगे बढ़ी। इनमें से क़ौमे समूद ने ख़ुसूसी तौर पर बहुत तरक्क़ी की। इस क़ौम का नाम भी समूद नामी किसी बड़ी शख़्सियत के नाम पर मशहूर हुआ। ये लोग फ़ने तामीर के बहुत माहिर थे। चुनाँचे इन्होंने मैदानी इलाक़ों में भी आलीशान महलात तामीर किए और Granite Rocks पर मुश्तमिल इन्तहाई सख़्त पहाड़ों को तराश कर ख़ूबसूरत मकानात भी बनाए। इस क़ौम की तरफ़ हज़रत सालेह अलै. मबऊस किए गये। यह तीनों अक़वाम (क़ौमे नूह, क़ौमे आद

और क़ौमे समूद) हज़रत इब्राहीम अलै. के ज़माने से पहले की हैं।

दूसरी तरफ़ ईराक़ में जो सामी उल नस्ल लोग आबाद थे उनमें हज़रत इब्राहीम अलै. मबऊस हुए। आपका तज़किरा क़ुरान में कहीं भी "अम्बिया अर्रुसुल" के अंदाज़ में नहीं किया गया। यहाँ सूरह हूद में भी आपका ज़िक्र "क़ससुल नबिय्यीन" की तर्ज़ पर आया है। फिर हज़रत इब्राहीम अलै. ने ईराक़ से हिजरत की और बहुत बड़ा सहराई इलाका अबूर करके शाम चले गये। वहाँ आपने फ़लस्तीन के इलाक़े में अपने बेटे हज़रत इस्हाक़ अलै. को आबाद किया जबकि इससे पहले अपने बड़े बेटे हज़रत इस्माईल अलै. को आप मक्का में आबाद कर चुके थे। हज़रत लूत अलै. आपके भतीजे थे। शाम की तरफ़ हिजरत करते हुए वो भी आपके साथ थे। हज़रत लूत अलै. को अल्लाह तआला ने रिसालत से नवाज़ कर आमूरा और सदुम के शहरों की तरफ़ मबऊस फ़रमाया। यह शहर बहरा-ए-मुरदार (Dead Sea) के किनारे पर आबाद थे। लिहाज़ा क़ौमे समूद के बाद अम्बिया अर्रुसुल के अंदाज़ में हज़रत लूत अलै. ही का ज़िक्र आयेगा।

हज़रत इब्राहीम अलै. की जो औलाद आपकी तीसरी बीवी क़तूरा से हुई वो ख़लीज अक़बा के मशरिक़ी इलाक़े में आबाद हुई। अपने किसी मशहूर सरदार के नाम पर इस क़ौम और इस इलाक़े का नाम "मदयन" मशहूर हुआ। इस क़ौम की तरफ़ हज़रत शुऐब अलै. को मबऊस किया गया। अम्बिया अर्रुसुल के इस सिलसिले में हज़रत शुऐब अलै. के बाद हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र आता है। हज़रत मूसा अलै. को मिस्र में मबऊस किया गया जो जज़ीरा नुमाए अरब से बाहर जज़ीरा नुमाए सीना (Senai Peninsula) के दूसरी

तरफ़ वाक़ेअ (situated) है आपकी बेअसत बनी इस्राईल में हुई थी, जो हज़रत युसुफ़ अलै. की वसातत से फ़लस्तीन से हिजरत करके मिस्र में आबाद हुए थे। (सूरह युसुफ़ में इस हिजरत की पूरी तफ़सील मौजूद है।)

बनी नौए इंसान की हिदायत के लिये अल्लाह तआला ने बहुत से अम्बिया अर्रुसुल दुनिया के मुख्तलिफ़ इलाक़ों में मबऊस फ़रमाए। उन तमाम पैगम्बरों की तारीख़ बयान करना क़ुरान का मौज़ू नहीं है। क़ुरान तो किताबे हिदायत है और अम्बिया व रुसुल के वाक़िआत भी हिदायत के लिये ही बयान किए जाते हैं। इस हिदायत के तमाम पहलु किसी एक रसूल के क़िस्से में भी मौजूद होते हैं मगर मज़कूरा छः रसूलों (अलै.) का ज़िक्र बार-बार इसलिये क़ुरान में आया है कि उनके नामों से अहले अरब वाक़िफ़ थे और उनकी हिकायात (दास्तान) व रिवायात में भी उनके तज़किरे मौजूद थे।

आयात 25 से 35 तक

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۡ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ

﴿٢٥﴾ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ

عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ

اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ ۚ وَمَا

نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ۲۷
○ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ
اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ۲۸ وَيٰقَوْمِ لَآ
اَسْــَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا
بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ
اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۲۹ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ
مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۳۰ وَلَآ
اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ
وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ
اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّيْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۳۱ قَالُوْا يٰنُوْحُ
قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۳۲ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ
اِنْ شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۳۳ وَلَا يَنْفَعُكُمْ
نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ

اَنۡ يُّغۡوِيَكُمۡ‌ؕ هُوَ رَبُّكُمۡ‌ قف وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ؕ ۝٣٤ اَمۡ
يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَرٰٮهُ‌ ؕ قُلۡ اِنِ افۡتَرَيۡتُهٗ فَعَلَىَّ اِجۡرَامِىۡ وَاَنَا
بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تُجۡرِمُوۡنَ ۝٣٥ ع

आयत 25

وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا اِلٰى قَوۡمِهٖۤ اِنِّىۡ لَـكُمۡ نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ۝٢٥ ۙ

"और हमने भेजा नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ (तो आपने कहा) कि मैं तुम्हारे लिये एक ख़ुला ख़बरदार करने वाला हूँ।"

आयत 26

اَنۡ لَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّا اللّٰهَ‌ ؕ اِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ۝٢٦

"कि मत पूजो किसी को सिवाय अल्लाह के। मुझे अंदेशा है तुम पर एक बड़े दर्दनाक दिन के अज़ाब का।"

आयत 27

فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا

"तो उसकी क़ौम के उन सरदारों ने कहा जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की थी कि हम नहीं देखते (ऐ नूह) आपको मगर अपने जैसा एक इंसान"

उन्होंने कहा कि आप तो बिल्कुल हमारे जैसे इंसान हैं। आपमें हमें कोई ऐसी बात नज़र नहीं आती कि हम आपको अल्लाह का फ़रसतादा (भेजा हुआ) मान लें।

وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِیْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ

"और हम नहीं देखते मगर यह कि आपकी पैरवी करने वाले बज़ाहिर हम में अदना दर्जे के लोग हैं।"

हमें बिला तामिल नज़र आ रहा है कि चंद मुफ़लिस, नादार और निचले तबक़े के लोग आपके गिर्द इकठ्ठे हो गये हैं, जबकि हमारे मआशरे का कोई भी मौअज़्ज़ और माक़ूल आदमी आपसे मुतास्सिर नहीं हुआ।

وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَیْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِیْنَ ۝۲۷

"और हमें नज़र नहीं आती अपने मुक़ाबले में तुम लोगों में कोई भी फ़ज़ीलत, बल्कि हमारा गुमान तो यही है कि तुम लोग झूठे हो।"

आयत 28

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ

"नूह ने कहा: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ज़रा ग़ौर करो अगर मैं (पहले से ही) अपने रब की तरफ़ से बय्यिना पर था"

यह लफ़्ज बय्यिना इस सूरत में बार-बार आयेगा। यानि मैंने अपनी ज़िन्दगी तुम्हारे दरमियान गुज़ारी है, मेरा किरदार, मेरा अख्लाक़ और मेरा रवैय्या सब कुछ तुम अच्छी तरह जानते हो। तुम लोग जानते हो कि मैं एक शरीफ़ अन्नफ़्स और सलीमुल फ़ितरत इंसान हूँ। लिहाज़ा तुम लोग ग़ौर करो कि पहले भी अगर मैं ऐसी शख़्सियत का हामिल इंसान था:

وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ۭ

"और (अब) उसने मुझे अपने पास से ख़ास रहमत भी अता फ़रमा दी है (और यह वह चीज़ है) जिसको तुम्हारी नज़रों से पोशीदा रखा गया है।"

यानि मेरे ऊपर अल्लाह की रहमत से वही आती है जिसकी कैफ़ियत और हक़ीकत का इदराक तुम लोग नहीं कर सकते। मैं इसके बारे में तुम लोगों को बता ही सकता हूँ, दिखा तो नहीं सकता।

اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝۲۸

"तो क्या हम चिपका दें तुम पर इसको (ज़बरदस्ती) जबकि तुम लोग इसको नापसंद करते हो?"

अब अगर एक बात आप लोगों को पसंद नहीं आ रही तो हम ज़बरदस्ती उसको तुम्हारे सिर नहीं थोप सकते। हम आप लोगों को मजबूर तो नहीं कर सकते कि आप ज़रूर ही अल्लाह को अपना मअबूद और मुझे उसका रसूल मानो।

आयत 29

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ

"और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुमसे इसके बदले कोई माल तलब नहीं करता। मेरा अज्र तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और जो लोग ईमान लाए हैं मैं उनको धुत्कारने वाला भी नहीं हूँ।"

जिन लोगों के बारे में तुम कहते हो कि वो अदना तबक़े से ताल्लुक़ रखते हैं, वो सब अहले ईमान हैं, इस लिहाज़ से मेरे नज़दीक वो बहुत अहम और मौअज़्ज़ लोग हैं। अब मैं तुम्हारे कहने पर उनको ख़ुद से दूर नहीं हटा सकता।

اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْـهَلُوْنَ ۝۲۹

"वो यक़ीनन अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुम लोग जहालत में मुब्तला हो गये हो।"

आयत 30

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ

"और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! (ज़रा सोचो कि) अगर मैं इनको अपने यहाँ से भगा दूँगा तो कौन मेरी मदद करेगा अल्लाह के मुक़ाबले में?"

यह सब सच्चे मोमिनीन, अल्लाह का ज़िक्र करने वाले और उससे दुआ माँगने वाले लोग हैं। अगर मैं तुम्हारे कहने पर इनको धुत्कार दूँ तो अल्लाह की नाराज़गी से मुझे कौन बचाएगा।

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۳۰

"तो क्या तुम लोग नसीहत अख़ज नहीं करते?"

आयत 31

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ

"और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं"

मैंने कब दावा किया है कि अल्लाह के ख़जानों पर मेरा इख़्तियार है। यह वही बात है जो हम सूरतुल अनआम आयत 50 में मुहम्मदुन रसूल अल्लाह ﷺ के हवाले से पढ़ चुके हैं।

وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ

"और ना मैं ग़ैब का इल्म रखता हूँ, ना मैं कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ"

وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ

"और ना मैं यह कह सकता हूँ उन लोगों के बारे में जिन्हें तुम्हारी आँखें हक़ीर देख रही हैं कि अल्लाह उन्हें कोई ख़ैर नहीं देगा।"

क्या मालूम अल्लाह के यहाँ वो बहुत महबूब हों, अल्लाह उन्हें बहुत बुलंद मरातिब अता करे और उखरवी ज़िन्दगी में {فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ڏ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ} (अल् वाक़या:89) का मुस्तहिक़ ठहराए।

اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ښ اِنِّىْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝31

"अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है (अगर मैं उनको दूर कर दूँ) तब तो यक़ीनन मैं खुद ज़ालिमों में से हो जाऊँगा।"

यह तो अल्लाह ही बेहतर जानता है कि कौन अपने ईमान के दावे में कितना मुख़लिस है और किसके दिल में अल्लाह के लिये कितनी मोहब्बत है। अगर मैं तुम्हारे तानों से तंग आकर इन अहले ईमान को अपने पास से उठा दूँ तो मेरा शुमार ज़ालिमों में होगा।

आयत 32

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا

"उन्होंने कहा: ऐ नूह! तुमने हमसे झगड़ा किया और खूब झगड़ा किया"

जब हज़रत नूह अलै. की इन तमाम बातों का इल्मी, अक़्ली और मन्तक़ी सतह पर कोई जवाब उन लोगों से ना बन पड़ा तो वो ख्वाह-म-ख़्वाह ज़िद और हठधर्मी पर उतर आये कि बस जी बहुत हो गया बहस-मुबाहसा, अब छोड़ें इन दलीलों को और:

فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

"पस ले आओ हम पर वह अज़ाब जिसकी तुम हमें धमकी दे रहे हो, अगर तुम सच्चे हो।"

आयत 33

قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَاۗءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾

"आपने फ़रमाया कि वह (अज़ाब) तो अल्लाह ही लायेगा तुम्हारे ऊपर अगर वह चाहेगा और फिर तुम उसको शिकस्त नहीं दे सकोगे।"

अगर उसने तुम्हें अज़ाब देने का फ़ैसला कर लिया तो फिर तुम लोग उसका मुक़ाबला करके उसके अज़ाब से बच कर भाग नहीं सकोगे।

आयत 34

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ۭ

"और तुम लोगों को मेरी नसीहत कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती अगर मैं तुम्हें नसीहत करना भी चाहूँ, अगर अल्लाह ही तुम्हारी गुमराही का फ़ैसला कर चुका है।"

अगर तुम्हारी ख्वाह-म-ख़्वाह की ज़िद और हठधर्मी के बाइस अल्लाह ने तुम्हारी गुमराही के फ़ैसले पर मुहर सब्त कर (लगा) दी हो तो फिर नसीहत और ख़ैरख्वाही तुम्हारे हक़ में कुछ भी मुफ़ीद नहीं हो सकती।

هُوَ رَبُّكُمْ ۣ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۭ ۳۴

"वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौटा दिए जाओगे।"

आयत 35

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ

"क्या यह कहते हैं कि इस (मुहम्मद ﷺ) ने इस (क़ुरान) को गढ़ लिया है? आप ﷺ कहिए कि अगर मैंने इसे गढ़ लिया है तो इसका वबाल मुझ ही पर आयेगा, और मैं बरी हूँ उससे जो जुर्म तुम कर रहे हो।"

اِجْرَامِیْ وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا

تُجْرِمُوْنَ ۝۳۵

यह एक जुमला-ए-मौतरज़ा (सहानुभूतिशील बात) है जो हज़रत नूह अलै. के ज़िक्र के दरमियान आ गया है। इसमें रसूल अल्लाह ﷺ को मुख़ातिब करके फ़रमाया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ! यह तमाम बातें जो हम आपको बज़रिया-ए-वही बताते हैं, जैसे हज़रत नूह और आपकी क़ौम की ग़फ्त व शनीद नक़ल हुई, तो मुशरिकीने मक्का कहते हैं कि यह बातें और क़िस्से आप ख़ुद अपनी तरफ़ से बनाकर उन्हें सुनाते हैं। आप उन पर वाज़ेह कर दें कि मैं अगर वाक़ई यह जुर्म कर रहा हूँ तो इसका वबाल भी मुझ ही पर आयेगा। मगर आप लोग इसके दूसरे पहलु पर भी ग़ौर करें कि अगर यह क़लाम वाक़ई अल्लाह की तरफ़ से है तो इसको झुठला कर तुम लोग जिस जुर्म के मुरतकिब हो रहे हो, उसके नतीजे भी फिर तुम लोगों को ही भुगतना हैं। बहरहाल मैं अलल ऐलान कह देता हूँ कि मैं तुम्हारे इस जुर्म से बिल्कुल बरी हूँ। इस जुमला-ए-मौतरज़ा के बाद हज़रत नूह अलै. के ज़िक्र का सिलसिला दोबारा वहीं से जोड़ा जा रहा है।

आयात 36 से 49 तक

وَاُوْحِیَ اِلٰی نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ یُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ

اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ ۝۳۶ وَاصْنَعِ

الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۣ وَكُلَّمَا
مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ۭ قَالَ اِنْ
تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ ۭ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ
عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۳۹﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَ اَمْرُنَا وَفَارَ
التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ
وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ۭ وَمَآ
اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۴۰﴾ وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ
اللّٰهِ مَجْــرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۱﴾
وَهِىَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۣ وَنَادٰي نُوْحُۨ
ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ
الْمَاۗءِ ۭ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ
وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿۴۳﴾
وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَاۗءَكِ وَيٰسَمَاۗءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ

الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ
بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ
رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ
اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۴۵﴾ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ
اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ڮ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنِّىْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۴۶﴾
قَالَ رَبِّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ
عِلْمٌ ۭ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ
﴿۴۷﴾ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ
وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۭ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ
مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۸﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ
اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ
هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾

आयत 36

وَاُوۡحِىَ اِلٰى نُوۡحٍ اَنَّهٗ لَنۡ يُّؤۡمِنَ مِنۡ قَوۡمِكَ اِلَّا مَنۡ قَدۡ اٰمَنَ فَلَا تَبۡتَئِسۡ بِمَا كَانُوۡا يَفۡعَلُوۡنَ ۚ ۝۳۶

"और वही कर दी गई नूह की तरफ़ कि अब कोई शख़्स ईमान नहीं लाएगा तुम्हारी क़ौम में से सिवाय उन लोगों के जो ईमान ला चुके हैं, तो जो कुछ वो कर रहे हैं आप उसकी वजह से ग़मगीन ना हों।"

आयत 37

وَاصۡنَعِ الۡفُلۡكَ بِاَعۡيُنِنَا وَوَحۡيِنَا

"और (अब) आप कश्ती बनाइये हमारी निगाहों के सामने और हमारी हिदायत के मुताबिक़"

इस हुक्म से यूँ लगता है कि कश्ती की तैयारी के हर मरहले पर हज़रत नूह अलै. को अल्लाह तआला की तरफ़ से हिदायात मिल रही थीं, मसलन लम्बाई इतनी हो, चौड़ाई इतनी हो, लकड़ियाँ यूँ तैयार करो, वगैरह।

وَلَا تُخَاطِبۡنِىۡ فِى الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ۚ

"और जो ज़ालिम हैं उनके बारे में अब मुझसे बात ना कीजिएगा।"

अब इन मुन्करीन में से किसी के बारे में कोई दरख़्वास्त, दुआ या सिफ़ारिश वग़ैरह आपकी तरफ से ना आए, अब उसका वक़्त गुज़र चुका है।

اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۝	*"(अब) यह सबके सब गर्क़ किए जायेंगे।"*

आयत 38

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۣ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ۭ	*"और आप कश्ती बना रहे थे और जब भी आपके पास से गुज़रते आपकी क़ौम के सरदार तो वो आपका मज़ाक उड़ाते।"*

हज़रत नूह अलै. और आपके अहले ईमान साथी जिस जगह और जिस इलाक़े में यह कश्ती बना रहे थे ज़ाहिर है कि वहाँ हर तरफ़ ख़ुश्की थी, समुद्र या दरिया का कहीं दूर-दूर तक नामो निशान नहीं था। इन हालात में तसव्वुर करें कि क्या-क्या बातें और कैसे-कैसे तमस्ख़ुर आमेज़ फ़िक़रे कहे जाते होंगे कि अब तो मालूम होता है कि इनकी बिल्कुल ही मत मारी गई है कि ख़ुश्की पर कश्ती चलाने का इरादा है!

قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ۝	*"नूह फ़रमाते कि अगर (आज) तुम हमसे तमस्ख़ुर कर रहे हो तो (वो वक़्त क़रीब आने वाला है कि) हम भी तुमसे तमस्ख़ुर करेंगे जैसे कि अब तुम तमस्ख़ुर कर रहे हो।"*

आयत 39

فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ يَّاۡتِيۡهِ عَذَابٌ يُّخۡزِيۡهِ وَيَحِلُّ عَلَيۡهِ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ﴿۳۹﴾

"तो अनक़रीब तुम जान लोगे के किस पर आता है वह अज़ाब जो उसे रुसवा कर देगा, और किस पर इतराता है वह अज़ाब जो क़ायम रहने वाला (दाइमी) होगा।"

आयत 40

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمۡرُنَا وَفَارَ التَّنُّوۡرُ ۙ

"यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तनवर जोश से उबल पड़ा"

मशरिक़े वुस्ता के उस पूरे इलाक़े में एक बहुत बड़े सैलाब के वाज़ेह आसार भी मिलते हैं, इस बारे में तारीखी शहादतें भी मौजूद हैं और आज का इल्मे तबक़ातुल अर्द (Geology) भी इसकी तस्दीक़ करता है। H.G. Wells ने इस सैलाब की तावील यूँ की है कि यह इलाक़ा बहरा-ए-रोम (Mediterran-ean) की सतह से बहुत नीचा था, मगर समुद्र के मशरिक़ी साहिल यानि शाम और फ़लस्तीन के साथ-साथ मौजूद पहाड़ी सिलसिलों की वजह से समुद्र का पानी खुश्की की तरफ नहीं आ सकता था। (जैसे कराची के बाज़ इलाक़ों के बारे में भी कहा जाता है कि वो सतह समुद्र से बहुत नीचे हैं मगर साहिली इलाक़े की सतह चूँकी बुलंद है इसलिये समुद्र का पानी इस तरफ़ नहीं आ सकता।) H.G. Wells का ख़्याल है कि इस इलाक़े में समुद्र से किसी वजह

से पानी के लिये कोई रास्ता बन गया होगा जिसकी वजह से यह पूरा इलाक़ा समुद्र की शक़्ल इख़्तियार कर गया। क़ुरान मजीद के अल्फ़ाज़ के मुताबिक़ इस सैलाब का आग़ाज एक ख़ास तनवर से हुआ था जिसके नीचे से पानी का चश्मा फूट पड़ा। उसके साथ ही आसमान से ग़ैर मामूली अंदाज़ में लगातार बारिशें हुईं और ज़मीन ने भी अपने चश्मों के दहाने खोल दिये। फिर आसमान और ज़मीन के यह दोनों पानी मिल कर अज़ीम सैलाब की सूरत इख़्तियार कर गये। सूरह अल क़मर में इसकी तफ़सील बाँ अल्फ़ाज़ बयान की गई है:

{ فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَاۗءِ بِمَاۗءٍ مُّنْهَمِرٍ} {وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَاۗءُ عَلٰٓي اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ} (आयत:11-12) "पस हमने आसमान के दरवाज़े खोल दिये जिनसे लगातार बारिश बरसने लगी और ज़मीन को फाड़ दिया कि हर तरफ़ चश्मे फूट पड़े और यह दोनों तरह के पानी उस काम को पूरा करने के लिये मिल गये जो मुक़द्दर कर दिया गया था।"

قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ

"हमने कहा: (ऐ नूह अलै.!) अपनी क़श्ती में तमाम जानदारों का एक-एक जोड़ा रख लो और अपने अहलो अयाल को भी, सिवाय उनके जिनके में बारे में पहले हुक्म गुज़र चुका है"

यह इस्तसनाई हुक्म हज़रत नूह अलै. की एक बीवी और आपके बेटे "याम" (कुन्आन) के बारे में था, जो उसी बीवी से था, जबकि आपके तीन बेटे हाम, साम और याफ़िस ईमान

ला चुके थे और आपके साथ क़श्ती में सवार हुए थे। हज़रत साम और उनकी औलाद बाद में इसी इलाक़े में आबाद हुई थी। चुनाँचे क़ौमे आद, क़ौमे समूद और हज़रत इब्राहीम अलै. सब सामीउल नस्ल थे। हाम और याफ़िस दूसरे इलाक़ों में जाकर आबाद हुए और अपने-अपने इलाक़ों में उनकी नस्ल भी आगे चली।

وَمَنْ اٰمَنَ ۭ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝۴۰

"और उन लोगों को भी (सवार कर लें) जो ईमान लाये हैं, और नहीं ईमान लाये थे आपके साथ मगर बहुत ही कम।"

यहाँ पर लफ़्ज़ क़लील अँग्रेज़ी मुहावरे "the little" के हम मायने है, यानि बहुत ही थोड़े, ना होने के बराबर।

आयत 41

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْــرٖ۩ىهَا وَمُرْسٰىهَا ۭ

"और नूह ने फ़रमाया: सवार हो जाओ इसमें, अल्लाह के नाम के साथ ही है इसका चलना भी और इसका लंगर अंदाज़ होना भी।"

जब तक अल्लाह चाहेगा और जिस सिम्त को इसे चलायेगा यह चलेगी और जब और जहाँ उसकी मशीयत होगी यह लंगर अंदाज हो जायेगी।

اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۴۱

"यक़ीनन मेरा रब बख्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।"

आयत 42

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۣ

“और वह चल रही थी उन सबको लेकर पहाड़ जैसी मौजों के दरमियान से”

وَنَادٰي نُوْحُۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝۴۲

“और नूह ने पुकारा अपने बेटे को और वह एक किनारे की तरफ़ था, कि ऐ मेरे बेटे आओ हमारे साथ (कश्ती में) सवार हो जाओ और काफ़िरों के साथ मत रहो।”

आयत 43

قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰي جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَاۗءِ ۭ

“उसने कहा मैं अभी किसी पहाड़ पर चढ़ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा।”

قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ

“नूह ने कहा: आज के दिन कोई बचाने वाला नहीं है अल्लाह के अम्र से, सिवाय उसके जिस पर अल्लाह ही रहम फ़रमा दे।”

وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾

"और हाइल हो गई उन दोनों के दरमियान एक मौज और वह हो गया ग़र्क़ होने वालों में।"

इस गुफ्तगू के दौरान एक बड़ी मौज आई और उसकी ज़द में आकर आपकी नज़रों के सामने आपका वह बेटा ग़र्क़ हो गया।

आयत 44

وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ

"और हुक्म हुआ कि ऐ ज़मीन तू अपने पानी को निगल जा"

ज़मीन को अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि तू अपने इस पानी को अपने अंदर जज़्ब कर ले। अल्लाह बेहतर जानता है कि इस अमल में कितना वक़्त लगा होगा। बहरहाल हुक्मे इलाही के मुताबिक़ पानी ज़मीन में जज़्ब हो गया।

وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ

"और ऐ आसमान तू भी अब थम जा, और पानी सुखा दिया गया, और फ़ैसला चुका दिया गया"

وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ

"और कश्ती जूदी पहाड़ पर जा ठहरी"

कोहे अरारात में "जूदी" एक चोटी का नाम है। यह दुश्वार गुज़ार पहाड़ी सिलसिला आज़र बायजान के इलाक़े और तुर्की की सरहद के करीब है। किसी ज़माने में एक ऐसी ख़बर भी मशहूर हुई थी कि इस पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी पर किसी जहाज़ के पायलट ने कोई क़श्तीनुमा चीज़ देखी थी। बहरहाल क़ुरान का फ़रमान है कि हम उस क़श्ती को महफ़ूज़ रखेंगे और एक ज़माने में यह निशानी बन कर दुनिया के सामने आयेगी (अल्‌अन्कबूत :15)। चुनाँचे मालूम होता है कि वह कश्ती अब भी कोहे जूदी की चोटी पर मौजूद है और एक वक़्त आयेगा जब इंसान उस तक रसाई हासिल कर लेगा।

وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ٤٤

"और कह दिया गया दूरी (हलाकत) है उस क़ौम के लिये जो ज़ालिम थी।"

यानि उस क़ौम का नामो निशान मिटाकर हमेशा के लिये नस्यम मन्सिया कर दिया गया।

आयत 45

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ

"और पुकारा नूह ने अपने रब को और कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरा बेटा मेरे अहल में से था"

وَاِنَّ وَعۡدَكَ الۡحَقُّ وَاَنۡتَ اَحۡكَمُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۴۵﴾

"और यक़ीनन तेरा वादा सच्चा है और तू तमाम हाकिमों में सबसे बड़ा और सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला हाकिम है।"

परवरदिगार तूने वादा किया था कि तू मेरे अहल को बचा लेगा, जबकि मेरा बेटा तो मेरी आँखों के सामने डूब गया।

आयत 46

قَالَ يٰنُوۡحُ اِنَّهٗ لَيۡسَ مِنۡ اَهۡلِكَ‌ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيۡرُ صَالِحٍ‌ ‌ۖ

"अल्लाह ने फ़रमाया कि ऐ नूह! वह तुम्हारे अहल में से नहीं है, उसके आमाल ग़ैर सालेह हैं।"

उसके नज़रियात, उसके अक़ाइद, उसका किरदार सब काफ़िराना थे। वह आपके अहल में कैसे शुमार हो सकता है? नबी का घराना सिर्फ़ नसब से नहीं बनता बल्कि ईमान व अमले सालेह से बनता है। चुनाँचे वह आपके नस्बी ख़ानदान का एक रुकन होने के अलल रग़म आपके ईमानी व अख्लाक़ी ख़ानदान का फ़र्द नहीं था।

فَلَا تَسۡـَٔلۡنِ مَا لَيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ‌ ؕ

"तो आप मुझसे उस चीज़ का सवाल ना करें जिसके बारे में आपको इल्म नहीं।"

اِنِّیْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۴۶﴾

"मैं आपको नसीहत करता हूँ कि आप जज़्बात से मग़लूब हो जाने वालों में से ना बनें।"

यह बहुत सख़्त अंदाज़ है। याद कीजिए कि सूरतुल अनआम की आयत 35 में मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ से भी इसी तरह के अल्फ़ाज़ फ़रमाए गये हैं।

आयत 47

قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَیْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ

"नूह ने अर्ज़ किया: ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तेरी पनाह तलब करता हूँ इससे कि मैं तुझसे ऐसी बात का सवाल करूँ जिसके बारे में मेरे पास कोई इल्म नहीं है।"

وَاِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَتَرْحَمْنِیْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۴۷﴾

"और अगर तूने मुझे माफ़ ना फ़रमा दिया और मुझ पर रहम ना फ़रमाया तो मैं हो जाऊँगा ख़सारा पाने वालों में।"

आयत 48

قِیْلَ یٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ

"हुक्म हुआ ऐ नूह उतर जाओ हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ, जो आप पर भी होंगी और उन उम्मतों पर भी जो

عَلَيۡكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنۡ مَّعَكَ ؕ

आपके साथियों की नस्लों से वुजूद में आयेंगी।"

आम ख़्याल यही है कि इस तूफ़ान के बाद नस्ले इंसानी हज़रत नूह अलै. के इन तीनों बेटों से चली थी। इस सिलसिले में माहिरीन इल्मुल इन्साब की मुख़्तलिफ़ आरा (राय) का ख़ुलासा यह है कि आपके बेटे हज़रत साम उस इलाक़े में आबाद हो गये, जबकि हज़रत याफ़िस की औलाद वस्ती एशिया के पहाड़ी सिलसिले को अबूर करके रूस के मैदानी इलाक़ों में जा बसी। फिर वहाँ से उनमें से कुछ लोग सहराए गोबी को अबूर करके चीन की तरफ़ चले गये। चुनाँचे वस्ती एशिया के मुमालिक से लेकर चीन, उसके मल्हक़ा इलाक़ों और पूरे यूरोप में इसी नस्ल के लोग आबाद हैं। इनके अलावा Anglo Saxons और शुमाली अक़वाम के लोग भी इसी नस्ल से ताल्लुक़ रखते हैं।

दूसरी तरफ़ हज़रत हाम की नस्ल के कुछ लोग मशरिक़ की तरफ़ कूच करके ईरान और फिर हिन्दुस्तान में आ बसे। जबकि इनमें से बाज़ दूसरे क़बाईल जज़ीरा नुमाए सीना को अबूर करके मग़रिब में सूडान और मिस्र की तरफ़ चले गये। चुनाँचे आरयाई अक़वाम, रोमन, जर्मन, यूनानी और मशरिक़ी यूरोप के तमाम लोग हज़रत हाम ही की नस्ल से ताल्लुक़ रखते हैं, वल्लाहु आलम।

وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمۡ ثُمَّ يَمَسُّهُمۡ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝٤٨

"और कुछ और क़ौमें (भी होंगी) जिन्हें हम (दुनिया के) कुछ फ़ायदे देंगे, फिर उनको हमारी तरफ़ से एक दर्दनाक अज़ाब आ पकड़ेगा।"

जैसा कि बाद में क़ौमे आद व क़ौमे समूद पर अज़ाब आया है।

आयत 49

تِلۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡغَيۡبِ نُوۡحِيۡهَاۤ اِلَيۡكَ‌ۚ

"(ऐ मुहम्मद ﷺ!) यह ग़ैब की चीज़ों में से है जो हम वही कर रहे हैं आपकी तरफ़।"

مَا كُنۡتَ تَعۡلَمُهَاۤ اَنۡتَ وَلَا قَوۡمُكَ مِنۡ قَبۡلِ هٰذَا‌ ۛؕ

"इससे पहले ना आप इनको जानते थे और ना आपकी क़ौम।"

فَاصۡبِرۡ‌ ۛؕ اِنَّ الۡعَاقِبَةَ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ۝٤٩

"तो आप सब्र कीजिए, यक़ीनन अंजामकार भला होगा अहले तक़वा ही का।"

आप हिम्मत और सब्र व इस्तक़ामत के साथ अपना काम किए चले जायें। यक़ीनन अंजामेकार की कामयाबी अहले तक़वा ही के लिये है।

आयात 50 से 60 तक

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا
لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝ ٥٠ يٰقَوْمِ
لَآ اَسْـــَٔـلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي الَّذِيْ
فَطَرَنِيْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ ٥١ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاۗءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا
وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ ٥٢
قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ
اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ ٥٣ اِنْ
نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْۗءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ
اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ ٥٤ ۙ
مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ۝ ٥٥ اِنِّىْ
تَوَكَّلْتُ عَلَي اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ
اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ ٥٦
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۭ

وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ۭ
اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝ ٥٧ وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا
نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ
وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ ٥٨ وَتِلْكَ عَادٌ ڶ
جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ
جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ ٥٩ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً
وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا
لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝ ٦٠ ۧ

आयत 50

وَاِلٰي عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۭ

"और क़ौमे आद की तरफ़ (हमने भेजा) उनके भाई हूद अलै. को।"

क़ौमे आद हज़रत साम की नस्ल से थी। यह क़ौम अपने ज़माने में जज़ीरा नुमाए अरब के जुनूब में आबाद थी। आज-कल यह इलाक़ा लक़ व दक़ सहरा है।

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ

"आप अलै. ने कहा: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारा कोई मअबूद नहीं अल्लाह के सिवा। (इस सिलसिले में) तुम महज़ झूठ गढ़ते हो।"

اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا مُفۡتَرُوۡنَ ۝۵۰

यह जो तुमने मुख़्तलिफ़ नामों से मअबूद गढ़ रखे हैं इनकी कोई हक़ीक़त नहीं है, यह तुम महज़ इफ़तरा कर रहे हो।

आयत 51

يٰقَوۡمِ لَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ اَجۡرًا ؕ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلَى الَّذِىۡ فَطَرَنِىۡ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ۝۵۱

"ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुमसे किसी अज्र का तालिब नहीं हूँ। नहीं है मेरा अज्र मगर उसी के ज़िम्मे जिसने मुझे पैदा फ़रमाया है। तो क्या तुम लोग अक़्ल से काम नहीं लेते?"

आयत 52

وَيٰقَوۡمِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّكُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَيۡهِ

"और मेरी क़ौम के लोगो! अपने परवरदिगार से इस्तग़फ़ार करो, फिर उसी की तरफ़ रुजूअ करो"

शिर्क, बुतपरस्ती को छोड़ दो और अल्लाह से अपने इस गुनाह की माफ़ी माँगो।

يُرۡسِلِ السَّمَآءَ عَلَيۡكُمۡ مِّدۡرَارًا وَّيَزِدۡكُمۡ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمۡ وَلَا تَتَوَلَّوۡا مُجۡرِمِيۡنَ ﴿٥٢﴾

"वह आसमान से तुम पर ख़ूब पानी बरसाएगा, और तुम्हारी मौजूदा क़ुव्वत में मज़ीद क़ुव्वत का इज़ाफ़ा फ़रमाएगा, और तुम रूगरदानी ना करो मुजरिम बन कर।"

क़ुरान हकीम के कई मक़ामात से यह बात मालूम होती है कि जब अल्लाह तआला किसी क़ौम की तरफ़ अपना रसूल अपने पैग़ाम के साथ भेजता है तो अब उस क़ौम की क़िस्मत उस पैग़ाम के साथ मुअल्लक़ हो जाती है। अगर वो क़ौम रसूल पर ईमान ले आती है और उस पैग़ाम को क़ुबूल कर लेती है तो अल्लाह तआला उस पर अपनी नेअमतों के दरवाज़े खोल देता है, ब-सूरते दीगर उसे तबाह व बर्बाद कर दिया जाता है।

आयत 53

قَالُوۡا يٰهُوۡدُ مَا جِئۡتَنَا بِبَيِّنَةٍ

"उन्होंने कहा कि ऐ हूद! तुम हमारे पास कोई सनद लेकर नहीं आये"

यानि आप जो दावा करते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो इसके सबूत के तौर पर आपके पास कोई खुली निशानी, सनद या मौअज्ज़ा नहीं है।

وَّمَا نَحۡنُ بِتَارِكِيۡۤ اٰلِهَتِنَا عَنۡ قَوۡلِكَ وَمَا نَحۡنُ لَكَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ۝۵۳

"और हम नहीं हैं छोड़ने वाले अपने मअबूदों को सिर्फ़ तुम्हारे कहने पर, और हम तुम्हारी बात मानने वाले नहीं हैं।"

आयत 54

اِنۡ نَّقُوۡلُ اِلَّا اعۡتَرٰٮكَ بَعۡضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوۡٓءٍ ؕ

"हम तो यहीं कहते हैं कि तुम पर हमारे मअबूदों में से किसी की मार पड़ी है।"

यानि हमारा ख़्याल तो यही है कि आप जो हमारे मअबूदों का इन्कार करते हैं और उनकी शान में गुस्ताखी करते रहते हैं इसकी वजह से आपको उनकी तरफ़ से सज़ा मिली है और आपका दिमागी तवाज़ुन ठीक नहीं रहा। इसी लिये आप बहकी-बहकी बातें करने लगे हैं।

قَالَ اِنِّيۡۤ اُشۡهِدُ اللّٰهَ وَاشۡهَدُوۡۤا اَنِّىۡ بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تُشۡرِكُوۡنَ ۝۵۴ۙ مِنۡ دُوۡنِهٖ

"हूद अलै. ने कहा कि मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूँ उनसे जिन्हें तुम शरीक ठहरा रहे हो, उसके सिवा"

मैं तुम्हारे इन झूठे मअबूदों और तुम्हारे शिर्क के इस जुर्म से बिल्कुल बरी और बेज़ार हूँ। यह वही बात है जो हज़रत इब्राहीम अलै. ने अपनी क़ौम से फ़रमाई थी।

आयत 55

فَكِيۡدُوۡنِىۡ جَمِيۡعًا ثُمَّ لَا تُنۡظِرُوۡنِ ۝٥٥

"पस तुम सब मिलकर मेरे ख़िलाफ जो चालें चल सकते हो चल लो, फिर मुझे ज़रा मोहलत ना दो।"

आयत 56

اِنِّىۡ تَوَكَّلۡتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّىۡ وَرَبِّكُمۡؕ

"मैंने तो तव्वकुल किया है अल्लाह पर जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है।"

مَا مِنۡ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَاؕ

"नहीं है कोई जानदार मगर उसकी पेशानी उसकी गिरफ्त में है।"

यानि हर जानदार की क़िस्मत और तक़दीर अल्लाह के हाथ में है। हुज़ूर ﷺ से भी एक मशहूर दुआ में ये अल्फ़ाज़ मन्क़ूल हैं: (فِیْ قَبْضَتِكَ نَاصِيَتِیْ بِيَدِكَ)(3) यानि ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में हूँ, मेरी पेशानी तेरे ही हाथ में है।

اِنَّ رَبِّىۡ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝٥٦

"यक़ीनन मेरा रब तो सीधी राह पर है।"

अगर अल्लाह तक रसाई हासिल करनी है, अगर उसे पाना है तो वह तौहीद और अदल व इंसाफ़ की सीधी राह पर ही मिलेगा।

आयत 57

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقَدۡ اَبۡلَغۡتُكُمۡ مَّاۤ اُرۡسِلۡتُ بِهٖۤ اِلَيۡكُمۡ ؕ

"फिर अगर तुम पीठ मोड़ मोड़ लो (इंकार करो) तो मैंने पहुँचा दिया है तुम्हें (वह पैगाम) जो मुझे देकर तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है।"

وَيَسۡتَخۡلِفُ رَبِّىۡ قَوۡمًا غَيۡرَكُمۡ ۚ وَلَا تَضُرُّوۡنَهٗ شَيۡـًٔـا ؕ اِنَّ رَبِّىۡ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ حَفِيۡظٌ ﴿۵۷﴾

"और मेरा रब तुम्हारी जगह किसी और क़ौम को ले आयेगा, और तुम उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकोगे। यक़ीनन मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है।"

आयत 58

وَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا نَجَّيۡنَا هُوۡدًا وَّالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ بِرَحۡمَةٍ مِّنَّا ۚ

"और जब हमारा (अज़ाब का) फ़ैसला आ गया तो हमने बचा लिया हूद अलै. को और आपके अहले ईमान साथियों को अपनी रहमत से।"

وَنَجَّيۡنٰهُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ غَلِيۡظٍ ۝۵۸

"और हमने उन्हें निजात दे दी एक बहुत ही भारी अज़ाब से।"

आयत 59

وَتِلۡكَ عَادٌ ۟ۙ جَحَدُوۡا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمۡ وَعَصَوۡا رُسُلَهٗ

"यह थी क़ौमे आद, जिन्होंने इंकार किया अपने रब की आयात का और नाफ़रमानी की उसके रसूलों की"

यहाँ पर उन तमाम अंबिया को भी रसूल कहा गया है जो हज़रत हूद अलै. से पहले इस क़ौम में मबऊस हुए। अक्सर इस तरह होता रहा है कि किसी क़ौम में पहले बहुत से अम्बिया किराम अलै. उनके मुअल्लिमीन (अध्यापक) की हैसियत से आते रहे और फिर आखिर में एक रसूल आया। और जैसा कि क़ब्ल अज़ भी नबी और रसूल के फ़र्क़ के ज़िमन में बयान हो चुका है कि क़ुरान में यह दोनों अल्फ़ाज़ अगर अलग-अलग आयें तो एक दूसरे की जगह पर आ सकते हैं, लेकिन अगर यह दोनों अल्फ़ाज़ इकठ्ठे एक जगह आयें तो फिर इनमें से हर लफ़्ज़ अपने ख़ास मायने देता है।

وَاتَّبَعُوۡۤا اَمۡرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيۡدٍ ۝۵۹

"और उन्होंने पैरवी की हर सरकश व दुश्मने हक़ के हुक्म की।"

आयत 60

وَاُتۡبِعُوۡا فِیۡ هٰذِهِ الدُّنۡیَا لَعۡنَةً وَّیَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ ؕ

"और उनके पीछे लगा दी गई लानत इस दुनिया में भी और क़यामत के दिन (के लिये) भी।"

اَلَاۤ اِنَّ عَادًا کَفَرُوۡا رَبَّهُمۡ ؕ اَلَا بُعۡدًا لِّعَادٍ قَوۡمِ هُوۡدٍ ﴿۶۰﴾

"आगाह हो जाओ, क़ौमे आद ने अपने रब का कुफ़्र किया था। सुन लो, फटकार है आद पर जो क़ौमे हूद थी!"

आयात 61 से 68 तक

وَاِلٰی ثَمُوۡدَ اَخَاهُمۡ صٰلِحًا ۘ قَالَ یٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَکُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَیۡرُهٗ ؕ هُوَ اَنۡشَاَکُمۡ مِّنَ الۡاَرۡضِ
وَاسۡتَعۡمَرَکُمۡ فِیۡهَا فَاسۡتَغۡفِرُوۡهُ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَیۡهِ ؕ اِنَّ
رَبِّیۡ قَرِیۡبٌ مُّجِیۡبٌ ﴿۶۱﴾ قَالُوۡا یٰصٰلِحُ قَدۡ کُنۡتَ فِیۡنَا
مَرۡجُوًّا قَبۡلَ هٰذَاۤ اَتَنۡهٰىنَاۤ اَنۡ نَّعۡبُدَ مَا یَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَا
وَاِنَّنَا لَفِیۡ شَکٍّ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَاۤ اِلَیۡهِ مُرِیۡبٍ ﴿۶۲﴾ قَالَ
یٰقَوۡمِ اَرَءَیۡتُمۡ اِنۡ کُنۡتُ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّیۡ وَاٰتٰىنِیۡ
مِنۡهُ رَحۡمَةً فَمَنۡ یَّنۡصُرُنِیۡ مِنَ اللّٰهِ اِنۡ عَصَیۡتُهٗ ۟ فَمَا

تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ۝٦٣ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ
لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْۗءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۝٦٤ فَعَقَرُوْهَا
فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ
مَكْذُوْبٍ ۝٦٥ فَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ
هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝٦٦ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝٦٧ۙ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا
فِيْهَا ۭ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ
۝٦٨ۧ

आयत 61

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ

"और समूद की तरफ़ (हमने भेजा) उनके भाई सालेह को।"

क़ौमे आद में से जो लोग बचे थे वो अपने इलाक़े से आगे वस्ती इलाक़े की तरफ़ जाकर "हजर" में आबाद हुए और उन लोगों की नस्ल में से समूद नाम की एक बड़ी क़ौम उभरी। फिर वक़्त के साथ-साथ जब उस क़ौम के अंदर भी वही

खराबियाँ पैदा हो गईं और वो लोग भी जब बुतपरस्ती और शिर्क की लानत में मुब्तला हो गये तो उनकी इस्लाह के लिये हज़रत सालेह अलै. को मबऊस किया गया।

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

"आप अलै. ने फ़रमाया: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बंदगी करो, तुम्हारा कोई मअबूद उसके सिवा नहीं है।"

هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ

"उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उसमें तुमको आबाद किया, तो उससे अपने गुनाह को बख़्शवाओ, फिर उसी की जनाब में रुजूअ करो।"

اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿٦١﴾

"यक़ीनन मेरा रब क़रीब है और दुआ का क़ुबूल करने वाला है।"

आयत 62

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ

"उन्होंने कहा कि ऐ सालेह! आपसे तो हमारी बड़ी उम्मीदें वाबस्ता थीं इससे पहले"

यानि आप तो अपने अख़्लाक़ व किरदार की वजह से पूरी क़ौम की उम्मीदों का मरकज़ थे। हमें तो तवक़्क़ो थी कि

आप अपनी सलाहियतों के सबब अपने आबा व अजदाद और पूरी क़ौम का नाम रौशन करेंगे, मगर आपने यह क्या किया? आपने तो अपने बाप-दादा के दीन और उनके तौर-तरीक़ों पर ही तन्क़ीद (आलोचना) शुरू कर दी। आपकी इन बातों से तो पूरी क़ौम की उम्मीदों पर पानी फिर गया है।

اَتَنۡهٰىنَاۤ اَنۡ نَّعۡبُدَ مَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِىۡ شَكٍّ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَاۤ اِلَيۡهِ مُرِيۡبٍ ۝٦٢

"क्या आप हमें रोक रहे हैं उनको पूजने से जिनको हमारे आबा व अजदाद पूजते थे? और यक़ीनन जिस चीज़ की तरफ़ आप हमें बुला रहे हैं उसके बारे में हमें बहुत शकूक व शुबहात हैं।"

आपकी इस दावते तौहीद के बारे में हमें सख़्त शुबह है जिसने हमें खलजान में डाल दिया है। हमारा दिल आपकी इस दावत पर मुत्मईन नहीं है।

आयत 63

قَالَ يٰقَوۡمِ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ كُنۡتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّىۡ

"सालेह अलै. ने कहा: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ज़रा सोचो तो सही, अगर मैं (पहले से ही) अपने रब की तरफ़ से बय्यिना पर था"

हज़रत सालेह अलै. ने भी वही बात कही कि देखो मेरी गुज़िश्ता ज़िन्दगी तुम्हारे सामने है। मेरा किरदार और मेरा अख्लाक़ गवाह है कि मैं इससे पहले तुम्हारे मआशरे का एक सालेह किरदार और सलीमुल फ़ितरत इंसान था।

وَاٰتٰىنِيۡ مِنۡهُ رَحۡمَةً

"और अल्लाह ने मुझे अपने पास से ख़ास रहमत भी अता कर दी"

और अब मेरे पास अल्लाह की तरफ़ से वही भी आ गई है, अल्लाह ने अपनी रहमते ख़ास से मुझे नुबुवत से भी सरफ़राज़ फ़रमा दिया है।

فَمَنۡ يَّنۡصُرُنِيۡ مِنَ اللّٰهِ اِنۡ عَصَيۡتُهٗ‌ فَمَا تَزِيۡدُوۡنَنِيۡ غَيۡرَ تَخۡسِيۡرٍ ﴿۶۳﴾

"तो अब अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ तो मुझे अल्लाह (की पकड़) से कौन बचायेगा? तुम तो इज़ाफ़ा नहीं करोगे मेरे लिये मगर ख़सारे ही में!"

यानि अगर मैं अपनी फ़ितरते सलीम और वही-ए-इलाही की रहनुमाई के बावजूद इस दावते हक़ को छोड़ कर तुम्हें खुश करने के लिये गुमराही का तरीक़ा इख़्तियार कर लूँ तो मुझे अल्लाह तआला क गिरफ़्त से कौन बचायेगा? तुम्हारी इस तरह की बातों से तो मालूम होता है कि तुम लोग मेरी तबाही के दर पे हो।

आयत 64

وَيٰقَوۡمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَـكُمۡ اٰيَةً فَذَرُوۡهَا تَاۡكُلۡ فِيۡۤ اَرۡضِ اللّٰهِ

"और (देखो) मेरी क़ौम के लोगों! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है, इसे छोड़े रखो कि यह चरती फिरे अल्लाह की ज़मीन में"

وَلَا تَمَسُّوۡهَا بِسُوۡٓءٍ فَيَاۡخُذَكُمۡ عَذَابٌ قَرِيۡبٌ ۞

"और (देखना) किसी बुरे इरादे से इसे हाथ ना लगाना, वरना तुम्हें आ पकड़ेगा एक क़रीबी अज़ाब।"

वह अज़ाब अब दूर नहीं है और उसे आते कुछ देर ना लगेगी।

आयत 65

فَعَقَرُوۡهَا

"तो उन्होंने उसकी कून्चें काट डालीं"

उन्होंने बाक़ायदा मन्सूबाबंदी करके ऊँटनी को हलाक कर डाला।

فَقَالَ تَمَتَّعُوۡا فِىۡ دَارِكُمۡ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ‌ ؕ ذٰلِكَ وَعۡدٌ غَيۡرُ مَكۡذُوۡبٍ ۞

"तो सालेह अलै. ने फ़रमाया: अब तुम अपने घरों में तीन दिन तक रह बस लो। यह वह वादा है जो झूठा साबित नहीं होगा।"

आयत 66

فَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا نَجَّيۡنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ بِرَحۡمَةٍ مِّنَّا

"तो जब हमारा फ़ैसला आ गया तो हमने निजात दी सालेह अलै. को और उनको जो आपके साथ ईमान लाए थे, अपनी रहमत से"

وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

"और उस दिन की रुसवाई से (उन्हें बचा लिया)। यक़ीनन आपका परवरदिगार बहुत ताक़तवर, ज़बरजस्त है।"

आयत 67

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾

"और उन ज़ालिमों को पकड़ लिया एक चिंघाड़ ने तो वो अपने घरों के अंदर औंधे पड़े रह गये।"

आयत 68

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ

"गोया वो कभी उनमें बसे ही नहीं थे।"

اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾

"आगाह हो जाओ, यक़ीनन समूद ने अपने रब का कुफ़्र किया। आगाह हो जाओ फिटकार है समूद पर!"

आयात 69 से 83 तक

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ
قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا
رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ
خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ ؕ
وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ
وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا
عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾
قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ
عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا
ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى
يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٤﴾ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ
مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ
اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾
وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِىْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ
ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ
يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ

قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۭ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ
۷۸ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ
وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۷۹ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً
اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۸۰ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ
رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ۭ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا
مَآ اَصَابَهُمْ ۭ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۭ اَلَيْسَ الصُّبْحُ
بِقَرِيْبٍ ۸۱ فَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ڏ مَّنْضُوْدٍ ۸۲ۙ
مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۭ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ
۸۳ ع

अब इन आयात में हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र आ रहा है, मगर आपका ज़िक्र अंबिया अर्रुसुल के तौर पर नहीं बल्कि बिल्कुल मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में है। यहाँ रसूलों के ज़िक्र में एक ख़ूबसूरत तक़सीम को मद्देनज़र रखें, कि इस सूरत में पहले तीन रसूल जिनका ज़माना हज़रत इब्राहीम अलै. से

पहले का है (हज़रत नूह, हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलै.) इनका ज़िक्र करने के बाद हज़रत इब्राहीम अलै. का मुख़्तसरन क़ससुल नबिय्यीन के अंदाज़ में आया है, आपके ज़िक्र के बाद फिर तीन रसूलों का तज़किरा है जो आप ही की नस्ल में से थे, बल्कि उनमें से हज़रत लूत अलै. तो आपके भतीजे और हम असर भी थे। यहाँ पर हज़रत लूत अलै. का ज़िक्र अंबिया अर्रुसुल के अंदाज़ में आया है और इसी के ज़ेल में हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र है। जब हज़रत लूत अलै. की क़ौम पर अज़ाब भेजने का फ़ैसला हुआ तो अज़ाब के फ़रिश्ते बराहेरास्त हज़रत लूत अलै. के पास जाने के बजाय पहले हज़रत इब्राहीम अलै. के पास गये और वहाँ ना सिर्फ़ क़ौमे लूत पर अज़ाब के बारे में उनका हज़रत इब्राहीम अलै. के साथ मकालमा (बातचीत) हुआ बल्कि फ़रिश्तों ने हज़रत सारह अलै. को हज़रत इस्हाक़ अलै. की विलादत की ख़ुशखबरी भी दी।

याद रहे कि सूरतुल आराफ़ में भी जब इन छ: रसूलों का तज़किरा अंबिया अर्रुसुल के अंदाज़ में हुआ तो वहाँ भी हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र नहीं किया गया और जब सूरतुल अनआम (जो सूरतुल आराफ़ की जुड़वाँ सूरत है) में हज़रत इब्राहीम का तज़किरा आया तो अंबिया अर्रुसुल के अंदाज़ में नहीं बल्कि क़ससुल नबिय्यीन के अंदाज़ में आया है। यानि हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र क़ुरान हकीम में इस तरह कहीं भी नहीं आया कि आपको अपनी क़ौम की तरफ़ मबऊस किया गया हो, आपने अपनी क़ौम को दावते तौहीद दी हो, क़ौम उस दावत से मुन्कर हुई हो और फिर उस पर अज़ाब भेज दिया गया हो।

आयत 69

وَلَقَدۡ جَآءَتۡ رُسُلُنَآ اِبۡرٰهِیۡمَ بِالۡبُشۡرٰی قَالُوۡا سَلٰمًا ؕ

"और इब्राहीम के पास हमारे फ़रस्तादे (फ़रिश्ते) बशारत लेकर आये। उन्होंने कहा: सलाम!"

قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنۡ جَآءَ بِعِجۡلٍ حَنِیۡذٍ ﴿۶۹﴾

"इब्राहीम ने भी (जवाब में) सलाम कहा, फिर कुछ देर ना गुज़री कि आप ले आये एक बछड़ा भुना हुआ।"

महमानों की आमद के फ़ौरन बाद हज़रत इब्राहीम अलै. ने उनकी ज़ियाफ़त के लिये एक बछड़ा ज़िबह किया और उसे भून कर उनके सामने पेश कर दिया।

आयत 70

فَلَمَّا رَاٰۤ اَیۡدِیَهُمۡ لَا تَصِلُ اِلَیۡهِ

"फिर जब आपने देखा कि उनके हाथ उसकी तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं"

نَکِرَهُمۡ وَاَوۡجَسَ مِنۡهُمۡ خِیۡفَةً ؕ

"तो आपने उनमें अजनबियत पाई और उनकी तरफ़ से एक ख़ौफ महसूस किया।"

जब हज़रत इब्राहीम अलै. ने महसूस किया कि रस्मी इसरार के बावजूद भी मेहमान किसी तौर खाने की दावत क़ुबूल

करने पर आमादा नहीं हो रहे तो अब आप बजा तौर पर खटके कि यह पुर इसरार (रहस्यमय) लोग कौन हैं और यहाँ किस इरादे से आए हैं? उस ज़माने में यह रिवाज भी था कि अगर कोई शख़्स दुश्मनी की ग़र्ज़ से किसी के पास जाता तो उसके यहाँ का खाना नहीं खाता था। इसी लिये हज़रत इब्राहीम अलै. को उनकी तरफ़ से ख़द्शा (डर) महसूस हुआ। जब उन्होंने आपका यह ख़ौफ़ महसूस किया तो:

قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝۷۰

"उन्होंने कहा: आप डरिये नहीं, असल में तो हम भेजे गये हैं क़ौमे लूत की तरफ।"

यानि हम फ़रिश्ते हैं और हमें क़ौमे लूत की तरफ़ अज़ाब की ग़र्ज़ से भेजा गया है।

आयत 71

وَامْرَاَتُهٗ قَآىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ

"और आपकी बीवी (कहीं क़रीब) खड़ी थी तो वह हँस पड़ी"

हज़रत सारह अलै. क़रीब ही कहीं पर्दे के पीछे खड़ी यह सारी बातें सुन रही थीं तो आप शायद हज़रत इब्राहीम अलै. की हालत पर हँस पड़ी कि मेरे शौहर फ़रिश्तों से ख़ौफज़दा हो गये थे।

فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝

"तो हमने उसे बशारत दी इस्हाक़ अलै. की और इस्हाक़ के बाद याक़ूब अलै. की"

यानि फ़रिश्तों ने हज़रत सारह अलै. को हज़रत इस्हाक़ की विलादत की ख़ुश ख़बरी दी और साथ ही हज़रत याक़ूब यानि पोते की भी। उस वक़्त हज़रत हाजरा के यहाँ हज़रत इस्माईल अलै. की विलादत हो चुकी थी। हज़रत सारह हज़रत इब्राहीम अलै. की पहली बीवी थीं जबकि हज़रत हाजरा को आपकी ख़िदमत में बादशाहे मिस्र ने पेश किया था। यहूदियों के यहाँ हज़रत हाजरा को कनीज़ समझा जाता है, हाँलाकि आप मिस्र के शाही ख़ानदान की ख़ातून थीं। आपके यहाँ हज़रत इस्माईल की विलादत हुई तो हज़रत इब्राहीम उन दोनों (माँ और बेटे) को अल्लाह के हुक्म से हिजाज़ में उस जगह छोड़ आये जहाँ बाद में बैतुल्लाह तामीर होना था। बहरहाल हज़रत सारह के यहाँ उस वक़्त तक कोई औलाद नहीं थी। चुनाँचे फ़रिश्तों ने आपको बेटे की और फिर उस बेटे के बेटे की विलादत की बशारत दी।

आयत 72

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ

"उसने कहा: हाय मेरी शामत! क्या अब मैं बच्चा जनूंगी जबकि मैं निहायत बूढ़ी हो चुकी हूँ और यह मेरे शौहर भी बूढ़े हैं! यह तो बहुत अजीब बात है।"

اِنَّ هٰذَا لَشَیۡءٌ عَجِیۡبٌ ﴿۷۲﴾

आयत 73

قَالُوۡۤا اَتَعۡجَبِیۡنَ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ

"फ़रिश्तों ने कहा: क्या आप तअज्जुब करती हैं अल्लाह के फ़ैसले पर?"

यानि यह तो अल्लाह का फ़ैसला है और हम अल्लाह की तरफ़ से आपको ख़ुश ख़बरी दे रहे हैं।

رَحۡمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَیۡكُمۡ اَهۡلَ الۡبَیۡتِ ؕ

"अल्लाह की रहमतें और उसकी बरकतें हों तुम पर ऐ नबी के घर वालो!"

इस आयत में "अहले बैत" का मफ़हूम बहुत वाज़ेह होकर सामने आता है। यहाँ पर इसका मिस्दाक़ हज़रत सारह के अलावा कोई और नहीं, लिहाज़ा यहाँ लाज़मी तौर पर आप ही अहले बैत हैं। चुनाँचे मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के मामले में भी अहले बैते रसूल ﷺ, आपकी अज़वाजे मुतह्हरात रज़ि. ही हैं। और आप ﷺ का फ़रमान जो हज़रत फ़ातिमा, हज़रत अली, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि. के बारे में है: ((اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهۡلُ بَیۡتِیۡ))(4) तो गोया आप ﷺ ने अपने अहले बैत के दायरे को वुसअत देते हुए फ़रमाया कि यह लोग भी मेरे अहले बैत में शामिल हैं।

اِنَّهٗ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ ﴿۷۳﴾

"यक़ीनन अल्लाह लायक़-ए-हम्द और बुज़ुर्गी वाला है।"

अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात में सतूदाह (सराहनीय) सिफ़ात है और वह बहुत अज़मतों वाला है।

आयत 74

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنۡ اِبۡرٰهِیۡمَ الرَّوۡعُ وَجَآءَتۡهُ الۡبُشۡرٰی یُجَادِلُنَا فِیۡ قَوۡمِ لُوۡطٍ ﴿۷۴﴾

"फिर जब इब्राहीम अलै. का ख़ौफ़ जाता रहा और यह बशारत भी पहुँच गई, तो आपने झगड़ना शुरु कर दिया हमसे क़ौमे लूत के बारे में।"

हज़रत इब्राहीम अलै. का यह मुजादला (बहस) तौरात में बड़ी तफ़सील से बयान हुआ है। इसका खुलासा यह है कि हज़रत इब्राहीम अलै. ने फ़रिश्तों से कहा कि अगर इन बस्तियों में पचास आदमी भी रास्तबाज़ हुए तो क्या फिर भी उनको हलाक कर दिया जायेगा? फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि नहीं, फिर उन्हें हलाक नहीं किया जायेगा। फिर हज़रत इब्राहीम अलै. ने चालीस आदमियों का पूछा, तो उन्होंने कहा कि फिर भी उनको तबाह नहीं किया जायेगा। चुनाँचे इस तरह बात होते-होते पाँच आदमियों पर आ गई। इस पर हज़रत इब्राहीम अलै. को बताया गया कि आप इस बहस को छोड़ दें। अब तो आपके रब का फ़ैसला आ चुका है, क्योंकि उन बस्तियों में ख़ुद हज़रत लूत अलै. और उनकी दो

बेटियों के अलावा कोई एक मुतनफ्फ़िस भी रास्तबाज़ नहीं है।

आयत 75

إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّٰهٌ مُّنِيبٌ ۝٧٥

"यक़ीनन इब्राहीम बहुत ही बुर्दबार, नरम दिल और अल्लाह की जनाब में रुजूअ करने वाले थे।"

यहाँ हज़रत इब्राहीम अलै. की यह तीन सिफ़ात एक साथ जमा फ़रमा कर आपकी बहुत क़द्र अफ़ज़ाई भी फ़रमाई गई है और आपके मुजादला करने की वजह भी बयान फ़रमा दी गई है कि चूँकि आप बहुत हलीमुल तबअ (नर्म स्वभाव) और दिल के नर्म थे, इसी वजह से आपने आख़री हद तक कोशिश की कि अज़ाब के टलने की कोई सूरत पैदा हो जाये। इसी तरह मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की तबीयत मुबारक में भी ख़ुसूसी नर्मी थी और हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. को भी अल्लाह ने तबीयत की ख़ास नर्मी अता कर रखी थी।

आयत 76

يَٰٓإِبْرَٰهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَآ ۖ إِنَّهُۥ قَدْ جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ

"ऐ इब्राहीम छोड़िये इस मामले को, अब तो आपके रब का फ़ैसला आ चुका है।"

وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾

"और उन पर वह अज़ाब आकर ही रहेगा जिसे लौटाया नहीं जा सकेगा।"

आयत 77

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا

"और जब आये हमारे फ़रस्तादे लूत अलै. के पास तो आप उनकी वजह से बड़े ग़मगीन हुए, और आपका दिल बहुत तंग हुआ"

وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾

"और आप कहने लगे कि आज तो बहुत सख़्ती का दिन है।"

चूँकि उन बस्तियों के लोगों में आमर्द परस्ती आम थी, लिहाज़ा उनकी आख़री आज़माईश के लिये फरिश्तों को उनके पास नौजवान ख़ूबसूरत लड़कों के रूप में भेजा गया था। हज़रत लूत अलै. उन ख़ूबसूरत मेहमान लड़कों को देख कर इसी लिये परेशान हुए कि अब वह अपने इन मेहमानों का दिफ़ाअ (बचाव) कैसे करेंगे। इसलिये कि आप जानते थे कि उनकी क़ौम के लोग किसी अपील या दलील से बाज़ आने वाले नहीं थे और आप अकेले ज़बरदस्ती उन्हें रोक नहीं सकते थे।

आयत 78

وَجَآءَهٗ قَوۡمُهٗ يُهۡرَعُوۡنَ اِلَيۡهِ ؕ وَمِنۡ قَبۡلُ كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ السَّيِّاٰتِ ؕ

"और आये आपकी क़ौम के लोग दीवानावार दौड़ते हुए आप (के घर) की तरफ़, और वो पहले से ही गंदे कामों में मुलव्विस थे।"

قَالَ يٰقَوۡمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِىۡ هُنَّ اَطۡهَرُ لَـكُمۡ

"लूत ने फ़रमाया: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यह मेरी बेटियाँ (मौजूद) हैं, वो तुम्हारे लिये ज़्यादा पाकीज़ा हैं"

मुफ़स्सिरीन ने इसके एक मायने तो यह मुराद लिये हैं कि तुम्हारे घरों मे तुम्हारी बीवियाँ मौजूद हैं जो मेरी बेटियों ही की मानिन्द हैं, क्योंकि नबी अपनी पूरी क़ौम के लिये बाप की तरह होता है। जैसे सूरतुल अहज़ाब आयत 6 में हुज़ूर ﷺ के बारे में फ़रमाया गया है: {وَاَزۡوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمۡ ؕ} कि आपकी तमाम अज़वाजे मुतह्हरात रज़ि. मोमिनीन की माँए हैं। इसके दूसरे मायने यह भी हो सकते हैं कि हज़रत लूत अलै. ने अपनी बेटियों के बारे में फ़रमाया कि ये मेरी बेटियाँ हैं, उनसे जायज़ और पाकीज़ा तरीक़े से निकाह कर लो, मैं इसके लिये तैयार हूँ, लेकिन मेरे इन मेहमानों के बारे में मुझे रुसवा ना करो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ فِىۡ ضَيۡفِىۡ ؕ اَلَـيۡسَ مِنۡكُمۡ رَجُلٌ رَّشِيۡدٌ ۝۷۸

"तो अल्लाह का ख़ौफ करो और मुझे मेरे मेहमानों के मामले में रुसवा ना करो। क्या तुम में कोई एक आदमी भी नेक चलन नहीं है?"

क्या तुम लोगों में कोई एक भी शरीफ़ अन्नफ़्स इन्सान नहीं है जो मेरा साथ दे और इन सब लोगों को बद्अख्लाक़ी और बेहयाई से रोके।

आयत 79

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝٧٩

"उन्होंने कहा कि तुम्हें तो मालूम ही है कि तुम्हारी इन बेटियों पर हमारा कोई हक़ नहीं है, और तुम ख़ूब जानते हो जो हम चाहते हैं।"

क़ौम के लोगों ने कहा कि अब आप इधर-उधर की बातें मत कीजिए, आप ख़ूब समझते हैं कि हमारा यहाँ आने का मक़सद क्या है।

आयत 80

قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝٨٠

"लूत ने कहा: काश मेरे पास तुम्हारे मुक़ाबले के लिये कोई ताक़त होती या कोई मज़बूत सहारा होता जिसकी मैं पनाह ले लेता।"

इस ज़िमन में नबी ﷺ ने फ़रमाया: ((يَرْحَمُ اللّٰهُ لُوْطًا لَقَدْ كَانَ يَأْوِيْ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ))(5) "अल्लाह रहम फ़रमाए लूत पर, वो एक मज़बूत क़िले में ही तो थे।" यानि अल्लाह तआला की पुश्त पनाही और हिफ़ाज़त तो हज़रत लूत अलै. को हासिल थी।

लेकिन उस वक़्त जो सूरते हाल बन गई थी उसमें बरबनाए तबअ बशरी परेशानी और ख़ौफ़ का तारी हो जाना नबुवत की अस्मत के मनाफ़ी नहीं है। जैसे हज़रत मूसा अलै. भी वक़्ती तौर पर जादूगरों के साँपों से डर गये थे।

आयत 81

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ

"फ़रिश्तों ने कहा: ऐ लूत! हम आपके रब के भेजे हुए (फ़रिश्ते) हैं, यह लोग आप तक नहीं पहुँच पायेंगे"

फ़रिश्तों ने अपना तआरुफ़ कराते हुए आपको तसल्ली दी कि आप इत्मिनान रखें, यह लोग आपको कोई गज़न्द (नुक़सान) नहीं पहुँचा सकेगें। फिर फ़रिश्ते ने अपना हाथ हिलाया तो वो सब नाबकार (दुष्ट) अंधे हो गये।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ

"पस आप रात के (उस बक़िया) हिस्से में अपने घर वालों को लेकर निकल जायें और कोई भी आप में से पीछे मुड़ कर ना देखें।"

यानि यहाँ से जाते हुए आप लोगों को पीछे रह जाने वालों की तरफ़ किसी क़िस्म की कोई तवज्जोह करने की ज़रुरत नहीं है।

اِلَّا امْرَاَتَكَ ۭ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ۭ

"सिवाय आपकी बीवी के, उस पर भी वही मुसीबत आयेगी जो सब पर आने वाली है।"

यानि जब आप अपने घर वालों को लेकर यहाँ से निकलेंगे तो अपनी बीवी को साथ लेकर नहीं जायेंगे। आपकी उस बीवी का ज़िक्र सूरतुल तहरीम (आयत 10) में हज़रत नूह अलै. की मुशरिक बीवी के साथ इस तरह हुआ है:

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ۭ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠

"अल्लाह काफ़िरों के लिये मिसाल बयान करता है नूह की बीवी और लूत की बीवी की। वो दोनों औरतें हमारे दो बरगज़ीदा (चुने हुए) बंदों के तहत थीं लेकिन उन्होंने अपने शौहरों से ख्यानत की, चुनाँचे उनके शौहर उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा नहीं सके। और (उन दोनों औरतों से) कह दिया गया कि तुम भी (जहन्नम में) दाखिल होने वालों के साथ जहन्नम में दाख़िल हो जाओ।"

اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۭ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ۝٨١

"उनके वादे का वक़्त सुबह का है, क्या सुबह क़रीब नहीं है!"

फ़रिश्तों ने हज़रत लूत अलै. से कहा कि अब आप लोगों के पास ज़्यादा वक़्त नहीं है। आप फ़ौरी तौर पर अपनी बच्चियों को लेकर यहाँ से निकल जायें, सुबह होते ही इन बस्तियों पर अज़ाब आ जायेगा। और सुबह होने में अब देर ही कितनी है!

आयत 82

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

"फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने उसके ऊपर (के हिस्से) को नीचा कर दिया"

यानि उन बस्तियों को तलपट कर दिया गया। जब इमारतें तबाह होती हैं तो छत ज़मीनबोस हो जाती हैं और दीवारें उसके ऊपर गिरती हैं, बुनियादें भी ऊपर आ जाती हैं।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ۝

"और (मज़ीद) हमने उन पर बारिश बरसाई तह बर तह कंकरियों की।"

सिज्जील असल में फ़ारसी लफ़्ज़ है। फ़ारसी में यह "संगे गिल" था जो अरबी में आकर सिज्जील का तलफ़्फ़ुज़ इख़्तियार कर गया। संग के मायने पत्थर और गिल के मायने मिट्टी के हैं। यानि मिट्टी के पत्थर जो गीली मिट्टी के धूप में गर्म होकर पुख़्ता हो जाने के बाद बनते हैं, जैसे ईंटों को भट्टे में पकाया जाता है। उन बस्तियों पर अज़ाब दो सूरतों में आया, एक ज़मीन के अंदर कोई ज़ोरदार धमाका हुआ, जिसके नतीज़े में ज़बरदस्त ज़लज़ला आया और यह बस्तियाँ उलट-पलट हो गईं। फिर ऊपर से कंकरियों की बारिश हुई और इस तरह उन्हें उन पत्थरों के अंदर दफ़न कर दिया गया।

आयत 83

مُّسَوَّمَةً عِنۡدَ رَبِّكَ ؕ

"वो निशानज़दा थे तुम्हारे रब की तरफ़ से।"

यानि हर पत्थर एक आदमी के लिये निशानज़दा और मख़सूस था।

وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ بِبَعِيۡدٍ ﴿٨٣﴾

"और यह इन ज़ालिमों से कोई ज़्यादा दूर नहीं।"

यानि मुशरिकीने मक्का से क़ौमे लूत की यह बस्तियाँ ज़्यादा दूर नहीं हैं। कुरैश के क़ाफिले जब फ़लस्तीन की तरफ़ जाते थे तो पहले क़ौमे समूद और क़ौमे मदयन के इलाक़े से गुजरते थे, फिर क़ौमे लूत की बस्तियों के आसार भी उनके रास्ते में आते थे।

आयात 84 से 95 तक

وَاِلٰى مَدۡيَنَ اَخَاهُمۡ شُعَيۡبًا ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا
اللّٰهَ مَا لَكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ وَلَا تَنۡقُصُوا الۡمِكۡيَالَ
وَالۡمِيۡزَانَ اِنِّىۡۤ اَرٰٮكُمۡ بِخَيۡرٍ وَّاِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ
عَذَابَ يَوۡمٍ مُّحِيۡطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوۡمِ اَوۡفُوا الۡمِكۡيَالَ
وَالۡمِيۡزَانَ بِالۡقِسۡطِ وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ
وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ مُفۡسِدِيۡنَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللّٰهِ

خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ
﴿٨٦﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا
يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ
لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ
كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ
وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ
اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا
بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾ وَيٰقَوْمِ لَا
يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ
قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ
لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ
تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ
مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ
وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ؗ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ
﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ
وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ
وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾
وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا
فِيْهَا ۭ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾

आयत 84

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ

"और मदयन की तरफ़ (हमने भेजा) उनके भाई शोएब को।"

इस क़ौम के बारे में हम सूरतुल आराफ़ के मुताअले के दौरान पढ़ चुके हैं कि यह लोग बनी क़तूरा में से थे और ख़लीज उक़बा के दाहिनी (मशरिक़ी) तरफ़ के इलाक़े में आबाद थे। इस इलाक़े में यह लोग एक बड़ी मज़बूत क़ौम बन कर उभरे थे। यह इलाक़ा उस वक़्त की दो बहुत अहम बैयनुल अक़वामी शाहराहों के मक़ामे इन्क़ताअ (intersection) पर वाक़ेअ था। एक शाहराह शिमालन-जुनूबन (उत्तरी-दक्षिणी) थी जो शाम से यमन जाती थी और दूसरी मशरिक़न-गुरूबन (पूर्वी-पश्चिमी) थी जो इराक़ से मिस्र को

जाती थी। चुनाँचे तमाम तिजारती क़ाफिले यहीं से गुज़रते थे जिसकी वजह से यह इलाक़ा उस ज़माने का बहुत बड़ा तिजारती मरकज़ बन गया था। नतीजतन यहाँ के लोग बहुत ख़ुशहाल हो गये थे, मगर साथ ही नाप-तौल में कमी और राहज़नी जैसे क़बीह जरायम (घिनौने अपराध) में भी मुलव्विस थे।

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ

"आपने कहा: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बंदगी करो, तुम्हारा कोई मअबूद नहीं उसके सिवा।"

وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ

"और ना कम करो माप और तौल में"

وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿۸۴﴾

"मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, लेकिन (अगर तुम लोग इन ग़लतकारियों से बाज़ ना आये तो) मुझे अंदेशा है तुम पर एक ऐसे दिन के अज़ाब का जो तुम्हें घेर लेगा।"

आयत 85

وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ

"और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! पूरा-पूरा दिया करो पैमाना और तौल, अदल और इंसाफ़ के साथ"

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٨٥

"और मत कम दिया करो लोगों को उनकी चीज़ें और ना ही ज़मीन में फ़साद मचाते फिरो।"

आयत 86

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ

"अल्लाह की अता करदा बचत ही तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम मोमिन हो।"

इंसाफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तौलो, और लोगों की चीज़ों में कमी करके उनकी हक़ तलफ़ी ना किया करो। अगर तुम लोग दियानतदारी से तिजारत करो, और इस तरह अल्लाह तआला तुम्हें जो मुनाफ़ा अता करे, उसी पर क़नाअत (सन्तुष्टि) करो तो यह तुम्हारी दुनिया व आख़िरत के लिये बहुत बेहतर होगा।

وَمَآ اَنَا عَلَيۡكُمۡ بِحَفِيۡظٍ ۝٨٦

“लेकिन मैं तुम्हारे ऊपर कोई निग़रान नहीं हूँ।”

मैं तो तुम्हें समझा सकता हूँ, नेकी की तल्क़ीन कर सकता हूँ, तुम पर मेरा कोई ज़ोर नहीं है।

आयत 87

قَالُوۡا يٰشُعَيۡبُ اَصَلٰوتُكَ تَاۡمُرُكَ اَنۡ نَّتۡرُكَ مَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَآ

“उन्होंने कहा: ऐ शोएब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें इस बात का हुक्म देती है कि हम छोड़ दें उनको जिनको पूजते आये हैं हमारे आबा व अजदाद?”

अग़रचे हज़रत शोएब अलै. की गुफ़्तगू में उनके शिर्क का तज़किरा नहीं है, मगर उनके इस जवाब से मालूम हुआ कि वो बुनियादी तौर पर इस मर्ज़े शिर्क में भी मुब्तला थे जो तमाम गुमराह क़ौमों का मुशतरक (common) मर्ज़ रहा है।

اَوۡ اَنۡ نَّفۡعَلَ فِيۡۤ اَمۡوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ

“या (तुम्हारी नमाज़ यह सिखाती है कि) हम अपने अम्वाल में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तसर्रुफ़ (व्यवस्थित) ना करें?”

यानि हमारी मिल्कियत में जो सामान और माल है क्या हम उसके इस्तेमाल में भी अपनी मर्ज़ी नहीं कर सकते? यह वही तसव्वुर है जो आज के जदीद ज़माने में sacred right of

ownership के ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में पेश किया जाता है, जबकि इस्लाम में मिल्कियत का ऐसा तसव्वुर नहीं है। इस्लाम की रू से हर चीज़ का मालिक अल्लाह है और दुनिया का यह माल और साज़ो सामान इंसानों के पास अल्लाह की अमानत है, जिसमें अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तसर्रुफ़ करने की इजाज़त नहीं है। लिहाज़ा इस्लाम मिल्कियत के किसी "मुक़द्दस हक़" को तस्लीम नहीं करता, क्योंकि:

ईं अमानत चंद रोज़ा नज़्दे मास्त
दर हक़ीक़त मालिके हर शय ख़ुदास्त

यानि यह माल व दौलत हमारे पास चंद दिन की अमानत है, वरना हक़ीक़त में हर शय का मालिक हक़ीक़ी तो अल्लाह ही है। बहरहाल जब इंसान ख़ुद को मालिक समझता है तो फिर वो वही कुछ कहता है जो हज़रत शोएब अलै. की क़ौम ने कहा था कि हमारा माल है, हम जैसे चाहें इसमें तसर्रुफ़ करें!

إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

"हाँ एक तुम ही तो हो जो बड़े बावक़ार और नेकचलन हो!"

क़ौम का हज़रत शोएब अलै. को हलीम और रशीद कहना किसी ताज़ीम और तकरीम के लिये नहीं था, बल्कि तअन और इस्तहज़ा (हँसी) के तौर पर था।

आयत 88

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ

"आपने फ़रमाया: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ज़रा सोचो कि अगर मैं (पहले भी) अपने रब की तरफ़ से बय्यिना पर था"

हज़रत शोएब अलै. ने वही बात फ़रमाई जो दूसरे अंबिया व रुसुल अपनी-अपनी क़ौम से फ़रमाते आये थे कि तुम्हारे दरमियान रहते हुए मेरा किरदार और अख़्लाक़ पहले भी मिसाली था, मैं इस मआशरे में एक शरीफ़ुन्नफ़्स और सलीमुल फ़ितरत इंसान के तौर पर मारूफ़ था।

وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ

"और अल्लाह ने अपने पास से मुझे अच्छा रिज़्क़ भी अता किया है"

यानि फिर मुझे अल्लाह ने नुबुवत और रिसालत से भी सरफ़राज़ फ़रमा दिया है।

وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ۭ

"और मैं हरगिज़ नहीं चाहता कि जिस चीज़ से तुम लोगों को मना करुँ ख़ुद वही काम करुँ।"

اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۭ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ

"मैं तो कुछ नहीं चाहता सिवाय इस्लाह के जिस क़दर मुझमें इस्तताअत है, और मेरी तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही की तरफ़ से है।"

मेरा मक़सद तुम लोगों की इस्लाह है और इस सिलसिले में जो कुछ भी मैं कर रहा हूँ वह अल्लाह की तौफ़ीक़ ही से कर रहा हूँ। उसी ने मुझे हिम्मत और इस्तक़ामत से नवाज़ा है।

عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَاِلَيۡهِ اُنِيۡبُ ۝٨٨

"उसी पर मैंने तवक्कुल किया है और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूँ।"

आयत 89

وَيٰقَوۡمِ لَا يَجۡرِمَنَّكُمۡ شِقَاقِىۡۤ اَنۡ يُّصِيۡبَكُمۡ مِّثۡلُ مَاۤ اَصَابَ قَوۡمَ نُوۡحٍ اَوۡ قَوۡمَ هُوۡدٍ اَوۡ قَوۡمَ صٰلِحٍ‌ؕ

"और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! (देखो) मेरी दुश्मनी तुम्हें उस अंजाम तक ना ले जाये कि तुम पर भी वही अज़ाब आ जाये जैसा कि आया था क़ौमे नूह, क़ौमे हूद या क़ौमे सालेह पर।"

وَمَا قَوۡمُ لُوۡطٍ مِّنۡكُمۡ بِبَعِيۡدٍ ۝٨٩

"और क़ौमे लूत तो तुमसे ज़्यादा दूर भी नहीं है।"

हज़रत शोएब अलै. से पहले इन चारों क़ौमों पर अज़ाबे इस्तेसाल आ चुका था। और यह जो फ़रमाया गया कि क़ौमे लूत तुमसे "बईद (दूर)" नहीं है, यह ज़मानी और मकानी दोनों ऐतबार से है। जियोग्राफ़ियाई ऐतबार से ख़लीज

उक़बा के मशरक़ी साहिल से मुत्तसल (connect) इलाक़े में क़ौमे मदयन आबाद थी। इस इलाक़े से ज़रा हट कर मशरिक़ की जानिब बहरे मुर्दार (Dead Sea) है जिसके साहिल पर आमूरा और सदूम की वह बस्तियाँ थीं जिनमें हज़रत लूत अलै. मबऊस हुए थे। ज़मानी ऐतबार से भी इन दोनों अक़वाम में हज़ारों साल का नहीं बल्कि सिर्फ़ चंद सौ साल का बुअद (gap) था। बहरहाल मुझे उन मुफ़स्सिरीन से इख़्तिलाफ़ है जो हज़रत शोएब अलै. को हज़रत मूसा अलै. के हमअस्र समझते हैं। इस ज़िमन में मुझे उन उल्मा की राय से इत्तेफ़ाक़ है जिनका ख़्याल है कि हज़रत मूसा अलै. मदयन में जिस शख़्स के मेहमान बने थे और जिनकी बेटी के साथ बाद में आपने निकाह किया था वह मदयन के उन लोगों की नस्ल से कोई नेक बुज़ुर्ग थे जो शोएब अलै. के साथ अज़ाबे इस्तेसाल से बच गये थे।

दूसरा अहम नुक्ता इस आयत में यह बयान हुआ है कि बाज़ अवक़ात किसी दाई के साथ ज़ाती अनाद (नफ़रत) और दुश्मनी की बुनियाद पर कोई शख़्स या कोई गिरोह उसकी असूली दावत को भी ठुकरा देता है। यह इंसानी रवैय्ये का एक बहुत ख़तरनाक पहलु है क्योंकि इसमें उस दाई का तो कोई नुक़सान नहीं होता मगर सिर्फ़ ज़ाती तअस्सुब की बुनियाद पर उसकी दावत को ठुकराने वाले ख़ुद को बर्बाद कर लेते हैं।

आयत 90

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝۹۰

"और इस्तग़फ़ार करो अपने रब से, फिर उसकी तरफ़ रुजूअ करो। यक़ीनन मेरा रब रहीम भी है, मुहब्बत फ़रमाने वाला भी।"

अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी तलब करो और उसकी तरफ़ पलट आओ। उसकी इबादत और इताअत शआरी (आज्ञाकारिता) इख़्तियार करो तो तुम उसके दामने रहमत को अपने लिये वसीअ पाओगे। वह इन्तहाई रहम करने वाला और अपनी मख़लूक़ से मुहब्बत रखने वाला है।

आयत 91

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ

"उन्होंने कहा: ऐ शोएब! तुम जो कुछ कहते हो उसमें से अक्सर बातें हमारी समझ में नहीं आतीं"

जब ज़हनों के साँचे बिगड़ जाये और सोचों के ज़ाविये (एंगल) बदल जायें तो फिर सीधी बात भी समझ में नहीं आती।

وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ

"और हम तो देखते हैं तुम्हें अपने दरमियान एक कमज़ोर आदमी। और अगर तुम्हारा ख़ानदान ना होता तो हम तुम्हें (कभी का) संगसार कर चुके होते, और तुम हम पर ग़ालिब नहीं हो।"

لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ

عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾

यहाँ पर एक अहम नुक्ता यह समझ लें कि जिस ज़माने में जो सूरत नाज़िल हुई है उसमें नबी अकरम ﷺ और आपके सहाबा किराम रज़ि. को पेश आने वाले मअरूज़ी (specifically) हालात के साथ तताबक़ (matching) पैदा किया गया है। यानि गुज़िश्ता अक़वाम के वाक़यात जो मुख़्तलिफ़ सूरतों में तवातर (frequency) के साथ बार-बार आये हैं यह तकरारे महज़ नहीं है, बल्कि हुज़ूर ﷺ की दावत व तहरीक को जिस दौर में जिन मसाईल का सामना होता था उस ख़ास दौर में नाज़िल होने वाली सूरतों में इन मसाईल की मुनास्बत से पिछली अक़वाम के हालात व वाक़यात से वो बातें नुमाया की जाती थीं जिनमें हुज़ूर ﷺ और अहले ईमान के लिये रहनुमाई और दिलजोई का सामान मौजूद था। चुनाँचे आयत ज़ेरे नज़र में हज़रत शोएब अलै. के ख़ानदान और क़बीले की हिमायत की बात इसलिये हुई है कि इधर मक्का में हुज़ूर ﷺ को भी कुछ ऐसे ही हालात का सामना था। उस ज़माने में बनु हाशिम के सरदार आपके चचा अबु तालिब थे जिन्हें हुज़ूर ﷺ से बहुत मुहब्बत थी और आपने अपने बचपन का कुछ अरसा उनके साया-ए-आतफ़त (influenced) में गुज़ारा था। उन्हीं की वजह से आपको पूरे क़बीले बनु हाशिम की पुस्त पनाही हासिल थी। अगर उस वक़्त बनु हाशिम की सरदारी कहीं अबु लहब के पास होती तो आप ﷺ को अपने ख़ानदान और क़बीले की यह हिमायत हासिल ना होती, इस तरह

मुशरिकीने मक्का को आपके ख़िलाफ़ (मआज़ अल्लाह) कोई इन्तहाई अक़दाम करने का मौक़ा मिल जाता। लिहाज़ा यहाँ हालात में तताबक़ इस तरह पैदा किया गया है कि जिस तरह अल्लाह तआला ने आज मक्के में बनु हाशिम की हिमायत से मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ को एक महफ़ूज़ क़िला मुहैय्या फ़रमा दिया है, बिल्कुल इसी नौईयत की हिफ़ाज़त उस वक़्त अल्लाह तआला ने हज़रत शोएब अलै. को उनके ख़ानदान की हिमायत की सूरत में भी अता फ़रमाई थी।

आयत 92

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ

"आपने फ़रमाया: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या मेरा ख़ानदान तुम पर अल्लाह से ज़्यादा भारी है?"

हक़ीक़त में मेरा पुश्तपनाह तो अल्लाह है। तुम अल्लाह से नहीं डरते, लेकिन मेरे ख़ानदान से डरते हो। क्या तुम्हारे नज़दीक मेरा ख़ानदान अल्लाह से ज़्यादा ताक़तवर है?

وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ

"और उस (अल्लाह) को तो तुमने अपनी पीठों के पीछे डाल रखा है।"

यानि अल्लाह को तो तुम लोगों ने बिल्कुल ही भुला छोड़ा है, पसे पुश्त डाल दिया है। यह इंसानी नफ्सियात का एक अहम पहलु है। अग़रचे आज हम भी अल्लाह को अपना खालिक़, मालिक और मअबूद मानने का दावा करते हैं मगर साथ ही दुनिया और इसके झमेलों में इस क़दर मगन रहते

हैं कि अल्लाह का तसव्वुर मुस्तहज़र (stabilizer) नहीं रहता। यही वजह है हम कारोबार-ए-दुनिया में हक़ीक़ी मुसब्बब अल असबाब को भुला कर असबाब व हक़ायक (cause and fact) की मन्तक़ी भूल-भुलय्यों में गुम रहते हैं:

काफ़िर की यह पहचान की आफ़ाक़ में गुम है
मोमिन की यह पहचान कि गुम उसमें हैं आफ़ाक़!

यहाँ हज़रत शोएब अलै. का अपने ख़ानदान के मुक़ाबले मे अल्लाह का ज़िक्र करना यह ज़ाहिर कर रहा है कि वो लोग अल्लाह को बख़ूबी जानते थे, इसी तरह मुशरिकीने मक्का भी अल्लाह को मानते थे। गोया अल्लाह का मामला ऐसे लोगों के नज़दीक आँख ओझल पहाड़ ओझल वाला होता है। इसी लिये तो हज़रत शोएब अलै. ने फ़रमाया था कि तुम लोग मेरे खानदान से डरते हो मगर अल्लाह से नहीं डरते! हज़रत शोएब अलै. के इस जवाब में क़ुरैश के लिये यह पैग़ाम मुज़मर (मौजूद) है कि तुम्हें भी मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ से यही जवाब है।

إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٩٢﴾

"यक़ीनन मेरा रब तो उस सबका इहाता किए हुए है जो कुछ तुम कर रहे हो।"

अल्लाह तुम्हारा और तुम्हारे आमाल का घेराव किए हुए है। तुम उसकी गिरफ़्त से निकल कर कहीं नहीं जा सकते हो।

आयत 93

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۭ

"और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम करो जो कुछ कर सकते हो अपनी जगह पर, मैं भी कर रहा हूँ जो मैं (अपनी जगह पर) कर सकता हूँ।"

तुम मेरे ख़िलाफ जो भी रेशा दवानियाँ कर सकते हो, जो भी चालें चल सकते हो, और जो अक़दामात भी कर सकते हो, कर गुज़रो। अपने तौर पर जो कुछ मैं कर सकता हूँ, जो कोशिश मुझसे बन आ रही है मैं कर रहा हूँ। यह चैलेंज करने का अंदाज़ सूरतुल अनआम से चला आ रहा है। यह गोया मक्का के हालात के साथ तताबक़ (matching) किया जा रहा है। मक्के में हक़ व बातिल की कशमकश भी अब इन्तहा को पहुँच चुकी थी और उसकी वजह से आपकी तबीयत के अंदर एक तरह की बेज़ारी पैदा हो चुकी थी कि अब जो कुछ तुम कर सकते हो कर लो!

سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ

"अनक़रीब तुम जान लोगे कि किस पर अज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर देगा और कौन है जो झूठा है!"

وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

"तुम भी इन्तेज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूँ।"

आयत 94

وَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا نَجَّيۡنَا
شُعَيۡبًا وَّالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
مَعَهٗ بِرَحۡمَةٍ مِّنَّا

"फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से निजात दे दी शोएब को और उन लोगों को जो आपके साथ ईमान लाये थे"

وَاَخَذَتِ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوا
الصَّيۡحَةُ فَاَصۡبَحُوۡا فِىۡ
دِيَارِهِمۡ جٰثِمِيۡنَ ۙ﴿۹۴﴾

"और ज़ालिमों को आ पकड़ा एक ज़बरदस्त कड़क ने, तो वो अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।"

आयत 95

كَاَنۡ لَّمۡ يَغۡنَوۡا فِيۡهَا ؕ اَلَا
بُعۡدًا لِّمَدۡيَنَ كَمَا بَعِدَتۡ
ثَمُوۡدُ ﴿۹۵﴾

"जैसे कि वो कभी उनमें आबाद ही नहीं थे। आगाह हो जाओ फटकार है मदयन पर, जैसे कि समूद पर फटकार हुई थी।"

अहले मदयन भी अल्लाह तआला की फटकार का निशाना बन कर उसी तरह हलाक हो गये जैसे क़ौमे समूद हलाक हुई थी।

अब आखिर पर बहुत मुख़्तसर अंदाज में हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र किया जा रहा है।

आयात 96 से 99 तक

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۹۶﴾
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ
فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿۹۷﴾ يَـقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۭ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿۹۸﴾
وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ بِئْسَ الرِّفْدُ
الْمَرْفُوْدُ ﴿۹۹﴾

आयत 96

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۹۶﴾

"और हमने भेजा मूसा को अपनी आयात और वाज़ेह सनद के साथ।"

आयत 97

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿۹۷﴾

"फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़, लेकिन उन्होंने फ़िरऔन ही की पैरवी की। हाँलाकि फ़िरऔन का मामला रास्ती (धर्म) वाला नहीं था।"

आयत 98

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

"क़यामत के दिन वह आएगा आगे चलता हुआ अपनी क़ौम के"

दुनिया की तरह क़यामत के दिन भी उसे क़यादत का मौक़ा फ़राहम किया जायेगा। वह आगे-आगे होगा और उसकी क़ौम पीछे-पीछे आ रही होगी, जैसे वो लोग दुनिया में उसके पीछे चलते थे।

فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۭ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ۝۹۸

"फिर वह आग के घाट पर उन्हें उतार देगा। और वह बहुत ही बुरा घाट है जिस पर वो उतारे जायेंगे।"

जिस तरह जानवरों का कोई गिरोह पानी पीने के लिये घाट पर आता है और उनका लीडर आगे-आगे जा रहा होता है, ऐसे ही फ़िरऔन अपनी क़ौम को जहन्नम के घाट पर ला उतारेगा।

आयत 99

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ۝۹۹

"और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी। बहुत ही बुरा है वह ईनाम जो उनको मिलने वाला है।"

आयात 100 से 109 तक

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآىِٕمٌ
وَّحَصِيْدٌ ﴿۱۰۰﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۭ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ
تَتْبِيْبٍ ﴿۱۰۱﴾ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى
وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۭ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ
لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا
لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿۱۰۴﴾ ۭ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿۱۰۵﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا
فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿۱۰۶﴾ ۙ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاۗءَ
رَبُّكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿۱۰۷﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا

كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ

نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾

आयत 100

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾

"ये हैं उन बड़ी-बड़ी बस्तियों की कुछ अहम ख़बरें जो हम आपको सुना रहे हैं, उनमें ऐसी भी हैं जो अभी क़ायम हैं और ऐसी भी हैं जो बिल्कुल ख़त्म हो गईं।"

हसीदुन का लफ़्ज़ उस खेत के लिये इस्तेमाल होता जिसकी फ़सल काट ली गई हो। फ़सल के कटने के बाद खेत में जो वीरानी का मंज़र होता है उसके साथ अज़ाबे इस्तेसाल से तबाह शुदा बस्तियों को तश्बीह दी गई है। फिर उन बस्तियों में कुछ तो ऐसी हैं जिनका नामो-निशान तक मिट चुका है मगर बाज़ ऐ भी हैं जिनके आसार को बाक़ी रखा गया है। मसलन क़ौमे आद की आबादियों का कोई नामो-निशान तक नहीं मिलता जिससे मालूम हो सके कि यह क़ौम कहाँ आबाद थी (अग़रचे हाल ही में सेटेलाइट के ज़रिये उनके शहर और शद्दाद की जन्नत के कुछ आसार ज़ेरे ज़मीन मिलने का दावा सामने आया है)। दूसरी तरफ़ क़ौमे समूद के मकानात के खन्डरात आज तक मौजूद हैं।

आयत 101

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

"और हमने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने अपनी जानों पर ख़ुद ज़ुल्म ढहाया"

فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاۗءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۭ

"तो उनके कुछ भी काम ना आ सके उनके वो मअबूद जिन्हें वो अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे, जब आपके रब का हुक्म आ पहुँचा।"

وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ١٠١

"और उन्होंने कुछ इज़ाफ़ा नहीं किया उनके हक़ में मगर बर्बादी ही का।"

जब अल्लाह तआला की तरफ़ से अज़ाबे इस्तेसाल का हुक्म आ गया तो उनके वो मअबूद जिन्हें वो अल्लाह को छोड़ कर पुकारा करते थे उनके कुछ काम ना आ सके और उन्होंने उनकी हलाकत व बर्बादी के सिवा और किसी चीज़ में इज़ाफ़ा नहीं किया।

आयत 102

وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ

“और (ऐ नबी ﷺ!) ऐसे ही होती है पकड़ आपके रब की, जब वह पकड़ता है बस्तियों को जबकि वो ज़ालिम होती हैं।”

जब किसी बस्ती में गुनाह और मअसियत (लापरवाही) का चलन आम हो जाता है तो वो गोया “ज़ुल्म” की मुरतकिब (दोषी) होकर अज़ाब की मुस्तहिक़ (हक़दार) हो जाती है।

اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝۱۰۲

“यक़ीनन उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक भी है और बड़ी सख़्त भी।”

अल्लाह की पकड़ के बारे में सूरतुल बुरूज (आयत नम्बर:12) में फ़रमाया गया: {اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ} “यक़ीनन तेरे रब की पकड़ बहुत सख़्त है।”

आयत 103

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ

“यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो आख़िरत के अज़ाब से डरते हों।”

ذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّجۡمُوۡعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّشۡهُوۡدٌ ﴿۱۰۳﴾

"वह एक ऐसा दिन है जिसमें लोगों को जमा किया जायेगा और वह दिन है पेशी का।"

आयत 104

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعۡدُوۡدٍ ﴿۱۰۴﴾ؕ

"और हम उसे एक वक़्ते मुअय्यन तक के लिये मौअख्खर किए हुए हैं।"

उसके आने की एक घड़ी मुअय्यन है, जिसको बाक़ायदा गिन कर और हिसाब लगा कर तय किया गया है।

आयत 105

يَوۡمَ يَاۡتِ لَا تَكَلَّمُ نَفۡسٌ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ۚ فَمِنۡهُمۡ شَقِيٌّ وَّسَعِيۡدٌ ﴿۱۰۵﴾

"जब वह दिन आ जायेगा तो कोई मुतनफ़्फ़स बात नहीं कर सकेगा मगर अल्लाह के इज़्न से, तो उन (इंसानों) में से कुछ शक़ी होंगे और कुछ सईद।"

यानि कुछ इंसान बद् बख़्त होंगे और कुछ नेक बख़्त।

आयत 106

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾

"तो वो लोग जो बद् बख़्त हैं वो आग में होंगे जिसमें उन्हें चीखना है और दहाड़ना है।"

वो लोग दर्द और कर्ब (पीड़ा) की वजह से चीख व पुकार करेंगे और फुन्कारे मारेंगे।

आयत 107

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ

"उसी में वो हमेशा रहेंगे जब तक कि रहे आसमान और ज़मीन, सिवाय उसके जो तेरा रब चाहे।"

यह मक़ाम मुश्किलातुल कुरान में से है। यह क़ुरान का वाहिद मक़ाम है जहाँ {خٰلِدِيْنَ فِيْهَا} के साथ कुछ इस्तसनात (exceptions) भी आये हैं। जहन्नम और जन्नत कब तक रहेंगी या जहन्नमी और जन्नती लोग उनमें कब तक रहेंगे? इसके बारे में फ़रमाया: {مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ} कि जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम रहेंगे। इससे मुराद अबदियत भी हो सकती है और इस तरह का कोई इशारा भी हो सकता है कि शायद कभी कोई ऐसा वक़्त आये जब ज़मीन व आसमान का वह निज़ाम बदल भी जाये और कोई दूसरा निज़ाम इसकी जगह ले ले। वाज़ेह रहे कि इस "ज़मीन व आसमान" से मुराद भी मौजूदा ज़मीन व आसमान नहीं हो

सकते, इसलिये कि अज़रुए अल्फ़ाज़े कुरानी यह तो क़यामत के रोज़ बदल डाले जायेंगे और यहाँ क़यामत के बाद पेश आने वाले हालात व वाक़यात का ज़िक्र हो रहा है। फिर इसमें भी एक इस्तसना बयान किया गया है: {اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ} "सिवाय उसके जो तेरा रब चाहे।" यानि अगर अल्लाह तआला ख़ुद ही किसी के अज़ाब में तख़फ़ीफ़ (छूट) करना चाहे या किसी को एक मुद्दत तक अज़ाब देकर जहन्नम से निकालने का फ़ैसला फ़रमाए तो उसे इसका पूरा इख़्तियार है। ज़जा व सज़ा के बारे में भी अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला का इख़्तियार मुत्लक़ (पक्का) है, लेकिन यह भी अल्लाह तआला का तयशुदा फ़ैसला है कि कुफ्फ़ार के लिये जहन्नम अब्दी (हमेशा रहने वाला) ठिकाना है। वल्लाहु आलम!

اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝۱۰۷

"बेशक आपका रब जो इरादा करे उसे कर गुज़रने वाला है।"

आयत 108

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

"और जो लोग नेकबख़्त होंगे वो जन्नत में रहेंगे हमेशा-हमेश जब तक रहे आसमान और ज़मीन, सिवाय उसके जो आपका रब चाहे।"

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاۗءَ رَبُّكَ ۭ

عَطَاۗءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝١٠٨

"यह ऐसी बख़्शिश है जो कभी ख़त्म नहीं होगी।"

इन आयात में जन्नत और जहन्नम का जो मुवाज़ना (compare) किया गया है इसमें जन्नत के लिये {عَطَاۗءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ} के अल्फ़ाज़ इज़ाफ़ी तौर पर इस्तेमाल किए गये हैं। इस तरह के लफ़्ज़ी फ़र्क़ व तफ़ावुत (अंतर) का जब उल्मा व मुफ़स्सरीन बारीक बीनी से जायज़ा लेते हैं तो इनसे बड़े-बड़े फ़लसफ़ियाना नुकात (टिप्स) पैदा होते हैं। चुनाँचे जन्नत और जहन्नम के बारे में हाफ़िज़ इब्ने तैमिया रहि. और शेख़ इब्ने अरबी रहि. दोनों ने एक राय पेश की है जो अहले सुन्नत के आम इज्माई अक़ीदे से मुख़्तलिफ़ है। इन दोनों बुज़ुर्गों के दरमियान अग़रचे बड़ा नज़रियाती बुअद (फ़ासला) है (इमाम इब्ने तैमिया रहि. बाज़ अवक़ात शेख़ मोयहिद्दीन इब्ने अरबी पर तन्क़ीद [आलोचना] करते हुए बहुत सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं) मगर इस राय में दोनों का इत्तेफ़ाक़ है कि जन्नत तो अब्दी है मगर जहन्नम अब्दी नहीं है। एक वक़्त आयेगा, चाहे वह अरबों साल के बाद आये, जब जहन्नम ख़त्म कर दी जायेगी। इसके बरअक्स अहले सुन्नत का इज्माई अक़ीदा यही है कि जन्नत और जहन्नम दोनों अब्दी हैं। वल्लाहु आलम!

.

आयत 109

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ

"पस (ऐ नबी ﷺ!) आप किसी शक में ना रहें उनके बारे में जिनकी यह लोग पूजा कर रहे हैं।"

مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ

"यह लोग नहीं पूजा कर रहे हैं मगर ऐसे ही जैसे कि इनके आबा व अजदाद पूजा करते रहे हैं इससे पहले।"

यह तो बस लकीर के फ़क़ीर बने हुए हैं।

وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ١٠٩ۧ

"और यक़ीनन हम उनको देने वाले हैं उनका हिस्सा बग़ैर किसी कमी के।"

आयात 110 से 123 तक

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ
شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ١١٠ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ
اَعْمَالَهُمْ ۭ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ١١١ فَاسْتَقِمْ كَمَآ

اُمِرۡتَ وَمَنۡ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطۡغَوۡا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ
بَصِيۡرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَلَا تَرۡكَنُوۡۤا اِلَى الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا فَتَمَسَّكُمُ
النَّارُ ۙ وَمَا لَـكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ اَوۡلِيَآءَ ثُمَّ لَا
تُنۡصَرُوۡنَ ﴿۱۱۳﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَىِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ
الَّيۡلِ ؕ اِنَّ الۡحَسَنٰتِ يُذۡهِبۡنَ السَّـيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكۡرٰى
لِلذّٰكِرِيۡنَ ﴿۱۱۴﴾ ۚ وَاصۡبِرۡ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيۡعُ اَجۡرَ
الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۱۵﴾ فَلَوۡلَا كَانَ مِنَ الۡقُرُوۡنِ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ
اُولُوۡا بَقِيَّةٍ يَّـنۡهَوۡنَ عَنِ الۡفَسَادِ فِى الۡاَرۡضِ اِلَّا
قَلِيۡلًا مِّمَّنۡ اَنۡجَيۡنَا مِنۡهُمۡ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مَاۤ
اُتۡرِفُوۡا فِيۡهِ وَكَانُوۡا مُجۡرِمِيۡنَ ﴿۱۱۶﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ
لِـيُهۡلِكَ الۡقُرٰى بِظُلۡمٍ وَّاَهۡلُهَا مُصۡلِحُوۡنَ ﴿۱۱۷﴾ وَلَوۡ
شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوۡنَ
مُخۡتَلِفِيۡنَ ﴿۱۱۸﴾ ۙ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمۡ ؕ
وَتَمَّتۡ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمۡلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الۡجِنَّةِ وَالنَّاسِ
اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۱۱۹﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الرُّسُلِ
مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِىۡ هٰذِهِ الۡحَقُّ

وَمَوۡعِظَةٌ وَّذِكۡرٰى لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۲۰﴾ وَقُلۡ لِّلَّذِيۡنَ لَا
يُؤۡمِنُوۡنَ اعۡمَلُوۡا عَلٰى مَكَانَتِكُمۡ ؕ اِنَّا عٰمِلُوۡنَ ﴿۱۲۱﴾
وَانۡتَظِرُوۡا ۚ اِنَّا مُنۡتَظِرُوۡنَ ﴿۱۲۲﴾ وَلِلّٰهِ غَيۡبُ السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ وَاِلَيۡهِ يُرۡجَعُ الۡاَمۡرُ كُلُّهٗ فَاعۡبُدۡهُ وَتَوَكَّلۡ
عَلَيۡهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲۳﴾

आयत 110

وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ فَاخۡتُلِفَ فِيۡهِ ؕ

"और मूसा को हमने किताब दी थी फिर उसमें इख़्तलाफ़ पैदा कर दिए गये।"

وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ

"और अगर तय ना हो चुकी होती एक बात तेरे रब की तरफ़ से पहले ही से तो उनके माबैन फ़ैसला कर दिया जाता।"

وَاِنَّهُمۡ لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ مُرِيۡبٍ ﴿۱۱۰﴾

"और (अब तो) यह लोग इस (तौरात) के बारे में उलझा देने वाले शक में मुब्तला हो गये हैं।"

यह बात सूरतुल शौरा में वज़ाहत से बयान की गई है कि हर रसूल की उम्मत अपनी इल्हामी (Almighty) किताब की वारिस होती है। फिर जब उस उम्मत पर ज़वाल (गिरावट) आता है तो अपनी उस किताब के बारे में भी

उनके यहाँ शकूक व शुब्हात पैदा हो जाते हैं कि वाक़िअतन यह किताब अल्लाह की तरफ़ से है भी या नहीं!

आयत 111

وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ۭ

"और (ऐ नबी ﷺ!) आपका रब इन सबको इनके आमाल का लाज़िमन पूरा-पूरा बदला देगा।"

اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ١١١

"यक़ीनन वह बा-ख़बर है उससे जो अमल यह लोग कर रहे हैं।"

आयत 112

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ

"तो (ऐ नबी ﷺ!) आप डटे रहें जैसा कि आपको हुक्म हुआ है और वो भी जिन्होंने तौबा की है आपके साथ"

आप ﷺ के साथ वो लोग भी सब्र व इस्तक़ामत (stability) के साथ डटे रहें जो शिर्क से बाज़ आए हैं, जिन्होंने कुफ़्र को छोड़ा है और आपके साथ ईमान लाये हैं।

وَلَا تَطْغَوْا ۭ

"और तुम लोग हद से तजावुज़ (हद पार) ना करो।"

तजावुज़ की एक शक्ल यह भी हो सकती है कि मुन्करीने हक़ पर जल्द अज़ाब ले आने की ख़्वाहिश करें और यह भी

कि चारों तरफ़ से उन लोगों की मुख़ालफ़त के सबब किसी लम्हें गुस्से में आ जायें और हिल्म (नम्रता) व बुर्दबारी (सब्र) का दामन हाथ से छोड़ बैठें।

إِنَّهُۥ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

"यक़ीनन वह तुम लोगों के सब आमाल देख रहा है।"

अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल भी देख रहा है और जो कुछ तुम्हारे मुख़ालफ़ीन कर रहे हैं उनकी तमाम हरकतें भी उसके इल्म में हैं। इसलिये उसके यहाँ से तुम्हें तुम्हारा अज्र व सवाब मिलेगा, और उन लोगों को उनके करतूतों की सज़ा मिलेगी।

आयत 113

وَلَا تَرْكَنُوٓا۟ إِلَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟

"और कोई झुकाव पैदा ना करना उन लोगों की तरफ़ जिन्होंने ज़ुल्म किया"

यह ख़ालिस हक़ और बातिल की कशमकश है, इसमें कहीं कोई रिश्तेदारी का मामला, कोई पुराने मरासिम (रिवाज़), क़बीले की मुहब्बत वग़ैरह अवामिल तुम लोगों को किसी लम्हे उनकी तरफ़ झुकने पर माइल (इच्छुक) ना करें।

فَتَمَسَّكُمُ ٱلنَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِنْ

"(अगर ऐसा हुआ) तो तुम्हें आग पकड़ लेगी, फिर तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा कोई हिमायती नहीं होंगे, फिर तुम्हारी मदद नहीं की जायेगी।"

اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾

आयत 114

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۭ

"और (ऐ नबी ﷺ!) नमाज़ को क़ायम रखिये दिन के दोनों सिरों पर और रात की कुछ घड़ियों में।"

दिन के दोनों सिरों पर फज्र और अस्र के अवक़ात हैं जबकि रात में मगरिब और इशा शामिल हैं। लेकिन यह याद रहे कि पाँच नमाज़ों का मौजूदा निज़ाम ग्यारह नबवी में मेराज के बाद क़ायम हुआ है। इससे पहले मक्की दौर में तक़रीबन साढ़े दस बरस तक नमाज़ों के बारे में जो अहकाम नाज़िल हुए वो इसी नौइयत (nature) के है। यहाँ एक नुक्ता फिर से ज़हन में ताज़ा कर लें कि हुज़ूर ﷺ से इस अंदाज़ में सीगा-ए-वाहिद में जो ख़िताब किया जाता है, वो दरअसल आप ﷺ की वसातत (मध्यस्थता) से उम्मत को हुक्म देना मक़सूद होता है।

اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾ۚ

"यक़ीनन नेकियाँ बदियों को दूर कर देती हैं। यह याद दिहानी है याद रखने वालों के लिये।"

आयत 115

وَاصۡبِرۡ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۱۵﴾

"और सब्र कीजिए, यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करता।"

आयत 116

فَلَوۡلَا كَانَ مِنَ الۡقُرُوۡنِ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ اُولُوۡا بَقِيَّةٍ يَّنۡهَوۡنَ عَنِ الۡفَسَادِ فِى الۡاَرۡضِ

"तो क्यों ना ऐसा हुआ कि तुमसे पहले की क़ौमों में हक़ के ऐसे अलम्बरदार होते जो (अपनी-अपनी क़ौमों के लोगों को) रोकते ज़मीन में फ़साद मचाने से"

اِلَّا قَلِيۡلًا مِّمَّنۡ اَنۡجَيۡنَا مِنۡهُمۡ ۚ

"मगर बहुत थोड़े लोग ऐसे थे, जिन्हें हमने उनमें से बचा लिया।"

यह बात क़ुरान में बार-बार दोहराई गई है कि हक़ के अल्मबरदार, अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर का हक़ अदा करने वाले लोग जहाँ भी हों, जिस क़ौम से भी हों, अल्लाह तआला हमेशा उन्हें अपनी रहमते खास से बचा लेता है।

وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾

"और पीछे पड़े रहे वो ज़ालिम उन ऐश व आराम की चीज़ों के जो उन्हें दी गई थीं और वो मुजरिम थे।"

आयत 117

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾

"और आपका रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म के साथ हलाक कर दे जबकि उनमें बसने वाले लोग इस्लाह करने वाले हों।"

ऐसा नहीं होता कि किसी इलाक़े, किसी मुल्क या शहर में अच्छे किरदार के हामिल, अपनी और दूसरों की इस्लाह में सरगर्म लोगों की अक्सरियत हो और अल्लाह फिर भी उस बस्ती पर अज़ाब भेज दे।

आयत 118

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً

"और अगर आपका रब चाहता तो तमाम नौए इंसानी को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वो तो इख़्तलाफ़ करते ही रहेंगे।"

وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾

जहाँ कहीं भी लोग इकठ्ठा मिल-जुल कर रह रहे होंगे उनमें इख़्तलाफ़े राय का होना बिल्कुल फ़ितरी बात है। मुख़्तलिफ़ लोगों की मुख़्तलिफ़ सोच है, हर एक का अपना-अपना नुक़्ता-ए-नज़र है और इसके लिये अपना-अपना इस्तदलाल (तर्क) है। उसी के मुताबिक़ उनके नज़रियात हैं और उसी के मुताबिक़ उनके आमाल व अफ़आल। जब तक यह इस्तदलाल इल्म और क़ुरान व सुन्नत की बुनियाद पर है तो इसमें कोई क़बाहत (संकोच) नहीं, बशर्ते कि यह इख़्तलाफ़ की हद तक रहे और तिफ़र्क़े की सूरत इख़्तियार ना करे और "मन दीगरम तू दीगरी" वाला मामला ना हो।

इस नुक्ते को यूँ भी समझना चाहिये कि इमाम अबु हनीफ़ा और इमाम शाफ़ई रहि. दोनों ने क़ुरान व सुन्नत से इस्तदलाल किया है, मग़र बाज़ अवक़ात दोनों बुज़ुर्गों की आराअ (राय) में बहुत ज़्यादा इख़्तलाफ़ पाया जाता है। मगर ऐसे अहले इल्म हज़रात के यहाँ ऐसा इख़्तलाफ़ कभी भी नज़ाअ (विवाद) व तिफ़र्क़े बाज़ी का बाइस नहीं बनता। एक दूसरे ज़ाविये (एंगल) से देखा जाये तो दुनिया की रौनक और खूबसूरती भी इसी तनूअ (विविधता) और इख़्तलाफ़ से क़ायम है।

गुलहाए रंगारंग से है रौनक़े चमन
ऐ ज़ौक़ इस चमन को है ज़ेब इख़्तलाफ़ से!

अगर दुनिया में यक्सानियत (monotany) ही हो तो इंसान की तबीयत उससे उकता जाये।

आयत 119

إِلَّا مَن رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۗ

"सिवाय उसके कि जिस पर आपका रब रहम फ़रमा दे। और इसी लिये उसने उन्हें पैदा किया है।"

अल्लाह तआला ने इंसानों की तख़्लीक़ के अंदर यह इख़्तलाफ़ और तनूअ ख़ुद रखा है। दुनिया में अरबों इंसान हैं मगर उनमें कोई से दो इंसानों के मिज़ाज, शक्ल व सूरत और आवाज़ हत्ता कि ऊँगलियों के निशानात आपस में नहीं मिलते। लिहाज़ा अल्लाह इंसानों को पैदा ही इसी अंदाज़ पर करता है कि उनमें तनूअ और इन्फ़रादियत क़ायम रहे। एक हदीसे नबवी की रू से इंसान भी मअदनियात (minerals) की तरह हैं। चुनाँचे जिस तरह मअदनियात की बेशुमार अक़साम (क़िस्मे) हैं मगर हर एक की अपनी खुसूसितात और अपनी पहचान है, यही मामला इंसानों का है।

وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

"और आपके रब की यह बात पूरी होकर रहेगी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों सबसे भर कर रहूँगा।"

यानि तमाम मुशरिक, सरकश (विद्रोही), नाफ़रमान और गुनहगार जिन्नों और इंसानों को उठा कर के जहन्नम का ईंधन बनाऊँगा और यूँ उनसे जहन्नम को भर दूँगा। उसने

जन्नत बनाई है तो उसे भी आबाद करना है और जहन्नम बनाई है तो उसे भी ईंधन फ़राहम (provide) करना है।

आयत 120

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الرُّسُلِ

"और (ऐ नबी ﷺ!) हम रसूलों की ख़बरों में से हर एक आपको सुना रहे हैं"

यह "अंबिया अर्रुसुल" की वही इस्तलाह (term) है जिसका ज़िक्र क़ब्ल अज़ें बार-बार हुआ है। हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत लूत, हज़रत शोएब और हज़रत मूसा अलै. के हालात हम आपको बार-बार इसलिये सुना रहे हैं:

مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ

"(ताकि) मज़बूत रखें हम इसके साथ आपका दिल।"

ताकि इन वाक़्यात को सुन कर आप और आपके साथियों के दिलों में इत्मिनान बढ़े और इस्तक़ामत में इज़ाफ़ा हो। इन वाक़्यात के ज़रिये से हम यह बात वाज़ेह करना चाहते हैं कि मक्का में आप पर और आपके साथियों पर मसाइब (मुसीबतों) के जो पहाड़ टूट रहे हैं, यह कोई नई बात नहीं है, बल्कि जब भी कोई रसूल किसी क़ौम की तरफ़ मबऊस हुआ और उसे दावते हक़ पेश की तो उसकी मुख़ालफ़त इसी शद्दो-मद से हुई। अंबिया व रुसुल और उनके साथियों को हमेशा ऐसे ही हालात का सामना करना पड़ा। मगर जिस तरह हमने हर बार अहले हक़ की मदद की और बिल्आख़िर कामयाब वही हुए, इसी तरह अब भी हक़ व बातिल की इस जाँ कसल कशमकश में बोल-बाला हक़ ही का होगा,

और आख़िरकार फ़तह आपकी और आपके साथियों ही की होगी।

وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝۱۲۰

"और इसमें आपके पास हक़ आया है और मोमिनीन के लिये इसमें नसीहत और याद दिहानी है।"

यानि इस क़ुरान में या इस सूरत में या इन वाक़्यात में हक़ और बातिल को बिल्कुल वाज़ेह कर दिया गया है और मोमिनीन के लिये नसीहत और याद दिहानी का सामान भी फ़राहम कर दिया गया है।

आयत 121

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝۱۲۱ۙ

"और कह दीजिए उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपनी जगह पर करो (जो कर सकते हो) हम भी कर रहे हैं (जो कुछ हम कर सकते हैं)।"

यानि तुम मेरी मुखालफ़त और दुश्मनी में कोई दक़ीक़ा फ़रो गुज़ाश्त (थोड़ी सी भी गुंजाइश) ना करो, इस ज़िमन में जो कर सकते हो बेशक मेरे खिलाफ़ कर गुज़रो, तुम अपने तरीक़े पर चलते रहो, हम अपनी रविश पर चलते रहेंगे।

आयत 122

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝۱۲۲

"और तुम भी इन्तेज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं।"

कि अल्लाह की तरफ़ से आख़िरी फ़ैसला क्या आता है।

आयत 123

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ

"और अल्लाह ही के लिये हैं आसमानों और ज़मीन की तमाम छुपी चीज़ें और कुल का कुल मामला उसी की जानिब लौटा दिया जायेगा"

فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۲۳

"तो आप उसी की इबादत करें और उसी पर तवक्कुल करें। और यक़ीनन आपका रब ग़ाफिल नहीं है उससे जो तुम लोग कर रहे हो।"

بارك الله لى ولكم فى القرآن العظيم ونفعنى وايا كم بالآيات والذكر الحكيم۔

सूरह युसुफ़

तम्हीदी कलिमात

चौदह मक्की सूरतों (सूरह युनुस से सूरतुल मोमिनून) पर मुश्तमिल इस तवील सिलसिले में तीन-तीन सूरतों के जो ज़ेली ग्रुप्स हैं, सूरह युसुफ़ इनमें से पहले ज़ेली ग्रुप का हिस्सा है, लेकिन इस सूरत को अपने मज़मून और ख़ास अंदाज़ की बिना पर पहली दो सूरतों (सूरह युनुस और सूरह हूद) का ज़मीमा (complement) समझना चाहिए। बल्कि हक़ीक़त तो यह है कि सूरह युसुफ़ पूरे क़ुरान मजीद में अपने अंदाज़ की एक बिल्कुल मुनफ़रिद (अकेली) सूरत है। इसकी हल्की सी मुशाबहत (copy) सिर्फ़ सूरह ताहा के साथ है। सूरह ताहा भी सूरह युसुफ़ की तरह सिर्फ़ एक रसूल यानि हज़रत मूसा अलै. के तज़किरे पर मुश्तमिल है। इन दोनों सूरतों में इसके अलावा एक मअनवी निस्बत यह भी है कि हज़रत युसुफ़ अलै. के ज़माने में और आपकी वसातत (मध्यस्थता) से बनी इसराइल मिस्र में दाख़िल हुए थे, जबकि हज़रत मूसा अलै. के ज़माने में आपके ज़रिये से वह लोग वहाँ से निकले थे।

इससे पहले मक्की सूरतों में अंबिया अर्रुसुल का मज़मून बहुत शद्दो-मद्द के साथ बयान हुआ है, जबकि हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र क़ससुल नबिय्यीन के अंदाज़ में आया है, पहले सूरतुल अनआम में और फिर सूरह हूद में। मगर सूरह युसुफ़ क़ससुल नबिय्यीन के ऐतबार से भी यूँ मुनफ़रिद है कि पूरी सूरत एक ही नबी के हालात पर

मुश्तमिल है। इस पूरे क़िस्से में अंबिया अर्रुसुल के अंदाज़ की हल्की सी झलक भी नज़र नहीं आती। यानि इस तरह का कोई इशारा कहीं भी नहीं मिलता कि हज़रत युसुफ़ अलै. मिस्र में इस क़ौम की तरफ़ मबऊस हुए थे, या फिर उन्होंने अपनी क़ौम को दावते तौहीद देने के बाद कहा हो कि अगर तुम मेरी इस दावत को नहीं मानोगे तो तुम पर अल्लाह का अज़ाब आएगा। पूरी सूरत में हमें इनकी तरफ़ से जा-बजा दावत की मिसालें मिलती हैं मगर वह एक मसलेह के अंदाज़ में तब्लीग करते नज़र आते हैं। इससे नबी और रसूल के माबैन फ़र्क़ भी वाज़ेह हो जाता है। रसूलों के हालात के ज़िमन में हम पढ़ आये हैं कि एक रसूल की बेअसत तअय्युन (संकल्प) के साथ जिस क़ौम की तरफ़ होती थी वह उन्हें अल्लाह वाहिद की बंदगी और अपनी इताअत का हुक्म देता था: {اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ} (सूरह नूह:3) "कि तुम अल्लाह की बंदगी करो, उसका तक़वा इख्तियार करो और मेरी इताअत करो।" और अगर वह क़ौम अपने रसूल की दावत को रद्द करती चली जाती थी तो बिलआख़िर उस क़ौम पर अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब नाज़िल हो जाता था और उसे सफ़हा-ए-हस्ती से मिटा दिया जाता था। लेकिन नबी का मामला औलिया अल्लाह की तरह होता था। वह अपने मआशरे में तौहीद की दावत देता, कुफ़्र व शिर्क और बिदआत से इजतनाब (बचने) की तलक़ीन (हिदायत) करता और उनकी इस्लाह की कोशिश करता। बनी इसराईल में अम्बिया किराम अलै. तसल्सुल के साथ (continue) आते रहे हैं, लेकिन रसूल मअदूदे चंद (गिनती के) थे। उम्मते मुस्लिमा में बड़े-बड़े औलिया किराम अलै. पैदा हुए हैं और उन्होंने अज़ीमुश्शान दावती और तजदीदी (पुनर्निर्माण)

खिदमात अंजाम दी हैं, लेकिन वही का दरवाज़ा अम्बिया किराम अलै. के बाद बंद हो चुका है।

इस सूरत के नुज़ूल और इसमें हज़रत युसुफ़ अलै. के हालात की इस क़दर तफ़सील बयान करने का बुनियादी सबब तो यह है कि मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के दावा-ए-नबुवत की ख़बरें जब यहूद-ए-मदीना तक पहुँचीं तो उन्होंने तौरात की मालूमात की बुनियाद पर शरारतन मुशरिकीने मक्का को मुख्तलिफ़ सवालात भेजने शुरू कर दिए, जो वह हुज़ूर ﷺ से पूछते रहते थे। उन सवालात में एक अहम सवाल यह भी था कि बनी इसराईल के बारे में आप यह वाक़ियात तो बयान कर रहे हैं कि मिस्र में फ़िरऔन उन पर ज़ुल्म करता था और वहाँ वो गुलामाना ज़िन्दगी बसर कर रहे थे और फ़िर हज़रत मूसा अलै. उनको वहाँ से निकाल कर ले गए, मगर बनी इसराईल के जद्दे अमजद (forefather) हज़रत इब्राहीम, हज़रत इसहाक़ और हज़रत याक़ूब अलै. तो फ़लस्तीन में आबाद थे, उनके बारे में यह भी बताएँ कि वहाँ से यह लोग मिस्र में कैसे पहुँच गए? यह तारीख़ का एक सवाल था, जिसके जवाब में अल्लाह तआला ने ना सिर्फ़ यह पूरा वाक़िया इस सूरत में बहुत ही ख़ूबसूरत अंदाज़ में बयान फ़रमा दिया, बल्कि इस क़िस्से को क़ुरैश के उस तर्ज़े अमल पर भी मुन्तबिक़ (logical) कर दिया जो वह बिरादराने युसुफ़ की मानिन्द (तरह) नब़ी आखिरुज्ज़माँ ﷺ के साथ रवा रखे हुए थे।

मैं यह भी अर्ज़ करता चलूँ कि क़ुरान हकीम के साथ मेरा जो ज़हनी व क़ल्बी रिश्ता और मअनवी रब्त (मानसिक लिंक) व ताल्लुक़ क़ायम हुआ उसका नुक़्ता-ए-आग़ाज़ यही सूरह युसुफ़ बनी, जब मैंने मौलाना अबुल आला मौदूदी रहि. के क़लम से इसकी तफ़सीर का मुताअला (study)

किया। मैंने 1947 में मैट्रिक का इम्तिहान पास ही किया था कि मशरिक़ी पंजाब में फ़सादात शुरू हो गए और मुसलमानों का क़त्ले आम होने लगा। तक़रीबन डेढ़ माह तक हम अपने शहर हिसार में महसूर (घिरे) रहे। हमने अपनी हिफ़ाज़त के लिये मोर्चे क़ायम कर लिए थे, जिनमें शहर के नौजवान अपनी बारी से ड्यूटी देते। फ़ारिग वक़्त में, मैं और मेरे बड़े भाई इज़हार अहमद एक मस्जिद में बैठ कर मुताअला करते। उन दिनों मौलाना मौदूदी रहि. के माहनामा (monthly) तर्जुमानुल क़ुरान में "तफ़हीमुल क़ुरान" के सिलसिले में सूरह युसुफ़ की तफ़सीर शाया (publish) हो रही थी। मैंने भी मैट्रिक में अरबी का मज़मून (subject) रखा था और भाईजान ने भी जब मैट्रिक किया था तो अरबी पढ़ी थी। चुनाँचे हम मिल कर सूरह युसुफ़ की तफ़सीर का मुताअला करते और उस पर बाहम मुज़ाकरा करते। क़ुरान हकीम की तिलावत और तर्जुमे की मदद से उसको समझने का मामला तो पहले से ही था, लेकिन इस तफ़सीरी मुताअले और मुज़ाकरे से क़ुरान हकीम के साथ ज़हनी और क़ल्बी रिश्ता अस्तवार (solid) हुआ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आयात 1 से 6 तक

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۟ ﴿١﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا
عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ

اَحۡسَنَ الۡقَصَصِ بِمَاۤ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡکَ ہٰذَا الۡقُرۡاٰنَ ٭ۖ
وَ اِنۡ کُنۡتَ مِنۡ قَبۡلِہٖ لَمِنَ الۡغٰفِلِیۡنَ ﴿۳﴾ اِذۡ قَالَ
یُوۡسُفُ لِاَبِیۡہِ یٰۤاَبَتِ اِنِّیۡ رَاَیۡتُ اَحَدَ عَشَرَ کَوۡکَبًا
وَّ الشَّمۡسَ وَ الۡقَمَرَ رَاَیۡتُہُمۡ لِیۡ سٰجِدِیۡنَ ﴿۴﴾ قَالَ
یٰبُنَیَّ لَا تَقۡصُصۡ رُءۡیَاکَ عَلٰۤی اِخۡوَتِکَ فَیَکِیۡدُوۡا لَکَ
کَیۡدًا ؕ اِنَّ الشَّیۡطٰنَ لِلۡاِنۡسَانِ عَدُوٌّ مُّبِیۡنٌ ﴿۵﴾
وَ کَذٰلِکَ یَجۡتَبِیۡکَ رَبُّکَ وَ یُعَلِّمُکَ مِنۡ تَاۡوِیۡلِ
الۡاَحَادِیۡثِ وَ یُتِمُّ نِعۡمَتَہٗ عَلَیۡکَ وَ عَلٰۤی اٰلِ یَعۡقُوۡبَ
کَمَاۤ اَتَمَّہَا عَلٰۤی اَبَوَیۡکَ مِنۡ قَبۡلُ اِبۡرٰہِیۡمَ وَ اِسۡحٰقَ ؕ اِنَّ
رَبَّکَ عَلِیۡمٌ حَکِیۡمٌ ﴿۶﴾

आयत 1

"अलिफ़, लाम, रा। यह एक रौशन किताब की आयात हैं।"

الٓرٰ ۟ قف تِلۡکَ اٰیٰتُ الۡکِتٰبِ الۡمُبِیۡنِ ۟ قف ﴿۱﴾

यह उस किताबे रौशन की आयात हैं जो अपना मुद्दा वाज़ेह तौर पर बयान करती है और कोई अबहाम (अस्पष्टता) बाक़ी नहीं रहने देती।

आयत 2

إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ قُرۡءَٰنًا عَرَبِيّٗا

"हमने इसको नाज़िल किया है अरबी क़ुरान बना कर"

यानि वह क़ुरान जो उम्मुल किताब और लौहे महफ़ूज़ में हमारे पास है, इसको हमने क़ुराने अरबी बना कर मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ पर नाज़िल किया है।

لَّعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُونَ ٢

"ताकि तुम लोग इसे अच्छी तरह से समझ सको।"

यह ख़िताब अरब के उम्मिय्यीन से है कि हमारे आखरी रसूल ﷺ की अव्वलीन बेअसत तुम्हारी तरफ़ हुई है। आप ﷺ के मुखातबीन अव्वलीन तुम लोग हो। चुनाँचे हमने क़ुरान को तुम्हारी अपनी ज़बान में नाज़िल किया है ताकि तुम लोग इसे अच्छी तरह समझ सको।

आयत 3

نَحۡنُ نَقُصُّ عَلَيۡكَ أَحۡسَنَ ٱلۡقَصَصِ

"(ए नबी ﷺ!) हम आपको सुनाने लगे हैं बेहतरीन बयान"

क़सस (क़ाफ़ की ज़बर के साथ) यहाँ बतौर मसदर आया है और इसके मायने हैं "बयान।" अगर लफ्ज़ क़िसस (क़ाफ़ की ज़ेर के साथ) होता तो क़िस्सा की जमा के मायने देता, और इस सूरत में इसका तर्जुमा यूँ होता कि हम आप ﷺ को बेहतरीन क़िस्सा सुना रहे हैं।

بِمَآ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ هٰذَا الۡقُرۡاٰنَ ‌ۖ وَاِنۡ كُنۡتَ مِنۡ قَبۡلِهٖ لَمِنَ الۡغٰفِلِيۡنَ ۝٣

"इस क़ुरान के साथ जो हमने आपकी तरफ़ वही किया है, और यक़ीनन आप इससे पहले (इससे) नावाक़िफ़ थे।"

यानि क़ुरान में इस वही (सूरत) के नुज़ूल से पहले आप इस वाक़िये से वाक़िफ़ नहीं थे।

आयत 4

اِذۡ قَالَ يُوۡسُفُ لِاَبِيۡهِ

"जब युसुफ़ ने अपने वालिद (याक़ूब) से कहा"

हज़रत याक़ूब अलै. की बड़ी बीवी से आपके दस बेटे थे और वह सबके सब उस वक़्त तक जवानी की उम्र को पहुँच चुके थे, जबकि आपके दो बेटे (युसुफ़ अलै. और बिन यमीन) आपकी छोटी बीवी से थे। इनमें हज़रत युसुफ़ अलै. बड़े थे, मगर अभी यह दोनों ही कमसिन (teen) थे।

يٰۤاَبَتِ اِنِّىۡ رَاَيۡتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوۡكَبًا وَّالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ رَاَيۡتُهُمۡ لِىۡ سٰجِدِيۡنَ ۝٤

"अब्बा जान! मैंने ख़्वाब में देखा है ग्यारह सितारों और सूरज और चाँद को, मैंने उनको देखा है कि वह मुझे सज्दा कर रहे हैं।"

आयत 5

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ

“याक़ूब अलै. ने फ़रमाया: ए मेरे प्यारे बेटे! अपना यह ख़्वाब अपने भाईयों के सामने बयान ना करना”

हज़रत याक़ूब अलै. ने समझ लिया कि इस ख़्वाब में युसुफ़ के ग्यारह भाईयों और माँ-बाप के बारे में कोई इशारा है और शायद अल्लाह तआला मेरे इस बेटे के लिये कोई ख़ास फज़ीलत ज़ाहिर करने वाला है।

فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ

“वरना वह तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश करेंगे।”

मुमकिन है वह लोग ख़्वाब सुन कर इसमें वाज़ेह इशारे को भाँप लें तो उनके अंदर हसद की आग भड़क उठे और फिर वह तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश करें, तुम्हें गज़न्द (harm) पहुँचाने की कोशिश करें।

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

“यक़ीनन शैतान तो इंसान का खुला दुश्मन है।”

वह दुश्मनी में किसी को भी किसी भी वक़्त, कोई भी पट्टी पढ़ा सकता है।

आयत 6

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ

“और इसी तरह तुम्हारा रब तुम्हें मुन्तखिब करेगा”

हज़रत याक़ूब अलै. ने समझ लिया कि मेरे बेटों में से युसुफ़ को अल्लाह तआला ने नबुवत के लिये चुन लिया है।

وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيْلِ الْأَحَادِيْثِ

“और तुम्हें सिखाएगा तावीलुल अहादीस में से (ईल्म)”

यहाँ पर तावील हदीस के दो मायने हो सकते हैं, एक तो ख़्वाबों की ताबीर और दूसरे मामला फ़हमी और दूरबीनी, बातों की कुनह (तह) तक पहुँच जाना, हक़ीक़त तक रसाई हो जाना।

وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ

“और इत्माम फ़रमायेगा अपनी नेअमत का तुझ पर और आले याक़ूब पर जिस तरह उसने इससे पहले अपनी नेअमत का इत्माम फ़रमाया तेरे आबा व अजदाद इब्राहीम और इसहाक़ अलै. पर।”

यहाँ हज़रत याक़ूब अलै. ने क़सरे नफ्सी के सबब हज़रत इब्राहीम और हज़रत इसहाक़ अलै. के साथ अपना नाम नहीं लिया।

اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۧ

“यक़ीनन तेरा रब जानने वाला, हिकमत वाला है।”

आयात 7 से 20 तक

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۷
اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ
عُصْبَةٌ ۭ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۚۖ ۸ اقْــتُلُوْا
يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ
وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۹ قَالَ قَاۗىِٕلٌ
مِّنْهُمْ لَا تَــقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ
يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۱۰ قَالُوْا
يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰي يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ
۱۱ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ
۱۲ قَالَ اِنِّىْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ
يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۱۳ قَالُوْا لَىِٕنْ
اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۱۴
فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ
وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۱۵ وَجَاۗءُوْٓا اَبَاهُمْ عِشَاۗءً يَّبْكُوْنَ ۱۶ۭ
قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ

مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ
كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ۭ
قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ
وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ
سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ
يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ۭ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ
مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

आयत 7

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ﴿٧﴾

“यक़ीनन युसुफ़ और आपके भाइयों (के क़िस्से) में (बहुत सी) निशानियाँ हैं पूछने वालों के लिये।”

यानि जिन लोगों (क़ुरैशे मक्का) ने यह सवाल पूछा है और जिन लोगों (यहूदे मदीना) के कहने पर पूछा है, उन सबके लिये इस क़िस्से में बहुत सी निशानियाँ हैं। अगर वह सिर्फ़ इस क़िस्से को हक़ीक़त की नज़रों से देखें और इस पर ग़ौर करें तो बहुत से हक़ाइक़ निखर कर उनके सामने आ जायेंगे।

आयत 8

اِذۡ قَالُوۡا لَیُوۡسُفُ وَاَخُوۡہُ اَحَبُّ اِلٰۤی اَبِیۡنَا مِنَّا وَنَحۡنُ عُصۡبَۃٌ ؕ

“जब उन्होंने कहा कि युसुफ़ और इसका भाई हमारे वालिद को हमसे ज़्यादा महबूब हैं जबकि हम एक ताक़तवर जमात हैं।”

बिरादराने युसुफ़ ने कहा कि हम पूरे दस लोग हैं, सबके सब जवान और ताक़तवर हैं, ख़ानदान की शान तो हमारे दम क़दम से है (क़बाईली ज़िंदगी में नौजवान बेटों की तादाद पर ही किसी ख़ानदान की शान व शौकत और क़ुव्वत व ताक़त का इन्हसार [dependent] होता है) लेकिन हमारे वालिद हमें नज़र अंदाज़ करके इन दो छोटे बच्चों को ज़्यादा अहमियत देते हैं।

اِنَّ اَبَانَا لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنِۣ ۚ﴿۸﴾

“यक़ीनन हमारे वालिद सरीह गलती पर हैं।”

आयत 9

اقۡتُلُوۡا یُوۡسُفَ اَوِ اطۡرَحُوۡہُ اَرۡضًا یَّخۡلُ لَکُمۡ وَجۡہُ اَبِیۡکُمۡ

“(चुनाँचे) क़त्ल कर दो युसुफ़ को या इसे फेंक आओ (दूर) किसी इलाक़े में ताकि तुम्हारे वालिद की तवज्जो सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाए”

युसुफ़ चूँकि इन दोनों में बड़ा है, इसलिये वही वालिद साहब की सारी तवज्जो और इनायात का मरकज़ व महवर

(center & axis) बना हुआ है, चुनाँचे जब यह नहीं रहेगा तो ला-महाला (आनिवार्य रूप से) वालिद साहब की तमामतर शफक्क़त और मेहरबानी हमारे लिये ही होगी।

وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝

"और फिर इसके बाद नेक बन जाना।"

इस फिक़रे में उनके नफ्स और ज़मीर की कशमकश की झलक साफ़ नज़र आ रही है। ज़मीर तो मुसलसल मलामत कर रहा था कि यह क्या करने लगे हो? अपने भाई को क़त्ल करना चाहते हो? यह तुम्हारी सोच दुरुस्त नहीं है! लेकिन आमतौर पर ऐसे मौक़े पर इंसान का नफ्स उसके ज़मीर पर ग़ालिब आ जाता है, जैसा कि हमने सूरतुल मायदा, आयत 30 में हाबील और क़ाबील के सिलसिले में पढा था: {فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ} "पस क़ाबील के नफ्स ने उसे आमादा कर ही लिया अपने भाई के क़त्ल करने पर।"

इसी तरह उन लोगों ने भी अपने ज़मीर की आवाज़ को दबा कर आपस में मशवरा किया कि एक दफ़ा यह कड़वा घूंट हलक़ से उतार लो, फिर इसके बाद तौबा करके और कफ्फ़ारा वगैरह अदा करके किसी ना किसी तरह इस जुर्म की तलाफ़ी कर देंगे और बाक़ी ज़िन्दगी नेक बन कर रहेँगे।

आयत 10

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ

"कहा उनमें से एक कहने वाले ने कि युसुफ़ को क़त्ल मत करो"

यह शरीफुन्नफ्स इंसान उनके सबसे बड़े भाई थे जिन्होंने यह मशवरा दिया। इनका नाम यहूदा था, और इन्ही के नाम पर लफ्ज़ "यहूदी" बना है। इन्होंने कहा कि असल मसला तो इससे पीछा छुड़ाने का है, लिहाज़ा ज़रूरी नहीं कि क़त्ल जैसा गुनाह करके ही यह मक़सद हासिल किया जाए, इसके लिये कोई दूसरा तरीक़ा भी इख्तियार किया जा सकता है।

وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

"और डाल आओ इसे किसी बावली के ताक़चे में, उठा ले जाएगा इसको कोई काफ़िला"

पुराने ज़माने के कुओं की एक ख़ास क़िस्म को बावली कहा जाता था, इसका मुँह खुला होता था लेकिन गहराई में यह तदरीजन तंग होता जाता था। पानी की सतह के क़रीब इसकी दीवार में ताक़चे से बनाए जाते थे। इस तरह की बावलियाँ पुराने ज़माने में काफ़िलों के रास्तों पर बनाई जाती थी। चुनाँचे इस मशवरे पर अमल की सूरत में क़वी इम्कान था कि किसी काफ़िले का उधर से गुज़र होगा और काफ़िले वाले युसुफ़ को बावली से निकाल कर अपने साथ ले जायेंगे। बड़े भाई के इस मशवरे का मक़सद बज़ाहिर यह था कि इस तरह कम अज़ कम युसुफ़ की जान बच जाएगी और हम भी उसके खून से हाथ रंगने के जुर्म के मुरतकिब (दोषी) नहीं होंगे।

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ⑩

"अगर तुम कुछ करने ही वाले हो।"

जब नौ भाई इस बात पर पूरी तरह तुल गए कि युसुफ़ से बहरहाल छुटकारा हासिल करना है तो दसवाँ भाई उनको इस हरकत से बिल्कुल मना तो नहीं कर सका, लेकिन उसने कोशिश की कि कम अज़ कम वह लोग युसुफ़ को क़त्ल करने से बाज़ रहें।

आयत 11

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰي يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝11

"उन्होंने कहा: अब्बाजान! क्या वजह है कि आप हम पर भरोसा नहीं करते युसुफ़ के मामले में, हालाँकि हम तो उसके बड़े खैर-ख्वाह हैं।"

आयत 12

اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝12

"कल ज़रा इसे हमारे साथ भेजिये, वह कुछ चर-चुग लेगा और खेले कूदेगा, और हम यक़ीनन इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।"

उन्होंने कहा कि कल हम शिकार पर जा रहे हैं, आप युसुफ़ को भी हमारे साथ भेज दीजिये। वहाँ यह दरख्तों से फल वगैरह खाएगा और खेल-कूद से भी दिल बहलाएगा। आप इसकी तरफ़ से बिल्कुल फ़िक्रमंद ना हों, हम इसकी हिफ़ाज़त करेंगे।

आयत 13

قَالَ اِنِّیۡ لَیَحۡزُنُنِیۡۤ اَنۡ تَذۡہَبُوۡا بِہٖ وَ اَخَافُ اَنۡ یَّاۡکُلَہُ الذِّئۡبُ وَ اَنۡتُمۡ عَنۡہُ غٰفِلُوۡنَ ﴿۱۳﴾

"याक़ूब अलै. ने फ़रमाया: मुझे यह बात अंदेशे में डालती है कि तुम इसे ले जाओ, और मैं डरता हूँ कि कहीं इसे भेड़िया ना खा जाए जबकि तुम इससे ग़ाफिल हो जाओ।"

मुझे इस बात का डर है कि वह तुम्हारे साथ चला जाए, फ़िर तुम लोग अपनी मसरूफ़ियात में मुन्हमिक (मग्न) हो जाओ, इस तरह वह जंगल में अकेला रह जाए और कोई भेड़िया उसे फाड़ खाए।

आयत 14

قَالُوۡا لَئِنۡ اَکَلَہُ الذِّئۡبُ وَ نَحۡنُ عُصۡبَۃٌ اِنَّاۤ اِذًا لَّخٰسِرُوۡنَ ﴿۱۴﴾

"वह कहने लगे कि अगर (हमारे होते हुए) इसे भेड़िया खा गया जबकि हम एक ताक़तवर जमात हैं, तब तो हम बहुत ही निकम्मे साबित होंगे।"

यह कैसे मुमकिन है कि हमारे जैसे दस कड़ियल जवानों के होते हुए उसे भेड़िया खा जाए, हम इतने भी गए गुज़रे नहीं हैं।

आयत 15

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ

"फिर जब वह उसको ले गए और सब इस पर मुत्तफ़िक़ (agree) हो गए कि उसे डाल दें बावली के ताक़चे में।"

यहाँ पर اَجْمَعُوْٓا के बाद عَلٰی का सिला महज़ूफ़ है, यानि इस मनसूबे पर वह सबके सब जमा हो गए, उन्होंने इस राय पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया।

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ⑮

"और हमने (उस वक़्त) वही की युसुफ़ को कि तुम (एक दिन) उनको उनकी यह हरकत ज़रूर जतलाओगे और उन्हें इसका अंदाज़ा भी नहीं होगा।"

यह बात इल्हाम की सूरत में हज़रत युसुफ़ अलै. के दिल में डाली गई होगी, क्योंकि अभी आपकी उम्र नबुवत की तो नहीं थी कि बाक़ायदा वही होती। बहरहाल आप पर यह इल्हाम किया गया कि एक दिन तुम अपने इन भाइयों को यह बात उस वक़्त जतलाओगे जब इन्हें इसका ख्याल भी नहीं होगा। इस छोटे से फिक़रे में जो बलागत है इसका जवाब नहीं। चंद अल्फ़ाज़ के अंदर हज़रत युसुफ़ अलै. की तस्सली के लिये गोया पूरी दास्तान बयान कर दी गई है कि तुम्हारी जान को ख़तरा नहीं है, तुम ना सिर्फ़ इस मुश्किल सूरतेहाल से निकलने में कामयाब हो जाओगे बल्कि एक

दिन ऐसा भी आएगा जब तुम इस क़ाबिल होगे कि अपने इन भाइयों को उनका यह सुलूक जतला सको।

आयत 16

وَجَآءُوْٓا اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ۟ؕ (١٦)

"और वह आए अपने वालिद के पास शाम को रोते हुए।"

आयत 17

قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا

"उन्होंने कहा: अब्बाजान! हम जाकर दौड़ का मुक़ाबला करने लगे और हमने छोड़ दिया था युसुफ़ को अपने सामान के पास"

हमने अपना इज़ाफ़ी सामान इकठ्ठा करके एक जगह रखा और उस सामान के पास हमने युसुफ़ को छोड़ दिया था। खुद हम एक-दूसरे से दौड़ में मुक़ाबला करते हुए दूर निकल गए।

فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ (١٧)

"तो उसे खा लिया एक भेड़िये ने। और आप हमारी बात मानेंगे तो नहीं, ख्वाह हम कितने ही सच्चे हों।"

आयत 18

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ

"और वह उसकी कमीज़ पर झूठ-मुठ का खून भी लगा लाए।"

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ

"हज़रत याक़ूब ने फ़रमाया: (वाक़िया यूँ नहीं) बल्कि तुम्हारी नफ्सों ने तुम्हारे लिये एक बड़े काम को आसान बना दिया है।"

उनकी बात सुनकर हज़रत याक़ूब अलै. ने फ़रमाया कि नहीं, बात कुछ और है। यह बात जो तुम बता रहे हो यह तो तुम्हारे जी की गढ़ी हुई एक बात है। तुम्हारे नफ्सों ने तुम्हारे लिये एक बड़ी बात को हल्का करके पेश किया है और तुम लोगों ने कोई बहुत बड़ा गलत अक़दाम किया है।

فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ۝١٨

"अब सब्र ही बेहतर है, और अल्लाह ही की मदद तलब की जा सकती है उस पर जो तुम बयान कर रहे हो।"

हज़रत याक़ूब अलै. अकेले थे, बूढ़े थे और दूसरी तरफ़ दस जवान बेटे, इस सूरते हाल में और क्या कहते?

आयत 19

وَجَآءَتۡ سَيَّارَةٌ فَاَرۡسَلُوۡا وَارِدَهُمۡ

“और (कुछ अरसे बाद) एक क़ाफ़िला आया तो उन्होंने भेजा अपने आगे चलने वाले को”

जब क़ाफ़िले चलते थे तो एक आदमी क़ाफ़िले के आगे-आगे चलता था। वह क़ाफ़िले के पड़ाव के लिये जगह का इन्तखाब (चुनाव) करता और पानी वगैरह के इंतेज़ाम का जायज़ा लेता। क़ाफ़िले वालों ने इस ड्यूटी पर मामूर शख्स को भेजा कि वह जाकर पानी का ख़ोज लगाए। उस शख्स ने बावली देखी तो पानी निकालने की तदबीर करने लगा।

فَاَدۡلٰى دَلۡوَهٗ ؕ

“तो उसने लटकाया अपना डोल।”

हज़रत युसुफ़ ने उसके डोल को पकड़ लिया। उसने जब डोल खींचा और हज़रत युसुफ़ को देखा तो:

قَالَ يٰبُشۡرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوۡهُ بِضَاعَةً ؕ

“वह पुकार उठा कि खुश ख़बरी हो! यह तो एक लड़का है। और उन्होंने उसे छुपा लिया, एक पूंजी समझ कर।”

कि बहुत ख़ूबसूरत लड़का है, बेचेंगे तो अच्छे दाम मिलेंगे।

وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌۢ بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ

“और अल्लाह ख़ूब जानता था जो वो कर रहे थे।”

١٩

आयत 20

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزَّاهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

"और (मिस्र पहुँच कर) उन्होंने बेच दिया उसको बड़ी थोड़ी सी क़ीमत पर चंद दिरहम के एवज़, और वो थे उसके मामले में बहुत ही क़नाअत पसंद।"

अगरचे उन्होंने हज़रत युसुफ़ अलै. को माले तिजारत समझ कर छुपाया था, मगर मिस्र पहुँच कर बिल्कुल ही मामूली क़ीमत पर फ़रोख्त कर दिया। उस ज़माने में दिरहम एक दीनार का चौथा हिस्सा होता था। गोया उन्होंने चंद चवन्नियों के एवज़ आपको बेच दिया। इसलिये कि आपके बारे में उस वक़्त तक उन्हें कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं रही थी। इसकी दो वजुहात थीं, एक तो आप उनके लिये मुफ्त का माल थे जिस पर उन लोगों का कोई सरमाया वग़ैरह नहीं लगा था, लिहाज़ा जो मिल गया उन्होंने उसे ग़नीमत जाना। दूसरे उन लोगों को आपकी तरफ़ से हर वक़्त यह धड़का लगा रहता था कि लड़के के वारिस आकर कहीं इसे पहचान ना लें और उन पर चोरी का इल्ज़ाम ना लग जाए। लिहाज़ा वह जल्द अज़ जल्द आपके मामले से जान छुड़ाना चाहते थे।

आयात 21 से 29 तक

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ
مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۭ وَكَذٰلِكَ

مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ
الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ
حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۲﴾
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ
الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْۤ
اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَلَقَدْ
هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ
لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا
الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۲۴﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ
مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ
مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
﴿۲۵﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ
اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ
مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۶﴾ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ
فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۷﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ

قُدَّ مِنۡ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنۡ كَيۡدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيۡدَكُنَّ عَظِيۡمٌ ﴿۲۸﴾ يُوۡسُفُ اَعۡرِضۡ عَنۡ هٰذَا ٚ وَاسۡتَغۡفِرِىۡ لِذَنۡۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنۡتِ مِنَ الۡخٰطِـئِيۡنَ ﴿۲۹﴾

आयत 21

وَقَالَ الَّذِى اشۡتَرٰٮهُ مِنۡ مِّصۡرَ لِامۡرَاَتِهٖۤ اَكۡرِمِىۡ مَثۡوٰٮهُ عَسٰٓى اَنۡ يَّنۡفَعَنَاۤ اَوۡ نَـتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ

“और मिस्र के जिस शख्स ने युसुफ़ को ख़रीदा, (उसने) अपनी बीवी से कहा: इसको अच्छे तरीक़े से रखना, हो सकता है यह हमारे लिये नफ़ा बख्श हो या फिर हम इसे अपना बेटा ही बना लें।”

वह शख्स मिस्र की हुकूमत में बहुत आला मंसब (अज़ीज़े मिस्र) पर फ़ाइज़ था। हज़रत युसुफ़ अलै. को बेटा बनाने की ख्वाहिश से मालूम होता है कि शायद उसके यहाँ औलाद नहीं थी।

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوۡسُفَ فِى الۡاَرۡضِ ۙ

“और इस तरह हमने युसुफ़ को उस मुल्क में तमक्कुन (take care) अता किया”

इस तरीक़े से अल्लाह तआला ने युसुफ़ अलै. को उस दौर की मुतमद्दन तरीन मम्लकत (Modern Civil Society) में पहुँचा दिया और वहाँ आपकी रिहाइश (रहने) का बंदोबस्त भी किया तो किसी झोंपड़ी में नहीं बल्कि मुल्क के एक बहुत बड़े, साहिबे हैसियत के घर में, और वह भी महज़ एक

गुलाम के तौर पर नहीं बल्कि ख़ुसूसी इज़्ज़त व इकराम के अंदाज़ में।

وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ

"और ताकि हम उसको सिखाएँ बातों की तह तक पहुँचने का इल्म।"

यानि अज़ीज़े मिस्र के घर में आपको जगह बना कर देने का बुनियादी मक़सद यह था कि वहाँ आप को "मामला फ़हमी" की तरबियत फ़राहम की जाए। अजीज़े मिस्र का घर एक तरह का सेक्रेटरियेट (सचिवालय) होगा जहाँ आए दिन इन्तहाई आला सतह के इजलास (मीटिंग्स) होते होंगे, और क़ौमी व बैनुल अक़वामी नौइयत के इन्तहाई अहम अमूर (इंटरनेशनल मामलों) पर बहस व तम्हीस (छानबीन) के बाद फ़ैसले किये जाते होंगे और हज़रत युसुफ़ को इन तमाम सरगर्मियों का बहुत क़रीब से मुशाहिदा करने के मौक़े मयस्सर आते होंगे। इस तरह बहुत आला सतह की तालीम व तरबियत का एक इंतेज़ाम था जो हज़रत युसुफ़ के लिये यहाँ पर कर दिया गया।

وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾

"और अल्लाह तो अपने फ़ैसले पर ग़ालिब है लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं हैं।"

अल्लाह तआला अपने इरादे की तन्फीज़ पर ग़ालिब है, वह अपना काम करके रहता है।

आयत 22

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيۡنٰهُ حُكۡمًا وَّعِلۡمًا ؕ

"और जब आप अपनी जवानी को पहुँच गए तो हमने आप को हुक्म और इल्म अता किया।"

وَكَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ۝۲۲

"और इसी तरह हम मोहसिनीन को बदला देते हैं।"

हुक्म और इल्म से मुराद नबुवत है। हुक्म के मायने क़ुव्वते फ़ैसला के भी हैं और इक़तदार (ताक़त) के भी। इल्म से मुराद वही है।

आयत 23

وَرَاوَدَتۡهُ الَّتِىۡ هُوَ فِىۡ بَيۡتِهَا عَنۡ نَّفۡسِهٖ

"और आपको फ़ुसलाने की कोशिश की उस औरत ने जिसके घर में आप थे"

यानि अज़ीज़े मिस्र की बीवी आप पर फ़रिफ्ता (मुग्ध) हो गई। क़ुरान में इसका नाम मज़कूर नहीं, अलबत्ता तौरात में इसका नाम ज़ुलेखा बताया गया है।

وَغَلَّقَتِ الۡاَبۡوَابَ وَقَالَتۡ هَيۡتَ لَكَ ؕ

"और (एक मौक़े पर) उसने दरवाज़े बंद कर लिए और बोली जल्दी से आ जाओ!"

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ۭ

"आप ने फ़रमाया: मैं अल्लाह की पनाह तलब करता हूँ, वह मेरा रब है, उसने मुझे अच्छा ठिकाना दिया है।"

यहाँ पर "रब" के दोनों मायने लिये जा सकते हैं अल्लाह भी और आक़ा भी। चुनाँचे इस फिक़रे का एक मफ़हूम तो यह है कि वह अल्लाह मेरा रब है और उसने मेरे लिये बहुत अच्छे ठिकाने का इंतेज़ाम किया है, मैं उसकी नाफ़रमानी का कैसे सोच सकता हूँ! दूसरे मायने में इसका मफ़हूम यह है कि आपका खाविंद मेरा आक़ा है, वह मेरा मोहसिन और मुरब्बी भी है, उसने मुझे अपने घर में बहुत इज्ज़त व इकराम से रखा है, और मैं उसकी ख्यानत करके उसके ऐतमाद को ठेस पहुँचाऊँ, यह मुझसे नहीं हो सकता! यह दूसरा मफ़हूम इसलिये भी ज़्यादा मुनासिब है कि "रब" का लफ्ज़ इस सूरत में आक़ा और बादशाह के लिये मुतअद्दिद (कई) बार इस्तेमाल हुआ है।

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ 23

"बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह नहीं पाया करते।"

आयत 24

وَلَقَدۡ هَمَّتۡ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوۡلَاۤ اَنۡ رَّاٰ بُرۡهَانَ رَبِّهٖ ؕ

"और उस औरत ने इरादा किया आपका, और आप भी इरादा कर लेते उसका अगर ना देख लेते अपने रब की एक दलील।"

हज़रत युसुफ़ अलै. जवान थे और मुमकिन था कि तबअ बशरी (इंसानी फ़ितरत) की बुनियाद पर आपके दिल में भी कोई ऐसा ख्याल जन्म लेता, मगर अल्लाह ने इस नाज़ुक मौक़े पर आपकी ख़ुसूसी मदद फ़रमाई और अपनी ख़ुसूसी निशानी दिखा कर आपको किसी मनफ़ी (negative) ख्याल से महफ़ूज़ रखा। यह निशानी क्या थी, इसका क़ुरान में कोई ज़िक्र नहीं, अलबत्ता तौरात में इसकी वज़ाहत यूँ बयान की गई है कि ऐन इस मौक़े पर हज़रत याक़ूब अलै. की शक्ल दीवार पर ज़ाहिर हुई और आपने ऊँगली का इशारा करके हज़रत युसुफ़ को बाज़ रहने के लिये कहा।

كَذٰلِكَ لِنَصۡرِفَ عَنۡهُ السُّوۡٓءَ وَالۡفَحۡشَآءَ ؕ

"यह इसलिये कि हम फ़ेर दें उससे बुराई और बेहयाई को।"

यानि हमने अपनी निशानी दिखा कर हज़रत युसुफ़ से बुराई और बेहयाई का रुख फ़ेर दिया और यूँ आपकी अस्मत व इफ्फ़त (Harmony and Chest) की हिफ़ाज़त का ख़ुसूसी अहतमाम किया।

اِنَّهٗ مِنۡ عِبَادِنَا الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿۲۴﴾

"यक़ीनन वह हमारे चुने हुए बन्दों में से थे।"

वाज़ेह रहे कि यहाँ लफ्ज़ मुख्लस (लाम की ज़बर के साथ) आया है। मुख्लिस और मुख्लस के फ़र्क़ को समझ लीजिए। मुख्लिस इस्मुल फ़ाइल है यानि ख़ुलूस व इख्लास से काम करने वाला और मुख्लस वह शख्स है जिसको ख़ालिस कर लिया गया हो। अल्लाह के मुख्लस वह हैं जिनको अल्लाह ने अपने लिये ख़ालिस कर लिया हो, यानि अल्लाह के ख़ास बरगज़ीदा (चुने हुए) और चहेते बन्दे।

आयत 25

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ

"और वह दोनों आगे-पीछे दरवाज़े की तरफ़ दौड़े"

यानि हज़रत युसुफ़ ने जब देखा कि इस औरत की नीयत ख़राब है और इस पर शैतानियत का भूत सवार है तो आप उससे बचने के लिये दरवाज़े की तरफ़ लपके और आपके पीछे वह भी भागी ताकि आपको क़ाबू कर सके।

وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ

"और फाड़ दी उस (औरत) ने आपकी क़मीज़ पीछे से"

आपको दौड़ते हुए देख कर उस औरत ने आपकी तरफ़ तेज़ी से लपक कर पीछे से आपको पकड़ने की कोशिश की तो आपकी क़मीज़ उसके हाथ में आकर फट गई।

وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ

"और पाया उन दोनों ने उसके खाविंद को दरवाज़े के पास।"

उस औरत ने लाज़िमन ऐसे वक़्त का इंतखाब किया होगा जब उसका खाविंद घर से बाहर था और उसके जल्द घर

आने का इम्कान नहीं था, मगर ज्योंहि वह दोनों आगे-पीछे दरवाज़े से बाहर निकले तो गैर-मुतवक़्क़ो तौर पर उसका खाविंद ऐन दरवाज़े पर खड़ा था।

قَالَتۡ مَا جَزَآءُ مَنۡ اَرَادَ بِاَهۡلِكَ سُوۡٓءًا اِلَّاۤ اَنۡ يُّسۡجَنَ اَوۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۲۵﴾

"वह (फ़ौरन) बोली क्या सज़ा होनी चाहिये ऐसे शख्स की जिसने इरादा किया तुम्हारी बीवी के साथ बुराई का, सिवाय इसके कि इसे जेल भेज दिया जाए या कोई और दर्दनाक सज़ा दी जाए!"

अपने खाविंद को देखते ही उस औरत ने फ़ौरन पैंतरा बदला और उसकी गैरत को ललकारते हुए बोली कि इस लड़के ने मुझ पर दस्तदराज़ी (ज़बरदस्ती) की है और मैंने बड़ी मुश्किल से खुद को बचाया है। अब इससे आप ही समझें और इसे कोई इबरतनाक सज़ा दें।

आयत 26

قَالَ هِىَ رَاوَدَتۡنِىۡ عَنۡ نَّفۡسِىۡ

"आपने फ़रमाया कि इसी ने मुझे फुसलाना चाहा था"

सूरतेहाल बहुत नाज़ुक और ख़तरनाक रुख इख्तियार कर चुकी थी। हज़रत युसुफ़ को भी अपने दिफ़ा (बचाव) में कुछ ना कुछ तो कहना था। लिहाज़ा आपने साफ़-साफ़ बता दिया कि खुद इस औरत ने मुझे गुनाह पर आमादा करने की कोशिश की है।

وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۡ اَهۡلِهَا ۚ

"और गवाही दी औरत के ख़ानदान वालो में से एक गवाह ने।"

उस औरत के अपने रिश्तेदारों से भी कोई शख्स मौक़े पर आ पहुँचा। उसने मौक़ा महल देख कर वक़ूआ (event) के बारे में बड़ी मुदल्लल (logical) और ख़ूबसूरत क़राइनी शहादत (circumstantial evidence) दी कि:

اِنۡ كَانَ قَمِيۡصُهٗ قُدَّ مِنۡ قُبُلٍ فَصَدَقَتۡ وَهُوَ مِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ۝٢٦

"अगर तो इसकी क़मीज़ फटी है सामने से, तो यह सच्ची है और वह झूठा है।"

अगर औरत से दस्तदराज़ी की कोशिश हो रही थी और वह अपना तहफ्फ़ुज़ कर रही थी तो ज़ाहिर है कि हमलावर की क़मीज़ सामने से फटनी चाहिए।

आयत 27

وَاِنۡ كَانَ قَمِيۡصُهٗ قُدَّ مِنۡ دُبُرٍ فَكَذَبَتۡ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ۝٢٧

"और अगर इसकी क़मीज़ फटी है पीछे से, तो फिर यह झूठी है और वह सच्चा है।"

इस आदिलाना और हकीमाना गवाही से मालूम होता है कि जहाँ उस मआशरे में बहुत सी खराबियाँ थीं (जिनमें से कुछ का ज़िक्र आगे आएगा) वहाँ इस गवाही देने वाले शख्स जैसे

हक़ गो और इंसाफ़ पसंद लोग भी मौजूद थे जिसने क़राबतदार होते हुए भी हक़ और इंसाफ़ की बात की।

आयत 28

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۭ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ۝ ٢٨

"फिर जब उस (अज़ीज़े मिस्र) ने देखा कि आपकी क़मीज़ फटी हुई है पीछे से, तो उसने कहा कि यह तुम औरतों की चालों में से (एक चाल) है, यक़ीनन तुम औरतों के फ़रेब बहुत बड़े होते हैं।"

फ़िर अज़ीज़े मिस्र ने हज़रत युसुफ़ से कहा:

आयत 29

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا سكتة

"युसुफ़! इस मामले से दरगुज़र करो।"

इसके बाद वह अपनी बीवी से मुखातिब हुआ और बोला:

وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ښ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ۝ ٢٩ ع

"और तुम अपने गुनाह की माफ़ी माँगो, यक़ीनन क़सूरवार तुम ही हो।"

आयात 30 से 35 तक

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ
فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۳۰ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ
اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ
مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ
اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۫ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا
بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝۳۱ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ
الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ
فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَىِٕنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ
وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝۳۲ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ
اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ
كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝۳۳
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝۳۴ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا
الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ۝۳۵

आयत 30

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتٰهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ

"और शहर में औरतों ने (इस वाक़िये का ज़िक्र करते हुए) कहा कि अज़ीज़ की बीवी तो अपने गुलाम को फुसला रही है।"

قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۭ

"वह उसकी मोहब्बत में गिरफ़्तार हो चुकी है।"

اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۳۰

"यक़ीनन हम देखते हैं कि वह बहुत भटक गई है।"

उसका अपने गुलाम के साथ इस तरह का मामला! यह तो बहुत ही घटिया बात है!

आयत 31

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ

"फ़िर जब उसने सुनी उनकी मक्काराना बातें"

अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने जब सुना कि शहर में उसके ख़िलाफ़ इस तरह के चर्चे हो रहे हैं और मिस्र की औरतें ऐसी तअन आमेज़ बातें कर रही हैं तो उसने भी जवाबी कार्रवाई का मंसूबा बना लिया। यह उस मआशरे के इन्तहाई आला

सतह के लोगों की बात थी और इसका चर्चा भी उसी सतह पर हो रहा था। उसे भी अपने इर्द-गिर्द सब लोगों के किरदार का पता था, कहाँ क्या खराबी है और किसके यहाँ कितनी गंदगी है वह सब जानती थी। चुनाँचे उसने उस आला सोसाइटी के इज्तमाई किरदार का भांडा बीच चौराहे में फोड़ने का फ़ैसला कर लिया।

اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً

"उसने दावत दी उन सबको और अहतमाम किया एक तकियेदार मजलिस का"

उसने खाने की एक पुरतकल्लुफ़ तक़रीब का अहतमाम किया जिसमें मेहमान औरतों के लिये गाव तकिये लगे हुए थे।

وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا

"और उनमें से हर औरत को उसने एक छुरी दे दी"

खाने की चीज़ों में फ़ल वगैरह भी होंगे, चुनाँचे हर मेहमान औरत के सामने एक-एक छुरी भी रख दी गई।

وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ

"और (युसुफ़ से) कहा कि अब तुम इनके सामने आओ!"

فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ

"फिर जब उन्होंने युसुफ़ को देखा तो उसे बहुत अज़ीम जाना (शशदर [हैरान] रह गईं)"

وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۫

"और उन सबने अपने हाथ काट लिए"

औरतों ने जब पाकीज़गी और तक़द्दुस का पैकर एक जवाने रअना अपने सामने खड़ा देखा तो मबहूत होकर रह गईं। सबकी सब आपके हुस्न व जमाल पर ऐसी फ़रिफ्ता हुईं कि अपने-अपने हाथ ज़ख़्मी कर लिये। मुमकिन है किसी एक औरत का हाथ तो वाक़ई आलमे हैरत व महवियत में कट गया हो और उसकी तरफ़ हज़रत युसुफ़ बहैसियत खादिम के मुतवज्जा हुए हों कि खून साफ़ करके पट्टी वगैरह कर दें और यह देख कर बाक़ी सबने भी अपनी-अपनी उंगलियाँ दानिस्ता काट ली हों कि इस तरह यही इल्तफ़ात (तवज्जो) उन्हें भी मिलेगा। क़त्तअ बाबे तफ़ईल है, जिसमें किसी काम को पूरे अहतमाम और इरादे से करने के मायने पाए जाते हैं।

وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۭ اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝۳۱

"और वह पुकार उठीं कि हाशा लिल्लाह यह कोई आदमी तो नहीं! यह तो कोई बहुत बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है।"

आयत 32

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ۭ

"तो उस औरत ने कहा कि यह है वह जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं।"

وَلَقَدۡ رَاوَدۡتُّهٗ عَنۡ نَّفۡسِهٖ فَاسۡتَعۡصَمَ ؕ

“और यक़ीनन मैंने इसे फुसलाना चाहा था लेकिन वह बचा रहा।”

وَلَئِنۡ لَّمۡ يَفۡعَلۡ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسۡجَنَنَّ وَلَيَكُوۡنًا مِّنَ الصّٰغِرِيۡنَ ﴿۳۲﴾

“और अगर इसने वह ना किया जो मैं इसे हुक्म दे रही हूँ तो वह लाज़िमन क़ैद में पड़ेगा और ज़रूर ज़लील होकर रहेगा।”

उस औरत का धडल्ले से ख़ुसूसी दावत का अहतमाम करना और उसमें सबको फ़ख्र से बताना कि देख लो यह है वह शख्स जिसके बारे में तुम मुझे मलामत करती थीं, और फिर पूरी बेहयाई से ऐलान करना कि एक दफ़ा तो यह मुझसे बच गया मगर कब तक? आख़िरकार इसे मेरी बात माननी होगी! इससे तस्सवुर किया जा सकता है कि उनकी इस इन्तहाई ऊँची सतह की सोसायटी की मजमूई तौर पर अखलाक़ी हालत क्या थी!

आयत 33

قَالَ رَبِّ السِّجۡنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدۡعُوۡنَنِيۡۤ اِلَيۡهِ ۚ

“युसुफ़ ने दुआ की: ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे क़ैद ज़्यादा पसंद है उस चीज़ से जिसकी तरफ़ यह मुझे बुला रही हैं।”

وَاِلَّا تَصۡرِفۡ عَنِّیۡ کَیۡدَہُنَّ اَصۡبُ اِلَیۡہِنَّ وَاَکُنۡ مِّنَ الۡجٰہِلِیۡنَ ﴿۳۳﴾

"और अगर तूने मुझसे दूर ना कर दिया इनकी चालों को तो (हो सकता है) मैं भी इनकी तरफ़ माइल हो जाऊँ और जाहिलों में से हो जाऊँ।"

आयत 34

فَاسۡتَجَابَ لَہٗ رَبُّہٗ فَصَرَفَ عَنۡہُ کَیۡدَہُنَّ ؕ اِنَّہٗ ہُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ ﴿۳۴﴾

"तो आपके रब ने आपकी दुआ क़ुबूल करली और उन औरतों की चालों को आपसे फेर दिया। यक़ीनन वही है सुनने वाला, जानने वाला।"

आयत 35

ثُمَّ بَدَا لَہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَا رَاَوُا الۡاٰیٰتِ لَیَسۡجُنُنَّہٗ حَتّٰی حِیۡنٍ ﴿۳۵﴾

"फिर उन लोगों को यह बात सूझी सारी निशानियाँ देख लेने के बाद कि इसको कुछ अरसे के लिये जेल में डाल दिया जाए।"

उस तक़रीब (function) में जो कुछ हुआ उस मामले को पोशीदा (छुपा) रखना मुमकिन नहीं था, चुनाँचे अरबाबे इख्तियार ने जब यह सारे हालात देखे तो उन्हें आफ़ियत और मसलिहत इसी में नज़र आई कि हज़रत युसुफ़ को

वक़्ती तौर पर मंज़र से हटा दिया जाए और इसके लिये मुनासिब यही है कि कुछ अरसे के लिये इन्हें जेल में डाल दिया जाए।

आयात 36 से 42 तक

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّیۡۤ اَرٰىنِیۡۤ
اَعۡصِرُ خَمۡرًا ۚ وَقَالَ الۡاٰخَرُ اِنِّیۡۤ اَرٰىنِیۡۤ اَحۡمِلُ فَوۡقَ
رَاۡسِیۡ خُبۡزًا تَاۡكُلُ الطَّیۡرُ مِنۡهُ ؕ نَبِّئۡنَا بِتَاۡوِیۡلِهٖ ۚ اِنَّا
نَرٰىكَ مِنَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ لَا یَاۡتِیۡكُمَا طَعَامٌ
تُرۡزَقٰنِهٖۤ اِلَّا نَبَّاۡتُكُمَا بِتَاۡوِیۡلِهٖ قَبۡلَ اَنۡ یَّاۡتِیَكُمَا ؕ
ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِیۡ رَبِّیۡ ؕ اِنِّیۡ تَرَكۡتُ مِلَّةَ قَوۡمٍ لَّا
یُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ كٰفِرُوۡنَ ﴿۳۷﴾
وَاتَّبَعۡتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیۡۤ اِبۡرٰهِیۡمَ وَاِسۡحٰقَ وَیَعۡقُوۡبَ ؕ مَا
كَانَ لَنَاۤ اَنۡ نُّشۡرِكَ بِاللّٰهِ مِنۡ شَیۡءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنۡ فَضۡلِ
اللّٰهِ عَلَیۡنَا وَعَلَی النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا
یَشۡكُرُوۡنَ ﴿۳۸﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجۡنِ ءَاَرۡبَابٌ
مُّتَفَرِّقُوۡنَ خَیۡرٌ اَمِ اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿ؕ۳۹﴾ مَا
تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسۡمَآءً سَمَّیۡتُمُوۡهَاۤ اَنۡتُمۡ

وَ اٰبَآؤُكُمۡ مَّآ اَنۡزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنۡ سُلۡطٰنٍ ؕ اِنِ الۡحُكۡمُ
اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيۡنُ الۡقَيِّمُ
وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۰﴾ يٰصَاحِبَىِ
السِّجۡنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا فَيَسۡقِىۡ رَبَّهٗ خَمۡرًا ۚ وَاَمَّا الۡاٰخَرُ
فَيُصۡلَبُ فَتَاۡكُلُ الطَّيۡرُ مِنۡ رَّاۡسِهٖ ؕ قُضِىَ الۡاَمۡرُ
الَّذِىۡ فِيۡهِ تَسۡتَفۡتِيٰنِ ﴿۴۱﴾ وَقَالَ لِلَّذِىۡ ظَنَّ اَنَّهٗ
نَاجٍ مِّنۡهُمَا اذۡكُرۡنِىۡ عِنۡدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنۡسٰهُ الشَّيۡطٰنُ
ذِكۡرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِى السِّجۡنِ بِضۡعَ سِنِيۡنَ ﴿۴۲﴾

आयत 36

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجۡنَ فَتَيٰنِ ؕ

"और दाख़िल हुए आपके साथ जेल में दो नौजवान।"

जब हज़रत युसुफ़ अलै. को जेल भेजा गया तो इत्तेफ़ाक़न उसी मौक़े पर दो और क़ैदी भी आपके साथ जेल में दाख़िल किये गए।

قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّىۡۤ اَرٰٮنِىۡۤ اَعۡصِرُ خَمۡرًا ۚ

"उनमें से एक ने कहा कि मैंने अपने आप को ख़्वाब में देखा है कि मैं शराब कशीद कर रहा हूँ।"

وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۭ

"और दूसरे ने कहा कि मैंने अपने आप को ख़्वाब में देखा है कि मैं सिर पर रोटियाँ उठाये हुए हूँ और परिंदे उसमें से खा रहे हैं।"

نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٣٦

"हमें इन ख़्वाबों की ताबीर बता दीजिये, हम आपको बहुत नेकोकार देखते हैं।"

हम देख रहे हैं कि आप दूसरे क़ैदियों से बिल्कुल मुख्तलिफ़ हैं। आप आला अख्लाक़ और क़ाबिले रश्क किरदार के मालिक हैं। हमें उम्मीद है कि आप हमारे ख़्वाबों के सिलसिले में ज़रूर हमारी रहनुमाई फ़रमाएंगे।

आयत 37

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۭ

"युसुफ़ ने फ़रमाया कि तुम लोगों को जो खाना दिया जाता है उसके आने से पहले-पहले मैं तुम दोनों को इसकी ताबीर बता दूँगा।"

जेल में क़ैदियों के खाने के अवक़ात मुक़र्रर होंगे। आपने फ़रमाया कि आप लोग अब ताबीर के बारे में फ़िक्र मत करो,

वह तो मैं खाना आने से पहले-पहले बता दूँगा, लेकिन मैं तुम लोगों से इसके अलावा भी बात करना चाहता हूँ, लिहाज़ा इस वक़्त तुम लोग मेरी बात सुनो। हज़रत युसुफ़ अलै. का यह तरीक़ा एक दाई-ए-हक़ के लिये रहनुमाई का ज़रिया है। एक दाई की हर वक़्त यह कोशिश होनी चाहिए कि तब्लीग के लिये, हक़ बात लोगों तक पहुँचाने के लिये जब और जहाँ मौक़ा मैयस्सर आए उससे फ़ायदा उठाये। चुनाँचे हज़रत युसुफ़ अलै. ने देखा कि लोग मेरी तरफ़ ख़ुद मुतवज्जा हुए हैं तो आपने इस मौक़े को ग़नीमत जाना और उनकी हाजत को मौअख्खर करके पहले उन्हें पैगामे हक़ पहुँचाना ज़रूरी समझा।

ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِىْ رَبِّىْ ؕ

"यह उस इल्म में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है।"

आपने उन्हीं की बात को आगे बढ़ाते हुए अपनी बात शुरू की और ख़्वाबों की ताबीर के हवाले से अल्लाह तआला का तआर्रुफ़ कराया, कि यह इल्म मुझे मेरे रब ने सिखाया है, इसमें मेरा अपना कोई कमाल नहीं है।

اِنِّىْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

"(देखो!) मैंने तर्क कर दिया है उस क़ौम का रास्ता जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आख़िरत के यही लोग मुन्कर हैं।"

आयत 38

وَاتَّبَعۡتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیۡۤ اِبۡرٰهِیۡمَ وَاِسۡحٰقَ وَیَعۡقُوۡبَ ؕ

"और मैंने पैरवी की है अपने आबा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब (अलै.) के तरीक़े की।"

आपकी इस बात से मौरूसी और शऊरी अक़ाएद (heritage & conscious beliefs) का फ़र्क़ समझ में आता है। यानि एक तो वह अक़ाएद व नज़रियात हैं जो बच्चा अपने वालिदैन से अपनाता है, जैसे एक मुसलमान घराने में बच्चे को मौरूसी (विरासती) तौर पर इस्लाम के अक़ाएद मिलते हैं। अल्लाह और रसूल का नाम वह बचपन ही से जानता है, इब्तदाई कलिमे उसको पढ़ा दिए जाते हैं, नमाज़ भी सिखा दी जाती है। लेकिन अगर वह शऊर (conscious) की उम्र को पहुँचने के बाद अपने आज़ादाना इन्तखाब के नतीजे में अपने इल्म और गौर व फ़िक्र से कोई अक़ीदा (belief) इख्तियार करेगा तो वह उसका शऊरी अक़ीदा होगा। चुनाँचे हज़रत युसुफ़ अलै. ने अपने इस शऊरी अक़ीदे का ज़िक्र किया कि अगरचे वह जिन लोगों के दरमियान ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, वह अल्लाह, उसके किसी नबी और वही वगैरह के तसव्वुरात से नाबलद (unaware) हैं, सबके सब काफ़िर और मुशरिक हैं, मगर मुझे देखो मैंने इस माहौल का असर क़ुबूल नहीं किया, और अपने इर्द-गिर्द के लोगों के नज़रियात और अक़ाएद नहीं अपनाए, बल्कि पूरे शऊर के साथ अपने आबा व अजदाद के नज़रियात को सही मानते हुए उनकी पैरवी कर रहा हूँ, सिर्फ़ इसलिये नहीं कि वह मेरे आबा व अजदाद थे, बल्कि इसलिये कि यही

सही रास्ता मेरे नज़दीक माक़ूल और अक़्ले सलीम के क़रीबतर है।

وَيَعْقُوْبَ ۭ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ

"(देखो!) हमारे लिये यह रवा नहीं है कि हम अल्लाह के साथ किसी भी शय को शरीक करें।"

ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝۳۸

"यह अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है हम पर और सब लोगों पर लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।"

यानि शिर्क से बचने और तौहीद को अपनाने का अक़ीदा दरअसल अल्लाह का अपने बन्दों पर बहुत बड़ा फ़ज़्ल है, क्यूंकि अल्लाह तआला ने इंसान को अशरफ़ुल मख्लूक़ात बनाया है। इस हैसियत में इंसान के शायाने शान नहीं है कि वह उन चीज़ों की परस्तिश करता फिरे जिन्हें खुद उसकी ख़िदमत और इस्तफ़ादे (इस्तेमाल) के लिये पैदा किया गया है।

आयत 39

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

"ऐ मेरे जेल के दोनों साथियों! क्या बहुत से मुतफ़र्रिक़ रब बेहतर हैं या अकेला अल्लाह जो सब पर हावी व ग़ालिब है?"

आयत 40

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَاۗءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَاۗؤُكُمْ

"नहीं पूजते तुम उस (अल्लाह) के सिवा मगर चंद नामों को जो मौसूम कर रखे हैं तुम लोगों ने और तुम्हारे आबा व अजदाद ने"

مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ

"नहीं उतारी अल्लाह ने उनके लिये सनद। इख्तियारे मुतलक़ तो सिर्फ़ अल्लाह ही का है।"

क़ानून बनाने और उसके मुताबिक़ हुक्म चलाने का इख्तियार सिर्फ़ अल्लाह का है।

اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ۭ

"उसने हुक्म दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की बंदगी मत करो!"

ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٠

"यही है दीन सीधा (और हमेशा से क़ायम व दायम) लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।"

आयत 41

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ

"ऐ मेरे जेल के दोनों साथियों! तुम में से एक तो अपने आक़ा को शराब पिलाएगा।"

यहाँ पर रब का लफ्ज़ बादशाह के लिये इस्तेमाल हुआ है। यह उस शख्स के ख्वाब की ताबीर है जिसने खुद को शराब कशीद करते हुए देखा था। यह शख्स पहले भी बादशाह का साक़ी था मगर इस पर कोई इल्ज़ाम लगा और इसे जेल भेज दिया गया। हज़रत युसुफ़ अलै. ने ख़बर दे दी कि इसके ख्वाब के मुताबिक़ वह इस इल्ज़ाम से बरी होकर अपने पुराने ओहदे पर बहाल हो जाएगा।

وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ۭ

"और जो दूसरा है उसे सूली दे दी जाएगी और परिंदे उसके सिर में से (नोंच-नोंच कर) खायेंगे।"

قُضِیَ الۡاَمۡرُ الَّذِیۡ فِیۡہِ تَسۡتَفۡتِیٰنِ ﴿ؕ۴۱﴾

"फ़ैसला कर दिया गया है उस मामले का जिसके बारे में तुम दोनों मुझसे पूछ रहे थे।"

आयत 42

وَ قَالَ لِلَّذِیۡ ظَنَّ اَنَّہٗ نَاجٍ مِّنۡہُمَا اذۡکُرۡنِیۡ عِنۡدَ رَبِّکَ ۫

"और युसुफ़ ने कहा उस शख्स से जिसके बारे में आपने गुमान किया कि वह उन दोनों में से निजात पाएगा कि अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र भी करना।"

यानि तुम्हें कभी मौक़ा मिले तो बादशाह को बताना कि जेल में एक ऐसा क़ैदी भी है जिसका कोई क़सूर नहीं और उसे ख्वाह मख्वाह जेल में डाल दिया गया है।

فَاَنۡسٰہُ الشَّیۡطٰنُ ذِکۡرَ رَبِّہٖ فَلَبِثَ فِی السِّجۡنِ بِضۡعَ سِنِیۡنَ ﴿ؑ۴۲﴾

"तो उसे भुलाए रखा शैतान ने ज़िक्र करना अपने आक़ा से, तो आप रहे जेल में कई बरस तक।"

بِضۡعَ का लफ्ज़ अरबी ज़बान में दो से लेकर नौ तक (दस से कम) की तादाद के लिये इस्तेमाल होता है।

आयात 43 से 49 तक

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّیْۤ اَرٰی سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْكُلُهُنَّ
سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ یٰبِسٰتٍ ؕ
یٰۤاَیُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِیْ فِیْ رُءْیَایَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْیَا
تَعْبُرُوْنَ ﴿۴۳﴾ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ
بِتَاْوِیْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِیْنَ ﴿۴۴﴾ وَقَالَ الَّذِیْ نَجَا
مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِیْلِهٖ
فَاَرْسِلُوْنِ ﴿۴۵﴾ یُوْسُفُ اَیُّهَا الصِّدِّیْقُ اَفْتِنَا فِیْ
سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ یٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّیْۤ اَرْجِعُ اِلَی النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِیْنَ
دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِیْ سُنْۢبُلِهٖۤ اِلَّا قَلِیْلًا مِّمَّا
تَاْكُلُوْنَ ﴿۴۷﴾ ثُمَّ یَاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ
یَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِیْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿۴۸﴾
ثُمَّ یَاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِیْهِ یُغَاثُ النَّاسُ وَفِیْهِ
یَعْصِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ ع

आयत 43

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّیْٓ اَرٰی سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْکُلُھُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ

"और बादशाह ने कहा है कि मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं, जिनको खा रही हैं सात दुबली गायें"

अब यहाँ से इस क़िस्से का नया बाब शुरू हो रहा है। उस वक़्त मिस्र पर फ़राअना (फ़िरऔन) की हुकूमत नहीं थी, बल्कि वहाँ चरवाहे बादशाह हुक्मरान थे। तारीख़ में अक्सर ऐसे वाक़ियात मिलते हैं कि कुछ सहराई क़बीलों ने क़ुव्वत हासिल करके मुतमद्दन (moderate) इलाक़ों पर चढ़ाई की, फिर या तो वो लूट-मार करके वापस चले गए या उन इलाक़ों पर अपनी हुकूमतें क़ायम कर लीं। ऐसी ही एक मिसाल मिस्र के चरवाहे बादशाहों की है जो सहराई क़बीलों से ताल्लुक़ रखते थे। उन्होंने किसी ज़माने में मिस्र पर हमला किया और मक़ामी लोगों (क़िब्ती क़ौम) को गुलाम बना कर वहाँ अपनी हुकूमत क़ायम कर ली। यहाँ जिस बादशाह का ज़िक्र है वह इसी ख़ानदान से था। इस बादशाह के किरदार और रवैय्ये की जो झलक इस क़िस्से में दिखाई गई है इससे मालूम होता है कि वह अगरचे तौहीद व रिसालत से नाबलद (unaware) था मगर एक नेक सरश्त इंसान था।

وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ یٰبِسٰتٍ ؕ

"और सात बालियाँ हैं हरी और दूसरी (सात) खुश्क।"

يَاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾

"तो ऐ मेरे दरबारियों! मुझे बताओ ताबीर मेरे ख़्वाब की अगर तुम लोग ख़्वाबों की ताबीर कर सकते हो।"

आयत 44

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

"उन्होंने कहा कि यह तो परेशान ख्यालात हैं, और ऐसे ख़्वाबों की ताबीर हम नहीं जानते।"

बादशाह के ख़्वाब को सुन कर उन्होंने जवाब दिया कि यह कोई मअनवी ख़्वाब नहीं, ऐसे ही बेमअनी और मुन्तशिर क़िस्म के ख़यालात हैं जिनकी हम कोई ताबीर नहीं कर सकते। फ़्राईड का भी यही ख़याल है कि ख़्वाब में इंसान अपने शहवानी (कामुक) ख्यालात और दूसरी दबी हुई नफ़सानी ख्वाहिशात की तस्कीन (satisfaction) करना चाहता है, मगर इस्लामी नुक्ता-ए-नज़र से ख़्वाब तीन क़िस्म के होते हैं। पहली क़िस्म "रुअया-ए-सादक़ा" की है यानि सच्चे ख़्वाब, यह अल्लाह की तरफ़ से होते हैं और ऐसे ख़्वाबों के बारे में हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया है कि यह नबुवत के अज्ज़ाअ (घटकों) में से है। दूसरी क़िस्म के ख़्वाब वह हैं जो शैतान की तरफ़ से होते हैं और इनमें बाज़ अवक़ात श्यातीने जिन्न अपनी तरफ़ से ख्यालात इंसानों के ज़हनों में इल्हाम भी करते हैं। तीसरी क़िस्म के ख़्वाब वह हैं जिनका

ज़िक्र फ़्राईड ने किया है। यानि इंसान के अपने ही ख्यालात मुन्तशिर अंदाज़ में मुख्तलिफ़ वजुहात की बिना पर सोते वक़्त इंसान के ज़हन में आते हैं और इनमें कोई मायने या रब्त होना ज़रूरी नहीं होता।

आयत 45

وَقَالَ الَّذِیۡ نَجَا مِنۡهُمَا وَادَّكَرَ بَعۡدَ اُمَّةٍ

“और कहा उस शख्स ने जो उन दोनों (क़ैदियों) में से निज़ात पा गया था और एक तवील अरसे के बाद उसे (अचानक) याद आ गया”

वह शख्स जेल से रिहा होकर फिर र से साक़ीगिरी कर रहा था। उसे बादशाह के ख्व़ाब के ज़िक्र से अचानक हज़रत युसुफ़ अलै. याद आ गए कि हाँ जेल में एक शख्स है जो ख्वाबों की ताबीर बताने में बड़ा माहिर है।

اَنَا اُنَبِّئُكُمۡ بِتَاۡوِيۡلِهٖ فَاَرۡسِلُوۡنِ ﴿۴۵﴾

“(उसने कहा) मैं बता दूँगा तुम लोगों को इसकी ताबीर, बस मुझे ज़रा (क़ैदखाने में युसुफ़ के पास) भेज दें।”

इस तरह वह शख्स जेल में हज़रत युसुफ़ अलै. के पास पहुँच कर आपसे मुखातिब हुआ:

आयत 46

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ
اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ
سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ
عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ
خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ

"ऐ युसुफ़! ऐ रास्तबाज! हमें ताबीर बताइये सात मोटी गायों के बारे में कि उन्हें खा रही हैं सात दुबली, और सात सब्ज़ बालियों और दूसरी (सात) खुश्क बालियों के बारे में"

لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٤٦

"ताकि मैं वापस जाऊँ (ताबीर) लेकर उन लोगों के पास, ताकि उन्हें भी मालूम हो जाए।"

आयत 47

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ
سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ

"युसुफ़ अलै. ने (ताबीर बताते हुए) फ़रमाया कि तुम सात साल तक ख़ूब ज़राअत (कृषि) करोगे लगातार।"

فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ
سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا
تَاْكُلُوْنَ ۝٤٧

"तो (इस दौरान में) जो फ़सल भी तुम काटो उसे रहने देना उसकी बालियों में ही, सिवाय उस क़लील तादाद के जो तुम खाओ।"

आपने सिर्फ़ इस ख़्वाब की ताबीर ही नहीं बताई बल्कि मसले की तदबीर भी बता दी और तदबीर भी ऐसी जो

शाही मुशीरों (सलाहकारों) के वहम व गुमान में भी नहीं आ सकती थी। आज के साइंसी तजुर्बात से यह बात साबित होती है कि अनाज को महफ़ूज़ करने का बेहतरीन तरीक़ा यही है कि उसे सिट्टों के अंदर ही रहने दिया जाए और इन सिट्टों को महफ़ूज़ कर लिया जाए। इस तरह से अनाज ख़राब नहीं होता और उसे कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिये किसी इज़ाफ़ी preservative की ज़रूरत भी नहीं होती।

आयत 48

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ

"फिर इसके बाद सात साल आयेंगे बहुत सख्त"

खुशहाली के सात सालों के बाद सात साल तक खुश्कसाली का समाँ होगा जिसकी वजह से मुल्क में शदीद क़हत पड़ जाएगा।

يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾

"वह (सात साल) चट कर जायेंगे उसको जो कुछ तुमने उनके लिये बचा रखा होगा सिवाय उसके जो तुम (बीज के लिये) महफ़ूज़ कर लोगे।"

हज़रत युसुफ़ अलै. ने ख्वाब की ताबीर यह बताई कि सात साल तक मुल्क में बहुत खुशहाली होगी, फ़सलें बहुत अच्छी होंगी, मगर इन सात सालों के बाद सात साल ऐसे आएँगे जिनमें खुश्कसाली के सबब शदीद क़हत पड़ जाएगा। इस मसले की तदबीर आपने यह बताई कि पहले सात साल के दौरान सिर्फ़ ज़रूरत का अनाज इस्तेमाल करना, और बाक़ी

सिट्टों के अंदर ही महफ़ूज़ करते जाना और जब क़हत का ज़माना आए तो इन सिट्टों से निकाल कर ब-क़दरे ज़रूरत अनाज इस्तेमाल करना।

आयत 49

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝۴۹

"फिर आएगा इसके बाद एक साल कि उसमें ख़ूब बारिशें होंगी लोगों पर और उसमें वह (अंगूर का) रस निचोड़ेंगे।"

जब ख़ूब बारिशें होंगी तो अंगूर की बेलें ख़ूब फलें-फूलेंगी, अंगूर की पैदावार भी ख़ूब होगी, लोग ख़ूब अंगूर निचोड़ेंगे और शराब कशीद करेंगे।

आयात 50 से 57 तक

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَاۗءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ
ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔــلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ
اَيْدِيَهُنَّ ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ۝۵۰ قَالَ مَا
خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ قُلْنَ
حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْۗءٍ ۭ قَالَتِ امْرَاَتُ

الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ
وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۵۱﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ
بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَآ
اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ
رَبِّيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۳﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ
بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ
لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰي خَزَآئِنِ
الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۵﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا
لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ
نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۷﴾ ع

आयत 50

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ

"(यह सुनकर) बादशाह ने कहा कि उस शख्स को मेरे पास ले आओ!"

बादशाह अपने ख़्वाब की ताबीर और फिर उसकी ऐसी आला तदबीर सुनकर यक़ीनन बहुत मुतास्सिर (impress) हुआ होगा और उसने सोचा होगा कि ऐसे ज़हीन, फ़तीन शख्स को जेल में नहीं बल्कि बादशाह का मुशीर होना चाहिये। चुनाँचे उसने हुक्म दिया कि उस क़ैदी को फ़ौरन मेरे पास लेकर आओ।

فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ

"फिर जब आया आपके पास ऐलची (दूत), तो आपने फ़रमाया कि तुम वापस चले जाओ अपने आक़ा के पास"

बादशाह का पैग़ाम लेकर जब क़ासिद (पैगाम लाने वाला) आपके पास पहुँचा तो आपने उसके साथ जाने से इन्कार कर दिया कि मैं इस तरह अभी जेल से बाहर नहीं आना चाहता। पहले पूरे मामले की छान-बीन की जाए कि मुझे किस जुर्म की पादाश में जेल भेजा गया था। अगर मुझ पर कोई इल्ज़ाम है तो उसकी मुकम्मल तफ़तीश हो और अगर मेरा कोई क़सूर नहीं है तो मुझे अलल ऐलान बेगुनाह और बरी क़रार दिया जाए। चुनाँचे आपने उस क़ासिद से फ़रमाया कि तुम अपने बादशाह के पास वापस जाओ:

فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ

"और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला था जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे?"

اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ۝۵۰

"यक़ीनन मेरा रब उनकी चालों से ख़ूब वाक़िफ़ है।"

बादशाह तक यह बात पहुँची तो उसने सब बेगमात को तलब कर लिया।

आयत 51

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ

"उसने पूछा कि क्या मामला था तुम्हारा जब तुम सबने फुसलाना चाहा था युसुफ़ को?"

قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْۗءٍ ۭ

"उन्होंने कहा कि अल्लाह गवाह है, हमारे इल्म में उसके बारे में कोई भी बुराई नहीं है।"

उस वक़्त जो कुछ भी हुआ था वह सब हमारी तरफ़ से था, युसुफ़ की तरफ़ से कोई गलत बात हमने महसूस नहीं की।

قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْــٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾

"(इस पर) अज़ीज़ की बीवी भी बोल उठी कि अब हक़ीक़त तो वाज़ेह हो ही गई है, मैंने ही उसको फुसलाने की कोशिश की थी और वह बिल्कुल सच्चा है।"

इस तरह अज़ीज़ की बीवी को उस हक़ीक़त का बरमला इज़हार करना पड़ा कि युसुफ़ अलै. ने ना तो ज़बान से कोई

गलत बयानी की है और ना ही उसके किरदार में कोई खोट है।

आयत 52

ذٰلِكَ لِيَعۡلَمَ اَنِّیۡ لَمۡ اَخُنۡهُ بِالۡغَيۡبِ

"यह इसलिये कि वह जान ले कि मैंने उसकी ग़ैरमौजूदगी में उसकी ख्यानत नहीं की"

यह फ़िक़रा स्याक़े इबारत में किसी की ज़बान से अदा हुआ है इसके बारे में मुफ़स्सरीन के बहुत से अक़वाल हैं। इसलिये कि इस फ़िक़रे के मौक़ा महल और अल्फ़ाज़ में मुतअद्दिद इम्कानात की गुंजाईश है। उन अक़वाल में से एक क़ौल यह है कि यह फ़िक़रा अज़ीज़ की बीवी की ज़बान ही से अदा हुआ है कि मैंने सारी बात इसलिये सच-सच बयान कर दी है ताकि युसुफ़ को मालूम हो जाए कि मैंने उसकी अदम मौजूदगी में उससे कोई गलत बात मंसूब करके उसकी ख्यानत नहीं की।

وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِیۡ كَيۡدَ الۡخَآئِنِيۡنَ ﴿۵۲﴾

"और यह कि यक़ीनन अल्लाह ख्यानत करने वालों की चाल को कामयाब नहीं करता।"

आयत 53

وَمَاۤ اُبَرِّئُ نَفۡسِیۡ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَۃٌۢ بِالسُّوۡٓءِ

"और मैं अपने नफ्स को बरी क़रार नहीं देती यक़ीनन (इंसान का) नफ्स तो बुराई ही का हुक्म देता है"

اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ ؕ اِنَّ رَبِّیۡ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۵۳﴾

"सिवाय उसके जिस पर मेरा रब रहम फ़रमाए। यक़ीनन मेरा रब बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।"

अगर गुज़िश्ता आयत में नक़ल होने वाले बयान को अज़ीज़े मिस्र की बीवी का बयान माना जाए तो इस सूरत में आयत ज़ेरे नज़र भी उसी के कलाम का तसल्सुल क़रार पाएगी और इसका तर्जुमा वही होगा जो ऊपर किया गया है। यह तर्जुमा दरअसल उस नज़रिये के मुताबिक़ है जिसके तहत हमारे बहुत से मुफ़स्सरीन और क़िस्सा गो हज़रात ने माई ज़ुलेखा को वली अल्लाह के दर्जे तक पहुँचा दिया है। और कुछ बईद भी नहीं कि उसका इश्क़े मिजाज़ी वक़्त के साथ-साथ इश्क़े हक़ीक़ी में तब्दील हो गया हो और वह हक़ीक़तन हिदायत पर आ गई हो। बहरहाल जो लोग इस बात को दुरुस्त तस्लीम करते हैं वह इन आयात का तर्जुमा इसी तरह करते हैं, क्योंकि उसने ऐतराफ़े जुर्म करके तौबा कर ली थी और इस लिहाज़ से मज़कूरा मुफ़स्सरीन का मौक़फ़ यह है कि ऐतराफ़े गुनाह से लेकर आयत 53 के इख्तताम तक उसी का बयान है।

इस सिलसिले में दूसरा मौक़फ़ (जो दौरे हाज़िर के ज़्यादातर मुफ़स्सरीन ने इख्तियार किया है) यह है कि अज़ीज़े मिस्र की बीवी का बयान इस आयत पर ख़त्म हो

गया: {اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ} (आयत 51) और इसके बाद हज़रत युसुफ़ अलै. का बयान नक़ल हुआ है। इस सूरत में आयत 52 और 53 का मफ़हूम यूँ होगा कि जब बादशाह की तफ़तीशी कार्रवाई और अज़ीज़े मिस्र की बीवी के बरमला ऐतराफ़े जुर्म के बारे में हज़रत युसुफ़ को बताया गया तो आपने फ़रमाया कि इस सब कुछ से मेरा यह मक़सूद नहीं था कि किसी की इज्ज़त व नामूस का परदा चाक हो, बल्कि मैं तो चाहता था कि अज़ीज़े मिस्र यह जान ले कि अगर उसने मुझे अपने घर में इज्ज़त व इकराम से रखा था और मुझ पर ऐतमाद किया था तो मैंने भी उसकी अदम मौजूदगी में उसकी ख्यानत करके उसके ऐतमाद को ठेस नहीं पहुँचाई, और मेरा ईमान है कि अल्लाह ख्यानत करने वालों को राहयाब नहीं करता। बाक़ी मैं खुद को बहुत पारसा नहीं समझता बल्कि समझता हूँ कि नफ्से इंसानी तो इंसान को बुराई पर उभारता ही है और इसके हमले से सिर्फ़ वही बच सकता है जिस पर मेरा रब अपनी ख़ुसूसी नज़रे रहमत फ़रमाए। अल्लाह तआला की तरफ़ से मेरी हिफ़ाज़त का भी अगर ख़ुसूसी इंतेज़ाम ना फ़रमाया जाता तो मुझसे भी ग़लती सरज़द हो सकती थी। मगर चूँकि मेरा रब बख्शने वाला बहुत ज़्यादा रहम फ़रमाने वाला है इसलिये उसने मुझ पर अपनी ख़ुसूसी रहमत फ़रमाई।

आयत 54

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ

"और बादशाह ने (अब फ़ैसलाकुन अंदाज़ में) कहा कि उसको मेरे पास ले आओ, मैं

उसको अपना मुसाहिबे ख़ास बनाऊँगा।"

فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾

"तो जब बादशाह ने आपसे बात-चीत की तो कहा कि आज के दिन से आप हमारे नज़दीक बड़े बाइज़्ज़त और मौअतबर इंसान हैं।"

आज से आपका शुमार हमारे ख़ास मुक़र्रबीन में होगा और इस लिहाज़ से ममलिकत के अंदर आपका एक ख़ास मुक़ाम होगा। आपकी अमानत व दयानत पर हमें पूरा-पूरा भरोसा है।

आयत 55

قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآىِٕنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّىْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾

"आपने फ़रमाया कि मुझे मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दें, मैं हिफ़ाज़त करने वाला भी हूँ और जानने वाला भी हूँ।"

हज़रत युसुफ़ अलै. जान चुके थे कि इस मुल्क पर बहुत बड़ी आफ़त आने वाली है और अगर इस मुम्किना सूरते हाल का मुक़ाबला करने के लिये बर वक़्त दुरुस्त और मौसर अक़दाम ना किये गए तो ना सिर्फ़ खुद मिस्र एक ख़ौफ़नाक क़हत की ज़द में आ जाएगा बल्कि आस-पास के इलाक़ों के लिये भी बहुत भयानक हालात पैदा हो जायेंगे। इस पूरे ख़ित्ते में मिस्र ही एक ऐसा मुल्क था जहाँ गल्ला और दूसरी अश्याए ख़ुराक

(खाने-पीने की चीज़ें) पैदा होती थीं। इसके हमसाया में चारों तरफ़ ख़ुश्क सहराई इलाक़े थे और अनाज वगैरह के सिलसिले में इन इलाक़ों का इन्हसार भी मिस्र की ज़राअत पर था। यही वजह थी कि आपने मौक़ा देखा तो फ़ौरन अपनी ख़िदमात पेश कर दीं कि अगर खज़ाने और ख़ुराक व ज़राअत का पूरा इंतेज़ाम व इन्सराम (अनुरूप) मेरे पास होगा तो मैं इस आफ़त का सामना करने के लिये जामेअ और ठोस मंसूबा बंदी कर सकूँगा।

आयत 56

وَ كَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ

"और इस तरह हमने युसुफ़ को तमक्कुन अता किया (मिस्र की) ज़मीन में, कि वह उसमें जहाँ चाहे अपना ठिकाना बना ले।"

हज़रत युसुफ़ अलै. को अल्लाह तआला की तरफ़ से तमक्कुन अता होने का यह दूसरा मरहला था। पहले मरहले में आपको बदवी और सहराई माहौल से उठा कर उस दौर के एक निहायत मुत्मद्दीन मुल्क की आला तरीन सतह की सोसाइटी में पहुँचाया गया, जबकि दूसरे मरहले में आपको उसी मुल्क के अरबाबे इख्तियार व इक़तदार की सफ़ में एक निहायत मुमताज़ मक़ाम अता कर दिया गया, जिसके बाद आप पूरे इख्तियार के साथ अज़ीज़ के ओहदे पर मुतमक्किन हो गए।

نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿۵۶﴾

"हम अपनी रहमत से नवाज़ते हैं जिसको चाहते हैं और हम नेकोकारों का अज्र ज़ाया नहीं करते।"

आयत 57

وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۷﴾

"और आख़िरत का अज्र तो बहुत ही बेहतर है उनके लिये जो ईमान लाएँ और तक़वे की रविश इख्तियार किये रखें।"

अब यहाँ से आगे इस क़िस्से का एक नया बाब शुरू होने जा रहा है। वाज़ेह रहे कि आईंदा रुकूअ के मज़ामीन और गुज़िश्ता मज़मून के दरमियान ज़मानी ऐतबार से तक़रीबन दस साल का बुअद (distance) है। अब बात उस ज़माने से शुरू हो रही है जब मिस्र में बेहतर फ़सलों के सात साला दौर के बाद क़हत पड़ चुका था। यहाँ पर जो तफ़सीलात छोड़ दी गई हैं उनका खुलासा यह है कि हज़रत युसुफ़ अलै. की ताबीर के ऐन मुताबिक़ सात साल तक मिस्र में खुशहाली का दौर दौरा रहा और फ़सलों की पैदावार मामूल (normal) से कहीं बढ़ कर हुई। इस दौरान हज़रत युसुफ़ अलै. ने बाक़ायदा मंसूबा बंदी के तहत अनाज के बड़े-बड़े ज़खाइर (ज़खीरे) जमा कर लिए थे। चुनाँचे जब यह पूरा इलाक़ा क़हत की लपेट में आया तो मिस्र की हुकूमत के पास ना सिर्फ़ अपने अवाम के लिये बल्कि मल्हक़ा (सहयोगी)

इलाक़ों के लोगों की ज़रूरत पूरी करने के लिये भी अनाज वाफ़र मिक़दार (थोक मात्रा) में मौजूद था। चुनाँचे हज़रत युसुफ़ अलै. ने इस ग़ैर मामूली सूरतेहाल के पेशेनज़र “राशन बंदी” का एक ख़ास निज़ाम मुतआरिफ़ (introduce) करवाया। इस निज़ाम के तहत एक ख़ानदान को एक साल के लिये सिर्फ़ इस क़दर गल्ला दिया जाता था जिस क़दर एक ऊँट उठा सकता था और उसकी क़ीमत इतनी वसूल की जाती थी जो वह आसानी से अदा कर सकें। इन हालात में फ़लस्तीन में भी क़हत का समां था और वहाँ से भी लोग क़ाफ़िलों की सूरत में मिस्र की तरफ़ गल्ला लेने के लिये आते थे। ऐसे ही एक क़ाफ़िले में हज़रत युसुफ़ अलै. के दस भाई भी गल्ला लेने मिस्र पहुँचे, जबकि आपका माँ जाया (सगा) भाई उनके साथ नहीं था। इसलिये कि हज़रत याक़ूब अलै. अपने उस बेटे तो किसी तरह भी उनके साथ कहीं भेजने पर आमादा नहीं थे।

आयात 58 से 68 तक

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ
لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝٥٨ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ
ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي
الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝٥٩ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ
فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ۝٦٠ قَالُوْا
سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ۝٦١ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ

اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ
اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا
رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ
فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾
قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ
مِنْ قَبْلُ ۭ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾
وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ
اِلَيْهِمْ ۭ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ۭ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ
اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ۭ
ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى
تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ
بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰي مَا نَقُوْلُ
وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ
وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۭ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ
وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ

حَيۡثُ اَمَرَهُمۡ اَبُوۡهُمۡ ؕ مَا كَانَ يُغۡنِىۡ عَنۡهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ
مِنۡ شَىۡءٍ اِلَّا حَاجَةً فِىۡ نَفۡسِ يَعۡقُوۡبَ قَضٰٮهَا ؕ وَاِنَّهٗ
لَذُوۡ عِلۡمٍ لِّمَا عَلَّمۡنٰهُ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ
ع ﴿۶۸﴾

आयत 58

وَجَآءَ اِخۡوَةُ يُوۡسُفَ فَدَخَلُوۡا عَلَيۡهِ

"और आए युसुफ़ के भाई और आपके सामने पेश हुए"

فَعَرَفَهُمۡ وَهُمۡ لَهٗ مُنۡكِرُوۡنَ ﴿۵۸﴾

"तो आपने उन्हें पहचान लिया मगर वह आपको नहीं पहचान पाए।"

इन हालात में यह इम्कान उनके वहम व गुमान में भी नहीं था कि अज़ीज़े मिस्र जिसके दरबार में उनकी पेशी हो रही है वह उनका भाई युसुफ़ है।

आयत 59

وَلَمَّا جَهَّزَهُمۡ بِجَهَازِهِمۡ قَالَ ائۡتُوۡنِىۡ بِاَخٍ لَّـكُمۡ مِّنۡ اَبِيۡكُمۡ‌ ۚ

"फिर जब आपने उनका सामान तैयार करवा दिया तो फ़रमाया कि (आईन्दा) अपने उस भाई को भी मेरे पास लेकर आना जो

तुम्हारे वालिद से (तुम्हारा भाई) है।”

गल्ला चूँकि राशन बंदी के तहत दिया जाता था इसलिये उन्होंने दरख्वास्त की होगी कि हमारा एक भाई और भी है, उसके अहलखाना भी हैं, उसे हम अपने वालिद की ख़िदमत के लिये पीछे छोड़ आए हैं, उसके हिस्से का गल्ला भी हमें दे दिया जाए। इस सिलसिले में सवाल व जवाब के दौरान उन्होंने यह भी बताया होगा कि हम दस हक़ीक़ी भाई हैं जबकि वह ग्यारहवाँ भाई बाप की तरफ़ से सगा लेकिन वालिदा की तरफ़ से सौतेला है। हज़रत युसुफ़ ने यह सारा माजरा सुनने के बाद फ़रमाया होगा कि ठीक है मैं आपके ग्यारहवें भाई के हिस्से का इज़ाफ़ी गल्ला तुम लोगों को इस शर्त पर दे देता हूँ कि आईन्दा जब तुम लोग गल्ला लेने के लिये आओगे तो अपने उस भाई को साथ लेकर आओगे ताकि मैं तस्दीक़ कर सकूँ कि तुम लोगों ने गलत बयानी करके मुझसे इज़ाफ़ी गल्ला तो नहीं लिया।

اَلَا تَرَوْنَ اَنِّیْٓ اُوْفِی الْكَیْلَ وَاَنَا خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ۝۵۹

“क्या तुम देखते नहीं हो कि मैं पैमाना पूरा भर कर देता हूँ और बेहतरीन मेहमान नवाज़ी करने वाला भी हूँ!”

आयत 60

فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾

"और अगर तुम उसे मेरे पास लेकर नहीं आओगे तो मेरे पास तुम्हारे लिये कोई गल्ला नहीं है, और तुम मेरे क़रीब भी ना फटकना।"

आयत 61

قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦١﴾

"उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके वालिद को आमादा करने की कोशिश करेंगे और हम यह ज़रूर करके रहेंगे।"

आयत 62

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ

"और युसुफ़ ने अपने नौजवानों से कहा कि इनकी पूंजी (भी वापस) उनके कजावों (थैलों) में रख दो"

उस ज़माने में चीज़ों के एवज़ ही चीज़ें ख़रीदी जाती थीं। चुनाँचे वह लोग भी अपने यहाँ से कुछ चीज़ें (भेड़-बकरियों की ऊन वगैरह) इस मक़सद के लिये लेकर आए थे और गल्ले की क़ीमत के तौर पर अपनी वह चीज़ें उन्होंने पेश कर दी थीं। मगर हज़रत युसुफ़ अलै. ने अपने मुलाज़मीन को हिदायत कर दी कि जब इनके कजावों (थैलों) में गन्दुम (गेहूँ) भरी जाए तो इन लोगों की यह चीज़ें भी जो इन्होंने गल्ले की क़ीमत के तौर पर अदा की हैं चुपके से वापस इनके कजावों में ही रख दी जाएँ।

لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ ٦٢

"ताकि वह पहचाने इनको जब लौटे अपने अहलो अयाल की तरफ़, शायद कि (इस तरह) वह दोबारा आएँ।"

आयत 63

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ

"फिर जब वह लौटे अपने वालिद के पास तो कहने लगे: अब्बाजान! हमसे (एक) पैमाना रोक लिया गया है"

यानि उन्होंने आईन्दा के लिये हमारे छोटे भाई के हिस्से का गल्ला रोक दिया है और वह तभी मिलेगा जब हम इसको वहाँ लेकर जायेंगे।

فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝ ٦٣

"तो (आईन्दा) हमारे भाई को हमारे साथ भेजियेगा ताकि हम (इसके हिस्से का भी) गल्ला लेकर आएँ, और हम इसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे।"

आयत 64

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ۭ

“याक़ूब अलै. ने फ़रमाया कि क्या मैं इसके बारे में उसी तरह तुम पर ऐतबार कर लूँ जैसे मैंने इसके भाई (युसुफ़) के बारे में तुम पर ऐतबार किया था?”

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۠ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝64

“(वैसे तो) अल्लाह ही बेहतरीन मुहाफ़िज़ है और वही तमाम रहम करने वालों में सबसे बढ़ कर रहम करने वाला है।”

आयत 65

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ۭ

“और जब उन्होंने खोला अपना सामान तो उन्होंने देखा कि उनकी पूंजी उन्हें लौटा दी गई है।”

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ۭ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ

“वह पुकार उठे: अब्बाजान! हमें और क्या चाहिये? यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गई है।”

وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ

“(अब हम जायेंगे) और अपने अहलो अयाल के लिये गल्ला लाएँगे और अपने भाई की

بَعِيۡرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيۡلٌ يَّسِيۡرٌ ﴿۶۵﴾

हिफ़ाज़त करेंगे, और एक ऊँट का बोझ ज़्यादा लाएँगे। यह (एक इज़ाफ़ी) बोझ (लाना तो अब) बहुत आसान है।"

आयत 66

قَالَ لَنۡ اُرۡسِلَهٗ مَعَكُمۡ حَتّٰى تُؤۡتُوۡنِ مَوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاۡتُنَّنِىۡ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ يُّحَاطَ بِكُمۡ ۚ

"याक़ूब अलै. ने फ़रमाया: मैं इसे (वापस) हरगिज़ नहीं भेजूँगा तुम्हारे साथ, यहाँ तक कि तुम मेरे सामने पुख्ता क़सम खाओ अल्लाह की कि तुम लाज़िमन इसे लेकर आओगे मेरे पास, सिवाय इसके कि तुम सबको घेरे में ले लिया जाए।"

हाँ अगर कोई एसी मुसीबत आ जाए कि तुम सबके सब घेर लिए जाओ और वहाँ से ग्लूखलासी (छुटकारा पाना) मुश्किल हो जाए तो और बात है, मगर आम हालात में तुम लोग इसे वापस मेरे पास लाने के पाबन्द हो गए।

فَلَمَّاۤ اٰتَوۡهُ مَوۡثِقَهُمۡ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوۡلُ وَكِيۡلٌ ﴿۶۶﴾

"फिर जब उन्होंने आपको अपना पुख्ता क़ौल व क़रार दे दिया तो याक़ूब ने फ़रमाया कि जो कुछ हम कह रहे हैं अल्लाह इस पर निगेहबान है।"

आयत 67

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدۡخُلُوۡا مِنۡۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادۡخُلُوۡا مِنۡ اَبۡوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ

"और आपने कहा: ऐ मेरे बेटो! तुम लोग एक दरवाज़े से (शहर में) दाख़िल ना होना बल्कि मुतफ़र्रिक़ (अलग-अलग) दरवाज़ों से दाख़िल होना।"

हसद और नज़रे बद वगैरह के असरात से बचने के लिये बेहतर है कि आप तमाम भाई इकट्ठे एक दरवाज़े से शहर में दाख़िल होने के बजाय मुख्तलिफ़ दरवाज़ों से दाख़िल हों।

وَمَاۤ اُغۡنِيۡ عَنۡكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ شَيۡءٍ ؕ

"और मैं तुमको बचा नहीं सकता अल्लाह (के फ़ैसले) से कुछ भी।"

मैं अल्लाह के किसी फ़ैसले को तुम लोगों से नहीं टाल सकता। अगर अल्लाह की मशीयत में तुम लोगों को कोई गज़न्द (नुक़सान) पहुँचना मंज़ूर है तो मैं उसको रोक नहीं सकता। यह सिर्फ़ इंसानी कोशिश की हद तक अहतियाती तदबीर है जो हम इख्तियार कर सकते हैं।

اِنِ الۡحُكۡمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ ۚ وَعَلَيۡهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُتَوَكِّلُوۡنَ ﴿۶۷﴾

"इख्तियारे मुतलक़ तो सिर्फ़ अल्लाह ही का है, उसी पर मैंने तवक्कुल किया है, और तमाम तवक्कुल करने वालों को उसी पर तवक्कुल करना चाहिए।"

आयत 68

وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ۭ

"तो जब वह दाख़िल हुए जहाँ से उन्हें हुक्म दिया था उनके वालिद ने।"

مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ۭ

"वह (याक़ूब) बचाने वाला नहीं था उनको अल्लाह (के फ़ैसले) से कुछ भी, सिवाय इसके कि याक़ूब के दिल में एक ख्याल था जो उसने उसे पूरा कर लिया।"

हज़रत याक़ूब अलै. के दिल में एक खटक थी जिसे दूर करने के लिये आपने यह तदबीर इख्तियार की कि अपने बेटों को हिदायत कर दी कि वह एक दरवाज़े से दाख़िल होने के बजाय मुख्तलिफ़ दरवाज़ों से दाख़िल हों, लेकिन आपकी यह तदबीर अल्लाह के किसी फ़ैसले पर असर अंदाज़ नहीं हो सकती थी।

وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ۧ۶۸

"और यक़ीनन आप साहिबे इल्म थे उस इल्म के ऐतबार से जो हमने आपको सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं हैं।"

आयात 69 से 79 तक

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰی یُوْسُفَ اٰوٰٓی اِلَیْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّیْٓ اَنَا
اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىٕسْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۶۹﴾ فَلَمَّا
جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَایَةَ فِیْ رَحْلِ اَخِیْهِ ثُمَّ
اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَیَّتُهَا الْعِیْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿۷۰﴾ قَالُوْا
وَاَقْبَلُوْا عَلَیْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿۷۱﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ
صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِیْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِیْمٌ
﴿۷۲﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِی
الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِیْنَ ﴿۷۳﴾ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ
كُنْتُمْ كٰذِبِیْنَ ﴿۷۴﴾ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِیْ رَحْلِهٖ
فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِیْنَ ﴿۷۵﴾ فَبَدَاَ
بِاَوْعِیَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِیْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ
وِّعَآءِ اَخِیْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِیُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِیَاْخُذَ
اَخَاهُ فِیْ دِیْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ
مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِیْ عِلْمٍ عَلِیْمٌ ﴿۷۶﴾ قَالُوْٓا اِنْ
یَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا یُوْسُفُ
فِیْ نَفْسِهٖ وَلَمْ یُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ

اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا
شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ
وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝

आयत 69

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّىْٓ اَنَا اَخُوْكَ

“और जब वह आए युसुफ़ के पास तो आपने अपने भाई को अपने पास अलग बुला लिया और उसे बता दिया कि मैं तुम्हारा भाई हूँ”

आपने अपने भाई बिन यामिन को अलैहदगी में अपने पास बुला लिया और उन पर अपनी शनाख्त ज़ाहिर कर दी कि मैं तुम्हारा भाई युसुफ़ हूँ जो बचपन में खो गया था।

فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

“तो अब मत ग़मगीन होना उस पर जो यह लोग करते रहे हैं।”

हज़रत युसुफ़ अलै. ने अपने छोटे भाई को तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि मुझे अल्लाह ने इस आला मक़ाम तक पहुँचाया है और हमें आपस में मिला भी दिया है। चुनाँचे अब इन बड़े भाइयों के रवैय्ये पर तुम्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। अब सख्ती के दिन ख़त्म हो गए हैं।

आयत 70

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ

"फिर जब आपने उनके लिये उनका सामान तैयार करा दिया तो रख दिया पीने का प्याला अपने भाई के सामान में"

यह बादशाह का ख़ुसूसी जाम था जो सोने का बना हुआ था।

ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ۝۷۰

"फिर एक पुकारने वाले ने पुकार लगाई कि ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम लोग चोर हो।"

जब वह क़ाफ़िला चल पड़ा तो उसे रोक लिया गया कि हमारे यहाँ से कोई चीज़ चोरी हुई है और हमें इस बारे में तुम लोगों पर शक है।

आयत 71

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝۷۱

"उन्होंने पूछा उनकी तरफ़ मुड़ कर कि आपकी क्या चीज़ गुम हुई है?"

आयत 72

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿۷۲﴾

"उन्होंने जवाब दिया कि हमें बादशाह का जामे ज़र्रे नहीं मिल रहा और जो उसे ले आएगा उसे एक ऊँट के बोझ के बराबर गल्ला दिया जाएगा, और मैं इसका ज़िम्मेदार हूँ।"

आयत 73

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿۷۳﴾

"उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम आप लोग ख़ूब जानते हैं कि हम ज़मीन में फ़साद मचाने नहीं आए और हम चोरी करने वाले हरगिज़ नहीं हैं।"

आप लोग अच्छी तरह जानते हैं कि हम क़हत के मारे लोग यहाँ इतनी दूर से गल्ला लेने आए हैं, हम कोई चोर-डाकू नहीं हैं। उनके इस फ़िक़रे और अंदाज़े गुफ्तगू में बड़ी लजाजत पाई जाती है।

आयत 74

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿۷۴﴾

"उन्हों (शाही मुलाज़मीन) ने कहा कि फिर उस (चोर) की क्या सज़ा होगी अगर तुम लोग झूठे हुए?"

यानि अगर तुम लोग अपने इस दावे में झूठे निकले और तुममें से ही कोई शख्स चोर हुआ तो फिर उस शख्स की क्या सज़ा होनी चाहिए?

आयत 75

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝75

“उन्होंने कहा कि उसकी सज़ा यही है कि जिसके सामान में वह (जामे ज़र्रे) पाया जाए वह खुद ही उसका बदला होगा। हम तो इसी तरीक़े से ज़ालिमों को सज़ा दिया करते हैं।”

उन्होंने कहा कि हाँ अगर ऐसा हुआ तो फिर जिसके सामान में से आपका जाम निकल आए, सज़ा के तौर पर आप लोग उसे अपने पास रख लें, वह आपका गुलाम बन जाएगा। हमारे यहाँ तो (शरीअते इब्राहीमी की रू से) चोरी के जुर्म की यही सज़ा राएज है।

आयत 76

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاۗءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَاۗءِ اَخِيْهِ ۭ

“तो आपने (तलाशी) शुरू की उनके बोरों की अपने भाई के बोरे से पहले, फिर आपने निकाल लिया वह (जाम) अपने भाई के सामान से।”

كَذٰلِكَ كِدۡنَا لِيُوۡسُفَ ؕ

"इस तरह से हमने तदबीर की युसुफ़ के लिये।"

यह एक ऐसी तदबीर थी जिसमें तौरिये का सा अंदाज़ था और इससे मक़सूद किसी को नुक़सान पहुँचाना नहीं बल्कि उस पूरे ख़ानदान को आपस में मिलाना था। इस तदबीर की ज़िम्मेदारी अल्लाह ने खुद ली है कि हज़रत युसुफ़ ने अपनी तरफ़ से ऐसा नहीं किया था बल्कि अल्लाह ने आपके लिये यह एक राह निकाली थी। यह वज़ाहत इसलिये ज़रूरी थी ताकि किसी के ज़हन में यह अश्काल (त्रुटी) पैदा ना हो कि ऐसी तदबीर इख्तियार करना तो शाने नबुवत के मनाफ़ी है। यहाँ पर यह नुक्ता लायक़-ए-तवज्जो है कि अल्लाह तआला का इख्तियार भी मुतलक़ है और उसका इल्म भी हर शय पर मुहीत है। अल्लाह को तो इल्म था कि यह आरज़ी सा मामला है और इससे किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

مَا كَانَ لِيَاۡخُذَ اَخَاهُ فِیۡ دِيۡنِ الۡمَلِكِ اِلَّاۤ اَنۡ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ

"आपके लिये मुमकिन नहीं था कि अपने भाई को रोकते बादशाह के क़ानून के मुताबिक़ सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे।"

लफ्ज़ "दीन" की तारीफ़ (definition) के ऐतबार से क़ुरान की यह आयत बहुत अहम है। यहाँ دِيۡنِ الۡمَلِكِ (बादशाह के दीन) से मुराद वह निज़ाम है जिसके तहत बादशाह उस पूरे मुल्क तो चला रहा था, जिसमें बादशाह इक़तदारे आला (sovereignty) का मालिक था। उसका इख्तियार मुतलक़ था, उसका हर हुक्म क़ानून था और पूरा निज़ामे सल्तनत

व ममलिकत उसके ताबेअ था। इस हवाले से “दीनुल्लाह” की इस्तलाह बहुत आसानी से वाज़ेह हो जाती है। चुनाँचे अगर अल्लाह के इक़तदार (sovereignty) और इख्तियार मुतलक़ को तस्लीम करके पूरा निज़ामे ज़िन्दगी उसके ताबेअ कर दिया जाए तो यही “दीनुल्लाह” का अमली ज़हूर होगा। यही वह कैफ़ियत थी जो “दीनुल्लाह” के गलबे के बाद जज़ीरा नुमाए अरब में पैदा हुई थी और जिसकी गवाही सूरतुल नस्र में इस तरह दी गई है: {اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ} (आयत 1) { وَرَاَيۡتَ النَّاسَ يَدۡخُلُوۡنَ فِىۡ دِيۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا } (आयत 2)। इसी तरह आज का दीन जिसे अवाम की फ़लाह का ज़ामिन क़रार दिया जा रहा है “दीनुल जम्हूर” है। इस दीन या निज़ाम में क़ानून साज़ी का इख्तियार जम्हूर यानि अवाम या अवाम के नुमाइंदों को हासिल है, वह जिसे चाहें जायज़ क़रार दें और जिसे चाहें नाजायज़, और यही सबसे बड़ा कुफ़्र और शिर्क है।

बहरहाल उस वक़्त मिस्र में बादशाही निज़ाम राएज़ था जिसको हज़रत युसुफ़ अलै. बदल नहीं सकते थे, क्योंकि आप बादशाह तो नहीं थे। आपको जो इख्तियार हासिल था वह उसी निज़ाम के मुताबिक़ अपने शौबे और महकमे की हद तक था जिसके वह इंचार्ज थे। इसी लिये अल्लाह तआला ने आपके लिये यह तदबीर निकाली। आपके भाइयों से पहले यह इक़रार करा लिया गया कि जिसके सामान से वह प्याला बरामद होगा, सज़ा के तौर पर उसे खुद ही गुलाम बनना पड़ेगा और इस तरह हज़रत युसुफ़ के लिये जवाज़ पैदा हो गया कि वह अपने भाई को अपने पास रोक सकें।

نَرۡفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنۡ نَّشَآءُ ؕ وَفَوۡقَ كُلِّ ذِىۡ عِلۡمٍ عَلِيۡمٌ ۝٧٦

“हम दर्जे बुलंद करते हैं जिसके चाहते हैं। और हर साहिबे इल्म के ऊपर कोई और साहिबे इल्म भी है।”

यानि इल्म के लिहाज़ से उलमा के दरजात हैं। हर आलिम के ऊपर उससे बड़ा आलिम है और यह दरजात अल्लाह तआला की ज़ात पर जाकर इख्तताम पज़ीर होते हैं, जो सबसे बड़ा आलिम है।

आयत 77

قَالُوۡۤا اِنۡ يَّسۡرِقۡ فَقَدۡ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنۡ قَبۡلُ ۚ

“उन्होंने कहा कि अगर इसने चोरी की है तो इससे पहले इसका भाई भी चोरी कर चुका है।”

बिरादराने युसुफ़ की तबीयत का हल्कापन मुलाहिज़ा हो कि इस पर उन्होंने फ़ौरन कहा कि अगर इसने चोरी की है तो इससे यह बईद नहीं था, क्योंकि एक ज़माने में इसके माँजाए भाई (युसुफ़) ने भी इसी तरह की हरकत की थी।

فَاَسَرَّهَا يُوۡسُفُ فِىۡ نَفۡسِهٖ وَلَمۡ يُبۡدِهَا لَهُمۡ ۚ

“इसको छुपाये रखा युसुफ़ ने अपने जी में और उन पर ज़ाहिर नहीं होने दिया।”

قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝٧٧

"आपने (दिल ही दिल में) कहा कि तुम बजाए खुद बहुत बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह इससे ख़ूब वाक़िफ़ है।"

उन्होंने आप पर भी फ़ौरन चोरी का बेबुनियाद इल्ज़ाम लगा दिया, मगर आपने कमाले हिकमत और सब्र से इसे बरदाश्त किया और इस पर किसी क़िस्म का कोई रद्दे अमल ज़ाहिर नहीं किया।

आयत 78

قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ

"वह कहने लगे: ऐ अज़ीज़ (साहिबे इख्तियार)! इसका वालिद जो है बहुत बूढ़ा है, तो आप इसकी जगह हम में से किसी एक को रख लें।"

اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٧٨

"हम देख रहे हैं कि आप बड़े ही नेक इंसान हैं।"

यह सूरतेहाल उन लोगों के लिये बहुत परेशानकुन थी। बाप का ऐतमाद वह पहले ही खो चुके थे। इस दफ़ा अल्लाह के नाम पर अहद करके बिन यामिन को अपने साथ लाए थे। अब ख्याल आता था कि अगर इसे यहाँ छोड़ कर वापस जाते हैं तो वालिद को जाकर क्या मुँह दिखाएँगे। चुनाँचे वह गिडगिडाने पर आ गए और हज़रत युसुफ़ अलै. की मिन्नत

समाजत करने लगे कि आप बहुत शरीफ़ और नेक इंसान हैं, आप हम में से किसी एक को इसकी जगह अपने पास रख लें, मगर इसको जाने दें।

आयत 79

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝۷۹

"युसुफ़ ने फ़रमाया: अल्लाह की पनाह इस बात से कि हम पकड़ लें किसी और को उस शख्स के बजाए जिसके पास से हमने अपना माल बरामद किया है, यक़ीनन इस सूरत में तो हम ज़ालिम होंगे।"

आयात 80 से 93 तक

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ
اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ
اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ
الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ
الْحٰكِمِيْنَ ۝۸۰ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ
ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا
لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝۸۱ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا

وَالْعِیْرَ الَّتِیْٓ اَقْبَلْنَا فِیْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۸۲﴾ قَالَ بَلْ
سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِیْلٌ ؕ عَسَی اللّٰهُ
اَنْ یَّاْتِیَنِیْ بِهِمْ جَمِیْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۸۳﴾
وَتَوَلّٰی عَنْهُمْ وَقَالَ یٰۤاَسَفٰی عَلٰی یُوْسُفَ وَابْیَضَّتْ
عَیْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِیْمٌ ﴿۸۴﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا
تَذْكُرُ یُوْسُفَ حَتّٰی تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ
الْهٰلِكِیْنَ ﴿۸۵﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَحُزْنِیْۤ اِلَی اللّٰهِ
وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ یٰبَنِیَّ اذْهَبُوْا
فَتَحَسَّسُوْا مِنْ یُّوْسُفَ وَاَخِیْهِ وَلَا تَایْــَٔسُوْا مِنْ
رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا یَایْــَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَیْهِ قَالُوْا یٰۤاَیُّهَا الْعَزِیْزُ
مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ
لَنَا الْكَیْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَیْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَجْزِی
الْمُتَصَدِّقِیْنَ ﴿۸۸﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِیُوْسُفَ
وَاَخِیْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿۸۹﴾ قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ
یُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا یُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِیْ ؗ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ

عَلَيۡنَا ؕ اِنَّهٗ مَنۡ يَّتَّقِ وَيَصۡبِرۡ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيۡعُ اَجۡرَ
الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۹۰﴾ قَالُوۡا تَاللّٰهِ لَقَدۡ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيۡنَا
وَاِنۡ كُنَّا لَخٰطِـئِيۡنَ ﴿۹۱﴾ قَالَ لَا تَثۡرِيۡبَ عَلَيۡكُمُ
الۡيَوۡمَ ؕ يَغۡفِرُ اللّٰهُ لَكُمۡ وَهُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۹۲﴾
اِذۡهَبُوۡا بِقَمِيۡصِىۡ هٰذَا فَاَلۡقُوۡهُ عَلٰى وَجۡهِ اَبِىۡ يَاۡتِ
بَصِيۡرًا ۚ وَاۡتُوۡنِىۡ بِاَهۡلِكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۹۳﴾

आयत 80

فَلَمَّا اسۡتَيۡــَٔسُوۡا مِنۡهُ خَلَصُوۡا نَجِيًّا ؕ

"फिर जब वह युसुफ़ से मायूस हो गए तो अलैहदगी में जाकर मशवरा करने लगे।"

قَالَ كَبِيۡرُهُمۡ اَلَمۡ تَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اَبَاكُمۡ قَدۡ اَخَذَ عَلَيۡكُمۡ مَّوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ

"उनके बड़े ने कहा: क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे वालिद ने तुमसे अल्लाह के नाम पर पुख्ता अहद लिया हुआ है"

उनके सबसे बड़े भाई का नाम यहूदा था, यह वही थे जिन्होंने मशवरा देकर हज़रत युसुफ़ की जान बचाई थी कि

अगर तुम उसकी जान के दरपे हो गए हो तो उसे क़त्ल मत करो बल्कि किसी दूर दराज़ इलाक़े में फेंक आओ।

وَمِنۡ قَبۡلُ مَا فَرَّطۡتُّمۡ فِىۡ يُوۡسُفَ‌ۚ

“और (क्या तुम नहीं जानते) जो ज़्यादती इससे पहले तुम युसुफ़ के मामले में कर चुके हो!”

فَلَنۡ اَبۡرَحَ الۡاَرۡضَ حَتّٰى يَاۡذَنَ لِىۡۤ اَبِىۡۤ

“अब तो मैं इस सरज़मीन से नहीं हिलूँगा, यहाँ तक कि मेरे वालिद खुद मुझे इजाज़त दे दें”

तुम लोग जाकर वालिद साहब को सारा वाक़िया बताओ, फिर अगर वह मुतमईन होकर मुझे इजाज़त दे दें तो तब मैं वापस जाऊँगा वरना मैं इधर ही रहूँगा।

اَوۡ يَحۡكُمَ اللّٰهُ لِىۡ‌ۚ وَهُوَ خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ۝۸۰

“या फिर अल्लाह ही मेरे बारे में कोई फ़ैसला कर दे, और यक़ीनन वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।”

आयत 81

اِرۡجِعُوۡۤا اِلٰٓى اَبِيۡكُمۡ فَقُوۡلُوۡا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابۡنَكَ سَرَقَ‌ۚ

“तुम लौट जाओ अपने वालिद के पास और (जाकर) कहो कि अब्बाजान! आपके बेटे ने चोरी की है।”

وَمَا شَهِدۡنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمۡنَا وَمَا كُنَّا لِلۡغَيۡبِ حٰفِظِيۡنَ ۝۸۱

"और हम गवाही नहीं दे सकते मगर उसी चीज़ की जिसके बारे में हमें इल्म है, और हम गैब के निगेहबान नहीं हैं।"

अब्बाजान! हमने उसे चोरी करते हुए नहीं देखा, हम तो आपको वही हक़ीक़त बता रहे हैं जो हमारे इल्म में आई है और वह यह है कि बिन यामिन ने चोरी की है और इस जुर्म में वह वहाँ पकड़ा गया है।

आयत 82

وَسۡـَٔلِ الۡقَرۡيَةَ الَّتِىۡ كُنَّا فِيۡهَا وَالۡعِيۡرَ الَّتِىۡۤ اَقۡبَلۡنَا فِيۡهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوۡنَ ۝۸۲

"आप इस बस्ती (वालों) से पूछ लें जिसमें हम थे, और उस क़ाफ़िले (वालों) से जिनके साथ हम आए हैं। और हम (अपने बयान में) बिल्कुल सच्चे हैं।"

आप मिस्र से भी हक़ीक़ते हाल मालूम करा सकते हैं या फिर जिस क़ाफ़िले के साथ हम गए थे उसके सब लोग वहाँ मौजूद थे, उनके सामने यह सब कुछ हुआ था। आप उनमें से किसी से भी पूछ लें, वह सारा माजरा आपको बता देंगे।

आयत 83

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ

"आपने फ़रमाया: (नहीं!) बल्कि तुम्हारे लिये तुम्हारे नफ्सों ने एक काम आसान कर दिया है, पस सब्र ही बेहतर है।"

हज़रत याक़ूब अलै. ने यहाँ पर फिर वही फ़िक़रा बोला जो हज़रत युसुफ़ अलै. की मौत के बारे में ख़बर मिलने पर बोला था। उन्हें यक़ीन था कि हक़ीक़त वह नहीं है जो वह बयान कर रहे हैं। उन्होंने कहा: बहरहाल मैं इस पर भी सब्र करूँगा और बखूबी करूँगा।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝83

"हो सकता है अल्लाह उन सबको ले आए मेरे पास। यक़ीनन वह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।"

हज़रत याक़ूब अलै. के लिये हज़रत युसुफ़ अलै. का गम ही क्या कम था कि अब दयारे ग़ैर में दूसरे बेटे के मुसीबत में गिरफ़्तार होने की ख़बर मिल गई, और फिर तीसरे बेटे यहूदा का दुःख इस पर मुस्तज़ाद जिसने मिस्र से वापस आने से इन्कार कर दिया था, मगर फिर भी आप सब्र का दामन थाम रहे। रंज व आलम के सेल बेपनाह का सामना है मगर पाए इस्तक़ामत में लग्ज़िश नहीं आई। बस अल्लाह तआला की ज़ात पर भरोसा है और उसी की रहमत से उम्मीद!

आयत 84

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ

"और आपने उनसे रुख फेर लिया और कहने लगे हाए अफ़सोस युसुफ़ पर! (और रोना शुरू कर दिया)"

وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾

"और सदमे से आपकी आँखे सफ़ेद पड़ गई थीं क्योंकि आप गम को (अंदर ही अंदर) पीते रहते थे।"

हज़रत याक़ूब अलै. को हज़रत युसुफ़ अलै. से बहुत मोहब्बत थी। बेटे के हिज्र व फ़राक (जुदाई) में आपके दिल पर जो गुज़री थी खुद क़ुरान के यह अल्फ़ाज़ इस पर गवाह हैं। यह इंसानी फ़ितरत का एक नागुज़ीर तक़ाज़ा है जिसे यहाँ अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है। किसी के बच्चे का फ़ौत हो जाना यक़ीनन बहुत बड़ा सदमा है, लेकिन बच्चे का गुम हो जाना इससे कई गुना बड़ा सदमा है। फ़ौत होने की सूरत में अपने सामने तजहीज़ व तकफ़ीन (अंतिम संस्कार) होने से, अपने हाथों दफ़न करने और क़ब्र बना लेने से किसी क़दर सब्र का दामन हाथ में रहता है और फिर रफ़्ता-रफ़्ता उस सब्र में सबात (दृढ़ता) पैदा होता जाता है। मगर बच्चे के गुम होने की सूरत में उसकी याद मुस्तक़िल तौर पर इंसान के लिये सोहाने रूह बन जाती है। यह ख्याल किसी वक़्त चैन नहीं लेने देता कि ना मालूम बच्चा ज़िन्दा है या फ़ौत हो गया है। और अगर ज़िन्दा है तो कहाँ है? और किस हाल में है? यही दुःख था जो हज़रत याक़ूब अलै. को अन्दर ही अन्दर खा गया था और रो-रो कर आपकी आँखे सफ़ेद हो चुकी थीं। आपको वही के ज़रिये यह तो बतला दिया गया था कि युसुफ़ ज़िन्दा है और आपसे ज़रूर मिलेंगे, मगर कहाँ हैं? किस हाल

में हैं? और कब मिलेंगे? ये वह सवालात थे जो आपको सालाह साल से मुसलसल कर्ब (दर्द) में मुब्तला किये हुए थे। अब बिन यामिन की जुदाई पर युसुफ़ का गम पूरी शिद्दत से औद (लौट) कर आया।

आयत 85

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

"उन्होंने कहा: (अब्बाजान!) अल्लाह की क़सम आप तो युसुफ़ ही को याद करते रहेँगे यहाँ तक कि आप या तो (इसी सदमे में) घुल जायेंगे या फ़ौत हो जायेंगे।"

आयत 86

قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ

"याक़ूब ने फ़रमाया: मैं अपनी परेशानी और अपने ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूँ"

मैंने तुम लोगों से तो कुछ नहीं कहा, मैंने तुम्हें तो कोई लअन-तअन (तानाकशी) नहीं की, तुमसे तो मैंने कोई बाज़पुर्स नहीं की। यही अल्फ़ाज़ थे जो नबी अकरम ﷺ ने ताएफ़ के दिन अपनी दुआ में इस्तेमाल फ़रमाए थे: ((اَللّٰھُمَّ اِلَیْکَ اَشْکُوْ ضُعْفَ قُوَّتِیْ وَقِلَّۃَ حِیْلَتِیْ وَھَوَانِیْ عَلَی النَّاسِ، اِلٰی مَنْ....تَکِلُنِیْ؟))(6) "ऐ अल्लाह मैं तेरी जनाब में फ़रियाद लेकर आया हूँ अपनी क़ुव्वत की कमज़ोरी और अपने वसाइल की कमी

की, और लोगों के सामने मेरी जो तौहीन हो रही है उसकी। ऐ अल्लाह! तूने मुझे किसके हवाले कर दिया है?.....”

وَاَعۡلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝٨٦

“और मैं अल्लाह की तरफ़ वह कुछ जानता हूँ जो तुम लोग नहीं जानते हो।”

यानि अल्लाह तआला के दिए हुए इल्म से मैं जानता हूँ कि युसुफ़ ज़िन्दा है फ़ौत नहीं हुए।

आयत 87

يٰبَنِيَّ اذۡهَبُوۡا فَتَحَسَّسُوۡا مِنۡ يُّوۡسُفَ وَاَخِيۡهِ وَلَا تَايۡـَٔسُوۡا مِنۡ رَّوۡحِ اللّٰهِ ؕ

“ऐ मेरे बेटों! जाओ और तलाश करो युसुफ़ को भी और उसके भाई को भी, और अल्लाह की रहमत से मायूस ना होना।”

اِنَّهٗ لَا يَايۡـَٔسُ مِنۡ رَّوۡحِ اللّٰهِ اِلَّا الۡقَوۡمُ الۡكٰفِرُوۡنَ ۝٨٧

“यक़ीनन अल्लाह की रहमत से मायूस तो बस काफ़िर ही होते हैं।”

साहिबे ईमान लोग कभी अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते।

आयत 88

فَلَمَّا دَخَلُوۡا عَلَيۡهِ

"फिर जब वह लोग युसुफ़ के यहाँ पहुँचे"

अगले साल जब वह लोग अपने वालिद के हुक्म के मुताबिक़ मिस्र पहुँचे और फिर हज़रत युसुफ़ के सामने पेश हुए।

قَالُوۡا يٰۤاَيُّهَا الۡعَزِيۡزُ مَسَّنَا وَاَهۡلَنَا الضُّرُّ

"उन्होंने कहा: ऐ अज़ीज़ (साहिबे इख्तियार)! हम पर और हमारे अहलो अयाल पर बड़ी सख्ती आ गई है"

कई साल से लगातार क़हत का समां था। आहिस्ता-आहिस्ता उसके असरात ज़्यादा शिद्दत के साथ ज़ाहिर हो रहे होंगे। भेड़-बकरियाँ भी ख़त्म हो चुकी होंगी। अब तो उनकी ऊन भी नहीं होगी जो अनाज की क़ीमत के एवज दे सकें।

وَجِئۡنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزۡجٰىةٍ فَاَوۡفِ لَنَا الۡكَيۡلَ

"और हम बहुत हक़ीर सी पूंजी लेकर आए हैं, लेकिन (इसके बावजूद) आप हमारे लिये पैमाने पूरे भर कर दीजिये"

इस दफ़ा हम जो चीज़ें गल्ले की क़ीमत अदा करने के लिये लेकर आए हैं वह बहुत कम और नाक़िस हैं। हम जानते हैं कि इनसे गल्ले की क़ीमत पूरी नहीं हो सकती।

وَتَصَدَّقۡ عَلَيۡنَا ؕ

"और हमें खैरात भी दीजिये।"

अपने इन्तहाई ख़राब हालात की वजह से हम चूँकि खैरात के मुस्तहिक़ हो चुके हैं, इसलिये आपसे दरख्वास्त है कि इस दफ़ा कुछ गल्ला आप हमें खैरात में भी दें।

اِنَّ اللّٰهَ يَجۡزِى الۡمُتَصَدِّقِيۡنَ ۝۸۸

"यक़ीनन अल्लाह सदक़ा देने वालों को जज़ा देता है।"

चूँकि हज़रत युसुफ़ अलै. के लिये यह सारी सूरतेहाल बहुत रक़्तअंगेज़ (दयनीय) थी, इसलिये आप मज़ीद ज़ब्त नहीं कर सके और आपने उन्हें अपने बारे में बताने का फ़ैसला कर लिया।

आयत 89

قَالَ هَلۡ عَلِمۡتُمۡ مَّا فَعَلۡتُمۡ بِيُوۡسُفَ وَاَخِيۡهِ اِذۡ اَنۡتُمۡ جٰهِلُوۡنَ ۝۸۹

"आपने पूछा: क्या तुम लोगों को याद है कि तुमने क्या किया था युसुफ़ और उसके भाई के साथ जबकि तुम नादान थे!"

आपका अपने भाईयों से यह सवाल करना गोया अल्लाह तआला के इस वादे का हर्फ़-ब-हर्फ़ अयफ़ा (प्रदर्शन) था जिसका ज़िक्र सूरत के आग़ाज़ में इन अल्फ़ाज़ में हुआ था: {وَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمۡ بِاَمۡرِهِمۡ هٰذَا وَهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ} (आयत 15)। यह तब की बात है जब वह सब भाई मिल कर आपको बावली में फेंकने की तैयारी कर रहे थे। अल्लाह तआला ने उस वक़्त इन अल्फ़ाज़ में आपके दिल पर इल्हाम किया था कि एक वक़्त आएगा जब आप अपने भाईयों को यह बात ज़रूर जतलायेंगे, और यह ऐसे वक़्त और ऐसी सूरतेहाल में होगा जब यह बात उनके वहम व गुमान में भी नहीं होगी।

आयत 90

قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ۭ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ

"उन्होंने कहा: तो क्या आप युसुफ़ हैं? युसुफ़ ने फ़रमाया: हाँ! मैं युसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है"

قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۭ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۹۰

"अल्लाह ने हम पर बड़ा अहसान किया है। यक़ीनन जो शख्स तक़वा की रविश इख्तियार करता है और सब्र करता है तो अल्लाह ऐसे नेकोकारों के अज्र को ज़ाया नहीं करता।"

आयत 91

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِــِٕيْنَ ۝۹۱

"उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने आपको हम पर फज़ीलत बख्शी है, यक़ीनन हम ही खताकार थे।"

यक़ीनन हम खताकार हैं, बिलाशुबह ज़ुल्म व ज़्यादती के मुरतकिब हम ही हुए थे।

आयत 92

قَالَ لَا تَثۡرِيۡبَ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ ؕ

"युसुफ़ ने फ़रमाया: आज के दिन तुम लोगों पर कोई मलामत नहीं।"

यह इस क़दर मामूली बात नहीं थी जिसे एक फ़िक़रे में ख़त्म कर दिया जाता, मगर हज़रत युसुफ़ अलै. की शख्सियत के तरफ़अ (पदोन्नति) और अख्लाक़ की अज़मत की दलील है कि आपने अपने उन खताकार भाईयों को फ़ौरन ग़ैर मशरूत (unconditional) तौर पर माफ़ कर दिया।

यहाँ ये बात भी नोट कर लें कि नबी अकरम ﷺ ने फ़तह मक्का के मौक़े पर अपने मुखाल्फ़ीन, जिनके जराएम (जुर्मों) की फ़ेहरिस्त बड़ी तवील और संगीन थी, को माफ़ करते हुए हज़रत युसुफ़ अलै. के इसी क़ौल का तज़किरा किया था। आपने फ़रमाया: ((اَنَا اَقُوْلُ کَمَا قَالَ اَخِیْ یُوْسُفُ: لَا تَثْرِیْبَ عَلَیْکُمُ الْیَوْمَ)) "मैं आज (तुम्हारे बारे में) वही कहूँगा जो मेरे भाई हज़रत युसुफ़ अलै. ने (अपने भाईयों से) कहा था: (जाओ) तुम पर आज कोई गिरफ़्त नहीं है!"

يَغۡفِرُ اللّٰهُ لَكُمۡ ۫ وَهُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۹۲﴾

"अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, और वह तमाम रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाला है।"

आयत 93

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ

"तुम मेरी यह क़मीज़ ले जाओ और (जाकर) इसे मेरे वालिद के चेहरे पर डाल दो, आपकी बसारत लौट आएगी।"

وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾

"और तुम ले आओ मेरे पास अपने तमाम अहल खाना (घर वालों) को।"

आयात 94 से 101 तक

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ
يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ
ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى
وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ
مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ
لَكُمْ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا
عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ
شَاۗءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ۭ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ

وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ

مِنْ قَبْلُ ۡ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۭ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ

اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَاۗءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ

اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ

لِّمَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝۱۰۰ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ

مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ

تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝۱۰۱

आयत 94

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ۝۹۴

"और जब क़ाफ़िला चला (मिस्र से तो) उनके वालिद ने फ़रमाया: मुझे युसुफ़ की ख़ुशबू आ रही है, अगर तुम लोग यह ना कहो कि मैं सठिया गया हूँ।"

यहाँ पर यह बात क़ाबिले गौर है कि ज्योंहि हज़रत युसुफ़ अलै. की क़मीज़ ले कर क़ाफ़िला मिस्र से चला उसी लम्हे कनआन में हज़रत याक़ूब अलै. को अपने बेटे की ख़ुशबू पहुँच गई। मगर इससे पहले एक तवील अरसे तक आपने अपने

बेटे के हिज्र में रो-रो कर अपनी आँखे सफ़ेद कर लीं, मगर यह ख़ुशबू नहीं आई। इससे यह नुक्ता वाज़ेह होता है कि कोई नबी हो या वली, किसी मौज्ज़े या करामात का ज़हूर किसी भी शख्सियत का ज़ाती कमाल नहीं है, बल्कि यह अल्लाह तआला की ख़ास इनायत है। वह जिसको, जिस वक़्त जो इल्म चाहे अता फ़रमा दे या उसके हाथों जो चाहे दिखा दे। जैसे एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ि. को मस्जिदे नबवी में ख़ुत्बे के दौरान अल्लाह तआला ने शाम के इलाक़े में वाक़ेअ उस मैदाने जंग का नक़्शा दिखा दिया जहाँ उस वक़्त इस्लामी अफ़वाज़ बरसर पैकार थीं, और आपने फ़ौज के कमान्डर सारया को एक हरबी तदबीर इख्तियार करने की बा-आवाज़े बुलंद तलक़ीन फ़रमाई। जनाब सारया ने मैदाने जंग में हज़रत उमर रज़ि. की आवाज़ सुनी और आपकी हिदायत पर अमल किया। लेकिन इसका यह मतलब हरगीज़ नहीं कि हज़रत उमर रज़ि. को इख्तियार था कि जब चाहते ऐसा मंज़र देख लेते।

आयत 95

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ۝۹۵

"उन्होंने (घरवालों) ने कहा: अल्लाह की क़सम! आप तो अपने उसी पुराने खब्त (धुन) में मुबतला हैं।"

आपको शुरू ही से यह वहम है कि युसुफ़ ज़िन्दा है और आपको उसके दोबारा मिलने का यक़ीन है। यह आपके ज़हन पर उसी वहम के ग़लबे का असर है जो आप इस तरह की बातें कर रहे हैं। वही पुराने ख्यालात युसुफ़ की खुशबू बन कर आपके दिमाग़ में आ रहे हैं।

आयत 96

فَلَمَّآ اَنۡ جَآءَ الۡبَشِيۡرُ اَلۡقٰٮهُ عَلٰى وَجۡهِهٖ فَارۡتَدَّ بَصِيۡرًا ۚ

"तो जब आया बशारत देने वाला और उसने डाला उस (क़मीज़) को याक़ूब के चेहरे पर तो आप फिर से हो गए देखने वाले।"

युसुफ़ अलै. की क़मीज़ चेहरे पर डालते ही हज़रत याक़ूब अलै. की बशारत लौट आई। यहाँ यह बात क़ाबिले ज़िक्र है कि हज़रत याक़ूब अलै. के सामने ज़िन्दगी का सबसे अन्दुहनाक (भयानक) गम भी हज़रत युसुफ़ अलै. के कुरते ही की सूरत में सामने आया था जब बिरादाराने युसुफ़ ने उस पर खून लगा कर उनके सामने पेश कर दिया था कि युसुफ़ को भेड़िया खा गया और अब ज़िंदगी की सबसे बड़ी ख़ुशी भी युसुफ़ के कुरते ही की सूरत में नमूदार हो गई।

قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكُمۡ ۚ اِنِّىۡۤ اَعۡلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۞

"आपने फ़रमाया: क्या मैं तुमसे कहता नहीं था कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से उन चीज़ों का इल्म है जो तुम नहीं जानते?"

आयत 97

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾

"उन्होंने कहा: अब्बाजान! हमारे लिये हमारे गुनाहों की मगफ़िरत तलब कीजिये, यक़ीनन हम ही खताकार थे।"

आयत 98

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

"आपने फ़रमाया: अनक़रीब मैं मगफ़िरत तलब करूँगा तुम्हारे लिये अपने रब से, यक़ीनन वही है बख्शीश वाला, बहुत रहम करने वाला।"

यहाँ पर "سَوْفَ" का लफ्ज़ बहुत अहम है। यानि आपने फ़ौरी तौर पर उनके लिये इस्तगफ़ार नहीं किया बल्कि वादा किया कि मैं अनक़रीब तुम लोगों के लिये अपने रब से इस्तगफ़ार करूँगा। इसका मतलब यह है कि अभी अपने बेटों के बारे में आपके दिल में रंज व गुस्सा बरक़रार था। शायद आपका ख्याल हो कि मैं युसुफ़ से मिल कर सारी तफ़सीलात मालूम करूँगा, इसके बाद जब तमाम मामलात की सफ़ाई हो जाएगी तो फिर मैं अपने रब से इन के लिये माफ़ी की दरख्वास्त करूँगा।

आयत 99

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ

"फिर जब वह सब युसुफ़ के पास पहुँच गए तो उन्होंने जगह दी अपने पास अपने वालिदैन को"

कनआन से चलकर बनी इसराइल का यह पूरा ख़ानदान जब हज़रत युसुफ़ अलै. के पास मिस्र पहुँचा तो आपने ख़ुसूसी ऐज़ाज़ के साथ उनका इस्तक़बाल किया और अपने वालिदैन को अपने पास इम्तियाज़ी नाशिस्तें पेश कीं।

وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

"और कहा कि अब आप लोग मिस्र में दाख़िल हो जाएँ, अल्लाह ने चाहा तो पूरे अमन व चैन के साथ (यहाँ रहें)।"

अब आप लोगों को कोई परेशानी नहीं होगी। अगर अल्लाह ने चाहा तो यहाँ आपके लिये अमन व चैन और सुकून व राहत ही है।

आयत 100

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ

"और आपने अपने वालिदैन को ऊँचे तख़्त पर बैठाया, और वह सबके सब युसुफ़ के सामने सज्दे में गिर गए।"

यह सज्दा-ए-ताज़ीमी था जो पहली शरीअतों मे जायज़ था। शरीअते मोहम्मदी ﷺ में जहाँ दीन की तकमील हो गई

वहाँ तौहीद का मामला भी आख़री दरजे में तकमील को पहुँचा दिया गया। चुनाँचे यह सज्दा-ए-ताज़ीमी अब हरामे मुतलक़ है। जो लोग अपने बुज़ुर्गों या क़ब्रों को सज्दा करते हैं वह सरीह शिर्क का इरतकाब करते हैं। साबक़ा अम्बिया किराम अलै. के हालात व वाक़िआत से आज इसके लिये कोई दलील अखज़ करना क़तअन दुरुस्त नहीं।

وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ

"और युसुफ़ ने कहा: अब्बाजान! यह है ताबीर उस ख़्वाब की जो मैंने पहले (बचपन में) देखा था"

हज़रत युसुफ़ अलै. के इस ख़्वाब का ज़िक्र आयत 4 में है कि ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं। इसमें ग्यारह भाई सितारे की मानिन्द जबकि वालिदैन सूरज और चाँद के हुक्म में हैं।

قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا

"मेरे रब ने उसको सच्चा कर दिखाया।"

وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ

"और उसने मुझ पर बहुत अहसान किया जब मुझे क़ैदखाने से निकलवाया"

وَجَاۗءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ

"और आप लोगों को (यहाँ) ले आया सहरा से"

आप लोगों को सहरा की पुर मशक्क़त ज़िन्दगी से निजात दिला कर यहाँ मिस्र के मुतमद्दिन और तरक्क़ी याफ्ता माहौल में पहुँचा दिया, जहाँ ज़िंदगी की हर सहुलत मयस्सर है।

مِنۢ بَعۡدِ اَنۡ نَّزَغَ الشَّيۡطٰنُ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَ اِخۡوَتِىۡ‌ؕ

"इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान दुश्मनी डाल दी थी।"

اِنَّ رَبِّىۡ لَطِيۡفٌ لِّمَا يَشَآءُ‌ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡحَكِيۡمُ ۝۱۰۰

"यक़ीनन मेरा रब ग़ैर महसूस तौर पर तदबीर करता है जो चाहता है। यक़ीनन वही है हर शय का इल्म रखने वाला, हिकमत वाला।"

अल्लाह तआला अपनी मशियत के मुताबिक़ बारीक बीनी से तदबीर करता है और उसकी तदबीर बिलआखिर कामयाब होती है। इसके बाद हज़रत युसुफ़ अलै. अल्लाह के हुज़ूर दुआ करते हैं:

आयत 101

رَبِّ قَدۡ اٰتَيۡتَنِىۡ مِنَ الۡمُلۡكِ وَعَلَّمۡتَنِىۡ مِنۡ تَاۡوِيۡلِ الۡاَحَادِيۡثِ‌ۚ

"ऐ मेरे रब! तूने मुझे हुकूमत भी अता की है और मुझे ख़्वाबों की ताबीर (या मामला फ़हमी) का इल्म भी सिखाया है।"

فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ

"ऐ वह हस्ती जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है, तू ही मेरा कारसाज़ है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी।"

تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۱۰۱

"मुझे वफ़ात दीजियो फ़रमाबदारी की हालत में और मुझे शामिल कर दीजियो अपने सालेह बन्दों में।"

आयात 102 से 111 तक

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۱۰۲ وَمَآ
اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۱۰۳ وَمَا
تَسْـَٔــلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۱۰۴
وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا
وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۱۰۵ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ
اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ۱۰۶ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ
مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا

يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰى
بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا
نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي
الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا
اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَاۗءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاۗءُ ۭ وَلَا
يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ
قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۭ مَا كَانَ حَدِيْثًا
يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ
كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾ۧ

आयत 102

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ

"ये हैं गैब की ख़बरों में से जो हम वही करते हैं (ऐ मोहम्मद صلى الله عليه وسلم) आपकी तरफ़।"

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝١٠٢

"और आप उनके पास मौजूद नहीं थे जब उन्होंने इत्तेफ़ाक़े राय किया था अपने मामले पर और जब वह लोग साज़िश कर रहे थे।"

आयत 103

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٣

"और बहुत से लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं, चाहे आप कितनी ही ख्वाहिश रखें।"

इन मुन्करीने हक़ ने अपनी तरफ़ से एक सवाल किया था, हमने इसका मुफ़स्सल (विस्तृत) जवाब दे दिया है। मगर इसका यह मतलब नहीं है कि इस क़दर उम्दा और ख़ूबसूरत जवाब पाकर वह लोग ईमान भी ले आयेंगे। नहीं ऐसा नहीं होगा। इनमें से अक्सर लोग़ आप ﷺ की शदीद ख्वाहिश के बावजूद भी ईमान नहीं लाएंगे।

आयत 104

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٤ۧ

"और (ऐ नबी ﷺ!) आप इस पर इनसे कोई अज्र तो नहीं माँग रहे, यह (क़ुरान) तो तमाम जहाँ वालों के लिये एक याददिहानी है।"

आयत 105

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۝١٠٥

"और कितनी ही निशानियाँ हैं आसमानों और ज़मीन में जिन पर से ये गुज़रते रहते हैं, लेकिन ये उनसे ऐराज़ ही करते हैं।"

ये लोग ज़मीन व आसमान की वुसअतों (extensions) में अल्लाह तआला की बेशुमार निशानियों को बार-बार देखते हैं मगर कभी इन पर गौर करके सबक़ हासिल नहीं करते।

आयत 106

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ۝١٠٦

"और इनमें से अक्सर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं रखते मगर इस तरह कि (किसी ना किसी नौअ का) शिर्क भी करते हैं।"

ये आयत हमारे लिये बहुत ज़्यादा लायक़-ए-तवज्जो है और हम सबको इस पर बहुत गौर व खौज़ करने की ज़रूरत है। शिर्क का मामला उन लोगों का तो बिल्कुल वाज़ेह है जो एक अल्लाह के साथ बेशुमार दूसरे मअबूदों पर ईमान रखते हैं और मुख्तलिफ़ नामों से उनकी पूजा करते हैं। लेकिन जो लोग खुद को मुवह्हिद (Monotheism) समझते हैं और अपने ख्याल में वह इम्कानी हद तक मुवह्हिद होते भी हैं, बसा औक़ात ग़ैर शऊरी तौर पर वह भी किसी ना किसी

नौअ (type) के शिर्क में मुलव्विस हो जाते हैं। इस सूरतेहाल को समझने के लिये बड़ी गहरी बसीरत की ज़रूरत है, और ऐसी बसीरत और ऐसा इल्म हासिल करना हर साहिबे शऊर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ताकि वह खुद को इस मोहलक (घातक) और तबाहकुन गुनाह से बचा सके।

शिर्क को क़ुरान मजीद में बदतरीन गुनाह और सबसे बड़ा जुर्म क़रार दिया गया है। इस गुनाह की शिद्दत का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि सूरतुन्निसा में वह आयत दो मरतबा आई है जिसमें शिर्क का इरतकाब (commit) करने वाले फ़र्द के लिये माफ़ी और मगफ़िरत के किसी भी इम्कान को सख्ती से रद्द कर दिया गया है: {اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ} (आयत 116 व 148) इस ऐतबार से मैं यहाँ पर एक दफ़ा फिर ज़िक्र करना ज़रूरी समझता हूँ कि “हक़ीक़त व अक़साम शिर्क” के मौज़ू पर मेरी छ: घंटे की तक़ारीर की रिकार्डिंग आप ज़रूर सुनें (अब इसी नाम से एक किताब भी दस्तयाब है, जिसका मुताअला कर लें) और समझने की कोशिश करें कि शिर्क की हक़ीक़त और इसकी अक़साम क्या है? माज़ी में शिर्क की क्या सूरतें थीं और आज के दौर का सबसे बड़ा शिर्क कौनसा है? शिर्क फ़िल-ज़ात क्या है? शिर्क फ़िल-सिफ़ात क्या है? शिर्क फ़िल-हुक़ूक़ क्या है? नज़रियाती शिर्क क्या है? साइंस में ये शिर्क किस तौर से आया है? क़ौम परस्ती, माद्दा परस्ती, नफ्स परस्ती और दौलत परस्ती किस ऐतबार से शिर्क के ज़ुमरे (श्रेणी) में आती है? कौन-कौन से बड़े शिर्क है जिनमें आज हमारे मुलव्विस होने का इम्कान (संभावना) है? शिर्क के बारे में ये तमाम तफ़सीलात जानना एक बंदा-ए-मुसलमान के लिये इन्तहाई ज़रूरी हैं।

आयत 107

اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ

"क्या वह इससे बेखौफ़ हो चुके हैं कि आ धमके उन पर ढाँप लेने वाली आफ़त अल्लाह के अज़ाब की"

اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۱۰۷

"या (उनको ये डर भी नहीं रहा कि) आ जाए उन पर क़यामत अचानक और उन्हें इसका अहसास तक ना हो!"

आयत 108

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ

"(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये कि ये मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुला रहा हूँ, पूरी बसीरत के साथ, मैं भी और वह लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है।"

यानि मेरा इस रास्ते को इख्तियार करना और फिर इसकी तरफ़ लोगों को दावत देना, यूँही कोई अँधेरे में टामक टोईयाँ मारने के मुतरादिफ़ नहीं है, बल्कि मैं अपनी बसीरते बातिनी के साथ, पूरी सूझ-बूझ और पूरे शऊर के साथ इस रास्ते पर खुद भी चल रहा हूँ और इस रास्ते की तरफ़ दूसरों को भी बुला रहा हूँ। इसी तरह मेरे पैरोकार भी कोई अंधे

बहरे मुक़ल्लिद नहीं हैं बल्कि पूरे शऊर के साथ मेरी पैरवी कर रहे हैं।

आज के दौर में इस शऊरी ईमान की बहुत ज़रूरत है। अगरचे blind faith भी अपनी जगह बहुत क़ीमती चीज़ है और ये भी इंसान की ज़िंदगी और ज़िंदगी की इक़दार में इन्क़लाब ला सकता है, लेकिन आज ज़रूरत चूँकि निज़ाम बदलने की है और निज़ाम पर मआशरे के intelligentsia का तसल्लुत (शासन) है, इसलिये जब तक इस तबक़े के अंदर शऊर और बसीरत वाला ईमान पैदा नहीं होगा, ये निज़ाम तब्दील नहीं हो सकता।

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾

"और अल्लाह पाक है और मैं हरगिज़ शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ।"

आयत 109

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ

"और (ऐ नबी ﷺ!) हम नहीं भेजते रहे आपसे पहले (रसूल बनाकर) मगर मर्दों ही को बस्तियों वालों में से, जिनकी तरफ़ हम वही करते थे।"

यानि आप ﷺ से पहले मुख्तलिफ़ अदवार (समय) में और मुख्तलिफ़ इलाक़ों में जो अंबिया व रुसुल आए वह सब आदमी ही थे और उन ही बस्तियों के रहने वालों में से थे।

اَفَلَمۡ یَسِیۡرُوۡا فِی الۡاَرۡضِ فَیَنۡظُرُوۡا کَیۡفَ کَانَ عَاقِبَۃُ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ ؕ

"तो क्या ये लोग ज़मीन में घूमे-फिरे नहीं हैं कि वह देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले थे।"

ये उन्ही अक़वाम के अंजाम की तरफ़ इशारा है जिनका ज़िक्र अम्बिया अर्रुसुल के तहत क़ुरान में बार-बार आया है।

وَلَدَارُ الۡاٰخِرَۃِ خَیۡرٌ لِّلَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۰۹﴾

"और यक़ीनन आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिये जो तक़वे की रविश इख्तियार करें। तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?"

अगली आयत मुश्किलातुल क़ुरान में से है और इसके बारे में बहुत सी आरा (राय) हैं। मेरे नज़दीक जो राय सहीतर है, सिर्फ़ वह यहाँ बयान की जा रही है।

.

आयत 110

حَتّٰۤی اِذَا اسۡتَیۡـَٔسَ الرُّسُلُ

"यहाँ तक कि जब रसूल मायूस हो गए"

यानि मुतलक़ा क़ौम में जिस क़दर फ़ितरते सलीमा की इस्तेदाद (potential) थी उस लिहाज़ से नताइज सामने आ चुके। उनमें से जिन लोगों ने ईमान लाना था वह ईमान ला

चुके और मज़ीद किसी के ईमान लाने की तवक़्क़ो ना रही। ब-अल्फ़ाज़े दीगर इस चाटी में से जिस क़दर मक्खन निकलना था निकल चुका, अब इसे मज़ीद बिलौने का कोई फ़ायदा नज़र नहीं आ रहा।

وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا

"और लोग यह समझ बैठे कि उनसे झूठ बोला गया था"

यहाँ وَظَنُّوْٓا का फ़ाइल मुतलक़ा क़ौम के लोग हैं, यानि अब तक जो लोग ईमान नहीं लाए थे वह मज़ीद दिलेर हो गए। उन्होंने ये समझा कि ये सब-कुछ वाक़ई झूठ था। क्योंकि अगर सच होता तो इतने अरसे से हमें जो अज़ाब की धमकियाँ मिल रही थीं वह पूरी हो जातीं। हम ईमान भी नहीं लाए और अज़ाब भी नहीं आया तो इसका मतलब ये है कि नबुवत का दावा और अज़ाब के ये डरावे सब झूठ ही था।

جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ

"तो उनको हमारी मदद आ पहुँची"

यानि अम्बिया व रुसुल की दावत और हक़ व बातिल की कशमकश के दौरान हमेशा ऐसा हुआ कि जब दोनों तरफ़ की सोच अपनी-अपनी आखरी हद तक पहुँचती (पैग़म्बर समझते कि अब मज़ीद कोई शख्स ईमान नहीं लाएगा और मुन्किर समझते कि अब कोई अज़ाब वगैरह नहीं आएगा, ये सब ढोंग था) तो ऐन ऐसे मौक़े पर नबियों और रसूलों के पास हमारी तरफ़ से मदद पहुँच जाती।

فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ۭ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١١٠

"पस बचा लिया गया उनको जिनको हमने चाहा। और हमारा अज़ाब फेरा नहीं जा सकता मुजरिम क़ौम से।"

यानि अपने अंबिया व रुसुल के लिये हमारी ये मदद मुन्करीने हक़ पर अज़ाब की सूरत में आती और इस अज़ाब से जिसे हम चाहते बचा लेते, लेकिन इस सिलसिले की अटल हक़ीक़त ये है कि ऐसे मौक़े पर मुजरिमीन पर हमारा अज़ाब आकर ही रहता है। उनकी तरफ़ से इसका रुख किसी तौर से मोड़ा नहीं जा सकता।

आयत 111

لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۭ

"यक़ीनन इन (साबक़ा अक़वाम) के वाक़िआत में होशमंद लोगों के लिये इबरत है।"

مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ

"ये (क़ुरान) ऐसी बात नहीं जिसे गढ़ लिया गया हो, बल्कि ये तो तस्दीक़ (करते हुए आया) है उसकी जो इससे पहले मौजूद है"

यानि ये वाक़िआत तौरात में भी हैं और क़ुरान उन्ही वाक़िआत की तस्दीक़ कर रहा है। हज़रत युसुफ़ अलै. के क़िस्से के सिलसिले में मौलाना अबुल आला मौदूदी रह. ने बहुत उमदगी के साथ तौरात और क़ुरान का तक़ाबली

मुताअला पेश किया है, जिसका खुलासा ये है कि क़ुरान के हुस्ने बयान और इसके हकीमाना अंदाज़ का मैयार इस क़दर बुलंद है कि तौरात में इसका अशरे अशीर (दसवां हिस्सा) भी नहीं है। इसकी वज़ह यह है कि असल तौरात तो गुम हो गई थी। बाद में हाफ़ज़े की मदद से जो तहरीरें मुरत्तब की गईं, इनमें ज़ाहिर है वह मैयार तो पैदा नहीं हो सकता था जो अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िलशुदा तौरात में था।

وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾

"और (इसमें) तफ़सील है हर चीज़ की और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिये जो (इस पर) ईमान लाते हैं।"

यानि वह इल्म जो इस दुनिया में इंसान के लिये ज़रूरी है और वह रहनुमाई जो दुनियवी जिंदगी में उसे दरकार है सब-कुछ इस क़ुरान में मौजूद है।

بارك الله لى ولكم فى القرآن العظيم ونفعنى وايا كم بالآيات والذكر الحكيم۔

❀ ❀ ❀

सूरह रअद

तम्हीदी कलिमात

सूरतुल रअद से मक्की-मदनी सूरतों के ज़ेरे मुताअला ग्रुप के दूसरे ज़ेली ग्रुप का आग़ाज़ हो रहा है। इस ज़ेली ग्रुप में इस सूरत के अलावा सूरह इब्राहीम और सूरतुल हिज्र शामिल हैं। यह तीनों सूरतें निस्बतन सबतन छोटी हैं, जबकि पहले ज़ेली ग्रुप में शामिल तीनों सूरतें इनके मुक़ाबले में तवील थीं। सूरतुल रअद और सूरह इब्राहीम का आपस में जोड़े का ताल्लुक़ है, इन दोनों के मज़ामीन में भी मुशाबहत है और तवालत (आकार) में भी यह तक़रीबन बराबर हैं, अलबत्ता सूरतुल हिज्र मुनफ़रिद है। जहाँ तक सूरतुल रअद के मौज़ू का ताल्लुक़ है यह सूरत "अत्तज़कीर बिआला इल्लाह" पर मुशतमिल है। इसमें अक़वामे गुज़िश्ता का तज़किरा किसी रसूल या क़ौम का नाम लिए बगैर बिल्कुल सरसरी अंदाज़ में आया है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आयात 1 से 7 तक

الٓمّٓرٰ ۟ تِلۡکَ اٰیٰتُ الۡکِتٰبِ ؕ وَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ مِنۡ
رَّبِّکَ الۡحَقُّ وَ لٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱﴾ اَللّٰہُ
الَّذِیۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیۡرِ عَمَدٍ تَرَوۡنَہَا ثُمَّ اسۡتَوٰی
عَلَی الۡعَرۡشِ وَ سَخَّرَ الشَّمۡسَ وَ الۡقَمَرَ ؕ کُلٌّ یَّجۡرِیۡ
لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ یُفَصِّلُ الۡاٰیٰتِ لَعَلَّکُمۡ
بِلِقَآءِ رَبِّکُمۡ تُوۡقِنُوۡنَ ﴿۲﴾ وَ ہُوَ الَّذِیۡ مَدَّ الۡاَرۡضَ
وَ جَعَلَ فِیۡہَا رَوَاسِیَ وَ اَنۡہٰرًا ؕ وَ مِنۡ کُلِّ الثَّمَرٰتِ
جَعَلَ فِیۡہَا زَوۡجَیۡنِ اثۡنَیۡنِ یُغۡشِی الَّیۡلَ النَّہَارَ ؕ اِنَّ
فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّتَفَکَّرُوۡنَ ﴿۳﴾ وَ فِی الۡاَرۡضِ
قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّ جَنّٰتٌ مِّنۡ اَعۡنَابٍ وَّ زَرۡعٌ وَّ نَخِیۡلٌ
صِنۡوَانٌ وَّ غَیۡرُ صِنۡوَانٍ یُّسۡقٰی بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۟ وَ نُفَضِّلُ
بَعۡضَہَا عَلٰی بَعۡضٍ فِی الۡاُکُلِ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ
لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۴﴾ وَ اِنۡ تَعۡجَبۡ فَعَجَبٌ قَوۡلُہُمۡ ءَاِذَا
کُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِیۡ خَلۡقٍ جَدِیۡدٍ ۬ؕ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا
بِرَبِّہِمۡ ۚ وَ اُولٰٓئِکَ الۡاَغۡلٰلُ فِیۡۤ اَعۡنَاقِہِمۡ ۚ وَ اُولٰٓئِکَ
اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ ہُمۡ فِیۡہَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۵﴾ وَ یَسۡتَعۡجِلُوۡنَکَ

بِالسَّیِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ
الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى
ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِیْدُ الْعِقَابِ ۝۶ وَیَقُوْلُ
الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ
اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝۷

आयत 1

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ ؕ

“अलिफ़, लाम, मीम, रा। ये (अल्लाह की) किताब की आतात हैं।”

وَالَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝۱

“और (ऐ नबी ﷺ!) जो चीज़ आप पर नाज़िल की गई है आपके रब की तरफ़ से वह हक़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते (या ईमान लाने वाले नहीं हैं)।”

आयत 2

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا

"अल्लाह ही है जिसने उठाया है आसमानों को बगैर ऐसे सतूनों के जिन्हें तुम देखते हो"

इस कायनात के अन्दर जो बुलन्दियाँ हैं उन्हें सतूनों या किसी तबई सहारे की ज़रूरत नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से बाहमी कशिश का एक अज़ीमुश्शान निज़ाम वज़अ किया गया है, जिसके तहत तमाम कहकशाएँ, सितारे और सय्यारे अपने-अपने मक़ाम पर रह कर अपने-अपने मदार में घूम रहे हैं।

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ

"फिर वह मुतमक्किन हुआ अर्श पर और उसने (मुसलसल) काम में लगा दिया सूरज और चाँद को।"

كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ

"हर एक चल रहा है एक वक़्ते मुअय्यन के लिये।"

यानि इस कायनात की हर चीज़ मुतहर्रिक है, चल रही है, यहाँ पर सुकून और क़याम का कोई तस्सवुर नहीं। दूसरा अहम नुक्ता जो यहाँ बयान हुआ वह यह है कि इस कायनात की हर शय की उम्र या मोहलत मुक़र्रर है। हर सितारे, हर सय्यारे, हर निज़ामे शम्शी और हर कहकशां की मोहलते ज़िन्दगी मुक़र्रर व मुअय्यन है।

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝۲

"वह तदबीर फ़रमाता है अपने अम्र की और तफ़सील बयान करता है अपनी आयात की, ताकि तुम अपने रब की मुलाक़ात का यक़ीन करो।"

आयत 3

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ۭ

"और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और बनाए उसमें लंगर (यानि पहाड़) और नदियाँ।"

अल्लाह तआला ने ज़मीन का तवाज़ुन बरक़रार रखने के लिये इस पर पहाड़ों के खूंटे गाड दिये हैं और पानी की फ़राहमी के लिये दरिया और नदियाँ बहा दी हैं।

وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ

"और उसने हर तरह के फलों में जोड़े बनाए"

जोड़े बनाने के इस क़ानून को अल्लाह तआला ने सूरतुल ज़ारयात आयत 49 में इस तरह बयान फ़रमाया है: {..... وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ} "और हर चीज़ के हमने जोड़े बनाए.....।" गोया यह ज़ौजैन (नर और मादा) की तख्लीक़

और इनका क़ायदा व क़ानून अल्लाह तआला ने इस आलमे खल्क़ के अन्दर एक बाक़ायदा निज़ाम के तौर पर रखा है। यहाँ पर फलों के हवाले से इशारा है कि नबातात में भी नर और मादा का बाक़ायदा निज़ाम मौजूद है। कहीं नर और मादा फूल अलग-अलग होते हैं और कहीं एक ही फूल के अंदर एक हिस्सा नर और एक हिस्सा मादा होता है।

يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ ۭ

"वह ढाँप देता है दिन पर रात को।"

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۳

"यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिये।"

आयत 4

وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَاۗءٍ وَّاحِدٍ ۣ

"और ज़मीन में क़तआत हैं एक-दूसरे से मुत्तसिल और बाग़ात अंगूरों के और खेतियाँ और खजूर के दरख़्त, जड़ों से मिले हुए भी और अलग-अलग भी, इन्हें एक ही पानी से सैराब किया जाता है"

وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ؕ

"(इसके बावजूद) हम किसी को किसी पर फ़ज़ीलत दे देते हैं ज़ायक़े में।"

एक ही ज़मीन में एक ही जड़ से खजूर के दो दरख़्त उगते हैं, दोनों को एक ही पानी से सैराब किया जाता है, लेकिन दोनों के फलों का अपना-अपना ज़ायक़ा होता है।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ④

"यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिये।"

यह अत्तज़कीर बिआला इल्लाह का अंदाज़ है, जिसमें बार-बार अल्लाह की क़ुदरतों, निशानियों और नेअमतों की तरफ़ तवज्जो दिलाई जाती है।

आयत 5

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ؕ

"और अगर तुम्हें तअज्जुब करना है तो क़ाबिले तअज्जुब है इनका ये क़ौल कि क्या जब हम (मर कर) मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम अज़ सरे नौ (दोबारा से) वजूद में आयेंगे?"

यानि कुफ्फ़ार का मरने के बाद दोबारा जी उठने पर तअज्जुब करना, ब-ज़ाते खुद बाइसे तअज्जुब है। जिस अल्लाह ने पहली मर्तबा तुम लोगों को तख्लीक़ किया, पूरी कायनात और इसकी एक-एक चीज़ पुर हिकमत तरीक़े से

बनाई उसके लिये यह तअज्जुब करना कि वह हमें दोबारा कैसे ज़िन्दा करेगा, ये सोच और ये नज़रिया अपनी जगह बहुत ही मज़हकाखेज़ (funny) और बाइसे तअज्जुब है।

أُولَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِرَبِّهِمْ ۖ

"यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया।"

दोबारा जी उठने के अक़ीदे से इनका ये इन्कार दरअसल अल्लाह के वजूद का इन्कार है। उसकी क़ुदरत और उसके अला कुल्ली शयइन क़दीर होने का इन्कार है।

وَأُولَٰٓئِكَ ٱلْأَغْلَٰلُ فِىٓ أَعْنَاقِهِمْ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝٥

"और यही वह लोग हैं जिनकी गर्दनों में तोक़ पड़े हुए हैं, और यही जहन्नमी हैं, उसमें रहेंगे हमेशा-हमेशा।"

आयत 6

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِٱلسَّيِّئَةِ قَبْلَ ٱلْحَسَنَةِ

"और यह लोग जल्दी मचा रहे हैं आपसे बुराई (अज़ाब) के लिये भलाई से पहले"

कुफ़्फ़ारे मक्का हुज़ूर ﷺ से बड़ी जसारत और ढिटाई के साथ बार-बार मुतालबा करते थे कि ले आएँ हम पर वह अज़ाब जिसके बारे में आप हमें रोज़-रोज़ धमकियाँ देते हैं।

وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ

"हालाँकि इनसे पहले (बहुत सी) मिसालें गुज़र चुकी हैं।"

अल्लाह के अज़ाब की बहुत सी इबरतनाक मिसालें गुज़िश्ता अक़वाम की तारीख़ की सूरत में इनके सामने हैं।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ

"और यक़ीनन आपका रब लोगों के हक़ में माफ़ करने वाला है इनके ज़ुल्म के बावजूद।"

यह उसकी रहमत और शाने गफ्फ़ारी का मज़हर है कि इनके मुतालबे के बावजूद और इनके शिर्क व ज़ुल्म में इस हद तक बढ़ जाने के बावजूद अज़ाब भेजने में ताखीर (देर) फ़रमा रहा है।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

"और यक़ीनन आपका रब सख्त सज़ा देने वाला भी है।"

आयत 7

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ

"और काफ़िर लोग कहते हैं कि क्यों नहीं उतारी गई इस शख्स पर कोई निशानी इसके रब की तरफ़ से?"

मुशरिकीने मक्का बार-बार इसी दलील को दोहराते थे कि अगर आप रसूल हैं तो आपके रब की तरफ़ से आपको कोई हिस्सी मौज्ज़ा क्यों नहीं दिया गया?

إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧

"(ऐ नबी ﷺ!) आप तो बस ख़बरदार कर देने वाले हैं और हर क़ौम के लिये एक हादी है।"

जिस तरह हमने हर क़ौम के लिये पैग़म्बर भेजे हैं इसी तरह आपको भी हमने इन लोगों की हिदायत के लिये मबऊस किया है। आपके ज़िम्मे इनकी तब्शीर, तंज़ीर और तज़कीर है। आप ﷺ अपना यह फ़र्ज़ अदा करते रहें।

आयात 8 से 18 तक

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنثٰى وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ
وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِندَهُ بِمِقْدَارٍ ۝٨ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۝٩ سَوَآءٌ
مِّنكُم مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَن جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ
مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝١٠ لَهُ مُعَقِّبٰتٌ
مِّنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللّٰهِ ۗ إِنَّ
اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۗ وَإِذَآ
أَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُم مِّن

دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿۱۱﴾ هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا
وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿ۚ۱۲﴾ وَیُسَبِّحُ
الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَیُرْسِلُ
الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَهُمْ یُجَادِلُوْنَ فِی
اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِیْدُ الْمِحَالِ ﴿ؕ۱۳﴾ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِیْنَ
یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا یَسْتَجِیْبُوْنَ لَهُمْ بِشَیْءٍ اِلَّا
كَبَاسِطِ كَفَّیْهِ اِلَی الْمَآءِ لِیَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ
وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِیْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَلِلّٰهِ یَسْجُدُ مَنْ
فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ
بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾ السجدۃ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِیَآءَ
لَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ
یَسْتَوِی الْاَعْمٰی وَالْبَصِیْرُ ۙ۬ اَمْ هَلْ تَسْتَوِی الظُّلُمٰتُ
وَالنُّوْرُ ۚ۬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ
الْخَلْقُ عَلَیْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ
الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِیَةٌۢ

بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا
يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ
مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا
الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ
فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ
﴿۱۷﴾ؕ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؔ وَالَّذِيْنَ لَمْ
يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا
وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۬ۙ
وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ع

आयत 8

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى

"अल्लाह ख़ूब जानता है कि हर मादा क्या उठाए हुए है"

हर मादा चाहे वह इन्सान है या हैवान, उसके रहम (गर्भाशय) में जो कुछ है अल्लाह के इल्म में है।

وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ

"और (वह जानता है) जिस क़दर रहम सिकुड़ते हैं या बढ़ते हैं।"

जब हमल (गर्भ) ठहर जाता है तो रहम सिकुड़ता है और जब बच्चा बढ़ता है तो उसके बढ़ने से रहम फैलता है। एक-एक मादा के अन्दर होने वाली इस तरह की एक-एक तब्दीली को अल्लाह ख़ूब जानता है।

وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٨

"और हर चीज़ उसके यहाँ अंदाज़े के मुताबिक़ है।"

इस कायनात का पूरा निज़ाम एक तयशुदा हिकमते अमली के तहत चल रहा है जहाँ हर चीज़ की मिक़दार और हर काम के लिये क़ायदा और क़ानून मुक़र्रर है।

आयत 9

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝٩

"वह जानने वाला है गैब और ज़ाहिर का, (वह) बहुत बड़ा, बहुत बुलंदी वाला है।"

आयत 10

سَوَآءٌ مِّنۡكُمۡ مَّنۡ اَسَرَّ الۡقَوۡلَ وَمَنۡ جَهَرَ بِهٖ وَمَنۡ هُوَ مُسۡتَخۡفٍۢ بِالَّيۡلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ⑩

"(उसके इल्म में) बराबर हैं तुम में से जो बात को (दिल में) छुपायें और जो उसे (बुलंद आवाज़ से) ज़ाहिर करें और वह जो रात की तारीकी में छुपे हुए हों और जो दिन की रौशनी में चलते-फिरते हों।"

ग्याब (absent) की सूरत हो या ज़हूर (appearance) का आलम, अल्लाह के इल्म के सामने सब बराबर हैं। हर चीज़ और उसकी हर कैफ़ियत हर आन उसके सामने हाज़िर व मौजूद है।

आयत 11

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖ يَحۡفَظُوۡنَهٗ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ ؕ

"उस (इंसान) के लिये बारी-बारी आने वाले (पहरेदार मुक़र्रर) हैं, वह उसके सामने और उसके पीछे से उसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं अल्लाह के हुक्म से।"

यह मज़मून इससे पहले हम सूरतुल अनआम (आयत 61) में भी पढ़ चुके हैं: {وَيُرۡسِلُ عَلَيۡكُمۡ حَفَظَةً ؕ} कि अल्लाह तआला अपनी तरफ़ से तुम्हारे ऊपर मुहाफ़िज़ भेजता है। अल्लाह के मुक़र्रर करदा ये फ़रिश्ते अल्लाह की मशीयत के मुताबिक़ हर वक़्त इंसान की हिफ़ाज़त करते रहते हैं, हत्ता की उसकी मौत का वक़्त आ पहुँचता है।

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۭ

"यक़ीनन अल्लाह किसी क़ौम की हालात नहीं बदलता, जब तक कि वह खुद नहीं बदल देते उस (कैफ़ियत) को जो उनके दिलों में हैं।"

आप अपनी बातिनी कैफ़ियत बदलेंगे, इसके लिये मेहनत करेंगे तो अल्लाह की तरफ़ से भी आपके मामले में तब्दीली कर दी जाएगी। मौलाना ज़फ़र अली खान ने इस आयत की तर्जुमानी इन ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में की है:

ख़ुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नहीं बदली
ना हो जिसको ख्याल आप अपनी हालत के बदलने का

وَإِذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْۗءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ⑪

"और जब अल्लाह किसी क़ौम के लिये किसी बुरी शय (अज़ाब) का फ़ैसला कर लेता है तो फिर उसको लौटाने वाला कोई नहीं है, और नहीं है उनके लिये अल्लाह के सिवा कोई मददगार।"

आयत 12

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑫ۚ

"वही है जो तुम्हें दिखाता है बिजली (की चमक) खौफ़ से भी और उम्मीद से भी, और वह उठाता है बड़े बोझल बादल।"

गहरे बादलों की गरज-चमक में खौफ़ के साए भी होते हैं और उम्मीद की रौशनी भी कि शायद इस बारिश से फ़सलें लहलहा उठें और हमारी क़हतसाली खुशहाली में बदल जाए। यानि ऐसी सूरतेहाल में खौफ़ व रजाअ (आशा) की कैफ़ियत एक साथ दिलों पर तारी होती है।

आयत 13

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ

"और तस्बीह करती है कड़क उसकी हम्द के साथ और फ़रिश्ते (भी) उसके खौफ़ से"

ये गरज और कड़क की आवाज़ दरअसल अल्लाह की तस्बीह व तहमीद का एक अंदाज़ है।

وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ

"और वह भेजता है कड़कदार बिजलियाँ, फिर वह गिरा देता है उन्हें जिस पर चाहता है"

وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

"और वह (उस वक़्त) अल्लाह के बारे में झगड़ रहे होते हैं। और उसकी पकड़ बहुत सख्त है।"

आयत 14

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۭ

"उसी का पुकारना हक़ है।"

यानि अल्लाह ही एक हस्ती है जिसको पुकारना, जिससे दुआ करना बरहक़ है, क्योंकि एक वही है जो तुम्हारी पुकार को सुनता है, तुम्हारी हाजत को जानता है, तुम्हारी हाजत रवाई करने पर क़ादिर है, इसलिये उसको पुकारना हक़ भी है और सूदमंद (फ़ायदेमंद) भी। उसे छोड कर किसी और को पुकारोगे, चाहे वह कोई फ़रिश्ता हो, वली हो या नबी, कोई तुम्हारी पुकार और फ़रियाद को नहीं सुनेगा, जैसा कि अगली आयत में फ़रमाया गया है, तुम्हारी हर ऐसी पुकार अकारत जाएगी। इस फ़िक़रे का दूसरा मफ़हूम यह भी है कि "उसी की दावत हक़ है।" यानि जिस चीज़ की दावत वह दे रहा है, जिस रास्ते की तरफ़ वह बुला रहा है वही हक़ है।

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ

"और जिनको ये लोग पुकार रहे हैं उसके सिवा, वह इनकी दुआ को किसी तरह भी क़ुबूल नहीं करते"

वह इनकी कोई भी दादरसी नहीं कर सकते।

اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ

"मगर जैसे कोई फैला दे अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ कि वह उसके मुँह तक पहुँच जाए, हालाँकि वह (उसके मुँह) तक पहुँचने वाला नहीं है।"

जैसे अपने हाथ फ़ैलाकर पानी को अपने मुँह की तरफ़ बुलाना एक कारे अबस (व्यर्थ काम) है, इसी तरह किसी ग़ैरुल्लाह को पुकारना, उसके सामने गिडगिडाना और उससे दादरसी की उम्मीद रखना भी कारे अबस है।

وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝۱۴

"और काफ़िरों की दुआ तो बिल्कुल बेकार है।"

ये लोग जो अल्लाह के अलावा किसी और को पुकारते हैं इनकी ये पुकार ला-हासिल है, एक तीर बेहदफ़ (without aim) और सदा बे-सहरा है।

आयत 15

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۝۱۵

"अल्लाह ही को सज्दा करता है जो कोई भी आसमानों में और ज़मीन में है, आमादगी के साथ भी और मजबूरन भी, और उनके साए भी सुबह व शाम (उसी को सज्दा करते हैं)।"

सुबह के वक़्त जब सूरज निकलता है और साए ज़मीन पर लम्बे होकर पड़े होते हैं वह इस हालत में अल्लाह को सज्दा कर रहे होते हैं और इसी तरह शाम को गुरूबे आफ़ताब के वक़्त भी ये साए हालते सज्दा में होते हैं।

आयत 16

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۭ

"(इनसे) पूछिए कौन है आसमानों और ज़मीन का मालिक? कहिये अल्लाह ही है!"

قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ

"कहिये क्या तुमने उसको छोड़ कर ऐसे हिमायती बना लिये हैं जो खुद अपने लिये भी किसी नफ़ा व नुक़सान का इख्तियार नहीं रखते?"

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ڏ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ڬ

"(इनसे) पूछिये क्या बराबर है अँधा और देखने वाला? या क्या बराबर हैं अँधेरे और रौशनी?"

اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۭ

"क्या इन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक ठहरा लिये हैं जिन्होंने तख्लीक़ की है उसकी तख्लीक़ की तरह, तो ये तख्लीक़ उन पर मुशतबह (संदिग्ध) हो गई है?"

यानि इन मुशरिकीन का मामला तो यूँ लगता है जैसे उनके मअबूदों ने भी कुछ मख्लूक़ पैदा कर रखी है और कुछ मख्लूक़ अल्लाह की है। अब वह बेचारे इस शशो-पंज में पड़े हुए हैं कि कौनसी मख्लूक़ को अल्लाह से मंसूब करें और किस-किस को अपने इन मअबूदों की मख्लूक़ मानें! जब ऐसा नहीं है और वह खुद तस्लीम करते हैं कि आसमानों और

ज़मीन में जो कुछ भी है इसका खालिक़ और मालिक अल्लाह है तो फिर अल्लाह को अकेला और वाहिद मअबूद मानने में वह क्यों शकूक व शुब्हात का शिकार हो रहे हैं?

قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝١٦

"कह दीजिये कि अल्लाह ही खालिक़ है हर शय का, और वह है यक्ता (The Only), सब पर हावी।"

आयत 17

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا

"वह आसमान से पानी बरसाता है, फिर तमाम नदियाँ बहने लगती हैं अपनी-अपनी वुसअत के मुताबिक़"

क़ुरान चूँकि हिजाज़ में नाज़िल हो रहा था इसलिये इसमें ज़्यादातर मिसालें भी उसी सरज़मीन से दी गई हैं। इस मिसाल में भी इलाक़ा हिजाज़ के पहाड़ी सिलसिलों और वादियों का ज़िक्र है, कि जब बारिश होती है तो हर वादी में उसकी वुसअत (capacity) के मुताबिक़ सैलाबी कैफ़ियत पैदा हो जाती है। किसी वादी का catchment area ज़्यादा है तो वहाँ ज़्यादा ज़ोरदार सैलाब आ जाता है जिसका कम है वहाँ थोड़ा सैलाब आ जाता है।

فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ

"फिर उठा लाता है सैलाब उभरते झाग को।"

पानी जब ज़ोर से बहता है तो उसके ऊपर झाग सा बन जाता है। लेकिन इस झाग की कोई हक़ीक़त और वक़अत नहीं होती।

وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ

"और जिन (धातुओं) को ये लोग आग पर तपाते हैं ज़ेवर या दूसरी चीज़ें बनाने के लिये उन पर भी इसी तरह का झाग उभरता है।"

كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ؕ

"इसी तरह अल्लाह हक़ व बातिल को टकराता है।"

इसका दूसरा तर्जुमा यूँ होगा: "इसी तरह अल्लाह हक़ व बातिल की मिसाल बयान करता है।"

فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ

"तो जो झाग है वह खुश्क हो कर ज़ाएल हो जाता है।"

झाग की कोई हक़ीक़त और हैसियत नहीं होती, असल नताइज के ऐतबार से इसका होना या ना होना गोया बराबर है।

وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ

"और जो चीज़ लोगों के लिये मुफ़ीद होती है वह ठहर जाती है ज़मीन में।"

सैलाब का पानी ज़मीन में जज़्ब होकर फ़ायदेमंद साबित होता है जबकि झाग ज़ाया हो जाता है, इसी तरह पिघली हुई धात के ऊपर फूला हुआ झाग और मैल-कुचैल फ़ुज़ूल चीज़ है, असल ख़ालिस धात उस झाग के नीचे कठाली की तह में मौजूद होती है जिससे ज़ेवर या कोई दूसरी क़ीमती चीज़ बनाई जाती है।

كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝١٧

"इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है।"

ये आयत कार्ल मार्क्स के dialectical materialism के फ़लसफ़े के हवाले से बहुत अहम है। इस फ़लसफ़े का जितना हिस्सा दुरुस्त है वह इस आयत में मौजूद है। दौरे जदीद के ये जितने भी नज़रिये (theories) हैं इनमें से हर एक में कुछ ना कुछ सच्चाई मौजूद है। डारविन का नज़रिया-ए-इरतक़ाअ (Evolution Theory) हो या फ़्राईड और मार्क्स के नज़रियात, इनमें से कोई भी सौ फ़ीसद गलत नहीं है। बल्कि हक़ीक़त ये है कि इन नज़रियात में गलत और दुरुस्त ख्यालात गडमड हैं। जहाँ तक मार्क्स के नज़रिये जदलियाती मादियत (dialectical) materialism) का ताल्लुक़ है इसके मुताबिक़ किसी मआशरे में एक ख्याल या नज़रिया जन्म लेता है जिसको thesis कहा जाता है। इसके रद्देअमल के तौर पर एंटी थेसिस (antithesis) वजूद में आता है। फिर ये थेसिस और एंटी थेसिस टकराते हैं और इनके टकराने से एक नई शक्ल पैदा होती है जिसे सिंथेसिस (synthesis) कहा जाता है। ये अगरचे इस नज़रिये की बेहतर शक्ल होती है मगर ये भी अपनी जगह कामिल नहीं होती, इसके अंदर

भी नक़ाइस (faults) मौजूद होते हैं। चुनाँचे इसी सिंथेसिस की कोख़ से एक और एंटी थेसिस जन्म लेता है। इनका फिर आपस में इसी तरह टकराव होता है और फिर एक नया सिंथेसिस वजूद में आता है। ये अमल (process) इसी तरह बतदरीज (step by step) आगे बढता चला जाता है। इस तसादुम (टकराव) में जो चीज़ फ़ज़ूल, गलत और बेकार होती है वह ज़ाया होती रहती है, मगर जो इल्म और ख्याल मआशरे और नस्ले इंसानी के लिये फ़ायदेमंद होता है वह किसी ना किस शक्ल में मौजूद रहता है।

दौरे जदीद के बेशतर नज़रिये (theories) ऐसे लोगों की तख्लीक़ हैं जिनके इल्म और सोच का इन्हसार (depend) कुल्ली तौर पर माद्दे (material) पर था। ये लोग रूह और इसकी हक़ीकत से बिल्कुल नाबलद थे। बुनियादी तौर पर यही वजह थी कि इन लोगों के अखज़करदा नताइज अक्सर व बेशतर गलत और गुमराहकुन थे। बहरहाल इस सारे अमल (process) में गलत और बातिल ख्यालात व मफ़रुज़ात (मान्यताएँ) खुद-ब-खुद छटते रहते हैं और नस्ले इंसानी के लिये मुफ़ीद उलूम (useful science) की ततहीर (purification) होती रहती है। सूरतुल अम्बिया में ये हक़ीक़त इस तरह वाज़ेह की गई है: {بَلۡ نَقۡذِفُ بِالۡحَقِّ عَلَى الۡبَاطِلِ فَيَدۡمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ} (आयत 18) “हम दे मारते हैं हक़ को बातिल पर, तो वह बातिल का भेजा निकाल देता है, फिर वह (बातिल) गायब हो जाता है।” हक़ व बातिल और खैर व शर की इस कशमकश के ज़रिये से गोया नस्ले इंसानी तदरीजन तमद्दुन (civilization) और इरतक़ाअ के मराहिल तय करते हुए रफ़्ता-रफ़्ता बेहतरी की तरफ़ आ रही है।

अल्लामा इक़बाल के मुताबिक़ नस्ले इंसानी के लिये कामिल बेहतरी या हतमी कामयाबी अल्लाह तआला के उस पैग़ाम की तामील में पोशीदा है जिसका कामिल अमली नमूना इस दुनिया में पन्द्रह सौ साल पहले नबी आखिरुज़्ज़मान ﷺ ने पेश किया था। इरतक़ाअ-ए-फ़िक्रे इंसानी के सफ़र के नाम पर इंसानी तमद्दुन के छोटे-बड़े तमाम क़ाफ़िले शऊरी या ग़ैरशऊरी तौर पर इसी मीनारे नूर (light house) की तरफ़ रवां-दवां हैं। अगर किसी माहौल में रौशनी की कोई किरण उजाला बिखेरती नज़र आती है तो वह इसी मिन्बा-ए-नूर की मरहूने मन्नत है। और अगर किसी माहौल के हिस्से की तारीकियाँ अभी तक गहरी हैं तो जान लीजिये कि वह अपनी इस फ़ितरी और हतमी मंज़िल से हनूज़ दूर है। इस सिलसिले में इक़बाल के अपने अल्फ़ाज़ मुलाहिज़ा हों:

हर कज़ा बीनी जहाने रंगों बू,
ज़ान्का-ए-अज़ खाकश बरवीद आरज़ू
या ज़नूरे मुस्तफ़ा अव रा बहास्त,
या हनूज़ अंदर तलाशे मुस्तफ़ा अस्त

आयत 18

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰىؔ

“जिन लोगों ने अपने रब की दावत पर लब्बैक कहा उनके लिये भलाई है।”

وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ

"और जिन्होंने उसकी दावत को क़ुबूल नहीं किया, अगर उनके पास हो जो कुछ है ज़मीन में सबका सब और इसके साथ उतना ही और भी तो वह (ये सब कुछ) ज़रूर बदले में दे डालें।"

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ⑱

"यही लोग हैं जिनके लिये बुरा हिसाब है और इनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है।"

यानि इनके हिसाब का जो नतीजा निकलने वाला है वह इनके हक़ में बहुत बुरा होगा।

आयात 19 से 26 तक

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ
اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ⑲ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ
بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ⑳ وَالَّذِيْنَ
يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ
وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ
صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ
بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِيْنَ
يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ
اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ
اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

आयत 19

اَفَمَنۡ يَّعۡلَمُ اَنَّمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ الۡحَـقُّ كَمَنۡ هُوَ اَعۡمٰى ؕ

"(ऐ नबी ﷺ!) क्या वह शख्स जो जानता है कि जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया वह हक़ है, भला उस जैसा हो सकता है जो अँधा है?"

اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الۡاَلۡبَابِ ۙ‏ ﴿۱۹﴾

"यक़ीनन नसीहत तो अक़्ल वाले ही हासिल करते हैं।"

आयत 20

الَّذِيۡنَ يُوۡفُوۡنَ بِعَهۡدِ اللّٰهِ وَلَا يَنۡقُضُوۡنَ الۡمِيۡثَاقَ ۙ‏ ﴿۲۰﴾

"वह लोग जो अल्लाह के (साथ किये गए) अहद को पूरा करते हैं और क़ौल व क़रार को तोड़ते नहीं हैं।"

क़ब्ल अज़ सूरतुल बक़रह की आयत 177 में भी हम इनसे मिलते-जुलते ये अल्फ़ाज़ पढ़ते आए हैं: {وَالۡمُوۡفُوۡنَ بِعَهۡدِهِمۡ اِذَا عٰهَدُوۡا} अल्लाह के साथ किये गए मुआहिदों में से एक तो वह अहदे अलस्त है (ब-हवाला अल आराफ़ 172) जो हमने आलमे अरवाह में अल्लाह के साथ किया है, फिर हर बंदा-ए-मोमिन का मीसाक़ शरीअत है कि मैं अल्लाह के तमाम अहकामात की तामील करूँगा। फिर अल्लाह का मोमिन के साथ किया गया वह सौदा भी एक अहद है जिसका ज़िक्र

सूरत्तुतौबा आयत 111 में है और जिसके मुताबिक़ अल्लाह ने मोमिनीन के जान व माल जन्नत के बदले ख़रीद लिये हैं। आयत ज़ेरे नज़र में ये उन खुशकिस्मत लोगों का ज़िक्र है जो अल्लाह के साथ किये गए तमाम अहद दरजा-ब-दरजा पूरे करते हैं।

आयत 21

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْۗءَ الْحِسَابِ ۝ۭ21

"और जो लोग जोड़ते हैं उसको जिसको जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, और जो डरते रहते हैं अपने रब से और अंदेशा रखते हैं बुरे हिसाब का।"

वह लोग क़राबत के रिश्तों को जोड़ते हैं, यानि सिला रहमी करते हैं और हिसाबे आख़िरत के नताइज की बुराई से हमेशा खौफ़ज़दा रहते हैं कि उस दिन हिसाब के नाताइज़ मनफ़ी (negative) होने की सूरत में कहीं हमारी शामत ना आ जाए।

आयत 22

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً

"और वह लोग जिन्होंने सब्र किया अपने रब की रज़ा जोई के लिये, और नमाज़ क़ायम की, और खर्च किया उसमें से जो हमने उन्हें दिया था पोशीदा तौर पर भी और ऐलानिया भी"

وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

"और वह भलाई से बुराई को दूर करते हैं, यही लोग हैं जिनके लिये दारे आख़िरत की कामयाबी है।"

वह बुराई का जवाब बुराई से नहीं देते, बल्कि कोई शख्स अगर उनके साथ बुराई करता है तो वह जवाबन उसके साथ भलाई से पेश आते हैं ताकि उसके अन्दर अगर नेकी का जज़्बा मौजूद है तो वह जाग जाए। (اللھم ربنا اجعلنا منھم)

आयत 23

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ

"(आख़िरत का घर) वह बाग़ात हैं हमेशा रहने के, जिनमें वह दाख़िल होंगे और जो भी सालेह होंगे उनके आबा, उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से, और हर दरवाज़े से जन्नत के फ़रिश्ते उनके सामने हाज़िर होंगे।"

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾

आयत 24

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

"(और कहेंगे) सलामती हो आप पर बसबब उसके जो आप लोगों ने सब्र किया, तो क्या ही अच्छा है यह आख़िरत का घर!"

जन्नत में अपने आबा व अजदाद और अहलो अयाल में से सालेह लोगों की मअयत (साथ) गोया अल्लाह की तरफ़ से अपने नेक बन्दों के लिये एक ऐज़ाज़ होगा, और इसके लिये अगर ज़रूरत हुई तो उनके उन रिश्तेदारों के दरजात भी बढ़ा दिये जायेंगे। मगर यहाँ यह नुक्ता बहुत अहम है कि अहले जन्नत के जो क़राबतदार कुफ्फ़ार और मुशरिकीन थे, उनके लिये रिआयत की कोई गुंजाइश नहीं होगी, बल्कि इस रिआयत से सिर्फ़ वह अहले ईमान मुस्तफ़ीज़ होंगे जो "सालेहीन" की baseline पर पहुँच चुके होंगे। यानि सूरतुन्निसा आयत 69 में जो मदारज (दर्जे) बयान हुए हैं उनके ऐतबार से जो मुसलमान कमसे कम दरजे की जन्नत में दाखले का मुस्तहिक़ हो चुका होगा, उसके मदारज (दर्जे) उसके किसी क़राबतदार की वजह से बढ़ा दिये जायेंगे जो जन्नत में आला मरातिब पर फ़ाइज़ होगा। मसलन एक शख्स को जन्नत में बहुत आला मरतबा अता हुआ है, अब उसका

बाप एक सालेह मुसलमान की baseline पर पहुँच कर जन्नत में दाख़िल होने का मुस्तहिक़ तो हो चुका है मगर जन्नत में उसका दर्जा बहुत नीचे है, तो ऐसे शख्स के मरातिब **बढ़ा** कर उसे अपने बेटे के साथ आला दर्जे की जन्नत में पहुँचा दिया जाएगा।

आयत 25

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ

"और (इसके बरअक्स) वह लोग जो तोड़ते हैं अल्लाह के अहद को उसको मज़बूती से बाँधने के बाद और काटते हैं उन (रिश्तों) को जिनको जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद मचाते हैं।"

क़ब्ल अज़ सूरतुल बक़रह आयत 27 में भी हम बैयन ही ये अल्फ़ाज़ पढ़ आए हैं: {وَ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۭ} वहाँ इस हवाले से कुछ वज़ाहत भी हो चुकी है।

اُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْۗءُ الدَّارِ ۝25

"यही लोग हैं जिनके लिये लानत होगी और इनके लिये बुरा घर)जहन्नम (है।"

आयत 26

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

“अल्लाह जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ क़ुशादा कर देता है और जिसे चाहता है नपा-तुला रिज़्क़ देता है।”

وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

“और यह लोग मगन है दुनिया की ज़िन्दगी पर, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है सिवाय थोड़े से फ़ायदे के।”

जो लोग उखरवी ज़िन्दगी के ईनामात के उम्मीदवार नहीं हैं इनकी जुहद व कोशिश की जौलानगाह यही दुनियवी ज़िन्दगी है। उनकी तमामतर सलाहियतें इसी ज़िन्दगी की असाइशों के हसूल में सर्फ़ होती हैं और वह इसकी ज़ेब व ज़ीनत पर फ़रिफ्ता और इसमें पूरी तरह मगन हो जाते हैं। वह अपने इस तर्ज़े अमल पर बहुत खुश और मुतमईन होते हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में एक मताए क़लील व हक़ीर के सिवा कुछ भी नहीं।

आयत 27 से 31 तक

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا

بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾
كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ
لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ
بِالرَّحْمٰنِ ۭ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ
اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ۭ بَلْ لِّلّٰهِ
الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۭ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ
يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا
مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾ۧ

आयत 27

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ

"और कहते हैं यह काफ़िर लोग कि क्यों नहीं उतारी गई इस शख्स पर कोई निशानी इसके रब की तरफ़ से?"

मुशरिकीने मक्का की हठधर्मी मुलाहिज़ा हो, बार-बार उनकी इसी बात और इसी दलील का ज़िक्र हो रहा है कि मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ पर कोई हिस्सी मौज्ज़ा क्यों नहीं उतारा गया?

قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ؁

"आप कह दीजिये कि अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और अपनी तरफ़ हिदायत उसी को देता है जो खुद (उसकी तरफ़) रुजूअ करे।"

जो लोग खुद हिदायत के तालिब होते हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जो होते हैं, वह उन्हें नेअमते हिदायत से सरफ़राज़ फ़रमाता है।

आयत 28

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ

"वह लोग जो ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से मुतमईन होते हैं।"

दिल और रूह के लिये तस्कीन (सुकून) का सबसे बड़ा ज़रिया अल्लाह का ज़िक्र है इसलिये कि इंसान की रूह उसके

दिल की मकीन (दिल में रहती) है और रूह का ताल्लुक़ बराहेरास्त अल्लाह तआला की ज़ात के साथ है। जैसा कि सूरह बनी इसराइल में फ़रमाया गया: {وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۭ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ} (आयत 85) "और (ऐ नबी ﷺ!) यह लोग आपसे रूह के बारे में सवाल करते हैं, आप फ़रमाएँ कि रूह मेरे परवरदिगार के अम्र (हुक्म) में से है।" लिहाज़ा जिस तरह इंसानी जिस्म की हयात का मिम्बा (source) ये ज़मीन है और जिस्म की नशो नुमा (growth) और तक़वियत (ताक़त) का सारा सामान ज़मीन ही से मुहैय्या होता है इसी तरह इंसानी रूह का मिम्बा ज़ाते बारी तआला है और इसकी नशो नुमा और तक़वियत के लिये गिज़ा का सामान भी वहीं से आता है। चुनाँचे रूह अमरुल्लाह (अल्लाह का हुक्म) है और इसकी गिज़ा ज़िक्रुल्लाह और कलामुल्लाह है।

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ۝ۭ28

"आगाह हो जाओ! अल्लाह के ज़िक्र के साथ ही दिल मुतमईन होते हैं।"

दुनियवी मालो-मता और सामाने ऐशो-आसाइश की बहुतात से नफ्स और जिस्म की तस्कीन का सामान तो हो सकता है, यह चीज़ें दिल के सुकून और इत्मिनान का बाइस नहीं बन सकतीं। दिल को यह दौलत नसीब होगी तो अल्लाह के ज़िक्र से होगी।

आयत 29

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۲۹

"जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये उनके लिये मुबारकबाद है और लौटने का बहुत अच्छा मुक़ाम है।"

आयत 30

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۭ

"(ऐ नबी ﷺ!) इसी तरह हमने आपको भेजा है एक ऐसी उम्मत में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं ताकि आप तिलावत करके सुनाएँ इन लोगों को वह (किताब) जो हमने वही की है आपकी तरफ़ दर हालाँकि यह लोग रहमान का इन्कार कर रहे हैं।"

अगरचे अल्लाह तआला का नाम "अर्रहमान" अरब में पहले से मुतारफ़ था मगर मुशरिकीने मक्का "अल्लाह" ही को जानते और मानते थे, इसलिये वह इस नाम से बिदकते थे और अजीब अंदाज़ में पूछते थे कि ये रहमान कौन है? (अल फुरक़ान 60)

قُلۡ هُوَ رَبِّيۡ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

"कह दीजिये कि वह मेरा रब है, उसके सिवा और कोई मअबूद नहीं।"

عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَاِلَيۡهِ مَتَابِ ۝۳۰

"उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी की तरफ़ मेरा लौटना है।"

आयत 31

وَلَوۡ اَنَّ قُرۡاٰنًا سُيِّرَتۡ بِهِ الۡجِبَالُ اَوۡ قُطِّعَتۡ بِهِ الۡاَرۡضُ اَوۡ كُلِّمَ بِهِ الۡمَوۡتٰى ؕ

"और अगर होता कोई ऐसा क़ुरान जिसके ज़रिये से पहाड़ चल पड़ते, या ज़मीन के टुकड़े-टुकड़े हो जाते या कलाम करते उसके ज़रिये मुर्दे (तब भी ये ईमान लाने वाले नहीं थे)।"

यहाँ फिर हिस्सी मौज़्ज़ों के बारे में मुशरिकीन के मुतालबे का जवाब दिया जा रहा है। सूरतुल अनआम में ये मज़मून तफ़सील से गुज़र चुका है। यहाँ फ़रमाया जा रहा है कि अगर हमने कोई ऐसा क़ुरान उतारा होता जिसकी तासीर से तरह-तरह के हिस्सी मौज्ज़ात का ज़हूर होता तब भी ये ईमान लाने वाले नहीं थे। ये क़ुरान हर उस शख्स के लिये सरापा मौज्ज़ा है जो वाक़ई हिदायत का ख्वाहिशमंद है। ये तालिबाने हक़ के दिलों को गुदाज़ करता है, उनको रूह को ताज़गी बख्शता है, उनके ला-शऊर के अन्दर ख्वाबेदा

ईमानी हक़ाइक़ को जगाता है। ऐसे लोग अपनी हिदायत का तमाम सामान इस क़ुरान के अन्दर मौजूद पाते हैं।

بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۭ اَفَلَمْ يَايْـــَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ

“बल्कि इख्तियार तो कुल का कुल अल्लाह के हाथ में है। क्या अहले ईमान इस पर मुतमईन नहीं हो जाते कि अगर अल्लाह चाहता तो तमाम इंसानों को हिदायत दे देता?”

अहले ईमान को तो ये यक़ीन है ना कि अगर अल्लाह चाहता तो दुनिया के तमाम इंसानों को हिदायत दे सकता था, और अगर उसने ऐसा नहीं किया तो ये ज़रूर उसी की मशीयत है। लिहाज़ा इस यक़ीन से उनको तो दिल जमई और इत्मिनान हासिल हो जाना चाहिये।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۭ

“और जो काफ़िर हैं उनको बराबर पहुँचती रहेगी उनके आमाल के सबब कोई ना कोई आफ़त, या उनके घरों के क़रीब उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ जाए।”

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾

"यक़ीनन अल्लाह अपने वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करता।"

इन लोगों के करतूतों की पादाश में इन पर कोई ना कोई आफ़त और मुसीबत नाज़िल होती रहेगी। वह मुसलसल खौफ़ की कैफ़ियत में मुब्तला रहेंगे, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा पूरा हो जाए।

आयात 32 से 37 तक

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ اَفَمَنْ
هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ
شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي
الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى

الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝٣٥ وَالَّذِيْنَ
اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ
الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۭ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ
اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۭ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝٣٦
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ
اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَمَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝٣٧ۧ

आयत 32

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۣ

"और (ऐ नबी ﷺ!) आपसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैंने ढील दी (कुछ अरसे के लिये) काफ़िरों को, फिर मैंने उनको पकड़ लिया।"

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٣٢

"तो कैसा रहा मेरा अज़ाब!"

ज़रा तस्सवुर करें क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह, क़ौमे लूत, क़ौमे शोएब और आले फ़िरऔन के अंजाम का और फ़िर

सोचे कि इन नाफ़रमान क़ौमों की जब गिरफ़्त हुई तो वह किस क़दर इबरतनाक थी।

आयत 33

اَفَمَنْ هُوَ قَآىِٕمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ

"तो क्या वह हस्ती जो हर जान से मुहासबा करने वाली है जो उसने कमाई की है (औरों की तरह हो सकती है?)"

अल्लाह तआला हर आन हर शख्स के साथ मौजूद है और उसकी एक-एक हरकत और उसके एक-एक अमल पर नज़र रखता है। क्या ऐसी क़ुदरत किसी और को हासिल है?

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ ۭ

"और इन्होंने अल्लाह के शरीक बना लिये हैं।"

इन्होंने ऐसी बसीर, खबीर और अला कुल्ली शयइन क़दीर हस्ती के मुक़ाबले में कुछ मअबूद गढ़ लिये हैं, जिनकी कोई हैसियत नहीं।

قُلْ سَمُّوْهُمْ ۭ اَمْ تُنَبِّـــُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ

"आप कहिये! ज़रा इनके नाम तो बताओ! क्या तुम अल्लाह को जताना चाहते हो वह शय जो वह नहीं जानता ज़मीन में?"

यानि अल्लाह जो इस क़दर अलीम और बसीर हस्ती है कि अपने हर बन्दे के हर ख्याल और हर फ़अल (काम) से वाक़िफ़ है, तो तुम लोगों ने जो भी मअबूद बनाए हैं क्या

उनके पास अल्लाह से ज़्यादा इल्म है? क्या तुम अल्लाह को एक नई बात की ख़बर दे रहे हो जिससे वह ना-वाक़िफ़ है?

اَمۡ بِظَاهِرٍ مِّنَ الۡقَوۡلِ ؕ

"या तुम सिर्फ़ सतही सी बात करते हो?"

यानि यूँही जो मुँह में आता है तुम लोग कह डालते हो और इन शरीकों के बारे में तुम्हारे अपने दावे खोखले हैं। तुम्हारे इन दावों की बुनियादों में यक़ीन की पुख्तगी नहीं है। इनके बारे में तुम्हारी सारी बातें सतही नौइयत की हैं, अक़्ली और मन्तक़ी (logical) तौर पर तुम खुद भी उनके क़ायल नहीं हो।

بَلۡ زُيِّنَ لِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مَكۡرُهُمۡ وَصُدُّوۡا عَنِ السَّبِيۡلِ ؕ

"बल्कि इन काफ़िरों के लिये इनकी मक्कारियाँ मुज़य्यन कर दी गई हैं, और वह रोक दिये गए हैं (सीधे) रास्ते से।"

وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ۝٣٣

"और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं है।"

अब गोया इनके दिल उलट दिये गए हैं, इनके दिलों पर मुहर कर दी गई है और इनके आमाल को देखते हुए अल्लाह ने इनकी गुमराही के बारे में आख़री फ़ैसला दे दिया है। अब इनको कोई राहेरास्त पर नहीं ला सकता।

आयत 34

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ

"इनके लिये अज़ाब है दुनिया की ज़िंदगी में भी, और आख़िरत का अज़ाब तो इससे भी ज़्यादा सख्त होगा।"

وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾

"और नहीं होगा कोई भी इनको अल्लाह से बचाने वाला।"

आयत 35

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا دَاۗىِٕمٌ وَّظِلُّهَا ۭ

"मिसाल उस जन्नत की जिसका वादा किया गया है मुत्तक़ियों से, उसके दामन में नदियाँ बहती होंगी, उसके फल भी हमेशा क़ायम रहने वाले होंगे और उसके साये भी।"

تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ڰ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

"यह है अंजाम उन लोगों का जिन्होंने तक़वा की रविश इख्तियार की, और काफ़िरों का अंजाम तो आग है।"

आयत 36

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

"और जिन लोगों को तो हमने किताब दी थी वह खुश हो रहे हैं इस (क़ुरान) से जो (ऐ नबी ﷺ!) आपकी तरफ़ नाज़िल किया गया है।"

यह मदीने के अहले किताब में से नेक सरिश्त लोगों का ज़िक्र है। उनको जब ख़बरें मिलती थीं कि मक्के में आख़री नबी ﷺ का ज़हूर हो चुका है तो वह इन ख़बरों से ख़ुश होते थे।

وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ

"और बाज़ गिरोहों में से कुछ ऐसे भी हैं जो इसके बाज़ हिस्सों का इन्कार करते हैं।"

قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝٣٦

"आप कहिये कि मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह की बंदगी करूँ और उसके साथ शिर्क न करूँ, उसी की तरफ़ मैं बुला रहा हूँ और उसी की तरफ़ मेरा लौटना है।"

आयत 37

وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ

"और इसी तरह हमने इसको उतारा है अरबी में क़ौले फ़ैसल बना कर।"

"हुक्म" ब मायने "फ़ैसला" यानि यह क़ुराने अरबी क़ौले फ़ैसल बन कर आया है। जैसा कि सूरतुल तारिक़ में फ़रमाया है: {اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ} {وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ} (आयात 13-14) "ये कलाम (हक़ को बातिल से) जुदा करने वाला है और कोई बेहुदा बात नहीं है।"

وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۧ ﴿۳۷﴾

"और (ऐ नबी ﷺ!) अगर आपने इनकी ख्वाहिशात की पैरवी की इसके बाद कि आपके पास सही इल्म आ चुका है तो नहीं होगा आपके लिये भी अल्लाह की तरफ़ से ना कोई हिमायती और ना कोई बचाने वाला।"

आयात 38 से 43 तक

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿۳۸﴾ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ

وَيُثۡبِتُ ۚۖ وَعِنۡدَهٗۤ اُمُّ الۡكِتٰبِ ﴿۳۹﴾ وَاِنۡ مَّا نُرِيَنَّكَ
بَعۡضَ الَّذِىۡ نَعِدُهُمۡ اَوۡ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيۡكَ
الۡبَلٰغُ وَعَلَيۡنَا الۡحِسَابُ ﴿۴۰﴾ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّا نَاۡتِى
الۡاَرۡضَ نَـنۡقُصُهَا مِنۡ اَطۡرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحۡكُمُ لَا
مُعَقِّبَ لِحُكۡمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيۡعُ الۡحِسَابِ ﴿۴۱﴾ وَقَدۡ مَكَرَ
الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ فَلِلّٰهِ الۡمَكۡرُ جَمِيۡعًا ؕ يَعۡلَمُ مَا
تَكۡسِبُ كُلُّ نَفۡسٍ ؕ وَسَيَعۡلَمُ الۡكُفّٰرُ لِمَنۡ عُقۡبَى
الدَّارِ ﴿۴۲﴾ وَيَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَسۡتَ مُرۡسَلًا ؕ قُلۡ
كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًاۢ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكُمۡ ۙ وَمَنۡ عِنۡدَهٗ عِلۡمُ
الۡكِتٰبِ ﴿۴۳﴾

आयत 38

وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا رُسُلًا مِّنۡ قَبۡلِكَ وَجَعَلۡنَا لَهُمۡ اَزۡوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ

"और हमने भेजा रसूलों को आपसे पहले भी और हमने बनाईं उनके लिये बीवियाँ भी और औलाद भी।"

आप ﷺ से पहले जितने भी रसूल आए हैं वह सब आम इंसानों की तरह पैदा हुए (सिवाय हज़रत ईसा अलै. के), फिर उन्होंने निकाह भी किये और उनकी औलादें भी हुईं।

وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝۳۸

"और किसी रसूल के लिये मुमकिन नहीं था कि वह कोई निशानी (मौज्ज़ा) ले आता मगर अल्लाह के इज़्न से। हर शय के लिये एक मुक़र्रर वक़्त लिखा हुआ है।"

आयत 39

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ وَيُثْبِتُ ښ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝۳۹

"अल्लाह जिस चीज़ को चाहता है मिटा देता है और (जिस को चाहता है) क़ायम रखता है, और उसी के पास है उम्मुल किताब।"

उम्मुल किताब यानि असल किताब अल्लाह के पास है। सूरतुल ज़ुखरुफ़ में इसके मुताल्लिक़ यूँ फ़रमाया गया है: {وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ} (आयत 4) "और यह असल किताब (यानि लौहे महफ़ूज़) में हमारे पास है जो बड़ी फज़ीलत और हिकमत वाली है।" आप इसे लौहे महफ़ूज़ कहें, उम्मुल किताब कहें या किताबे मकनून कहें, असल क़ुरान इसके अन्दर है। ये क़ुरान जो हमारे पास है ये उसकी मुसद्दक़ा नक़ल है जो अल्लाह तआला ने अपनी ख़ास इनायत और मेहरबानी से हुज़ूर ﷺ की वसातत से हमें दुनिया में अता कर दिया है।

आयत 40

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ

"और ख्वाह हम दिखा दें आपको इसका कुछ हिस्सा जिसकी हम इनको धमकी दे रहे हैं, या हम आपको वफ़ात दे दें"

यानि ये भी हो सकता है कि आपकी ज़िंदगी ही में इनको अज़ाबे इलाही में से कुछ हिस्सा मिल जाए, और ये भी हो सकता है कि आप ﷺ की ज़िन्दगी में इन पर ऐसा वक़्त ना आए, बल्कि अज़ाब के ज़हूर में आने से पहले हम आपको वफ़ात दे दें।

فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝۴۰

"पस आपके ज़िम्मे तो पहुँचाना ही है और हमारे ज़िम्मे हिसाब लेना है।"

आप ﷺ पर हमारा पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी थी, सो आप ﷺ ने ये ज़िम्मेदारी अहसन तरीक़े से अदा कर दी। अब उनको हिदायत देना या ना देना, उन पर अज़ाब भेजना या ना भेजना और उनका हिसाब लेना, ये सब कुछ हमारे ज़िम्मे है और हम ये फ़ैसले अपनी मशियत के मुताबिक़ करेंगे।

आयत 41

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ	*"क्या ये लोग देखते नहीं कि हम ज़मीन को घटाते चले आ रहे हैं इसके किनारों से?"*
وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۭ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝41	*"और अल्लाह ही फ़ैसला करता है, कोई नहीं पीछे डालने वाला उसके हुक्म को, और वह जल्द हिसाब लेने वाला है।"*

ये मज़मून सूरतुल अंबिया की आयत नम्बर 44 में इस तरह बयान हुआ है: {اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ} "क्या ये लोग देखते नहीं कि हम ज़मीन को इसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं, तो क्या अब ये गालिब आने वाले हैं?" ये उस दौर की तरफ़ इशारा है जब मुशरिकीने मक्का ने मक्का के अंदर रसूल अल्लाह ﷺ और मुसलमानों के ख़िलाफ़ दुश्मनी की भट्टी पूरे ज़ोर-शोर से धहका रखी थी और वह लोग इसमें अपने सारे वसाइल इस उम्मीद पर झोंके जा रहे थे कि एक दिन मोहम्मद ﷺ और आपकी इस तहरीक को नीचा दिखा कर रहेँगे। इस सूरतेहाल में इन्हें मक्का के मज़ाफ़ाती इलाक़ों (उम्मुल क़ुराअ व मन हवलहा) के मअरूज़ी हालात के हवाले से मुस्तक़बिल की एक इम्कानी झलक दिखाई जा रही है कि बेशक अभी तक मक्के के अंदर तुम्हारी हिकमते अमली किसी हद तक कामयाब है, लेकिन क्या तुम देख नहीं रहे हो कि मक्के के

आस-पास के क़बाइल के अंदर इस दावत के असर व नफ़ूज़ में ब-तदरीज़ इज़ाफ़ा हो रहा है और इसके मुक़ाबले में तुम्हारा हल्क़ा-ए-असर रोज़-ब-रोज़ सिकुड़ता चला जा रहा है। जैसे क़बीला बनी गिफ़ार के एक नौजवान अबु ज़र रज़ि. ये दावत क़ुबूल करके अपने क़बीले में एक मुबल्लिग़ की हैसियत से वापस गए हैं और आपकी वसातत से ये दावत उस क़बीले में भी पहुँच गई है। यही हाल इर्द-गिर्द के दूसरे क़बाइल का है। इन हालात में क्या तुम्हें नज़र नहीं आ रहा कि ये दावत रफ़्ता-रफ़्ता तुम्हारे चारों तरफ़ से तुम्हारे गिर्द घेरा तंग करती चली जा रही है? अब वह वक़्त बहुत क़रीब नज़र आ रहा है जब तुम्हारे इर्द-गिर्द का माहौल इस्लाम क़ुबूल कर लेगा और तुम लोग इसके दायरा-ए-असर के अंदर महसूर (क़ैद) होकर रह जाओगे।

इस आयत में जिस सूरते हाल का ज़िक्र है इसका अमली मुज़ाहिरा हिजरत के बाद बहुत तेज़ी के साथ सामने आया। हुज़ूर ﷺ ने मदीना तशरीफ़ लाने के बाद एक तरफ़ क़ुरैशे मक्का के लिये उनकी तिजारती शाहराहों को मखदूश (तबाह) बना दिया तो दूसरी तरफ़ मदीना के आस-पास के क़बाइल के साथ सियासी मुआहिदात करके इस पूरे इलाक़े से क़ुरैशे मक्का के असर व रसूख की बिसात लपेट दी। मदीना के मज़ाफ़ात में आबाद बेशतर क़बाइल क़ुरैशे मक्का के हलीफ़ (इत्तेहादी) थे मगर अब इनमें से अक्सर या तो मुसलमानों के हलीफ़ बन गए या इन्होंने गैर-जानिबदार रहने का ऐलान कर दिया। क़ुरैशे मक्का की मआशी नाकाबंदी (economic blockade) और सियासी इन्क़ताअ (political isolation) के लिये रसूल अल्लाह ﷺ के ये अक़दामात इस क़दर मौअस्सर थे कि इसके बाद इन्हें अपने

इर्द-गिर्द से सिकुडती हुई ज़मीन बहुत वाज़ेह अंदाज़ में दिखाई देने लगी।

दरअसल फ़लसफ़ा-ए-सीरत के ऐतबार से ये बहुत अहम मौज़ू है मगर बहुत कम लोगों ने इस पर तव्वजो दी है। मैंने अपनी किताब "मन्हज-ए-इंक़लाब-ए-नबवी ﷺ" में इस पर तफ़सील से बहस की है।

आयत 42

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

"और जो इनसे पहले थे उन्होंने भी बड़ी चालें चली थीं"

अपने-अपने दौर में मुन्करीने हक़ ने अम्बिया व रुसुल की दावते हक़ को रोकने के लिये साज़िशों के ख़ूब जाल फैलाए थे और बड़ी-बड़ी मंसूबा बंदियाँ की थीं।

فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ۭ

"लेकिन सारी की सारी तदबीरें अल्लाह ही के इख्तियार में है।"

अल्लाह तआला ऐसे लोगों की तदबीरों और साज़िशों का मुकम्मल तौर पर इहाता किये हुए है। उसकी मशियत के ख़िलाफ़ इनकी कोई तदबीर कामयाब नहीं हो सकती।

يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۭ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝۴۲

"वह जानता है हर जान जो कुछ कमाती है। और अनक़रीब मालूम हो जाएगा काफ़िरों को कि दारे आख़िरत की कामयाबी किसके लिये है!"

दारे आख़िरत की भलाई और उसका आराम किसके लिये है, इन्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।

आयत 43

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ۭ

"और ये काफ़िर कहते हैं कि आप (अल्लाह के) रसूल नहीं हैं।"

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ

"आप कह दीजिये कि अल्लाह काफ़ी है गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान"

अल्लाह जानता है कि मैं उसका रसूल हूँ और उसका जानना मेरे लिये काफ़ी है।

وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝۴۳

"और जिनके पास किताब का इल्म है (वह भी इस पर शाहिद हैं)।"

मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है कि मैं उसका रसूल हूँ और फिर हर उस शख्स की गवाही जो किताबे आसमानी का इल्म रखता है। अल्लाह तो जानता ही है जिसने मुझे भेजा है और मेरा मामला उसी के साथ है। इसके अलावा ये अहले किताब भी बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। अहले किताब के इस मामले को सूरतुल बक़रह की आयत 146 और सूरतुल अनआम की आयत 20 में इस तरह वाज़ेह फ़रमाया गया है: {يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا

يَعۡرِفُوۡنَ اَبۡنَآءَهُمۡ} कि ये आप ﷺ को ब-हैसियत रसूल ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं।

بارك الله لی ولكم فی القرآن العظیم ونفعنی وایاكم بالآیات والذكر الحكیم۔

❀ ❀ ❀

सूरह इब्राहीम

तम्हीदी कलिमात

सूरह इब्राहीम का सूरतुल रअद के साथ जोड़े का ताल्लुक़ है। इन दोनों सूरतों मे कई ऐसी आयात हैं जो सूरतुल बक़रह की बाज़ आयात के साथ मुशाबिहत रखती हैं। सूरतुल रअद में किसी नबी या रसूल का ज़िक्र नाम के साथ नहीं आया, इसी तरह सूरह इब्राहीम में भी अम्बिया व रुसुल अलै. का तज़किरा क़द्रे मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में आया है। शुरू में हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र चंद आयात में करने के बाद ज़माना-ए-क़ब्ल के सब अम्बिया व रुसुल अलै. का ज़िक्र जमा के सीगे में एक साथ किया गया है, जबकि आख़िर में इख़्तसार (संक्षेप) के साथ हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र है। इसी वजह से इस सूरत का नाम भी आप अलै. से मन्सूब है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आयात 1 से 4 तक

الٓرٰ ۟ کِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰہُ اِلَیۡکَ لِتُخۡرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَی النُّوۡرِ ۬ۙ بِاِذۡنِ رَبِّہِمۡ اِلٰی صِرَاطِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَمِیۡدِ ۙ﴿۱﴾

اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَوَيْلٌ
لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِۨ ۝۲ الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝۳ وَمَآ
اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۭ
فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝۴

आयत 1

"अलिफ़, लाम, रा"

الۗرٰ ۣ

इस मक़ाम पर हुरूफ़े मुक़त्तआत के बारे में एक अहम नुक्ता यह है कि मक्की सूरतों के इस सिलसिले के पहले ज़ेली ग्रुप की तीनों सूरतों (युनुस, हूद और युसुफ़) का आग़ाज अलिफ़, लाम, रा से हो रहा है, जबकि दूसरे ज़ेली ग्रुप की पहली सूरत (अल् रअद) अलिफ़, लाम, मीम, रा से और दूसरी दोनों सूरतें (इब्राहीम और अल् हिज्र) फिर अलिफ़, लाम, रा से ही शुरू हो रही हैं।

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ

"(ऐ नबी ﷺ!) यह किताब हमने नाज़िल की है आपकी तरफ़ ताकि आप निकालें लोगों को अंधेरों से रौशनी की तरफ़, उनके रब के इज़्न (हुक्म) से"

क़ुरान करीम में अंधेरे के लिए लफ़्ज़ "ज़ुलुमात" हमेशा जमा और इसके मुक़ाबले मे "नूर" हमेशा वाहिद इस्तेमाल हुआ है। चूँकि किसी फ़र्द की हिदायत के लिये फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से ही होता है, इसलिये फ़रमाया कि आप ﷺ का इन्हें अंधेरों से निकाल कर रौशनी में लाने का यह अमल अल्लाह के हुक्म और उसकी मंज़ूरी से होगा।

اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ①

"उस हस्ती के रास्ते की तरफ़ जो सब पर ग़ालिब और अपनी ज़ात में खुद महमूद है।"

आयत 2

اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ

"वो अल्लाह जिसकी मिल्कियत है हर वो शय जो आसमानों और ज़मीन में है।"

وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِۨ ۝۲

"और बर्बादी है काफ़िरों के लिये एक सख्त अज़ाब से।"

आयत 3

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ

"वो लोग जो पसंद करते हैं दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में"

यह आयत हम सबको दावत देती है कि हम में से हर शख़्स अपने गिरेबान में झाँके और अपनी तरजीहात (Preferences) का तजज़िया (analysis) करे कि उसकी मोहलते ज़िन्दगी के अवक़ातकार की तक़सीम क्या है? उसकी बेहतरीन सलाहियतें कहाँ खप रही हैं? और उसने अपनी ज़िन्दगी का बुनियादी नस्बुलऐन (लक्ष्य) किस रुख़ पर मुतय्यन (निर्धारित) कर रखा है? फिर अपनी मश्गूलियात में से दुनिया और आख़िरत के हिस्से अलग-अलग करके देखे कि दुन्यवी ज़िन्दगी (مَتَاعُ الْغُرُوْرِ) को समेटने की इस भाग-दौड़ में से असल और हक़ीकी ज़िन्दगी (خَيْرٌ وَّاَبْقٰى) के लिये उसके दामन में क्या कुछ बचता है?

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ

"और वो रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से और उसके अंदर कजी (कमी) तलाश करते हैं। यक़ीनन

أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٣﴾

यह लोग बहुत दूर की गुमराही में मुब्तला हो चुके हैं।"

अल्लाह के रास्ते से रोकने की मिसालें आज भी आपको क़दम-क़दम पर मिलेंगी। मसनल एक नौजवान को अगर अल्लाह की तरफ़ से दीन का शऊर और मता-ए-हिदायत नसीब हुई है और वह अपनी ज़िन्दगी को उसी रुख़ पर डालना चाहता है तो उसके वालिदैन और दोस्त अहबाब उसको समझाने लगते हैं, कि तुम अपने कैरियर को देखो, अपने मुस्तक़बिल की फ़िक्र करो, यह तुम्हारे दिमाग में क्या फ़तूर आ गया है? ग़र्ज वह किसी ना किसी तरह से उसे क़ायल करके अपने उसी रास्ते पर ले जाने की कोशिश करते हैं जिस पर वो ख़ुद अपनी ज़िन्दगियाँ बर्बाद कर रहे हैं।

आयत 4

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ

"और हमने नहीं भेजा किसी रसूल को मगर उसकी क़ौम की ज़बान ही में ताकि वो उनके लिये (अल्लाह के अहकाम) अच्छी तरह वाज़ेह कर दे।"

यानि हर क़ौम की तरफ़ मबऊस रसूल पर वही उस क़ौम की अपनी ही ज़बान में आती थी ताकि बात के समझने और समझाने में किसी क़िस्म का अबहाम (अस्पष्टता) ना रह जाये, और इबलाग़ (पैगाम पहुँचाने) का हक़ अदा हो जाये।

जैसे हज़रत मूसा अलै. को तौरात दी गई तो अबरानी ज़बान में दी गई जो आप अलै. की क़ौम की ज़बान थी।

فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

"फिर अल्लाह गुमराह करता है जिसको चाहता है और हिदायत देता है जिसको चाहता है।"

इसका तर्जुमा यूँ भी हो सकता है कि अल्लाह गुमराह करता है उसे जो चाहता है गुमराह होना और हिदायत देता है उसको जो चाहता है हिदायत हासिल करना।

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ④

"और वो ज़बरदस्त है, कमाल हिकमत वाला।"

आयात 5 से 8 तक

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ
الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ⑤ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى
لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ
فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۧ ⑥ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ

لَاَزِیْدَنَّکُمْ وَلَئِنْ کَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ ۝۷

وَقَالَ مُوْسٰٓی اِنْ تَکْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ

جَمِیْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰہَ لَغَنِیٌّ حَمِیْدٌ ۝۸

आयत 5

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰی بِاٰیٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَکَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ۙ وَذَکِّرْھُمْ بِاَیّٰىمِ اللّٰہِ ؕ

"और (इसी तरह) हमने भेजा था मूसा अलै. को अपनी निशानियों के साथ कि निकालो अपनी क़ौम को अंधेरों से उजाले की तरफ़ और उन्हें खबरदार करो अल्लाह के दिनों के हवाले से।"

यह "التذکیر بِاَیَّامِ اللہ" की वही इस्तलाह (term) है जिसका ज़िक्र शाह वलीउल्लाह देहलवी रहि. के हवाले से क़ब्ल अज़ बार-बार आ चुका है। शाह वलीउल्लाह ने अपनी मशहूर किताब "अल् फ़ौज़ुल कबीर" में मज़ामीन क़ुरान की तक़सीम के सिलसिले में "التذکیر بِاَیَّامِ اللہ" की यह इस्तलाह इस्तेमाल की है, यानि अल्लाह के उन दिनों के हवाले से लोगों को खबरदार करना जिन दिनों में अल्लाह ने बड़े-बड़े फ़ैसले किए और उन फ़ैसलों के मुताबिक़ कई क़ौमों को नेस्तोनाबूद कर दिया। इसके साथ शाह वलीउल्लाह रहि. ने दूसरी इस्तलाह "التذکیر بآلاءِ اللہ" इस्तेमाल की है, यानि अल्लाह की

नेअमतों और उसकी निशानियों के हवाले से तज़कीर और याद दिहानी।

اِنَّ فِیْ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّکُلِّ صَبَّارٍ شَکُوْرٍ ⑤

"यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं हर उस इंसान के लिए जो बहुत सब्र करने वाला और बहुत शुक्र करने वाला है।"

सब्बार और शकूर दोनों मुबालगे के सीगे हैं। सब्र और शुक्र ये दोनों सिफात आपस में एक-दूसरे के लिए तकमीली (complementary) नौइयत की हैं। चुनाँचे एक बंदा-ए-मोमिन को हर वक़्त इनमें से किसी एक हालत में ज़रूर होना चाहिए और अगर वह इनमें से एक हालत से निकले तो दूसरी हालत में दाख़िल हो जाये। अगर अल्लाह ने उसको नेअमतों और आसाइशों (सुखों) से नवाज़ा है तो वह शुक्र करने वाला हो और अगर कोई मुसीबत या तंगी उसे पहुँचती है तो सब्र करने वाला हो।

हज़रत सोहेब बिन सनान रुमी रज़िअल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

عَجَبًا لِاَمْرِ الْمُؤْمِنِ اِنَّ اَمْرَہٗ کُلَّہٗ خَیْرٌ وَلَیْسَ ذَاکَ لِاَحَدٍ اِلَّا لِلْمُؤْمِنِ، اِنْ اَصَابَتْہُ سَرَّاءُ شَکَرَ فَکَانَ خَیْرًا لَہٗ وَاِنْ اَصَابَتْہُ ضَرَّاءُ صَبَرَ فَکَانَ خَیْرًا لَہٗ

"मोमिन का मामला तो बहुत ही ख़ूब है, उसके लिए हर हाल में भलाई है, और यह बात मोमिन के सिवा किसी और के लिए नहीं है। अगर उसे कोई आसाइश (सुख) पहुँचती है तो शुक्र करता है, पस यह उसके लिए बेहतर है, और अगर उसे कोई

तकलीफ़ पहुँचती है तो सब्र करता है, पस यह उसके लिए बेहतर है।"(7)

आयत 6

وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهِ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ اِذۡ اَنۡجٰٮكُمۡ مِّنۡ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ

"और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह की उस नेअमत को याद रखो जब उसने तुम्हें निजात दी आले फ़िरऔन से"

يَسُوۡمُوۡنَكُمۡ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ وَيُذَبِّحُوۡنَ اَبۡنَآءَكُمۡ وَيَسۡتَحۡيُوۡنَ نِسَآءَكُمۡ ؕ

"वो तुम्हें मुब्तला किये हुए थे बदतरीन अज़ाब में, और वो लोग तुम्हारे बेटों को ज़िबह कर देते थे और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते थे।"

وَفِىۡ ذٰلِكُمۡ بَلَاۤءٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ عَظِيۡمٌ ﴿٦﴾

"और उसमें यक़ीनन तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत बड़ी आज़माईश थी।"

आयत 7

وَاِذۡ تَاَذَّنَ رَبُّكُمۡ لَىِٕنۡ شَكَرۡتُمۡ لَاَزِيۡدَنَّكُمۡ

"और याद करो जब तुम्हारे रब ने ऐलान कर दिया था कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा"

अगर तुम लोग मेरे अहकाम मानोगे और मेरी नेअमतों का हक़ अदा करोगे तो मेरे ख़जानों में कोई कमी नहीं है, मैं तुम लोगों को अपनी मज़ीद नेअमतें भी अता करुँगा।

وَلَىِٕنۡ كَفَرۡتُمۡ اِنَّ عَذَابِىۡ لَشَدِيۡدٌ ۝

"और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो यक़ीनन मेरा अज़ाब भी बहुत सख़्त है।"

लेकिन अगर तुम कुफ़्राने नेअमत करोगे, मेरी नेअमतों की नाक़द्री और नाशुक्री करोगे और मेरे अहकाम से रूगर्दानी (अस्वीकार) करोगे तो याद रखो, मेरी सज़ा भी बहुत सख़्त होगी।

आयत 8

وَقَالَ مُوۡسٰٓى اِنۡ تَكۡفُرُوۡۤا اَنۡتُمۡ وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِىٌّ حَمِيۡدٌ ۝

"और मूसा ने कहा कि अगर तुम कुफ़्र करो और जो भी लोग ज़मीन में हैं वो (सबके सब काफ़िर हो जायें) तो यक़ीनन अल्लाह ग़नी और अपनी ज़ात में ख़ुद महमूद है।"

वो बेनियाज़ है, उसको किसी की अहतियाज (ज़रुरत) या परवाह नहीं। वो अपनी ज़ात में सतूदह सिफ़ात है।

आयात 9 से 17 तक

اَلَمۡ یَاۡتِکُمۡ نَبَؤُا الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّ عَادٍ
وَّ ثَمُوۡدَ ۬ؕ وَ الَّذِیۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِہِمۡ ؕ لَا یَعۡلَمُہُمۡ اِلَّا اللّٰہُ ؕ
جَآءَتۡہُمۡ رُسُلُہُمۡ بِالۡبَیِّنٰتِ فَرَدُّوۡۤا اَیۡدِیَہُمۡ فِیۡۤ
اَفۡوَاہِہِمۡ وَ قَالُوۡۤا اِنَّا کَفَرۡنَا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ بِہٖ وَ اِنَّا لَفِیۡ
شَکٍّ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَنَاۤ اِلَیۡہِ مُرِیۡبٍ ﴿۹﴾ قَالَتۡ رُسُلُہُمۡ
اَفِی اللّٰہِ شَکٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ یَدۡعُوۡکُمۡ
لِیَغۡفِرَ لَکُمۡ مِّنۡ ذُنُوۡبِکُمۡ وَ یُؤَخِّرَکُمۡ اِلٰۤی اَجَلٍ
مُّسَمًّی ؕ قَالُوۡۤا اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ؕ تُرِیۡدُوۡنَ اَنۡ
تَصُدُّوۡنَا عَمَّا کَانَ یَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاۡتُوۡنَا بِسُلۡطٰنٍ مُّبِیۡنٍ
﴿۱۰﴾ قَالَتۡ لَہُمۡ رُسُلُہُمۡ اِنۡ نَّحۡنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ
وَ لٰکِنَّ اللّٰہَ یَمُنُّ عَلٰی مَنۡ یَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِہٖ ؕ وَ مَا کَانَ
لَنَاۤ اَنۡ نَّاۡتِیَکُمۡ بِسُلۡطٰنٍ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰہِ ؕ وَ عَلَی اللّٰہِ
فَلۡیَتَوَکَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۱﴾ وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا نَتَوَکَّلَ عَلَی
اللّٰہِ وَ قَدۡ ہَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَ لَنَصۡبِرَنَّ عَلٰی مَاۤ

اٰذَيۡتُمُوۡنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُتَوَكِّلُوۡنَ ﴿۱۲﴾
وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِرُسُلِهِمۡ لَنُخۡرِجَنَّكُمۡ مِّنۡ
اَرۡضِنَاۤ اَوۡ لَتَعُوۡدُنَّ فِىۡ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوۡحٰۤى اِلَيۡهِمۡ رَبُّهُمۡ
لَنُهۡلِكَنَّ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۱۳﴾ وَلَنُسۡكِنَنَّكُمُ الۡاَرۡضَ مِنۡۢ
بَعۡدِهِمۡ ؕ ذٰلِكَ لِمَنۡ خَافَ مَقَامِىۡ وَخَافَ وَعِيۡدِ ﴿۱۴﴾
وَاسۡتَفۡتَحُوۡا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيۡدٍ ﴿۱۵﴾ مِّنۡ
وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسۡقٰى مِنۡ مَّآءٍ صَدِيۡدٍ ﴿۱۶﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ
وَلَا يَكَادُ يُسِيۡغُهٗ وَيَاۡتِيۡهِ الۡمَوۡتُ مِنۡ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا
هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنۡ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيۡظٌ ﴿۱۷﴾

आयत 9

اَلَمۡ يَاۡتِكُمۡ نَبَؤُا الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوۡدَ ۛؕ

“क्या तुम्हारे पास आ नहीं चुकी हैं ख़बरें उन लोगों की जो तुमसे पहले थे, यानि क़ौमे नूह और आद और समूद की”

وَالَّذِيۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ ۛؕ لَا يَعۡلَمُهُمۡ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

“और उनकी जो उनके बाद हुए, उन्हें अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता।”

جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَیِّنٰتِ فَرَدُّوۡۤا اَیۡدِیَهُمۡ فِیۡۤ اَفۡوَاهِهِمۡ

“उनके पास आये उनके रसूल वाज़ेह निशानियाँ लेकर, तो उन्होंने अपनी उँगलियाँ अपने मुँहों में ठूँस लीं”

وَقَالُوۡۤا اِنَّا كَفَرۡنَا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ بِهٖ وَاِنَّا لَفِیۡ شَكٍّ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَنَاۤ اِلَیۡهِ مُرِیۡبٍ ۝۹

“और कहा कि हम तो इंकार करते हैं उसका जिसके साथ तुम भेजे गये हो, और तुम हमें जिस चीज़ की दावत दे रहे हो उसके बारे में हम सख़्त उलझन में डाल देने वाले शक में मुब्तला हैं।”

यहाँ तमाम रसूलों को एक जमाअत फ़र्ज़ करके उनका ज़िक्र इकठ्ठे किया जा रहा है, क्योंकि सबने अपनी-अपनी क़ौम को एक जैसी दावत दी और उस दावत के जवाब में सब रसूलों की क़ौमों का रद्दे अमल भी तक़रीबन एक जैसा था। उन सब अक़वाम ने अपने रसूलों की दावत को रद्द करते हुए कहा कि हमें तो उन बातों के मुताल्लिक़ बहुत से शक व शुब्हात लाहक़ हैं, जिनकी वजह से हम सख़्त उलझन में पड़ गये हैं।

आयत 10

قَالَتۡ رُسُلُهُمۡ اَفِی اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ

"उनके रसूलों ने कहा कि क्या तुम लोगों को अल्लाह की ज़ात के बारे में शक है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है?"

यह searching question का सा अंदाज़ है जिसमें बात वहाँ से शरू की जा रही है जहाँ तक ख़ुद फ़रीज़े सानी (second party) को भी इत्तेफ़ाक़ है। मज़कूरा तमाम अक़वाम के कुफ्फ़ार व मुशरिकीन में एक अक़ीदा हमेशा मुशतरक रहा है कि वो तमाम लोग ना सिर्फ़ अल्लाह को मानते थे बल्कि उसे ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ भी तस्लीम करते थे। चुनाँचे जिस क़ौम के लोगों ने भी अपने रसूल की दावत को शक व शुब्हात की बिना पर रद्द करना चाहा उनको हमेशा यही जवाब दिया गया। यानि सबसे पहले अल्लाह की ज़ात का मामला हमारे-तुम्हारे दरमियान वाज़ेह होना चाहिए कि तुम्हें अल्लाह की ज़ात के बारे में शक है या उसके खालिक़ अर्द व समावात (Creator of Heaven & Earth होने में?

يَدۡعُوۡكُمۡ لِيَغۡفِرَ لَكُمۡ مِّنۡ ذُنُوۡبِكُمۡ وَيُؤَخِّرَكُمۡ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

"वो (अल्लाह) तुम्हें बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाहों को बख़्श दे और एक वक़्ते मुअय्यन तक तुम्हें मोहलत दे।"

قَالُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ

"उन्होंने जवाब दिया कि नहीं हैं आप लोग मगर हमारी ही तरह के इंसान।"

تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ⑩

"आप चाहते हैं कि रोक दें हमें उन (की परस्तिश) से जिनको पूजते थे हमारे आबा, तो लाइये आप हमारे सामने कोई खुला मौज्ज़ा!"

सब क़ौमों के लोगों का यह जवाब भी एक जैसा था, सबने रसूलों के इंसान होने पर ऐतराज़ किया और सबने हिस्सी मौअज्ज़ा तलब किया।

आयत 11

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ

"उनके रसूलों ने उनसे कहा कि वाक़ई हम कुछ नहीं हैं मगर तुम्हारी ही तरह के इंसान, लेकिन अल्लाह अहसान फ़रमाता है अपने बंदो में से जिस पर चाहता है।"

यह अल्लाह की मर्ज़ी का मामला है, वो जिसे चाहता है अपनी रहमत से नवाज़ देता है। उसने हमें अपनी रिसालत के लिए चुन लिया है, हमारी तरफ़ वही भेजी है और हमें

मामूर किया है कि हम आप लोगों को ख़बरदार करें और उसके अहकाम आप तक पहुँचाएं।

وَمَا كَانَ لَنَآ اَنۡ نَّاۡتِيَكُمۡ بِسُلۡطٰنٍ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِ‌ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ○

“और हमारे लिए मुमकिन नहीं है कि हम ले आएँ तुम्हारे पास कोई मौअज्ज़ा अल्लाह के हुक्म के बगैर। और अल्लाह ही पर तवक्कुल करना चाहिए अहले ईमान को।”

आयत 12

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدۡ هَدٰٮنَا سُبُلَنَا‌ ؕ

“और हमें क्या है कि हम अल्लाह पर तवक्कुल ना करें हालाँकि उसने हमें हमारे रास्तों की हिदायत बख़्शी है।”

अल्लाह ने हमें अपने तक़र्रुब के तरीक़े और अपनी तरफ़ आने के रास्ते बताए हैं, यह कैसे मुमकिन है कि हम उस पर तवक्कुल ना करें?

وَلَنَصۡبِرَنَّ عَلٰى مَاۤ اٰذَيۡتُمُوۡنَا‌ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ

“और हम सब्र ही करेंगे उस ईज़ा (परेशानी) पर जो तुम हमें पहुँचा रहे हो, और अल्लाह ही पर तवक्कुल करना चाहिए तमाम तवक्कुल करने वालों को।”

فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُتَوَكِّلُوۡنَ ؏ ﴿۱۲﴾

आयत 13

وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِرُسُلِهِمۡ

“और कहा उन लोगों ने जो काफ़िर हुए थे अपने रसूलों से”

रसूलों की जमाअत और उनकी क़ौमों के दरमियान होने वाले सवालात व जवाबात का तज़किरा जारी है। यानि अपने-अपने ज़माने में अपने-अपने रसूलों से मुतालक़ा अक़वाम के लोगों ने कहा:

لَنُخۡرِجَنَّكُمۡ مِّنۡ اَرۡضِنَاۤ اَوۡ لَتَعُوۡدُنَّ فِىۡ مِلَّتِنَا‌ ؕ

“हम लाज़िमन निकाल बाहर करेंगे तुम्हें अपनी ज़मीन से या तुम्हें लौटना होगा हमारे दीन में।”

فَاَوۡحٰۤى اِلَيۡهِمۡ رَبُّهُمۡ لَـنُهۡلِكَنَّ الظّٰلِمِيۡنَ ۙ‏ ﴿۱۳﴾

“तो वही की उनकी तरफ़ उनके रब ने कि हम इन ज़ालिमों को अब लाज़िमन हलाक कर देंगे।”

आयत 14

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ

"और हम आबाद करेंगे ज़मीन में तुम लोगों को उनके बाद।"

यानि अल्लाह तआला ने रसूलों की तरफ़ वही भेजी कि अब तमाम काफ़िरों को हलाक कर दिया जायेगा और उसके बाद रसूल और उनके साथ बच जाने वाले तमाम अहले ईमान को फिर से ज़मीन में आबाद करने का सामान किया जायेगा।

ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ۝١٤

"यह उन लोगों के लिए है जो मेरे सामने खड़े होने और मेरी वईद (चेतावनी) से डरते हैं।"

जो लोग अज़ाब की वईदों (चेतावनियों) से डरते हैं और रोज़े महशर अल्लाह की अदालत में खड़े होने के तसव्वर से लरज़ जाते हैं।

आयत 15

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝١٥

"और उन्होंने फ़ैसला तलब किया और नामुराद होकर रहा हर सरकश ज़िद्दी।"

जो लोग कुफ़्र व शिर्क में डटे रहते वो इस बात पर भी अपने रसूल से इसरार करते कि हमारे और तुम्हारे दरमियान आख़री फ़ैसला हो जाना चाहिए। फिर जब अल्लाह की तरफ़ से वह आख़री फ़ैसला अज़ाबे इस्तेसाल की सूरत में आता तो उसके नतीजे में सरकश और हठधर्म क़ौम को

नस्तोनाबूद कर दिया जाता। ऐसे मुन्करीने हक़ की तबाही व बर्बादी का नक़्शा क़ुरान हकीम में इस तरह खींचा गया है: {كَاَنۡ لَّمۡ يَغۡنَوۡا فِيۡهَا} (अल्आराफ़:92) "वो ऐसे हो गये जैसे कभी थे ही नहीं" और {فَاَصۡبَحُوۡا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمۡ} (अल् अहक़ाफ़:25) यानि वो ऐसे हो गये कि उनके दयार व अमसार में सिर्फ़ उनके महलात व मसाकन ही नज़र आते थे जबकि उनके मकीनों का नामो-निशान तक बाक़ी ना रहा। और यह सब कुछ तो उन लोगों के साथ इस दुनिया में हुआ, जबकि आख़िरत की बड़ी सज़ा उसके अलावा है जिसको झेलते हुए उनमें से हर एक सरकश ज़िद्दी इस तरह निशाने इबरत बनेगा:

आयत 16

مِّنۡ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسۡقٰى مِنۡ مَّآءٍ صَدِيۡدٍ ۙ‏ ﴿۱۶﴾

"उसके पीछे जहन्नम है और उसको पिलाया जायेगा पीप वाला पानी।"

आयत 17

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيۡغُهٗ

"वो उसको घूँट-घूँट पीने की कोशिश करेगा लेकिन उसे हलक़ से उतार नहीं पाएगा"

وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ

"और उसे हर तरफ़ से मौत (आती हुई नज़र) आयेगी लेकिन मर नहीं सकेगा।"

शदीद तकलीफ़ में मौत इंसान को राहत पहुँचा देती है। बाज़ बीमार ऐसे होते हैं कि तकलीफ़ की शिद्दत में ऐड़ियाँ रगड़ रहे होते हैं और मौत उनके लिए राहत का सामान बन जाती है। लेकिन जहन्नम ऐसी जगह है कि जहाँ इंसान को मौत नहीं आयेगी। सूरह ताहा में इस कैफ़ियत को इन अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है: {لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ} "ना वो उसमें मरेगा और ना जी पायेगा।" अहले जहन्नम शदीद ख़्वाहिश करेंगे कि मौत आ जाये और उनका क़िस्सा तमाम हो जाये मगर उनकी यह ख़्वाहिश पूरी नहीं होगी।

وَمِن وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿١٧﴾

"और उसके बाद उसके लिये एक और सख्त अज़ाब होगा।"

यानि उस सख्ती में मुसलसल इज़ाफ़ा होता जायेगा, अज़ाब की शिद्दत दर्जा-ब-दर्जा बढ़ती ही चली जायेगी।

आयत 18 से 21 तक

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ﴿١٨﴾ أَلَمْ

تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ اِنْ يَّشَاْ
يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑲ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ
بِعَزِيْزٍ ⑳ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰۗؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا
مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
لَهَدَيْنٰكُمْ ۭ سَوَاۗءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا
مِنْ مَّحِيْصٍ ㉑

आयत 18

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِۨ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۭ

"मिसाल उन लोगों की जिन्होंने कुफ़्र किया अपने रब के साथ (ऐसी है) कि उनके आमाल हों राख की मानिन्द, जिस पर ज़ोरदार हवा चले आँधी के दिन।"

अल्लाह के यहाँ किसी भी नेक अमल की क़ुबूलियत के लिए ईमान लाज़मी और बुनियादी शर्त है। चुनाँचे जो लोग अपने रब का कुफ़्र करते हैं उनके नेक आमाल को यहाँ राख के ऐसे ढ़ेर से तशबीह दी गई है जिस पर तेज़ आँधी चली और उसका एक-एक ज़र्रा मुन्तशिर हो गया। यानि बज़ाहिर तो

वो ढ़ेर नज़र आता था मगर अल्लाह के यहाँ उसकी कुछ भी हैसियत बाक़ी ना रही। यह बहुत अहम मज़मून है और क़ुरान करीम में मुख़्तलिफ़ मिसालों के साथ इसे तीन बार दोहराया गया है। सूरह नूर की आयत 39 में कुफ्फ़ार के आमाल को सराब से तशबीह दी गई है और सूरह अल् फ़ुरकान की आयत 23 में मुन्करीने आख़िरत के आमाल को {هَبَآءً مَّنْثُوْرًا} यानि "हवा में उड़ते हुए ज़र्रात" की मानिन्द क़रार दिया गया है।

दरअसल हर इंसान अपनी ज़हनी सतह के मुताबिक़ नेकी का एक तस्सवुर रखता है, क्योंकि नेकी हर इंसान की रूह की ज़रूरत है, मगर नेकी का ताल्लुक़ चूँकि बराहेरास्त अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसकी क़ुबूलियत के साथ है, चुनाँचे इसके लिए मैयार भी वही क़ाबिले क़ुबूल होगा जो अल्लाह ने खुद क़ायम किया है, और वह मैयार सूरतुल बक़रह की आयतुल बिर्र की रोशनी में यह है:

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰي حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّاۗىِٕلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰھَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ

فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
صَدَقُوا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

"नेकी यही नहीं है कि तुम अपने चेहरे मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ फेर दो, बल्कि असल नेकी तो उसकी है जो ईमान लाया अल्लाह पर, यौमे आख़िरत पर, फरिश्तों पर, किताब पर और नबियों पर। और उसने ख़र्च किया माल उसकी मोहब्बत के बावजूद क़राबतदारों, यतीमों, मोहताजों, मुसाफ़िरों और माँगने वालों पर और गर्दनों के छुड़ाने में। और क़ायम की नमाज़ और अदा की ज़कात। और जो पूरा करने वाले हैं अपने अहद को जब कोई अहद कर लें। और सब्र करने वाले फ़क्र व फ़ाक़ा में, तकलीफ़ में और हलाते जंग में। यही वो लोग हैं जो सच्चे हैं और यही हक़ीकत में मुत्तक़ी हैं।"

अगर नेकी इस मैयार के मुताबिक़ है तो फिर यह वाक़ई नेकी है, लेकिन अगर ऐसा नहीं है तो नेकी की शक्ल में धोखा, सराब (भ्रम) व फ़रेब है, नेकी नहीं है। दरअसल जब इंसान की फ़ितरत मस्ख (बिगडैल) हो जाती है तो उसके साथ ही उसका नेकी का तसव्वुर भी मस्ख हो जाता है। नेकी चूँकि एक बुरे से बुरे इंसान के भी ज़मीर की ज़रुरत है इसलिये बजाय इसके कि एक बुरा इंसान अपनी इस्लाह करके अपने आमाल व किरदार को नेकी के मतलूबा मैयार पर ले आये, वो उल्टा नेकी के मैयार को घसीट कर अपने ख़्यालात व नज़रियात की गंदगी के ढ़ेर के अंदर उसकी जगह बनाने की कोशिश करता है। यही वजह है कि हमारे मआशरे में चोर, डाकू और लुटेरे सदक़ा व ख़ैरात करते और

ख़िदमते ख़ल्क़ के बड़े-बड़े काम करते नज़र आते हैं और जिस्म फ़रोश औरतें मज़ारों पर धमाल डालती और नियाज़ बाँटती दिखाई देती हैं। इस तरह यह लोग अपने ज़मीर की तस्क़ीन का सामान करने की कोशिश करते हैं कि हमारे पेशे में क़द्रे क़बाहत का अंसर (element) पाया जाता है तो क्या हुआ, इसके साथ-साथ हम नेकी के फ़लाँ-फ़लाँ काम भी तो करते हैं!

इसी तरह जब मज़हबी मिज़ाज रखने वाले लोगों की फ़ितरत मस्ख़ होती है तो वो कबीरा गुनाहों की तरफ़ से बेहिस्स और सगीरा के बारे में बहुत हस्सास (serious) हो जाते हैं। ऐसे लोग को सगाइर के बारे में तो बड़े ज़ोरदार मुबाहिसे और मुनाज़रे कर रहे होते हैं, मगर कबीरा को वो लायक़-ए-ऐतनाअ (worthy of acceptance) ही नहीं समझते। इस पसमंज़र में सही तर्ज़े अमल यह है कि पहले कबाइर से कुल्ली तौर पर इज्तनाब (बचाव) किया जाये और फिर उसके बाद सगीरा की तरफ़ तवज्जो की जाये। बहरहाल क़यामत के दिन बेशुमार ऐसे लोग होंगे जो अपने ज़अम में बहुत ज़्यादा नेकियाँ लेकर आये होंगे, मगर अल्लाह के नजदीज़ उनकी नेकियों की कोई हैसियत और वक़अत नहीं होगी।

لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑱

“उन्हें कुछ भी हाथ ना आयेगा उसमें से जो कमाई उन्होंने की होगी। यही तो है दूर की गुमराही।”

उनको ज़अम (गुमान) होगा कि उन्होंने दुनिया में बहुत नेक काम किए थे, ख़िदमते ख़ल्क के बड़े-बड़े प्रोजेक्ट शुरु कर रखे थे, मगर उस दिन वहाँ उनमें से कोई नेकी भी उनके काम आने वाली नहीं होगी।

आयत 19

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ

“क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है?”

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۙ﴿۱۹﴾

“अगर वो चाहे तो तुम लोगों को ले जाये (हलाक कर दे) और एक नई मख़्लूक़ को ले आये।”

उसकी क़ुदरत, क़ुव्वते तख़्लीक़ और तख़्लीक़ी महारत ख़त्म तो नहीं होगी, वो अपनी मख़्लूक़ में से जिसको चाहे ख़त्म कर दे और जब चाहे कोई नई मख़्लूक़ पैदा कर दे।

आयत 20

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۲۰﴾

“और यह काम अल्लाह पर कोई भारी नहीं है।”

आयत 21

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ

"और वो अल्लाह के सामने खड़े होंगे सबके सब, तो कहेंगे कमज़ोर लोग मुतकब्बरीन से कि हम आप लोगों के पैरोकार थे, तो क्या आप अल्लाह के अज़ाब में से हमारे लिए कुछ कमी कर सकते हैं?"

कमज़ोर लोग ताक़तवर लोगों से, जिन्हें वो दुनिया में अपने सरदार और लीडर मानते थे, कहेंगे कि हम आपके फ़रमाबरदार थे, आपका हर हुक्म मानते थे, आपकी ख़िदमत करते थे, आपके झंडे उठाते थे, आपके लिए ज़िन्दाबाद के नारे लगाते थे, तो क्या आप हमारी उन ख़िदमात के एवज़ आज इस अज़ाब से हमें कुछ रियायत दिला सकते हैं?

قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ۭ

"वो कहेंगे कि अगर अल्लाह ने हमें हिदायत दी होती तो हम तुम्हें भी हिदायत की राह दिखाते।"

वो कोरा जवाब दे देंगे कि हम खुद गुमराह थे, सो हमने तुम्हें भी गुमराह किया।

سَوَآءٌ عَلَيۡنَآ اَجَزِعۡنَآ اَمۡ صَبَرۡنَا مَا لَنَا مِنۡ مَّحِيۡصٍ ﴿٢١﴾

“अब हमारे हक़ में बराबर है, ख्वाह हम जज़अ-फ़ज़अ करें या सब्र करें, हमारे लिए खलासी की कोई सूरत नहीं।”

अब तो यक्साँ है, ख़्वाह हम बेक़रारी का मुज़ाहिरा करें, चीखें-चिल्लायें या सब्र करें, हमारे लिए कोई मफ़र नहीं, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं।

आयात 22 से 23 तक

وَقَالَ الشَّيۡطٰنُ لَمَّا قُضِىَ الۡاَمۡرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمۡ
وَعۡدَ الۡحَـقِّ وَوَعَدْتُّكُمۡ فَاَخۡلَفۡتُكُمۡ‌ؕ وَمَا كَانَ لِىَ
عَلَيۡكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍ اِلَّاۤ اَنۡ دَعَوۡتُكُمۡ فَاسۡتَجَبۡتُمۡ لِىۡ‌ۚ
فَلَا تَلُوۡمُوۡنِىۡ وَلُوۡمُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ‌ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصۡرِخِكُمۡ
وَمَاۤ اَنۡتُمۡ بِمُصۡرِخِىَّ‌ؕ اِنِّىۡ كَفَرۡتُ بِمَاۤ اَشۡرَكۡتُمُوۡنِ مِنۡ
قَبۡلُ‌ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ‏ ﴿٢٢﴾ وَاُدۡخِلَ
الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ
تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ‌ؕ تَحِيَّتُهُمۡ فِيۡهَا
سَلٰمٌ‏ ﴿٢٣﴾

आयत 22

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ

"और शैतान कहेगा (उस वक़्त) जब फ़ैसला चुका दिया जायेगा"

जब तमाम बनी नौए इंसान की क़िस्मत का फ़ैसला हो जायेगा और अहले जन्नत को जन्नत की तरफ़ और अहले जहन्नम को जहन्नम की तरफ़ ले जाया जा रहा होगा तो शैतान कहेगा:

اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ۭ

"(देखो लोगो!) अल्लाह ने तुमसे एक वादा किया था सच्चा वादा, और मैंने भी तुमसे वादे किए थे तो मैंने तुमसे (अपने वादों की) खिलाफ़वर्ज़ी की।"

وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ

"लेकिन मेरे पास तुम पर कोई इख़्तियार नहीं था"

मैं तुम पर किसी क़िस्म का जबर नहीं कर सकता था और तुम्हें ज़बरदस्ती बुराई की तरफ़ नहीं ला सकता था। यह इख़्तियार मुझे अल्लाह ने दिया ही नहीं था।

اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ

"सिवाय इसके कि मैंने तुम लोगों को दावत दी और तुमने मेरी दावत को क़ुबूल कर लिया।"

मैंने तुम लोगों को वरग़लाया, मासियत (गुनाह) की दावत दी, अल्लाह की नाफ़रमानियों और बेहयाई के कामों की तरग़ीब दी और तुम लोगों ने मेरा कहा मान लिया।

فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ

"तो अब तुम लोग मुझे मलामत ना करो, बल्कि अपने आपको मलामत करो।"

क्योंकि अल्लाह तआला के सारे अहकाम तुम्हारे सामने थे, उसके रास्ते के तमाम निशानात तुम पर वाज़ेह थे। उनसे रूगरदानी करके तुम लोगों ने अपनी मर्ज़ी से मेरे रास्ते को इख़्तियार किया। मैं तुम्हें ज़बरदस्ती खींच कर इस तरफ़ नहीं लेकर आया। चुनाँचे आज मुझे कोसने के बजाय अपने आपको लअन-तअन करो।

مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ

"अब ना मैं तुम्हारी फ़रियाद रसी कर सकता हूँ, ना तुम मेरी फ़रियाद को पहुँच सकते हो।"

اِنِّىْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ

"बिलाशुबह मैं इंकार करता हूँ उसका जो क़ब्ल अज़ तुम मुझे (अल्लाह का) शरीक ठहराते रहे थे।"

तुमने दुनिया में जो कुछ भी किया था इंतहाई गलत किया था। तुम लोगों को अल्लाह के अहकाम पर अमल करना चाहिए था और उसके वादे पर ऐतबार करना चाहिए था। तुम लोग ना सिर्फ़ अल्लाह के अहकाम को पसेपुश्त डाल कर मेरा कहना मानते रहे बल्कि मुझे उसके बराबर का दर्जा भी

देते रहे। आज मैं तुम्हारे उन सब ऐतक़ादात (मान्यताओं) से ऐलाने बराअत करता हूँ।

اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾

"यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।"

आयत 23

وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۭ تَحِيَّتُهُمْ
فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾

"और दाखिल किए जायेंगे वो लोग जो ईमान लाये होंगे और जिन्होंने नेक अमल किए होंगे ऐसे बागात में जिनके नीचे नदियाँ बहती होंगी, वो उसमें रहेंगे हमेशा-हमेश अपने रब के हुक्म से। वहाँ उनकी मुलाक़ात की दुआ (एक-दूसरे पर) सलाम होगी।"

आयात 24 से 27 तक

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ
طَيِّبَةٍ اَصۡلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرۡعُهَا فِى السَّمَآءِ ﴿۲۴﴾ تُؤۡتِىۡۤ
اُكُلَهَا كُلَّ حِيۡنٍۢ بِاِذۡنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضۡرِبُ اللّٰهُ الۡاَمۡثَالَ
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ يَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿۲۵﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيۡثَةٍ
كَشَجَرَةٍ خَبِيۡثَةِ ۟اجۡتُثَّتۡ مِنۡ فَوۡقِ الۡاَرۡضِ مَا لَهَا
مِنۡ قَرَارٍ ﴿۲۶﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِالۡقَوۡلِ
الثَّابِتِ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَفِى الۡاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ
الظّٰلِمِيۡنَ ۙۚ وَيَفۡعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿۲۷﴾

आयत 24

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً

"क्या तुमने गौर नहीं किया कि अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है कलिमा-ए-तैय्यबा की!"

कलिमा-ए-तैय्यबा से आमतौर पर तो कलिमा-ए-तौहीद "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुन रसूल अल्लाह" मुराद लिया जाता है। इसमें कुछ शक नहीं कि ला इलाहा इल्लल्लाह अफ़ज़ल ज़िक्र है, लेकिन यहाँ कलिमा-ए-तैय्यबा से तौहीद पर मब्नी अक़ाइद व नज़रियात, भलाई की हर बात, कलामे तैय्यब और हक़ की दावत मुराद है।

كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾

"(इसकी मिसाल ऐसी है) जैसे एक पाकीज़ा दरख़्त, उसकी जड़ मज़बूत और शाखें आसमान में हैं।"

आयत 25

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۭ

"यह (दरख़्त) हर फ़सल में अपना फल लाता है अपने रब के हुक्म से।"

इस दरख़्त की जड़ें ज़मीन में मज़बूती से जमी हुई हैं, उसकी शाखें आसमान से बातें कर रही हैं और उसका फल भी मुतवातर (लगातार) आ रहा है।

وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾

"और अल्लाह मिसालें बयान करता है लोगों के लिए ताकि वो नसीहत अख़ज़ करें।"

कोई भलाई का काम हो, नेकी की दावत हो, राहे हक़ की कोई तहरीक हो, जिसने भी ऐसी किसी नेकी की इब्तदा की उसने गोया अपने लिए एक बहुत उम्दाह फलदार दरख़्त लगा लिया। यह दरख़्त जब तक बाक़ी रहेगा अपने असरात व समरात से ना मालूम किस-किस को फैज़याब करेगा। जैसे किसी ने भलाई की दावत दी और उस दावत को कुछ लोगों

ने क़ुबूल किया, उन्होंने उस दावत को मज़ीद आगे फैलाया, यूँ उसकी नेकी का हल्का-ए-असर वसीअ से वसीअतर होता जायेगा और ना मालूम मुस्तक़बिल में ऐसे नेक असरात मज़ीद कहाँ-कहाँ तक पहुँचेंगे। हज़रत जरीर बिन अब्दुलल्लाह बिन जाबिर रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهُ أَجْرُهَا وَأَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا بَعْدَهُ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْءٌ، وَمَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً سَيِّئَةً كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَوِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهِ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أَوْزَارِهِمْ شَيْءٌ

"जिस किसी ने इस्लाम में किसी नेकी काम का आग़ाज़ किया तो उसके लिए उस काम अज्र भी होगा और बाद में जो कोई भी उस पर अमल करेगा उसका अज्र भी उसको मिलेगा, लेकिन उनके अज्र व सबाब में कोई कमी नहीं होगी। और जिस किसी ने इस्लाम में किसी बुरी शय का आग़ाज़ किया तो उस पर उसका गुनाह भी होगा और बाद में जो कोई भी उस पर अमल करेगा उसके गुनाहों का बोझ भी उस पर डाला जायेगा, मगर उनके गुनाहों में कोई कमी नहीं होगी।"(8)

आयत 26

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝٢٦

"और कलिमा-ए-ख़बीस की मिसाल ऐसी है जैसे एक घटिया दरख़्त (झाड़-झन्काड़), जिसे ज़मीन के ऊपर से ही उखाड़ लिया जाये, उसके लिए कोई क़रार नहीं।"

भलाई और उसके असरात के मुक़ाबले में बुराई, बुराई की दावत और बुराई के असरात की मिसाल ऐसी है जैसे एक बहुत उम्दा, मज़बूत और फलदार दरख़्त के मुक़ाबले में झाड़-झंकाड़। ना उसकी जड़ों में मज़बूती, ना वजूद को सबात (stability), ना साया, ना फल। बुराई बाज़ अवक़ात लोगों में रिवाज भी पा जाती है, उन्हें भली भी लगती है और उसकी ज़ाहिरी खूबसूरती में लोगों के लिए वक़्ती तौर पर कशिश भी होती है। जैसे माले हराम कसरत और चमक-दमक लोगों को मुतास्सिर करती है मगर हक़ीक़त में ना तो बुराई को सबात (stability) और दवाम (continuous) हासिल है और ना उसके असरात में लोगों के लिए फ़ायदा!

आयत 27

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ

"अल्लाह सबात अता करता है अहले ईमान को क़ौले साबित के ज़रिये से दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आखिरत में भी।"

فِی الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا وَفِی

الْاٰخِرَۃِ ۚ

यहाँ क़ौले साबित से मुराद ईमान है। आखिरत पर पुख्ता ईमान रखने वाला शख़्स दुनिया के अंदर अपने किरदार और नज़रियात में मज़बूत और साबित क़दम होता है। उसके हौसले, उसके मौक़फ़ और उसकी सलाहियतों को अल्लाह तआला इस्तक़ामत बख़्शता है। ऐसे लोगों को इसी तरह का सबात आखिरत में भी अता होगा।

وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۣۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ ۝ۧ27

"और गुमराह कर देता है अल्लाह ज़ालिमों को, और अल्लाह करता है जो चाहता है।"

आयात 28 से 34 तक

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا
قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۝ 28 جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۭ وَبِئْسَ
الْقَرَارُ ۝ 29 وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ
قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ۝ 30 قُلْ
لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا

رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا
بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ
الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي
الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۭ وَاِنْ تَعُدُّوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ
﴿٣٤﴾

आयत 28

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا

“क्या तुमने ग़ौर नहीं किया उन लोगों के हाल पर जिन्होंने अल्लाह की नेअमत को बदल दिया कुफ़्र से”

अल्लाह तआला ने उन्हें हिदायत की नेअमत से नवाज़ा था, मगर उन्होंने हिदायत हाथ से देकर ज़लालत और गुमराही खरीद ली। अल्लाह, उसके रसूल और उसकी किताब से कुफ़्र करके उन्होंने अल्लाह की नेअमत से खुद को महरूम कर लिया।

وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

"और उन्होंने अपनी क़ौम को ला उतारा तबाही के घर में।"

जैसे सूरह हूद, आयत 98 में फ़िरऔन के बारे में फ़रमाया गया है कि रोज़े महशर वह अपनी क़ौम की क़यादत करता हुआ आयेगा और उस पूरे जुलूस को लाकर जहन्नम के घाट उतार देगा। इसी तरह तमाम क़ौमों और तमाम मआशरों के गुमराह लीडर अपने-अपने पैरोकारों को जहन्नम में पहुँचाने का बाइस बनते हैं।

आयत 29

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

"यह (दारुल ब्वार) जहन्नम है, वो इसमें दाखिल होंगे, और वो बहुत ही बुरी जगह है ठहरने की।"

आयत 30

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ

"और इन्होंने अल्लाह के मद्दे-मुक़ाबिल (शरीक) ठहरा दिये हैं ताकि गुमराह करें लोगों को उसके रास्ते से।"

यानि इन्होंने झूठे मअबूदों का ढ़ोंग इसलिये रचाया है ताकि लोगों को अल्लाह की बंदगी से हटाकर गुमराह कर दें। "انداد" जमा है "نِد" की, इसके मायने मद्दे-मुक़ाबिल के हैं। सूरतुल बक़रह की आयत 22 में भी हम पढ़ आये हैं: {فَلَا

تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا} "तो अल्लाह के मद्दे-मुक़ाबिल ना ठहराया करो।" इस मामले की नज़ाकत का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि एक सहाबी रज़ि. ने हुज़ूर ﷺ से मुहावरतन अर्ज़ किया: مَاشَاءَاللّٰهُ وَمَا شِئْتَ "जो अल्लाह चाहे और जो आप चाहें" तो आप ﷺ ने उन्हें फ़ौरन टोक दिया और फ़रमाया: ((أَجَعَلْتَنِيْ لِلّٰهِ نِدًّا؟ مَا شَاءَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ))(9) "क्या तूने मुझे अल्लाह का मद्दे-मुक़ाबिल बना दिया? (बल्कि वही होगा) जो तन्हा अल्लाह चाहे!" यानि मशियत तो अल्लाह ही की है, जो होगा उसी की मशियत और मर्ज़ी से होगा। इख़्तियार सिर्फ़ उसी का है, और किसी का कोई इख़्तियार नहीं।

قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

"आप कहिये कि (दुनिया की ज़िन्दगी में) तमाम फ़ायदा उठा लो, फिर यक़ीनन तुम्हारा लौटना आग ही की तरफ़ है।"

आयत 31

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

"आप कहिए मेरे उन बंदों से जो ईमान लाये हैं कि वो नमाज़ क़ायम करें"

यहाँ यह नुक्ता लायक़-ए-तवज्जो है कि قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا के अल्फ़ाज़ से रसूल अल्लाह ﷺ को मुख़ातिब करके अहले ईमान को बिल्वास्ता हुक्म दिया जा रहा है और يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا के अल्फ़ाज़ से अहले ईमान को बराहेरास्त मुख़ातिब नहीं किया गया। इस सिलसिले में पहले भी बताया जा चुका

है कि पूरे मक्की क़ुरान में يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا के अल्फ़ाज़ से बराहेरास्त मुसलमानों से खिताब नहीं किया गया। (सूरह हज में एक मक़ाम पर यह अल्फ़ाज़ आये हैं मगर इस सूरह को मक्की या मदनी होने के बारे में इख़्तलाफ़ है।) इसमें जो हिकमत है वो अल्लाह ही बेहतर जानता है। जहाँ तक मुझे इसकी वजह समझ में आयी है वो मैं आपको बता चुका हूँ कि يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا का तर्ज़े ख़िताब उम्मत के लिए है और मक्की दौर में मुसलमान अभी एक उम्मत नहीं बने थे। मुसलमानों को उम्मत का दर्जा मदीने में आकर तहवीले क़िब्ला के बाद मिला। पिछले दो हज़ार बरस से उम्मते मुस्लिमा के मन्सब पर यहूदी फ़ाइज़ थे। उन्हें इस मन्सब से माज़ूल करके मुहम्मदुन रसूल अल्लाह ﷺ की उम्मत को उम्मते मुस्लिमा का दर्जा दिया गया और तहवीले क़िब्ला इस तब्दीली की ज़ाहिरी अलामत क़रार पाया। यानि यहूदियों के क़िब्ले की हैसियत बतौर क़िब्ला खत्म करने का मतलब यह क़रार पाया कि उन्हें उम्मते मुस्लिमा के मन्सब से माज़ूल कर दिया गया है। चुनाँचे क़ुरान में يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا के अल्फ़ाज़ के ज़रिये मुसलमानों से ख़िताब उसके बाद शुरू हुआ।

وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝۳۱

"और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते रहें ख़ुफ़िया और ऐलानिया, इससे पहले-पहले कि वो दिन आ जाये जिसमें ना कोई ख़रीद व फ़रोख्त होगी और ना कोई दोस्ती काम आयेगी।"

यह आयत सूरतुल बक़रह की आयत 254 से बहुत मिलती-जुलती है। वहाँ बैय (खरीदो-फ़रोख्त) और दोस्ती के अलावा शफ़ाअत की भी नफ़ी की गई है: {يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۭ} "यानि उस दिन से पहले-पहले हमारे अता करदा रिज़्क़ में से ख़र्च करलो जिसमें ना कोई बैय (खरीद-फ़रोख़्त) होगी, ना कोई दोस्ती काम आयेगी और ना ही किसी की शफ़ाअत फ़ायदेमंद होगी।

आयत 32

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ

"अल्लाह ही है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और उतारा आसमान से पानी, फिर निकाला उसके ज़रिये से फलों की शक्ल में तुम्हारे लिए रिज़्क़।"

وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۝۳۲

"और मुसख्खर कर दिया तुम्हारे लिये कश्ती को कि वो चले समुन्दर में उसके हुक्म से, और उसने मुसख्खर कर दिए तुम्हारे लिये दरिया (और नहरें वगैरह)।"

आयत 33

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾

"और मुसख़्खर कर दिया तुम्हारे लिए सूरज और चाँद को, कि मुसलसल चल रहे हैं, और मुसख़्खर कर दिया तुम्हारे लिए रात को और दिन को।"

इन तमाम चीज़ों के गिनवाने से इंसान को यह जतलाना मक़सूद है कि ज़मीन के दामन और आसमान की वुसअतों में अल्लाह की तमाम तख्लीक़ात और फ़ितरत की तमाम क़ुव्वतें मुसलसल इंसान की ख़िदमत में उसकी नफ़ा रसानी के लिए मसरूफ़ेकार हैं और वो इसलिये कि इस कायनात में इंसान ही एक ऐसी मख्लूक़ है जो सब मख्लूक़ात से आला है। अल्लाह ने यह बिसात-ए-कौन व मकान इंसान ही के लिए बिछाई है और बाक़ी तमाम अशया (चीज़ों) को इसलिये पैदा किया है कि वो बिलवास्ता या बिलावास्ता उसकी ज़रूरियात पूरी करें। यही बात सूरतुल बक़रह की आयत 29 में इस तरह बयान फ़रमाई गई है: {هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَکُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا ۗ} यानि ये ज़मीन पर जो कुछ भी नज़र आ रहा है यह अल्लाह ने तुम्हारे (इंसानो के) लिए पैदा किया है। और उन चीज़ों को तुम्हारी ज़रूरतें पूरी करने के लिए मुसख़्खर कर दिया है।

आयत 34

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ

"और उसने तुम्हें वो सब कुछ दिया जो तुमने उससे माँगा।"

यह माँगना शऊरी भी और ग़ैरशऊरी भी। यानि वो तमाम चीज़ें भी अल्लाह ने हमारे लिए फ़राहम की हैं जिनका तक़ाज़ा हमारा वजूद करता है और हमें अपनी ज़िन्दगी को क़ायम रखने के लिए उनकी ज़रूरत है। क्योंकि इंसान को पूरी तरह शऊर नहीं है कि उसे किस-किस अंदाज़ में किस-किस चीज़ की ज़रूरत है और उसकी ज़रूरत की यह चीज़ें उसे कहाँ-कहाँ से दस्तयाब होंगी।

अल्लाह तआला ने इंसान की दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़रूरतें पूरी करने लिए असबाब व नताइज के ऐसे-ऐसे सिलसिले पैदा कर दिए हैं जिनका अहाता करना इंसानी अक़्ल के बस में नहीं है। अल्लाह ने बहुत सी ऐसी चीज़ें भी पैदा कर रखी हैं जिनसे इंसान की ज़रूरतें अनजाने में पूरी हो रही हैं। मसलन एक वक़्त तक इंसान को कब पता था कि कौनसी चीज़ में कौनसा विटामिन पाया जाता है। मगर वो विटामिन्स मुख़्तलिफ़ ग़िज़ाओं के ज़रिये से इंसान की ज़रूरतें इस तरह पूरी कर रहे थे कि इंसान को इसकी ख़बर तक ना थी। बहरहाल अल्लाह हमें वो चीज़ें भी अता करता है जो हम उससे शऊरी तौर पर माँगते हैं और वो भी जो हमारी ज़िन्दगी और बक़ा का फ़ितरी तक़ाज़ा हैं।

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ

"और अगर तुम अल्लाह की नेअमतों को गिनना चाहोगे तो नहीं गिन सकोगे। यक़ीनन इंसान

الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۳۴ *बड़ा ही ज़ालिम और बहुत नाशुक्रा है।”*

इंसान के लिए यह मुम्किन ही नहीं कि वो अल्लाह की नेअमतों को गिन सके। कफ्फ़ार (काफ़ की ज़बर के साथ) यहाँ فَعّال के वज़न पर मुबालगे का सीगा है, यानि नाशुक्री में बहुत बढ़ा हुआ।

आयात 35 से 41 तक

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا
وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۳۵ رَبِّ اِنَّهُنَّ
اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ
وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۳۶ رَبَّنَآ اِنِّيْٓ
اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ
بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ
اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ
الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ۳۷ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا
نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۭ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي

الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ
لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ
الدُّعَاۗءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ڰ
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

आयत 35

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

"और याद करो जब कहा इब्राहीम ने कि ऐ मेरे रब इस शहर (मक्का) को बना दे अमन की जगह और बचाए रख मुझे और मेरी औलाद को इससे कि हम बुतों की परस्तिश करें।"

यह मज़मून सूरतुल बक़रह के पन्द्रहवें रुकूअ के मज़मून से मिलता-जुलता है। हज़रत इब्राहीम अलै. से मा-क़ब्ल ज़माने की जो तारीख़ हमें मालूम हुई है उसके मुताबिक़ उस दौर की सबसे बड़ी गुमराही बुतपरस्ती थी। आप अलै. से पहले की तमाम अक़वाम गुमराही में मुब्तला थीं। आपकी अपनी क़ौम का इस सिलसिले में यह हाल था कि उन्होंने एक बहुत बड़े बुतखाने में बहुत से बुत सजा रखे थे। इन्हीं बुतों का सूरतुल अम्बिया में ज़िक्र मिलता है कि हज़रत इब्राहीम अलै. ने उनको तोड़ा था। इसके अलावा आपकी क़ौम

सितारों की पूजा भी करती थी, जबकि नमरूद ने उन्हें सियासी शिर्क में भी मुब्तला कर रखा था। वह इख़्तियारे मुतलक़ का दावेदार था और जिस चीज़ को वह चाहता जायज़ क़रार देता और जिसको चाहता ममनूअ (नाजायज़)।

आयत 36

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ

"ऐ मेरे परवरदिगार! इन बुतों ने (पहले भी) बहुत से लोगों को गुमराह किया है। तो जो कोई मेरी पैरवी करे वो तो बिलाशुबह मुझसे है"

मैंने खुद को हर क़िस्म के शिर्क से पाक कर लिया है, अब जो लोग मेरी पैरवी करें, शिर्क से दूर रहें, तौहीद के रास्ते पर चलें, ऐसे लोग तो मेरे ही साथी हैं, उनके साथ तो मेरा वादा पूरा होगा।

وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۳۶

"और जो मेरी नाफ़रमानी करे तो बिलाशुबह तू बख्शने वाला मेहरबान है।"

हज़रत इब्राहीम अलै. की तबीयत के बारे में हम सूरह हूद में अल्लाह तआला का यह फ़रमान पढ़ चुके हैं: {اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ} (आयत 75) कि आप बहुत ही नरम दिल, हलीमुल तबीअ और हर वक़्त अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाले थे। चुनाँचे जब गुनहगारों का ज़िक्र हुआ तो आपने अल्लाह की सिफ़ाते ग़फ्फ़ारी और रहीमी का ज़िक्र करने पर ही इकतफ़ा (संतोष) किया है। बिल्कुल इसी अंदाज़ में

हज़रत ईसा अलै. की इल्तजा (request) का ज़िक्र सूरह मायदा में आया है: {اِنۡ تُعَذِّبۡهُمۡ فَاِنَّهُمۡ عِبَادُكَ ۚ وَاِنۡ تَغۡفِرۡ لَهُمۡ فَاِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ} (आयत 118) यानि परवरदिगार! अगर तू उन्हें अज़ाब देगा तो वो तेरे ही बंदे हैं, तू जिस तरह चाहे उन्हें अज़ाब दे, तेरा इख़्तियार मुतलक़ है। लेकिन अगर तू उन्हें माफ़ कर दे तो भी तेरे इख़्तियार और तेरी हिकमत पर कोई ऐतराज़ करने वाला नहीं है।

आयत 37

رَبَّنَاۤ اِنِّىۡۤ اَسۡكَنۡتُ مِنۡ ذُرِّيَّتِىۡ بِوَادٍ غَيۡرِ ذِىۡ زَرۡعٍ عِنۡدَ بَيۡتِكَ الۡمُحَرَّمِ ۙ

"ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद (की एक शाख) को आबाद कर दिया है इस बे-आब-ओ-गयाह वादी (बंजर भूमी) में तेरे मोहतरम घर के पास"

ऐ हमारे परवरदिगार! तेरे हुक्म के मुताबिक़ मैंने यहाँ तेरे इस मोहतरम घर के पास अपनी औलाद को लाकर आबाद कर दिया है। हज़रत इब्राहीम अलै. की दुआ में पहले रब्बी, रब्बी (ऐ मेरे परवरदिगार!) का सीगा आ रहा था मगर अब "रब्बना" जमा का सीगा आ गया है। मालूम होता है कि इस मौक़े पर आप अलै. के साथ हज़रत इस्माईल अलै. भी शामिल हो गये हैं। यहाँ पर عِنۡدَ بَيۡتِكَ الۡمُحَرَّمِ के अल्फ़ाज़ से उन रिवायात को भी तक़्वियत (मज़बूती) मिलती है जिनके मुताबिक़ बैतुल्लाह की तामीर सबसे पहले हज़रत आदम अलै. ने की थी। उन रिवायात में यह भी मज़कूर है कि

हज़रत आदम अलै. का तामीर करदा बैतुल्लाह इब्तदाई ज़माने में गिर गया और सैलाब के सबब उसकी दीवारें वगैरह भी बह गयीं, सिर्फ़ बुनियादें बाक़ी रह गयीं। उन्हीं बुनियादों पर फिर हज़रत इब्राहीम अलै. और हज़रत इस्माईल अलै. ने उसकी तामीर की जिसका ज़िक्र सूरतुल बक़रह की आयत 127 में मिलता है: {وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ۭ} बहरहाल हज़रत इब्राहीम अलै. अर्ज़ कर रहे हैं:

رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ

"ऐ हमारे परवरदिगार! ताकि ये नमाज़ क़ायम करें, तू तो लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ माइल कर दे"

लोगों के दिलों में उनके लिए मुहब्बत पैदा हो जाये, लोग ऐतराफ़ व जवानिब से उनके पास आयें, ताकि इस तरह उनके लिए यहाँ रहने और बसने का बंदोबस्त हो सके।

وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ۝۳۷

"और उनको रिज़्क अता कर फलों से, ताकि वो शुक्र अदा करें।"

आयत 38

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۭ

"ऐ हमारे परवरदिगार! तू खूब जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम ज़ाहिर करते हैं।"

وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝۳۸

"और अल्लाह पर तो कोई शय मख़्फ़ी (छुपी) नहीं ज़मीन में और ना आसमान में।"

आयत 39

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ

"कुल शुक्र और कुल सना उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझे अता फ़रमाये, बावजूद बुढ़ापे के इस्माईल और इस्हाक़ अलै. (जैसे बेटे)।"

जब हज़रत इस्माईल अलै. की वलादत हुई तो हज़रत इब्राहीम अलै. की उम्र 81 बरस थी और उसके कई साल बाद हज़रत इसहाक़ अलै. पैदा हुए।

اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ ۝۳۹

"यक़ीनन मेरा परवरदिगार दुआओं को सुनने वाला है।"

आयत 40

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ڰ

"ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे बना दे नमाज़ क़ायम करने वाला और मेरी औलाद में से भी"

यानि मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे कि मैं नमाज़ को पूरी तरह क़ायम रखूँ और मेरी औलाद को भी तौफ़ीक़ बख़्श दे कि वो लोग भी नमाज़ क़ायम करने वाले बनकर रहें।

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾

"ऐ हमारे परवरदिगार! मेरी इस दुआ को क़ुबूल फ़रमा।"

आयत 41

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ
يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

"ऐ हमारे परवरदिगार! मुझे, मेरे वालिदैन और तमाम मोमिनीन को बख़्श दे, जिस दिन हिसाब क़ायम हो।"

आयात 42 से 52 तक

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ڛ اِنَّمَا
يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾
مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ
وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾ وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ
الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ
قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۭ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا
اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ وَّسَكَنْتُمْ فِيْ

مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا
مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ
لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ
وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴۷﴾ يَوْمَ
تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا
لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ
مُّقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾ ۚ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ
وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿۵۰﴾ ۙ لِيَجْزِىَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ
مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾ هٰذَا بَلٰغٌ
لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۵۲﴾ ۧ

आयत 42

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ؕ

"और आप हरगिज़ ना समझें अल्लाह को गाफ़िल उससे जो ये ज़ालिम कर रहे हैं।"

اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾

"यक़ीनन वो उन्हें मोहलत दे रहा है उस दिन तक जिसमें निगाहें फटी की फटी रह जायेंगी।"

आयत 43

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَاۗءٌ ﴿٤٣﴾

"वो दौड़ते होंगे (महशर की तरफ़) अपने सरों को ऊपर उठाए, नहीं लौटेगी उनकी तरफ़ उनकी निगाह, और उनके दिल उड़े हुए होंगे।"

ख़ौफ और दहशत के सबब नज़रें एक जगह जम कर रह जायेंगी और इधर-उधर हरकत करना भी भूल जायेंगी। यह मैदाने हश्र में लोगो की कैफ़ियत का नक़्शा खींचा गया है।

आयत 44

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ

"और (ऐ नबी ﷺ!) ख़बरदार कर दीजिए लोगों को उस दिन से जब उन पर अज़ाब आयेगा"

فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۭ

"तो कहेंगे वो लोग जिन्होंने ज़ुल्म की रविश इख़्तियार की थी: ऐ हमारे परवरदिगार! हमें मोहलत दे दे बस थोड़ी सी मुद्दत तक, हम तेरी दावत क़ुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे।"

اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ 44

"(जवाब में कहा जायेगा) क्या तुम वही लोग नहीं हो जो पहले क़समें खाया करते थे कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं है।"

कि हमारा इक़तदार, हमारी यह शान व शौकत, हमारी यह जागीरें, यह सब कुछ हमारी बड़ी सोची-समझी मन्सूबा बंदियों का नतीजा है, इन्हें कहाँ से ज़वाल आयेगा!

आयत 45

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

"और तुम आबाद थे उन्हीं लोगो के मस्कानों (घरों) में जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था"

तुम्हारे आस-पास के इलाक़ों में वो क़ौमें आबाद थीं जो माज़ी (past) में अल्लाह के अज़ाब का निशाना बनीं। क़ौमे आद भी इसी जज़ीरा नुमाए अरब में आबाद थी, क़ौमे समूद के मसाकिन भी तुम्हें दावते इबरत देते रहे, क़ौमे मदयन का

इलाक़ा भी तुमसे कुछ ज़्यादा दूर नहीं था और क़ौमे लूत के शहरों के आसार से भी तुम लोग खूब वाक़िफ़ थे।

وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾

"और तुम पर अच्छी तरह वाज़ेह हो गया था कि हमने उनके साथ क्या सुलूक किया था, और हमने तुम्हारे लिए मिसालें भी बयान कर दी थीं।"

उनके हालात पूरी तरह खोल कर तुम लोगों को सुना दिए गये थे। यह तज़किरा बि-अय्यामिल्लाह की तफ़सीलात की तरफ इशारा है जो क़ुरान में बयान हुई हैं और इस सिलसिले में हुज़ूर ﷺ से इसी सूरत की आयत 5 में ख़ुसूसी तौर पर फ़रमाया गया: {وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ} "कि आप अल्लाह के दिनों (अक़वामे गुज़िश्ता के वाक़िआते अज़ाब) के हवाले से इन लोगों को खबरदार करें।"

आयत 46

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ

"और उन्होंने अपनी सी चालें चलीं"

ऐ क़ुरैशे मक्का! जिस तरह आज तुम हमारे नबी ﷺ के ख़िलाफ़ अपनी चालें चल रहे हो, इसी तरह तुमसे पहले वाले लोगों ने भी कुछ कमी नहीं की थी। जहाँ तक उनका बस चला था उन्होंने अपनी चालें चली थीं। क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह और क़ौमे लूत के सरदारों ने अपने रसूलों के ख़िलाफ़ जो कुछ किया और जो कुछ कहा उसकी तफ़सीलात हम तुम्हें सुना चुके हैं। और क़ौमे शुऐब के

सरदारों की मजबूरी का ज़िक्र भी हम कर चुके हैं जो तुम लोगों की मजबूरी से मिलती-जुलती थी। यानि उनका बेचारगी से यह कहना कि अगर तुम्हारा क़बीला तुम्हारी पुश्त पर ना होता तो हम अब तक तुम्हें संगसार कर चुके होते। चुनाँचे हमारे लिए और हमारे नबी ﷺ के लिए तुम्हारी ये चालें, यह साज़िशें और ये रेशा दवानियाँ कोई अनहोनी नहीं हैं। अलबत्ता तुम लोग अपनी पेशरू अक़वाम (पहली क़ौमों) के वाक़िआत के आइने में अपने मुस्तक़बिल और अन्जाम की झलक देखना चाहो तो साफ़ देख सकते हो। तुम लोग अंदाज़ा कर सकते हो कि तुमसे पहले उन मुशरिकीने हक़ की चालें किस हद तक कामयाब हुईं और तुम तजज़िया (analysis) कर सकते हो कि हर बार हक़ व बातिल की कशमकश का आखिरी नतीजा क्या निकला।

وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۭ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ؀٤٦

"और अल्लाह ही के क़ब्ज़ा-ए-कुदरत में हैं उनकी तमाम चालें। और उनकी चालें ऐसी तो ना थीं कि उनसे पहाड़ टल जाते।"(10)

अल्लाह तआला उनकी तमाम चालों का अहाता किए हुए था और यह मुमकिन नहीं था कि अल्लाह की मर्ज़ी और मशियत के खिलाफ़ उनका कोई मन्सूबा कामयाब हो जाता। बहरहाल उनकी चालें और मन्सूबेबंदियाँ अल्लाह तआला के मुक़ाबले में कुछ ऐसी नहीं थीं कि उनके सबब पहाड़ अपनी जगह बदलने पर मजबूर हो जाते।

आयत 47

فَلَا تَحۡسَبَنَّ اللّٰہَ مُخۡلِفَ وَعۡدِہٖ رُسُلَہٗ ؕ

"तो आप यह मत समझें कि अल्लाह अपने उस वादे के खिलाफ़ करेगा जो उसने अपने रसूलों से किया।"

यहाँ पर रसूल के बजाय रुसुल जमा का सीगा इस्तेमाल हुआ है, यानि तमाम रसूलों के साथ अल्लाह का यह मुस्तक़िल वादा रहा कि तुम्हारी मदद की जायेगी और आखरी कामयाबी तुम्हारी ही होगी। जैसा कि सूरतुल मुजादला की आयत 21 में फ़रमाया: {كَتَبَ اللّٰہُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیۡ ؕ} यानि अल्लाह ने तय किया हुआ है, लिख कर रखा हुआ है कि मैं और मेरे रसूल ग़ालिब आकर रहेंगे। दरमियान में कुछ ऊँच-नीच होगी, तकलीफ़ें भी आएँगी, आज़माईशों का सामना भी करना होगा, मगर फ़तह हमेशा हिज़बुल्लाह ही की होगी। आज़माईशों के उन मरहलों के बारे में सूरतुल बक़रह में फ़रमाया:

وَلَنَبۡلُوَنَّکُمۡ بِشَیۡءٍ مِّنَ الۡخَوۡفِ وَالۡجُوۡعِ وَنَقۡصٍ مِّنَ الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَنۡفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیۡنَ ﴿۱۵۵﴾

"और हम ज़रूर तुम्हारी आज़माईश करेंगे किसी क़द्र ख़ौफ और भूख से और माल और जानों और समरात (फलों) के नुक़सान से, तो आप सब्र करने वालों को बशारत सुना दें।"

इसके बाद सूरतुल बक़रह में ही फ़रमाया:

اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ وَلَمَّا يَاۡتِكُمۡ مَّثَلُ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ ؕ مَسَّتۡهُمُ الۡبَاۡسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلۡزِلُوۡا حَتّٰى يَقُوۡلَ الرَّسُوۡلُ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ مَتٰى نَصۡرُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصۡرَ اللّٰهِ قَرِيۡبٌ ﴿۲۱۴﴾

"क्या तुम समझते हो कि यूँ ही जन्नत में दाखिल हो जाओगे और अभी तुमको पहले लोगों जैसी (मुश्किलात) तो पेश आई ही नहीं। उनको तो (बड़ी-बड़ी) सख़्तियाँ और तकलीफ़ें पहुँची थीं और वो हिला डाले गये थे, यहाँ तक कि पैगम्बर और उनके साथ जो मोमिनीन थे सब पुकार उठे कि कब आयेगी अल्लाह की मदद, आगाह हो जाओ! अल्लाह की मदद क़रीब है।"

बहरहाल अल्लाह तआला का अपने रसूलों से यह पुख़्ता वादा रहा है कि हक़ व बातिल की इस कशमकश में बिल्आखिर फ़तह उन्हीं की होगी और उन्हें झुठलाने वालों को उनके सामने सज़ा दी जायेगी। यह सारी बातें तफ़सील से क़ुरान में बयान की जा चुकी हैं ताकि उन लोगों को कोई शक ना रहे।

اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ ذُو انۡتِقَامٍ ﴿۴۷﴾

"यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त है इन्तेक़ाम लेने वाला।"

आयत 48

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ

"जिस दिन ज़मीन बदल दी जायेगी इस ज़मीन के सिवा (किसी और शक्ल में) और आसमानों को भी (बदल दिया जायेगा)"

यह रोज़े महशर के मन्ज़र की तरफ इशारा है। इस सिलसिले में क़ब्ल अज़ भी कई दफ़ा ज़िक्र किया गया है कि क़ुरान की फ़राहम करदा तफ़्सीलात के मुताबिक़ यूँ लगता है जैसे महशर का मैदान इसी ज़मीन को बनाया जायेगा। उसके लिए ज़मीन की शक्ल में मुनासिब तब्दीली की जायेगी, जैसा कि इस आयत में फ़रमाया गया है। सूरतुल फ़ज्र आयत 21 में इस तब्दीली की एक सूरत इस तरह बताई गई है: {اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا} "जब ज़मीन को कूट-कूट कर हमवार (smooth) कर दिया जायेगा।" फिर सूरतुल इन्शक़ाक़ आयत 3 में फ़रमाया गया: {وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ} "और जब ज़मीन को खींचा जायेगा।" इस तरह तमाम तफ़सीलात को जमा करके जो सूरतेहाल मुमकिन होती महसूस होती है वो यह है कि ज़मीन के तमाम नशैब व फ़राज़ (ऊँच-नीच) को ख़त्म करके इसे बिल्कुल हमवार भी किया जायेगा और वसीअ (बड़ा) भी। इस तरह इसे एक बहुत बड़े मैदान की शक्ल दे दी जायेगी। जब ज़मीन को हमवार किया जायेगा तो पहाड़ रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे, ज़मीन के पिचकने से इसके अन्दर का सारा लावा बहार निकाल आयेगा और समुन्दर भाप बन कर उड़ जाएँगे। इसी तरह निज़ामे समावी में भी ज़रुरी रद्दो-बदल किया जायेगा, जिसके बारे में सूरतुल क़ियामा में इस तरह बताया गया है: {وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ} (आयत 9) यानि

सूरज और चाँद को यकजा (एक) कर दिया जायेगा। वल्लाहु आलम!

हाल ही में एक साहब ने "The Machanics of the Doom's Day" के नाम से एक किताब लिखी है। यह साहब माहिरे तबीअयात (expert ऑफ़ physics) हैं। मैंने इस किताब का पेश लफ्ज़ भी लिखा है। इसमें उन्होंने बहुत सी ऐसी बातें लिखी हैं जिनकी तरफ़ इससे पहले तवज्जो नहीं की गई। इस लिहाज़ से उनकी यह बातें यक़ीनन क़ाबिले ग़ौर हैं। उन्होंने ने इस ख़्याल का इज़हार किया है कि क़यामत का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि उस वक़्त पूरी कायनात ख़त्म हो जायेगी, बल्कि यह वाक़्या सिर्फ़ हमारे निज़ामे शम्सी में रू नुमा होगा। जिस तरह इस कायनात के अंदर किसी गैलेक्सी या किसी गैलेक्सी के किसी हिस्से की मौत वाक़ेअ होती रहती है इसी तरह एक वक़्त आयेगा जब हमारा निज़ामे शम्सी तबाह हो जायेगा और तबाह होने के बाद कुछ और शक्ल इख़्तियार कर लेगा। हमारी ज़मीन भी चूँकि इस निज़ाम का हिस्सा है, लिहाज़ा इस पर भी हर चीज़ तबाह हो जायेगी, और यही क़यामत होगी। वल्लाहु आलम!

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾

"और ये हाज़िर हो जायेंगे अल्लाह के सामने जो वाहिद और क़ह्हार है।"

सूरतुल फ़ज्र आयत 22-23 में उस वक़्त का मंज़र बैन अल्फ़ाज़ बयान हुआ है: {وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا} {وَجِايْٓءَ يَوْمَىِٕذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ} "और अल्लाह तआला उस वक़्त नुज़ूल फ़रमाएगा, फ़रिश्ते भी क़तार दर क़तार आयेंगे और जहन्नम भी सामने

पेश कर दी जायेगी....” अल्लाह तआला के नुज़ूल फ़रमाने की कैफ़ियत का हम तसव्वुर नहीं कर सकते। जिस तरह हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला रात के आखरी हिस्से में आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़रमाता है, लेकिन हम यह नहीं जानते कि इस नुज़ूल की कैफ़ियत क्या होती है, इसी तरह आज हम नहीं जान सकते कि रोज़े क़यामत जब अल्लाह तआला ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमाएगा तो उसकी कैफ़ियत क्या होगी। मुमकिन है तब इसकी हक़ीक़त हम पर मुन्कशिफ़ (disclosure) कर दी जाये।

आयत 49

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾

“और तुम देखोगे मुजरिमों को उस रोज़ कि वो जकड़े हुए होंगे बाहम ज़ंजीरों में।”

आयत 50

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿۵۰﴾

“उनके कुरते होंगे गंधक के और ढाँपे हुए होगी उनके चेहरों को आग।”

आयत 51

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝51

"ताकि अल्लाह बदला दे दे हर जान को जो कुछ भी उसने कमाया। यक़ीनन अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।"

उस दिन अल्लाह तआला को इतने ज़्यादा लोगों का हिसाब लेते हुए देर नहीं लगेगी।

आयत 52

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ

"यह पहुँचा देना है लोगों के लिए"

इस क़ुरान और इसके अहकाम को लोगों तक पहुँचाने की ज़िम्मेदारी हमने मुहम्मदूँ रसूल अल्लाह ﷺ पर डाली थी। आप ﷺ ने यह ज़िम्मेदारी अहसन तरीक़े से पूरी कर दी है। अब यह ज़िम्मेदारी आप ﷺ की उम्मत के हर फ़र्द पर आयद होती है कि वो ये पैग़ाम तमाम इंसानों तक पहुँचाये।

وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ

"ताकि वो इसके ज़रिये से ख़बरदार कर दिये जायें"

यानि इस क़ुरान के ज़रिये से तमाम इंसानों की तज़कीर व तनज़ीर का हक़ अदा हो जाये। इस हवाले से सूरतुल अनआम की आयत 19 के यह अल्फ़ाज़ भी याद कर लीजिए: {وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ} "यह क़ुरान मेरी तरफ़ वही किया गया है ताकि मैं ख़बरदार करूँ इसके ज़रिये से

तुम्हें भी और (हर उस शख़्स को) जिस तक भी यह पहुँच जाये।"

وَلِيَعۡلَمُوۡۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الۡاَلۡبَابِ ﴿۵۲﴾

"और ताकि वो जान लें कि सिर्फ़ वही मअबूद है अकेला, और इसलिये कि नसीहत अख़ज़ करें अक़्ल वाले लोग।"

بارك الله لى ولكم فى القرآن العظيم ونفعنى وايا كم بالآيات والذكر الحكيم۔

❀ ❀ ❀

सूरतुल हिज्र

तम्हीदी कलिमात

असलूब (pattern) के ऐतबार से सूरतुल हिज्र अपने ग्रुप की बाक़ी तीनों सूरतों से बिल्कुल मुनफ़रिद (unique) है, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह पिछले ज़ेली ग्रुप में सूरह युसुफ़ बाक़ी दोनों सूरतों से मुनफ़रिद थी। चुनाँचे इस ज़ेली ग्रुप की पहली दोनों सूरतों (अल रअद और इब्राहीम) का ना सिर्फ़ मिज़ाज और असलूब एक सा है बल्कि दोनों में निस्बते ज़ौजियत भी है, जबकि सूरतुल हिज्र का मिज़ाज, अंदाज़ और असलूब उन दोनों सूरतों से मुख़्तलिफ़ है।

असलूब में एक बुनियादी फ़र्क़ तो आयात की तवालत (लम्बाई) के सिलसिले में हैं। दूसरी दोनों सूरतों की आयात के मुक़ाबले में सूरतुल हिज्र की आयात निस्बतन छोटी हैं। सूरह रअद के छ: रुकूअ हैं और इसकी आयात 43 हैं। गोया औसतन एक रुकूअ में सात आयात हैं। इसी तरह सूरह इब्राहीम के सात रुकूअ हैं और इसकी 52 आयात हैं। यानि इसके एक रुकूअ में भी औसतन तक़रीबन सात आयात ही हैं। अब जब हम इस हवाले से सूरतुल हिज्र को देखते हैं तो इसके छ: रुकूअ में 99 आयात हैं। यानि एक रुकूअ में औसतन 16 आयात हैं। आयात के छोटे होने का मतलब ये है कि इस सूरत का असलूब मक्की दौर की इब्तदाई सूरतों से मिलता है। इससे यह साबित होता है कि सूरतुल हिज्र

इब्तदाई चार साल में नाज़िल होने वाली सूरतों में से एक है।

सूरतों के असलूब के बारे में एक बुनियादी नुक्ता बहुत अहम है कि बिल्कुल इब्तदाई दौर में नाज़िल होने वाली सूरतों की आयात छोटी और रिदम (rhythm) बहुत तेज़ है। इनमें सौती आहंग और ग़नाइयत (Sound Compatible & Humility) भी बहुत वाज़ेह है। जबकि बाद में नाज़िल होने वाली सूरतों के मिज़ाज और असलूब में इस लिहाज़ से हमें बतदरीज तब्दीली नज़र आती है और यह तब्दीली मदनी दौर में जाकर अपनी इन्तहा को पहुँच जाती है जहाँ आयात निस्बतन तवील हैं और रिदम बहुत धीमा। चुनाँचे मदनी दौर में आयात दैन, आयतल कुर्सी और आयतुलबिर्र जैसी ग़ैर मामूली तवालत की हामिल आयात भी हैं जो इब्तदाई दौर की बाज़ सूरतों से भी ज़्यादा तवील हैं। सूरतों के इस असलूब की मिसाल एक ऐसे दरिया की सी है जो पहाड़ों से निकलता है और बतदरीज सफ़र करते हुए मैदानी इलाक़े में पहुँचता है। पहाड़ी इलाक़े में उसका बहाव बहुत तेज़ और पाट मुख़्तसर होता है। लेकिन मैदानी इलाक़े में आकर उसके बहाव में ठहराव और पाट में वुसअत आ जाती है। जैसे दरिया-ए-सिंध, जो पहाड़ी इलाक़ों से गुज़रते हुए एक नदी का मंज़र पेश करता है, मैदानी इलाक़ों में दरियाखान वगैरह के क़रीब उसका पानी मीलों में फैला नज़र आता है।

इस मिसाल के मुताबिक़ इब्तदाई दौर की सूरतों का रिदम तेज़ और आयात मोहकम हैं, इनके मज़ामीन में जामियत और गहराई ज़्यादा है, जबकि बाद में नाज़िल होने वाली सूरतों में यह मज़ामिन बतदरीज फैलते गए हैं और

फिर इस निस्बत से इबारत का रिदम भी मध्यम होता गया है। इस तदरीजी तब्दीली के हवाले से देखें तो मक्की दौर की आखरी सूरतों में भी हमें वह रिदम नुमाया महसूस नहीं होता जो इब्तदाई ज़माने की सूरतों, मसलन सूरह क़ॉफ़, सूरतुन्नजम, सूरतुर्ररहमान, सूरतुल वाक़या और सूरतुल मुल्क में नज़र आता है।

अब रहा यह सवाल कि इब्तदाई दौर में नाज़िल होने वाली सूरतुल हिज्र को मुस्हफ़ के वस्त (बीच) में और ऐसी सूरतों के दरमियान में क्यों रखा गया है जिनका ज़माना-ए-नुज़ूल बाद का है, तो इसका वाज़ेह और हत्मी (अंतिम) जवाब तो यही है कि इस मामले का ताल्लुक़ तौफ़ीक़ी अमूर से है और इसकी असल हिकमत भी अल्लाह तआला ही जानता है। मगर इस सिलसिले में मेरी एक अपनी राय है जिसका इज़हार करने की जसारत कर रहा हूँ, और वो यह कि यहाँ एक जैसी मक्की सूरतों का एक तवील सिलसिला है जो ग्याहरवें पारे से शुरू होकर अठ्ठाहरवें पारे तक चला गया है। इन सूरतों में एक जैसे मज़ामीन तकरार के साथ आ रहे हैं। चुनाँचे इस यकसानियत (समानता) को ख़त्म करने और एक तरह का तनूअ (विभिन्नता) पैदा करने के लिए इब्तदाई दौर की एक सूरत को यहाँ पर रखा गया है। वरना मिज़ाज और असलूब के ऐतबार से सूरतुल हिज्र की बहुत ज़्यादा मुशाबहत सूरतुल शौअरा के साथ है। वल्लाहु आलम! यहाँ पर सूरतुल हिज्र की एक आयत को तेरहवें पारे में और बाक़ी सूरतों को चौदहवें पारे में देख कर पारों की तक़सीम की बुनियाद और उसके तरीक़े कार के बारे में भी सवाल उठता है। इस सिलसिले में बुनियादी तौर पर यह बात अहम है कि यह तक़सीम सहाबा रजि. के ज़माने में नहीं थी, बल्कि

बाद में की गई, और ब-गर्ज़े-तिलावत क़ुरान मजीद को तीस बराबर अज्ज़ाअ में तक़सीम कर दिया गया, ताकि रोज़ाना एक पारे की तिलावत से महीने भर में क़ुरान ख़त्म कर लिया जाये। बहरहाल इस तक़सीम में कोई ख़ास हिकमत नज़र नहीं आती और ना ही इसमें मज़मून के तसलसुल का ख़्याल रखा गया है। इस तक़सीम में जा-बजा सूरतों की फ़सीलें टूटी नज़र आतीं हैं। कई मक़ामात पर किसी सूरत की चंद आयात एक पारे में और बाक़ी सूरह अगले पारे में शामिल की गई है। जैसे सूरह हूद की इब्तदाई पाँच आयात ग्यारहवें पारे में है जबकि बाक़ी पूरी सूरत बारहवें पारे में है। इसके बरअक्स क़ुरान हकीम की मंज़िलों की तक़सीम सहाबा रजि. के दौर में हुई और इस तक़सीम में बड़ा हुस्न नज़र आता है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

आयात 1 से 15 तक

الٓرٰ ۟ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ وَقُرۡاٰنٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۱﴾ رُبَمَا يَوَدُّ
الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَوۡ كَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿۲﴾ ذَرۡهُمۡ يَاۡكُلُوۡا
وَيَتَمَتَّعُوۡا وَيُلۡهِهِمُ الۡاَمَلُ فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳﴾ وَمَاۤ
اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعۡلُوۡمٌ ﴿۴﴾ مَا
تَسۡبِقُ مِنۡ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ ﴿۵﴾ وَقَالُوۡا

يٰۤاَيُّهَا الَّذِىۡ نُزِّلَ عَلَيۡهِ الذِّكۡرُ اِنَّكَ لَمَجۡنُوۡنٌ ۞ ٦ لَوۡ
مَا تَاۡتِيۡنَا بِالۡمَلٰۤـئِكَةِ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ۞ ٧ مَا
نُنَزِّلُ الۡمَلٰۤـئِكَةَ اِلَّا بِالۡحَـقِّ وَمَا كَانُوۡۤا اِذًا مُّنۡظَرِيۡنَ ۞ ٨
اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰـفِظُوۡنَ ۞ ٩ وَلَقَدۡ
اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ فِىۡ شِيَعِ الۡاَوَّلِيۡنَ ۞ ١٠ وَمَا
يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۞ ١١
كَذٰلِكَ نَسۡلُكُهٗ فِىۡ قُلُوۡبِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ۞ ١٢ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ
بِهٖ وَقَدۡ خَلَتۡ سُنَّةُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۞ ١٣ وَلَوۡ فَتَحۡنَا عَلَيۡهِمۡ
بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوۡا فِيۡهِ يَعۡرُجُوۡنَ ۞ ١٤ لَقَالُوۡۤا اِنَّمَا
سُكِّرَتۡ اَبۡصَارُنَا بَلۡ نَحۡنُ قَوۡمٌ مَّسۡحُوۡرُوۡنَ ۞ ١٥

आयत 1

الٓرٰ

"अलिफ़, लाम, रा"

हुरूफ़े मुक़त्ताआत का यह सिलसिला सूरह यूनुस से शुरु हुआ था। पाँच सूरतों के आग़ाज में अलिफ़, लाम, रा के हुरूफ़ हैं एक सूरह (अर् रअद) में अलिफ़, लाम, मीम, रा। यह इस सिलसिले की छठी और आखरी सूरत है।

تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ وَقُرۡاٰنٍ مُّبِيۡنٍ ①

"यह (अल्लाह की) किताब और क़ुराने मुबीन की आयात हैं।"

आयत 2

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَوۡ كَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ②

"एक वक़्त ख़्वाहिश करेंगे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया था कि काश वो मुसलमान होते।"

एक वक़्त आयेगा कि उन लोगों के लिए उनका कुफ़्र मुअजबे हसरत (पछतावा) बन जायेगा।

आयत 3

ذَرۡهُمۡ يَاۡكُلُوۡا وَيَتَمَتَّعُوۡا

"(ऐ नबी ﷺ!) छोड़ दीजिए इनको, ये खा-पी लें और फ़ायदा उठा लें।"

ज़मीन में जो मोहलत इन्हें मिली हुई है उसमें खूब मज़े कर लें।

وَيُلۡهِهِمُ الۡاَمَلُ

"और (लंबी-लंबी) उम्मीदें इनको गाफ़िल किए रखें"

اَلۡهٰى, يُلۡهِى, اِلۡهَاً के मायने हैं ग़ाफिल कर देना। सूरातुत्तकासुर में फ़रमाया गया: {اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ} {حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ} (आयात 1-2) "ग़ाफिल किए रखा तुम्हें कसरत की ख़्वाहिश के मुक़ाबले

ने, यहाँ तक कि तुमने क़ब्रें जा देखीं।" इंसान के लंबे-लंबे मन्सूबे बनाने को "तवले अमल (distant hopes)" कहते हैं। जब इंसान इस गोरख धंधे में पड़ जाये, तो ख़्वाहिशों और आरज़ूओं का यह सिलसिला ख़त्म होने में नहीं आता, मगर ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है। हदीसे नबवी ﷺ है: ((مَا قَلَّ وَكَفٰى خَيْرٌ مِّمَّا كَثُرَ وَأَلْهٰى))(11) यानि अगर कोई शय कम है लेकिन आपको किफ़ायत कर जाये, आपकी ज़रूरत उससे पूरी हो जाये तो यह उससे कहीं बेहतर है जो आपकी ज़रूरत से ज़्यादा हो और आपको अपने ख़ालिक़ और मालिक की याद से ग़ाफ़िल कर दे।

अगर माल व दौलत की रेल-पेल है, रिज़्क़ और सामाने आसाईश की फ़रावानी है, कभी कोई हाजत परेशान नहीं करती, कोई महरूमी, कोई नारसाई अल्लाह की याद ताज़ा करने का सबब नहीं बनती, तो ऐसी हालत में रफ्ता-रफ्ता इंसान के बिल्कुल ग़ाफ़िल हो जाने के इम्कानात होते हैं। इससे बेहतर है कि इतना मिले जिससे ज़रूरत पूरी हो जाये और किसी के सामने दस्ते सवाल-दराज़ ना करना पड़े। लेकिन इस क़द्र फ़रावानी ना हो कि ग़फ़लत गलबा पा ले।

فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ③

"तो अनक़रीब उन्हें मालूम हो जायेगा।"

आयत 4

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ④

"और हमने किसी भी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उसके लिए एक मुअय्यन नौश्ता (एक वक़्त तय) था।"

हर क़ौम पर आने वाला अज़ाब का एक वक़्त मुअय्यन था जो पहले से लिखा हुआ था।

आयत 5

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ⑤

"कोई उम्मत ना तो अपने वक़्ते मुअय्यन से आगे बढ़ सकती है और ना पीछे रह सकती है।"

आयत 6

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ⑥

"और उन्होंने कहा कि ऐ वो शख़्स जिस पर (उसके बक़ौल) यह ज़िक्र नाज़िल हुआ है (हमारे नज़दीक) तो तुम यक़ीनन दीवाने हो।"

मआज़ अल्लाह! सुम्मा मआज़ अल्लाह!! मजनून "जिन्न" से मुशतक़ (व्युत्पन्न) है। अरबी में जिन्न के मायने मख़्फ़ी चीज़ के हैं। इसी मायने मे रहमे मादर में बच्चे को जनीन कहा

जाता है, क्योंकि वो नज़र से पोशीदा (छुपा) होता है। इस ऐतबार से लफ्ज़ "जन्नत" भी इस माद्दे से है और इससे मुराद ऐसी ज़मीन है जो दरख्तों और घास वगैरह से पूरी तरह ढ़की हुई हो। सूरतुल अनआम आयत 76 में हज़रत इब्राहीम अलै. के तज़किरे में यह लफ़्ज़ इस तरह आया है: {فَلَمَّا جَنَّ عَلَيۡهِ ٱلَّيۡلُ} यानि जब रात की तारीकी ने उसे ढ़ाँप लिया। चुनाँचे मजनून उस शख़्स को भी कहा जाता है जिस पर जिन्न के असरात हों, आसेब का साया हो और उसको भी जिसका ज़हनी तवाज़ुन दुरुस्त ना हो।

रसूल अल्लाह ﷺ के बारे में यह बात वही के बिल्कुल इब्तदाई दौर में कही गई थी और इसके कहने वालों में वो लोग भी शामिल थे जो इस तरह के ख़्यालात का इज़हार मआनदाना (दुश्मनी के) अंदाज़ में नहीं बल्कि हमदर्दी में कर रहे थे। यानि जब इब्तदा में हुज़ूर ﷺ ने नुबूवत का दावा किया और बताया कि ग़ार-ए-हिरा में उनके पास फ़रिश्ता आया है तो बहुत से लोगों को गुमान हुआ कि शायद आप ﷺ को किसी बद् रूह वगैरह का असर हो गया है। चूँकि नुबूवत मिलने और फ़रिश्ते के आने का दावा उनके लिए बिल्कुल नई बात थी इसलिए उनका वाक़ई यह ख़्याल था कि अकेले कई-कई रातें ग़ार-ए-हिरा में रहने की वजह से ज़रूर आप ﷺ पर कसी बद् रूह या जिन्न के असरात हो गये हैं। चुनाँचे सूरह नून (इसका दूसरा नाम सूरतुल क़लम भी है) जो कि बिल्कुल इब्तदाई दौर की सूरत है, इसमें उन लोगों के ख़्यालात की तरदीद (इन्कार) करते हुए फ़रमाया गया: {مَآ أَنتَ بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ بِمَجۡنُونٍ} (आयत 2) "आप अपने रब के फ़ज़ल से मजनून नही हैं।"

आयत 7

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑦

"क्यों नहीं ले आते हमारे सामने फ़रिश्तों को अगर तुम सच्चे हो?"

अब इसके बाद अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी इन बातों का जवाब आ रहा है:

आयत 8

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰۗىِٕكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ

"हम नहीं उतारा करते फ़रिश्तों को मगर हक़ के साथ"

यानि यह लोग फ़रिश्तों को बुलाना चाहते हैं या अपनी शामत को? इन्हें मालूम होना चाहिए कि आद व समूद और क़ौमे लूत पर फ़रिश्ते नाज़िल हुए तो किस ग़र्ज़ से नाज़िल हुए! इन्हें मालूम होना चाहिए कि फ़रिश्ते जब किसी क़ौम पर नाज़िल होते हैं तो आखरी फ़ैसले के निफ़ाज़ के लिए नाज़िल होते हैं।

وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ⑧

"और (अगर फ़रिश्ते नाज़िल हो गये तो) फिर इन्हें मोहलत नहीं दी जायेगी।"

आयत 9

إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا ٱلذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ٩

"यक़ीनन हमने ही यह ज़िक्र नाज़िल किया है और बिलाशुबह हम ही इसके मुहाफ़िज़ हैं।"

यह आयत मुबारका बहुत अहम है। जहाँ तक इसके पहले हिस्से का ताल्लुक़ है तो यह हुक्म तौरात पर भी सादिक़ आता है और इंजील पर भी। यानि यह दोनों किताबें भी अल्लाह ही की तरफ़ से नाज़िल हुई थीं। क़ुरान में इसकी बार-बार तस्दीक़ भी की गई है। सूरतुल मायदा में तौरात के मुनज़्ज़ल मिन अल्लाह होने की तस्दीक़ इस तरह की गई है: {إِنَّآ أَنزَلۡنَا ٱلتَّوۡرَىٰةَ فِيهَا هُدٗى وَنُورٞ} (आयत 44)। सूरह आले इमरान की आयत 3 में इन दोनों किताबों का ज़िक्र फ़रमाया गया: {وَأَنزَلَ ٱلتَّوۡرَىٰةَ وَٱلۡإِنجِيلَ}। लेकिन इस आयत के दूसरे हिस्से में जो हुक्म आया है वो सिर्फ़ और सिर्फ़ क़ुरान की शान है। इससे पहले किसी इल्हामी किताब या सहीफ़ा-ए-आसमानी की हिफ़ाज़त की ज़मानत नहीं दी गई। इसकी वजह यह थी कि साबक़ा (पिछली) कुतुब की हिदायात व तालीमात हत्मी (अंतिम) और अब्दी (हमेशा क लिये) नहीं थीं। वो तो गोया अबूरी अदवार के लिए वक़्ती और आरज़ी हिदायात थीं और इस लिहाज से उन्हें हमेशा के लिए महफ़ूज़ रखने की ज़रूरत भी नहीं थी। अब जबकि हिदायत कामिल हो गई तो उसे ता-अबद (हमेशा तक के लिये) महफ़ूज़ कर दिया गया।

यह आयत ख़त्मे नुबूवत पर भी बहुत बड़ी दलील है। अगर सूरतुल मायदा की आयत 3 के मुताबिक़ क़ुरान

हिदायत दर्जा-ए-कामिलियत तक पहुँच गई और आयत ज़ेरे नज़र के मुताबिक़ वो अब्दी तौर पर महफ़ूज़ भी हो गई तो वही के जारी रहने की ज़रूरत भी ख़त्म हो गई। चुनाँचे क़ादयानियों के पास इन दोनों क़ुरानी हक़ायक़ को तस्लीम कर लेने के बाद (और उनके लिए इन्हें तस्लीम किये बग़ैर चारा भी नहीं) वही के जारी रहने के जवाज़ की कोई अक़्ली व मन्तक़ी दलील बाक़ी नहीं रह जाती। वही की ज़रूरत इन दोनों में से किसी एक सूरत में ही हो सकती है कि या तो अभी हिदायत कामिल नहीं हुई थी और उसकी तकमील के लिए वही के तसलसुल की ज़रूरत थी। या फिर हिदायत कामिल तो हो गई थी मगर बाद में ग़ैर महफ़ूज़ हो गई या गुम हो गई और इस वजह से पैदा हो जाने वाली कमी को पूरा करने के लिए वही की ज़रुरत थी। बहरहाल अगर इन दोनों में से कोई सूरत भी दरपेश नहीं है तो सिलसिला-ए-वही के जारी रहने का कोई जवाज़ नहीं। और अल्लाह तआला (मआज़ अल्लाह) अबस का काम नहीं करता कि ज़रूरत के बग़ैर ही सिलसिला-ए-वही को जारी किये रखे।

यहाँ दो दफ़ा (ज़ेरे नज़र आयत से क़ब्ल आयत 6 में भी) क़ुरान हकीम के लिए "अज़ ज़िक्र" का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है। इसी तरह सूरह "नून" की आखरी दो आयात में भी क़ुरान हकीम के लिए यह लफ्ज़ आया है। ज़िक्र का मफ़हूम याद दिहानी है। क़ुरानी फ़लसफ़े के मुताबिक़ क़ुरान मजीद का "अज़ ज़िक्र" होना इस मफ़हूम में है कि ईमानी हक़ायक़ ख़ुसूसी तौर पर अल्लाह की ज़ात और उसकी सिफ़ात का इल्म इंसानी रूह के अंदर मौजूद है, मगर इस इल्म पर ज़हूल (भूल और गफ़लत) का पर्दा तारी हो जाता है। जैसे एक वक़्त में इंसान को एक चीज़ याद होती है मगर बाद में

याद नहीं रहती। इसका मतलब यह है कि उस चीज़ के बारे में मालूमात उसकी याददाश्त के तहखाने में दब जाती है। फिर बाद में किसी वक़्त ज्योंहि कोई चीज़ उन मालूमात से मुताल्लिक़ सामने आती है तो इंसान के ज़हन में वो भूली-बिसरी मालूमात फिर से ताज़ा हो जाती हैं। इस तरह ज़हन में मौजूद मालूमात को फिर से ताज़ा करने वाली चीज़ गोया याद दिहानी (reminder) का काम करती है। मसलन एक दोस्त से आपकी सालहा-साल (सालों तक) से मुलाक़ात नहीं हुई और उसका ख्याल भी कभी नहीं आया, मगर एक दिन अचानक उसका दिया हुआ एक क़लम या रुमाल सामने आने से उस दोस्त की याद एकदम ज़हन में ताज़ा हो गई। इस क़लम या रुमाल की हैसियत गोया एक निशानी (या आयत) की है जिससे आपके ज़हन में एक भूली-बिसरी याद फिर से ताज़ा हो गई।

इसी तरह अल्लाह की ज़ात का इल्म इंसानी रूह में ख़फ्ता (dormant) हालत में मौजूद है। उस इल्म को फिर से जगा कर ताज़ा करने और उस पर पड़े हुए ज़हूल और निस्यान (भूल) के पर्दों को हटाने के लिए आयाते आफ़ाक़िया, आयाते अन्फ़ुसिया और आयाते क़ुरानिया गोया याद दिहानी का काम देती हैं और अल्लाह की याद को इंसान के ज़हन में ताज़ा करती हैं। इस लिहाज़ से क़ुरान को अज़ ज़िक्र (याद दिहानी) के नाम से मौसूम किया गया है।

आयत 10

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ⑩

"और (ऐ नबी ﷺ!) हमने आपसे पहले भी रसूल भेजे थे, पहली जमाअतों में।"

شِيَع, شِيْعَة की जमा है और इसके मायने अलग होकर फैलने वाले गिरोह के हैं। जैसे हज़रत नूह अलै. के बेटों की नस्लें बढ़ती गईं तो उनके क़बीले और गिरोह अलैहदा होते गये और यूँ तक़सीम होकर रुए ज़मीन पर फैलते गये। उर्दू अल्फ़ाज़ "इशाअत" और "शाया" भी इसी माद्दे से मुश्तक़ हैं, चुनाँचे इन अल्फ़ाज़ में भी फैलने और फैलाने का मफ़हूम पाया जाता है।

आयत 11

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑪

"और नहीं आया उनके पास कोई भी रसूल, मगर वो उसके साथ इस्तहज़ा (हँसी-मज़ाक) ही करते रहे।"

आयत 12

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ⑫

"इसी तरह हम इसको चुभो देते हैं मुजरिमों के दिलों में।"

हक़ की दावत अपनी तासीर की वजह से हमेशा मुख़ातबीन के दिलों में उतर जाती है। चुनाँचे जो लोग अंबिया की दावत को ठुकराते रहे, वो उसकी हक्क़ानियत को खूब पहचान लेने के बाद ठहराते रहे। इसलिए की हक़ को हक़ तस्लीम करने से उनके मफ़ादात पर ज़र्र (चोट) पड़ती थी।

आयत 13

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝۱۳

"(तो ऐ नबी ﷺ!) यह लोग ईमान नहीं लायेंगे और पहले लोगों की सुन्नत गुज़र चुकी है।"

अंबिया व रुसुल के मुख़ातबीन का हमेशा से यही तरीक़ा रहा है। जिस तरह हमने अपने रसूल मुहम्मद ﷺ पर यह "अज़्ज़िक्र" नाज़िल किया है इसी तरह पहले भी हम अपने रसूलों पर किताबें और सहीफ़े नाज़िल करते रहे हैं, मगर उनकी क़ौमों के लोग अक्सर इंकार ही करते रहे।

आयत 14

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝۱۴

"और अगर हम उन पर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल भी देते और वो उस पर चढ़ने लगते।"

आयत 15

لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ
اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ
مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٥

“तब भी वो यही कहते कि हमारी तो नज़र बंदी कर दी गई है, बल्कि हम पर तो जादू कर दिया गया है।”

आयात 16 से 25 तक

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٦
وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝١٧ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ
السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝١٨ وَالْاَرْضَ
مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ
شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ۝١٩ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ
لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝٢٠ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا
خَزَاۗىِٕنُهٗ ۡ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٢١ وَاَرْسَلْنَا
الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً
فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ۝٢٢ وَاِنَّا لَنَحْنُ
نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ۝٢٣ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

आयत 16

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾

"और हमने आसमान में बुर्ज बनाए हैं और हमने उसे (आसमानों को और बुर्जों को) मुज़य्यन कर दिया है देखने वालों के लिए।"

इन बुर्जों की असल हक़ीक़त का हमें इल्म नहीं है, इस लिहाज़ से यह आयत भी आयाते मुतशाबेहात में से है। अलबत्ता रात के वक़्त आसमान पर सितारों की बहार वह दिलकश मंज़र पेश करती है जिससे हर देखने वाले की आँख महज़ूज़ (प्रसन्न) हुए बग़ैर नहीं रह सकती।

आयत 17

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾

"और हमने हिफ़ाज़त की है उसकी हर शैताने मरदूद से।"

यह गोया हमारे ईमान बिल् ग़ैब का हिस्सा है कि इन सितारों के ज़रिये से अल्लाह तआला ने आसमानों में हिफ़ाज़ती इंतेज़ामात कर रखे हैं। इस कायनात की तख़्लीक़ के बारे में इंसान की जदीद तहक़ीक़ माज़ी क़रीब में हुई है, लेकिन अभी भी इस सिलसिले में इंसानी इल्म बहुत महदूद

है। वायरस और बैक्टीरिया के बारे में कुछ ही अरसा पहले हमें मालूम हुआ कि यह भी कोई मख्लूक़ है। इस वसीअ व अरीज़ (विशाल) कायनात में यक़ीनन बहुत से ऐसे हक़ायक़ होंगे जिनके बारे में अब भी इंसान कुछ नहीं जानता। बहरहाल अब तक जितनी मख्लूक़ात के बारे में हमें इल्म है उनमें सिर्फ़ तीन क़िस्म की मख्लूक़ात ऐसी हैं जिनमें खुद शऊरी (self consciousness) पाई जाती है, यानि मलाइका (फ़रिश्ते), जिन्नात और इंसान। इनमें से पहले मलाइका को पैदा किया गया, फिर जिन्नात को और फिर इंसान को। गोया इंसान इस कायनात की तख्लीक़ के ऐतबार से recent दौर की मख्लूक़ है। अलबत्ता इंसानों की अरवाह उसी दौर में पैदा की ग़ईं जब मलाइका को पैदा किया गया। बहरहाल ख़ुदशऊरी सिर्फ़ इन तीन क़िस्म की मख्लूक़ात में ही पाई जाती है, बाक़ी जो भी मख्लूक़ात इस कायनात में मौजूद हैं, चाहे वो खुश्की और समुद्र के जानवर हो या हवा में उड़ने वाले परिन्दे, उनमें शऊर तो है मगर ख़ुदशऊरी नहीं है।

जिन्नात की तख़्लीक़ चूँकि आग से हुई है लिहाज़ा उनके अंदर मख्फ़ी क़ुव्वत (potential energy) इंसानों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा है। मेरा गुमान है कि जिन्नात को सूरज की आग से पैदा किया गया है और इस लिहाज़ से उन्हें पूरे निज़ामे शम्सी (solar system) के दायरे में आमद व रफ्त की ताक़त और इस्तेदाद हासिल है और इसके लिए उन्हें किसी राकेट या मशीनी ज़राए की ज़रुरत नहीं है। अपनी इसी इस्तेदाद से नाजायज़ फ़ायदा उठाते हुए वो आलमे बाला से अल्लाह तआला के अहकाम और तदबीरात की तरसील (delivery) के दौरान मलाइका से कुछ ख़बरें

उचकने की कोशिश करते हैं। फिर वो ऐसी ख़बरें इंसानों में अपने दोस्तदार आमिल और काहिन लोगों को बताते हैं ताकि वो अपनी दुकानें चमका सकें। इसकी मिसाल यूँ है जैसे ऐवाने सदर से अहकाम की तरसील व तक़सीम के दौरान कोई शख़्स मुतालक़ा अहलकारों से उन अहकाम के बारे में ख़बरें हासिल करके क़ब्ल अज़ वक़्त उन लोगों तक पहुँचा दे जो उनके ज़रिए से अपनी दुकानें चमकाना चाहते हैं।

जिन्नात को निज़ामे शम्सी की हुदूद फलांगने से रोकने के लिए अल्लाह तआला ने सितारों में मिसाइल नस्ब कर रखे हैं। जब भी कोई जिन्न अपनी हुदूद से तजावुज़ करते हुए ममनुअ इलाक़े में दाखिल होने की कोशिश करता है तो उस पर मिसाइल फेंका जाता है जिसे हम शहाबे साक़िब कहते हैं। इस पूरे निज़ाम पर हम “कुल्लुन मिन इंदी रब्बिना” के उसूल के तहत यक़ीन रखते हैं जो हमारे ईमान बिल् ग़ैब का हिस्सा है। बहरहाल साइंसी तरक़्क़ी के सबब कायनात के बारे में अब तक सामने आने वाली मालूमात और ईजादात के साथ भी इन क़ुरानी मालूमात का किसी ना किसी हद तक तताबक़ (corroboration) मौजूद है।

आयत 18

اِلَّا مَنِ اسۡتَرَقَ السَّمۡعَ

“सिवाय उसके कि जो कोई चोरी-छिपे सुनना चाहे”

जैसे एक फरिश्ता कुछ अहकाम लेकर आ रहा हो और कोई जिन्न उससे कोई सुन-गुन लेने की कोशिश करे। फरिश्ते नूरी हैं और जिन्न नारी (आग) मख़्लूक़ हैं, चुनाँचे नूर और नार (आग) के दरमियान ज़्यादा बुअद (फ़र्क़) ना होने की वजह

से ऐसा होना मुम्किन है। अज़ाज़ील (इब्लीस) का भी एक जिन्न होने के बावजूद फरिश्तों के साथ उठना-बैठना था।

فَاَتۡبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيۡنٌ ۝۱۸

"तो उसका पीछा करता है एक अंगारा चमकता हुआ।"

ऐसी खिलाफ़वर्ज़ी की सूरत में उस जिन्न पर मिसाइल फेंका जाता है। यह मिसाइल अल्लाह तआला ने इसी मक़सद के लिए सितारों में नस्ब कर रखे हैं।

आयत 19

وَالۡاَرۡضَ مَدَدۡنٰهَا وَاَلۡقَيۡنَا فِيۡهَا رَوَاسِىَ

"और ज़मीन को हमने फैला दिया और इसमें हमने लंगर डाल दिये"

ज़मीन के यह लंगर पहाड़ हैं जिनके बारे में क़ुरान बार-बार कहता है कि यह ज़मीन की हरकत को मुतवाज़न रखने (Isostasy) का एक ज़रिया हैं।

وَاَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ شَىۡءٍ مَّوۡزُوۡنٍ ۝۱۹

"और उसमें उगा दी हमने हर शय ठीक अंदाज़े के मुताबिक़।"

कायनात के इस ख़ुदाई निज़ाम में हर चीज़ की मिक़दार और तादाद उस हद तक ही रखी गई है जिस हद तक उसकी ज़रुरत है। अगर कोई चीज़ उस मुक़र्रर हद से बढ़ेगी तो इस निज़ाम में खलल का बाइस बनेगी। मसलन बाज़ मछलियों के अंडों की तादाद लाखों में होती है। यह तमाम अंडें अगर

मछलियाँ बन जायें तो चंद ही सालों में एक मछली की औलाद इस ज़मीन के हुज्म (मात्रा) से भी कई गुना ज़्यादा बढ़ जाये। बहरहाल इस कायनात के निज़ाम को दुरुस्त रखने के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से हर चीज़ को एक तयशुदा अंदाज़े और ज़रुरत के मुताबिक़ रखा गया है।

आयत 20

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهُ بِرٰزِقِيْنَ ۝۲۰

"और हमने बनाए हैं तुम्हारे लिए इस ज़मीन में ज़राए मआश (उनके लिए भी) जिन्हें तुम रिज़्क़ नहीं देते।"

कुछ मख़्लूक़ तो ऐसी है जिसकी रोज़ी और खाने-पीने का इंतेज़ाम बज़ाहिर इंसानों के ज़िम्मेदारी है, जैसे पालतु जानवर, मगर बहुत सी मख्लूक़ात ऐसी हैं जिनके रिज़्क़ की ज़िम्मेदारी इंसानों पर नहीं है, मगर अल्लाह उन सबको उनके हिस्से का रिज़्क़ बाहम (परस्पर) पहुँचा रहा है।

आयत 21

وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ

"और नहीं है कोई शय मगर हमारे पास हैं उसके ख़ज़ाने"

कोई शय ऐसी नहीं है जिसके ख़ज़ाने हमारे पास ना हों। हमारे ख़ज़ाने और वसाइल ला-महदूद हैं, लेकिन:

وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ ﴿۲۱﴾

"हम नाज़िल करते उसमें से मगर एक तयशुदा अंदाज़े के मुताबिक़।"

उन लामुतनाही और ला-महदूदी (Endless & Unlimited) ख़ज़ानों से सिर्फ़ ज़रुरत के मुताबिक़ अश्या (चीज़ें) दुनिया में भेजी जाती हैं। जैसे हमारे यहाँ बड़े-बड़े गोदामों से ज़रुरत के मुताबिक़ चीज़ों की तरसील की जाती है।

आयत 22

وَاَرۡسَلۡنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ

"और हम भेजतें हैं हवाएँ जो बोझल होती हैं (या बोझल करने वाली होतीं हैं)"

لَوَاقِحَ का मफ़हूम पहले तो यही समझा जाता था कि ये हवाएँ बादलों को उठा कर लाती हैं और बारिश का सबब बनती हैं, लेकिन अब जदीद साइंसी तहक़ीक़ से मालूम हुआ कि (polen grains) भी हवाओं के ज़रिए मुन्तक़िल होते हैं जिनसे फूलों की फर्टीलाइज़ेशन होती है, जिसके नतीजे में फ़सलें और फल पैदा होते हैं। यूँ यह सारा नबाताती निज़ाम (वनस्पति विज्ञान) भी हवाओं की वजह से चल रहा है।

فَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسۡقَيۡنٰكُمُوۡهُ ۚ

"पस हमने उतारा आसमान से पानी फिर वो तुम लोगों को पिलाया।"

पानी मबदा-ए-हयात है। ज़मीन पर हर तरह की ज़िन्दगी के वजूद का मिम्बा और सरचश्मा भी पानी है और फिर पानी पर ही ज़िन्दगी की बक़ा का इन्हसार भी है। पानी की इस अहमियत के पेशेनज़र अल्लाह तआला ने इसकी तक़सीम व तरसील का एक लगा-बंधा निज़ाम वज़अ किया है जिसे आज की साइंस ने वाटर साइकिल का नाम दिया है। वाटर साइकिल का यह अज़ीमुश्शान निज़ाम अल्लाह तआला के अजाईबात मे से है। समुद्रों से हवाओं तक बुखारात पहुँचा कर बारिश और बर्फ़बारी का इंतेज़ाम, ग्लैशियर्स की शक्ल में बुलंद व बाला पहाड़ों पर वाटर स्टोरेज का अहतमाम, फिर चश्मों, नदी-नालों और दरियाओं के ज़रिए से इस पानी की वसीअ व अरीज़ मैदानी इलाक़ों तक रसाई और ज़ेरेज़मीन पानी का अज़ीमुश्शान ज़खीरा। यह अल्लाह तआला का वज़अ करदा वाटर साइकिल है जिस पर पूरी दुनिया में हर क़िस्म की ज़िन्दगी का दारोमदार है।

وَمَآ اَنۡتُمۡ لَهٗ بِخٰزِنِيۡنَ ۝۲۲

"और तुम इसके जमा करने वाले नहीं हो।"

यह तुम्हारे बस में ना था कि तुम पानी के इस ज़खीरे को जमा करते।

आयत 23

وَاِنَّا لَنَحۡنُ نُحۡىٖ وَنُمِيۡتُ وَنَحۡنُ الۡوٰرِثُوۡنَ ۝۲۳

"और यक़ीनन हम ही हैं जो ज़िन्दा भी रखते हैं और मौत भी वारिद करते हैं और हम ही वारिस होंगे।"

यह कायनात और इसकी हर चीज़ अल्लाह ही की मिल्कियत है। एक वक़्त आयेगा जब ज़ाहिरी मिल्कियत का भी कोई दावेदार बाक़ी नहीं रहेगा।

आयत 24

وَلَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَقۡدِمِيۡنَ مِنۡكُمۡ وَلَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَاۡخِرِيۡنَ ۝٢٤

"और हम जानते हैं तुममें से आगे बढ़ने वालों को भी और जानते हैं पीछे रहने वालों को भी।"

चूँकि यह नुबूवत के बिल्कुल इब्तदाई ज़माने की सूरत है इसलिए फ़रमाया जा रहा है कि हम जानते हैं उन लोगों को जो हक़ की इस दावत पर फ़ौरन लब्बैक कहेंगे और आगे बढ़ कर क़ुरान को सीनों से लगायेंगे। हम जानते हैं कि {وَالسّٰبِقُوۡنَ الۡاَوَّلُوۡنَ مِنَ الۡمُهٰجِرِيۡنَ وَالۡاَنۡصَارِ وَالَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡهُمۡ بِاِحۡسَانٍ} (अत्तौबा:100) के मिस्दाक़ कौन लोग होंगे। हमें मालूम है कि अबुबकर (रज़ि.) क़ुबूले हक़ के लिए एक लम्हें की देर नहीं लगायेगा। हम यह भी जानते हैं कि उस्मान (रज़ि.) भी इस दावत को फ़ौरन क़ुबूल कर लेगा। यह भी हमारे इल्म में है कि अबुबकर (रज़ि.) की तब्लीग से तल्हा, ज़ुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) जैसे लोग फ़ौरन ईमान ले आयेंगे, और हमें यह भी मालूम है वह कि कौन-कौन बदनसीब हैं जो इस सआदत को समेटने में पीछे रह जायेंगे।

आयत 25

وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝۲۵ۧ

"और यक़ीनन आपका रब ही है जो इन सब को जमा करेगा। यक़ीनन वो कमाल हिकमत वाला, खूब इल्म रखने वाला है।"

आयात 26 से 48 तक

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ
مَّسْنُوْنٍ ۝۲۶ۚ وَالْجَاۗنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ
السَّمُوْمِ ۝۲۷ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنِّىْ خَالِقٌۢ
بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝۲۸ فَاِذَا
سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ
۝۲۹ فَسَجَدَ الْمَلٰۗىِٕكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۝۳۰ۙ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ
اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ۝۳۱ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا
لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ۝۳۲ قَالَ لَمْ اَكُنْ
لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ
۝۳۳ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝۳۴ۙ وَّاِنَّ
عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝۳۵ قَالَ رَبِّ

فَاَنۡظِرۡنِیۡۤ اِلٰی یَوۡمِ یُبۡعَثُوۡنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ فَاِنَّکَ مِنَ
الۡمُنۡظَرِیۡنَ ﴿ۙ۳۷﴾ اِلٰی یَوۡمِ الۡوَقۡتِ الۡمَعۡلُوۡمِ ﴿۳۸﴾ قَالَ
رَبِّ بِمَاۤ اَغۡوَیۡتَنِیۡ لَاُزَیِّنَنَّ لَہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ
وَ لَاُغۡوِیَنَّہُمۡ اَجۡمَعِیۡنَ ﴿ۙ۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَکَ مِنۡہُمُ
الۡمُخۡلَصِیۡنَ ﴿۴۰﴾ قَالَ ہٰذَا صِرَاطٌ عَلَیَّ مُسۡتَقِیۡمٌ ﴿۴۱﴾
اِنَّ عِبَادِیۡ لَیۡسَ لَکَ عَلَیۡہِمۡ سُلۡطٰنٌ اِلَّا مَنِ
اتَّبَعَکَ مِنَ الۡغٰوِیۡنَ ﴿۴۲﴾ وَ اِنَّ جَہَنَّمَ لَمَوۡعِدُہُمۡ
اَجۡمَعِیۡنَ ﴿٭ۙ۴۳﴾ لَہَا سَبۡعَۃُ اَبۡوَابٍ ؕ لِکُلِّ بَابٍ مِّنۡہُمۡ
جُزۡءٌ مَّقۡسُوۡمٌ ﴿۴۴﴾ اِنَّ الۡمُتَّقِیۡنَ فِیۡ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوۡنٍ
﴿ؕ۴۵﴾ اُدۡخُلُوۡہَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِیۡنَ ﴿۴۶﴾ وَ نَزَعۡنَا مَا فِیۡ
صُدُوۡرِہِمۡ مِّنۡ غِلٍّ اِخۡوَانًا عَلٰی سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیۡنَ ﴿۴۷﴾
لَا یَمَسُّہُمۡ فِیۡہَا نَصَبٌ وَّ مَا ہُمۡ مِّنۡہَا بِمُخۡرَجِیۡنَ ﴿۴۸﴾

आयत 26

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝٢٦

"और यक़ीनन हमने बनाया है इंसान को सने हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से।"

حَمَإٍ مَّسْنُونٍ से सना हुआ गारा मुराद है, जिससे बदबु भी उठ रही हो। इस रुकूअ में यह सक़ील इस्तलाह तीन मर्तबा इस्तेमाल हुई है। इंसान के माद्दा-ए-तख़्लीक़ के हवाले से क़ुरान में जो मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं, उन पर ग़ौरो-फ़िक्र करने की ज़रूरत है। सबसे पहले मरहले पर तुराब यानि मिट्टी का ज़िक्र है, चुनाँचे फ़रमाया {وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ} (रूम:20)। मिट्टी में पानी मिलकर गारा बन जाये तो इस गारे को अरबी में "طِين" कहते हैं। लिहाज़ा इंसान की तख़्लीक़ के सिलसले में तीन का ज़िक्र भी क़ुरान में मुतअद्दिद बार हुआ है। सूरतुल आराफ़ में हम शैतान का यह क़ौल पढ़ आये हैं: {خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ} (आयत 12) "मुझे तूने बनाया आग से और इस (आदम) को बनाया मिट्टी से।" तीन के बाद "طِين لازب" का मरहला है। सूरह अस्साफ्फ़ात में फ़रमाया गया: {اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ} (आयत 11) "طِين لازب" असल में वह गारा है जो अमल-ए-तख़मीर (fermentation) की वजह से लेसदार हो चुका हो। आम तौर पर गारे में कोई organic matter भूसा वग़ैरह मिलाने से उसकी यह शक्ल बनती है। "طِين لازب" के बाद अगला मरहला "حَمَإٍ مَّسْنُونٍ" का है। अगर लेसदार गारा ज़्यादा देर तक पड़ा रहे और उसमें सड़ेंध पैदा हो जाये तो

इसको "حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ" कहा जाता है। फिर अगर यह सना हुआ गारा (حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ) ख़ुश्क होकर सख़्त हो जाये तो यह खनकने लगता है। आपने किसी दरिया के साहिल के क़रीब या किसी दलदली इलाक़े में देखा होगा कि ज़मीन के ऊपर खुश्क पपड़ी सी आ जाती है, जिस पर चलने से यह आवाज़ पैदा करके टूटती है। ऐसी मिट्टी के लिए क़ुरान ने "صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ" (अर्रहमान:14) की इस्तलाह इस्तेमाल की है, यानि ठीकरे जैसी खनखनाती मिट्टी।

इंसान के माद्दा-ए-तख़्लीक़ के लिये मन्दर्जा बाला तमाम अल्फ़ाज़ में से एक बुनियादी लफ़्ज़ ही किफ़ायत कर सकता था कि हमने इंसान को मिट्टी से बनाया, लेकिन इस ज़िमन में इन मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ (तुराब, तीन, तीने लाज़िब, सलसालिन मिन हमाइन मसनून और सलसालिन कलफखबार) के इस्तेमाल में यक़ीनन कोई हिकमत कारफ़रमा होगी। मुमकिन है यह तख़्लीक़ के मुख़्तलिफ़ मराहिल (stages) का ज़िक्र हो और अगर ऐसा है तो नज़रिया -ए-इरतक़ाअ (Evolution Theory) के साथ भी इसकी तत्बीक़ (corroboration) होती नज़र आ रही है। इंसान की तख़्लीक़ अगर खुसूसी तौर पर भी अमल में आई हो तो हो सकता है कि बाक़ी हैवानात इरतक़ाई अंदाज़ में पैदा किए गये हों। बहरहाल ज़मीन की हैवानी हयात के बारे में साइंस भी क़ुरान से मुत्तफ़िक़ है कि यह तमाम मख़्लूक़ मिट्टी और पानी से बनी है। इधर क़ुरान फ़रमाता है कि मब्दा-ए-हयात पानी है और इस सिलसिले में साइंस का नज़रिया भी यही है कि साहिली इलाक़ों में मिट्टी और पानी के इतसाल (मिलने) से दलदल बनी, फिर उस दलदल के अंदर अमल-ए-तखमीर (fermentation) के ज़रिये सड़ेंध

पैदा हुई तो वहाँ एलजी (Algai) या अमीबा (Amoeba) की सूरत में नबाताती या हैवानी हयात का आग़ाज़ हुआ। चुनाँचे साइंसी तहक़ीक़ यहाँ क़ुरान से इत्तेफ़ाक़ करती नज़र आती है, गोया: *"मुत्तफ़िक़ गर दीद राए बू अली बाराए मन!"*

आयत 27

"और जिन्नात को हमने पैदा किया था उससे पहले आग की लपट से।"

وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

यह लफ्ज़ "समूम" उर्दू में भी मारूफ़ है। मौसम गर्मा में सहरा में चलने वाली तेज़ गर्म हवा को बादे समूम कहते हैं। आग के शोले का वो हिस्सा जो बज़ाहिर नज़र आता है उसके गिर्द हाले की शक्ल में उसका वो हिस्सा होता है जो आमतौर पर नज़र नहीं आता। शोले के इस नज़र ना आने वाले हिस्से का दर्जा-ए-हरारत निस्बतन ज़्यादा होता है। यहाँ "नारे समूम" से मुराद आग की वही लपट या लौ मुराद है जो शदीद गर्म होती है और उसी से जिन्नात को पैदा किया गया है। यहाँ एक नुक्ता यह भी मद्देनज़र रहना चाहिए कि जिन्नात को अगरचे आग से पैदा किया गया है मगर वो आग नहीं हैं। बिल्कुल इसी तरह जैसे हमें मिट्टी से पैदा किया गया है मगर हम मिट्टी नहीं हैं। दूसरी अहम बात यहाँ यह वाज़ेह हुई कि जिन्नात को इंसानों से बहुत पहले पैदा किया गया था।

आयत 28

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنِّىْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ㉘

"और याद करो जब कहा था आप ﷺ के रब ने फ़रिश्तों से कि मैं बनाने वाला हूँ एक बशर को सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से।"

यहाँ फिर वही सक़ील इस्तलाह (صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ) इस्तेमाल हुई है। इंसानी तख्लीक़ की इब्तदा के बारे में एक नुक्ता यह भी लायक़-ए-तवज्जोह है कि क़ुरान में जहाँ भी तख्लीक़ के इन इब्तदाई मराहिल का ज़िक्र आया है, वहाँ लफ्ज़ आदम इस्तेमाल नहीं हुआ, बल्कि बशर और इंसान के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं। पूरे क़ुरान में सिर्फ़ सूरह आले इमरान की आयत 59 ऐसी है जहाँ इब्तदाई तख्लीक़ के ज़िमन में आदम अलै० का ज़िक्र इस तरह आया है: {اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۭ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ} "यक़ीनन ईसा अलै० की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम की सी है। उसको मिट्टी से बनाया, फिर कहा हो जा तो वह हो गया।"

आयत 29

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ

"फिर जब मैं उसे पूरी तरह दुरुस्त कर दूँ"

किसी भी तख्लीक़ के बाद उसका तस्विया ज़रुरी होता है। पहले बुनियादी ढाँचा बनाया जाता है और फिर उसकी नोक पलक सँवारी जाती है। जैसे एक इमारत का ढ़ाँचा खड़ा

करने के बाद उसकी आराईश व ज़ेबाईश की जाती है और रंग व रोगन का अहतमाम किया जाता है।

وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

"और फूँक दूँ मैं उसमें अपनी रूह में से, तो गिर पड़ना उसके लिए सज्दे में।"

आयत 30

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

"तो सज्दा किया तमाम फरिश्तों ने मिल कर।"

كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ में बहुत ताकीद पाई जाती है कि सबके सब ने इकठ्ठे होकर सज्दा किया, और उनमें से कोई भी मुस्तस्ना (अलग) ना रहा। जिब्रील, मीकाईल, इसराफ़ील, अज़राईल समेत सब झुक गये, कोई भी पीछे ना रहा। फ़रिश्तों के साथ ज़िक्र आने की वजह से गुमान होता है कि जैसे इब्लीस भी फरिश्ता था, मगर वह फरिश्ता नहीं था, जैसा कि सूरतुल कहफ़ की आयत 50 में "كَانَ مِنَ الْجِنِّ" फ़रमा कर वाज़ेह कर दिया गया कि वह जिन्नात में से था।

आयत 31

اِلَّآ اِبۡلِيۡسَ ؕ اَبٰۤى اَنۡ يَّكُوۡنَ مَعَ السّٰجِدِيۡنَ ﴿۳۱﴾

"सिवाय इब्लीस के, उसने इंकार किया सज्दा करने वालों के साथ होने से।"

आयत 32

قَالَ يٰۤاِبۡلِيۡسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوۡنَ مَعَ السّٰجِدِيۡنَ ﴿۳۲﴾

"अल्लाह ने फ़रमाया: ऐ इब्लीस क्या हुआ तुझे कि तू नहीं हुआ सज्दा करने वालों के साथ?"

आयत 33

قَالَ لَمۡ اَكُنۡ لِّاَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهٗ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿۳۳﴾

"उसने कहा: मेरे लिए रवा नहीं है कि सज्दा करूँ उस बशर को जिसे तूने पैदा किया है सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से।"

आयत 34

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾

"अल्लाह ने फ़रमाया: बस निकल जा इसमें से, तू यक़ीनन मरदूद हो चुका है।"

आदम को सज्दा करने के हुक्मे इलाही का इंकार करके तू रानदाह-ए-दरगाह हो चुका है। अब यहाँ से फ़िल फ़ौर निकल जा!

आयत 35

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾

"और यक़ीनन तुझ पर लानत रहेगी रोज़-ए-जज़ा तक।"

आयत 36

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾

"उसने अर्ज़ की कि ऐ मेरे परवरदिग़ार! मुझे मोहलत दे दे उस दिन तक जब यह दोबारा उठाए जायेंगे।"

आयत 37

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾

"अल्लाह ने फ़रमाया (जा) तुझे मोहलत दे दी गई।"

आयत 38

"वक़्ते मुअय्यन के दिन तक।"

اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝۳۸

यानि रोज़े क़यामत तक तू ज़िन्दा रहेगा। वैसे तो जिन्नों की उम्रें इंसानों से काफ़ी ज़्यादा होती होंगी मगर ऐसा कोई जिन्न भी नहीं है जो इस इब्तदाई तख्लीक़ के वक़्त से लेकर आज तक ज़िन्दा हो, मा सिवाय उस एक जिन्न के जिसका नाम अज़ाज़ील है। बाक़ी उसकी औलाद और ज़ुर्रियत अपनी जगह है।

आयत 39

"उसने कहा: ऐ मेरे परवरदिगार! चूँकि तूने मुझे गुमराह किया है।"

قَالَ رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ

यहाँ यह नुक्ता क़ाबिले ग़ौर है कि इब्लीस अपनी इस गुमराही को अल्लाह तआला की तरफ़ मन्सूब कर रहा है।

"मैं यक़ीनन मुज़य्यन कर दूँगा इनके लिए ज़मीन में (दुनिया को) और मैं ज़रूर गुमराह करूँगा इन सबको।"

لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝۳۹

कि मैं औलादे आदम के लिए ज़मीन में दुनिया की रौनाक़ों और उसकी आराईश व ज़ेबाईश को इस हद तक पुरकशिश

बना दूँगा कि वो उसमें गुम होकर आपको और आपके अहकाम को भूल जायेंगे। इस तरह मैं उन सबको आपके सीधे रास्ते से गुमराह करके छोड़ूँगा।

आयत 40

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝٤٠

"सिवाय तेरे उन बंदों के जिनको तू उनमें से (अपने लिए) ख़ालिस कर ले।"

مُخْلَصِينَ (लाम की ज़बर के साथ) से मुराद वो बंदे हैं जिन्हें अल्लाह ख़ास अपने लिए चुन ले, यानि अल्लाह के महबूब और बरगज़ीदा बंदे। अल्लाह के ऐसे बन्दों के बारे में शैतान का ऐतराफ़ है कि उन पर मेरा ज़ोर नहीं चलेगा।

आयत 41

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۝٤١

"अल्लाह ने फ़रमाया कि यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचाने वाला है।"

यानि मेरे और तुम्हारे दरमियान यह मामला तय हो गया, तुम्हें मोहलत दे दी गई। मुझ तक पहुँचने का रास्ता बिल्कुल वाज़ेह है। तुम औलादे आदम को इस रास्ते से बहकाने के लिए अपना ज़ोर आज़मा लो।

आयत 42

إِنَّ عِبَادِى لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَٰنٌ

"यक़ीनन मेरे बंदों पर तुझे कोई इख़्तियार नहीं होगा"

यानि सिर्फ़ "مُخْلَصِينَ" ही की तख्सीस नहीं है बल्कि किसी इंसान पर भी तुझे इख़्तियार नहीं होगा।

إِلَّا مَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ ٱلْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

"सिवाय उनके जो खुद तेरी पैरवी करें गुमराहों में से।"

जो लोग "गावीन" में से होंगे, खुद उनके अंदर सरकशी होगी, वो खुद अपनी नफ्सपरस्ती की तरफ़ मायल होकर तेरी पैरवी करेंगे, उनको ले जाकर तू गुमराही के जिस गड्ढे में चाहे फेंक दे और जहन्नम की जिस वादी में चाहे उनको गिरा दे, मुझे उनसे कोई दिलचस्पी नहीं। लेकिन मेरे किसी फ़रमा-बरदार बंदे पर तुझे कोई इख़्तियार हासिल नहीं होगा।

आयत 43

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

"और यक़ीनन जहन्नम ही उन सबका मौऊद (वादा किया हुआ) ठिकाना है।"

जो लोग भी तेरी पैरवी करेंगे, उन सबके लिए जहन्नम का वादा है।

आयत 44

لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿۴۴﴾

“इस (जहन्नम) के सात दरवाज़े हैं, उनमें से हर दरवाज़े का एक हिस्सा है मुक़र्रर शुदा।”

जहन्नम के हर दरवाज़े में से दाखिल होने वाले जिन्नों और इंसानों को मख़सूस कर दिया गया है। मुमकिन है दरवाज़ों की यह तक़्सीम व तख्सीस गुनाहों की नौइयत के ऐतबार से हो। वल्लाहु आलम!

अहले जहन्नम के ज़िक्र के बाद अब अहले जन्नत का ज़िक्र होने जा रहा है। मुवाज़ने और फ़ौरी तक़ाबुल (simultaneos contrast) का यह अंदाज़ व असलूब क़ुरान में हमें जगह-जगह मिलता है।

आयत 45

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ؕ ﴿۴۵﴾

“(इसके बरअक्स) यक़ीनन मुत्तक़ी लोग होंगे बागात और चश्मों में।”

आयत 46

اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ﴿۴۶﴾

“(उनसे कहा जायेगा कि) तुम दाख़िल हो जाओ इन (बागात) में

सलामती के साथ बेख़ौफ व ख़तर।"

यहाँ तुम हर तरह से अमन में रहोगे, तुम्हें किसी क़िस्म का कोई अंदेशा नहीं होगा।

आयत 47

"और हम निकाल देंगे उनके सीनों में से जो कुछ भी कदूरत होगी"

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ

यह मज़मून बिल्कुल इन्हीं अल्फ़ाज़ में सूरतुल आराफ़ (आयत 43) में भी आ चुका है। अहले ईमान की आपस की रंजिश, कदूरतें और शिकायतें ख़त्म करके उनके दिलों को हर क़िस्म के तकद्दुर से पाक कर दिया जायेगा।

"भाई-भाई (बन कर वो बैठे होंगे) तख़्तों पर आमने-सामने।"

اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٧﴾

जब किसी से नाराज़गी हो तो आदमी आँखे चार नहीं करता, लेकिन अहले जन्नत के दिल चूँकि एक-दूसरे की तरफ़ से बिल्कुल साफ होंगे, इसलिए वो आमने-सामने बैठ कर एक-दूसरे से बातें कर रहे होंगे।

आयत 48

لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿٤٨﴾

"नहीं पहुँचेगी उन्हें उसमें कोई थकान, और ना ही वो उसमें से निकाले जायेंगे।"

अहले जन्नत को जन्नत में दाख़िल होने के बाद वहाँ से निकाले जाने का खटका नहीं होगा और ना ही उसमें उन्हें किसी क़िस्म की कोई तकलीफ़ या परेशानी होगी।

आयात 49 से 84 तक

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّىْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾ وَاَنَّ عَذَابِيْ
هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ
﴿٥١﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ
وَجِلُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ
﴿٥٣﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓي اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ
تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا
الضَّاۗلُّوْنَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ
﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ اٰلَ

لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿۵۹﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ
قَدَّرْنَاۤ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ
ۣالْمُرْسَلُوْنَ ۙ﴿۶۱﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۶۲﴾
قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿۶۳﴾
وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ
بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ
اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَقَضَيْنَاۤ اِلَيْهِ
ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰۤؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿۶۶﴾
وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۶۷﴾ قَالَ اِنَّ
هٰۤؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ۙ﴿۶۸﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا
تُخْزُوْنِ ﴿۶۹﴾ قَالُوْۤا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۰﴾
قَالَ هٰۤؤُلَآءِ بَنٰتِيْۤ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ؕ﴿۷۱﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ
لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۷۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ
مُشْرِقِيْنَ ۙ﴿۷۳﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا
عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ؕ﴿۷۴﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿۷۵﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ اِنَّ فِيْ

ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۷۷﴾ وَاِنۡ كَانَ اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ

لَظٰلِمِيۡنَ ﴿۷۸﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ‌ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ

مُّبِيۡنٍ ﴿۷۹﴾ وَلَقَدۡ كَذَّبَ اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ

﴿۸۰﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ اٰيٰتِنَا فَكَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ﴿۸۱﴾

وَكَانُوۡا يَنۡحِتُوۡنَ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا اٰمِنِيۡنَ ﴿۸۲﴾

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُصۡبِحِيۡنَ ﴿۸۳﴾ فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ

مَّا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۸۴﴾

आयत 49

نَبِّئۡ عِبَادِىۡۤ اَنِّىۡۤ اَنَا الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ﴿۴۹﴾

"(ऐ नबी! ﷺ) मेरे बंदों को बता दीजिए कि मैं यक़ीनन बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला हूँ।"

आयत 50

وَاَنَّ عَذَابِىۡ هُوَ الۡعَذَابُ الۡاَ لِيۡمُ ﴿۵۰﴾

"और यह कि मेरा अज़ाब भी बहुत दर्दनाक अज़ाब है।"

यक़ीनन मैं गफ़ूर और रहीम हूँ, मगर दूसरी तरफ़ मेरा अज़ाब भी बहुत सख़्त होता है। लिहाज़ा कोई शख्स निडर और निश्चिन्त भी ना हो जाये, बल्कि मेरे बंदों को हर वक़्त

"बैयनल खौफ़ वरिजा" की कैफ़ियत में रहना चाहिए। वो मेरी रहमत और मग़फ़िरत की उम्मीद भी रखें और मेरे अज़ाब से डरते भी रहें।

आयत 51

وَنَبِّئۡهُمۡ عَنۡ ضَيۡفِ اِبۡرٰهِيۡمَ ۝۵۱

"और इन्हें ज़रा बताइये इब्राहीम अलै० के मेहमानों के बारे में।"

यह वाक़िया थोड़े बहुत फर्क़ के साथ हम सूरह हूद के सातवें रुकूअ में भी पढ़ चुके हैं।

आयत 52

اِذۡ دَخَلُوۡا عَلَيۡهِ فَقَالُوۡا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنۡكُمۡ وَجِلُوۡنَ ۝۵۲

"जब वो दाख़िल हुए आप अलै. के यहाँ तो उन्होंने सलाम किया, आप अलै. ने कहा कि हमें तो तुमसे ख़ौफ़ आ रहा है।"

आपके अजनबी होने की वजह से हमें आपसे ख़द्शा है। लिहाज़ा बेहतर होगा आप लोग अपनी शिनाख़्त करवा दें।

आयत 53

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝۵۳

"उन्होंने कहा कि डरिये नहीं, हम आपको एक साहिबे इल्म बेटे की बशारत देते हैं।"

फ़रिश्तों ने हज़रत इब्राहीम अलै. को हज़रत इस्हाक़ अलै. की विलादत की खुशख़बरी दी। हज़रत इस्माईल अलै. की विलादत इससे चंद बरस क़ब्ल हो चुकी थी। वाज़ेह रहे कि क़ुरान हकीम में हज़रत इस्माईल अलै. के लिये "गुलामुन हलीम" और हज़रत इस्हाक़ अलै. के लिये "गुलामुन अलीम" के अल्फ़ाज़ आते हैं।

आयत 54

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓي اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝۵۴

"आप अलै. ने कहा कि क्या तुम मुझे खुशख़बरी दे रहे हो बावजूद इसके कि मुझ पर बुढ़ापा तारी हो चुका है, तो तुम मुझे यह कैसी खुशख़बरी दे रहे हो!"

अला यहाँ पर "अलल रग्म" के मफ़हूम में इस्तेमाल हुआ है कि मेरे बुढ़ापे के बावजूद तुम मुझे जो बेटे की खुशख़बरी दे रहे हो तो कहीं तुम लोगों को कोई मुगालता तो नहीं हो रहा?

आयत 55

قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾

"उन्होंने कहा कि हम आप अलै. को हक़ के साथ बशारत दे रहे हैं, तो आप नाउम्मीद लोगों में से ना हों।"

उन्होंने बताया कि हम आपके रब की तरफ़ से भेजे गये हैं और यह जो बशारत हमने आपको दी है यह हक़ीक़ी और क़तई बात है, बिल्कुल ऐसा ही होगा।

आयत 56

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّاۗلُّوْنَ ﴿٥٦﴾

"आप अलै. ने कहा कि कौन होगा जो अपने रब की रहमत से मायूस हो, सिवाय गुमराहों के!"

चुनाँचे अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत और रहमत से हज़रत इब्राहीम अलै. को सत्तासी (87) बरस की उम्र में बेटा अता किया। इसी तरह का मामला हज़रत ज़करिया अलै. के साथ भी पेश आया। हज़रत ज़करिया अलै. की ज़ौजह-ए-मुहतरमा सारी उम्र बाँझ रहीं, मगर जब वो दोनों मियाँ-बीवी बहुत बूढ़े हो चुके थे तो अल्लाह ने उन्हें बेटा (हज़रत याहिया अलै.) अता किया।

आयत 57

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾

“आप अलै. ने पूछा: फरिस्तादो! तुम्हारी क्या मुहिम है?”

अब हज़रत इब्राहीम अलै. ने उनसे पूछ ही लिया कि आप लोगों के यहाँ आने का क्या मक़सद है? आपको क्या मुहिम दरपेश है?

आयत 58

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

“उन्होंने कहा कि हमें भेजा गया है एक मुज़रिम क़ौम की तरफ़।”

आयत 59

اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾

“सिवाय आले लूत अलै. के, उन सबको हम ज़रूर बचा लेंगे।”

आयत 60

اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾

“सिवाय उनकी बीवी के, हमने अंदाज़ा ठहरा लिया है कि वो यक़ीनन पीछे रहने वालों में से होगी।”

आयत 61

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٦١

"तो जब लूत अलै. के घर पहुँचे वो भेजे हुए।"

आयत 62

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝٦٢

"उस (लूत अलै.) ने कहा कि यक़ीनन तुम अजनबी लोग हो।"

हज़रत लूत अलै. ने देखा कि यह बिल्कुल अजनबी लोग हैं, तो उन्होंने पूछा कि आप लोग कौन हैं, और कहाँ से तशरीफ़ लाये हैं? आपकी तशरीफ़ आवरी का मक़सद क्या है?

आयत 63

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝٦٣

"उन्होंने कहा: बल्कि हम तो आपके पास वो शय लेकर आये हैं जिसके बारे में यह लोग शक में पड़े हुए थे।"

हज़रत लूत अलै. जब अपनी क़ौम को मुतन्ब्बा (warn) करते थे कि अगर तुम लोग शिर्क से और इस फ़अले ख़बीस से बाज़ नहीं आओगे तो तुम पर अल्लाह का अज़ाब आयेगा, तो वो आप अलै. का मज़ाक उड़ाते थे, क्योकि उन्हें यक़ीन नहीं था कि उन पर वाक़ई अज़ाब आ जायेगा। फ़रिश्तों ने कहा कि आज हम वही अज़ाब लेकर आ गये हैं जिसके बारे में यह लोग शक में थे।

आयत 64

وَاَتَيۡنٰكَ بِالۡحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوۡنَ ۝٦٤

“और हम आये हैं आपके पास हक़ (क़तई फ़ैसले) के साथ और यक़ीनन हम सच्चे हैं।”

आयत 65

فَاَسۡرِ بِاَهۡلِكَ بِقِطۡعٍ مِّنَ الَّيۡلِ وَاتَّبِعۡ اَدۡبَارَهُمۡ وَلَا يَلۡتَفِتۡ مِنۡكُمۡ اَحَدٌ

“तो आप अपने घर वालों को ले जाइये रात के एक हिस्से में, और आप उनके पीछे-पीछे जाइये, और आप लोगों में से कोई भी पीछे मुड़ कर ना देखें”

यानि आप लोग सुबह होने से पहले-पहले यहाँ से निकल जायें। पीछे रह जाने वालों के लिए अब दोस्ती और हमदर्दी जैसे जज़्बात का इज़हार किसी भी शक्ल में नहीं होनी चाहिए।

وَّامۡضُوۡا حَيۡثُ تُؤۡمَرُوۡنَ ۝٦٥

“और आप चले जाइये जहाँ आपको हुक्म हुआ है।”

आयत 66

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَاۗءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾

"और हमने लूत अलै. को अपने इस फ़ैसले से आगाह कर दिया कि सुबह होते ही उन लोगों की जड़ काट दी जायेगी।"

वहाँ से निकलने से पहले हज़रत लूत अलै. को बता दिया गया कि इस पूरी क़ौम को तहस-नहस कर दिया जायेगा और यहाँ कोई एक मुतनफ़्फ़स भी नहीं बचेगा।

आयत 67

وَجَاۗءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

"और आये अहले शहर खुशियाँ मनाते हुए।"

हज़रत लूत अलै. के यहाँ ख़ूबसूरत लड़कों को देख कर बद्क़माश क़िस्म के लोगों ने खुशी-खुशी आप अलै. के घर पर यलग़ार कर दी।

आयत 68

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾

"लूत अलै. ने कहा: यह मेरे मेहमान हैं, चुनाँचे तुम लोग मुझे रुसवा ना करो।"

आयत 69

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ۝٦٩

"अल्लाह से डरो और मुझे बेआबरू मत करो।"

आयत 70

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٠

"उन्होंने कहा: क्या हमने आपको सब दुनिया वालों (की हिमायत में खड़े होने) से मना नहीं किया था?"

क्या हम आपको मना नहीं कर चुके कि आप हर किसी की तरफ़दारी करते हुए हमारे मामले में दख़लअंदाज़ी ना किया करें। हम जिसके साथ जो चाहें करें, आप बीच में आने वाले कौन होते हैं?

आयत 71

قَالَ هٰٓؤُلَاۗءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝٧١ۭ

"आप अलै. ने कहा: यह मेरी बेटियाँ हैं अगर तुम्हें कुछ करना ही है।"

क़ब्ल अज़ इस फ़िक़रे की वज़ाहत हो चुकी है। यानि मेरी क़ौम की बेटियाँ जो तुम्हारे घरों में मौजूद हैं उनकी तरफ़ रुजूअ करो। अल्लाह तआला ने उन्हें तुम्हारे लिए फ़ितरी साथी बनाया है। इस फ़िक़रे का दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि आप अलै. ने इत्मामे हुज्जत के लिए उनमें से दो सरदारों को यहाँ तक कह दिया हो कि अगर ऐसी ही बात है तो मैं अपनी बेटियों का निकाह तुमसे किए देता हूँ।

आयत 72

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝72

"क़सम है आप अलै. की जान की, वो लोग अपनी इस बदमस्ती में बिल्कुल अंधे हो गये थे।"

عمہ के माद्दे में दिल के अंधेपन का मफ़हूम पाया जाता है, यानि उन लोगों के दिल भलाई और बुराई की तमीज़ से बिल्कुल आरी हो गये थे।

आयत 73

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۝73

"तो उन्हें आ पकड़ा एक चिंघाड़ ने उजाला होने के वक़्त।"

यानि पौ फटते ही उन पर अल्लाह के अज़ाब का कौड़ा एक ज़बरदस्त चिंघाड़ के साथ टूट पड़ा।

आयत 74

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝74

"फिर हमने उसके ऊपर वाले हिस्से को बना दिया उसके निचले वाला, और हमने बरसाए उनके ऊपर पकी हुई मिट्टी के कंकर।"

यानि उन आबादियों को पूरी तरह तलपट कर दिया गया और उन पर संगे-गिल की बारिश बरसाई गई।

आयत 75

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾

"यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो हक़ के मुतलाशी होते हैं।"

مُتَوَسِّمِيْن से मुराद वो लोग हैं जो आयाते आफ़ाक़िया, आयाते तारीखिया, आयाते अन्फुसिया या आयाते क़ुरानिया के ज़रिये से हक़ीक़त को जानना और पहचानना चाहें। इस्म (असल मादा "وسم" है, अलिफ़ इसके हुरूफ़े असलिया में से नहीं है) के मायने अलामत के हैं। उर्दू में लफ्ज़ "इस्म" को नाम के मुतरादिफ़ के तौर पर जाना जाता है, इसलिये कि किसी चीज़ या शख़्स का नाम भी एक अलामत का काम देता है, जिससे उसकी पहचान होती है। लिहाज़ा जो असहाबे बसीरत अलामतों से मुतवस्सम (बाब तफ़अ्उल) होते हैं, उनके लिए ऐसे वाक़िआत में सामाने इबरत मौजूद है।

आयत 76

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٧٦﴾

"और यह बस्तियाँ एक सीधी राह पर वाक़ेअ थीं।"

क़ौमे लूत की यह बस्तियाँ उस शाहराहे आम पर वाक़ेअ थीं जो यमन (बहीरह-ए-अरब) और शाम (बहीरह-ए-रोम) के साहिलों को आपस में मिलाती थी। मशरक़ी मुमालिक (हिन्दुस्तान, चीन, जावा, मलाया वग़ैरह) से यूरोप जाने के लिए जो सामान आता था वो यमन के साहिल पर उतारा जाता था और फिर उस रास्ते से तिजारती क़ाफिले उसे शाम और फ़लस्तीन के साहिल पर पहुँचा देते थे। इसी तरह यूरोप से मशरक़ी मुमालिक के लिए आने वाला सामान शाम के साहिल पर उतरता था और यही क़ाफिले उसे यमन के साहिल पर पहुँचाने का ज़रिया बनते थे। उस वक़्त नहर स्वेज़ भी नहीं बनी थी और "रास उम्मीद" वाला रास्ता (Around the Cape of Good Hope) भी दरयाफ्त नहीं हुआ था, जो वास्कोडिगामा ने 1498 ईस्वी मे तलाश किया। चुनाँचे यह शाहराह उस ज़माने में मशरिक़ और मग़रिब के दरमियान तिजारती राब्ते का वाहिद ज़रिया थी।

आयत 77

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝77

"यक़ीनन इसमें निशानी है अहले ईमान के लिए।"

आयत 78

وَاِنۡ كَانَ اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ لَظٰلِمِيۡنَ ۝٧٨

"और बेशक बन वाले भी ज़ालिम थे।"

"अस्हाबुल अयका" से अहले मदयन मुराद हैं। यह हज़रत शुऐब अलै. की क़ौम थी मगर यहाँ इस क़ौम का ज़िक्र करते हुए आप अलै. का नाम नहीं लाया गया। इन सब अक़वाम का तज़किरा यहाँ पर अंबिया अर्रुसुल के अंदाज़ में हो रहा है।

आयत 79

فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ۝٧٩

"तो उनसे भी हमने इन्तेक़ाम लिया। और यह दोनों बस्तियाँ भी खुले रास्ते पर वाक़ेअ थीं।"

इससे मुराद वही तिजारती शाहराह है जिसका ज़िक्र अभी हुआ है। यह अस्हाबे हिज्र के मसाकन से भी होकर गुज़रती थी जबकि अहले मदयन की आबादियाँ और क़ौमे लूत अलै. की बस्तियाँ भी इसी शाहराह पर वाक़ेअ थीं।

आयत 80

وَلَقَدۡ كَذَّبَ اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۝٨٠

"और (इसी तरह) हिज्र वालों ने भी मुर्सलीन को झुठलाया।"

अस्हाबे हिज्र से मुराद क़ौमे समूद है। क़ौमे समूद हिज्र के इलाक़े में आबाद थी और उनकी तरफ़ हज़रत सालेह अलै. मबऊस किए गये थे। जैसे हज़रत हूद अलै. की क़ौमे आद का ज़िक्र "अहक़ाफ़" के हवाले से भी हुआ है (मुलाहिज़ा हो सूरतुल अहक़ाफ़) जो उस क़ौम का इलाक़ा था, इसी तरह क़ौमे समूद का ज़िक्र यहाँ "अस्हाबुल हिज्र" के नाम से हुआ है। यहाँ पर "मुरसलीन" के लफ्ज़ से यह भी मालूम होता है कि इस क़ौम में पहले बहुत से अंबिया आये और फिर आखिर में रसूल की हैसियत से हज़रत सालेह अलै. तशरीफ़ लाये।

आयत 81

وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾

"और उन्हें हमने अपनी आयात अता कीं लेकिन वो उनसे ऐराज़ ही करते रहे।"

क़ौमे समूद को बतौर ख़ास ऊँटनी की सूरत में हिस्सी मौअज्ज़ा दिखाया गया था कि एक चट्टान शक़ (फटी) हुई और उसके अंदर से एक खूबसूरत गाभिन ऊँटनी बरामद हो गई।

आयत 82

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

"और वो पहाड़ों को तराश कर घर बनाते थे, अमन व सुकून के साथ।"

क़ौमे समूद के यह घर आज भी मौजूद हैं और देखने वालों को दावते इबरत दे रहे हैं। मैंने खुद भी उनका मुशाहिदा किया है।

आयत 83

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُصۡبِحِيۡنَ ۙ﴿۸۳﴾

"तो उन्हें आ पकड़ा एक चिंघाड़ ने सुबह के वक़्त।"

आयत 84

فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ؕ﴿۸۴﴾

"तो कुछ काम ना आ सका उनके जो वो कमाते थे।"

वो खुशहाल क़ौम थी मगर उन्होंने जो माल व असबाब जमा कर रखा था वो उन्हें अज़ाबे इलाही से बचाने के लिए कुछ भी मुफ़ीद साबित ना हो सका।

इस सूरह मुबारक में अब तक तीन रसूलों का ज़िक्र "अम्बिया अर्रुसुल" के अंदाज़ में हुआ है। उनमें से हज़रत शोऐब और हज़रत सालेह अलै. का नाम लिए बग़ैर उनकी क़ौमों का ज़िक्र किया गया है, जबकि हज़रत लूत अलै. का ज़िक्र नाम लेकर किया गया है। इसके बरअक्स हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र यहाँ भी क़ससुन्नबिय्यीन के अंदाज़ में आया है, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह सूरह हूद में आया था।

इस सूरह की आख़री पन्द्रह आयात दावते दीन के ऐतबार से बहुत अहम हैं।

आयात 85 से 99 तक

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا
بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ
﴿۸۵﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۶﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ
سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿۸۷﴾ لَا تَمُدَّنَّ
عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ
عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾ وَقُلْ اِنِّىْٓ
اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿۸۹﴾ۚ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَي الْمُقْتَسِمِيْنَ
﴿۹۰﴾ۙ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿۹۱﴾ فَوَرَبِّكَ
لَنَسْــَٔـلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۲﴾ۙ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾
فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۹۴﴾ اِنَّا
كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿۹۵﴾ۙ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ
اِلٰـهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ
يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿۹۷﴾ۙ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

आयत 85

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

"और हमने नहीं तख्लीक़ किया आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दरमियान हैं मगर हक़ के साथ।"

यह कायनात एक बा-मक़सद तख्लीक़ है, कोई खेल-तमाशा नहीं। हिन्दु मैथालॉजी की तर्ज़ पर यह कोई राम की लीला नहीं है कि राम जी जिसको चाहें राजा बना कर तख्त पर बैठा दें और जिसे चाहें तख्त से नीचे पटक दें, बल्कि यह कायनात और इसकी एक-एक चीज़ की तख्लीक़ बा-मायने और बा-मक़सद है। इस हक़ीक़त को सूरह आले इमरान (आयत:91) में इस तरह बयान फ़रमाया गया है: {رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ} "ऐ हमारे रब! तूने यह कायनात बे-मक़सद नहीं बनाई, तेरी ज़ात इससे बहुत आला और पाक है, लिहाज़ा हमें आग के अज़ाब से बचा ले।"

وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ

"और यक़ीनन क़यामत आकर रहेगी"

चूँकि यह कायनात और इसकी हर चीज़ हक़ के साथ तख्लीक़ की गई है, लिहाज़ा इस हक़ का मन्तक़ी तक़ाज़ा है कि एक यौमे हिसाब आए, लिहाज़ा क़यामत आकर रहेगी।

इस कायनात का ब-गौर जायज़ा लेने से यह हक़ीक़त अयाँ (उजागर) होती है कि इसकी तमाम चीज़ें इंसान के लिए पैदा की गई हैं। अगर वाक़ई ऐसा है तो मन्तक़ी सवाल उठता है कि फिर इंसान को किसलिये पैदा किया गया है? और इंसान के अंदर जो अख़्लाक़ी हिस्स (moral sense) पैदा की गई है, उसे पैदाइशी तौर पर नेकी और बदी की जो तमीज़ दी गई है यहाँ दुनिया में उससे क्या नताइज बरामद हो रहे हैं? इस दुनिया में तो अख़्लाक़ियात के उसूलों के बरअक्स नतीजे सामने आते हैं। यहाँ चोर डाकू और लुटेरे ऐश करते नज़र आते हैं और नेक सीरत लोग फ़ाक़े करने पर मजबूर हैं। लिहाज़ा उस सूरते हाल का मन्तक़ी तक़ाज़ा है कि इस दुनिया के बाद एक और दुनिया हो जिसमें हर शख़्स का पूरा-पूरा हिसाब हो और हर शख्स को ऐसा सिला और बदला मिले जो उसके आमाल के ऐन मुताबिक़ हो।

فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾

"तो (ऐ नबी ﷺ) आप इनसे खूबसूरती के साथ दरगुज़र करें।"

यह मुजरिम लोग हमारी पकड़ से बच नहीं सकेंगे। क़यामत आयेगी और यह लोग ज़रूर कैफ़रे-किरदार को पहुँचेंगे, मगर अभी हम इन्हें ढ़ील देना चाहते हैं, मज़ीद कुछ देर के लिये मोहलत देना चाहते हैं। चुनाँचे आप ﷺ फ़िलहाल इनकी दिल आज़ार बातें बर्दाश्त करें, इनकी मआन्दाना सरगर्मियों (enmity activities) के जवाब में सब्र करें और अहसन अंदाज़ में इस सब कुछ को नज़र अंदाज़ करें। इस रवैय्ये और ऐसे तर्ज़े अमल से आप ﷺ के दर्जात बुलंद होंगे।

आयत 86

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝۸۶

“यक़ीनन आप ﷺ का रब पैदा करने वाला, खूब जानने वाला है।”

वह जो पैदा करने वाला है, अपनी मख़्लूक़ को खूब जानता भी है। सूरतुल मुल्क में फ़रमाया गया: {اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ} (आयत:14) “क्या उसी के इल्म में नहीं होगा जिसने पैदा किया? बल्कि वो तो निहायत बारीक-बीन बाख़बर है।” किसी मशीन को बनाने वाला उसके तमाम कलपुर्ज़ों से खूब वाक़िफ़ होता है।

आयत 87

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ۝۸۷

“और हमने आप ﷺ को दी हैं सात बार-बार पढ़ी जाने वाली आयात और अज़मत वाला क़ुरान।”

इस पर तक़रीबन तमाम उम्मत का इज्माअ है कि यहाँ सात बार-बार दोहराए जाने वाली आयात से मुराद सूरतुल फ़ातिहा है। हदीस में सूरतुल फ़ातिहा को नमाज़ का लाज़मी जुज़्व (component) क़रार दिया गया है: ((لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ)) (मुत्तफ़िक़ अलैह) यानि जो शख़्स (नमाज़ में) सूरतुल फ़ातिहा नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ नहीं। क़ब्ल

अज़ सूरतुल फ़ातिहा के मुताअले के दौरान हम वह हदीसे क़ुद्सी भी पढ़ चुके हैं जिसमें सूरतुल फ़ातिहा ही को नमाज़ क़रार दिया गया है: ((قَسَمۡتُ الصَّلَاةَ بَيۡنِیۡ وَبَيۡنَ عَبۡدِیۡ نِصۡفَيۡنِ)) (रवाहु मुस्लिम) अब जबकि हर नमाज़ी अपनी नमाज़ की हर रकअत मे सूरतुल फ़ातिहा की तिलावत कर रहा है तो अंदाज़ा करें कि दुनिया भर में इन सात आयात की तिलावत कितनी मर्तबा होती होगी। इसके अलावा आयत ज़ेरे नज़र में इस सूरत को "क़ुराने अज़ीम" का नाम भी दिया गया है। यानि अहमियत और फ़ज़ीलत के ऐतबार से सूरतुल फ़ातिहा क़ुरान अज़ीम का दर्जा रखती है। इसी बुनियाद पर इस सूरत को असासुल क़ुरान और उम्मुल क़ुरान क़रार दिया गया है। इसके अलावा इसे अल काफ़िया (किफ़ायत करने वाली) और अल शाफ़िया (शिफ़ा देने वाली) जैसे नाम भी दिये गये हैं।

एक हदीस के मुताबिक़ सूरतुल फ़ातिहा जैसी कोई सूरत ना तौरात में है, ना इंजील में और ना ही क़ुरान में। चुनाँचे यहाँ हुज़ूर ﷺ की दिलजोई के लिए फ़रमाया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ देखें हमने आप ﷺ को इतना बड़ा ख़जाना अता फ़रमाया है। अबु जहल अगर खुद को मालदार समझता है, वलीद बिन मुगीरा अपने ज़अम (ख्याल) में अगर बहुत बड़ा सरदार है तो आप ﷺ मुत्लक़ परवाह ना करें। इन लोगों की सोच के अपने पैमाने हैं। इन बदबख्तों को क्या मालूम कि हमने आपको कितनी बड़ी दौलत से नवाज़ा है!

आयत 88

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ

"आप ﷺ आँख उठा कर भी ना देखें उस माल व मताअ की तरफ़ जो हमने उनके मुख़्तलिफ़ गिरोहों को दे रखा है"

अबु जहल की दौलत व शौकत, वलीद बिन मुगीरा के बागात और उन जैसे दूसरे काफिरों की जागीरें आप ﷺ को हरग़िज़ मुतास्सिर ना करें। आप ﷺ उनकी इन चीज़ों की तरफ़ आँख उठा कर भी ना देखें। एक हदीस में है कि अगर दुनिया व मा-फ़ीहा (जो दुनिया में है) की हैसियत अल्लाह की निगाह में मच्छर के एक पर के बराबर भी होती तो अल्लाह तआला किसी काफ़िर को एक घूँट पानी तक ना देता। चुनाँचे इन कुफ्फ़ार को जो माल व मताअ इस दुनिया में दिया गया है अल्लाह तआला के नज़दीक इसकी कुछ अहमियत नहीं है। अहले ईमान को भी चाहिए कि वो भी माल व दौलते दुनिया को उसी नज़र से देखें।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ

"और आप ﷺ उनकी हालत पर ग़म ना करें"

यह लोग आपकी दावत को ठुकरा कर अज़ाब के मुस्तहिक़ हो रहें हैं। इनमें आप ﷺ के क़बीले के अफ़राद भी शामिल हैं और अबु लहब जैसे अज़ीज़ व अक़ारब भी, मगर आप अब इन लोगों के अंजाम के बारे में बिल्कुल परेशान ना हों।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

"और अहले ईमान के लिए अपने बाज़ू झुका कर रखें।"

अहले ईमान के साथ आप ﷺ शफक्क़त और मेहरबानी से पेश आयें। इन लोगों में फ़ुक़रा व मसाकीन भी हैं और गुलाम भी। यह लोग जब आपके पास हाज़िर हों तो कमाल तवाज़अ (विनय) से इनका इस्तक़बाल कीजिए और इनकी दिल जोई फ़रमाइये। इससे क़ब्ल यही बात इस अंदाज़ में बयान फ़रमाई गई है: {فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ} (अनआम:54) सूरतुल शौरा (आयत:215) में भी इस मज़मून को इन अल्फ़ाज़ में दोहराया गया है: {وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ} कि अहले ईमान जो आप ﷺ की पैरवी कर रहे हैं, आप अपने कंधे उनके लिए झुका कर रखिये। सूरह बनी इस्राईल में वालिदैन के अदब व अहतराम के सिलसिले में भी यही अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए गये हैं कि औलाद अपने वालिदैन के साथ अदब, मुहब्बत, आजिज़ी और इन्कसारी (विनम्रता) का मामला करें।

आयत 89

وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ۝ؚ٨٩

"और कह दीजिए कि मैं तो खुल्लम-खुल्ला ख़बरदार करने वाला हूँ।"

मेरी इसके सिवा कोई ज़िम्मेदारी नहीं है कि आप लोगों को वाज़ेह तौर पर ख़बरदार कर दूँ।

आयत 90

كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

"जैसे कि हमने नाज़िल किया इन तक़सीम करने वालों पर।"

आयत 91

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾

"जिन्होंने (अपने) क़ुरान को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।"

इस आयत के मफ़हूम के सिलसिले में मुफ़स्सरीन ने मुख़्तलिफ़ राय बयान की हैं। इस ज़िमन में ज़्यादा क़रीने-क़यास राय यह है कि यहाँ लफ़्ज "क़ुरान" का इत्लाक़ तौरात पर हुआ है। जैसा कि सूरह सबा की आयत 31 में फ़रमाया गया: {وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ} यानि कुफ्फ़ार कहते हैं कि ना इस क़ुरान पर ईमान लाओ और ना उस पर जो इससे पहले था। तो गोया तौरात भी क़ुरान ही था और यहूद ने अपने मफ़ादात के लिए अपने उस क़ुरान को टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। उनके इस कारनामे का तज़किरा सूरह अनआम की आयत 91 में इस तरह हुआ है: {تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا} "तुमने इस (तौरात) को वर्क़-वर्क़ कर दिया है, इनमें से किसी हिस्से को ज़ाहिर करते हो और अक्सर को छुपा कर रखते हो।"

आयत 92

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾

"तो (ऐ मुहम्मद ﷺ!) आपके रब की क़सम! हम इन सबसे पूछ कर रहेंगे।"

इस आयत का मज़मून और अंदाज़ वही है जो इससे पहले हम सूरतुल आराफ़ में पढ़ चुके हैं: {فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ} (आयत:6) "हम लाज़िमन पूछ कर रहेंगे उनसे भी जिनकी तरफ़ रसूलों को भेजा गया और उनसे भी जिनको रसूल बना कर भेजा गया।" चुनाँचे ऐ नबी ﷺ यह थोड़े वक़्त की बात है, हम इनसे एक-एक चीज़ का हिसाब लेकर रहेंगे।

आयत 93

عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

"जो कुछ यह लोग करते रहे हैं।"

आयत 94

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾

"अब आप ﷺ अलल ऐलान बयान करें जिसका आपको हुक्म दिया जा रहा है और इन मुशरिकों की ज़रा परवाह ना करें।"

इस हुक्म को रसूल अल्लाह ﷺ की दावती तहरीक में एक नए मोड़ की हैसियत हासिल है। इससे क़ब्ल आप ﷺ अपने क़रीबी साथियों और रिश्तेदारों को इन्फ़रादी तौर पर

दावत दे रहे थे, जैसे आप ﷺ ने अपनी ज़ौजा मोहतरमा हज़रत ख़दीजा रज़ि. से बात की, अपने पुराने दोस्त हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. को दावत दी, अपने चचा ज़ाद भाई हज़रत अली रज़ि. को ऐतमाद में लिया जो आपके ज़ेरे किफ़ालत भी थे और अपने आज़ाद करदा गुलाम और मुँह बोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि. से भी बात की। आप ﷺ की इस इन्फ़रादी दावत का सिलसिला इब्तदाई तौर पर तक़रीबन तीन साल पर मुहीत नज़र आता है। बाज़ लोग इस दौर की दावत को एक ख़ुफ़िया (underground) तहरीक से ताबीर करते हैं मगर यह दुरुस्त नहीं। ऐलाने नबुवत के बाद आप ﷺ की सीरत में कोई दिन भी ऐसा नहीं आया जिसमें आप ﷺ ने अपनी इस दावत को ख़ुफ़िया रखा हो, मगर ऐसा ज़रूर है कि आप ﷺ की दावत फ़ितरी और तदरीजी अंदाज़ में आगे बढ़ी और आहिस्ता-आहिस्ता इरतक़ा पज़ीर हुई।

इस दावत का आग़ाज़ घर से हुआ, फिर आप ﷺ ताल्लुक़ और क़राबत दारी की बुनियाद पर मुख़्तलिफ़ अफ़राद को इन्फ़रादी अंदाज़ में दावत देते रहे और फिर तक़रीबन तीन साल के बाद आप ﷺ को हुक्म हुआ कि अब आप ﷺ अलल ऐलान यह दावत देना शुरू कर दें। इस हुक्म के बाद आप ﷺ ने एक दिन अरब के रिवाज़ के मुताबिक़ कोहे सफ़ा पर चढ़ कर लोगों को ऊँची आवाज़ से अपनी तरफ़ बुलाना शुरू किया। अरब में रिवाज़ था कि किसी अहम ख़बर का ऐलान करना होता तो एक आदमी अपना पूरा लिबास उतारता, बिल्कुल नंगा होकर किसी ऊँची जगह पर चढ़ जाता और “वा-सबाहा” का नारा लगाता, कि हाय वो सुबह जो आया चाहती है! यानि मैं तुम

लोगों को आने वाली सुबह की ख़बर देने वाला हूँ! उस ज़माने में ऐसी ख़बर आमतौर पर किसी मुख़ालिफ़ क़बीले के शबखून मारने के बारे में होती थी कि फलाँ क़बीला आज सुबह-सवेरे तुम पर हमलावर होना चाहता है। ऐसे शख़्स को "नज़ीर-ए-उरयाँ" कहा जाता था। इस रिवाज़ के मुताबिक़ (लिबास उतारने की बेहुदा रस्म को छोड़ कर) आप ﷺ ने कोहे सफ़ा पर खड़े होकर "वा-सबाहा" का नारा लगाया। जिस जिसने आप ﷺ की आवाज़ सुनी वो भागम-भाग आप ﷺ के पास आ पहुँचा कि आप ﷺ कोई अहम ख़बर देने वाले हैं। जब सब लोग इकठ्ठे हो गये तो आप ﷺ ने उनके सामने अल्लाह का पैगाम पेश किया, जिस के जवाब में आपके बदबख्त चचा अबु लहब ने कहा: تَبًّا لَكَ اَلِهٰذَا جَمَعْتَنَا "तुम्हारे लिए हलाकत हो (नऊज़ुबिल्लाह) इस काम के लिये तुमने हमें जमा किया था?"(12) दावत को डंके की चोट बयान करने इस हुक्म और इस वाक़िये से मालूम होता है कि यह सूरत नबुवत के इब्तदाई ज़माने में नाज़िल हुई थी।

आयत 95

اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ۙ﴿۹۵﴾

"हम आप ﷺ की तरफ़ से काफ़ी हैं इन इस्तहज़ा करने वालों (से निपटने) के लिए।"

आप ﷺ इनकी मुख़ालफ़त की परवाह ना करें, हम इनसे अच्छी तरह निपट लेंगे। यह लोग आप ﷺ का बाल भी बाँका नहीं कर सकेगें।

आयत 96

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝96

"जो अल्लाह के साथ दूसरे मअबूद गढ़े बैठे हैं। तो अनक़रीब उन्हें मालूम हो जायेगा।"

ऐसे लोगों को बहुत जल्द मालूम हो जायेगा कि असल हक़ीक़त क्या थी और वो किन गुमराहियों में पड़े हुए थे।

आयत 97

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ۝97

"और हम जानते हैं कि आप ﷺ का सीना तंग होता है उनकी बातों से।"

अलल ऐलान दावत की वजह से मुख़ालफ़त का एक तूफ़ान आप ﷺ पर उमड़ आया था। पहले मरहले में यह मुख़ालफ़त अगरचे ज़बानी तअन व तशनीअ और बद् गोई तक महदूद थी मगर बहुत तकलीफ़ देह थी। किसी ने मजनून और काहिन कह दिया, किसी ने शायर का ख़िताब दे दिया। कोई दूर की कौड़ी लाया कि आप ﷺ ने घर में एक अजमी गुलाम छुपा रखा है, उससे मालूमात लेकर हम पर धौंस जमाते हैं। कुछ ऐसे लोग भी थे जो वाक़ई समझते थे कि आप ﷺ पर आसेब वग़ैरह के असरात हो गये हैं। ऐसे लोग

अज़राहे हमदर्दी ऐसी बातों का इज़हार करते रहते थे। एक दफ़ा उतबा बिन रबीहा ने इसी तरह आप ﷺ से इज़हारे हमदर्दी किया। वह क़बीले का मामूर बुज़ुर्ग था। उसने कहा: ऐ मेरे भतीजे, बड़े-बड़े आमिलों और काहिनों से मेरे ताल्लुक़ात हैं, आप ﷺ कहें तो मैं उनमें से किसी को बुला लाऊँ और आपका इलाज कराऊँ? इन सब बातों से आपको बहुत तकलीफ़ होती थी और आपकी इसी तकलीफ़ और दिल की घुटन का यहाँ तज़किरा किया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ इन लोगों की बेहुदा बातों से आपको जो तकलीफ़ होती है वह हमारे इल्म में है। यह मज़मून सूरतुल अन्आम की आयत 33 में भी गुज़र चुका है।

आयत 98

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾

"बस आप तस्बीह कीजिए अपने रब की हम्द के साथ और सज्दा करने वालों में से हो जायें।"

आप अपने रब की तस्बीह व तहमीद में मशगूल रहें। उसी के आगे झुके रहें और इस तरह अपने ताल्लुक़ मअ अल्लाह को मज़ीद मज़बूत करें। अल्लाह से अपने इस क़ल्बी और ज़हनी रिश्ते को जितना मज़बूत करेंगे उसी क़द्र आप ﷺ के दिल को सुकून व इत्मिनान मिलेगा और सब्र व इस्तक़ामत के रास्ते पर चलना और इन सख़्तियों को झेलना आप ﷺ के लिए आसान होगा।

आयत 99

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

"और अपने रब की बंदगी में लगे रहें यहाँ तक कि यक़ीनी शय वक़ूअ पज़ीर हो जाये।"

आम तौर पर यहाँ "यक़ीन" से मौत मुराद ली गई है। यानि अपनी ज़िन्दगी की आखरी घड़ी तक उसकी बंदगी में लगे रहिये और इस सिलसिले में लम्हा भर के लिए भी ग़फ़लत ना कीजिए:

ता दमे आख़िर दमे फ़ारग मुबाश
अंदरे रह मे तराश व मे ख़राश!

बाज़ लोग यहाँ "यक़ीन" से अल्लाह तआला की नुसरत भी मुराद लेते हैं कि कुफ्फ़ार के ख़िलाफ़ अल्लाह का फ़ैसला आ जाये, उसकी मदद अहले हक़ के शामिले हाल हो जाये और उन्हें कुफ्फ़ार पर गलबा हासिल हो जाये।

بارك الله لى ولكم فى القرآن العظيم ونفعنى واياكم بالآيات والذكر الحكيم۔

❀ ❀ ❀

सूरतुन्नहल

तम्हीदी कलिमात

सूरह युनुस से शुरू होने वाले मक्की सूरतों के तवील सिलसिले की अब तक हम छ: सूरतों का मुताअला कर चुके हैं। इन छ: सूरतों को भी हमने तीन-तीन सूरतों के मज़ीद दो ज़ेली ग्रुप्स में तक़सीम किया था। पहले ग्रुप में शामिल तीन सूरतें (युनुस, हूद और युसूफ़) निस्बतन तवील हैं, जबकि दूसरे ग्रुप की सूरतें (अल रअद, इब्राहीम और अलहिज्र) निस्बतन छोटी हैं। दूसरे ग्रुप की इन सूरतों में पहली दो यानि सूरतुल रअद और सूरह इब्राहीम में निस्बते जौज़ियत है जबकि सूरतुल हिज्र बिल्कुल मुनफ़रिद नौइयत की सूरत है। अब सूरतुल नहल से मक्की सूरतों के इस तवील सिलसिले के तीसरे ज़ेली ग्रुप का आग़ाज़ हो रहा है। इस ग्रुप में सूरतुल नहल, सूरह बनी इसराइल और सूरतुल कहफ़ शामिल हैं। यह तीनो सूरतें भी निस्बतन तवील हैं। इनमें सूरतुल नहल मुनफ़रिद है जबकि सूरह बनी इसराइल और सूरतुल कहफ़ में जोड़े का ताल्लुक़ है।

सूरतुल नहल का ज़माना-ए-नुज़ूल मक्के का आखरी दौर मालूम होता है। इस सूरत की ख़ास अहमियत यह है कि इसमें अल्लाह की नेअमतों का ज़िक्र बहुत जामियत के साथ हुआ है और इसके मज़ामीन की सूरतुल अनआम और सूरतुल रूम के मज़ामीन के साथ गहरी मुशाबहत पाई जाती है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आयात 1 से 9 तक

أَتٰىٓ أَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ أَمْرِهٖ عَلٰى
مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ أَنْ أَنْذِرُوْٓا أَنَّهٗ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا
فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ
خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾ وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ
وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ ﴿٥﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ
تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ﴿٦﴾ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلٰى
بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ؕ إِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧﴾ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ
لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ وَعَلَى
اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ
أَجْمَعِيْنَ ﴿٩﴾

आयत 1

أَتَىٰٓ أَمۡرُ ٱللَّهِ فَلَا تَسۡتَعۡجِلُوهُۚ

"अल्लाह का हुकुम आ पहुँचा है, पस तुम जल्दी मत मचाओ।"

जब हमने अपना रसूल भेज दिया और उस पर अपना कलाम भी नाज़िल करना शुरू कर दिया है तो गोया फ़ैसलाकुन वक़्त आ पहुँचा है। अब मामला सिर्फ़ मोहलत के दौरानिये का है कि हमारे रसूल और हमारे पैग़ाम का इंकार करने वालों को मशियते इलाही के मुताबिक़ किस क़दर मोहलत मिलती है। बहरहाल अब जल्दी मचाने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह का अज़ाब बस अब आया ही चाहता है, इसके लिये अब बहुत ज़्यादा वक़्त नहीं रह गया।

سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ١

"वह पाक और बुलंद व बाला है उस शिर्क से जो वह करते हैं।"

आयत 2

يُنَزِّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةَ بِٱلرُّوحِ مِنۡ أَمۡرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦٓ أَنۡ أَنذِرُوٓاْ

"वह उतारता है फ़रिश्तों को अपने अम्र की रूह के साथ अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है, कि ख़बरदार कर दो (मेरे बन्दों को) कि मेरे सिवा कोई मअबूद

اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝

नहीं है पस तुम मेरा ही तक़वा इख़्तियार करो।"

'बिल रूही मिन अमरिही' से मुराद अल्लाह की वही है। यानि हज़रत मोहम्मद ﷺ को अल्लाह ने अपनी वही के लिये चुन लिया और आप ﷺ की तरफ़ हज़रत जिब्राइल अलै. वही लेकर आए। यहाँ पर लफ्ज़ "अम्र" की वज़ाहत भी ज़रूरी है। सूरतुल आराफ़ में फ़रमाया गया: {اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ} (आयत 54) "आगाह हो जाओ, उसी के लिये खल्क़ है और उसी के लिये अम्र।" यानि आलम-ए-खल्क़ और आलम-ए-अम्र दो अलग-अलग आलम हैं। आलमे अम्र का मामला यह है कि उसमें वक़्त का आमिल बिल्कुल कार फ़रमा नहीं। इस आलम में किसी काम के करने या कोई वाक़िया वक़ूअ पज़ीर होने में वक़्त दरकार नहीं होता। बस अल्लाह तआला का इरादा होता है और उसके "कुन" फ़रमाने से वह काम हो जाता है। जैसा कि सूरह यासीन में फ़रमाया गया: {اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـــًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ} "उसका अम्र तो यही है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस यही होता कि वह उसे कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है।"

इसके बरअक्स आलमे खल्क़ में किसी काम के पाया-ए-तकमील तक पहुँचने में वक़्त दरकार होता है। जैसे क़ुरान में मुतअद्दिद बार फ़रमाया गया कि अल्लाह ने ज़मीन व आसमान छ: दिनों में तख्लीक़ किये। इसी तरह दुनिया का सारा निज़ाम आलमे खल्क़ के असूलों पर चल रहा है। मसलन आम की गुठली से कौंपलें फूटती हैं, फिर बढ़ती हैं

और फिर आहिस्ता-आहिस्ता एक तनावर दरख़्त बन जाता है। इस सारे अमल में वक़्त दरकार होता है।

यहाँ पर रूह के ज़िक्र के हवाले से यह बात अहम है कि रूह का ताल्लुक़ आलमे अम्र से है। आलमे अम्र की सिर्फ़ तीन चीज़ें ही हमारे इल्म में हैं। मलाएका, रूह और वही। क़ुरान में मलाएका को भी रूह कहा गया है। जैसे हज़रत जिब्राइल अलै. के लिये रूहुल क़ुदुस और रूहुल आमीन के अल्फ़ाज़ आए हैं। सूरतुल शौरा में फ़रमाया गया: {نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ} (आयत 193) जबकि सूरतुल बक़रह की आयत 87 में इरशाद हुआ: {وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ}। इसी तरह क़ुरान में वही को भी रूह कहा गया है, और यह वही नाज़िल भी रूह पर होती है। जब मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ पर वही नाज़िल होती तो आप ﷺ उसका इदराक तबई हवास-ए-खम्सा (five sences) से नहीं करते थे, बल्कि वही बराहेरास्त आप ﷺ के क़ल्बे मुबारक पर नाज़िल होती थी। इसलिये कि क़ल्बे मोहम्मदी रूहे मोहम्मदी ﷺ का मसकन था: {نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ} {عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ} (अल शौअरा, आयत 193-194) चुनाँचे वही भी रूह है, इसको लाने वाले जिब्राइल अमीन भी रूह हैं और इसका नुज़ूल भी रूहे मोहमदी ﷺ पर हो रहा है। इस सिलसिले में जिगर मुरादाबादी का यह शेर उनकी किसी ख़ास कैफ़ियत का मज़हर मालूम होता है:

नगमा वही है नगमा कि जिसको, रूह सुने और रूह सुनाए!

आयत 3

"उसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ। वह बहुत बुलंद है ऊस शिर्क से जो वह करते हैं।"

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ③

आयत 4

"उसने पैदा किया इंसान को गंदे पानी के बूंद से, फ़िर यकायक वह बन गया खुला झगड़ालू।"

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ④

इंसान अपने खुदसाख्ता नज़रियात के हक़ में ख़ूब बहस करता है, अक़्ली व नक़ली दलीलें देता है और ज़ोरे खिताबत से ज़मीन व आसमान के क़लाबे मिला देता है।

आयत 5

"और चौपायों को भी उसने पैदा किया, उनमें तुम्हारे लिये गरमी का सामान और कई दूसरे फायदे भी हैं, और उनमें से तुम खाते भी हो।"

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ⑤

बाज़ जानवरों की ऊन से तुम लोग लिबास बुनते हो, जो सर्दी के मौसम में तुम्हें गरमी पहुँचाता है, बाज़ जानवरों के

बालों से बहुत सी दूसरी चीज़ें बनाते हो। इसी तरह यह जानवर और भी बहुत सी सूरतों में तुम्हारे लिये मुफ़ीद और मददगार होते हैं, हत्ता कि तुम्हारी ख़ुराक की बेशतर ज़रूरियात भी इन्हीं से पूरी होती हैं।

आयत 6

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝٦

"और तुम्हारे लिये इनमें बड़ी शान व शौकत है जब तुम शाम को इन्हें चरा कर लाते हो और जब (सुबह के वक़्त) चराने के लिये ले जाते हो।"

देहाती माहौल में मवेशियों की हैसियत बहुत क़ीमती सरमाये की सी होती है, इसी लिये इन्हें माल-मवेशी कहा जाता है। यह जानवर जब सुबह चरने के लिये जाते हैं या शाम के वक़्त जंगल से चर कर वापस आ रहे होते हैं तो उनके मालिकों के लिये यह बड़ा ख़ुशकुन मंज़र होता है। जानवरों का गल्ला या रेवड़ जितना बड़ा होगा, उसके मालिक की हैसियत और शान व शौकत उसी क़दर ज़्यादा समझी जाएगी।

आयत 7

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنفُسِ ۚ

"और वह तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसी बस्तियों की तरफ़ जिन तक तुम नहीं पहुँचने वाले होते मगर जान तोड़ कर।"

इनमें ऐसे जानवर भी हैं जो साज़ो-सामान के नक़ल व हमल (loading-unloading) में तुम्हारे काम आते हैं और उनके बगैर तुम यह भारी चीज़ें उठा कर दूर-दराज़ इलाक़ों तक नहीं पहुँचा सकते।

إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝٧

"यक़ीनन तुम्हारा रब शफ़क्क़त फ़रमाने वाला, मेहरबान है।"

आयत 8

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ

"और (उसी ने पैदा किये) घोडे और खच्चर और गधे, कि तुम उन पर सवारी करो और (तुम्हारे लिये है उनमें) ज़ीनत भी।"

इन मवेशियों से इंसान को बहुत से फ़ायदे भी हासिल होते हैं और यह इसके लिये बाइसे ज़ेब व ज़ीनत भी हैं। ख़ुसूसी तौर पर घोड़ा बहुत हसीन और क़ीमती जानवर है और इसका मालिक इसे अपने लिये बाइसे फ़ख्र व तमक्कुनियत (खेती) समझता है।

وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝٨

"और (ऐसी चीज़ें भी) वह पैदा करता है जिनका तुम्हें इल्म ही नहीं।"

यानि ये तो चंद वह चीज़ें हैं जिनके बारे में तुम लोग जानते हो, मगर अल्लाह तआला तो बेशुमार ऐसी चीज़ें भी तख्लीक़ फ़रमाता है जिनके बारे में तुम्हें कुछ भी इल्म नहीं।

आयत 9

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَاۗىِٕرٌ ۭ

"और अल्लाह तक पहुँचाने वाला सीधा रास्ता है और उनमें कुछ टेढ़े भी हैं।"

यह सीधा रास्ता तौहीद का रास्ता है। यहाँ इस रास्ते को "क़सद उल सबील" का नाम दिया गया है। क़ुरान में इसे सिराते मुस्तक़ीम भी कहा गया है और सवा अस्सबील भी। यही एक रास्ता है जो इंसान को अल्लाह तक पहुँचाता है, मगर बहुत से लोग इस रास्ते से भटक कर टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों पर मुड़ जाते हैं जो उन्हें गुमराही के गड्ढ़ों में गिरा देती हैं।

وَلَوْ شَاۗءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

"और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता।"

अल्लाह अगर चाहता तो सब इंसानों को इसी एक सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ और समझ-बूझ दे देता।

आयात 10 से 23 तक

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ
وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ
وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ

الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیَۃً لِّقَوۡمٍ یَّتَفَکَّرُوۡنَ ﴿۱۱﴾
وَ سَخَّرَ لَکُمُ الَّیۡلَ وَ النَّہَارَ ۙ وَ الشَّمۡسَ وَ الۡقَمَرَ ؕ
وَ النُّجُوۡمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمۡرِہٖ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ
یَّعۡقِلُوۡنَ ﴿ۙ۱۲﴾ . وَ مَا ذَرَاَ لَکُمۡ فِی الۡاَرۡضِ مُخۡتَلِفًا
اَلۡوَانُہٗ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیَۃً لِّقَوۡمٍ یَّذَّکَّرُوۡنَ ﴿۱۳﴾ وَ ہُوَ
الَّذِیۡ سَخَّرَ الۡبَحۡرَ لِتَاۡکُلُوۡا مِنۡہُ لَحۡمًا طَرِیًّا
وَّ تَسۡتَخۡرِجُوۡا مِنۡہُ حِلۡیَۃً تَلۡبَسُوۡنَہَا ۚ وَ تَرَی الۡفُلۡکَ
مَوَاخِرَ فِیۡہِ وَ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِہٖ وَ لَعَلَّکُمۡ
تَشۡکُرُوۡنَ ﴿۱۴﴾ وَ اَلۡقٰی فِی الۡاَرۡضِ رَوَاسِیَ اَنۡ تَمِیۡدَ
بِکُمۡ وَ اَنۡہٰرًا وَّ سُبُلًا لَّعَلَّکُمۡ تَہۡتَدُوۡنَ ﴿ۙ۱۵﴾ وَ عَلٰمٰتٍ ؕ
وَ بِالنَّجۡمِ ہُمۡ یَہۡتَدُوۡنَ ﴿۱۶﴾ اَفَمَنۡ یَّخۡلُقُ کَمَنۡ لَّا
یَخۡلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَکَّرُوۡنَ ﴿۱۷﴾ وَ اِنۡ تَعُدُّوۡا نِعۡمَۃَ اللّٰہِ لَا
تُحۡصُوۡہَا ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَغَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۱۸﴾ وَ اللّٰہُ یَعۡلَمُ مَا
تُسِرُّوۡنَ وَ مَا تُعۡلِنُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَ الَّذِیۡنَ یَدۡعُوۡنَ مِنۡ
دُوۡنِ اللّٰہِ لَا یَخۡلُقُوۡنَ شَیۡئًا وَّ ہُمۡ یُخۡلَقُوۡنَ ﴿ؕ۲۰﴾
اَمۡوَاتٌ غَیۡرُ اَحۡیَآءٍ ۚ وَ مَا یَشۡعُرُوۡنَ ۙ اَیَّانَ یُبۡعَثُوۡنَ

اِلٰـهُكُمۡ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ ﴿۲۱﴾
قُلُوۡبُهُمۡ مُّنۡكِرَةٌ وَّهُمۡ مُّسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۲۲﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ
اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الۡمُسۡتَكۡبِرِيۡنَ ﴿۲۳﴾

आयत 10

هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّـكُمۡ مِّنۡهُ شَرَابٌ وَّمِنۡهُ شَجَرٌ فِيۡهِ تُسِيۡمُوۡنَ ﴿۱۰﴾

“वही है जिसने उतारा है आसमान से तुम्हारे लिये पानी, उसी से है (तुम्हारा) पीना और उसी से हैं दरख़्त (नबातात वगैरह), जिनमें तुम (अपने जानवरों) को चराते हो।”

अल्लाह तआला ही बारिश और बर्फ़ की सूरत में बादलों से पानी बरसाता है जिस पर इंसानी ज़िन्दगी का बराहेरास्त इन्हसार है और फिर यही पानी बेशुमार नबाताती और हैवानी मख्लूक़ात को ज़िन्दगी बख्शता है जो इंसान ही के लिये पैदा की गई हैं।

आयत 11

يُنۡۢبِتُ لَكُمۡ بِهِ الزَّرۡعَ وَالزَّيۡتُوۡنَ وَالنَّخِيۡلَ وَالۡاَعۡنَابَ وَمِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ

"वह उगाता है तुम्हारे लिये इस (पानी) से खेती और ज़ैतून और खजूरें और अंगूर और हर क़िस्म के फ़ल।"

اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۱۱﴾

"यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो गौर व फ़िक्र करते हैं।"

अल्लाह तआला की शाने खल्लाक़ी के बेशुमार अंदाज़ हैं, उसकी तख्लीक़ में लामहदूद तनूअ, बूक़लमूनी और रंगा-रंगी है। चुनाँचे अब एक दूसरे पहलु से अल्लाह तआला की नेअमतों का ज़िक्र होने जा रहा है:

आयत 12

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ۙ

"और उसने मुसख्खर कर दिया तुम्हारे लिये रात और दिन को"

इंसान की इंफ़रादी और इज्तमाई ज़िन्दगी में रात अपनी जगह अहम है और दिन की अपनी अहमियत है। रात में मजमुई तौर पर एक सुकून है। यह इंसानों और दूसरे जानदारों के लिये बाइसे राहत है, इसमें वह आराम करते हैं, सोते हैं और सुबह ताज़ा दम होकर उठते हैं। दूसरी तरफ़

दिन में भाग-दौड़, मेहनत, जद्दो-जहद और मुख्तलिफ़ अलनौ इंसानी सरगर्मियाँ मुमकिन होती हैं। अगर इस पहलु से दुनिया के इज्तमाई निज़ाम को देखा जाए तो यह पूरा निज़ाम रात और दिन के वजूद का मरहूने मन्नत नज़र आता है। नबाताती निज़ाम को ही ले लीजिये। इसके लिये रात और दिन दोनों ही नागुज़ीर (अनिवार्य) हैं। दिन को सूरज की रौशनी और तमाज़त से नबातात के लिये Photosynthesis का अमल मुमकिन होता है जो उनकी नशो नुमा के लिये नागुज़ीर है। फ़सलों और फलों को भी पकने के लिये सूरज की रौशनी और हरारत की ज़रूरत होती है। दूसरी तरफ़ रात को नबातात respiration के अमल के ज़रिये से ऑक्सीजन हासिल करते हैं। गोया रात और दिन के बगैर नबातात का वजूद मुमकिन ही नहीं है और इंसानी ज़िन्दगी में नबातात के अमल व दखल का तस्सवुर करें तो इस एक मिसाल से ही यह हक़ीक़त समझ में आ जाती है कि अल्लाह तआला का दिन और रात को इंसान के लिये मुसख्खर कर देना कितनी बड़ी नेअमत है।

وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوۡمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمۡرِهٖ ؕ

"और सूरज और चाँद को, और सितारे भी मुसख्खर हैं उसी के हुकुम से।"

पूरा निज़ामे शम्सी और तमाम अजरामे फ़लकी अल्लाह तआला के हुकुम से इंसान की नफ़ा रसानी में मसरूफ़ हैं।

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۲﴾

"यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिये।"

आयत 13

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ

"और जो चीज़ें उसने फैला दी हैं तुम्हारे लिये ज़मीन में उनके मुख्तलिफ़ रंग हैं।"

अल्लाह तआला ने इंसान के लिये ज़मीन में रंगा-रंग क़िस्म के हैवानात, नबातात और जमादात पैदा किये हैं।

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

"यक़ीनन इसमें भी निशानी है उन लोगों के लिये जो नसीहत अखज़ करें।"

आयत 14

وَهُوَ الَّذِیْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِیًّا

"और वही है जिसने समुन्दर को तुम्हारी ज़रूरियात पूरी करने में लगा दिया है ताकि तुम खाओ उससे ताज़ा गोश्त"

समुन्दरी ख़ुराक हमेशा से इंसानी ज़िन्दगी में बहुत अहम रही है। दौरे जदीद में इसकी अफ़ादियत (उपयोगिता) मज़ीद नुमाया होकर सामने आई है जिसकी वजह से इसकी अहमियत और भी बढ़ गई है।

وَّتَسۡتَخۡرِجُوۡا مِنۡهُ حِلۡيَةً تَلۡبَسُوۡنَهَا ۚ	*"और ताकि तुम निकालो उसमें से बनाव श्रृंगार का सामान जो तुम पहनते हो।"*

समुन्दर से मोती और बहुत सी दूसरी ऐसी अश्या (चीज़ें) निकाली जाती हैं जिनसे ज़ेवरात और आराईश व ज़ेबाईश का सामान तैयार होता है।

وَتَرَى الۡفُلۡكَ مَوَاخِرَ فِيۡهِ	*"और तुम देखते हो कश्तियों को कि पानी को चीरती हुई चलती हैं उस (समुन्दर) में"*
وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ۝١٤	*"और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो।"*

आयत 15

وَاَلۡقٰى فِى الۡاَرۡضِ رَوَاسِىَ اَنۡ تَمِيۡدَ بِكُمۡ وَاَنۡهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ۝١٥	*"और उसने ज़मीन में लंगर डाल दिये हैं कि तुम्हें लेकर लुढ़क ना जाए और उसमें (नदियाँ बहा दी हैं) और रास्ते (बना दिये हैं) ताकि तुम अपनी मंज़िलों तक पहुँचा करो।"*

यहाँ اَنۡهٰرًا وَّسُبُلًا के इकट्ठे ज़िक्र के हवाले से अगर देखा जाए तो अमली तौर पर भी इनका आपस में गहरा ताल्लुक़ है।

पहाड़ी सिलसिलों में आम तौर पर नदियों की गुज़रगाहों के साथ-साथ ही रास्ते बनते हैं। इसी तरह पहाड़ों के दरमियान क़ुदरती वादियाँ इन्सानों की गुज़रगाहें भी बनती हैं और पानी के रेलों को रास्ते भी फ़राहम करती हैं।

आयत 16

وَعَلٰمٰتٍ ۭ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ⑯

"और दूसरी अलामतें भी हैं। और वह सितारों से भी रहनुमाई हासिल करते हैं।"

अल्लाह तआला ने इंसानों की मदद के लिये ज़मीन में तरह-तरह की अलामतें बनाईं ताकि मुख्तलिफ़ इलाक़ों और रास्तों की पहचान हो सके। इसी तरह आसमान के सितारों को भी सिम्तों (दिशाएँ) और रास्तों के तअय्युन का एक ज़रिया बना दिया। पुराने ज़माने में समुन्दरी और सहराई सफ़र रात के वक़्त सितारों की मदद से ही मुमकिन होते थे।

आयत 17

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ⑰

"तो क्या जो (ये सब कुछ) पैदा करता है उनकी तरह है जो (कुछ भी) पैदा नहीं करते? तो क्या तुम नसीहत हासिल नहीं करते?"

मुशरिकीने अरब ने मुख्तलिफ़ नामों से जो बुत बना रखे थे उनके बारे में उनका अक़ीदा था कि वह अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करेंगे। सूरह युनुस की आयत 18 में उनके

इस अक़ीदे का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में किया गया है: {وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَاۗءِ شُفَعَاۗؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ} "और वह कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारशी हैं।" अल्लाह के बारे में उनका मानना था कि वह कायनात और इसमें मौजूद हर चीज़ का खालिक़ है और वह यह भी तस्लीम करते थे कि उनके मअबूदों का इस तख्लीक़ में कोई हिस्सा नहीं और ना ही वह कोई चीज़ तख्लीक़ कर सकते हैं। क़ुरान में उनके इस अक़ीदे का भी बार-बार ज़िक्र आया है: {وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ} (लुक़मान:25) "अगर आप इनसे पूछेंगे कि किसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को तो लाज़िमन यही कहेंगे कि अल्लाह ने!" उन लोगों के इसी अक़ीदे की बुनियाद पर यहाँ यह सवाल पूछा गया है कि तुम्हारे ये खुद साख्ता मअबूद, जो कुछ भी तख्लीक़ करने की क़ुदरत नहीं रखते, क्या उस अल्लाह की मानिन्द हो सकते हैं जो इस कायनात और इसमें मौजूद हर चीज़ का खालिक़ है? और अगर तुम तस्लीम करते हो कि इस सवाल का जवाब नफ़ी में है तो क्या फिर भी तुम लोग नसीहत नहीं पकड़ते हो?

आयत 18

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ

"और अगर तुम अल्लाह की नेअमतों को गिनो तो उनका अहाता नहीं कर सकोगे।"

अल्लाह की नेअमतों की गिनती तो कजा उसकी बेशुमार नेअमतें ऐसी हैं जिनसे इंसान फैज़याब तो हो रहा है लेकिन उन तक इंसान के इल्म और शऊर की अभी पहुँच ही नहीं।

إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝١٨

"यक़ीनन अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।"

आयत 19

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝١٩

"और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो।"

आयत 20

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۝٢٠

"और जिनको यह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ पैदा नहीं करते, बल्कि वह तो खुद पैदा किये गए हैं।"

अम्बिया व रुसुल हों, मलाइका हों या औलिया अल्लाह, सब मख्लूक़ हैं, खालिक़ सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात है।

आयत 21

اَمۡوَاتٌ غَیۡرُ اَحۡیَآءٍ ۚ وَمَا یَشۡعُرُوۡنَ ۙ اَیَّانَ یُبۡعَثُوۡنَ ﴿۲۱﴾

"मुर्दा हैं, ज़िन्दा नहीं हैं। और वह नहीं जानते कि कब उठाए जायेंगे।"

जिन औलिया अल्लाह के नामों पर इन्होंने बुत बना रखे हैं वह अब इस दुनिया में नहीं हैं, वह फ़ौत हो चुके हैं और उन्हें कुछ मालूम नहीं कि क़यामत कब बरपा होगी और कब उन्हें दोबारा उठाया जाएगा।

आयत 22

اِلٰـهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ

"तुम्हारा मअबूद एक ही मअबूद है।"

فَالَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ قُلُوۡبُهُمۡ مُّنۡكِرَةٌ وَّهُمۡ مُّسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۲۲﴾

"तो वह लोग जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुन्किर हैं और वह तकब्बुर करते हैं।"

इस नुक्ते को अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है कि जिन लोगों के दिलों में आख़िरत का यक़ीन नहीं है वह हक़ बात को क़बूल करने से क्यों झिझकते हैं और उनके अन्दर इस्तकबार क्यों पैदा हो जाता है। इस सिलसिले में क़ुरान का फ़लसफ़ा यह है कि जो शख्स फ़ितरते सलीमा का

मालिक है उसके अन्दर अच्छाई और बुराई की तमीज़ मौजूद होती है। उसका दिल इस हक़ीक़त का क़ायल होता है कि अच्छाई का अच्छा बदला मिलना चाहिये और बुराई का बुरा *"गन्दुम अज़ गन्दुम बरवीद, जौ ज़े जौ!"*

यही फ़लसफ़ा या तस्सवुर मन्तक़ी तौर पर ईमान बिल आख़िरत की बुनियाद फ़राहम करता है। मगर दुनिया में जब पूरी तरह नेकी की जज़ा और बुराई की सज़ा मिलती हुई नज़र नहीं आती तो एक साहिबे शऊर इंसान लाज़िमन सोचता है कि आमाल और इसके नताइज के ऐतबार से दुनयावी ज़िन्दगी अधूरी है और इस दुनिया में इन्साफ़ की फ़राहमी कमा हक़ मुमकिन ही नहीं। मसलन एक सत्तर साला बूढ़ा एक नौजवान को क़त्ल कर दे तो इस दुनिया का क़ानून उसे क्या सज़ा देगा? वैसे तो यहाँ इन्साफ़ तक पहुँचने के लिये बहुत से कठिन मराहिल तय करने पड़ते हैं, लेकिन अगर यह तमाम मराहिल तय करके इन्साफ़ मिल भी जाए तो क़ानून ज़्यादा से ज़्यादा उस बूढ़े को फाँसी पर लटका देगा। लेकिन क्या इस बूढ़े की जान वाक़ई उस नौजवान मक़तूल की जान के बराबर है? नहीं, ऐसा हरगिज़ नहीं है। वह नौजवान तो अपने ख़ानदान का वाहिद सहारा था, उसके छोटे-छोटे बच्चे यतीम हुए, एक नौजवान औरत बेवा हुई, खानदान का मआशी सहारा छिन गया। इस तरह उसके लवाहिक़ीन (उत्तरजीवी) और ख़ानदान के लिये इस क़त्ल के असरात कितने गंभीर होंगे और कहाँ-कहाँ तक पहुँचेंगे, इसका अंदाज़ा लगाना मुश्किल है। दूसरी तरफ़ वह बूढ़ा शख्स जो अपनी तबई उम्र गुज़ार चुका था, जिसके बच्चे ख़ुद मुख़्तार ज़िंदगियाँ गुज़ार रहे हैं, जिसकी कोई मआशी ज़िम्मेदारी भी नहीं है, उसके फाँसी पर चढ़ जाने से उसके

पसमाँदगान पर वैसे असरात मुरत्तब नहीं होंगे जैसे उस नौजवान की जान जाने से उसके पसमाँदगान पर हुए थे। ऐसी सूरत में दुनिया को कोई क़ानून मज़लूम को पूरा-पूरा बदला दे ही नहीं सकता। ऐसी मिसालें अक़्ली और मन्तक़ी तौर पर साबित करती हैं कि यह दुनिया ना-मुकम्मल है। इस दुनिया के मामलात और अफ़आल का अधूरापन एक दूसरी दुनिया का तक़ाज़ा करता है जिसमें इस दुनिया के तशना तकमील रह जाने वाले मामलात पूरे इन्साफ़ के साथ अपने-अपने मन्तक़ी अंजाम को पहुँचे। अब एक ऐसा शख्स जो फ़ितरते सलीमा का मालिक है, उसके शऊर में नेकी और बदी का एक वाज़ेह और ग़ैर मुबहम (unclear) तस्सवुर मौजूद है, वह लाज़मी तौर पर आख़िरत के बारे में मज़कूरा मन्तक़ी नतीजे पर पहुँचेगा और फिर वह क़ुरान के तसव्वुरे आख़िरत को क़बूल करने में भी पसो-पेश नहीं करेगा, मगर इसके मुक़ाबले में एक ऐसा शख्स जिसके शऊर में नेकी और बदी का वाज़ेह तस्सवुर मौजूद नहीं, वह क़ुरान के तसव्वुरे आख़िरत पर भी दिल से यक़ीन नहीं रखता और फ़िक्रे आख़िरत से बेनियाज़ होकर ग़ुरूर और तक्कबुर में भी मुबतला हो चुका है, उसका दिल पैग़ामे हक़ को क़बूल करने से भी मुन्किर होगा। ऐसे शख्स के सामने हकीमाना दर्स और आलिमाना वआज़ (बयान) सब बेअसर साबित होंगे।

आयत 23

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ

"कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है जो कुछ वह ज़ाहिर करते हैं और जो कुछ वह छुपाते हैं।"

اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝۲۳

"यक़ीनन वह तकब्बुर करने वालों को पसंद नहीं करता।"

आयात 24 से 32 तक

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝۲۴ۙ لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ
اَلَا سَاۗءَ مَا يَزِرُوْنَ ۝۲۵ۧ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۝۲۶ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ
شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَاۗقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ

اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ بَلٰٓى
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾
وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْا خَيْرًا
لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ
الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ
يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا
يَشَآءُوْنَ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ الَّذِيْنَ
تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾

आयत 24

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ

"और जब उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया है?"

नबी अकरम ﷺ की दावत का चर्चा जब मक्का के ऐतराफ़ व अकनाफ़ (चारो तरफ़) में होने लगा तो लोग अहले मक्का से पूछते कि मोहम्मद (ﷺ) जो कह रहे हैं कि मुझ पर अल्लाह का कलाम नाज़िल होता है, तुम लोगों ने तो यह कलाम सुना है, चुनाँचे तुम्हारी इसके बारे में क्या राय है? इसके मज़ामीन क्या हैं?

"वह कहते हैं कि पहले लोगों के क़िस्से हैं।" قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾

कि यह कलाम तो बस पुराने क़िस्से कहानियों पर मुश्तमिल है। यह सब गुज़िश्ता क़ौमों के वाक़ियात हैं जो इधर-उधर से सुन कर हमें सुना देते हैं और फिर हम पर धौंस जमाते हैं कि यह अल्लाह का कलाम है।

आयत 25

"ताकि यह उठायें अपने (गुनाहों के) बोझ पूरे के पूरे क़यामत के दिन" لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ

यूँ इनके दिल हक़ की तरफ़ माइल नहीं हो रहे और इसका नतीजा यह निकलेगा कि रोज़े क़यामत वह अपनी इस गुमराही और सरकशी के वबाल में गिरफ्तार होंगे।

"और कुछ उन लोगों के बोझ भी जिन्हें ये गुमराह कर रहे हैं ला-इल्मी में।" وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ

यानि क़यामत के दिन वह ना सिर्फ़ अपनी गुमराही का खामियाज़ा भुगतेंगे, बल्कि बहुत से दूसरे लोंगो की गुमराही का वबाल भी इन पर डाला जाएगा जिन्हें अपने नाम निहाद, दानिशवराना मशवरों से इन्होंने गुमराह किया होगा। जैसे क़र्ब व जवार के लोग जब अहले मक्का से इस कलाम के बारे में पूछते थे या मक्का के आम लोग क़ुरान से मुतास्सिर होकर अपने सरदारों से पूछते थे कि उनकी इस कलाम के बारे में क्या राय है? ऐसी सूरत में ये लोग अपने अवाम को यह कह कर गुमराह करते थे कि हाँ हमने भी ये कलाम सुना है, इसमें कोई ख़ास बात नहीं है, बस सुनी-सुनाई बातें हैं और पुराने लोगों की कहानियाँ हैं।

اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ۝٢٥

“आगाह रहो! बहुत बुरा होगा जो बोझ वह उठाए होंगे।”

आयत 26

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

“(इसी तरह की) चालें चली थीं उन्होंने भी जो इनसे पहले थे”

इनसे पहले भी मुख्तलिफ़ अक़वाम के लोगों ने हमारे अम्बिया व रुसुल की मुखालफ़त की थी और उनकी दावत को नाकाम करने के लिये तरह-तरह के हरबे आज़माए थे और साज़िशें की थीं।

فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ

“तो अल्लाह हमलावर हुआ उनके क़िलों पर बुनियादों से, फिर गिर पड़ीं उन पर छतें उनके ऊपर से”

जब अल्लाह तआला का फ़ैसला आया तो मुखालफ़ीन की तमाम साज़िशों को जड़ों से उखाड़ फेंका गया और उनकी बस्तियों को तलपट कर दिया गया। सदुम और आमूरा की बस्तियों के बारे में हम सूरह हूद की आयत 82 में पढ़ आए हैं: {فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا} “फिर जब आ गया हमारा हुक्म तो हमने कर दिया उसके ऊपर वाले हिस्से को उसका नीचे वाला।” यानि उसको तह व बाला कर दिया। इस सिलसिले में क़ुरान हकीम के अन्दर तो सिर्फ़ उन्ही चंद अक़वाम का ज़िक्र आया है जिनसे अहले अरब वाक़िफ़ थे, वरना रसूल तो हर इलाक़े और हर क़ौम में आते रहे हैं, अज़रुए अल्फ़ाज़-ए-क़ुरानी: {وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ} (रअद:7) “और हर क़ौम के लिये एक रहनुमा है।”

खुद हिन्दुस्तान के इलाक़े में भी बहुत से अंबिया व रुसुल के मबऊस होने के आसार मिलते हैं। हरियाणा, ज़िला हिसार, जिस इलाक़े में मेरा बचपन गुज़रा, वहाँ मुख्तलिफ़ मक़ामात पर स्याह रंग की राख के बड़े-बड़े टीले मौजूद थे, जिनकी खुदाई के दौरान बस्तियों के आसार मिलते थे। ऐसे मालूम होता है जैसे ये अपने ज़माने की पुर-रौनक़ बस्तियाँ थीं, इनके बाशिंदों ने अपने रसूलों की नाफ़रमानियाँ कीं और इन्हें अज़ाबे खुदावन्दी ने जला कर भस्म कर डाला, जिस तरह पोम्पाई पर लावे की बारिश हुई और पूरी बस्ती

जलते हुए लावे के अन्दर दब गई। इस इलाक़े में दरिया-ए-सरस्वती बहता था जो हिन्दुस्तान का एक बहुत बड़ा दरिया था और इसे मुक़द्दस माना जाता था (दरिया-ए-गंगा बहुत बाद के ज़माने में वजूद में आया।) आज दरिया-ए-सरस्वती का कुछ पता नहीं चलता कि ये कहाँ-कहाँ से गुज़रता था और माहिरीने आसारे क़दीमिया इसकी गुज़रगाह तलाश कर रहे हैं। ये सब आसार बताते हैं कि हिन्दुस्तान के अन्दर मुख्तलिफ़ ज़मानों में अंबिया व रुसुल आए और उनकी नाफ़रमानियों के सबब उनकी क़ौमें अल्लाह के अज़ाब का शिकार हुईं। इन आसार की शहादतों के अलावा कुछ ऐसे मकाशफ़ात (ख़ुलासे) भी हैं कि मशरिक़ी पंजाब के जिस इलाक़े में शेख़ अहमद सरहंदी रहमतुल्लाह का मदफ़न है उस इलाक़े में तीस अंबिया मदफ़ून हैं। वल्लाह आलम!

وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٦

"और उन पर अज़ाब वहाँ से आया जहाँ से उन्हें गुमान तक ना था।"

आयत 27

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَاۗقُّوْنَ فِيْهِمْ ۭ

"फिर क़यामत के दिन अल्लाह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा: कहाँ हैं मेरे वह शरीक जिनकी हमियत में तुम झगड़ते थे?"

क़यामत के दिन उन्हें मज़ीद रुसवा करने के लिये उनसे पूछा जाएगा कि आज तुम्हारे वह मनघडत मअबूद कहाँ हैं जिनकी हिमायत और हमियत की वजह से तुम बड़ी-बड़ी जंगें लड़ने पर तैयार हो जाते थे?

قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ؀

“कहेंगे वह लोग जिनको इल्म दिया गया है कि यक़ीनन आज के दिन रुसवाई और बदबख्ती काफ़िरों ही के लिये है।”

आयत 28

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠

“जिन (की रूहों) को क़ब्ज़ करते हैं फ़रिश्ते इस हाल में कि वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले थे”

ऐसे लोग जिन्हें अपनी ज़िन्दगी में अल्लाह याद है ना आख़िरत, नेकी की रगबत है ना बुराई से नफ़रत, बस अपनी ऐश-कोशी और नफ्सपरस्ती में मग्न हैं। इसी हालत में जब फ़रिश्ते उनके पास परवाना-ए-मौत लेकर आ धमकेंगे:

فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ

"तो (उस वक़्त) वह अताअत पेश करेंगे कि हम तो कोई बुरे काम नहीं कर रहे थे।"

بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۲۸

"(तो फ़रिश्ते कहेंगे) क्यों नहीं, अल्लाह ख़ूब जानता है उसे जो कुछ तुम कर रहे थे।"

मौत के फ़रिश्तों में सामने वह सरे-तस्लीम ख़म करते हुए अपने इस्लाम और अताअत का इज़हार करेंगे और इस तरह उनके सामने भी झूठ बोलने की कोशिश करेंगे।

आयत 29

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

"अब तुम दाख़िल हो जाओ जहन्नम के दरवाजों में, इसी में हमेशा-हमेश रहने के लिये।"

فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝۲۹

"पस क्या ही बुरा ठिकाना है मुतकब्बरीन का!"

आयत 30

وَقِيۡلَ لِلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا مَاذَآ اَنۡزَلَ رَبُّكُمۡ

"और (जब) पूछा जाता है अहले तक़वा से कि यह क्या नाज़िल किया है तुम्हारे रब ने?"

दूसरी तरफ़ वह लोग हैं जो अल्लाह से डरने वाले हैं, जिनके दिलों में अख्लाक़ी हिस्स बेदार और जिनकी रूहें ज़िन्दा हैं, जब उनसे पूछा जाता है कि मोहम्मद रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم जो कलाम आप लोगों को सुनाते हैं वह क्या है?

قَالُوۡا خَيۡرًا

"वह कहते हैं भलाई।"

यानि ये कलाम खैर ही खैर है और हमारी ही भलाई के लिये नाज़िल हुआ है।

لِلَّذِيۡنَ اَحۡسَنُوۡا فِىۡ هٰذِهِ الدُّنۡيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ ؕ وَلَنِعۡمَ دَارُ الۡمُتَّقِيۡنَ ۙ‏ ﴿۳۰﴾

"जिन लोगों ने नेकी की रविश इख्तियार की उनके लिये इस दुनिया में भी भलाई है, और आख़िरत का घर तो कहीं बेहतर है। और क्या ही अच्छा है वह घर मुत्ताक़ियों का!"

आयत 31

جَنّٰتُ عَدۡنٍ یَّدۡخُلُوۡنَہَا تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِہَا الۡاَنۡہٰرُ لَہُمۡ فِیۡہَا مَا یَشَآءُوۡنَ ؕ

"बाग़ात हमेशा रहने वाले जिनमें वह दाखिले होंगे, उनके दामन में नदियाँ बहती होंगी, उनके लिये वहाँ हर वह शय होगी जो वह चाहेंगे।"

كَذٰلِكَ يَجۡزِى اللّٰهُ الۡمُتَّقِيۡنَ ۙ﴿۳۱﴾

"इसी तरह अल्लाह बदला देगा अपने मुत्तक़ी बन्दों को।"

आयत 32

الَّذِيۡنَ تَتَوَفّٰٮهُمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيۡنَ ۙ

"उन (की रूहों) को फ़रिश्ते क़ब्ज़ करते हैं दर हालाँकि वह पाक होते हैं"

जिनकी रूहें पाकीज़ा और जिनकी ज़िंदगियाँ तक़वा की आइनादार होती हैं, जब उनके पास मौत के फ़रिश्ते आते हैं तो:

يَقُوۡلُوۡنَ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمُ ۙ ادۡخُلُوا الۡجَـنَّةَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۳۲﴾

"कहते हैं सलाम हो आप पर, दाख़िल हो जाइये जन्नत में अपने आमाल के बदले में।"

आयात 33 से 40 तक

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ
رَبِّكَ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ
اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَاَصَابَهُمْ
سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾ۧ وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا
عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَاۗؤُنَا وَلَا
حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَي الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾
وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ
مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ۭ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ
تَحْرِصْ عَلٰي هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ
وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ۭ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ

حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ لِيُبَيِّنَ
لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ
اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٠﴾

आयत 33

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ

"अब ये लोग किस शय के मुन्तज़िर हैं सिवाय इसके कि आ धमके इन पर फ़रिश्ते या आ जाए फ़ैसला आपके रब का!"

गुज़िश्ता बारह बरस से रसूल अल्लाह ﷺ क़ुरेशे मक्का को दावत दे रहे हैं, दो तिहाई के क़रीब क़ुरान भी अब तक नाज़िल हो चुका है। चुनाँचे इन लोगों को अब मज़ीद किस चीज़ का इंतेज़ार है? अब तो बस यही मरहला बाक़ी रह गया है कि फ़रिश्ते अल्लाह का फ़ैसला लेकर पहुँच जाएँ और वह नक़्शा सामने आ जाए जिसकी झलक सूरह अल फज्र में इस तरह दिखाई गई है: { وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا } { وَجِایْٓءَ یَوْمَىِٕذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ۬ یَوْمَىِٕذٍ یَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰی لَهُ الذِّكْرٰی } (आयत 22-23) "और आएगा आपका रब और फ़रिश्ते सफ़-ब-सफ़। और लाई जायेगी उस दिन जहन्नम, उस दिन होश आएगा इंसान को, मगर क्या फ़ायदा होगा तब उसे उस होश का!"

كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝۳۳

"यही रविश इख्तियार की थी उन्होंने भी जो इनसे पहले थे। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे।"

जिन गुज़िश्ता अक़वाम के इबरतनाक अंजाम के बारे में तफ़सीलात क़ुरान में बताई जा रही हैं उन्हें उनके अपने करतूतों की सज़ा मिली थी। अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर क़तअन ज़ुल्म नहीं हुआ था।

आयत 34

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۳۴

"फिर उन पर वाक़ेअ होकर रहीं वो बुराईयाँ जो वह करते थे और घेर लिया उनको उसी ने जिसका वह इस्तेहज़ा करते थे।"

आयत 35

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ

"और कहते हैं यह मुशरिक लोग कि अगर अल्लाह चाहता तो अल्लाह के सिवा किसी की पूजा ना करते, ना हम और ना हमारे आबा व अजदाद"

دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا

उनकी दलील यह थी कि इस दुनिया में तो जो अल्लाह चाहता है वही कुछ होता है, वह अला कुल्ली शयइन क़दीर है। अगर वह चाहता कि हम कोई दूसरे मअबूद ना बनायें और उनकी परस्तिश ना करें, तो कैसे मुमकिन था कि हम ऐसा कर पाते? चुनाँचे अगर अल्लाह ने हमें इससे रोका नहीं है तो इसका वाज़ेह मतलब ये है कि इसमें उसकी मर्ज़ी शामिल है और उसकी तरफ़ से हमें ऐसा करने की इजाज़त है।

وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ

"और ना हराम क़रार देते हम उसके (हुक्म के) बगैर किसी भी चीज़ को। इसी तरह किया था उन लोगों ने भी जो इनसे पहले थे।"

فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝۳۵

"पस नहीं है रसूलों पर कुछ ज़िम्मेदारी सिवाय वाज़ेह तौर पर पहुँचा देने के।"

हमारे रसूल इस क़िस्म की कटहुज्जती और कज बहशी में नहीं उलझते। उनकी ज़िम्मेदारी हमारा पैग़ाम वाज़ेह तौर पर पहुँचा देने की हद तक है और यह ज़िम्मेदारी हमारे रसूल हमेशा से पूरी करते आए हैं। पैग़ाम पहुँच जाने के बाद उसे तस्लीम करना या ना करना मुतआलक़ा क़ौम का काम

है, जिसके लिये उनका एक-एक फ़र्द हमारे सामने जवाब देह है।

आयत 36

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ

"और हमने तो हर उम्मत में एक रसूल भेजा (इस पैग़ाम के साथ) कि अल्लाह ही की बंदगी करो और तागूत से बचो।"

तागूत का लफ्ज़ 'तगा' से मुश्तक़ है जिसके मायने सरकशी के हैं। लिहाज़ा जो कोई अल्लाह की बंदगी और इताअत से सरकशी और सरताबी कर रहा हो, वह तागूत है, चाहे वह इंसान हो या जिन्न, किसी रियासत का कोई इदारा हो, आइन (क़ानून) हो या खुद रियासत हो। बहरहाल जो भी अल्लाह की इताअत से सरताबी करके उसकी बंदगी से बाहर निकलने की कोशिश करेगा, वह गोया अल्लाह के मुक़ाबले में हाकिमियत का दावेदार होगा और इसी लिये तागूत के ज़ुमरे (category) में शुमार होगा। तागूत से किनारा कशी का हुक्म सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 256 में इस तरह आया है: {فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى لَا انْفِصَامَ لَهَا} "जिस किसी ने कुफ्र किया तागूत से और ईमान लाया अल्लाह पर तो यक़ीनन उसने थाम लिया एक मज़बूत हल्क़ा जिसको टूटना नहीं है।"

فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ

“तो उनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दे दी, और कुछ वह भी थे जिन मुसल्लत हो गई गुमराही।”

فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝۳۶

“तो तुम घूमो-फिरो ज़मीन में और देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ!”

तुम अपने तिजारती क़ाफ़िलों के साथ असहाबे हिज्र की बस्तियों से भी गुज़रते हो, तुमने क़ौमे समूद के महलात के खंडरात भी देखे हैं। तुम क़ौमे मदयन के अंजाम से भी वाक़िफ़ हो और तुम्हें यह भी मालूम है कि सदुम और आमूरह की बस्तियों के साथ क्या मामला हुआ था। यह तमाम तारीख़ी हक़ाइक तुम्हारे इल्म में हैं और तुम ये भी जानते हो कि इन सबको किस जुर्म की सज़ा भुगतना पड़ी थी।

आयत 37

اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا

“(ऐ नबी ﷺ!) अगर आपको बहुत ख्वाहिश है इनकी हिदायत की तो यक़ीनन अल्लाह हिदायत नहीं देता उसे जिसको वह

يَهْدِىْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٣٧

गुमराह कर देता है, और इनके लिये नहीं होंगे कोई मददगार।"

इस सिलसिले में अल्लाह का क़ानून अटल है। अल्लाह की तरफ़ से लोगों तक हक़ की दावत पहुँचाने का पूरा बंदोबस्त किया जाता है, उन पर हिदायत मुन्कशिफ़ की जाती है और बार-बार उन्हें मौक़ा दिया जाता है कि वह सीधे रास्ते पर आ जाएँ। लेकिन अगर कोई शख्स हक़ को वाज़ेह तौर पर पहचान लेने के बाद हर बार उसे रद्द कर दे तो उससे हिदायत की तौफ़ीक़ सल्ब कर (छीन) ली जाती है। फिर वह हक़ को पहचानने की सलाहियत से महरूम हो जाता है और उसकी गुमराही पर मोहर तस्दीक़ सब्त हो जाती है। ऐसे लोगों ही के मुताल्लिक़ सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 7 में फ़रमाया गया है: {خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۭ وَعَلٰٓي اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ} "अल्लाह ने मोहर लगा दी है उनके दिलों और उनके कानों पर, और उनकी आँखों पर परदा (पड़ चुका) है।" चुनाँचे इसी क़िस्म के लोगों के बारे में आयत ज़ेरे नज़र में फ़रमाया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ! आपकी शदीद ख्वाहिश है कि ये लोग ईमान लाकर राहे हिदायत पर आ जाएँ, मगर चूँकि ये हक़ को अच्छी तरह पहचान लेने के बाद उससे रू-गरदानी कर चुके हैं इसलिये इनकी गुमराही के बारे में अल्लाह तआला का फ़ैसला सादर हो चुका है, और अल्लाह का अटल क़ानून है कि वह ऐसे गुमराहों को हिदायत नहीं देता। सूरतुल क़सस की आयत नम्बर 56 में इसी असूल को वाज़ेह तर अंदाज़ में इस तरह बयान फ़रमाया गया है: {اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ

{يَّشَآءُ} "(ऐ नबी ﷺ!) बेशक आप हिदायत नहीं दे सकते जिसको आप चाहें बल्कि अल्लाह हिदायत देता है जिसको वह चाहता है।"

आयत 38

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ۭ

"और वह अल्लाह की क़समें खा कर कहते हैं, अपनी पक्की क़समें कि अल्लाह हरगिज़ नहीं उठाएगा उसको जो मर जाएगा।"

मुशरिकीने मक्का अगरचे अमूमी तौर पर मरने के बाद दूसरी ज़िंदगी के क़ायल थे मगर उनका इस सिलसिले में अक़ीदा ये था कि जिन बुतों की वह पूजा करते हैं वह क़यामत के दिन अल्लाह के सामने उनके सिफ़ारशी होंगे और इस तरह रोज़े हश्र की तमाम सख्तियों से वह उन्हें बचा लेंगे। लेकिन उनके यहाँ एक तबक़ा ऐसा भी था जो बाअसे बाद अल मौत का मुन्किर था। उन लोगों के इस अक़ीदे का तज़किरा क़ुरान में मुतअद्दिद बार हुआ है। सूरतुल अनआम की आयत 29 में उन लोगों का क़ौल इस तरह नक़ल किया गया है: {وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ} "और वह कहते हैं कि नहीं है ये हमारी ज़िन्दगी मगर सिर्फ़ दुनिया की और हम (दोबारा) उठाए नहीं जायेंगे।"

بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

"क्यों नहीं, ये वादा है उसके ज़िम्मे सच्चा (कि तुम ज़रूर उठाए जाओगे) लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।"

आयत 39

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾

"ताकि वह वाज़ेह कर दे उन पर वह तमाम चीज़ें जिनमें वह लोग इख्तिलाफ़ करते थे और इसलिये भी कि कुफ्फ़ार जान लें कि वही झूठे थे।"

अल्लाह तआला पूरी नौए इंसानी के एक-एक फ़र्द को दोबारा उठाएगा और उन्हें एक जगह जमा करेगा। फिर उनके तमाम इख्तलाफ़ी नज़रियात व अक़ाएद के बारे में हत्मी तौर पर उन्हें बता दिया जायेगा। चुनाँचे उस वक़्त तमाम मुन्करीने हक़ को इक़रार किये बगैर चारा ना रहेगा कि उनके ख्यालात व नज़रियात वाक़ई झूठ और बातिल पर मब्नी थे।

आयत 40

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَآ أَرَدْنَٰهُ أَن نَّقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

“हमारा क़ौल तो किसी चीज़ के बारे में बस ये होता है, जब हम उसका इरादा करते हैं कि हम फ़रमाते हैं उसे हो जा तो वह हो जाती है।”

इस नुक्ते को अच्छी तरह समझ लेना ज़रूरी है कि ये हुक्म आलमे अम्र के बारे में है, जबकि आलमे खल्क़ में यूँ नहीं होता (आलमे अम्र और आलमे खल्क़ के बारे में वज़ाहत इस सूरत की आयत 2 और सूरतुल आराफ़ की आयत 54 के ज़िमन में गुज़र चुकी है)। आलमे अम्र में किसी वाक़िये या किसी चीज़ के ज़हूर पज़ीर होने के लिये असबाब, वसाएल और वक़्त दरकार नहीं, बल्कि अल्लाह तआला इरादा फ़रमा कर कुन फ़रमाते हैं तो वह चीज़ वजूद में आ जाती है। आलमे खल्क़ में भी कुल्ली इख्तियार तो अल्लाह ही का है मगर इस आलम को आम तबई क़वानीन के मुताबिक़ चलाया जाता है। चुनाँचे आलमे खल्क़ में किसी चीज़ को वजूद में आने और मतलूबा मैयार तक पहुँचने के लिये असबाब, वसाएल और वक़्त की ज़रूरत पेश आती है। ये कायनात अपने तमाम तबई मौजूदात के साथ आलमे खल्क़ का इज़हार है। आयत ज़ेरे नज़र के मौज़ू की मुनासबत से यहाँ मैं कायनात की तख्लीक़ के आग़ाज़ से मुताल्लिक़ अपनी सोच और फ़िक्र की वज़ाहत ज़रूरी समझता हूँ।

कायनात की तख्लीक़ के बारे में एक तरफ़ तो पुराने फ़लसफ़ियाना तसव्वुरात हैं और दूसरी तरफ़ जदीद साइन्सी नज़रियात (theories)। फ़लसफ़ियाना तसव्वुरात के मुताबिक़ सबसे पहले वजूदे बारी तआला से अक़्ले अव्वल

वजूद में आई। अक़्ले अव्वल से फ़िर फ़लक-ए-अवव्ल और फिर फ़लक-ए-अव्वल से फ़लक-ए-सानी वग़ैरह। ये मशाईन के फ़लसफ़े हैं जो अरस्तु और उसके शागिर्दों के नज़रियात के साथ दुनिया में फैले और हमारे यहाँ भी बहुत से मुतकल्लिमीन इनसे मुतास्सिर हुए। बहरहाल जदीद साइन्सी इन्कशाफ़ात के ज़रिये इनमें से किसी भी नज़रिये की कहीं कोई ताईद व तस्दीक़ नहीं हुई।

दूसरी तरफ़ जदीद फ़िज़िक्स के मैदान में आला इल्मी सतह पर इस सिलसिले में जितने भी नज़रियात (theories) हैं उनमें "अज़ीम धमाके" (Big Bang) का तसव्वुर पाया जाता है। इस तसव्वुर के तहत Big Bang के नतीजे में अरब-ह-अरब दर्जा-ए-हरारत के हामिल बेशुमार ज़र्रात वजूद में आए। ये ज़र्रात तेज़ी से हरकत करते हुए मुख्तलिफ़ forms में इकट्ठे हुए तो कहकशाएँ (galaxies) वजूद में आईं और छोटे-बड़े बेशुमार सितारों का एक जहान आबाद हो गया। इन्हीं सितारों में एक हमारा सूरज भी था, जिसके अन्दर मज़ीद टूट-फूट के नतीजे में इसके सय्यारे (planets) वजूद में आए। सूरज के इन सय्यारों में से एक सय्यारा हमारी ज़मीन है जो वक़्त के साथ-साथ ठंडी होती रही और बिलआख़िर इस पर नबाताती और हैवानी ज़िंदगी के लिये साज़गार माहौल वजूद में आया। आज की साइंस फ़िलहाल "बिग बैंग" से आगे कोई नज़रिया क़ायम करने से क़ासिर है। इस नज़रिये से जो मालूमात साइंस ने अखज़ की है वह उन तमाम हक़ाएक़ के साथ मुताबक़त (corroboration) रखती हैं जिनका इल्म इस मौज़ू पर हमें क़ुरान से मिलता है। इससे पहले माद्दे के बारे में साइंस क़ानून बक़ाए माद्दा (law of conservation

of mass) की क़ायल थी कि माद्दा हमेशा से है और हमेशा रहेगा, मगर नये नज़रिये को अपना कर साइंस ने ना सिर्फ़ Big Bang को कायनात का नुक्ता-ए-आग़ाज़ तस्लीम कर लिया है बल्कि ये भी मान लिया है कि माद्दा एक ख़ास वक़्त तक के लिये है और एक ख़ास वक़्त के बाद ख़त्म हो जाएगा।

जहाँ तक कायनात की तख्लीक़ के आग़ाज़ के बारे में मेरी अपनी सोच का ताल्लुक़ है उसका खुलासा ये है कि इसकी तख्लीक़ अल्लाह तआला के एक अम्र "कुन" से हुई (अल्लाह के हुक्म से, ना कि उसकी ज़ात से)। फ़िर इस अम्रे "कुन" का ज़हूर एक ख़ुनक नूर या ठन्डी रौशनी की सूरत में हुआ (ये ख़ुनक नूर हरफ़े कुन का ज़हूर था ना कि ज़ाते बारी तआला का)। इस रौशनी में हरारत नहीं थी, गोया ये माद्दी रौशनी (material light) के वजूद में आने से पहले का दौर था। आज जिस रौशनी को हम देखते या पहचानते हैं इसमें हरारत होती है और इसी हरारत की वज़ह से ये material light है।

अम्रे "कुन" से ज़हूर पाने वाले इस ख़ुनक नूर से पहले मरहले पर मलाएका (फ़रिश्तों) की पैदाइश हुई। जैसे कि मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से हदीस मरवी है कि अल्लाह तआला ने मलाएका को नूर से पैदा किया। इसी नूर से इंसानी अरवाह पैदा की गईं, और सबसे पहले रूहे मोहम्मदी صلى الله عليه وسلم पैदा की गई, जैसा कि हदीस में अल्फ़ाज़ आए हैं: ((اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِىْ))(13) यानि अल्लाह तआला ने सबसे पहले मेरा नूर पैदा किया। "नूरी" और "रूही" गोया दो मुतरादिफ़ अल्फ़ाज़ हैं, क्योंकि रूह का ताल्लुक़ भी नूर से है। बहरहाल ये कायनात की तख्लीक़ का

मरहला-ए-अव्वल है जिसमें फ़रिश्तों और इन्सानी अरवाह की तख्लीक़ हुई।

इसके बाद किसी मरहले पर इस खुनक नूर में किसी नौइयत का ज़ोरदार धमाका (explosion) हुआ जिसको आज की साइंस "बिग बैंग" के नाम से पहचानती है। इस धमाके के नतीजे में हरारत का वह गोला वजूद में आया जो बहुत छोटे-छोटे ज़र्रात पर मुश्तमिल था। इस ज़र्रात का दर्जा-ए-हरारत नाक़ाबिल-ए-तस्सवुर हद तक था। ये गोया तबई दुनिया (physical world) का नुक्ता-ए-आग़ाज़ था। इसी दौर में इस आग की लपट से जिन्नात पैदा किये गए और इन्ही इन्तहाई गर्म ज़र्रात से कहकशाएँ, सितारे और सय्यारे वजूद में आए।

इन सय्यारों में से एक सय्यारा या कुर्रा हमारी ज़मीन है, जो इब्तदा में इन्तहाई गरम थी। इसके ठंडा होने पर इसके अन्दर से बुखारात निकले जो इसके गिर्द एक हाले की शक्ल में जमा हो गए। इन बुखारात से पानी वजूद में आया जो हज़ार-हा बरस तक ज़मीन पर बारिश की सूरत में बरसता रहा। इसके नतीजे में तमाम रुए ज़मीन पर हर तरफ़ पानी ही पानी फ़ैल गया। इस वक़्त तक ज़मीन पर पानी के अलावा और कुछ नहीं था। यही वह दौर था जिसका ज़िक्र क़ुरान में बा-अल्फ़ाज़ किया गया है: {وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَاۗءِ} (सूरह हूद:7) "कि उसका अर्श (उस वक़्त) पानी पर था।" फिर ज़मीन जब मज़ीद ठंडा होने पर सुकड़ी तो इसकी सतह पर नशेब व फ़राज़ (उतार-चढ़ाव) नमूदार हुए। कहीं पहाड़ वजूद में आए तो कहीं समुन्दर। इसके बाद नबाताती और हैवानी हयात का आग़ाज़ हुआ। इस हयात के इरताक़ाअ (विकास) के बुलंदतरीन मरहले पर इंसान की

तख्लीक़ हुई और हज़रत आदम अलै. की रूह उनके वजूद को सौंपी गई। हज़रत आदम अलै. की ताजपोशी का यही वाक़िया है जहाँ से क़ुरान आदम अलै. की तख्लीक़ का तज़किरा करता है। इस लिहाज़ से इंसान अल्लाह तआला की तख्लीक़ का आलातरीन शाहकार भी है और इस पूरी कायनात की तख्लीक़ का असल मक़सूद व मतलूब भी।

यहाँ एक नुक्ता ये भी समझ लें कि आलमे खल्क़ और आलमे अम्र बिल्कुल अलग-अलग नहीं हैं। यानि यूँ नहीं कहा जा सकता कि यहाँ तक तो आलमे खल्क़ है और यहाँ से आगे आलमे अम्र है। ऐसा हरगिज़ नहीं है, बल्कि ये दोनों आलम एक-दूसरे के साथ खल्त-मल्त और बाहम गुंधे हुए हैं। मसलन इस आलमे खल्क़ में तमाम इंसानों की अरवाह मौजूद हैं, जिनका ताल्लुक़ आलमे अम्र से है: {وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ} (बनी इसराइल:85) ये आयत वाज़ेह करती है कि रूह का ताल्लुक़ आलमे अम्र से है। शाह वलीउल्लाह देहलवी रहमतुल्लाह ने अपनी मशहूर किताब “हुज्जतुल्लाहिल बलागा” में लिखा है कि अल्लाह तआला अपने बाज़ नेक बन्दों की अरवाह को फरिश्तों के तबक़ा-ए-असफ़ल (rank) में शामिल कर लेते हैं, चुनाँचे ये नेक़ अरवाह उन फरिश्तों के साथ सरग़रमे अमल रहती हैं जो अल्लाह के अहकाम की तामील व तन्फ़ीज़ में मसरूफ़ हैं। इस तरह फ़रिश्ते जो कि आलमे अम्र की मख्लूक़ हैं वह भी यहाँ आलमे खल्क़ में हमारे इर्द-गिर्द मौजूद हैं। दो-दो फ़रिश्ते तो हम में से हर इंसान के साथ बतौर निगरान मुक़र्रर किये गए हैं। हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِيْ بَيْتٍ مِنْ بُيُوْتِ اللّٰهِ يَتْلُوْنَ كِتَابَ اللّٰهِ وَيَتَدَارَسُوْنَهُ بَيْنَهُمْ اِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللّٰهُ فِيْمَنْ عِنْدَهٗ

"अल्लाह के घरों में से किसी घर में कुछ लोग किताबुल्लाह की तिलावत और उसको समझने और समझाने के लिये जमा नहीं होते मगर ये कि उनके ऊपर सकीनत नाज़िल होती है, अल्लाह की रहमत उन्हें ढाँप लेती है, फ़रिश्ते उनको घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने मुक़र्रबीन (मला-ए-आला) में उनका ज़िक्र करता है।"(14)

इस हदीस की रू से दरसे क़ुरान की इस महफ़िल में यक़ीनन फ़रिश्ते मौजूद हैं, वह आलमे अम्र की शय हैं, हम ना उन्हें देख सकते हैं ना उनसे ख़िताब कर सकते हैं। ये भी मुमकिन है कि अहले ईमान जिन्नात भी मौजूद हों और क़ुरान सुन रहे हों। चुनाँचे अरवाह, फ़रिश्ते और वही तीनों का ताल्लुक़ अगरचे आलमे अम्र से है मगर इनका अमल-दखल आलमे खल्क़ में भी है। इस तरह आलमे खल्क़ और आलमे अम्र को बिल्कुल अलग-अलग नहीं किया जा सकता।

यहाँ मै मिर्ज़ा अब्दुल क़ादिर बेदिल के एक मशहूर शेर का हवाला देना चाहता हूँ जो तख्लीक़-ए-कायनात और तख्लीक़-ए-आदम के इस फ़लसफ़े को बहुत खूबसूरती से वाज़ेह करता है:

हर दो आलम ख़ाक शुद ता बस्त नक़्शे आदमी
ऐ बहारे नीस्ती अज़ क़दरे ख़ुद होशियार बाश!

मिर्ज़ा अब्दुल क़ादिर बेदिल हिन्दुस्तान में औरंगज़ेब आलमगीर के ज़माने में थे। वह अज़ीम फ़लसफ़ी और फ़ारसी के बहुत बड़े शायर थे। उनका शुमार दुनिया के चोटी के फ़लसफ़ियों में होता था। उनकी शायराना अज़मत के सामने मिर्ज़ा ग़ालिब भी पानी भरते और उनकी तर्ज़ को अपनाने में फ़ख्र महसूस करते नज़र आते हैं:

तर्ज़े बेदिल में रेख्ता लिखना
असदुल्लाह खां क़यामत है!

मौज़ू की अहमियत के पेशे नज़र यहाँ मिर्ज़ा बेदिल के मंदरजा बाला शेर की वज़ाहत ज़रूरी है। इस शेर में वह फ़रमाते हैं "हर दो आलम ख़ाक शुद" यानि दोनों आलम ख़ाक हो गए। शायर के अपने ज़हन में इसकी वज़ाहत क्या थी इसके बारे में शायर खुद जानता है या अल्लाह तआला। लेकिन मैं इससे ये नुक्ता समझा हूँ कि अल्लाह तआला ने आलमे अम्र को तनज़्ज़ुल के मुख्तलिफ़ मराहिल से गुज़ार कर आलमे खल्क़ की शकल दी। फिर इसके मज़ीद तनज़्ज़ुलात के नतीजे में ज़मीन (मिट्टी) पैदा की गई। गोया दोनों जहानों ने ख़ाक की सूरत इख्तियार कर ली, तब जाकर कहीं हयाते अर्ज़ी का सिलसिला शुरू हुआ और फिर इस सिलसिले में इरतक़ाअ का वह बुलंदतरीन मरहला आया: "ताबस्त नक़शे आदमी!" जब आदमी का नक्श बनना शुरू हुआ।

दूसरे मिसरे में (ऐ बहारे नीस्ती अज़ क़द्रे ख़ुद होशियार बाश!) "नीस्त" के फ़लसफ़े को भी अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है। "वहदतुल वुजूद" के फ़लसफ़े के मुताबिक़ हक़ीक़ी वजूद सिर्फ़ अल्लाह का है, बाक़ी जो कुछ भी हमें नज़र आता है इसमें से किसी चीज़ का वजूद हक़ीक़ी नहीं है। गोया

अल्लाह के अलावा इस कायनात की हर चीज़ "नीस्त" है "हस्त" नहीं है:

كُلُّ مَا فِي الْكَوْنِ وَهْمٌ اَوْ خَيَالٌ اَوْ عُكُوسٌ فِي الْمَرَايَا اَوْ ظِلَالٌ

यानि अल्लाह के वजूद के अलावा जो वजूद भी नज़र आते हैं वह वहम हैं या ख्याली तसवीरें। इस तरह यह तमाम आलम गोया "नीस्त" है और इस आलमे नीस्त की "बहार" इंसान है, जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया" {خَلَقْتُ بِيَدَيَّ} (सूरह सआद:75) कि मैंने इसे अपने दोनों हाथों से बनाया है। अल्लाह का एक हाथ गोया आलमे अम्र और दूसरा हाथ आलमे खल्क़ है। इस तरह इंसान अल्लाह तआला के अमल-ए-तख्लीक़ का climax, मस्जूद-ए-मलाइक और खलीफ़तुल्लाह है। चुनाँचे मिर्ज़ा बेदिल फ़रमाते हैं (ऐ बहारे नीस्ती अज़ क़द्रे खुद होशियार बाश!) कि ऐ इंसान! ऐ इस आलमे नीस्ती की बहार! ज़रा अपने मक़ाम व मरतबे को पहचानो! तुम्हें वजूद में लाने के लिये अल्लाह तआला ने हर दो आलम को ना जाने तनज़्ज़ुलात की किन-किन मनाज़िल से नीचे उतार कर खाक़ किया, तब कहीं जाकर तुम्हारा नक्श बना।

आयात 41 से 50 तक

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ

لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا
نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۭ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ
لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ
﴿٤٤﴾ اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ
بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰي تَخَوُّفٍ ۭ فَاِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ
شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَاۗىِٕلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ
وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ
﴿٤٩﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ
السجدة ع ﴿٥٠﴾

आयत 41

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ

"और जिन लोगों ने अल्लाह के लिये हिजरत की, इसके बाद कि उन पर ज़ुल्म किया गया, हम उन्हें दुनिया में भी ज़रूर अच्छी जगह देंगे।"

وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ؀ۙ

"और (उनके लिये) आख़िरत का अज्र तो बहुत ही बड़ा है। काश कि उनको मालूम होता।"

आयत 42

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ؀

"यह वह लोग हैं जिन्होंने सब्र किया और वह अपने रब पर तवक्कुल करने वाले हैं।"

आयत 43

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ

"और (ऐ नबी ﷺ!) हमने नहीं भेजा आपसे पहले मगर मर्दों ही को (रसूल बना कर) जिनकी तरफ़ हम वही किया करते थे"

यानि आप ﷺ पहले नबी या रसूल नहीं हैं बल्कि आप ﷺ से पहले हम बहुत से रसूल भेज चुके हैं। वह सब के सब आदमी ही थे और उनकी तरफ़ हम इसी तरह वही भेजते थे जिस तरह आज आपकी तरफ़ वही आती है।

فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۙ﴿۴۳﴾

"तो तुम लोग अहले ज़िक्र से पूछ लो, अगर तुम ख़ुद नहीं जानते हो।"

यानि ऐ अहले मक्का! अगर तुम लोगों को इस बारे में कुछ शक है तो तुम्हारे पड़ोस मदीने में वह लोग आबाद हैं जो सिलसिला-ए-वही व रिसालत से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, उनसे पूछ लो कि अब तक जो अम्बिया व रुसुल अलै. इस दुनिया में आए हैं वह सब के सब इंसान थे या फ़रिश्ते?

आयत 44

بِالۡبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ

"(हमने उन्हें भेजा) खुली निशानियों और किताबों के साथ।"

وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۴۴﴾

"और हमने नाज़िल किया आपकी तरफ़ अज़्ज़िक्र, ताकि आप वाज़ेह कर दें लोगों के लिये जो कुछ नाज़िल किया गया है उनकी जानिब और ताकि वह गौर व फ़िक्र करें।"

यहाँ क़ुरान के लिये फिर लफ्ज़ "अल ज़िक्र" इस्तेमाल हुआ है, यानि ये क़ुरान एक तरह की याद दिहानी है। ये आयत मुनकरीने सुन्नत व हदीस के ख़िलाफ़ एक वाज़ेह दलील फ़राहम करती है। इसकी रू से क़ुरान की "तबईन" रसूल का फ़र्ज़े मंसबी है। क़ुरान के असरार व रमूज़ को समझाना, इसमें अगर कोई नुक्ता मुज्मल है तो उसकी तफ़सील बयान करना, अगर कोई हुक्म मुब्हम है तो उसकी वज़ाहत करना रसूल अल्लाह ﷺ का फ़र्ज़े मंसबी था। ये फ़र्ज़ इस आयत की रू से ख़ुद अल्लाह तआला ने आप ﷺ को तज़वीज़ किया है, मगर मुनकरीने सुन्नत आज आप ﷺ को ये हक़ देने के लिये तैयार नहीं हैं। उनकी राय के मुताबिक़ ये अल्लाह की किताब है जो अल्लाह के रसूल ने हम तक पहुँचा दी है, अब हम खुद इसको पढेंगे, खुद समझेंगे और खुद ही अमल की जहतें (dimensions) मुतअय्यन करेंगे। हुज़ूर ﷺ के समझाने की अगर कुछ ज़रूरत थी भी तो वह अपने ज़माने की हद तक थी।

आयत 45

اَفَاَمِنَ الَّذِیۡنَ مَکَرُوا السَّیِّاٰتِ اَنۡ یَّخۡسِفَ اللّٰہُ بِہِمُ الۡاَرۡضَ

"तो क्या बेखौफ़ हो गए हैं वह लोग जिन्होंने बुरी चालें चलीं इस बात से कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे"

ये लोग़ हमारे रसूल के ख़िलाफ़ साज़िशों के जाल बुनने में मग्न हैं और हक़ की दावत का रास्ता रोकने के लिये तरह-तरह के हथकंडे इस्तेमाल कर रहे हैं। क्या ये डरते नहीं कि

अगर अल्लाह चाहे तो इन्हें इस जुर्म की पादाश में ज़मीन में धंसा दे?

اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٤٥

"या (इन्हें ये खौफ़ भी नहीं रहा कि) उन पर आ धमके कोई अज़ाब जहाँ से इन्हें गुमान तक ना हो।"

आयत 46

اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٤٦

"या वह इन्हें पकड़ ले इनकी चलत-फिरत में, फिर वह (अल्लाह को) आजिज़ करने वाले नहीं हैं।"

यूँ भी हो सकता है कि इनकी रोज़मर्रा ज़िन्दगी में, मामूल की सरगर्मियों के दौरान ही इनकी पकड़ का हुक्म आ जाए और फिर अल्लाह के इस हुक्म के मुक़ाबले में इनकी कोई तदबीर भी कामयाब ना हो सके।

आयत 47

اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰي تَخَوُّفٍ ۭ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٤٧

"या इन्हें पकड़े खौफ़ दिलाकर। हक़ीक़त ये है कि तुम्हारा रब बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।"

अगरचे अल्लाह तआला अपने नाफ़रमानों को अचानक भी पकड़ सकता है, मगर चूँकि वह बहुत शफ़ीक़ और निहायत

रहम फ़रमाने वाला है, इसलिये उसका अज़ाब यूँही बेख़बरी में नहीं आता बल्कि मुतालक़ा क़ौम को पहले पूरी तरह आगाह किया जाता है, उन पर इत्मामे हुज्जत के तमाम तक़ाज़े पूरे किये जाते हैं, तब कहीं जाकर अज़ाब का फ़ैसला होता है। जैसे सूरह बनी इसराईल में फ़रमाया गया: {وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا} (आयत 15) "और हम अज़ाब देने वाले नहीं हैं जब तक कि हम रसूल ना भेजें।" यानि हमेशा ऐसा होता रहा है कि लोगों की हिदायत के लिये रसूल भेजा गया, जिसने उन पर हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना ख़ूब अच्छी तरह वाज़ेह कर दिया, यहाँ तक कि मुतालक़ा क़ौम पर हुज्जत तमाम होने में कोई कसर बाक़ी ना रही। इसके बाद भी जो लोग कुफ़्र और ज़ुल्म पर अड़े रहे, उन पर गिरफ़्त की गई और अज़ाब के ज़रिये उन्हें नेस्तोनाबूद कर दिया गया।

आयत 48

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآىِٕلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ۴۸

"क्या ये देखते नहीं है अल्लाह की पैदा की गई हर शय की तरफ़, कि झुकते हैं उसके साये दाएँ और बाएँ अल्लाह को सज्दा करते हुए और वह सब आजिज़ी (की कैफ़ियत) में होते हैं।"

इस आयत में हमारे इर्द-गिर्द की अशया (चीज़ों) से पैदा होने वाले माहौल की तस्वीर कशी की गई है जिसे देखते हुए हम अल्लाह की किबरियाई का एक नक्शा अपने तस्सवुर में ला सकते हैं। जब सूरज निकलता है तो तमाम चीज़ों के साये ज़मीन पर बिछे हुए अल्लाह को सज्दा करते हुए नज़र आते हैं। फिर सूरज के बुलंद होने के साथ ही साथ ये साये सिमटते चले जाते हैं। सूरज के ढ़लने के साथ दूसरी सिम्त (दिशा) में फैलते हुए ये साये फिर अल्लाह के हुज़ूर सज्दा रेज़ हो जाते हैं।

आयत 49

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٤٩

"और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं आसमानों और ज़मीन में जितने जानदार हैं और फ़रिश्ते भी, और वह तकब्बुर से काम नहीं लेते।"

आयत 50

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۩ ﴿٥٠﴾

"वह डरते रहते हैं अपने ऊपर अपने रब से और वही कुछ करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।"

यह ख़ुसूसी तौर पर फ़रिश्तों के बारे में फ़रमाया गया है। जैसे कि सूरतुल तहरीम में फ़रमाया गया: {لَا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ} "वह अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते जो हुक्म वह उन्हें देता है और वही करते हैं जो हुक्म उन्हें दिया जाता है।"

आयत 51 से 60 तक

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۭ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾
وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
فَاِلَيْهِ تَجْـَٔــرُوْنَ ﴿٥٣﴾ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا
فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ
اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُوْنَ
لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۭ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔــلُنَّ

عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ
وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى
ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾ۚ يَتَوَارٰى مِنَ
الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۭ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰي هُوْنٍ اَمْ
يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ
الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾ۧ

आयत 51

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾

"और अल्लाह ने फ़रमाया है कि दो मअबूद मत बनाओ, यक़ीनन वह तो एक ही मअबूद है, पस तुम मुझ ही से डरो।"

आयत 52

وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ

"और उसी के लिये है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और उसी के लिये इताअत है हमेशा-

وَاصِبًا ۭ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ۝52

हमेश, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और का तक़वा इख्तियार करते हो?"

आयत 53

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْــَٔــرُوْنَ ۝53

"और जो नेअमत भी तुम्हें मयस्सर है वह अल्लाह ही की तरफ़ से है, फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी के सामने तुम फ़रियाद करते हो।"

तकलीफ़ की कैफ़ियत में तुम अल्लाह को ही याद करते हो, उसी की जनाब में गिडगिडाते, आहवज़ारी करते, और दुआएँ माँगते हो। इस हालत में तुम्हें कोई दूसरा मअबूद याद नहीं आता।

आयत 54

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝54

"फिर जब वह तुमसे तकलीफ़ दूर कर देता है तो जब ही तुम में से एक गिरोह अपने रब के साथ शिर्क करना शुरू कर देता है।"

आयत 55

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝55

"ताकि नाशुक्री करें उन (नेअमतों) की जो हमने उनको दी हैं। तो चंद रोज़ा मज़े उड़ा लो, पस अनक़रीब तुम जान लोगे।"

कुछ दिनों की बात है दुनिया में तुम लोग मज़े उड़ा लो। बहुत जल्द असल हक़ीक़त खुल कर तुम्हारे सामने आ जाएगी।

आयत 56

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۭ

"और वह बना देते हैं उनके लिये जिनके बारे में उन्हें कोई इल्म ही नहीं, एक हिस्सा उसमें से जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है।"

अल्लाह तआला ही के अता करदा रिज़्क़ में से वह लोग अल्लाह के उन शरीकों के लिये भी हिस्से निकालते थे जिनके बारे में कोई इल्मी सनद या वाज़ेह दलील भी उनके पास मौजूद नहीं थी। ये मज़मून सूरतुल अनआम की आयत 136 में भी आ चुका है कि वह लोग अपनी खेतियों की पैदावार और जानवरों में से जहाँ अल्लाह के लिये हिस्सा निकालते थे वहाँ अपने झूठे मअबूदों के हिस्से के लिये भी ख़ास अहतमाम करते थे।

تَاللّٰهِ لَتُسۡـَٔلُنَّ عَمَّا كُنۡتُمۡ تَفۡتَرُوۡنَ ۝۵۶

"अल्लाह की क़सम! ज़रूर सवाल किया जायेगा तुमसे इस बारे में जो इफ़तरा तुम लोग करते थे।"

आयत 57

وَيَجۡعَلُوۡنَ لِلّٰهِ الۡبَنٰتِ سُبۡحٰنَهٗ‌ۙ وَلَهُمۡ مَّا يَشۡتَهُوۡنَ ۝۵۷

"और वह बनाते हैं अल्लाह के लिये बेटियाँ, वह पाक है (इससे), और खुद उनके लिये वह कुछ जो उन्हें पसंद है!"

अल्लाह तआला की औलाद के तौर पर वह लोग उससे बेटियाँ मंसूब करते हैं जबकि खुद अपने लिये वह बेटे पसंद करते हैं। उन्होंने अल्लाह के लिये औलाद तजवीज़ भी की तो बेटियाँ तजवीज़ कीं, जो खुद अपने लिये पसंद नहीं करते।

आयत 58

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِالۡاُنۡثٰى ظَلَّ وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّهُوَ كَظِيۡمٌ‌ ۝۵۸

"और जब इनमें से किसी को बेटी की खुश ख़बरी दी जाती है तो उसका चेहरा सियाह पड़ जाता है और वह (अन्दर ही अन्दर) रंज व गम से घुटता रहता है।"

आयत 59

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْۗءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۭ

'वह लोगों से छिपता फिरता है उस बुरी ख़बर की वजह से जो उसे दी गई।"

जब उसे खुशख़बरी दी जाती है कि वह एक बेटी का बाप बन गया है तो उसे एक मनहूस ख़बर ख्याल करता है और यूँ महसूस करता है कि अब वह किसी को मुँह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहा। शर्म के मारे लोगों से छिपता फिरता है और हर वक़्त इसी शशो-पंज में रहता है कि:

اَيُمْسِكُهٗ عَلٰي هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۭ

"क्या वह इसे ज़िल्लत के बावजूद रोके रखे या मिट्टी में दफ़न कर दे?"

اَلَا سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝۵۹

"आगा रहो, बहुत ही बुरा है जो फ़ैसला वह करते हैं।"

आयत 60

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ

"उन लोगों के लिये जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते बुरी मिसाल है।"

وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۶۰ۧ

"और अल्लाह की सिफ़त निहायत बुलंद है। और वह ज़बरदस्त है कमाले हिकमत वाला।"

अक़ीदा-ए-आख़िरत के हवाले से ये हक़ीक़त लायक़-ए-तवज्जो है कि यह अक़ीदा दुनियवी ज़िन्दगी में इंसानी आमाल पर तमाम अवामिल से बढ़ कर असर अंदाज़ होता है। यही वज़ह है कि क़ुरान में आख़िरत और ईमान बिल आख़िरत के बारे में बहुत तकरार पाई जाती है।

आयत 61 से 65 तक

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ
دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾
وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ
الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ
وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ
قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ
الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى
وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

مَآءً فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

لِّقَوۡمٍ يَّسۡمَعُوۡنَ ﴿۶۵﴾

आयत 61

وَلَوۡ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلۡمِهِمۡ مَّا تَرَكَ عَلَيۡهَا مِنۡ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنۡ يُّؤَخِّرُهُمۡ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ

"और अगर अल्लाह (फ़ौरन) पकड़ करता लोगों की उनके गुनाहों के सबब तो ना छोड़ता इस (ज़मीन) पर कोई भी जानदार, लेकिन वह मोहलत देता है उन्हें एक वक़्ते मुअय्यन तक।"

ये अल्लाह की ख़ास रहमत है कि वह लोगों के ज़ुल्म व मआसियत (नाफ़रमानी) की पादाश में फ़ौरी तौर पर उनकी गिरफ़्त नहीं करता, बल्कि ढील देकर उन्हें इस्लाह (सुधरने) का पूरा-पूरा मौक़ा देता है।

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ لَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ﴿۶۱﴾

"फ़िर जब उनका वक़्ते मुअय्यन आ जाएगा तो ना वह उससे एक साअत पीछे हट सकेंगे और ना आगे बढ़ सकेंगे।"

आयत 62

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ

"और वह ठहराते हैं अल्लाह के लिये जो वह खुद पसंद नहीं करते"

यानि इनमें से कोई भी खुद बेटी का बाप बनना पसंद नहीं करता, मगर अल्लाह के साथ बेटियाँ मंसूब करते हुए ये लोग ऐसा कुछ नहीं सोचते।

وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ

"और इनकी ज़बाने झूठ बयान कर रही हैं कि इनके लिये यक़ीनन भलाई है।"

ये लोग इस ज़अम (ख्याल) में है कि दुनिया में इन्हें इज्ज़त, दौलत और सरदारी मिली हुई है, तो ये दलील है इस बात की कि अल्लाह इनसे खुश है और इन्हें ये खुशफ़हमी भी है कि अगर उसने इन्हें ये सब कुछ दिया है तो आख़िरत में भी वह ज़रूर इन्हें अपनी नेअमतों से नवाज़ेगा। चुनाँचे दुनिया हो या आख़िरत इनके लिये तो भलाई ही भलाई है।

لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ۝ ٦٢

"इसमें कोई शक नहीं कि इनके लिये आग है और ये कि वह बढाये जा रहे हैं।"

दुनिया में इनकी रस्सी दराज़ करने का मक़सद ये है कि वह अल्लाह की नाफ़रमानी में जिस हद तक जुर्मी होकर आगे बढ़ सकते हैं बढ़ते चले जाएँ।

आयत 63

تَاللّٰهِ لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيۡطٰنُ اَعۡمَالَهُمۡ

"अल्लाह की क़सम! हमने भेजा (अपने रसूलों को) बहुत सी उम्मतों की तरफ़ आपसे पहले, लेकिन शैतान ने उनके लिये उनके अमाल को मुज़य्यन किये रखा"

शैतान के बहकावे के सबब वह लोग इस खुशफ़हमी में रहे कि उनका कल्चर, उनकी तहज़ीब और उनकी रिवायात सबसे आला हैं।

فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الۡيَوۡمَ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۶۳﴾

"तो आज वही इनका साथी है और इनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

आयत 64

وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخۡتَلَفُوۡا فِيۡهِ ۙ

"और नहीं उतारी (ऐ मोहम्मद ﷺ!) हमने आप पर ये किताब मगर इसलिये कि आप वाज़ेह कर दें इनके लिये वह सब कुछ जिसमें इन्होंने इख्तिलाफ़ किया"

وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٦٤

"और ये हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिये जो ईमान लाने वाले हैं।"

इस आयत को पढ़ते हुए सूरह युनुस की ये दो आयात भी ज़हन में रखिये:

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَاۗءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ڏ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٧ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ۭ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝٥٨

"ऐ लोगों! आ गई है तुम्हारे पास नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से और तुम्हारे सीनों (के जो रोग हैं उन) की शिफ़ा और हिदायत और अहले ईमान के हक़ में (बहुत बड़ी) रहमत। (ऐ नबी ﷺ! इनसे) कह दीजिये कि ये (क़ुरान) अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से (नाज़िल हुआ) है, तो चाहिये कि लोग इस पर खुशियाँ मनाएँ, वह बेहतर है उन चीज़ों से जो वह जमा करते हैं।"

आयत 65

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ

"और अल्लाह ही ने आसमान से पानी उतारा, फ़िर उससे ज़िन्दा कर दिया ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद।"

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾

"यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो सुनते हैं।"

ये निशानी उन लोगों के लिये है जिनका सुनना हैवानों का सा सुनना ना हो, बल्कि इंसानों का सा सुनना हो। अल्लामा इक़बाल ने "ज़बूरे अज़्म" में क्या ख़ूब कहा है:

दम चीस्त? पयाम अस्त, शनैदी, नशनैदी!
दर ख़ाके तू यक जलवा-ए-आम अस्त नदैदी?
दीदन दीगर आमोज़! शनैदन दीगर आमोज़!

यानि साँस जो तुम लेते हो ये भी अल्लाह का एक पैग़ाम है, ये अलग बात है कि तुम इस पैग़ाम को सुनते हो या नहीं सुनते हो। ये दुरुस्त है कि तुम ख़ाक से बने हो, मगर तुम्हारे इसी ख़ाकी वजूद के अन्दर एक नूर और जलवा-ए-रब्बानी भी मौजूद है। यह रूहे रब्बानी जो तुम्हारे वजूद में फूँकी गई है यह जलवा-ए-रब्बानी ही तो है, जिसे तुम देखते ही नहीं हो। तुम्हें अंदाज़ा ही नहीं है कि तुम्हारे अन्दर क्या-क्या कुछ मौजूद है: {وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ} (अल ज़ारियात:21) "और तुम्हारे अन्दर (क्या कुछ है), क्या तुम देखते नहीं हो?" ज़रा दूसरी तरह का देखना और दूसरी तरह का सुनना सीखो! ऐसा देखना सीखो जो चीज़ों की असलियत को देख सके

और ऐसा सुनने की सलाहियत हासिल करो जिससे तुम्हें हक़ीक़त की पहचान नसीब हो। अगर ऐसा नहीं तो फिर ये देखना और ये सुनना महज़ हैवानों का सा देखना और सुनना है।

ऐ अहले नज़र ज़ोक़-ए-नज़र ख़ूब है लेकिन
जो शय की हक़ीक़त को ना देखे वह नज़र क्या!

इस सूरत में तकरार के साथ अहले फ़िक्र व दानिश को दावत दी गई है कि वह अल्लाह की निशानियों को देख कर, सुन कर और समझ कर सबक़ हासिल करने की कोशिश करें। (आयते ज़ेरे नज़र के अलावा मुलाहिज़ा हों आयात 11, 12, 67, 69 और 79)

आयात 66 से 70 तक

وَاِنَّ لَكُمۡ فِى الۡاَنۡعَامِ لَعِبۡرَةً‌ ؕ نُسۡقِيۡكُمۡ مِّمَّا فِىۡ بُطُوۡنِهٖ
مِنۡۢ بَيۡنِ فَرۡثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآٮِٕغًا لِّلشّٰرِبِيۡنَ
۝٦٦ وَمِنۡ ثَمَرٰتِ النَّخِيۡلِ وَالۡاَعۡنَابِ تَتَّخِذُوۡنَ مِنۡهُ
سَكَرًا وَّرِزۡقًا حَسَنًا‌ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ
يَّعۡقِلُوۡنَ ۝٦٧ وَاَوۡحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحۡلِ اَنِ اتَّخِذِىۡ مِنَ
الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعۡرِشُوۡنَ ۝٦٨ ثُمَّ
كُلِىۡ مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسۡلُكِىۡ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا‌ ؕ
يَخۡرُجُ مِنۡۢ بُطُوۡنِهَا شَرَابٌ مُّخۡتَلِفٌ اَلۡوَانُهٗ فِيۡهِ شِفَآءٌ

لِلنَّاسِ ۭاِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ
خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ڐ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ
الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَـيْــــًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ
قَدِيْرٌ ۝

आयत 66

وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ

"और यक़ीनन तुम्हारे लिये चौपायों में भी इबरत है।"

चौपायों की तख्लीक़ में भी तुम्हारे लिये बड़ा सबक़ है। इनको देखो, गौर करो और अल्लाह की हिकमतों को पहचानो!

نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَاۗىِٕغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝

"हम पिलाते हैं तुम्हें उसमें से जो उनके पेटों में होता है, गोबर और खून के दरमियान से ख़ालिस दूध, पीने वालों के लिये निहायत खुशगवार।"

आयत 67

وَمِنۡ ثَمَرٰتِ النَّخِيۡلِ وَالۡاَعۡنَابِ تَتَّخِذُوۡنَ مِنۡهُ سَكَرًا وَّرِزۡقًا حَسَنًا ؕ

"और खजूरों और अंगूरों के फलों से भी, उनसे तुम नशाआवर चीज़ें भी बनाते हो और अच्छा रिज़्क़ भी।"

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۷﴾

"यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो अक़्ल से काम लें।"

आयत 68

وَاَوۡحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحۡلِ اَنِ اتَّخِذِىۡ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعۡرِشُوۡنَ ۙ﴿۶۸﴾

"और आपके रब ने वही की शहद की मक्खी की तरफ़, कि घर बना पहाड़ों में, दरख्तों में और लोग (अंगूरों की बेलों के लिये) जो छतरियाँ बनाते हैं उनमें।"

यानि शहद की मक्खी की फ़ितरत में यह चीज़ वदीयत कर दी गई है।

आयत 69

ثُمَّ كُلِىۡ مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسۡلُكِىۡ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ

"फिर हर तरह के मेवों में से खा और अपने रब के हमवार किये हुए रास्तों पर चलती रह।"

يَخۡرُجُ مِنۡۢ بُطُوۡنِهَا شَرَابٌ مُّخۡتَلِفٌ اَلۡوَانُهٗ فِيۡهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ

"निकलती है इनके पेटों से पीने की एक शय (शहद), जिसके रंग मुखतलिफ़ होते हैं, इसमें लोगों के लिये शिफ़ा है।"

शहद की मक्खी जिन-जिन जड़ी-बूटियों और पौदों के फूलों का रस चूसती है उनके ख्वास (गुण) और उनकी तासीरात को गोया वह कशीद करती (खींचती) है। इस तरह शहद में मुख्तलिफ़ अदवियात (दवाओं) के असरात भी शामिल हो जाते हैं और यही वजह है कि इसमें बहुत सी बीमारियों के लिये शिफ़ा है।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ۞ ٦٩

"यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो गौर व फ़िक्र करते हैं।"

आयत 70

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمۡ ۙ وَمِنۡكُمۡ مَّنۡ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرۡذَلِ الۡعُمُرِ

"और अल्लाह ही ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफ़ात देगा, और तुम में से कुछ ऐसे भी हैं जो नाकारा उम्र को लौटा दिये जाते हैं"

ऐसी उम्र जिसमें आदमी नाकारा होकर दूसरों पर बोझ बन जाता है।

لِكَىۡ لَا يَعۡلَمَ بَعۡدَ عِلۡمٍ شَيۡـًٔا ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ قَدِيۡرٌ ۝۷۰

"कि ना जाने इल्म रखने के बाद कुछ भी। यक़ीनन अल्लाह जानने वाला, क़ुदरत वाला है।"

बुढ़ापे में अक्सर लोगों की क़ुव्वते फ़िक्र मुतास्सिर हो जाती है और ज़्यादा उम्र रसीदा लोगों को तो dementia हो जाता है जिससे ज़हनी सलाहियतें ख़त्म हो जाती हैं और याददाश्त जवाब दे जाती है। इस कैफ़ियत में बड़े-बड़े फ़लसफ़ी और दानिशवर बच्चों जैसी बातें करने लगते हैं।

आयात 71 से 76 तक

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعۡضَكُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ فِى الرِّزۡقِ‌ۚ فَمَا الَّذِيۡنَ فُضِّلُوۡا بِرَآدِّىۡ رِزۡقِهِمۡ عَلٰى مَا مَلَـكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَهُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ ‌ؕ اَفَبِنِعۡمَةِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ۝۷۱ وَاللّٰهُ

جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ
اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ
اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۙ﴿۷۲﴾
وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۚ﴿۷۳﴾ فَلَا
تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
﴿۷۴﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ
وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا
وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ
اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا
يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ
بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۧ﴿۷۶﴾

आयत 71

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ

"और अल्लाह ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज़्क़ में फज़ीलत दी है।"

रिज़्क़ से मुराद सिर्फ़ माद्दी असबाब व वसाएल ही नहीं बल्कि इसमें इंसान की जिस्मानी व ज़ेहनी सलाहियतें भी शामिल हैं। माद्दी वसाएल की कमी-बेशी के बारे में कोई सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट ऐतराज़ कर सकता है कि यह ग़लत तक़सीम और ग़लत निज़ाम का नतीजा है, जिसका ज़िम्मेदार खुद इंसान है, मगर ये अम्र अपनी जगह अटल हक़ीक़त है कि हर इंसान की ज़ेहनी इस्तेदाद और जिस्मानी ताक़त एक सी नहीं होती। जींस (genes) के ज़रिये विरासत में मिलने वाली तमाम सलाहियतें भी सब इंसानों में बराबर नहीं होतीं, फिर इसमें किसी के इख़्तियार व इंतेखाब को भी कोई दखल नहीं है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने माद्दी असबाब व वसाएल के अलावा ज़ाती सलाहियतों में भी मुख्तलिफ़ इंसानों को मुख्तलिफ़ ऐतबार से एक-दूसरे पर फज़ीलत दी है।

فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۭ

"तो नहीं हैं वह लोग जिन्हें (रिज़्क़ में) फज़ीलत दी गई है लौटाने वाले अपना रिज़्क़ अपने गुलामों को कि वह हो जाएँ इसमें बराबर।"

यानि ऐसा तो नहीं होता कि उमराअ अपनी दौलत और जायदादें अपने गुलामों में तक़सीम कर दें और उन्हें भी अपने

साथ उन जायदादों का मालिक बना लें। तो अगर तुम लोग अपने गुलामों को अपने साथ अपनी मिल्कियत में शरीक नहीं करते तो क्या अल्लाह तुम्हारे झूठे मअबूदों को अपने बराबर कर लेगा? और ये जो इन लोगों का ख्याल है कि एक बड़ा ख़ुदा है और कुछ छोटे-छोटे ख़ुदा हैं और ये छोटे ख़ुदा बड़े ख़ुदा से इनकी सिफ़ारिश करेंगे तो क्या अल्लाह पर इनमें से किसी की धौंस चल सकेगी या अल्लाह इनमें से किसी को यह इख़्तियार देगा कि वह उससे अपनी कोई बात मनवा ले?

اَفَبِنِعۡمَةِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ﴿۷۱﴾

"तो क्या ये लोग अल्लाह की नेअमत का इन्कार कर रहे हैं?"

आयत 72

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ اَزۡوَاجًا

"और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही नौअ से बीवियाँ बनाईं"

अरबी में "ज़ौज" शरीके हयात (spouse) को कहते हैं और यह लफ्ज़ बीवी और खाविंद दोनों के लिये इस्तेमाल होता है। औरत के लिये मर्द ज़ौज है और मर्द के लिये औरत।

وَّجَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ بَنِيۡنَ

"और बनाए तुम्हारे लिये तुम्हारी बीवियों से बेटे और पोते, और रिज़्क़ दिया तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से।"

وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ

اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ؀

"तो क्या ये लोग बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की नेअमत का वह इन्कार करते हैं?"

यानि कुफ़्राने नेअमत करते हैं। यहाँ यह अहम बात लायक़-ए-तवज्जो है कि इस सूरत में अल्लाह की नेअमतों का ज़िक्र बहुत तकरार के साथ आ रहा है।

आयत 73

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْــــًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ؀ۚ

"और ये परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा उनकी जिन्हें कुछ इख्तियार नहीं उनके लिये किसी रिज़्क़ का, ना आसमानों से और ना ज़मीन से, और ना वह इसकी क़ुदरत ही रखते हैं।"

मुशरिकीने अरब अय्यामे जाहिलियत में जो तलबिया पढ़ते थे उसमें तौहीद के इक़रार के साथ-साथ शिर्क का अस्बात भी मौजूद था। उनका तलबिया यह था: لبّیك اللّٰھم لبّیك، لبّیك

لَا شَرِيْكَ لَكَ لبّيك، اِلَّا شَرِيْكًا تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ यानि मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ। मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूँ। सिवाय उस शरीक के कि उसका और जो कुछ उसका इख्तियार है सबका मालिक तू ही है। यानि बिलआखिर इख्तियार तेरा ही है और तेरा कोई शरीक तुझ से आज़ाद होकर ख़ुद मुख्तार (autonomous) नहीं है। चुनाँचे जिस तरह ईसाईयों ने तौहीद को तसलीस में बदला और फिर तसलीस को तौहीद में ले आए (One in three and three in one) इसी तरह मुशरिकीने अरब भी तौहीद में शिर्क पैदा करते और फिर शिर्क को तौहीद में लौटा देते थे।

आयत 74

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ

"तो अल्लाह के लिये मिसालें बयान ना किया करो।"

क़ब्ल अज़ इसी सूरत (आयत 60) में हम पढ़ चुके हैं: {وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى} "और अल्लाह की मिसाल सबसे बुलंद है" लेकिन इसका तर्जुमा बिलउमूम यूँ किया जाता है: "अल्लाह की सिफ्त बहुत बुलंद है।" या "अल्लाह की शान बहुत बुलंद है।" इसलिये कि अल्लाह के लिये कोई मिसाल बयान नहीं की जा सकती। इंसानी सतह पर बात समझने और समझाने के लिये कुछ ना कुछ तम्सीली अल्फ़ाज़ तो इस्तेमाल करने पड़ते हैं, मसलन अल्लाह का चेहरा, अल्लाह का हाथ, अल्लाह का तख़्त, अल्लाह की कुर्सी, अल्लाह का अर्श

वगैरह, लेकिन ऐसे अल्फ़ाज़ से हम ना तो हक़ीक़त का इज़हार कर सकते हैं और ना ही अल्लाह की सिफ़ात और उसके अफ़आल की हक़ीक़त को जान सकते हैं। इसी लिये मना कर दिया गया है कि अल्लाह की मिसालें बयान ना किया करो। इसकी मन्तक़ी वजह यह है कि हम अगर उस हस्ती के लिये कोई मिसाल लायेंगे तो आलमे खल्क़ से लायेंगे, जिसकी हर चीज़ महदूद है। या फिर ऐसी कोई मिसाल हम अपने ज़हन से लायेंगे, जबकि इंसानी सोच, क़ुव्वते मतखीला (गंभीरता) और तस्सवुरात भी सब महदूद हैं। दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला की ज़ात मुतलक़ (Absolute) है और उसकी सिफ़ात भी मुतलक़ है। चुनाँचे इंसान के लिये यह मुम्किन ही नहीं कि ऐसी मुतलक़ हस्ती के लिये कोई मिसाल बयान कर सके। इसी लिये सूरतुल शौरा की आयत 11 में दो टूक अंदाज़ में फ़रमा दिया गया: {لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ} कि उसकी मिसाल की सी भी कोई शय मौजूद नहीं।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾

“बेशक अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।”

आयत 75

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ

"अल्लाह ने मिसाल बयान की है एक गुलाम ममलूक की, जो इख्तियार नहीं रखता किसी चीज़ पर भी"

अल्लाह तआला इनके शिर्क के नफ़ी के लिये यह मिसाल बयान कर रहा है कि एक बंदा वह है जो किसी का गुलाम और ममलूक है, उसका कुछ इख्तियार नहीं, वह अपनी मरज़ी से कुछ भी नहीं कर सकता।

وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ۭ

"और (एक वह है) जिसको हमने अपने पास से बहुत अच्छा रिज़्क़ दिया है, और वह उसमें से खर्च करता है छुप कर भी और ऐलानिया भी।"

रिज़्क़ में माल, इल्म और सलाहियतें सब शामिल हैं। यानि वह शख्स माल भी खर्च कर रहा है, लोगों को तालीम भी दे रहा है, और कई दूसरे तरीक़ों से भी लोगों को मुस्तफ़ीद कर रहा है।

هَلْ يَسْتَوٗنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۷۵

"क्या ये (दोनों) बराबर हैं? कुल तारीफ़ और शुक्र अल्लाह के लिये है, लेकिन इनकी अक्सरियत इल्म नहीं रखती।"

एक तरफ़ अल्लाह का वह बंदा है जो उसके दीन की ख़िदमत में मसरूफ़ है, अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर के

फ़राइज़ सरअंजाम दे रहा है, लोगों में दीन की तालीम को आम कर रहा है, या अगर साहिबे सरवत (मालदार) है तो अपना माल अल्लाह के दीन की सरबुलंदी के लिये खर्च कर रहा है और मोहताजों की मदद कर रहा है। जबकि दूसरी तरफ़ एक ऐसा शख्स है जिसके पास कुछ इख्तियार व क़ुदरत नहीं है, वह अपनी मरज़ी से कुछ कर ही नहीं सकता। ये दोनों बराबर कैसे हो सकते हैं?

आयत 76

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ

"और अल्लाह ने (अब एक और) मिसाल बयान की दो अश्खास की, इनमें से एक गूंगा है, वह क़ुदरत नहीं रखता किसी भी चीज़ पर और वह अपने आक़ा पर बोझ है"

اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۭ

"जहाँ कहीं भी वह (आक़ा) इसे भेजता है, वह कोई खैर लेकर नहीं आता।"

एक शख्स के दो गुलाम हैं। एक गुलाम गूंगा है, किसी काम की कोई सलाहियत नहीं रखता, उल्टा अपने मालिक पर बोझ बना हुआ है। काम वगैरह कुछ नहीं करता, सिर्फ़ रोटियाँ तोड़ता है। अगर इसका आक़ा इसे किसी काम से भेज दे तो वह काम ख़राब करके ही आता है।

هَلۡ يَسۡتَوِيۡ هُوَ ۙ وَمَنۡ يَّاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿٧٦﴾

"क्या बराबर होगा वह, और वह जो हुक्म देता है अद्ल का, और वह सीधी राह पर क़ायम है?"

अल्लाह तआला ने यहाँ एक शख्स के दो गुलामों के हवाले से दो तरह के इन्सानों की मिसाल बयान फ़रमाई है कि सब इंसान मेरे गुलाम हैं। लेकिन मेरे इन गुलामों की एक क़िस्म वह है जो मेरी नेअमतों से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे हैं मगर मेरा कोई काम नहीं करते, मेरे दीन की कुछ ख़िदमत नहीं करते, मेरी मख्लूक़ के किसी काम नहीं आते। ये लोग उस गुलाम की मानिन्द हैं जो अपने आक़ा पर बोझ हैं। दूसरी तरफ़ मेरे वह बंदे और गुलाम हैं जो दिन-रात मेरी रज़ा जोई के लिये जद्दो-जहद कर रहे हैं, नेकी का हुक्म दे रहे हैं और बुराई से रोक रहे हैं, मेरे दीन को क़ायम करने की जद्दो-जहद में अपने तन, मन और धन की क़ुरबानियाँ पेश कर रहे हैं। तो क्या ये दोनों तरह के इंसान बराबर हो सकते हैं?

आयात 77 से 83 तक

وَلِلّٰهِ غَيۡبُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَمَاۤ اَمۡرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمۡحِ الۡبَصَرِ اَوۡ هُوَ اَقۡرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٧٧﴾ وَاللّٰهُ اَخۡرَجَكُمۡ مِّنۡۢ بُطُوۡنِ اُمَّهٰتِكُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ شَيۡـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ

وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ
مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَاۗءِ ۭ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٧٩ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ
الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ
اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ
اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝٨٠ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ
ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ
سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ
بَاْسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ
۝٨١ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝٨٢
يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ۝٨٣ ۧ

आयत 77

وَلِلّٰهِ غَيۡبُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ‌ؕ

"और आसमानों और ज़मीन की सारी छिपी बातें अल्लाह ही के लिये है।"

وَمَاۤ اَمۡرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمۡحِ الۡبَصَرِ اَوۡ هُوَ اَقۡرَبُ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ‏ ﴿۷۷﴾

"और क़यामत का मामला तो ऐसे है जैसे निगाह का लपकना, या (मुमकिन है) वह इससे भी क़रीब तर हो। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।"

आयत 78

وَاللّٰهُ اَخۡرَجَكُمۡ مِّنۡۢ بُطُوۡنِ اُمَّهٰتِكُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ شَيۡـًٔا ۙ

"और अल्लाह ने तुम्हें निकाला तुम्हारी माँओं के पेटों से जबकि तुम कुछ नहीं जानते थे"

नौज़ाएदा (नवजात) बच्चा अक़्ल व शऊर और समझ-बूझ से बिल्कुल आरी होता है, बल्कि हक़ीक़त तो यह है कि इंसान का बच्चा तमाम हैवानात के बच्चों से ज़्यादा कमज़ोर और ज़्यादा मोहताज (dependent) होता है।

وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ

"और तुम्हारे लिये समाअत, बसारत और अक़्ल बनाई।"

اَفْـِٕدَةَ का तरजुमा आमतौर पर "दिल" किया जाता है, मगर मेरे नज़दीक इससे मुराद अक़्ल और शऊर है। इस पर तफ़सीली गुफ़्तगू इंशा अल्लाह सूरह बनी इसराईल की आयत 36 {اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا} के ज़िमन में होगी। आयत ज़ेरे नज़र में कानों और आँखों का ज़िक्र इंसानी हवास (senses) के तौर पर हुआ है और इन हवास का ताल्लुक़ अक़्ल (اَفْـِٕدَةَ) के साथ वही है जो कंप्यूटर के input devices का इसके प्रोसेसिंग यूनिट के साथ होता है। जिस तरह कंप्यूटर का प्रोसेसिंग यूनिट मुख्तलिफ़ ज़राए से हासिल होने वाली मालूमात (डाटा) को प्रासेस करके उससे कोई नतीजा अखज़ करता है इसी तरह हवासे खम्सा से हासिल होने वाली मालूमात से इंसानी दिमाग़ सोच-विचार करके कोई नतीजा निकालता है। इंसान की इसी सलाहियत को हम अक़्ल कहते हैं और मेरे नज़दीक اَفْـِٕدَةَ से मुराद इंसान की यही अक़्ल है।

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝۷۸

"ताकि तुम शुक्र करो।"

ये तमाम सलाहियतें इंसान के लिये अल्लाह तआला की नेअमत हैं और अल्लाह ने ये नेअमतें इंसान को इसलिये अता की हैं कि वह इन पर अल्लाह का शुक्र अदा करे, और इस सिलसिले में अल्लाह के शुक्र का तक़ाज़ा यह है कि इंसान इन नेअमतों का इस्तेमाल दुरुस्त तौर पर करे और इनसे

कोई ऐसा काम ना ले जिससे अल्लाह तआला की नाफ़रमानी का कोई पहलु निकलता हो।

आयत 79

اَلَمۡ یَرَوۡا اِلَی الطَّیۡرِ مُسَخَّرٰتٍ فِیۡ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا یُمۡسِکُہُنَّ اِلَّا اللّٰہُ ؕ

"क्या ये देखते नहीं परिंदों को कि वह आसमान की फ़ज़ा में मुसख्खर हैं, इन्हें नहीं थामा हुआ किसी ने सिवाय अल्लाह के।"

यानि अल्लाह तआला के हुक्म और उसके क़ानून के मुताबिक़ ये परिंदे फ़ज़ा में तैर रहे हैं।

اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۷۹﴾

"यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हों।"

आयत 80

وَ اللّٰہُ جَعَلَ لَکُمۡ مِّنۡۢ بُیُوۡتِکُمۡ سَکَنًا

"और अल्लाह ने तुम्हारे घरों में तुम्हारे लिये सकूनत की जगह बनाई है"

وَّجَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ جُلُوۡدِ الۡاَنۡعَامِ بُيُوۡتًا تَسۡتَخِفُّوۡنَهَا يَوۡمَ ظَعۡنِكُمۡ وَيَوۡمَ اِقَامَتِكُمۡ ۙ

"और उसने बना दिये तुम्हारे लिये चौपायों की खालों से ऐसे घर (खेमें) जिन्हें तुम बहुत हल्का-फुल्का पाते हो अपने कूच और क़याम के दिन"

जानवरों की खालों से बनाये गए खेमे बहुत हल्के-फुल्के होते हैं। चुनाँचे दौराने सफ़र भी इन्हें उठाना आसान होता है, और इसी तरह जब और जहाँ चाहें इन्हें आसानी से गाड़ कर आरामदेह क़याम गाह बनाई जा सकती है।

وَمِنۡ اَصۡوَافِهَا وَاَوۡبَارِهَا وَاَشۡعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيۡنٍ ۝٨٠

"और (उसने बनाया तुम्हारे लिये) उन (भेड़ों) की ऊन से और उन (ऊँटों और बकरियों) के बालों से सामान और बरतने की चीज़ें एक ख़ास वक़्त तक के लिये।"

क़ब्ल अज़ आयत 5 में जानवरों के बालों की अफ़ादियत के हवाले से "دِفۡءٌ" का लफ्ज़ का इस्तेमाल हुआ था, जिसमें सर्दी की शिद्दत से बचने के लिये कपड़ा तैयार करने की तरफ़ इशारा था। यहाँ इस सिलसिले में वज़ाहत से बताया गया है कि मुख्तलिफ़ जानवरों की ऊन और उनके बालों की सूरत में अल्लाह ने तुम्हारे लिये क़ुदरती रेशा (fiber) पैदा कर

दिया है जिससे तुम लोग कपड़े बुनते हो और दूसरी बहुत सी मुफ़ीद अशया बनाते हो। एक मुद्दत तक इंसान के पास कपड़ा बनाने के लिये जानवरों से हासिल होने वाले इस रेशे के अलावा और कोई चीज़ नहीं थी। कपास की दरयाफ्त बहुत बाद में हुई। मौजूदा ज़माने में इस मक़सद के लिये अगरचे मसनूई रेशे की रंगारंग अक़साम मौजूद हैं मगर इस क़ुदरती रेशे की अहमियत व अफ़ादियत से आज भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

आयत 81

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا

"और अल्लाह ही ने बनाया तुम्हारे लिये अपनी पैदा करदा चीज़ों से साया"

अल्लाह ने दरख्तों और बहुत सी दूसरी चीज़ों से साये का निज़ाम वज़अ फ़रमाया है जो इंसानी ज़िन्दगी के लिये बहुत मुफ़ीद है।

وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا

"और उसी ने बनाएँ तुम्हारे लिये पहाड़ों के अन्दर पनाह गाहें"

पहाड़ों के अन्दर क़ुदरती गारें पाई जाती हैं जिनमें लोग तूफानी हवाओं वगैरह की शिद्दत से बचने के लिये पनाह ले सकते हैं। पुराने ज़माने में तो इस हवाले से इन गारों की बहुत अहमियत थी।

وَّجَعَلَ لَكُمۡ سَرَابِيۡلَ تَقِيۡكُمُ الۡحَرَّ وَسَرَابِيۡلَ تَقِيۡكُمۡ بَاۡسَكُمۡ ؕ

"और बनाए तुम्हारे लिये ऐसे लिबास जो तुम्हें बचाते हैं गरमी से और ऐसे लिबास (ज़िरहें) जो तुम्हें बचाते हैं तुम्हारी लड़ाई में"

كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعۡمَتَهٗ عَلَيۡكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُسۡلِمُوۡنَ ﴿۸۱﴾

"इसी तरह वह इत्माम फ़रमाता है अपनी नेअमत का तुम पर ताकि तुम इताअत की रविश इख्तियार करो।"

जैसा कि क़ब्ल अज़ भी इशारा किया गया है, इस सूरत में अल्लाह तआला की नेअमतों के ज़िक्र की तकरार बहुत ज़्यादा है। (मज़ीद मुलाहिज़ा हों आयात 18, 35, 71, 72, 83 और 114)।

आयत 82

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنَّمَا عَلَيۡكَ الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿۸۲﴾

"तो (ऐ नबी ﷺ!) अगर ये लोग अपने मुँह फ़ेर लें तो आप पर तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।"

आयत 83

يَعۡرِفُوۡنَ نِعۡمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنۡكِرُوۡنَهَا وَاَكۡثَرُهُمُ الۡكٰفِرُوۡنَ ﴿۸۳﴾

"ये लोग अल्लाह की नेअमत को पहचानते हैं, फिर मुन्कर हो जाते हैं और इनमें अक्सर ना शुक्रे हैं।"

आयात 84 से 89 तक

وَيَوۡمَ نَبۡعَثُ مِنۡ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيۡدًا ثُمَّ لَا يُؤۡذَنُ
لِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَلَا هُمۡ يُسۡتَعۡتَبُوۡنَ ﴿۸۴﴾ وَاِذَا رَاَ
الَّذِيۡنَ ظَلَمُوا الۡعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمۡ وَلَا هُمۡ
يُنۡظَرُوۡنَ ﴿۸۵﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡا شُرَكَآءَهُمۡ
قَالُوۡا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيۡنَ كُنَّا نَدۡعُوۡا مِنۡ
دُوۡنِكَ ۚ فَاَلۡقَوۡا اِلَيۡهِمُ الۡقَوۡلَ اِنَّكُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ﴿۸۶﴾
وَاَلۡقَوۡا اِلَى اللّٰهِ يَوۡمَىِٕذِ ۨالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا
يَفۡتَرُوۡنَ ﴿۸۷﴾ اَلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ
زِدۡنٰهُمۡ عَذَابًا فَوۡقَ الۡعَذَابِ بِمَا كَانُوۡا يُفۡسِدُوۡنَ
﴿۸۸﴾ وَيَوۡمَ نَبۡعَثُ فِىۡ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيۡدًا عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ
اَنۡفُسِهِمۡ وَجِئۡنَا بِكَ شَهِيۡدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَنَزَّلۡنَا

عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾

आयत 84

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا

"और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह"

शहादत-ए-हक़ का यह मज़मून इस सूरत में दो मरतबा (मज़ीद मुलाहिज़ा हो आयत 89) आया है, जबकि क़ब्ल अज़ सूरतुल बक़रह की आयत 143 और सूरह निसा आयत 41 में भी इसका ज़िक्र है। आयत ज़ेरे नज़र में हर उम्मत में से जिस गवाह का ज़िक्र है वह उस उम्मत का नबी या रसूल होगा। जैसा कि सूरतुल आराफ़ में फ़रमाया गया है: {فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ} (आयत 6) "हम ज़रूर पूछेंगे उनसे जिनकी तरफ़ रसूल भेजे गए और हम रसूलों से भी पूछेंगे।" रोज़े महशर हर उम्मत की पेशी के वक़्त उस उम्मत का रसूल अदालत के सरकारी गवाह (prosecution witness) की हैसियत से गवाही देगा कि ऐ अल्लाह! तेरी तरफ़ से जो पैग़ाम मुझे इस क़ौम के लिये मिला था वह मैंने बे कम-ओ-कास्त इन तक पहुँचा दिया था। अब ये लोग जवाबदेह हैं, इनसे मुहासबा हो सकता है। इस तरह तमाम अम्बिया व रुसुल अलै. अपनी-अपनी उम्मत के ख़िलाफ़ गवाही देंगे।

ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝۸۴

"फिर काफ़िरों को ना (बोलने की) इजाज़त मिलेगी और ना ही उनको उज़्र पेश करने का मौक़ा दिया जाएगा।"

उस वक़्त उन्हें ऐसा मौक़ा फ़राहम नहीं किया जाएगा कि वह उज़्र तराश कर अपने आप को बचाने की कोशिश कर सकें।

आयत 85

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝۸۵

"और जब ये ज़ालिम देख लेंगे अज़ाब को तो फिर उसे इनसे हल्का नहीं किया जाएगा और ना ही इन्हें कोई मोहलत दी जाएगी।"

आयत 86

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا

"और जब मुशरिक लोग देखेंगे अपने (बनाए हुए) शरीकों को तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब! यही हैं हमारे वह शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारा करते थे।"

هٰۤؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيۡنَ كُنَّا نَدۡعُوۡا مِنۡ دُوۡنِكَ

فَاَلۡقَوۡا اِلَيۡهِمُ الۡقَوۡلَ اِنَّكُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ۝۸۶

"तो वह फेंक देंगे ये बात उन्ही की तरफ़ कि तुम लोग यक़ीनन झूठ बोल रहे हो।"

शिर्क का इरतकाब करने वाले ये लोग महशर में जब उन मुक़द्दस हस्तियों को देखेंगे जिनके नाम की वह दुनिया में दुहाई दिया करते थे तो पुकार उठेंगे कि ऐ अल्लाह! ये हैं वह हस्तियाँ जिन्हें हम पुकारा करते थे आपको छोड़ कर। मसलन हज़रत अब्दुल क़ादिर जिलानी रहमतुल्लाह के नाम की दुहाई देने वाले जब वहाँ आपको बुलंद मरातब पर फ़ाइज़ देखेंगे तो आप रहि. को पहचान कर ऐसे कहेंगे। और हज़रत ईसा अलै. को अल्लाह का शरीक ठहराने वाले जब आप अलै. को देखेंगे तो पुकार उठेंगे कि ये हैं ईसा इब्ने मरियम जिन्हें हम अल्लाह का चहेता बेटा समझते थे और हमारा अक़ीदा था कि वह सूली पर चढ़ कर हमारे तमाम गुनाहों का कफ्फ़ारा अदा कर चुके हैं।

ये तमाम मुक़द्दस हस्तियाँ वहाँ मुशरिकीन के मुशरिकाना अक़ाएद से इज़हारे बराअत करेंगी कि हमारा तुम लोगों से कोई ताल्लुक़ नहीं है और हमें कुछ मालूम नहीं है कि तुम लोग दुनिया में हमारी इबादत किया करते थे और अल्लाह के सिवा हमें पुकारा करते थे। क़ब्ल अज़ यह मज़मून सूरह युनुस की आयत 28 और 29 में भी गुज़र चुका है।

आयत 87

وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَىِٕذِ ِۨ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۞

"और वह (सब के सब) उस रोज़ अल्लाह के हुज़ूर आजिज़ी पेश करेंगे और गुम हो जायेंगे उनसे वह (अक़ाएद) जो वह गढ़ा करते थे।"

ऐसी मुक़द्दस हस्तियों के बारे में जो अक़ाएद और नज़रियात इन्होंने गढ़ रखे थे कि वह इन्हें अज़ाब से बचा लेंगे और अल्लाह की पकड़ से छुड़ा लेंगे, ऐसे तमाम खुदसाख्ता अक़ाएद में से उस दिन इन्हें कुछ भी याद नहीं रहेगा और अज़ाब को देख कर इनके हाथों के तोते उड़ जायेंगे।

आयत 88

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ۞

"वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया और रोकते रहे (दूसरों को) अल्लाह के रास्ते से, हम उनके अज़ाब पर अज़ाब का इज़ाफ़ा करते जायेंगे, बसबब उस फ़साद के जो वह करते थे।"

उन लोगों का अज़ाब बतदरीज बढ़ता ही चला जाएगा जिन्होंने ना सिर्फ़ हक़ को झुठलाया बल्कि उसके ख़िलाफ़ साज़िशें कीं और लोगों को वरगला कर अल्लाह के रास्ते से रोकते रहे।

आयत 89

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ

"और (ज़रा तसव्वुर करो उस दिन का) जिस दिन हम हर उम्मत में खड़ा करेंगे एक गवाह उन पर उन ही में से"

ये वही अल्फ़ाज़ हैं जो हम आयत 84 में पढ़ आए हैं। क़यामत के दिन तमाम रसूल अपनी-अपनी उम्मत पर गवाह होंगे। सूरतुल अहज़ाब में रसूल ﷺ के बारे में इस हवाले से फ़रमाया गया: {يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا} (आयत 45-46) "ऐ नबी! यक़ीनन हमने आपको भेजा है गवाही देने वाला, खुशख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने वाला बनाकर, और बुलाने वाला अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से और एक रौशन चिराग।" इसी तरह सूरतुल मुज़म्मिल आयत 15 में हुज़ूर ﷺ के बारे में फ़रमाया: {اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۥ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا} "यक़ीनन हमने भेजा है तुम्हारी तरफ़ एक रसूल, गवाही देने वाला तुम पर जैसे हमने भेजा था फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल।"

وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ

"और आपको खड़ा करेंगे गवाह (बना कर) इनके ख़िलाफ़।"

क़ब्ल अज़ हम सूरतुन्निसा में भी इससे मिलती-जुलती ये आयत पढ़ चुके हैं: {فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى

{هٰٓؤُلَاۗءِ شَهِيْدًا} (आयत 41) “फिर क्या हाल होगा जब हम लायेंगे हर उम्मत में से एक गवाह और आपको लायेंगे इन पर गवाह।” यहाँ هٰٓؤُلَاۗءِ के लफ़्ज़ में क़ुरैशे मक्का की तरफ़ इशारा है जिन तक हुज़ूर ﷺ ने बराहेरास्त अल्लाह की दावत पहुँचा दी थी। लिहाज़ा क़यामत के दिन आप उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि ऐ अल्लाह मैंने आपका पैग़ाम बे-कम-ओ-कास्त इन तक पहुँचा दिया था और इसमें किसी शक व शुबह की गुंजाईश नहीं छोड़ी थी। मैंने इस ज़िमन में बरस-हा-बरस तक इनके दरमियान हर तरह की मुशक्क़त उठाई। इन्हें तन्हाई में फ़र्दन-फ़र्दन भी मिला और अलल ऐलान इज्तमाई तौर पर भी इनसे मुखातिब हुआ। मैंने इस सिलसिले में कोई दक़ीक़ा फ़रो-गुज़ाश्त नहीं किया था।

रसूल अल्लाह ﷺ ने अल्लाह का ये पैग़ाम अहले अरब तक बराहेरास्त पहुँचा दिया और बाक़ी दुनिया तक क़यामत तक के लिये ये पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी आप ﷺ ने उम्मत को मुन्तक़िल फ़रमा (transfer कर) दी। अब अगर उम्मत इस फ़र्ज़ में कोताही करेगी तो लोगों की गुमराही का वबाल अफ़रादे उम्मत पर आयेगा। चुनाँचे ये बहुत भारी और नाज़ुक ज़िम्मेदारी है जो उम्मते मुस्लिमा के अफ़राद होने के सबब हमारे कन्धों पर आ पड़ी है। सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 143 में उम्मते मुस्लिमा की इस ज़िम्मेदारी का ज़िक्र तहवीले क़िब्ला के ज़िक्र के फ़ौरन बाद इस तरह फ़रमाया गया: {وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَاۗءَ عَلَي النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا} “इसी तरह हमने तुम्हें एक उम्मते वसत बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने।” इस भारी ज़िम्मेदारी की अदायगी के दौरान बहुत मुश्किल और जाँ-कसल मराहिल

का आना नागुज़ीर है। इस तरह के मुश्किल मराहिल से गुज़रने का तरीक़ा सूरतुल बक़रह ही में आगे चल कर इस तरह वाज़ेह किया गया है: {يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ} "ऐ अहले ईमान तुम मदद तलब करो नमाज़ और सब्र के साथ, यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।" और फिर इस राह में जान की बाज़ी लगाने वाले खुशनसीब अहले ईमान की दिलजोई (बक़रह:154 में) इस तरह फ़रमाई गई: {وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ} "और मत कहो उन्हें मुर्दा जो अल्लाह के रस्ते में क़त्ल कर दिये जाएँ, बल्कि वह ज़िन्दा हैं मगर तुम्हें (उनकी ज़िन्दगी का) शऊर नहीं है।"

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ

"और (ऐ नबी ﷺ!) हमने उतार दी है आप पर यह किताब वज़ाहत करती हुई हर शय की, और यह हिदायत, रहमत और बशारत (बन कर आई) है मुसलमानों के लिये।"

यानि हयाते इंसानी के तमाम मसाइल का हल क़ुरान में मौजूद है। क़ुरान उन लोगों के लिये हिदायत, रहमत और बशारत है जो मुस्लिम यानि अल्लाह की फ़रमाबरदारी करने वाले हैं।

आयात 90 से 100 तक

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَآئِ ذِي
الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾ وَأَوْفُوْا بِعَهْدِ
اللّٰهِ إِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا
وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ
بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ
أَنْ تَكُوْنَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبٰى مِنْ أُمَّةٍ ۭ إِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۭ
وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ
﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ
فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا
صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾
وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ إِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ
خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ
بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۹۶ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ
ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۹۷
فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ
الرَّجِيْمِ ۝۹۸ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝۹۹ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝۱۰۰ۧ

आयत 90

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَاۗئِ ذِي الْقُرْبٰى

“यक़ीनन अल्लाह हुक्म देता है अद्ल का, अहसान का और क़राबतदारों को (उनके हुक़ूक़) अदा करने का”

وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ

“और वह रोकता है बेहयाई, बुराई और सरकशी से।”

"वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम सबक़ हासिल करो।" يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝۹۰

यह आयत इस लिहाज़ से बहुत मशहूर है कि अक्सर जुमातुल मुबारक के खुतबात में शामिल की जाती है। यह बहुत ही जामेअ आयत है और इसमें अम्र बिल मारूफ़ और नहि अनिलमुन्कर के अंदाज़ में तीन चीज़ों का हुक्म दिया गया है और तीन चीज़ों से मना किया गया है। पहला हुक्म अद्ल का है और दूसरा अहसान का। अद्ल तो यह है कि जिसका जिस क़दर हक़ है ऐन उसी क़दर आप उसे दे दें, लेकिन अहसान एक ऐसा अमल है जो अद्ल से बहुत आला व अरफ़अ है। यानि अहसान यह है कि आप किसी को उसके हक़ से ज़्यादा दें और यह अमल अल्लाह तआला को बहुत पसंद है। चुनाँचे अल्लाह मोहसिनीन को महबूब रखता है। तीसरा हुक्म क़राबतदारों के हुक़ूक़ का ख्याल रखने के बारे में है, यानि उनसे हुस्ने सुलूक से पेश आना, सिला रहमी के तक़ाज़े पूरे करना और इन्फ़ाक़े माल के सिलसिले में उनको तरज़ीह देना। ये तीन अहकाम उन आमाल के बारे में हैं जो एक अच्छे मआशरे की बुनियाद का काम देते हैं।

जिन चीज़ों से यहाँ मना फ़रमाया गया है उनमें सबसे पहली बेहयाई है। हया गोया इंसान और हर बुरे काम के दरमियान परदा है। जब तक यह परदा क़ायम रहता है इंसान अमली तौर पर बुराई से बचा रहता है, और जब यह परदा उठ जाता है तो फिर इंसान बेशर्म होकर आज़ाद हो जाता है। फिर वह *"बेहया बाश व हरचे ख्वाही कुन!"* का मिस्दाक़ बन कर जो चाहे करता फिरता है। बेहयाई के बाद

मुन्कर से मना किया गया है। मुन्कर हर वह काम है जिसके बुरे होने पर इंसान की फ़ितरत गवाही दे। तीसरा नापसन्दीदा अमल या जज़्बा अल बगा यानि सरकशी है। यह सरकशी अगर अल्लाह के ख़िलाफ़ हो तो बग़ावत है और यूँ कुफ़्र है, और अगर यह इंसानों के ख़िलाफ़ हो तो इसे "उदवान" कहा जाता है यानि ज़ुल्म और ज़्यादती। बहरहाल इन दोनों सतहों पर यह इन्तहाई नापसन्दीदा और मज़मूम जज़्बा है।

अगली चंद आयात मुश्किलातुल क़ुरान में से हैं। इनकी तफ़सीर के बारे में बहुत सी आरा (रायें) हैं जो सबकी सब यहाँ बयान नहीं की जा सकती। मैं यहाँ सिर्फ़ वह राय बयान करूँगा जिससे मुझे इत्तेफ़ाक़ है। मेरी राय के मुताबिक़ इन आयात में रुए सुखन अहले किताब की तरफ़ है। मक्की सूरतों में अगरचे अहले किताब से "या बनी इसराईल" या "या अहले किताब" के अल्फ़ाज़ से बराहेरास्त ख़िताब नहीं किया गया, लेकिन सूरतुल अनआम और इसके बाद (मक्की दौर के आख़री सालों में) नाज़िल होने वाली सूरतों में अहले किताब को बिल वास्ता अंदाज़ में मुखातिब करने का सिलसिला शुरू हो चुका था। इसकी वजह ये थी कि इस वक़्त तक मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के दावा-ए-नबुवत के बारे में ख़बरें मदीना पहुँच चुकी थीं और यहूदे मदीना इन खबरों को सुन कर बहुत मुतजस्साना अंदाज़ में मज़ीद मालूमात की टोह में थे। उनमें से कुछ लोग तो नबी आखिरुज़्ज़मान ﷺ को पहचान भी चुके थे और वह इस इंतेज़ार में थे कि मज़ीद मालूमात से आप ﷺ की नबुवत की तस्दीक़ हो जाए तो वह आप ﷺ पर ईमान ले आएँ। दूसरी तरफ़ यहूदे मदीना ही में से कुछ लोगों के दिलों में आप ﷺ के

ख़िलाफ़ हसद की आग भड़क चुकी थी। इस क़िस्म के लोग आप ﷺ की मुखालफ़त के लिये क़ुरैशे मक्का से मुसलसल राब्ते में थे और आपकी आज़माइश के लिये क़ुरैशे मक्का को मुख्तलिफ़ क़िस्म के सवालात भेजते रहते थे। इन सवालात में एक अहम सवाल ये भी था कि हज़रत इब्राहीम अलै. और हज़रत इस्हाक़ अलै. तो फ़लस्तीन में आबाद थे लेकिन उनकी औलाद यानि बनी इसराईल के लोग वहाँ से मिस्र कैसे पहुँचे? इनका यही सवाल था जिसके जवाब में पूरी सूरह युसुफ़ नाज़िल हुई थी। चुनाँचे यह वह मअरूज़ी (objective) सूरते हाल थी जिसकी वजह से मक्की दौर की आख़री सूरतों में कहीं-कहीं अहले किताब का ज़िक्र भी मौजूद है और बिल वास्ता तौर पर उनसे ख़िताब भी है। इस पसमंज़र में मेरी राय यही है कि आइन्दा आयात में रुए सुखन अहले किताब की तरफ़ है।

आयत 91

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ

"और अल्लाह के अहद को पूरा करो जबकि तुम अहद कर चुके हो"

यहाँ बनी इसराईल का वह वादा मुराद है जिसकी तफ़सील बाद में मदनी सूरतों में आई। मदनी सूरतों में इनके इस अहद का बार-बार ज़िक्र किया गया है: {وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ .....} (बक़रह:63) यहाँ पर इस अहद की तफ़सील में जाए बगैर सिर्फ़ इसका तज़किरा कर दिया गया कि *"आक़िलाँ रा इशारा काफ़ी अस्त।"* मक़सद ये था कि बनी इसराईल के

साहबाने इल्म व बसीरत बात को समझना चाहें तो समझ लें।

وَلَا تَنۡقُضُوا الۡاَیۡمَانَ بَعۡدَ تَوۡکِیۡدِهَا وَقَدۡ جَعَلۡتُمُ اللّٰهَ عَلَیۡکُمۡ کَفِیۡلًا ؕ

"और अपनी क़समों को मत तोड़ो मज़बूती से बाँधने के बाद, जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर गवाह ठहरा चुके हो।"

اِنَّ اللّٰهَ یَعۡلَمُ مَا تَفۡعَلُوۡنَ ﴿۹۱﴾

"यक़ीनन अल्लाह जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।"

यानि यह अहद तुमने अल्लाह को गवाह बना कर और अल्लाह की क़समें खा कर बांधा हुआ है।

आयत 92

وَلَا تَکُوۡنُوۡا کَالَّتِیۡ نَقَضَتۡ غَزۡلَهَا مِنۡۢ بَعۡدِ قُوَّةٍ اَنۡکَاثًا ؕ

"और मत हो जाओ उस (दीवानी) औरत की मानिन्द जिसने अपना सूत तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला, मज़बूती (से कातने) के बाद।"

देखो तुम तो एक मुद्दत से नबी आखिरुज़्ज़मान ﷺ के मुंतज़िर चले आ रहे थे और अहले अरब को इस हवाले से धमकाया भी करते थे कि नबी आखिरुज़्ज़मान आने वाले हैं, जब वह तशरीफ़ ले आए तो हम उनके साथ मिलकर तुम

लोगों पर ग़ालिब आ जायेंगे। अब जबकि वह नबी आ गए हैं तो तुम लोगों को क्या हो गया है कि तुम उनको झुठलाने के लिये बहाने ढूँढ रहे हो! तो क्या अब तुम लोग अपने मंसूबों और इफ़कार व नज़रियात के ताने बाने ख़ुद अपने ही हाथों तार-तार कर देने पर तुल गए हो? क्या उस दीवानी औरत की तरह तुम्हारी भी मत मारी गई है जो बड़ी मेहनत और मशक़्क़त के साथ काते हुए अपने सूत की तार-तार उधेड़ कर रख दे?

تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۭ

"तुम अपनी क़समों को अपने माबैन दख़ल देने का ज़रिया बनाते हो ताकि ना हो जाए एक क़ौम बढ़ी हुई दूसरी क़ौम से।"

यानि तुमने तो इस मामले को गोया दो क़ौमों का तनाज़ाअ बना लिया है। यह जानते हुए भी कि यह वही नबी (صلى الله عليه وسلم) हैं जिनकी बशारत तुम्हारी किताब में मौजूद है, तुम आपस में अहद व पैमान कर रहे हो, क़समें खा रहे हो कि हम हरगिज़ आप (صلى الله عليه وسلم) पर ईमान नहीं लायेंगे। तुम्हारी इस हठधर्मी की वजह इसके सिवा और कोई नहीं कि तुम क़ौमी अस्बियत में मुब्तला हो चुके हो। चूँकि इस आख़री नबी صلى الله عليه وسلم का ताल्लुक़ बनी इस्माईल यानि उम्मिय्यीन से है, इसलिये तुम लोग नहीं चाहते कि बनी इस्माईल अब वैसी ही फज़ीलत हासिल हो जाए जो पिछले दो हज़ार साल से तुम लोगों को हासिल थी।

إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ

"यक़ीनन अल्लाह तुम्हें आज़मा रहा है इसके ज़रिये से।"

इसमें तुम्हारी आज़माइश है। अल्लाह तआला देखना चाहता है कि तुम लोग हक़परस्त हो या नस्लपरस्त? अगर तुम लोग इस मामले में नस्लपरस्ती का सबूत देते हो तो जान लो कि अल्लाह से तुम्हारा कोई ताल्लुक़ नहीं और अगर हक़परस्त बनना चाहते हो तो तुम्हें सोचना चाहिये कि एक मुद्दत तक अल्लाह तआला ने नबुवत तुम्हारी नस्ल में रखी और अब अल्लाह तआला ने बनी इस्माईल के एक फ़र्द को इसके लिये चुन लिया है। लिहाज़ा इसे अल्लाह का फ़ैसला समझते हुए क़ुबूल कर लेना चाहिये। तुम्हें यह भी सोचना चाहिये कि बनी इस्माईल भी तो आख़िर तुम्हारी ही नस्ल में से हैं। वह भी तुम्हारे जद्दे अमजद हज़रत ईब्राहीम अलै. ही की औलाद हैं मगर तुम लोग हो कि तुमने इस मामले को बाहमी मुखासमत और ज़िद {بَغْيًا بَيْنَهُمْ} की भेंट चढ़ा दिया है और इस तरह तुम लोग अल्लाह की इस आज़माइश में नाकाम हो रहे हो।

وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾

"और वह ज़रूर ज़ाहिर करेगा तुम पर क़यामत के दिन वह सब कुछ जिसमें तुम लोग इख्तिलाफ़ करते थे।"

आयत 93

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً

"और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता"

अल्लाह तआला यह भी कर सकता था कि पूरी इंसानियत को एक ही उम्मत बना देता ताकि नस्लों और क़ौमों की ये तफ़रीक़ ही ना होती और ना ही एक उम्मत को माज़ूल (सुस्पेंड) करके दूसरी उम्मत को नवाज़ने की ज़रूरत पेश आती। फिर जिस अल्लाह ने बख्तनसर के हाथों तुम्हारी बरबादी के बाद हज़रत उज़ैर अलै. की दावते तौबा के ज़रिये तुम्हारी नशाअत-ए-सानिया की थी, वह यह भी कर सकता था कि एक दफ़ा फिर किसी इस्लाही तहरीक के ज़रिये तुम्हें अपनी हिदायत और रहमत से नवाज़ देता। इस तरह आखरी नबी भी तुम ही में आते और ये क़ुरान भी तुम ही को मिलता। अगर अल्लाह को मंज़ूर होता तो ये सब कुछ मुमकिन था।

وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ

"लेकिन वह गुमराह करता है जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है।"

आयत के इस हिस्से का एक तर्जुमा ये भी है कि "वह गुमराह करता है उसे जो (गुमराही) चाहता है और हिदायत देता है उसे जो (हिदायत) चाहता है।"

وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

"और तुमसे ज़रूर पूछा जाएगा उस बारे में जो कुछ तुम करते थे।"

यानि इस वक़्त तुम लोग एक बहुत बड़े इम्तिहान से दो-चार हो। तुम्हारे पास नबी आखिरुज़्ज़मान ﷺ के बारे में वाज़ेह निशानियों के साथ इल्म आ चुका है और तुम अल्लाह की किताब के वारिस भी हो। इसके बावजूद अगर तुमने हमारे नबी ﷺ की तस्दीक़ ना की और आपको झुठलाने पर तुले रहे तो इस बारे में तुमसे ज़रूर जवाब तलबी होगी।

अब जरा सूरतुल बक़रह की इन आयात तो ज़हन में ताज़ा कीजिये:

يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۝٤٠ وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ۝٤١ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤٢

"ऐ बनी इसराईल! याद करो तुम मेरी वो नेअमत जो मैंने तुम पर ईनाम की, और पूरा करो मेरा अहद, मैं पूरा करूँगा तुम्हारे (साथ किये गए) अहद को और मुझ ही से डरो। और ईमान लाओ उस किताब पर जो मैंने नाज़िल की है, जो तस्दीक़ करते हुए आई है उस किताब की जो तुम्हारे पास है, और मत हो जाओ तुम ही सबसे पहले इसका कुफ़्र करने वाले, और मत बेचो मेरी आयात तो थोड़ी सी क़ीमत के एवज़ और मेरा ही तक़वा इख़्तियार

करो। और ना मिलाओ हक़ को बातिल के साथ और ना छुपाओ हक़ को जानते बूझते।"

इन आयात को पढ़ कर यही महसूस होता है कि यहाँ सूरतुल नहल में जो बात से शुरू हुई है यह गोया तम्हीद है उस मज़मून की जो सूरतुल बक़रह की मन्दर्जा बाला आयात की शक्ल में मदीना जाकर नाज़िल होने वाला था।

आयत 94

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا

"और मत बनाओ अपनी क़समों को अपने दरमियान धोखे का ज़रिया कि फ़िसल जाए कोई क़दम पुख्तगी के बाद"

देखो हक़ीक़त ये है कि तुम हमारे नबी ﷺ को अच्छी तरह पहचान चुके हो: {يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ} (सूरतुल बक़रह 146) अब इस हालत में अगर तुम फिसलोगे तो याद रखो सीधे जहन्नम की आग में जाकर गिरोगे: {فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ} (सूरह तौबा:109)

وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝۹۴

"और तुम्हें अज़ाब का मज़ा चखना पड़े बसबब इसके कि तुमने (लोगों को) रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिये (इसकी पादाश में) बहुत बड़ा अज़ाब है।"

तुम्हें तो चाहिये था कि सबसे पहले खड़े होकर गवाही देते कि हमने मोहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) को अपनी किताब में दी गई निशानियों से ठीक-ठीक पहचान लिया है, आप (صلی اللہ علیہ وسلم) वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं। और तुम्हें नसीहत भी की गई थी: {وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ} (सूरतुल बक़रह: 41) "और तुम इसके पहले मुन्किर ना बन जाना।" इस सब कुछ के बावजूद तुम लोग इस गवाही को छुपा रहे हो: {وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ} (सूरतुल बक़रह:140) "और उस शख्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जिसने छुपाई वह गवाही जो उसके पास है अल्लाह की तरफ़ से!"

आयत 95

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ

"और अल्लाह के उस अहद को हक़ीर सी क़ीमत के एवज़ फ़रोख्त ना करो।"

اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۹۵

"यक़ीनन अल्लाह के पास जो कुछ है वह बहुत बेहतर है तुम्हारे लिये अगर तुम इल्म रखते हो।"

तुम्हें दुनिया के छोटे-छोटे मफ़ादात बहुत अज़ीज़ हैं और इन हक़ीर मफ़ादात के लिये तुम लोग अल्लाह की हिदायत को ठुकरा रहे हो, मगर तुम्हें मालूम होना चाहिये कि अगर तुम लोग इस हिदायत तो क़ुबूल कर लोगे तो अल्लाह के यहाँ उखरवी ईनामात से नवाज़े जाओगे। अल्लाह के यहाँ जन्नत

की दाइमी नेअमतें तुम्हारे इन मफ़ादात के मुक़ाबले में कहीं बेहतर हैं जिनके साथ तुम लोग आज चिमटे हुए हो।

आयत 96

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ

"जो तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है।"

وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۞٩٦

"और हम लाज़िमन देंगे सब्र करने वालों को उनका अज्र उनके बेहतरीन अमाल के मुताबिक़।"

हर नेकोकार शख्स के तमाम आमाल एक दर्जे के नहीं होते, कोई नेकी आला दर्जे की होती है और कोई निस्बतन छोटे दर्जे की। मगर जिन लोगों से अल्लाह तआला खुश हो जायेंगे, उनकी आला दर्जे की नेकियों को सामने रख कर उनके अज्र व सवाब का तअय्युन किया जाएगा।

आयत 97

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ

"जिस किसी ने भी नेक अमल किया, ख्वाह वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि हो वह मोमिन

مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ

तो हम उसे (दुनिया में) एक पाकीज़ा ज़िंदगी बसर करायेंगे।"

ऐसे लोग बेशक दुनिया में रूखी-सूखी खाकर गुज़ारा करें मगर इन्हें सुकूने क़ल्ब की दौलत नसीब होगी, इन लोगों के दिल गनी होंगे, क्योंकि हुज़ूर ﷺ का फ़रमान है: ((اَلْغِنٰی غِنَی النَّفْسِ))(15) कि असल अमीरी तो दिल की अमीरी है। अगर इंसान का दिल गनी है तो इंसान वाक़िअतन गनी है और अगर ढेरों दौलत पाकर भी दिल लालच के फंदे में गिरफ़्तार है तो ऐसा शख्स दरअसल गनी या अमीर नही, फ़क़ीर है। चुनाँचे नेकोकार इंसानों को दुनयवी ज़िन्दगी में ही गिना और सुकूने क़ल्ब की नेअमत से नवाज़ा जाएगा, क्योंकि ये नेअमत तो समरह (फल) है अल्लाह की याद का: {اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ} (सूरह रअद 28) "आगाह रहो! दिल तो अल्लाह के ज़िक्र ही से मुत्मईन होते हैं।" ऐसे लोगों का शुमार अल्लाह के दोस्तों और औलिया में होता है। इनके साथ ख़ुसूसी शफक्क़त का मामला फ़रमाया जाता है और इन्हें हुज़्न व मलाल के सायों से महफ़ूज़ रखा जाता है: {اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ} (युनुस 62) "आगाह रहो! यक़ीनन औलिया अल्लाह पर ना कोई खौफ़ होगा और ना वह ग़मगीन होंगे।"

وَلَنَجۡزِيَنَّهُمۡ اَجۡرَهُمۡ بِاَحۡسَنِ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹۷﴾

"और (आख़िरत में) हम उन्हें ज़रूर देंगे उनके अज्र, उनके बेहतरीन आमाल के मुताबिक़।"

आयत 98

فَاِذَا قَرَاۡتَ الۡقُرۡاٰنَ فَاسۡتَعِذۡ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ﴿۹۸﴾

"तो जब आप क़ुरान पढ़ें तो अल्लाह की पनाह तलब कर लीजिये शैताने मरदूद से।"

इस हुक्म की रू से क़ुरान की तिलावत शुरू करने से पहले अऊज़ुबिल्लाही मिनाश्शयतानिर्रजीम पढ़ना ज़रूरी है।

आयत 99

اِنَّهٗ لَيۡسَ لَهٗ سُلۡطٰنٌ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿۹۹﴾

"उसका कुछ भी ज़ोर नहीं चलता उन लोगों पर जो ईमान लाए हैं और जो अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।"

आयत 100

اِنَّمَا سُلۡطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيۡنَ يَتَوَلَّوۡنَهٗ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ بِهٖ مُشۡرِكُوۡنَ ۝۱۰۰

"उसका ज़ोर तो उन्हीं लोगों पर चलता है जो उससे दोस्ती करते हैं और जो उसको (अल्लाह के साथ) शरीक ठहराने वाले हैं।"

शैतान का ज़ोर उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसको अपना रफ़ीक़ और सरपरस्त बना लेते हैं और अल्लाह की इताअत के बजाए उसकी इताअत करते हैं। गोया उसको अल्लाह के साथ शरीक ठहरा लेते हैं, या उसके बहकाने से दूसरी हस्तियों को अल्लाह का शरीक बना लेते हैं।

आयात 101 से 111 तक

وَاِذَا بَدَّلۡنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ
قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُفۡتَرٍ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝۱۰۱
قُلۡ نَزَّلَهٗ رُوۡحُ الۡقُدُسِ مِنۡ رَّبِّكَ بِالۡحَـقِّ لِيُثَبِّتَ
الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَهُدًى وَّبُشۡرٰى لِلۡمُسۡلِمِيۡنَ ۝۱۰۲ وَلَقَدۡ
نَعۡلَمُ اَنَّهُمۡ يَقُوۡلُوۡنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىۡ
يُلۡحِدُوۡنَ اِلَيۡهِ اَعۡجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِيۡنٌ ۝۱۰۳
اِنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهۡدِيۡهِمُ اللّٰهُ
وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝۱۰۴ اِنَّمَا يَفۡتَرِى الۡكَذِبَ الَّذِيۡنَ

لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ‌ۚ وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡكٰذِبُوۡنَ ۝١٠٥
مَنۡ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ اِيۡمَانِهٖۤ اِلَّا مَنۡ اُكۡرِهَ وَقَلۡبُهٗ
مُطۡمَئِنٌّۢ بِالۡاِيۡمَانِ وَلٰـكِنۡ مَّنۡ شَرَحَ بِالۡـكُفۡرِ صَدۡرًا
فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ‌ۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۝١٠٦
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسۡتَحَبُّوا الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا عَلَى الۡاٰخِرَةِ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡكٰفِرِيۡنَ ۝١٠٧ اُولٰٓـئِكَ
الَّذِيۡنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ وَسَمۡعِهِمۡ وَاَبۡصَارِهِمۡ‌ۚ
وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡغٰفِلُوۡنَ ۝١٠٨ لَا جَرَمَ اَنَّهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ
هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ۝١٠٩ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيۡنَ هَاجَرُوۡا مِنۡۢ
بَعۡدِ مَا فُتِنُوۡا ثُمَّ جٰهَدُوۡا وَصَبَرُوۡۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنۡۢ
بَعۡدِهَا لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝١١٠ يَوۡمَ تَاۡتِىۡ كُلُّ نَفۡسٍ تُجَادِلُ
عَنۡ نَّـفۡسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ وَهُمۡ لَا
يُظۡلَمُوۡنَ ۝١١١

आयत 101

وَاِذَا بَدَّلۡنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ

"और जब हम बदलते हैं एक आयत की जगह दूसरी आयत"

क़ब्ल अज़ यह मज़मून सूरतुल बक़रह (आयत : 106) में बयान हो चुका है: {مَا نَنۡسَخۡ مِنۡ اٰيَةٍ اَوۡ نُنۡسِهَا نَاۡتِ بِخَيۡرٍ مِّنۡهَاۤ اَوۡ مِثۡلِهَا ؕ}। चुनाँचे सूरतुल बक़रह के मुताअले के दौरान इस आयत के तहत इस मज़मून की वज़ाहत भी हो चुकी है।

وَّاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ

"और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह नाज़िल करता है"

क़ुरान का नुज़ूल अल्लाह तआला की हिकमत और मशियत के ऐन मुताबिक़ हो रहा है। अगर कोई मखसूस हुक्म किसी एक दौर के लिये था और फिर बदले हुए हालात में उस हुक्म में तब्दीली की ज़रूरत है तो यह सब कुछ अल्लाह के इल्म के मुताबिक़ है और किसी ख़ास ज़रूरत और हिकमत के तहत ही किसी हुक्म में तब्दीली की जाती है। मगर ऐसी तब्दीली को देखते हुए:

قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُفۡتَرٍ ؕ

"ये (मुशरिकीन) कहते हैं कि आप खुद ही (इसे) गढ़ने वाले हैं"

कि पहले यूँ कहा गया था, अब इसे बदल कर यूँ कह रहे हैं। अगर यह अल्लाह का कलाम होता तो इसमें इस तरह की तब्दीली कैसे मुमकिन थी?

بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۰۱﴾

"बल्कि इनमें से अक्सर इल्म नहीं रखते।"

हक़ीक़त ये है कि इनकी अक्सरियत इल्म से आरी है।

आयत 102

قُلۡ نَزَّلَهٗ رُوۡحُ الۡقُدُسِ مِنۡ رَّبِّكَ بِالۡحَقِّ

"आप कहिये कि इसे नाज़िल किया है रुहुल क़ुदुस ने आपके रब की तरफ़ से हक़ के साथ"

यहाँ पर रुहुल क़ुदुस का लफ़्ज़ हज़रत जिबराईल अलै. के लिये आया है कि एक पाक फ़रिश्ता इस कलाम को लेकर आया है।

لِيُثَبِّتَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

"ताकि वह साबित क़दम रखे अहले ईमान को"

सूरतुल फुरक़ान (आयत 32) में यही मज़मून इस तरह बयान किया गया है: {كَذٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلۡنٰهُ تَرۡتِيۡلًا} "ताकि हम मज़बूत करें इसके साथ आपके दिल को और (इसी लिये) हमने पढ़ सुनाया इसे ठहर-ठहर कर।"

وَهُدًى وَّبُشۡرٰى لِلۡمُسۡلِمِيۡنَ ۝١٠٢

"और ये हिदायत और खुशख़बरी हो फ़रमाबरदारों के लिये।"

जैसे-जैसे हालात में तब्दीली आ रही है, वैसे-वैसे इस क़ुरान के ज़रिये मुसलमानों ले लिये हिदायत व रहनुमाई का अहतमाम किया जा रहा है। मसलन क़िस्सा आदम व इब्लीस जब पहली दफ़ा बयान किया गया तो इसमें वह तफ़सीलात बयान की गईं जो उस वक़्त के मखसूस मअरूज़ी हालात में हुज़ूर ﷺ और मुसलमानों के लिये जानना

ज़रूरी थीं। फिर जब हालात में तब्दीली आई तो यही क़िस्सा कुछ मज़ीद तफ़सीलात के साथ फिर नाज़िल किया गया इसी असूल और ज़रूरत के तहत इसका नुज़ूल बार-बार हुआ ताकि हर दौर के हालात के मुताबिक़ अहले हक़ इसमें से अपनी रहनुमाई के लिये सबक़ हासिल कर सकें।

आयत 103

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ

"और हमें ख़ूब मालूम है कि वह कहते हैं कि इसको तो एक इंसान सिखाता है।"

मुशरिकीन रसूल अल्लाह ﷺ पर एक इल्ज़ाम यह लगा रहे थे कि आपने किसी अज्मी गुलाम को या अहले किताब में से किसी आदमी को अपने घर में छुपा रखा है, जो तौरात का आलिम है। उससे आप ये सारी बातें सीखते हैं और फिर वही के नाम पर हमें सुनाते हैं और हम पर धौंस जमाते हैं।

لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝۱۰۳

"ये लोग जिसकी तरफ़ गलत तौर पर मंसूब कर रहे हैं उसकी ज़बान तो (इनके बक़ौल) अज्मी है और यह (क़ुरान) फ़सीह अरबी ज़बान है।"

चुनाँचे यह इल्ज़ाम लगाते हुए इनको खुद सोचना चाहिये कि कोई अज्मी ऐसी फ़सीह व बलीग़ अरबी ज़बान कैसे बोल सकता है!

आयत 104

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ
اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
﴿١٠٤﴾

"यक़ीनन जो लोग अल्लाह की आयात पर ईमान नहीं रखते, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देगा और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं कि किसी को ज़बरदस्ती खींच कर हिदायत की तरफ़ ले आए।

आयत 105

اِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٥﴾

"झूठ तो वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयात पर ईमान नहीं रखते, और वही लोग हैं जो झूठे हैं।"

आयत 106

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ
اِيْمَانِهٖٓ

"और जो कोई कुफ़्र करे अल्लाह का अपने ईमान लाने के बाद"

इसका इतलाक़ ईमान की दोनों कैफ़ियतों पर होगा। एक यह कि दिल में ईमान आ गया, बात पूरी तरह दिल में बैठ गई, दिल में यक़ीन की कैफ़ियत पैदा हो गई कि हाँ यही हक़ है मगर ज़बान से अभी इक़रार नहीं किया। ईमान की दूसरी कैफ़ियत ये है कि दिल भी ईमान ले आया और ज़बान से ईमान का इक़रार भी कर लिया। चुनाँचे इन दोनों दर्जों में से किसी भी दर्जे में अगर इंसान ने हक़ को हक़ जान लिया, दिल में यक़ीन पैदा हो गया मगर फिर किसी मस्लहत का शिकार हो गया और हक़ का साथ देने से कन्नी कतरा गया तो इस पर इस हुक्म का इतलाक़ होगा।

اِلَّا مَنۡ اُكۡرِهَ وَقَلۡبُهٗ مُطۡمَٮِٕنٌّۢ بِالۡاِيۡمَانِ

"सिवाय इसके कि कोई शख्स मजबूर कर दिया गया हो और उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो"

किसी की जान पर बनी हुई थी और इस हालत में कोई कलमा-ए-कुफ़्र उसकी ज़बान से अदा हो गया, मगर उसका दिल ब-दस्तूर हालाते ईमान में मुत्मईन रहा तो ऐसा शख्स अल्लाह के यहाँ माज़ूर समझा जाएगा।

وَلٰـكِنۡ مَّنۡ شَرَحَ بِالۡكُفۡرِ صَدۡرًا فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ‌ۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۱۰۶﴾

"मगर जिसने खोल दिया कुफ़्र के साथ (अपना) सीना तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का गज़ब है, और उनके लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।"

ऊपर बयान किये गए इस्तशना के मुताबिक़ मजबूरी की हालत में तो कलमा-ए-कुफ़्र कहने वाले को तो माफ़ कर दिया जाएगा (बशर्ते कि उसका दिल ईमान पर पूरी तरह मुत्मईन हो) मगर जो शख्स किसी वजह से पूरे शरह-ए- सद्र के साथ कुफ़्र की तरफ़ लौट गया, वह अल्लाह के गज़ब और बहुत बड़े अज़ाब का मुस्तहिक़ हो गया।

आयत 107

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ

“ये इसलिये कि इन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को महबूब रखा आख़िरत के मुक़ाबले में”

وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٠٧

“और ये (अल्लाह का क़ायदा है) कि अल्लाह ऐसे काफ़िरों को हिदायत नहीं दिया करता।”

आयत 108

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ

“ये वह लोग हैं जिनके दिलों, कानों और आँखों पर अल्लाह ने मोहर कर दी है।”

وَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

"और यही लोग हैं जो ग़ाफ़िल हैं।"

आयत 109

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾

"अब इसमें कोई शक नहीं कि यही लोग हैं जो आख़िरत में खसारे वाले होंगे।"

ये वह लोग हैं जो दुनियवी ज़िन्दगी की मोहब्बत में हक़ से मुहँ मोड़ कर गफ़लत में डूबे हुए हैं। अब इनके इस तर्ज़े अमल का मन्तक़ी नतीजा यह होगा कि आख़िरत की भलाइयों में इनके लिये कोई हिस्सा नहीं होगा।

अगली आयत में फिर हिजरत का ज़िक्र आ रहा है, जो इससे पहले आयत 41 में भी आ चुका है।

आयत 110

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا

"फिर यक़ीनन आपका रब इनके हक़ में जिन्होंने हिजरत की, इसके बाद कि इन्हें तकलीफ़ पहुँचाई गई, फिर इन्होंने जिहाद किया और सब्र किया, यक़ीनन आपका रब इस (सब कुछ) के

وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١٠

बाद बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।"

जिन मोमिनीन पर मक्के में मसाएब (मुसीबतों) के पहाड़ तोड़े गए, इन हालात में उन्होंने हिजरत की, फिर वह जिहाद भी करते रहे, इस तरह राहे हक़ में आने वाली आज़माइशों के तमाम मराहिल उन्होंने कमाल सब्र से तय किये, अल्लाह तआला उन्हें उनकी इन क़ुर्बानियों और सरफ़रोशियों का ज़रूर अज्र देगा। उन्हें बख्शीश अता फ़रमाएगा और उनकी तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाएगा।

आयत 111

يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا

"जिस दिन आएगी हर जान अपनी तरफ़ से मदाफ़अत (बचाव) करते हुए"

रोज़े क़यामत हर शख्स चाहेगा कि किसी ना किसी तरह जहन्नम की सज़ा से उसकी जान छूट जाए। लिहाज़ा इसके लिये वह मुख्तलिफ़ उज़्र पेश करेगा।

وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝١١١

"और (बदले में) पूरा-पूरा दिया जाएगा हर जान को जो कुछ उसने कमाया होगा और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

आयात 112 से 119 तक

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَىِٕنَّةً يَّاْتِيْهَا
رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ
فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا
يَصْنَعُوْنَ ١١٢ وَلَقَدْ جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ
فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ١١٣ فَكُلُوْا مِمَّا
رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۠ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ
كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ١١٤ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ
وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١١٥
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا
حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ١١٦ ۭ
مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۠ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ١١٧ وَعَلَي الَّذِيْنَ
هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا
ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ١١٨ ثُمَّ اِنَّ

رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

आयत 112

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَىِٕنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ

"और अल्लाह ने मिसाल बयान की है एक बस्ती की जो बिल्कुल अमन व इत्मिनान की हालत में थी, आता था उसके पास उसका रिज़्क़ बा-फ़रागत हर तरफ़ से"

فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾

"तो उसने नाशुकरी की अल्लाह की नेअमतों की, तो उसे चखा (पहना) दिया अल्लाह ने लिबास भूख और खौफ़ का, उनके करतूतों की पादाश में।"

इस तम्सील के बारे में मुख्तलिफ़ आराअ हैं। एक राय तो ये है कि यह एक आम तम्सील है और किसी ख़ास बस्ती के मुताल्लिक़ नहीं। कुछ मुफ्फ़सरीन का ख्याल है कि ये क़ौमे सबा की मिसाल है जिसके बारे में तफ़सील आगे चल कर सूरह सबा में आएगी। एक तीसरी राय ये है कि इस मिसाल के आईने में मक्का और अहले मक्का का ज़िक्र है कि ये शहर

हमेशा से अमन व सुकून का गहवारा चला आ रहा था और यहाँ अहले मक्का की तिजारती सरगरमियों और हज व उमरे के इज्तमाआत के बाइस खुशहाली और फ़ारिगुल बाली भी थी। दुनिया भर से अनवाअ व अक़साम का रिज़्क़ फ़रावानी से इनके पास चला आता था, मगर हुज़ूर ﷺ की बेअसत के बाद आपकी दावत का इन्कार करने की पादाश में इस शहर के बाशिंदों पर क़हत का अज़ाब मुसल्लत कर दिया गया था। मक्का में ये क़हत उसी क़ानूने खुदावन्दी के तहत आया था जिसका ज़िक्र सूरतुल अनआम की आयत 42 और सूरतुल आराफ़ की आयत 94 में हुआ है। इस असूल या क़ानून के तहत हर रसूल की बेअसत के बाद मुतालक़ा क़ौम पर छोटे-छोटे अज़ाब आते हैं ताकि उन्हें ख्वाबे गफ़लत से जागने और संभलने का मौक़ा मिल जाए और वह रसूल पर ईमान लाकर बड़े अज़ाब से बच जाएँ।

तावीले ख़ास के ऐतबार से इस मिसाल में यक़ीनन मक्का ही की तरफ़ इशारा है मगर इसकी अमूमी हैसियत भी मद्दे नज़र रहनी चाहिये कि कोई बस्ती भी इस क़ानूने खुदावन्दी की ज़द में आ सकती है। जैसे पाकिस्तान के उरूसुल बिलाद कराची के हालात की मिसाल हमारे सामने है। एक वक़्त वह था जब कराची में अमन व अमान, वासाइले रिज़्क़ की फ़रावनी और खुशहाली की कैफ़ियत मुल्क भर के लोगों के लिये बाइसे कशिश थी, मगर फिर देखते ही देखते ये शहर वही नक्शा पेश करने लगा जिसकी झलक इस आयत में दिखाई गई है। यानि कुफ्राने नेअमत की पादाश में अल्लाह तआला ने इसके बाशिंदों को भूख और खौफ़ का लिबास पहना दिया।

आयत 113

وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡهُمۡ فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَهُمُ الۡعَذَابُ وَهُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۱۳﴾

"और आया इनके पास एक रसूल इन्ही में से तो इन्होंने उसको झुठला दिया, पस आ पकड़ा इन्हें अज़ाब ने और वह खुद ही ज़ालिम थे।"

आयत 114

فَكُلُوۡا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا

"पस (ऐ अहले ईमान) तुम खाया करो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें रिज़्क़ दिया है हलाल और पाकीज़ा चीज़ें"

وَّاشۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ اِيَّاهُ تَعۡبُدُوۡنَ ﴿۱۱۴﴾

"और अल्लाह की नेअमत का शुक्र अदा करो अगर तुम वाक़िअतन उसी की बन्दगी करते हो।"

नोट कीजिये कि अल्लाह की नेअमतों का ज़िक्र मुख्तलिफ़ अंदाज़ में बार-बार इस सूरत में आ रहा है।

आयत 115

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ

"उसने तो बस हराम किया है तुम पर मुर्दार, खून, खंज़ीर का गोश्त और वह चीज़ जिस पर नाम पुकारा जाए अल्लाह के सिवा किसी और का।"

فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٥﴾

"फिर जो कोई मजबूर हो जाए, (लेकिन) ना वह तालिब हो, ना हद से बढ़ने वाला, तो यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।"

यानि इन्तहाई मजबूरी की हालत में, जान बचाने के लिये वक़्ती तौर पर बक़द्रे ज़रूरत इन हराम अशिया को इस्तमाल में लाकर जान बचाई जा सकती है, मगर ना तो दिल में इनकी तलब हो, ना अल्लाह से सरकशी का इरादा, और ना ही ऐसी हालत में वह चीज़ ज़रूरत से ज़्यादा खाई जाए।

आयत 116

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَٰذَا حَلَالٌ وَهَٰذَا حَرَامٌ

"और मत कहो जिसके मुताल्लिक़ तुम्हारी ज़बानें झूठ गढ़ती हैं कि ये हलाल है और ये हराम है"

हलाल और हराम का फ़ैसला करने का हक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला को है। यह एक संजीदा मामला है, इसलिये इस बारे में ग़ैर-मोहतात रवैया इख्तियार नहीं करना चाहिये कि बग़ैर इल्म, दलील और सनद के जो मुहँ में आया कह दिया।

لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ

"ताकि तुम अल्लाह की तरफ़ झूठ मंसूब करो।"

اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۭ ۝١١٦

"यक़ीनन जो लोग अल्लाह की तरफ़ झूठ मंसूब करते हैं वह फ़लाह नहीं पायेंगे।"

आयत 117

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۠ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١١٧

"बरतने का सामान है (दुनियावी ज़िंदगी में) थोड़ा सा, और फिर इन लोगों के लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

आयत 118

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ

"और उन लोगों पर जो यहूदी हुए हमने हराम की थीं (वह चीज़ें) जो हम बयान कर चुके हैं आप पर इससे पहले।"

इस बारे में तफ़सील सूरह आले इमरान 93, निसा 140 और अल अनआम 146 में गुज़र चुकी है। हज़रत याक़ूब अलै. ने अपनी मर्ज़ी से अपने ऊपर ऊँट का गोश्त हराम कर लिया था, जिसकी तामील बाद में वह पूरी क़ौम करती रही। इसके अलावा मुख्तलिफ़ हैवानात की चर्बी भी बनी इसराइल पर हराम कर दी गई थी।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝۱۱۸

"और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म ढहाते रहे।"

आयत 119

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْۗءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۱۹

"फिर यक़ीनन आपका रब इन लोगों के हक़ में जो जहालत से कोई बुरा काम कर बैठें, फिर इसके बाद वह तौबा कर लें और इस्लाह कर लें, तो यक़ीनन आपका रब इसके बाद बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।"

जो लोग जज़्बात की रू में बहकर या नादानी में कोई गुनाह कर बैठें, फिर तौबा करके अपनी इस्लाह कर लें और गलत रविश से बाज़ आ जाएँ तो ऐसे लोगों के हक़ में अल्लाह तआला ज़रूर गफ़ूर व रहीम है।

आयात 120 से 128 तक

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ۙ﴿۱۲۰﴾ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۲۱﴾ وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ
فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ؕ﴿۱۲۲﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ
اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ
﴿۱۲۳﴾ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا
فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ
وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا
عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۲۶﴾
وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا

تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝١٢٧ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ
اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝١٢٨

आयत 120

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۭ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٢٠

"यक़ीनन इब्राहीम एक उम्मत थे, अल्लाह के लिये फ़रमाबरदार और यक्सु, और आप अलै. मुशरिकीन में से नहीं थे।"

उम्मत के लुग्वी मायने क़सद करने के हैं। सूरह युसुफ़ (आयत 45) में उम्मत का लफ्ज़ वक़्त और मुद्दत के लिये भी इस्तेमाल हुआ है {وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ}। वक़्त और ज़माने के भी हम पीछे चलते हैं तो गोया इसका क़सद करते हैं। इसी तरह रास्ते पर चलते हुए भी इंसान इसका क़सद करता है। इस हवाले से लफ्ज़ उम्मत वक़्त और रास्ते के लिये भी इस्तेमाल होता है। इसी तरह जब बहुत से लोग एक नज़रिये का क़सद करके इकठ्ठा हो जाएँ तो उन्हें भी उम्मत कहा जाता है, यानि हम-मक़सद लोगों की जमात। चुनाँचे इसी मायने में सूरह बक़रह में फ़रमाया गया है: {وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَاۗءَ عَلَي النَّاسِ} (आयत 143)। इस लिहाज़ से आयत ज़ेरे नज़र में उम्मत का मफ़हूम ये होगा कि हज़रत इब्राहीम अलै. एक रास्ता बनाने वाले, और एक रेत डालने वाले थे, और इस तरह आप अपनी ज़ात में गोया एक उम्मत थे। जब दुनिया में कोई मुसलमान ना था और पूरी दुनिया कुफ़्र के

रास्ते पर गामज़न थी तो आप तने-तन्हा इस्लाम के अलम्बरदार थे।

आयत 121

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝۱۲۱

"शुक्रगुज़ार थे उसकी नेअमतों के। अल्लाह ने उनको पसंद कर लिया था और उनको हिदायत दी थी सीधी राह की तरफ़।"

आयत 122

وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝۱۲۲ؕ

"और उनको हमने दुनिया में भी भलाई अता की थी, और यक़ीनन आख़िरत में भी वह नेक बन्दों में से होंगे।"

आयत 123

ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

"फिर (ऐ मोहम्मद صلى الله عليه وسلم!) हमने वही की आपकी तरफ़ कि पैरवी कीजिये मिल्लते इब्राहीम की यक्सु होकर, और वह हरगिज़ मुशरिकीन में से ना थे।"

حَنِيۡفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿۱۲۳﴾

आयत 124

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبۡتُ عَلَى الَّذِيۡنَ اخۡتَلَفُوۡا فِيۡهِ ؕ

"हफ़्ते का दिन तो उन्हीं लोगों के लिये मुअयन किया गया था जिन्होंने इसमें इख्तिलाफ़ किया था।"

दरअसल बनी इसराईल के लिये अल्लाह तआला ने इबादत के लिये जुमे का दिन ही मुक़र्रर फ़रमाया था, मगर उन्होंने अपनी शरारत की वजह से इसकी नाक़द्री की और इसे छोड़ कर हफ़्ते का दिन इख़्तियार कर लिया। चुनाँचे बाद में अल्लाह तआला ने उनके लिये इस हैसियत में हफ़्ते का दिन ही मुक़र्रर कर दिया।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحۡكُمُ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كَانُوۡا فِيۡهِ يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۱۲۴﴾

"और यक़ीनन आपका रब उनके माबैन फ़ैसला करेगा क़यामत के दिन उन चीज़ों में जिनमें वह इख्तिलाफ़ करते थे।"

आयत 125

ادۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ بِالۡحِکۡمَۃِ وَ الۡمَوۡعِظَۃِ الۡحَسَنَۃِ

“आप दावत दीजिये अपने रब के रास्ते की तरफ़ दानाई और अच्छी नसीहत के साथ”

ये दावत इलल हक़ का तरीक़ा और इसके आदाब का ज़िक्र है, जैसा कि सूरह यूसुफ़ में फ़रमाया गया है: {قُلۡ هٰذِهٖ سَبِیۡلِیۡۤ اَدۡعُوۡۤا اِلَی اللّٰهِ ۟ؔ عَلٰی بَصِیۡرَۃٍ اَنَا وَ مَنِ اتَّبَعَنِیۡ ؕ} (आयत 108) “(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये कि ये मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुला रहा हूँ पुरी बसीरत के साथ, मैं खुद भी और मेरे पैरोकार भी (इस रास्ते पर गामज़न हैं)।”

وَ جَادِلۡهُمۡ بِالَّتِیۡ هِیَ اَحۡسَنُ ؕ

“और इनसे बहस कीजिये बहुत अच्छे तरीक़े से।”

اِنَّ رَبَّکَ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِیۡلِهٖ وَ هُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِیۡنَ ﴿۱۲۵﴾

“यक़ीनन आपका रब ख़ूब वाक़िफ़ है उनसे जो उसके रास्ते से भटक गए हैं और वह ख़ूब जानता है उनको भी जो राहे हिदायत पर हैं।”

अपने मौज़ू के हवाले से ये बहुत अज़ीम आयत है। इसमें इंसानी मआशरे के अन्दर इंसानों की तीन बुनियादी अक़साम के हवाले से दावते दीन के तीन मदारज बयान किये गए हैं, मगर आमतौर पर इस आयत का तरजुमा और तशरीह करते हुए इस पहलु को उजागर नहीं किया जाता।

किसी भी मआशरे में इल्म व दानिश की बुलंद तरीन सतह पर वह लोग होते हैं जिन्हें उस मआशरे का दानिशवर तबक़ा (intelligentsia) या ज़हीन अक़लियत (intellectual minority) कहा जाता है। इस तबक़े की हैसियत उस मआशरे या क़ौम के दिमाग़ की सी होती है। ये लोग अगरचे तादाद के लिहाज़ से बहुत छोटी अक़लियत पर मुश्तमिल होते हैं मगर किसी मआशरे की मज्मुई सोच और उसके मिज़ाज का रुख मुतअय्यन करने में उनका किरदार या हिस्सा फ़ैसलाकुन हैसियत का हामिल होता है। इन लोगों को जज़्बाती तक़ारीर और खुशकुन वअज़ मुतास्सिर नहीं कर सकते, बल्कि ऐसे लोग किसी सोच या नज़रिये को क़ुबूल करते हैं तो मुसद्दक़ा इल्मी व मन्तक़ी दलील से क़ुबूल करते हैं और अगर रद्द करते हैं तो ऐसी ही ठोस दलील से रद्द करते हैं।

आयत ज़ेरे नज़र में बयान करदा पहला दर्जा ऐसे ही लोगों के लिये है और वह है "हिकमत।" यह इल्म व अक़्ल की पुख्तगी की बहुत आला सतह है। सूरतुल बक़रह की आयत 269 में अल्लाह तआला ने हिकमत को "खैर कसीर" क़रार दिया है {وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا}। क़ुरान में तीन मक़ामात (बक़राह 129, आले इमरान 164 और जुमा 2) पर इन मराहिल और दरजात का ज़िक्र किया गया है जिनके तहत हुज़ूर ﷺ ने अपने सहाबा रज़ि. की तरबियत फरमाई। इनमें बुलंद तरीन मरहला या दर्जा हिकमत का है। हिकमत के सबब किसी इंसान की सोच और इल्म में पुख्तगी आती है, उसकी गुफ्तगू में जामियत पैदा होती है और उसकी तजज़ियाती अहलियत बेहतर हो जाती है। इस तरह वह किसी से बात करते हुए या किसी को दीन की दावत देते

हुए मारूज़ी सूरते हाल, मुखातब के ज़हनी रुझान और तरजीहात का दुरुस्त तजज़िया करने के बाद अपनी गुफ्तगू के निकात और दलाइल को तरतीब देता है। उसे ख़ूब अंदाज़ा होता है कि किस वक़्त उसे क्या पेश करना है और किस अंदाज़ में पेश करना है। कौनसा नुक्ता बुनियादी हैसियत का दर्जा रखता है और कौनसी दलील सानवी अहमियत की हामिल है। बहरहाल किसी भी मआशरे के वह लोग जो इल्म, अक़्ल और शऊर में ग़ैर मामूली अहलियत के हामिल हों, उनको दावत देने के लिये भी किसी ऐसे दाई की ज़रूरत है जो खुद भी इल्म व हिकमत के आला मक़ाम पर फ़ाइज़ हो और उनसे बराबरी की सतह पर खड़े होकर बात कर सके। क्योंकि जब क़ुरान अपने मुखालफ़ीन को चैलेंज करता है {هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ} (सूरतुल बक़रह 111)। "अपनी दलील लाओ अगर तुम वाक़ई सच्चे हो।" तो ऐसी सूरत में हमारे मुखालफ़ीन को भी हक़ है कि वह भी हमसे दलील माँगें और हमारा फ़र्ज़ है कि हम अक़्ल और मन्तक़ की आला से आला सतह पर उनकी तसल्ली व तशफ़ी का सामान फ़राहम करें। लिहाज़ा आयत ज़ेरे नज़र में दावत व तब्लीग का पहला दर्जा हिकमत बयान किया गया है जिसका हक़ अदा करने के लिये दाई का साहिबे हिकमत और हकीम होना लाज़मी है।

हिकमत के बाद दूसरा दर्जा "मौअज़ा-ए-ह'सना" का है, यानि अच्छा खूबसूरत वअज़। यह दर्जा अवामुन्नास के लिये है। किसी भी मआशरे में अक्सरियत ऐसे लोगों पर मुश्तमिल होती है जिनके ज़हनो में अक़्ल और मन्तिक़ की छलनियाँ नहीं लगी होतीं। चुनाँचे ऐसे लोगों के लिये मन्तक़ी मुबाहिस और फ़लसफ़ियाना तक़ारीर "तकलीफ़ मा

ला यताक़" के मुतरादिफ़ हैं। इनके दिल खुली किताब और ज़हन साफ़ सलेट की मानिंद होते हैं, आप इन पर जो लिखना चाहें लिख लें। ऐसे लोगों को दावत देने के लिये उनके जज़्बात को अपील करने की ज़रूरत होती है। ये पुर तासीर वअज़ और ख़ुलूस व हमदर्दी से की गई बात से मुतास्सिर हो जाते हैं। इनको अहसास हो जाता है कि दाई हम पर अपने इल्म का रौब नहीं डालना चाहता, हम पर धौंस नहीं जमाना चाहता, वह हमसे इज़हारे नफ़रत नहीं कर रहा, हमारी तहक़ीर नहीं कर रहा, बल्कि इसकी पेशेनज़र हमारी खैरख्वाही है। चुनाँचे दाई के दिल से निकली हुई बात "अज़ दिल खैज़द, बर दिल रैज़द" के मिस्दाक़ सीधी इनके दिलों में उतर जाती है।

दावते हक़ का तीसरा दर्जा {وَجَادِلۡهُمۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُؕ} उन अनासिर के लिये है जो किसी मआशरे में खल्क़-ए-ख़ुदा को गुमराह करने के मिशन के अलम्बरदार होते हैं। आज-कल बहुत सी तंज़ीमों की तरफ़ से बाक़ायदा पेशावाराना तरबियत से ऐसे लोग तैयार करके मैदान में उतारे जाते हैं। ये लोग ख़ुलूस व इख्लास से की गई बात को किसी क़ीमत पर मानने के लिये तैयार नहीं होते। हर हाल में अपने नज़रिये और मौक़फ़ की तरफ़दारी करना इन लोगों की मजबूरी होती है, चाहे वह किसी इल्मी व अक़्ली दलील से हो या हठधर्मी से। ऐसे लोगों को मुस्कित जवाब देकर लाजवाब करना ज़रूरी होता है, वरना बाज़ अवक़ात अवामी सतह के इज्तमाआत में उनकी बहस बराए बहस की पालिसी बहुत ख़तरनाक हो सकती है, जिससे अवामुन्नास के ज़हन मनफ़ी तौर पर मुतास्सिर हो सकते हैं। ऐसे लोगों से बहस व मुबाहिसा के अमल को हमारे यहाँ

"मुनाज़रा" कहा जाता है, जबकि क़ुरान ने इसे "मुजादला" कहा है। बहरहाल क़ुरान ने अपने पैरोकारों के लिये इसमें भी आला मैयार मुक़र्रर कर दिया है कि मुखालफ़ीन से मुजादला भी हो तो अहसन अंदाज़ में हो। अगर आपका मुखालिफ़ किसी तौर से घटियापन का मुज़ाहिरा भी करे तब भी आपको जवाब में अच्छे अख्लाक़ का दामन हाथ से छोड़ने की इजाज़त नहीं, जैसा कि सूरतुल अनआम की आयत नम्बर 108 में हुक्म दिया गया: {وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ} "और जिनको ये (मुशरिक) अल्लाह के सिवा पुकारते हैं इन्हें बुरा-भला ना कहो कि कहीं ये भी बगैर सोचे समझे मुखालफ़त में अल्लाह को बुरा-भला कहने लग जाएँ।" आज-कल मुख्तलिफ़ मज़ाहिब की तंज़ीमें मसलन इसाई मिशनरीज़ बाक़ायदा मंसूबा बंदी के तहत इस्लाम को हदफ़ बनाने के लिये कुछ ख़ास मौज़ुआत और मसाइल को एक मख्सूस अंदाज़ में पेश करती हैं। ये लोग ऐसे मौज़ुआत व मसाइल पर मुनाज़रे करने के लिये बाक़ायदा ट्रेनिंग के ज़रिये स्पेशलिस्ट (specialist) तैयार करते हैं। ऐसे पेशावाराना लोगों के मुक़ाबले और मुजादले के लिये दाईयाने हक़ को ख़ुसूसी तालीम व तरबियत देने की ज़रूरत है।

आयत 126

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۭ

"और (ऐ मुसलमानों!) अगर तुम बदला लो तो इसी क़दर जिस क़दर तुम्हें तक़लीफ़ दी गई हो।"

وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾

“और अगर तुम सब्र करो तो ये सब्र करने वालों के हक़ में बेहतर है।”

आयत 127

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ

“और (ऐ नबी ﷺ!) आप सब्र कीजिये और आपका सब्र तो अल्लाह ही के सहारे पर है”

ये हुक्म बराहेरास्त रसूल अल्लाह ﷺ के लिये है और आप ﷺ की वसातत से तमाम मुसलमानों के लिये भी। इस सिलसिले में हक़ीक़त ये है कि अल्लाह पर जिस क़दर ऐतमाद होगा, जैसा उस पर तवक्कुल होगा, जितना पुख्ता उसके वादों पर यक़ीन होगा, इसी अंदाज़ में इंसान सब्र भी कर सकेगा।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

“और आप इन पर गम ना करें, और ना आप तंगी में पड़ें, इस बारे में जो साज़िशें ये लोग कर रहे थे।”

ये लोग अपने करतूतों के सबब अज़ाब के मुस्तहिक़ हो चुके हैं। चुनाँचे आप इनके अंजाम के बारे में बिल्कुल रंजीदा और फ़िक्रमन्द ना हों और ना ही इनकी साज़िशों और घटिया मआन्दाना सरगर्मियों के बारे में सोच कर आप अपना दिल मैला करें।

आयत 128

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾

"यक़ीनन अल्लाह अहले तक़वा और नेकोकारों के साथ है।"

जो लोग तक़वे की रविश इख़्तियार करते हुए दर्जा-ए-अहसान पर फ़ाइज़ हो गए हैं, अल्लाह की मईयत (साथ), नुसरत और ताईद उनके शामिले हाल रहेगी। चुनाँचे जब अल्लाह तआला आप लोगों के साथ होगा तो ये मुशरिकीन आपको कुछ गज़न्द नहीं पहुँचा सकते।

क्या डर है अगर सारी खुदाई है मुखालिफ़
काफ़ी है अगर एक ख़ुदा मेरे लिये है!

بارك الله لی ولكم فی القرآن العظيم ونفعنی وایاكم بالآيات والذكر الحكيم۔

❀ ❀ ❀

सूरह बनी इस्राईल

तम्हीदी कलिमात

सूरह बनी इस्राईल और सूरतुल कहफ़ दोनों मिलकर एक हसीन व जमील जोड़ा बनाती हैं। क़ुरान अज़ीम के वस्त (बीच) में यह दो सूरतें हिकमते क़ुरानी के दो अज़ीम ख़जाने हैं। इन दोनों के माबैन (दरम्यान) कई हवालों से मुशाबिहत भी पाई जाती है और कई पहलुओं से इनकी आपस में निस्बते ज़ौजियत भी ज़ाहिर होती है। यह दोनों सूरतें किस-किस ऐतबार से complementary हैसियत रखती हैं यह बात इनके मुताअले के दौरान वाज़ेह हो जायेगी, ताहम इस सिलसिले में अहम निकात दर्ज ज़ेल हैं:

(1) सूरह बनी इस्राईल का आग़ाज़ अल्लाह की तस्बीह {سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ ..} से होता है, जबकि सूरतुल कहफ़ भी अल्लाह की तहमीद {اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡۤ ..} से शुरू होती है। इन दोनों कलिमात का बाहमी ताल्लुक़ इस हदीस से वाज़ेह होता है जिसमें हुज़ूर अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया है: ((اَلتَّسۡبِیۡحُ نِصۡفُ الۡمِیۡزَانِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ یَمۡلَؤُہٗ))(16) "तस्बीह निस्फ़ मीज़ान है और अलहम्दुलिल्लाह उसे भर देता है।" यानि सुब्हान अल्लाह कहने से मअरफ़ते खुदावंदी की मीज़ान आधी हो जाती है और अलहम्दु-लिल्लाह कहने से यह मीज़ान मुकम्मल तौर पर भर जाती है। गोया यह दोनों कलिमात मिल कर किसी इंसान के दिल

में अल्लाह तआला की मअरफ़त के असासे की तक्मील करते हैं। आगे चल कर अल मुसब्बिहात (वो सूरतें जिनका आग़ाज़ अल्लाह की तस्बीह से होता है) के मुताअले के दौरान इस मज़मून पर तफ़सील से रौशनी डाली जायेगी।

(2) सूरह बनी इस्राईल की पहली आयत में मज़कूर है कि "अल्लाह अपनें बन्दे को ले गया" जबकि सूरतुल कहफ़ की पहली आयत में फ़रमाया कि "अल्लाह ने अपने बन्दे पर किताब उतारी।" गोया दोनों मक़ामात की बाहम मुतलाज़िम (reciprocal) निस्बत है।

(3) दोनों सूरतों की इब्तदाई आयात में नबी अकरम ﷺ के लिए रसूल के बजाय अब्द का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है।

(4) सूरह बनी इस्राईल की आखरी दो आयात का आग़ाज़ लफ़्ज "क़ुल" से होता है और इसी तह सूरतुल कहफ़ की आखरी दो आयात भी लफ़्ज़ "क़ुल" से शुरू होती हैं। नेज़ इन दोनों मक़ामात की दो-दो आयात के मज़ामीन में बाहम मुतलाज़िम (reciprocal) निस्बत है।

(5) यह दोनों सूरतें रेल के डिब्बों की तरह आपस में जुड़ी हुई (inter locked) हैं। वो इस तरह कि सूरह बनी इस्राईल की आख़री आयत एक हुक्म पर ख़त्म हो रही है: {وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ ....} "और कहिये कि कुल हम्द और कुल तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है...." जबकि सूरतुल कहफ़ की पहली आयत के

मज़मून से यूँ लगता है जैसे यह इस हुक्म की तामील में नाज़िल हुई है: {اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ ....}

मज़मून और मौज़ू के ऐतबार से सूरह बनी इस्राईल का पहला रुकूअ बहुत अहम और अज़ीम है। इस रुकूअ में बनी इस्राईल की तारीख़ के उन चार अदवार का तज़किरा है जो हुज़ूर ﷺ की बेअसत तक गुज़र चुके थे। यहाँ बनी इस्राईल की दो हज़ार सालह तारीख़ को चार आयात के अंदर समो कर गोया उम्मते मुस्लिमा के लिये एक आईना फ़राहम कर दिया गया है। इस आईने को सामने रख कर हम अपने माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल का जायज़ा ले सकते हैं। इसकी वज़ाहत इस हदीसे नबवी ﷺ में मिलती है जिसमें हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: ((لَیَاْتِیَنَّ عَلٰی اُمَّتِیْ مَا اَتٰی عَلٰی بَنِیْٓ اِسْرَاءِیْلَ حَذْوَ النَّعْلِ بِالنَّعْلِ...))[17] "मेरी उम्मत पर भी वो तमाम हालात वारिद होकर रहेंगे जो बनी इस्राईल पर वारिद हुए, बिल्कुल उसी तरह जैसे एक जूती दूसरी जूती के मुशाबेह होती है....." इस हदीस में जूती के दोनों पाँवों की मुशाबिहत की यह मिसाल उस अटल हक़ीक़त की तरफ़ इशारा करती है कि उरूज व ज़्वाल के जो चार अदवार बनी इस्राईल पर गुज़र चुके हैं बिल्कुल ऐसे ही चार अदवार उम्मते मुस्लिमा पर भी वारिद होंगे। इस पहलू से देखा जाये तो सूरह बनी इस्राईल की इन चार आयात (4 से 7) में इल्म व मअरफ़त और मालूमात का एक ख़ज़ाना पोशीदा है, जबकि मज़कूरा बाला हदीस इस ख़ज़ाने की चाबी है। मुझे अल्लाह तआला के फ़ज़ल और उसकी तौफ़ीक़ से इस चाबी की मदद से इस ख़ज़ाने तक रसाई मिली है, जिसके नतीजे में मेरे लिए इन बेश बहा इल्मी व तारीख़ी मालूमात को ज़ब्त तहरीर में लाना मुमकिन हुआ है। चुनाँचे इस मौज़ू पर मेरा एक मुख़्तसर

किताबचा "तंज़ीमे इस्लामी का तारीख़ी पस मंज़र" के नाम से और एक मुफ़स्सल किताब "साबक़ा और मौजूदा मुसलमान उम्मतों का माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल" के उन्वान से दस्तयाब हैं।
इन दोनों मतबुआत के इंग्लिश तराजिम भी Rise and Decline of the Muslim Ummah और Lessons from History के उन्वानात से तबअ होते हैं। (इस मौज़ू को समझने के लिये इन कुतुब का मुताअला मुफ़ीद होगा।)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आयात 1 से 10 तक

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ
الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ
لِنُرِیَہٗ مِنۡ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّہٗ ہُوَ السَّمِیۡعُ الۡبَصِیۡرُ ﴿۱﴾ وَ اٰتَیۡنَا
مُوۡسَی الۡکِتٰبَ وَ جَعَلۡنٰہُ ہُدًی لِّبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اَلَّا
تَتَّخِذُوۡا مِنۡ دُوۡنِیۡ وَکِیۡلًا ﴿۲﴾ؕ ذُرِّیَّۃَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ
نُوۡحٍ ؕ اِنَّہٗ کَانَ عَبۡدًا شَکُوۡرًا ﴿۳﴾ وَ قَضَیۡنَاۤ اِلٰی بَنِیۡۤ
اِسۡرَآءِیۡلَ فِی الۡکِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِی الۡاَرۡضِ مَرَّتَیۡنِ
وَ لَتَعۡلُنَّ عُلُوًّا کَبِیۡرًا ﴿۴﴾ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰىہُمَا

بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا
خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝۵ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ
الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ
وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝۶ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ
لِاَنْفُسِكُمْ ۣ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ۭ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ
لِيَسُوْۗءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ
اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ۝۷ عَسٰى
رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝۸ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ
هِىَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ
الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝۹ۙ وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝۱۰ۧ

आयत 1

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ

"पाक है वह ज़ात जो ले गई रातों-रात अपने बंदे (صلی اللہ علیہ وسلم) को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा (दूर की मस्जिद) तक"

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى
الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا

यह रसूल अल्लाह ﷺ के सफ़र-ए-मैराज के पहले मरहले की तरफ इशारा है जो मस्जिदे हराम (मक्का मुकर्रमा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक़दस) तक के ज़मीनी सफ़र पर मुश्तमिल था। “सुब्हान” तन्ज़िये का कलिमा है, यानि अल्लाह तआला की ज़ात हर नुक़्स व ऐब से पाक व मन्ज़ा है। इस कलिमे से बात का आग़ाज़ करना ख़ुद दलालत करता है कि यह कोई बहुत बड़ा खर्क़े आदत वाक़िया था जो अल्लाह तआला की ग़ैर महदूद क़ुदरत से रू नुमा हुआ। यह महज़ एक रुहानी तजुर्बा ना था, बल्कि एक जिस्मानी सफ़र और ऐनी मुशाहिदा था जो अल्लाह तआला ने नबी अकरम ﷺ को कराया।

الَّذِیْ بٰرَکْنَا حَوْلَهٗ

“जिसके माहौल को हमने बा-बरकत बनाया”

इस इलाक़े की बरकत दुनियवी ऐतबार से भी है और रूहानी ऐतबार से भी। दुनियवी ऐतबार से यह इलाक़ा बहुत ज़रख़ेज़ है और यहाँ की आब-ओ-हवा ख़ुसूसी तौर पर बहुत अच्छी है। रूहानी ऐतबार से देखें तो यह इलाक़ा बहुत से जलीलुल क़द्र अंबिया अलै. का मसकन रहा है और हज़रत इब्राहीम अलै. समेत बहुत से अंबिया यहाँ मदफ़ून हैं। हैकल-ए-सुलेमानी बनी इस्राईल की मरकज़ी इबादत गाह थी। इस लिहाज़ से ना मालूम अल्लाह के कैसे-कैसे नेक बंदे किस-किस अंदाज़ में यहाँ इबादत करते रहे होंगे। इसके अलावा बैतुल मक़दस को बनी इस्राईल के क़िब्ले की हैसियत भी

हासिल थी। चुनाँचे माद्दी व रूहानी दोनो ऐतबार से इस इलाक़े को अल्लाह तआला ने बहुत ज़्यादा बरकतों से नवाज़ा है।

सफ़र-ए-मैराज के पहले मरहले में रसूल अल्लाह ﷺ को मक्का मुकर्रमा से येरुशलम ले जाया गया, वहाँ बैतुल मक़दस में तमाम अंबिया की अरवाह को जमा किया गया, उन्हें जसद (जिस्म) अता किए गये (हमारे हवास इस कैफ़ियत का इदराक करने से क़ासिर हैं) और वहाँ हज़ूर ﷺ ने तमाम अंबिया की इमामत फ़रमाई। हज़ूर ﷺ के सफ़र-ए-मैराज के इस हिस्से का ज़िक्र जिस अंदाज़ में यहाँ हुआ है इसकी एक ख़ुसूसी अहमियत है। यह गोया ऐलान है कि नबी आख़िरुज्ज़माँ ﷺ और आपकी उम्मत को तौहीद के इन दोनों मराकिज़ (बैतुल्लाह और बैतुल मक़दस) का मुतवल्ली बनाया जा रहा है। इस हवाले से आप ﷺ को पहले बैतुल मक़दस ले जाया गया और फिर वहाँ से आप ﷺ के आसमानी सफ़र का मरहला शुरू हुआ। सफ़र-ए-मैराज के इस दूसरे मरहले का ज़िक्र बहुत इख्तिसार के साथ सूरतुन्ननज्म में किया गया है।

لِنُرِيَهُ مِنْ اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ①

"ताकि हम दिखाएँ उस (बंदे मुहम्मद ﷺ) को अपनी निशानियाँ। यक़ीनन वही है सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला।"

बनी इस्राईल के अहम तरीन तारीख़ी मक़ाम का ज़िक्र करने के बाद अब आइंदा आयात में बात को आगे बढ़ाते हुए उनकी तारीख का हवाला दिया जा रहा है।

आयत 2

وَاٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ وَجَعَلۡنٰهُ هُدًى لِّبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

"और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और हमने उसे हिदायत बनाया बनी इस्राईल के लिए"

यहाँ तख्सीस कर दी गई कि तौरात तमाम बनी नौए इंसान के लिए हिदायत नहीं थी, बल्कि दरहक़ीकत वो सिर्फ़ बनी इस्राईल के लिए एक हिदायत नामा थी।

اَلَّا تَتَّخِذُوۡا مِنۡ دُوۡنِىۡ وَكِيۡلًا ؕ‏ ﴿۲﴾

"कि तुम मत बनाओ मेरे सिवा किसी को कारसाज़।"

यानि तौरात तौहीद का दर्स देती थी। इसकी तालीमात का लुब्बे-लुबाब यह था कि अल्लाह के सिवा किसी भी दूसरी हस्ती या ज़ात को अपना कारसाज़ मत समझो, उसे छोड़ कर किसी दूसरे पर भरोसा या तवक्कुल ना करो।

आयत 3

ذُرِّيَّةَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ‌ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبۡدًا شَكُوۡرًا‏ ﴿۳﴾

"ऐ उन लोगों की औलाद जिन्हें हमने सवार कराया था नूह अलै. के साथ। यकीनन वह हमारा बहुत ही शुक्रगुज़ार बंदा था।"

हज़रत नूह अलै. के तीन बेटे साम, हाम और याफ़िस थे जिनसे बाद में नस्ले इंसानी चली। उनमें से हज़रत साम की

नस्ल में हज़रत इब्राहीम अलै. पैदा हुए, जिनकी औलाद को यहाँ बनी इस्राईल के तौर पर मुख़ातिब किया जा रहा है। उन्हें याद दिलाया जा रहा है कि हज़रत नूह अलै. के साथ जिन लोगों को हमने बचाया था उन्हीं में से एक की औलाद तुम हो और नूह हमारा बहुत ही शुक्रगुज़ार बंदा था।

आयत 4

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ④

"और हमने मुतनब्बा (ख़बरदार) कर दिया था बनी इस्राईल को किताब में कि तुम ज़मीन में दो मरतबा फ़साद मचाओगे और बहुत बड़ी सरकशी करोगे।"

यानि तुम पर दो अदवार (वक़्त) ऐसे आयेंगे कि तुम ज़मीन में सरकशी करोगे, फ़साद बरपा करोगे, दीन से दूर हो जाओगे, लह्व व लअब में मुब्तला हो जाओगे, और फिर इसके नतीजे में अल्लाह की तरफ़ से तुम पर अज़ाब के कोड़े बरसेंगे।

यहाँ पर बैयनल सतूर यह इशारा भी है कि इससे पहले बनी इस्राईल पर एक बेहतर दौर भी आया था जिसमें अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी रहमतों और नेअमतों से नवाज़ा था। सूरतुल बक़रह में उनके इस अच्छे दौर की कुछ तफ्सीलात हम पढ़ आये हैं। याद दिहानी के तौर पर अहम वाक़ियात इख़्तसार के साथ यहाँ फिर ताज़ा कर लें। हज़रत

मूसा अलै. 1400 क़ब्ल मसीह में बनी इस्राईल को मिस्र से लेकर निकले थे। सहरा-ए-सीना में जबल (पहाड़) तूर के पास पड़ाव के ज़माने में आपको तौरात अता की गई। वहाँ से फिर शिमाल मशरिक़ की तरफ़ कूच करने और फ़लस्तीन पर हमलावर होने का हुक्म दिया गया। जिहाद के इस हुक्म से इंकार की पादाश में बनी इस्राईल को सहरा नूरदी की सज़ा मिली। इस दौरान में हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलै. दोनों का यके बाद दीगरे (एक के बाद एक) इन्तेक़ाल हो गया। सहरा नूरदी के दौरान परवान चढ़ने वाली नस्ल बहादुर और जफ़ाकश थी। उन्होंने हज़रत मूसा अलै. के खलीफ़ा हज़रत यूशा बिन नून की सरकर्दगी में जिहाद किया जिसके नतीजे में फ़लस्तीन फ़तह हो गया। फ़लस्तीन का जो शहर सबसे पहले फ़तह हुआ वो अरीहा (Jericho) था। फ़लस्तीन की फ़तह के बाद एक बुनिादी गलती यह हुई कि एक मज़बूत मरकज़ी हुकूमत बनाने के बजाय यह इलाक़ा बनी इस्राईल के बारह क़बीलों ने आपस में बाँट लिया और हर क़बीले ने अपनी हुकूमत क़ायम कर ली। यह छोटी-छोटी हुकूमतें ना सिर्फ़ बैरूनी दुश्मनों के मुक़ाबले में बहुत कमज़ोर थीं बल्कि बहुत जल्द उन्होंने आपस में भी लड़ना-झगड़ना शुरू कर दिया, जिसके नतीजे में उनके ज़ेरे तसल्लुत (supermacy) इलाक़े बहुत जल्द इंतशार और तवायफ़ल मलूकी का शिकार हो गये। इन हालात को देखते हुए शाम और उरदन के हमसाया इलाक़ों में बसने वाली मुशरिक अक़वाम ने उन पर तसल्लुत हासिल करके उनकी बेशतर आबादी को उस इलाक़े से निकाल बाहर किया।

इस हालत को पहुँचने पर उन्होंने अपने नबी हज़रत सुमोईल अलै. से मुतालबा किया कि उनके लिए एक बादशाह या सिपहसालार मुक़र्रर कर दें ताकि उसकी

क़यादत में तमाम क़बीले इकट्ठे होकर जिहाद करें। इस मुतालबे के जवाब में अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत तालूत को उनका बादशाह मुक़र्रर किया गया। हज़रत तालूत ने दुश्मन अफ़वाज के खिलाफ़ लश्करकशी की, जिनका सिपहसालार जालूत था। इस जंग में हज़रत दाऊद अलै. भी शामिल थे। आप (हज़रत दाऊद अलै.) ने जालूत को क़त्ल कर दिया, जिसके नतीजे में दुश्मन लश्कर पर बनी इस्राईल को फ़तह नसीब हुई और वो इलाक़े में एक मज़बूत हुकूमत क़ायम करने में कामयाब हो गये। हज़रत तालूत के बाद हज़रत दाऊद अलै. उनके जानशीन हुए और हज़रत दाऊद के बाद आपके बेटे हज़रत सुलेमान अलै. बादशाह बने।

हज़रत यूशा बिन नून की क़यादत में फ़लस्तीन के फ़तह होने से लेकर तालूत और जालूत की जंग तक तीन सौ साल का वक़्फ़ा है। हज़रत सुलेमान का अहदे हुकूमत इस तीन सौ साला दौर का का नुक़्ता-ए-उरूज था। हज़रत तालूत, हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान अलै. का दौर-ए-इक़तदार तक़रीबन एक सौ साल के अर्से पर मुहीत था। सोलह बरस तक हज़रत तालूत ने हुकूमत की, इसके बाद 40 बरस तक हज़रत दाऊद और फिर 40 बरस तक ही हज़रत सुलेमान बरसर इक़तदार रहे। यह दौर गोया बनी इस्राईल की खिलाफ़ते राशिदा का दौर था जो हमारे दौरे खिलाफ़ते राशिदा से मुमासलत (similarity) रखता है। अग़रचे उनकी पहली तीन खिलाफ़तें एक सौ वर्ष के अर्से पर मुहीत थीं और हमारी उम्मत की पहली तीन खिलाफ़तों का अरसा चौबीस बरस था, लेकिन जिस तरह उनके पहले ख़लीफ़ा का दौरे इक़तदार मुख्तसर और बाद के दोनों ख़ुल्फ़ाअ का दौर निस्बतन तवील था इसी तरह हमारे यहाँ

भी हज़रत अबुबक्र रज़ि. का दौरे खिलाफ़त मुख़्तसर, जबकि हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ि. का दौर निस्बतन तवील था। इसके बाद हज़रत अली रज़ि. की खिलाफ़त को अमीर माविया रज़ि. ने क़ुबूल नहीं किया था, चुनाँचे शाम और मिस्र के इलाक़े अलैहदा रहे थे, बिल्कुल इसी तरह बनी इस्राईल की मम्लकत भी हज़रत सुलेमान अलै. की वफ़ात के बाद आपके दो बेटों के दरमियान तक़सीम हो गई। शिमाली मम्लकत का नाम इस्राईल था जिसका दारुल ख़िलाफ़ा सामरिया था, जबकि जुनूबी मम्लकत का नाम यहूदिया था और इसका दारुल खिलाफ़ा येरुशलम था।

इस अज़ीम सल्तनत की तक़सीम के बाद भी माद्दी ऐतबार से एक अर्से तक बनी इस्राईल का उरूज बरक़रार रहा, लेकिन रफ्ता-रफ्ता अवाम में मुशरिकाना अक़ाइद, अवहाम परस्ती और हवस-ए-दुनिया जैसी नज़रियाती व अखलाक़ी बीमारियाँ पैदा हो गईं, और अहकाम-ए-शरीअत का इस्तहज़ाअ (मज़ाक उड़ाना) उनका इज्तमाई वतीरा बन गया। चुनाँचे अख्लाक़ व किरदार का यह ज़वाल मन्तक़ी तौर पर उनके माद्दी ज़वाल पर मुन्तज हुआ। बनी इस्राईल का यह अहदे ज़वाल भी तक़रीबन तीन सौ साल ही के अर्से में अपनी इन्तहा को पहुँचा। सबसे पहले आसूरियों के हाथों उनकी शिमाली सल्तनत “इस्राईल” (सात-आठ सौ क़ब्ल मसीह के लगभग) तबाह हुई। उसके बाद 587 क़ब्ल मसीह में इराक़ के नमरूद बख़्तेनसर (Nebukadnezar) ने उनकी जुनूबी सल्तनत “यहूदिया” पर हमला किया और पूरी सल्तनत को तहस-नहस करके रख दिया। येरुशलम को इस तरह तबाह व बर्बाद किया गया कि किसी इमारत की दो ईंटें भी सलामत नहीं रहने दी गयीं। हैकल-ए- सुलेमानी को मस्मार करके उसकी बुनियादें तक खोद डाली गयीं। उस

दौरान बख़्तेनसर ने छ: लाख यहूदियों को क़त्ल किया जबकि छ: लाख मर्दों, औरतों और बच्चों को जानवरों की तरह हाँकता हुआ बाबुल (इराक़) ले गया, जहाँ ये लोग सवा सौ साल तक असीरी (captivity) की हालत में रहे। ज़िल्लत व रुसवाई के ऐतबार से यह उनकी तारीख़ का बद्तरीन दौर था।

बनी इस्राईल के दूसरे दौरे उरूज का आगाज़ हज़रत उज़ैर अलै. की इस्लाही कोशिशों से हुआ। आपको बनी इस्राईल की निशाते सानिया (Renaissance) के नक़ीब की हैसियत हासिल है। 539 क़ब्ले मसीह में ईरान के बादशाह के-खोरस (Cyrus) या ज़ुलकर नैन ने इराक़ (बाबुल) फ़तह किया और उसके दूसरे ही साल उसने बनी इस्राईल को अपने वतन वापस जाने और वहाँ दोबारा आबाद होने की आम इजाज़त दे दी। चुनाँचे यहूदियों के क़ाफ़िले फ़लस्तीन जाने शुरू हो गये और यह सिलसिला मुद्दतों जारी रहा। 458 क़ब्ले मसीह में हज़रत उज़ैर अलै. भी एक जिला वतन गिरोह के साथ येरुशलम पहुँचे और उस शहर को आबाद करना शुरू किया और हैकल-ए-सुलेमानी की अज़सर नौ तामीर की। इससे क़ब्ल हज़रत उज़ैर अलै. को अल्लाह तआला ने सौ बरस तक सुलाए भी रखा। अल्लाह तआला ने उन पर एक सौ साल के लिए मौत तारी कर दी थी और फिर उन्हें ज़िन्दा किया और उन्हें ब-चश्मे-सर उनके मुर्दा गधे के ज़िन्दा होने का मुशाहिदा कराया, जिसके बारे में हम सूरतुल बक़रह (आयत 259) में पढ़ आए हैं। बहरहाल हज़रत उज़ैर अलै. ने तौबा की मुनादी के ज़रिये एक ज़बरदस्त तजदीदी और इस्लाही तहरीक चलाई जिसके नतीजे में उनके नज़रियात और आमाल व अख्लाक़ की इस्लाह होना शुरू हुई। हज़रत उज़ैर अलै. ने

तौरात को भी याददाश्तों की मदद से अज़सरे नौ मुरत्तब किया जो बख़्तेनसर के हमले के दौरान गुम हो गई थी।

ईरानी सल्तनत के ज़वाल, सिकंदर मक़दूनी की फ़तूहात और फिर यूनानियों के उरूज से यहूदियों को कुछ मुद्दत के लिए शदीद धचका लगा। यूनानी सिपहसालार एंटोकस सालिस ने 198 क़.म. में फ़लस्तीन पर क़ब्जा कर लिया। यूनानी फ़ातेहीन ने पूरी जाबराना ताक़त से काम लेकर यहूदी मज़हब व तहज़ीब की बीखकुनी (जड़ ख़त्म) करना चाही, लेकिन बनी इस्राईल इस जबर से मग़लूब ना हुए और उनके अंदर एक ज़बरदस्त तहरीक उठी जो तारीख़ में "मक्काबी बगावत" के नाम से मशहूर है। यह हज़रत उज़ैर अलै. की फूँकी हुई रूहे दीनदारी का असर था कि उन्होंने बिल्आखिर यूनानियों को निकाल कर अपनी एक अज़ीम आज़ाद रियासत क़ायम कर ली जो "मक्काबी सल्तनत" कहलाती है। बनी इस्राईल के दूसरे दौरे उरूज में क़ायम होने वाली यह सल्तनत 170 क़.म. से लेकर 67 क़.म तक पूरी शान व शौकत के साथ क़ायम रही। मक्काबी सल्तनत अपने वक़्त की मालूम दुनिया के तमाम इलाक़ों पर मुहीत थी। चुनाँचे रक़बे के ऐतबार से यह हज़रत सुलेमान अलै. की सल्तनत से भी वसीअ थी। उस ज़माना-ए-उरूज में फिर से उनकी नज़रियाती व अखलाक़ी हालत बिगड़ने लगी। मुशरिकाना आक़ाइद समेत बहुत सी अखलाक़ी बुराईयाँ फिर से उन में पैदा हो गईं, जिनके नतीजे में एक दफ़ा फिर यह क़ौम अज़ाबे खुदावंदी की ज़ाद में आ गई।

मक्काबी तहरीक जिस अखलाक़ी व दीनी रूह के साथ उठी थी वो बतदरीज फ़ना होती चली गई और उसकी जगह ख़ालिस दुनिया परस्ती और बेरूह ज़ाहिरदारी ने ले ली। आखिरकार उनके दरमियान फूट पड़ गई और उन्होंने खुद

रूमी फ़ातह पोम्पई को फ़लस्तीन आने की दावत दी। चुनाँचे पोम्पई ने 63 क़.म. में बैतुल मक़दस पर क़ब्ज़ा करके यहूदियों की आज़ादी का ख़ात्मा कर दिया। रोमियों ने फ़लस्तीन में अपने ज़ेरे साया एक देसी रियासत क़ायम कर दी जो बिल्आखिर 40 क़.म. में हीरूद नामी एक होशियार यहूदी के क़ब्ज़े में आई। यह शख़्स हीरूद आज़म के नाम से मशहूर है और इसकी फ़रमारवाई पूरे फ़लस्तीन और शरक़े उरदन पर 40 से 4 क़.म. तक रही। इस शख़्स ने रोमी सल्तनत की वफ़ादारी का ज़्यादा से ज़्यादा मुज़ाहि करके क़ैसर की ख़ुशनुदी हासिल कर ली थी। इस ज़माने में यहूदियों की दीनी व अखलाक़ी हालत गिरते-गिरते ज़वाल की आखरी हद को पहुँच गई थी। हीरूद आज़म के बाद उसकी रियासत उसके तीन बेटों के दरमियान तक़सीम हो गई। लेकिन 6 ई. में क़ैसर आगस्टस ने हीरूद के बेटे अरख़लाउस को माज़ूल करके उसकी पूरी रियासत अपने गर्वनर के मातहत कर दी और 41 ई. तक यही इंतेज़ाम क़ायम रहा। यही ज़माना था जब हज़रत मसीह अलै. बनी इस्राईल की इस्लाह के लिए उठे तो यहूदियों के तमाम मज़हबी पेशवाओं ने मिल कर उनकी मुख़ालफ़त की और उन्हें वाजिबुल क़त्ल क़रार देकर रोमी गवर्नर पोन्टस पिलातिस से उनको सज़ा-ए-मौत दिलवाने की कोशिश की और अपने ख़्याल के मुताबिक़ तो उनको सूली पर चढ़वा ही दिया।

रोमियों ने 41 ई. में हीरूद आज़म के पोते "हीरूद अगरपा" को इन तमाम इलाक़ों का हुक्मरान बना दिया जिन पर हीरूद आज़म अपने ज़माने में हुक्मरान था। इस शख़्स ने बरसर इक़्तदार आकर मसीह अलै. के पैरोकारों पर मज़ालिम की इन्तहा कर दी। कुछ ही अर्से बाद यहूदियों

और रोमियों के दरमियान सख़्त कशमकश शुरु हो गई और 64 ई. से 66 ई. के दौरान यहूदियों ने रोमियों के खिलाफ़ खुली बगावत कर दी, जो उनके उरूज सानी के खात्मे पर मुन्तज हुई। यहूदियों की बगावत का क़लअ-कमअ (खात्मा) करने के लिए बिल्आख़िर रूमी सल्तनत ने एक सख्त फ़ौजी कार्रवाई की और 70 ई. में टायटस (Titus) ने बज़ोर-ए-शम्शीर येरुशलम को फ़तह कर लिया। हैकले सुलेमानी एक दफ़ा फिर मस्मार कर दिया गया। जर्नल टायटस के हुक्म पर शहर में क़त्लेआम हुआ। एक दिन में एक लाख 33 हज़ार यहूदी क़त्ल हुए, जबकि 67 हज़ार को गुलाम बना लिया गया। इस तरह रोमियों ने पूरे शहर में कोई मुतनफ्फ़िस बाक़ी ना छोड़ा। इसके साथ ही अरज़े फ़लस्तीन से बनी इस्राईल का अमल-दख़ल मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो गया। बीसवीं सदी के शुरू तक पूरे दो हज़ार बरस यह लोग जिला वतनी और इंतशार (Diaspora) की हालत में ही रहे। जर्नल टायटस के हाथों 70 ई. में हैकल सुलेमानी मस्मार हुआ तो आज तक तामीर ना हो सका। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की पैदाईश (571 ई.) के वक़्त इसे मस्मार हुए पाँच सौ बरस गुज़र चुके थे।

यह खुलासा है उस क़ौम की दास्ताने इबरत का जो अपने वक़्त की उम्मते मुस्लिमा थी। जिसके अंदर चौदह सौ बरस तक मुसलसल नबुवत रही। जिसको तीन इल्हामी किताबों से नवाज़ा गया और जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया: {يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ} (बक़रह:47) “ऐ बनी इस्राईल याद करो मेरी वह नेअमत जो मैंने तुम लोगों को अता की और यह की मैंने तुम्हें फ़ज़ीलत दी तमाम जहान वालों पर।”

आख़िरकार बनी इस्राईल को उम्मते मुस्लिमा के मन्सब से माज़ूल करके मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की उम्मत को इस मसनदे फ़ज़ीलत पर मुतमक्किन किया गया। हुज़ूर ﷺ ने अपनी उम्मत के बारे में फ़रमाया कि तुम लोगों पर भी ऐन वही हालात वारिद होंगे जो बनी इस्राईल पर हुए थे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। मुसलमानों को पहला उरूज अरबों के ज़ेरे क़यादत नसीब हुआ। इसके बाद जब ज़वाल आया तो सलेबियों की यलगार की सूरत में उन पर अज़ाब के कोड़े बरसे। फिर तातारियों ने हलाकू ख़ान और चंगेज़ खान की क़यादत में आलमे इस्लाम को ताख़्त व ताराज किया। इसके बाद क़ुदरत ने आलमे इस्लाम की क़यादत अरबों से छीन कर उन्हीं तातारियों के हाथों में दे दी, जिन्होंने लाखों मुसलमानों का खून बहाया था।

है अयाँ फ़ितना-ए-तातार के अफ़साने से
पासबाँ मिल गये काबे को सनम खाने से

चुनाँचे तुर्कों की क़यादत में इस उम्मत को एक दफ़ा फिर उरूज नसीब हुआ। तुर्काने तैमूरी, तुर्काने सफ़वी, तुर्काने सल्जूक़ी और तुर्काने उस्मानी ने दुनिया में अज़ीमुश्शान हुकूमतें क़ायम कीं। इसके बाद उम्मते मुस्लिमा पर दूसरा दौरे ज़वाल आया। बनी इस्राईल पर दूसरा दौरे अज़ाब यूनानियों और रोमियों के हाथों आया था जबकि उम्मते मुस्लिमा पर दूसरा अज़ाब अक़वामे यूरोप के तसल्लुत की सूरत में आया और देखते ही देखते अंग्रेज़, फ्रान्सीसी, इतालवी, हस्पानवी और वलंदीज़ी (Dutch) पूरे आलमे इस्लाम पर क़ाबिज़ हो गये। बीसवीं सदी के आग़ाज़ में अज़ीम उस्मानी सल्तनत का खात्मा हो गया।

यह उन हालात और वाक़ियात का खुलासा है जिनको अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ मन्सूब करते हुए आयत ज़ेरे

नज़र में फ़रमाया कि हमने तो पहले ही बनी इस्राईल के बारे में कह दिया था कि तुम लोग अपनी तारीख़ में दो दफ़ा फ़साद मचाओगे और सरकशी दिखाओगे।

आयत 5

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا
بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا
لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ
فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ
وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ⑤

"फिर जब उन दोनों में से पहले वादे का वक़्त आ गया तो हमने तुम पर मुसल्लत कर दिये अपने सख़्त जंगजू बंदे तो वो तुम्हारी आबादियों में घुस गये, और (यूँ हमारा) जो वादा था वो पूरा होकर रहा।"

यानि अल्लाह तआला की तरफ़ से जो तुम पर वाज़ेह किया गया था कि जब तुम लोग दीन से बरगश्ता हो (भटक) जाओगे, जब तुम अल्लाह की किताब और उसके अहकाम को हँसी-मज़ाक बना लोगे तो तुम ज़रूर अल्लाह के अज़ाब का निशाना बनोगे। चुनाँचे उनके दीन से बरगश्ता हो जाने के बाद आशूरियों और इराक़ के बादशाह बख़्तनसर के हाथों उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसा, जिसके नतीजे में दोनों इस्राईली सल्तनतें ख़त्म हो गईं, येरुशलम मुकम्मल तौर पर तबाह हो गया, हैकले सुलेमानी मस्मार कर दिया गया, छः लाख यहूदी क़त्ल हो गये जबकि छः लाख को गुलाम बना लिया गया।

आयत 6

ثُمَّ رَدَدۡنَا لَكُمُ الۡكَرَّةَ عَلَيۡهِمۡ

"फिर हमने तुम्हारी बारी लौटाई उन पर"

यानि इसके बाद अल्लाह तआला ने एक मर्तबा फिर तुम्हें सहारा दिया और उन पर ग़ल्बे का मौक़ा अता कर दिया। इस सहारे का बाइस ईरानी बादशाह कैखोरस (Cyrus) या ज़ुलकरनैन बना। उसने इराक़ (बाबुल) पर तसल्लुत हासिल कर लेने के बाद तुम्हें आज़ाद करके वापस येरुशलम जाने और उस शहर को एक दफ़ा फिर से आबाद करने की इजाज़त दे दी। फिर जब तुमने वापस आकर येरुशलम को आबाद किया तो हमने एक दफ़ा फिर तुम्हारी मदद की:

وَاَمۡدَدۡنٰكُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّبَنِيۡنَ وَجَعَلۡنٰكُمۡ اَكۡثَرَ نَفِيۡرًا ۝۶

"और हमने मदद की तुम्हारी माल व दौलत और बेटों के ज़रिये से और बना तुम्हें कसीर तादाद (वाली क़ौम)।"

हमने तुम्हें माल व औलाद में बरकत दी और तुम्हारी तादाद पहले से बढ़ा दी। तुम लोग खूब फले-फूले और जल्द ही एक मज़बूत क़ौम बन कर उभरे।

आयत 7

اِنۡ اَحۡسَنۡتُمۡ اَحۡسَنۡتُمۡ لِاَنۡفُسِكُمۡ‌ۖ وَاِنۡ اَسَاۡتُمۡ فَلَهَا‌ ؕ

"अगर तुमने कोई भलाई की तो ख़ुद अपने ही लिए की, और अगर कोई बुराई कमाई तो वो भी अपने ही लिए कमाई।"

तुम्हारे नेक आमाल का फ़ायदा भी तुम्हें हुआ और तुम्हारी बुराईयों और नाफ़रमानियों का वबाल दुनिया में भी तुम पर आया और इसका वबाल आख़िरत में भी तुम पर पड़ेगा।

فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَةِ

"फिर जब दूसरे वादे का वक़्त आया"

जब दोबारा तुमने अल्लाह के दीन से सरकशी इख़्तियार की, तुम्हारे ऐतक़ादात, नज़रियात और अख्लाक़ फिर से मस्ख़ हो गये तो वादे के ऐन मुताबिक़ तुम पर अज़ाब के दूसरे मरहले का वक़्त आ पहुँचा।

لِيَسُوۡٓءٗا وُجُوۡهَكُمۡ

"ताकि वो तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें"

इस सिलसिले में पहले यह अल्फ़ाज़ आये थे: {بَعَثۡنَا عَلَيۡكُمۡ عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِىۡ بَاۡسٍ شَدِيۡدٍ} (आयत 5) कि हमने तुम पर अपने बंदे मुसल्लत कर दिए जो सख़्त जंगजू थे। इस फ़िक़रे का मफ़हूम यहाँ भी पाया जाता है, लेकिन यहाँ दोबारा इसे दोहराया नहीं गया। चुनाँचे इस फ़िक़रे को यहाँ महज़ूफ़ समझा जायेगा और आयत का मफ़हूम यूँ होगा कि हमने फिर तुम पर अपने सख़्त जंगजू बंदे मुसल्लत किए ताकि वो तुम्हारे हीले बिगाड़ दें।

وَلِيَدۡخُلُوا الۡمَسۡجِدَ كَمَا دَخَلُوۡهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ

"और वो दाख़िल हो जायें मस्जिद में जैसे कि दाख़िल हुए थे पहली मर्तबा"

यहाँ इर्शाद है बैतुल मक़दस और हैकले सुलेमानी की बारे दीगर बेहुरमती की तरफ़। जैसे 587 क़ब्ले मसीह में बख़्तनसर ने बैतुल मक़दस और हैकले सुलेमानी को मस्मार किया था, वैसे ही रूमी जर्नल टायटस ने 70 ई. में एक दफ़ा फिर उनके तक़द्दुस को पामाल किया।

وَّلِيُتَبِّرُوۡا مَا عَلَوۡا تَتۡبِيۡرًا ۝

"और तबाह व बर्बाद करके रख दें (हर उस शय को) जिसके ऊपर भी उन्हें कब्ज़ा हासिल हो जाये।"

इन आयात में बनी इस्राईल की दो हज़ार सालाह तारीख के नशेब-ओ-फ़राज़ की तफ़्सीलात को समो दिया गया है। इस अरसे में उन्होंने दो मर्तबा उरूज देखा और दो दफ़ा ही ज़वाल से दो-चार हुए। नबी आखिरुज्ज़मान ﷺ की बेअसत के ज़माने में इन आयात के नुज़ूल के वक़्त उनके दूसरे दौरे ज़वाल को शुरु हुए पाँच सौ बरस होने को आये थे। इस सयाक़ व सबाक़ में उन्हें मुतनब्बा (ख़बरदार) किया जा रहा है कि:

आयत 8

عَسٰی رَبُّکُمۡ اَنۡ یَّرۡحَمَکُمۡ ۚ وَ اِنۡ عُدۡتُّمۡ عُدۡنَا ۘ

"हो सकता है कि अब तुम्हारा रब तुम पर रहम करे, और अगर तुमने वही रविश इख़्तियार की तो हम भी वही कुछ करेंगे।"

अगर तुमने पहले की तरह हमारी नाफ़रमानियों और अहकामे शरीअत से ऐराज़ की रविश इख़्तियार की तो हम भी उसी तरह फिर तुम्हें सज़ा देंगे।

وَ جَعَلۡنَا جَہَنَّمَ لِلۡکٰفِرِیۡنَ حَصِیۡرًا ﴿۸﴾

"और हमने जहन्नम को काफ़िरों के लिये क़ैदख़ाना बना रखा है।"

नाफ़रमानियों की सज़ा दुनिया में तो मिलेगी ही, जबकि जहन्नम का अज़ाब इसके आलावा होगा। जिस तरह जानवरों को घेर कर बाड़े में बंद कर दिया जाता है इसी तरह आख़िरत में अल्लाह के नाफ़रमानों को इकठ्ठा करके जहन्नम के क़ैद खाने में धकेल दिया जायेगा। (اَللّٰھُمَّ لَا تَجْعَلْنَا مَعَھُمْ!)

आयत 9

اِنَّ ہٰذَا الۡقُرۡاٰنَ یَہۡدِیۡ لِلَّتِیۡ ہِیَ اَقۡوَمُ

"यक़ीनन यह क़ुरान रहनुमाई करता है उस राह की तरफ़ जो सबसे सीधी है"

याद रखो! अब राहे हिदायत वही होगी जिसकी निशानदेही यह किताब करेगी जिसे हम अपने आखरी रसूल ﷺ पर

नाज़िल कर रहे हैं। अब अल्लाह के क़सरे रहमत में दाखिल होने का "शाहदरह" एक ही है और वो है यह क़ुरान। अब अगर तुम अल्लाह के दामने रहमत में पनाह लेना चाहते हो तो इस क़ुरान के रास्ते से होकर आओ। अगर ऐसा करोगे तो अल्लाह की रहमत के दरवाज़े एक बार फिर तुम्हारे लिए खुल जायेंगे और जो रफ़अतें और बरकतें इस आखरी नबी ﷺ की उम्मत के लिए लिखी गई हैं तुम भी उनमें हिस्सेदार बन जाओगे।

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝۹

"और बशारत देता है उन अहले ईमान को जो नेक अमल भी करें कि उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है।"

आयत 10

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝۱۰

"और यह कि जो लोग ईमान नहीं रखते आख़िरत पर, उनके लिए हमने तैयार कर रखा है एक दर्दनाक अज़ाब।"

यहाँ यह नुक़्ता काबिले ग़ौर है कि जहाँ कहीं भी आमाल की ख़राबी की बात होती है वहाँ ईमान बिल्आख़िरत का तज़किरा ज़रूर होता है।

इस रुकूअ के हवाले से यह बात बहुत अहम है कि यहाँ बनी इस्राईल के उरूज व ज़वाल के आईने में जो तस्वीर दिखाई गई है उसमें हमारे लिए एक दावते फ़िक्र है। अल्हम्दुलिलाह! आज हम (उम्मते मुहम्मद ﷺ) उम्मते मुस्लिमा हैं, लेकिन हमें मालूम होना चाहिए कि एक ज़माने में बनी इस्राईल भी उम्मते मुस्लिमा ही थे। वो ब-हैसियते नस्ल आज भी एक क़ौम के तौर पर मौजूद हैं मगर उन्हें उम्मते मुस्लिमा के मन्सब से माज़ूल कर दिया गया है। अब उन लोगों की हैसियत साबक़ा उम्मते मुस्लिमा की है और पिछले दो हज़ार बरस से यह लोग बहुत ज़्यादा सख़्तियों का शिकार रहे हैं। हमें इनकी क़ौमी तारीख़ के नशेब व फ़राज का जायज़ा लेकर यह मालूम करने की कोशिश करनी चाहिए कि वो कौन से अवामिल थे और उनके अक़ाइद व आमाल की वो कौनसी ख़राबियाँ थीं जिनके बाइस वो लोग अल्लाह के यहाँ मग़ज़ूब व मअतूब ठहरे।

यहाँ दूसरा नुक़्ता यह ज़हननशीन करने के लायक़ है कि साबक़ा और मौजूदा उम्मतों के दरमियान मुक़ाबले के लिए मैदान तेज़ी से तैयार हो रहा है और यूँ समझिये कि दो पतंगे ऊपर चढ़ रही हैं, जिनके दरमियान पेच पड़ने वाला हैं। बनी इस्राईल अपने इंतहाई ज़वाल को पहुँचने के बाद ब-हैसियत एक क़ौम के पिछले एक सौ साल से माद्दी लिहाज़ से रू-बा तरक्क़ी हैं। उनकी पतंग 1917 ई. में बालफ़ोर (Balfor) डिक्लेरेशन की मंज़ूरी से ऊपर चढ़ना शुरु हुई और 1948 ई. में इस्राईल की रियासत मअरिज़े वुजूद में आ गई। 1966 ई. में उसकी मज़ीद तौसीअ अमल में आई और उसके तहफ्फ़ुज़ को यक़ीनी बनाने के लिए ग़ैर-मामूली अक़दामात किए गये। अरब दुनिया का वाहिद मुल्क इराक़ था जिससे इस्राईल को ख़तरा हो सकता था, उसे बाक़ायदा एक मंसूबे

के तहत तबाह व बर्बाद कर दिया गया है। इसके बाद उस पूरे ख़ित्ते में अब कोई ऐसा मुल्क नहीं जो इस्राईल की ताक़त चैलेंज करने की सलाहियत रखता हो।

दूसरी तरफ़ देखा जाये तो मुस्लिम दुनिया भी अपने ज़वाल की आखरी हदों को छूने के बाद अब बेदारी की तरफ़ माईल है और इस उम्मत के अंदर नई ज़िन्दगी पैदा होने का वक़्त क़रीब नज़र आता है। पहली जंगे अज़ीम के बाद 1924 ई. में ख़िलाफ़ते उस्मानिया का ख़ात्मा गोया हमारे ज़वाल की इन्तहा थी। उसके बाद आलमे इस्लाम में आज़ादी की तहरीकें चलीं और मुतअद्दिद मुस्लिम मुमालिक यूरोपी अक़वाम के तसल्लुत से आज़ाद हो गये। मज़ीद बराँ उम्मते मुस्लिम में बहुत सी अहयाई तहरीकें उठीं, मसलन पाक व हिन्द में जमाते इस्लामी, मिस्र में इख्वानुल मुस्लिमून(18)*, ईरान में फ़िदाई तहरीक और इंडोनेशिया में मस्जूमी पार्टी वगैरह, और इस तरह इसकी नशाते सानिया के अमल का आग़ाज हो गया। चुनाँचे पिछली सदी से उम्मते मुस्लिमा की सफ़ों में ज़वाल और अहयाई अमल पहलु-ब-पहलु चल रहे हैं। जैसे सूरह रहमान में मुतवाज़ी चलने वाले दो दरियाओं की मिसाल दी गई है: {مَرَجَ الۡبَحۡرَيۡنِ يَلۡتَقِيٰنِ} {بَيۡنَهُمَا بَرۡزَخٌ لَّا يَبۡغِيٰنِ} (आयात 19-20) “उसने दो दरिया रवां किए जो आपस में मिलते हैं। दोनों में एक आड़ है कि (उससे) तजावुज़ नहीं कर सकते।” अब सूरते हाल यह है कि साबक़ा और मौजूदा उम्मते मुस्लिमा की सूरत में दो पतंगें फ़िज़ा में तैर रही हैं और इनका आपस में किसी वक़्त भी पेंच पड़ सकता है।

यह तमाम तफ़्सिलात उन लोगों के इल्म में होनी चाहिए जो दीन की ख़िदमत में मसरूफ़ हैं। उन्हें ज़मान व

मकान के ऐतबार से दुरुस्त अदराक होना चाहिए कि वो कहाँ खड़े हैं, उनके दायें-बायें क्या हालात हैं? माज़ी में क्या होता रहा है, अभी सामने क्या कुछ है और मुस्तक़बिल में क्या इम्कानात हैं?

आयात 11 से 22 तक

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاۗءَهٗ بِالْخَيْرِ ۭ وَكَانَ
الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ⑪ وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً
لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ⑫ وَكُلَّ
اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ⑬ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى
بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ⑭ ۭ مَنِ اهْتَدٰى
فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى
نَبْعَثَ رَسُوْلًا ⑮ وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا
مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا

تَدْمِيْرًا ۝١٦ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ
نُوْحٍ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝١٧
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَاۗءُ لِمَنْ
نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا
۝١٨ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰۗىِٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝١٩ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَاۗءِ
وَهٰٓؤُلَاۗءِ مِنْ عَطَاۗءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَاۗءُ رَبِّكَ
مَحْظُوْرًا ۝٢٠ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ
وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ۝٢١ لَا
تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ۝٢٢

आयत 11

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاۗءَهٗ بِالْخَيْرِ ۭ

“और इंसान शर माँग बैठता है (अपने नज़दीक) भलाई माँगते हुए।”

यानि इंसान अल्लाह से दुआ कर रहा होता कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए यूँ कर दे, यूँ कर दे। हालाँकि उसे कुछ मालूम नहीं होता कि जो कुछ वह अपने लिए माँग रहा है वह उसके लिये मुफ़ीद (फ़ायदेमन्द) है या मुज़र (ख़तरनाक)। इस तरह इंसान अपने लिए अकसर वो कुछ माँग लेता है जो उसके

लिए उल्टा नुक़सान देह होता है। सूरह अल बक़रह (आयत 216) में फ़रमाया गया है: {وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـــًٔـا وَّھُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـــــًٔـا وَّھُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ} "मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और वो तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को पसंद करो और वो तुम्हारे लिए शर हो, अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।" चुनाँचे बेहतर लाइहा अमल यह है कि अल्लाह पर तवक्कुल करते हुए इंसान अपने मामलात उसके हवाले कर दे कि ऐ अल्लाह! मेरे मामलात तेरे सुपुर्द हैं, क्योंकि मेरे नफ़ा व नुक़सान को तू मुझसे बेहतर जानता है:

सुपुर्दम बुतों माया-ए-ख़्वीश रा
तू दानी हिसाबे कम वबीश रा!

दुआ-ए-इस्तख़ारा में भी हमें तफ़ीज़े अम्र का यही अंदाज़ सिखाया गया है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ ، فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ

"ऐ अल्लाह! मैं तेरे इल्म की बदौलत तुझसे ख़ैर चाहता हूँ और तेरी क़ुदरत की बरकत से ताक़त माँगता हूँ और तुझसे सवाल करता हूँ तेरे फ़ज़ले अज़ीम का, बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है और मेरे इख़्तियार में कुछ भी नहीं, तू सब कुछ जानता है और मैं कुछ भी नहीं जानता, और तू हर क़िस्म के ग़ैब को जानने वाला है।"(19)

बहरहाल इंसान का अमूमी रवैया यही होता है कि वह अल्लाह पर तवक्कुल करने के बजाय अपनी अक़्ल और सोच

पर इंहसार (भरोसा) करता है और इस तरह अपने लिए ख़ैर की जगह शर की दुआएँ करता रहता है।

وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ⑪

"और इंसान बहुत जल्दबाज़ है।"

अपनी इस जल्दबाज़ी और कोताह नज़री की वजह से वो शर को ख़ैर और खैर को शर समझ बैठता है।

आयत 12

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ
وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ
مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا
مِّنْ رَّبِّكُمْ

"और हमने बनाया रात और दिन को दो निशानियाँ, तो तारीक (अंधेर) कर दिया हमने रात की निशानी को और रौशन बना दिया हमने दिन की निशानी को, ताकि तुम तलाश करो अपने रब का फ़ज़ल"

दिन को रौशन बनाया ताकि उसकी रौशनी में तुम लोग आसानी से कसबे मआश के लिए दौड़-धूप कर सको।

وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ
فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ⑫

"और ताकि तुम जान लो सालों की गिनती और (निज़ामुल अवक़ात का) हिसाब, और हर चीज़ को हमने खोल-खोल कर बयान कर दिया है।"

यह दिन और रात का उलट-फेर ही है जो निज़ामुल अवक़ात का बुनियादी ढ़ाँचा फ़राहम करता है और दिनों से हफ्ते, महीने और फिर साल बनते हैं।

आयत 13

وَكُلَّ اِنۡسَانٍ اَلۡزَمۡنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِىۡ عُنُقِهٖ ؕ

“और हर इंसान की क़िस्मत चिपका दी है हमने उसकी गर्दन में।”

طٰٓئِر का लफ़्ज़ अरबी में आमतौर पर शगुन, नहूसत और बदक़िस्मती के लिए बोला जाता है, लेकिन यहाँ पर खुशबख़्ती और बदबख़्ती दोनो ही मुराद हैं। यानि किसी इंसान का जो भी मक़सूम (अपॉइंटमेंट) व मुक़द्दर है, ज़िन्दगी में अच्छा-बुरा जो कुछ भी उसे मिलना है, जैसे भी अच्छे-बुरे हालात उसे पेश आने हैं, इस सब कुछ के बारे में उसका जो खाता “उम्मुल किताब” में मौजूद है उसका हासिल उसकी गर्दन में चिपका दिया गया है। गर्दन में चिपकाने के अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल मुहावरतन भी हो सकता है और यह भी मुमकिन है कि इसकी कुछ माद्दी हक़ीक़त भी हो। यानि हो सकता है कि अल्लाह तआला ने इंसान की गर्दन में किसी gland की सूरत में वाक़ई कोई माइक्रो कम्पयुटर नसब कर रखा हो। वल्लाहु आलम!

وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ⑬

"और हम निकाल लेंगे उसके लिए क़यामत के रोज़ (उसे) एक किताब (की शक्ल में), वो पायेगा उसे खुली हुई।"

इन अल्फ़ाज़ से तो ऐसा ही महसूस होता है कि इंसानी जिस्म के अंदर ही कोई ऐसा सिस्टम लगा दिया गया है जिसमें उसके तमाम आमाल व अफ़आल रिकॉर्ड हो रहे हैं और क़यामत के दिन एक चिप की शक्ल में उसे उसके सामने रख दिया जायेगा। इस चिप के अंदर उसकी ज़िन्दगी की सारी फिल्म मौजूद होगी, एक-एक हरकत जो उसने की होगी, एक-एक लफ़्ज़ जो उसने मुँह से निकाला होगा, एक-एक ख़्याल जो उसके ज़हन मे पैदा हुआ होगा, एक-एक नीयत जो उसके दिल में परवान चढ़ी होगी, सब डेटा पूरी तफ़्सील के साथ उसमें महफ़ूज़ होगा। रोज़े क़यामत इस चिप को खोल कर खुली किताब की तरह उसके सामने रख दिया जायेगा और कहा जायेगा:

आयत 14

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ⑭ ۭ

"पढ़ लो अपना आमाल नामा! आज तुम ख़ुद ही अपना हिसाब कर लेने के लिए काफ़ी हो।"

तुम्हारी ज़िन्दगी की किताब का एक-एक वरक़ इस क़द्र तफ़सील से तुम्हारे सामने मौजूद है कि तुम ख़ुद ही अपना

हिसाब कर सकते हो। तुम्हारा सारा debit/credit तुम्हारे सामने है।

आयत 15

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ

"जिस किसी ने हिदायत की राह इख़्तियार की तो उसने अपने ही (भले के) लिये हिदायत की राह इख़्तियार की, और जो कोई गुमराह हुआ तो उसकी गुमराही का वबाल उसी पर है।"

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ

"और कोई जान किसी दूसरी जान का बोझ उठाने वाली नहीं बनेगी।"

रोज़े क़यामत हर किसी को अपनी बद् आमालियों का बोझ ज़ाती तौर पर ख़ुद ही उठाना होगा। इस सिलसिले में कोई किसी की कुछ मदद नहीं कर सकेगा। सब अपने-अपने आमाल का अम्बार अपने-अपने कंधों पर उठाए होंगे।

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ⑮

"और हम अज़ाब देने वाले नहीं हैं जब तक कि किसी रसूल को ना भेज दें।"

यह अल्लाह तआला की सुन्नत रही है कि किसी भी क़ौम पर अज़ाबे इस्तेसाल उस वक़्त तक नहीं भेजा गया जब तक कि उस क़ौम की हिदायत के लिए और हक़ व बातिल का फ़र्क़ वाज़ेह कर देने के लिए कोई रसूल मबऊस नहीं कर दिया गया। अलबत्ता छोटे-छोटे अज़ाब इस क़ानून से मशरूत

(अधिनियम में) नहीं। क़ुरान में क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह अलै. वगैरह की मिसालें बार-बार बयान की गई हैं जिनसे इस असूल की वाज़ेह निशानदेही होती है कि किसी क़ौम को अज़ाब के ज़रिये उस वक़्त तक मुकम्मल तौर पर तबाह व बर्बाद नहीं किया जाता जब तक अल्लाह का मबऊस करदा रसूल उस क़ौम के लिए हक़ का हक़ होना बिल्कुल वाज़ेह ना कर दे और इस सिलसिले में उस क़ौम पर इत्मामे हुज्जत ना हो जाये। यही मज़मून सूरह निसा में इस तरह बयान हुआ है: {رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ} (आयत 165) "(उसने भेजे) रसूल ख़ुशखबरी देने वाले और खबरदार करने वाले ताकि ना रहे लोगों के लिए अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हुज्जत रसूल के बाद।"

आयत 16

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا

"और जब हम इरादा करते कि तबाह कर दें किसी बस्ती को तो हम उसके खुशहाल लोगों को हुक्म देते और वो उसमें खूब ना-फ़रमानियाँ करते"

فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ⑯

"पस साबित हो जाती उस पर (अज़ाब की) बात, फिर हम उसको बिल्कुल नेस्तो-नाबूद कर देते।"

यहाँ किसी बस्ती पर अज़ाबे इस्तेसाल के नाज़िल होने का उसूल बताया जा रहा है कि किसी भी मआशरे में इसका

सबब वहाँ के दौलतमंद और खुशहाल लोग बनते हैं। यह लोग अलल ऐलान अल्लाह तआला के अहकाम की नाफ़रमानियाँ करते हैं। इस सिलसिले में उनकी दीदा दिलेरी के सबब उनकी रस्सी मज़ीद दराज़ की जाती है, यहाँ तक कि वो अपनी अय्याशियों और मनमानियों में तमाम हदें फलाँग कर पूरी तरह अज़ाब के मुस्तिहक़ हो जाते हैं, अवाम उन्हें उनके करतूतों से बाज़ रखने के लिए कोई किरदार अदा नहीं करते, बल्कि एक वक़्त आता है जब वो भी उनके साथ जराइम में शरीक हो जाते हैं और यूँ ऐसा मआशरा अल्लाह के अज़ाब की लपेट में आ जाता है। ऐसे में सिर्फ़ वही लोग अज़ाब से बच पाते हैं जो नही अनिल मुन्कर का फ़रीज़ा अदा करते रहे हों।

आयत 17

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ⑰

"और कितनी ही क़ौमों को हमने हलाक किया नूह के बाद। और काफ़ी है आपका रब अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने और उनको देखने के लिए।"

आयत 18

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ الۡعَاجِلَةَ عَجَّلۡنَا لَهٗ فِيۡهَا مَا نَشَآءُ لِمَنۡ نُّرِيۡدُ

"जो कोई आजला का तलबगार बनता है हम उसको जल्दी दे देते हैं उसमें से जो कुछ हम चाहते हैं, जिसके लिए चाहते हैं"

यहाँ पर "दुनिया" के बजाय "आजला" का लफ़्ज़ आया है। यह दोनो अल्फ़ाज़ मुअन्नस हैं। "अदना" क़रीब की चीज़ को कहा जाता है, इसकी मुअन्नस "दुनिया" है जबकि "आजिल" के मायने जल्दी वाली चीज़ के हैं और इसकी मुअन्नस "आजला" है। यह दुनिया नक़द का सौदा है, यहाँ पर राहत भी फ़ौरन आसूदगी देती है और इसकी तकलीफ़ भी फ़ौरी तौर पर ख़ुद को महसूस कराती है। इसी लिए इसे "आजला" कहा गया है। आजला के मुक़ाबले में आयत ज़ेरे नज़र में "आख़िरत" का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है जो कि क़ुरान हकीम में अक्सर "दुनिया" के मुक़ाबले में भी आता है। दुनिया आजला के मुक़ाबले में आख़िरत को आख़िरत इसलिए कहा जाता है कहा जाता है कि इसका सवाब व अज़ाब बाद में आने वाली चीज़ है।

आयत ज़ेरे नज़र में जो उसूल बयान हुआ है उसकी वज़ाहत यह है कि जो शख़्स दुनिया की ऐश व दुनिया की दौलत व शौहरत हासिल करने का ख़्वाहिशमंद हो और सिर्फ़ उसी के लिए मन्सूबाबंदी, मेहनत और दौड़-धूप करे, उसकी मेहनत और दौड़-धूप को अल्लाह किसी ना किसी दर्जे में कामयाब कर देता है, मगर ज़रूरी नहीं कि जिस क़दर कोई दुनिया समेटना चाहे उसी क़दर उसे मिल भी जाये। और यह भी ज़रूरी नहीं कि जो कोई भी इस "आजला" को पाने की दौड़ में शामिल हो, कामयाब ठहरे,

बल्कि हर किसी को वही कुछ मिलेगा जो अल्लाह चाहेगा, और सिर्फ़ उसी को मिलेगा जिसके लिए वो चाहेगा। बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जो असूले दुनिया के लिए सारी उम्र अपने आपको हलकान कर देते हैं, मगर दुनिया फिर भी हाथ नहीं आती। चुनाँचे यह अल्लाह का फैसला है कि जिसको वो चाहता है और जिस क़दर चाहता है दुनिया में उसकी मेहनत का सिला दे देता है।

ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ⑱

"फिर हम मुक़र्रर कर देते हैं उसके लिए जहन्नम। वो दाख़िल होगा उसमें मलामत ज़दा, धुत्कारा हुआ।"

उस शख़्स की ख़्वाहिश और मेहनत सब दुनिया के लिए की थी, चुनाँचे दुनिया किसी ना किसी क़दर उसे दे दी गई। आख़िरत के लिए उसने ख़्वाहिश की थी और ना मेहनत, लिहाज़ा आख़िरत में सिवाय जहन्नम के उसके लिए और कुछ नहीं होगा।

आयत 19

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ

"और जो कोई आख़िरत का तलबगार हो, और उसके लिए उसके शायाने-शान कोशिश करे और वो मोमिन भी हो"

यानि उसकी यह तलब सिर्फ़ ज़बानी दावा तक महदूद ना हो, बल्कि हसूले आख़िरत के लिये वो ठोस और हक़ीक़ी

कोशिश भी करे, जैसा कि कोशिश करने का हक़ है। और फिर यह भी ज़रूरी है कि वह अहले ईमान में से हो, क्योंकि ईमान के बग़ैर अल्लाह के यहाँ बड़ी से बड़ी नेकी भी क़ाबिले क़ुबूल नहीं है।

فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ⑲

"तो यही लोग होंगे जिनकी कोशिश की क़दर अफ़ज़ाई की जायेगी।"

اللھم ربنا اجعلنا منھم. यह आयत हम में से हर एक के लिए लिट्मस टेस्ट है। इस टेस्ट की मदद से हर शख़्स ठीक से मालूम कर सकता है कि वो अपनी ज़िंदगी के किस मोड़ पर है, किस हैसियत से खड़ा है? चुनाँचे हर इंसान को चाहिए कि वो अपनी मन्सूबा बंदियों और शबों-रोज़ भाग-दौड़ की तरजीहात का तजज़िया करके अपना अहतसाब करे कि वो किस क़दर दुनिया का तालिब है और किस हद तक फ़लाहे आख़िरत को पाने का ख़्वाहिशमंद? बहरहाल दुनिया पर आख़िरत को तरजीह देना और फिर अपने क़ौल व फ़अल से अपनी तरजीहात को साबित करना एक कठिन और दुश्वार काम है। अल्लाह तआला हम में से हर एक को इसकी अहमियत और तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

आयत 20

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَاۗءِ وَهٰٓؤُلَاۗءِ مِنْ عَطَاۗءِ رَبِّكَ ۭ

"हम सबको मदद पहुँचाए जा रहे हैं, इनको भी और उनको भी, आप ﷺ के रब की अता से।"

यह दुनिया चूँकि दारुल इम्तिहान है इसलिए जब तक इंसान यहाँ मौजूद हैं, उनमें से कोई मुजरिम हो या इताअत गुज़ार, हर एक की बुनियादी ज़रूरयात पूरी हो रही हैं। यह अल्लाह तआला की ख़ुसूसी नवाज़िश है जिसमें से वो अपने नाफ़रमानों और दुश्मनों को भी नवाज़ रहा है।

وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحۡظُوۡرًا ۝۲۰

"और आपके रब की अता रुकी हुई नहीं है।"

दुनिया में अल्लाह तआला की यह अता और बख़्शिश आम है। इसमें दोस्त और दुश्मन के इम्तियाज़ की बुनियाद पर कोई क़दगन या रोक-टोक नहीं हैं।

आयत 21

اُنۡظُرۡ كَيۡفَ فَضَّلۡنَا بَعۡضَهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ ؕ

"देखो कैसे हमने बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है!"

अल्लाह तआला ने इस दुनिया में बाज़ लोगों को माल व असबाब, ज़हनी व जिस्मानी सलाहियतें, शक्ल व सूरत और मक़ाम व मर्तबे में बाज़ दूसरों पर फ़ज़ीलत दे रखी है। यह उसकी मर्ज़ी और मशीयत का मामला है।

وَلَلۡاٰخِرَةُ اَكۡبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكۡبَرُ تَفۡضِيۡلًا ۝۲۱

"लेकिन आख़िरत की ज़िन्दगी दर्जात और फ़ज़ीलत में इससे बहुत बढ़ कर होगी।"

दुनिया में तो दर्जात व फ़ज़ाइल जैसे भी हों, जितने भी हों, महदूद ही होगें, मगर आख़िरत की नेअमतें और नवाज़िशें ऐसी ला महदूद और ला मुतनाही होंगी कि उनका मुवाज़ना व मुक़ाबला दुनिया की किसी चीज़ से मुमकिन ही नहीं होगा। यहाँ एक शख़्स बीस-पच्चीस साल कुटिया में रह लेगा और एक दूसरा शख़्स इतना ही अरसा महल में रह लेगा तो क्या फ़र्क़ वाक़ेअ हो जायेगा? आखिरकार तो दोनों को यहाँ से जाना है लेकिन आखिरत के आराम व आसाइश अब्दी होंगे। वहाँ के नेअमतों के बाग़ात की अपनी ही शान होगी: {فَرَوۡحٌ وَّرَيۡحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيۡمٍ} (अल् वाक़िआ:89) “तो (उसके लिए) आराम और ख़ुशबुदार फूल और नेअमत के हैं।”

आयत 22

لَا تَجۡعَلۡ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقۡعُدَ مَذۡمُوۡمًا مَّخۡذُوۡلًا ۝۲۲

“अल्लाह के साथ किसी और को मअबूद ना बनाओ, कि फिर बैठे रह जाओगे मज़मूम व बेसहारा होकर।”

आइंदा दो रुकूअ इस लिहाज़ से बहुत अहम हैं कि उनमें तौरात के अहकामे अशरह (Ten Commandments) को क़ुरानी असलूब में बयान किया गया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. के नज़दीक इन अहकाम के अंदर तौरात की तालीमात का निचोड़ है। इन अहकाम का ख़ुलासा हम सूरहतुल अन्आम के आख़री हिस्से में भी पढ़ आये हैं। यहाँ पर वही बातें ज़रा तफ़सील से बयान हुई हैं।

आयात 23 से 40 तक

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا
فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا
كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ
وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝ۭ رَبُّكُمْ
اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ
كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ
وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝
اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ
الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ
ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا
مَّيْسُوْرًا ۝ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ
وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝
اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝ۧ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ

خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ
كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ
فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا
لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّى الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
مَنْصُوْرًا ﴿٣٣﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ
اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ
كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٤﴾ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا
بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا
﴿٣٥﴾ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ
وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٦﴾
وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ
وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ
عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ
مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ
جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿٣٩﴾ اَفَاَصْفٰكُمْ رَبُّكُمْ

بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ
قَوْلًا عَظِيْمًا ۝۴۰

आयत 23

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ

"और फ़ैसला कर दिया है आप ﷺ के रब ने कि मत इबादत करो किसी की सिवाय उसके, और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करो।"

अल्लाह के हुक़ूक़ के फौरन बाद वालिदैन के हुक़ूक़ अदा करने की ताकीद इससे पहले हम सूरतुल बक़रह की आयत 83 और सूरतुन्निसा की आयत 36 में भी पढ़ आये हैं। इसके बाद सूरह लुक़मान की आयत 14 में यही हुक्म चौथी मर्तबा आयेगा।

اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا

"अगर पहुँच जायें तुम्हारे पास बुढ़ापे को उनमें से कोई एक या दोनों"

فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝۲۳

"तो उन्हें उफ़्फ़ तक मत कहो और ना उन्हें झिड़को, और उनसे बात करो नर्मी के साथ।"

अगर कभी वालिदैन की बात को टालना भी पड़ जाये तो हिकमत और नर्मी के साथ ऐसा किया जाये। अक़्ल और मन्तिक़ के बल पर सीना तान कर यूँ जवाब ना दिया जाये कि उनका दिल दुखे।

आयत 24

وَاخۡفِضۡ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحۡمَةِ

"और झुकाए रखो उनके सामने अपने बाज़ू आजिज़ी और नियाज़मंदी से"

जब भी अपने वालिदैन के सामने आओ तो तुम्हारी चाल-ढ़ाल और गुफ़्तगू के अंदाज़ से आजिज़ी व इंकसारी और अदब व अहतराम का इज़हार होना चाहिए।

وَقُلۡ رَّبِّ ارۡحَمۡهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيۡ صَغِيۡرًا ﴿۲۴﴾

"और दुआ करते रहो: ऐ मेरे रब इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला।"

अल्लाह तआला के हुज़ूर हर वक़्त उनके लिए दुआ गोह रहना चाहिए कि ऐ अल्लाह जब मैं ज़ईफ़, कमज़ोर और मोहताज था तो इन्होंने मेरी ग़िज़ा, मेरे आराम और मेरी दूसरी ज़रूरतों का इन्तज़ाम किया। मेरी तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझा और मेरे लिए अपने आराम व आराईश को क़ुर्बान किया। अब मैं तो इनके इन अहसानात का बदला नहीं चुका सकता। इसलिए मैं तुझी से दरख़्वास्त करता हूँ कि तू उन पर रहम फरमा और अपनी ख़ुसूसी शफक्क़त और मेहरबानी से उनकी ख़ताओं को माफ़ फ़रमा दे।

आयत 25

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝۲۵

"तुम्हारा रब खूब वाक़िफ़ है उससे जो तुम्हारे दिलों में है। अगर तुम वाक़ई नेक होगे तो वो (अपनी तरफ़) रुजूअ करने वालों के लिए बड़ा बख़्शने वाला है।"

बूढ़े वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक के हुक्म पर कमा-हक़्क़ा अमल करना आसान काम नहीं। बुढ़ापे में इंसान पर "अरज़ले उम्र" का मरहला भी आता है, जिसके बारे में हम पढ़ आये हैं: {لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا} (अल् नहल:70)। ऐसी कैफ़ियत में कभी बच्चों की सी आदतें लौट आती हैं और उनकी बहुत सी बातें नाक़ाबिले अमल और अक्सर अहकाम नाक़ाबिले तामील होते हैं। कहीं उन्हें समझाना भी पड़ता है और कभी रोकने-टोकने की नौबत भी आ जाती है। इन सब मराहिल में कोशिश के बावजूद कहीं ना कहीं कोई गलती हो ही जाती है और कभी ना कभी कोई कोताही रह ही जाती है। यहाँ उस सयाक़ व सबाक़ में बताया जा रहा है कि अल्लाह तआला सिर्फ़ तुम्हारे ज़ाहिरी अमल और रवैय्ये ही को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों की नीयतों को भी जानता है। चुनाँचे अगर बंदे के दिल का रुजूअ अल्लाह की तरफ़ हुआ और नी उसकी नाफ़रमानी की ना हो तो छोटी-मोटी लग़ज़िशों को वह माफ़ फ़रमाने वाला है।

आयत 26

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۲۶

"और हक़ अदा करो क़राबत दारों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों का और फ़ज़ूल में माल मत उड़ाओ।"

तब्ज़ीर के मायने बिला ज़रुरत माल उड़ाने के हैं और यह इसराफ़ से बड़ा जुर्म है। इसराफ़ तो यह है कि किसी ज़रुरत में ज़रुरत से ज़ायद ख़र्च किया जाये। मसलन खाना खाना एक ज़रुरत है और यह ज़रुरत दो रोटियों और थोड़े से सालन से बख़ूबी पूरी हो जाती है, मगर इसी ज़रुरत के लिए कई-कई खानों पर मुश्तमिल दस्तरख्वान सजा दिये जायें तो यह इसराफ़ है। इसी तरह कपड़ा इंसान की ज़रुरत है जिसके लिए एक-दो जोड़े काफी हैं। अब अगर अलमारियों की अलमारियाँ तरह-तरह के जोड़ों, सूटों और पोशाकों से भरी पड़ी रहें है तो यह इसराफ़ के ज़ुमरे में आयेगा। इसराफ़ के मुक़ाबले में तब्ज़ीर से मुराद ऐसे बेतहासा अख़राजात हैं जिनकी सिरे से ज़रुरत ही ना हो, मसलन शादी ब्याह की रस्मों पर बेहिसाब ख़र्च करना और नाम व नमूद के लिए तरह-तरह के मौक़े पैदा करके उन पर माल व दौलत को ज़ाया करना तब्ज़ीर है।

आयत 27

اِنَّ الۡمُبَذِّرِیۡنَ کَانُوۡۤا اِخۡوَانَ الشَّیٰطِیۡنِ ؕ

"यक़ीनन माल को फ़ज़ूल उड़ाने वाले श्यातीन के भाई हैं।"

यहाँ पर मुबज़्ज़रीन को जो श्यातीन के भाई क़रार दिया गया है, इसकी मन्तिक़ और बुनियाद क्या है? यह बात जब मेरी समझ में आई तो मुझ पर क़ुरान के ऐजाज़ का एक नया पहलु मुन्कशिफ़ हुआ। सूरह मायदा में अल्लाह तआला का फरमान है: {اِنَّمَا یُرِیۡدُ الشَّیۡطٰنُ اَنۡ یُّوۡقِعَ بَیۡنَکُمُ الۡعَدَاوَۃَ وَ الۡبَغۡضَآءَ فِی الۡخَمۡرِ وَ الۡمَیۡسِرِ} (आयत 91) "शैतान तो यही चाहता है कि तुम्हारे दरमियान दुश्मनी व बुग्ज़ पैदा करे शराब और जुए के ज़रिए से...." इस आयत के मज़मून पर ग़ौर करने से यह हक़ीक़त समझ में आती है कि शराब और जुआ शैतान के वो ख़तरनाक हथियार हैं जिनकी मदद से वो इंसानों के दरमियान बुग्ज़ व अदावत की आग को भड़का कर अपने एजेंडे की तकमील चाहता है। चुनाँचे अगर शैतान का हदफ़ इंसानों के दिलों में एक-दूसरे के ख़िलाफ़ बुग्ज़ और अदावत के जज़्बात पैदा करना है तो उसका यह हदफ़ तब्ज़ीर के अमल से भी बख़ूबी पूरा हो जाता है और यूँ "मुबज़्ज़रीन" इस मक्र व एजेंडे की तकमील के लिए शैतान के कंधे से कंधा और उसके क़दम से क़दम मिलाये सरगर्मे अमल नज़र आते हैं। इस तल्ख़ हक़ीक़त को एक मिसाल से समझें। ज़रा तसव्वुर करें कि एक सेठ साहब की बेटी की शादी के मौक़े पर उसकी कोठी बक़्अ-ए-नूर बनी हुई है, खूब धूम-धड़ाका है और महज़ नमूद व नुमाईश के लिए माल व दौलत को बेदरीग लुटाया जा रहा है। दूसरी तरफ इसी सेठ साहब का एक मुलाज़िम है जो सिर्फ़ अपनी गुरबत के सबब अपनी

बेटी के हाथ पीले नहीं कर पा रहा और सेठ साहब के यह तमाम तब्ज़ीरी चलन अपनी आँखों से देख रहा है। यह सब कुछ देखते हुए लाज़िमी तौर पर उस गरीब के दिल में नफ़रत, बुग्ज़ और दुश्मनी का लावा जोश मारेगा। अब अगर उसे मौक़ा मिले तो यह आतिश फशाँ पूरी शिद्दत से फटेगा और वो गरीब मुलाज़िम अपने मालिक का पेट फाड़ कर उसकी दौलत हासिल करने की कोशिश करेगा। इसी तरह फ़ज़ूल लुटाई जाने वाली दौलत की नुमाईश से अमरा के ख़िलाफ़ मआशरे के महरूम लोगों के दिलों में बुग्ज़ व अदावत और नफ़रत की आग भड़कती है और यूँ शैतान के एजेंडे की तकमील होती है। इसी शैतानी एजेंडे की तकमील के लिए मुआवनीन का किरदार अदा करने के बाइस मुबज़्ज़रीन को यहाँ इख्वानुश्शयातीन क़रार दिया गया है।

وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾

"और यक़ीनन शैतान अपने रब का बहुत ही नाशुक्रा है।"

आयत 28

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا

"और अगर तुम्हें ऐराज़ करना ही पड़ जाये उनसे अपने रब की रहमत के इंतेज़ार में जिसकी तुम्हें उम्मीद है"

कभी यूँ भी होता है कि कोई मोहताज अपनी किसी हाजत बरआरी के लिए ऐसे मौक़े पर आपके पास आता है जब आपके पास भी उसे देने के लिए कुछ नहीं होता। आपको अल्लाह तआला से अच्छे दिनों और फ़राख़दस्ती की उम्मीद तो है मगर वक़्ती तौर पर आप साइल की हाजत से ऐराज़ करने पर मज़बूर हैं और चाहते हुए भी उसकी मदद नहीं कर सकते। अगर तुम्हें किसी वक़्त ऐसी सूरतेहाल का सामना हो:

فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾

"तो उनसे कहो नर्म बात।"

ऐसे मौक़े पर साइल को झिड़को नहीं, बल्कि मतानत और शराफ़त से मुनासिब अल्फ़ाज़ में उससे माज़रत कर लो।

आयत 29

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ

"और ना बाँध लो अपने हाथ को अपनी गर्दन के साथ"

यह इस्तआरा है बुख्ल और कंजूसी का। यानि आप अपने हाथ को अपनी गर्दन के साथ बाँध कर किसी को कुछ देने से खुद को माज़ूर ना कर लें।

وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ

"और ना उसे बिल्कुल ही खुला छोड़ दो"

बाज़ अवक़ात इंसान के अंदर नेकी का जज़्बा इस क़दर जोश खाता है कि वो अपना सब कुछ अल्लाह की राह में लुटा देना चाहता है।

فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿٢٩﴾

"कि फिर बैठे रहो मलामत ज़दा हारे हुए।"

ऐसा ना हो कि एक वक़्त में तो जज़्बात में आकर इंसान सारा माल क़ुर्बान कर दे मगर बाद में पछताए कि यह मैंने क्या कर दिया? अब क्या होगा? अब मेरी अपनी ज़रूरियात कहाँ से पूरी होंगी? चुनाँचे इंसान को हर हाल में ऐतदाल की रविश इख़्तियार करनी चाहिए।

आयत 30

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ

"यक़ीनन तुम्हारा रब कुशादा करता है रिज़्क़ जिसके लिए चाहता है और तंग करता है (जिसके लिए चाहता है)।"

बाज़ अवक़ात अल्लाह का कोई बंदा चाहता है कि मैं कोशिश करके अपने फलाँ नादार रिश्तेदार के हालात बेहतर कर दूँ, मगर उसकी पूरी कोशिश के बावजूद उसके हालात नहीं सुधरते। ऐसी कैफियत के बारे में फ़रमाया गया कि किसी के रिज़्क़ की तंगी और फ़राखी का फैसला अल्लाह तआला करता है, इसमें तुम लोगों को कुछ इख़्तियार नहीं। लिहाज़ा तुम लोग अपनी सी कोशिश करते रहो और नताइज अल्लाह पर छोड़ दो।

إِنَّهُۥ كَانَ بِعِبَادِهِۦ خَبِيرًۢا بَصِيرًا ۝٣٠

"यक़ीनन वो अपने बंदों की खबर रखने वाला (और उनके हालात को) देखने वाला है।"

आयत 31

وَلَا تَقْتُلُوٓا۟ أَوْلَٰدَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَٰقٍ ۖ

"और अपनी औलाद को क़त्ल ना करो मुफ़्लिसी के अंदेशे से।"

क़दीम ज़माने में क़त्ले औलाद का मुहर्रक (प्रोत्साहन) इफ्लास (गरीबी) का खौफ़ हुआ करता था। आज-कल हमारे यहाँ बर्थ कंट्रोल और अबादी के मन्सूबे बंदी के बारे में जो इज्तमाई सोच पाई जाती है और उस सोच के मुताबिक़ इंफ़रादी और इज्तमाई सतह पर जो कोशिशें हो रही हैं उनकी कई सूरतें भी इस आयत के हुक्म में आती हैं। इस सिलसिले में मज्मुई तौर पर कोई एक हुक्म नहीं लगाया जा सकता। इसकी तमाम सूरतें हराम मुतलक़ नहीं, बल्कि बाज़ सूरतें जायज़ भी हैं, जबकि बाज़ मकरूह और बाज़ हराम। मगर ऐसी सोच को एक इज्तमाई तहरीक की सूरत में मुनज़्ज़म करना बहरहाल ईमान और तवक्कुल अल्लल्लाह की नफ़ी है। इस कोशिश का सीधा और साफ़ मतलब यह है कि इंसान को अल्लाह के राज़िक़ होने पर ईमान व यक़ीन नहीं और वो ख़ुद अपनी जमा तफ़रीक़ से हिसाब पूरा करने की कोशिश करना चाहता है। दरअसल इंसान अल्लाह के खज़ानों और वसाइल की वुसअतों का कुछ अंदाज़ा नहीं कर सकता और उसे अपनी इस कोताही और माज़ूरी का अदराक

होना चाहिए। मसलन कुछ अरसा पहले तक इंसान को अंदाज़ा नहीं था कि समुद्र के अंगर इंसानी गिज़ा के किस क़द्र वसीअ ख़ज़ाने पोशीदा हैं और उसे यह भी मालूम नहीं था कि समुद्री गोश्त {لَحۡمًا طَرِيًّا} (नहल:14 और फ़ातिर:12) की अफ़ादियत इंसानी सेहत के लिए red meat के मुक़ाबले में किस क़दर ज़्यादा है।

इस ज़िमन में एक अहम बात यह जानने की है कि मुख़्तलिफ़ मानाअ हमल तरीक़ों और कोशिशों पर "क़त्ले औलाद" के हुक्म का इतलाक़ नहीं होता, लेकिन बाक़ायदा हमल ठहर जाने के बाद उसे ज़ाया करना बहरहाल क़त्ल के ज़ुमरे में ही आता है।

نَحۡنُ نَرۡزُقُهُمۡ وَاِيَّاكُمۡ ؕ

"हम उसको भी रिज़्क़ देंगे और तुम्हें भी।"

तुम यह समझते हो कि तुम्हें जो रिज़्क़ मिल रहा है वो तुम्हारी अपनी मेहनत और मन्सूबा बंदी का नतीजा है। ऐसा हरग़िज़ नहीं, तुम्हारे हक़ीक़ी राज़िक़ हम हैं और जैसे हम तुम्हें रिज़्क़ दे रहे हैं उसी तरह तुम्हारी औलाद के रिज़्क़ का बंदोबस्त भी हमारे ज़िम्मे है।

اِنَّ قَتۡلَهُمۡ كَانَ خِطۡاً كَبِيۡرًا ﴿۳۱﴾

"यक़ीनन उनको क़त्ल करना बहुत बड़ी ख़ता है।"

आयत 32

وَلَا تَقۡرَبُوا الزِّنٰٓى

"और ज़िना के क़रीब भी मत जाओ"

यहाँ "ज़िना मत करो" के बजाय वो हुक्म दिया जा रहा है जिसमें इंतहाई अहतियात का मफ़हूम पाया जाता है कि ज़िना के क़रीब भी मत फ़टको। यानि हर उस मामले से ख़ुद को महफ़ूज़ फ़ासले पर रखो जो तुम्हें ज़िना तक ले जाने या पहुँचाने का सबब बन सकता हो।

اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيۡلًا ۝٣٢

"यक़ीनन यह बहुत बेहयाई का काम है, और बहुत ही बुरा रास्ता है।"

आयत 33

وَلَا تَقۡتُلُوا النَّفۡسَ الَّتِىۡ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالۡحَـقِّ ؕ

"और मत क़त्ल करो उस इंसानी जान को जिसे अल्लाह ने मोहतरम ठहराया है मगर हक़ के साथ।"

यहाँ "हक़" से मुराद चंद वो सूरतें हैं जिनमें इंसानी जान का क़त्ल जायज़ है। उनमें खून का बदला खून, इस्लामी रियासत में मुर्तद की सज़ा मौत, शादी शुदा ज़ानी और ज़ानिया का रज्म और हर्बी काफ़िर का क़त्ल शामिल है।

وَمَنۡ قُتِلَ مَظۡلُوۡمًا فَقَدۡ جَعَلۡنَا لِوَلِيِّهٖ سُلۡطٰنًا

“और जिसे क़त्ल कर दिया गया मज़्लूमी में, तो उसके वली को हमने इख़्तियार दिया है”

इस्लामी क़ानून में मक़तूल के वुरसा को इख़्तियार है कि वो जान के बदले जान की सज़ा पर इसरार करें या माफ़ कर दें या फिर खून बहा ले लें। यह तीनो इख़्तियारात मक़तूल के वुरसा ही को हासिल हैं। किसी अदालत या सरबराहे मम्लकत को इसमें कुछ इख़्तियार नहीं।

فَلَا يُسۡرِفۡ فِّى الۡقَتۡلِ‌ؕ

“तो वो भी क़त्ल में हद से तजावुज़ ना करे।”

यानि जान के बदले जान का फ़ैसला हो तो उसमें तजावुज़ करने की इजाज़त नहीं है। ऐसा ना हो कि एक आदमी के बदले मुख़ालिफ़ फ़रीक़ के ज़्यादा लोग क़त्ल कर दिए जायें, तरीक़ा-ए-क़त्ल में किसी क़िस्म की ज़्यादती की जाये या किसी भी अंदाज़ में अपने इस इख़्तियार का नाजायज़ इस्तेमाल किया जाये।

اِنَّهٗ كَانَ مَنۡصُوۡرًا ﴿۳۳﴾

“उसकी मदद की जायेगी।”

क़ातिल को पकड़ने, उस पर मुक़दमा चलाने और इंसाफ़ दिलाने तक के तवील और पेचीदा अमल में हर मरहले पर मक़तूल के वुरसा की मदद करना रियासत की ज़िम्मेदारी है। इस सिलसिले में एक अहम नुक़्ता यह है कि क़त्ल के मुक़द्दमात में रियासत या हुकूमत मुद्दई नहीं बनेगी, बल्कि मक़तूल के वुरसा ही मुद्दई होंगे। हमारे यहाँ जो “सरकार

बनाम फलाँ" के उन्वान से मुक़दमा बनता है वो मामला सरासर ग़ैर इस्लामी है।

आयत 34

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ

"और मत क़रीब जाओ यतीम के माल के मगर अहसन तरीक़े से"

यह आयत क़ब्ल अजें हम सूरतुल अन्आम (आयत 152) में भी पढ़ चुके हैं। यानि यतीम के माल को हड़प करने, उससे नाजायज़ फ़ायदा उठाने या उसे ज़ाया करने की कोशिश ना करो, बल्कि उसकी हिफ़ाज़त करो और उसे हर तरह से सम्भाल कर रखो:

حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ

"यहाँ तक कि वो अपनी जवानी को पहुँच जाये"

وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝۳۴

"और अहद को पूरा करो, यक़ीनन अहद के बारे में बाज़-पुर्स होगी।"

आयत 35

وَاَوۡفُوا الۡكَيۡلَ اِذَا كِلۡتُمۡ وَزِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ الۡمُسۡتَقِيۡمِ ؕ

"और जब तुम नापो तो पैमाना पूरा भरो, और वज़न को सीधी तराज़ू के साथ।"

ذٰلِكَ خَيۡرٌ وَّاَحۡسَنُ تَاۡوِيۡلًا ۝۳۵

"यही बेहतर है और अंजाम के ऐतबार से भी ख़ूबतर है।"

अगर तुम नाप-तौल पूरा करते हो और लेन-देन के तमाम मामलात दयानत दारी से सरअंजाम देते हो तो हज़रत शोऐब अलै. के फ़रमान के मुताबिक़: {بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ} (हूद:86) "अल्लाह का दिया हुआ मुनाफ़ा ही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम ईमान वाले हो।" दयानतदारी से कमाया हुआ मुनाफ़ा थोड़ा भी होगा तो अल्लाह तआला उसमें बरकत अता करेगा।

आयत 36

وَلَا تَقۡفُ مَا لَيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ

"और मत पीछे पड़ो उस चीज़ के जिसके बारे में तुम्हें इल्म नहीं।"

बहैसियत अशरफ़ुल मख़्लुक़ात इंसान का तर्ज़े अमल ख़ालिस इल्म पर मब्नी होना चाहिए। उसे ज़ेब नहीं देता कि वो अपने किसी अमल या नज़रिये की बुनियाद तोहमतों पर रखे या ऐसी मालूमात को लायक़-ए-ऐतनाअ समझे जिनकी

कोई इल्मी सनद ना हो। मगर सवाल पैदा होता है कि खुद इंसानी इल्म की बुनियाद और उसका मिम्बा क्या है? इस सिलसिले में हम जानते हैं कि बुनियादी तौर पर इंसानी इल्म की दो अक़साम हैं। एक इकतसाबी इल्म (acquired knowledge) और दूसरा इल्हामी इल्म (revealed knowledge)। इकतसाबी इल्म की बुनियाद वही इल्मुल अस्माअ है जो अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै. को सिखाया था और जिसका ज़िक्र हम सूरतुल बक़रह के चौथे रुकूअ में पढ़ आये हैं। इस इल्म का ताल्लुक़ इंसानी हवास और ज़हन से है। इंसान अपने हवास की मदद से यह इल्म हासिल करके अपने ज़हन में महफ़ूज़ करता रहता है। ज्यों-ज्यों इंसान के तजुर्बे और मुशाहिदे का दायरा फैलता है इस इल्म में भी तौसीअ होती जाती है और यूँ यह इल्म कुर्रा-ए-अर्ज़ पर इंसानी ज़िन्दगी के रोज़े अव्वल से लेकर आज तक मुसलसल इरतक़ाअ पज़ीर है। दूसरी तरफ़ इल्हामी इल्म है जिसका इंसान के हवास से क़तअन कोई ताल्लुक़ नहीं। इस इल्म के तमाम ज़राय मसलन वही (जली या ख़फ़ी) “इल्हाम” कश्फ़ और रुअया-ए-सादक़ा (सच्चे ख़्वाब) का ताल्लुक़ इंसान के हैवानी वजूद के बजाय उसके रूहानी वजूद से है। इंसानी रूह इस इल्म को बराहेरास्त मौसूल करती है और इसका मसकन व मरकज़ इंसानी क़ल्ब है। इस सिलसिले में दूसरा अहम नुक़्ता यह है कि अंबिया अलै. पर नाज़िल होने वाली वही, चाहे जली हो या ख़फ़ी, नुबुवत का हिस्सा है और इल्मी लिहाज़ से एक क़तई दलील या बुरहाने क़ातअ है। लेकिन किसी आम शख़्स को वही ख़फ़ी, इल्हाम या कश्फ़ के ज़रिए मिलने वाला इल्म दूसरों के लिए कोई इल्मी दलील फ़राहम नहीं करता। ऐसा इल्म सिर्फ़ मुताल्क़ा शख़्स के लिए दलील हो सकता है और वो भी सिर्फ़

उस सूरत में जब वह खिलाफ़े शरीअत ना हो। इस हवाले से देखा जाये तो आयत ज़ेरे नज़र में इंसान का इकतसाबी इल्म ज़ेरे बहस है।

إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۞٣٦

"यक़ीनन समाअत, बसारत और अक़्ल सभी के बारे में बाज़पुर्स की जायेगी।"

अल्लाह तआला ने इंसान को इल्म के इकतसाब व इस्तेमाल के लिए हवासे ख़म्सा (जिनमें से दो अहमतरीन हवास का ज़िक्र यहाँ किया गया है) और अक़्ल से नवाज़ा है और इस लिहाज़ से उसकी इन सलाहियतों का अहतसाब भी होगा। यहाँ पर लफ्ज़ फ़ुआद बहुत अहम है जिसकी वज़ाहत ज़रुरी है। आम तौर पर इस लफ्ज़ का तर्जुमा "दिल" किया गया है, मगर इस तर्जुमे के लिए कोई लुग्वी बुनियाद मौजूद नहीं। इस लफ्ज़ का माद्दा वही है जिससे लफ्ज़ फ़ायदा मुश्तक़ है और लफ्ज़ फ़ायदा के मायने किसी चीज़ के उस जौहर या लुब्बे-लुबाब के हैं जो उस चीज़ में असल मक़सूद होता है। पुराने दौर की कुतुब (किताबों) में यह अंदाज़ आम मिलता है कि कोई हिकायत या रिवायत बयान करने के बाद उसका नतीजा बयान करने के लिए लफ्ज़ फ़ायदा या सिर्फ़ "फ़" लिख दिया जाता था। इससे यह वाज़ेह होता है कि किसी तफ़्सील के खुलासे या किसी काम के नतीजे को फ़ायदा कहा जाता है। लफ्ज़ "फ़ईद" भी इसी माद्दे से मुस्तक़ है। अरबी में "फ़ईद" किसी सब्ज़ी या गोश्त वग़ैरह की भुजिया को कहा जाता है और इस लफ्ज़ (फ़ईद) में भी नतीजा या खुलासा वग़ैरह का मफ़हूम पाया जाता है। यानि गोश्त वग़ैरह को

उबालने व भूनने से जब उसका फालतु पानी खुश्क हो जाता है तब उसमें से बहुत थोड़ी मिक़दार में वो चीज़ हासिल होती है जिस पर लफ्ज़ फ़ईद का इतलाक़ होता है।

इस लुग्वी वज़ाहत के बाद लफ्ज़ "फ़ुआद" के मफ़हूम और इंसानी हवास के साथ इसके ताल्लुक़ को समझने में आसानी होगी। हवासे इंसानी अपने-अपने ज़राय से मालूमात हासिल करके दिमाग तक पहुँचाते हैं। दिमाग का कंप्यूटर उन मालूमात को process करता है, पहले से मौजूद अपने ज़खीरा-ए-मालूमात के साथ उनका तताबुक़ (tally) या तक़ाबुल (compare) करके इस सारे अमल से कोई नतीजा अख़ज़ करता है और फिर इस नतीजे को अपने ज़खीरा-ए-मालूमात (memory) में महफ़ूज़ (store) कर लेता है। इसी ज़खीरा-ए-मालूमात का नाम इल्म है और इंसान की वो क़ुव्वत या सलाहियत जो इस सारे अमल को मुम्किन बनाती है "फ़ुआद" कहलाने की मुस्तहिक़ है। अरफ़े आम में इस क़ुव्वत या सलाहियत को अक़्ल या शऊर कहा जाता है। चुनाँचे मेरे नज़दीक "फ़ुआद" का दुरुस्त तर्जुमा अक़्ल या शऊर ही है।

इस पूरे तनाज़र में इस आयत का मफ़हूम यह है कि अल्लाह तआला ने इंसान को मुफ़ीद हवास (sense organs) अता किए हैं और इन हवास से हासिल होने वाली मालूमात का तज्ज़िया करने की सलाहियत से उसे नवाज़ा है। अब अगर इंसान अपने इन हवास से इस्तफ़ादा ना करे, अक़्ल व शऊर की सलाहियत से कोई काम ना ले और अपने नज़रियात की बुनियाद तोहमात पर रख ले तो वो बहुत बड़े ज़ुल्म का मुरतकिब होगा। मसलन ज़लज़ले के बारे में कभी लोगो में यह नज़रिया मशहूर था कि हमारी यह ज़मीन एक बैल ने अपने एक सींग पर उठा रखी है। जब वो

थक जाता है तो उसे दूसरे सींग पर मुन्तक़िल करता है, जिससे ज़लज़ला आ जाता है। इस मज़हका ख़ैज़ नज़रिये के लिए ना तो क़ुरान व हदीस में कोई दलील मौजूद है और ना ही इंसान के इकतसाबी और तजुर्बाती ऊलूम इसके लिए कोई दलील फ़राहम करते हैं। यही वज़ह है कि इंसान को अपनी सलाहियतों के हवाले से उस हस्ती के सामने जवाबदेह रखा गया है जिसने उसे यह सब कुछ अता किया है। चुनाँचे इंसान को चाहिए कि जिस चीज़ या ख़बर की बुनियाद में इल्हामी या इकतसाबी व तजुर्बाती इल्म की कोई क़तई दलील मौजूद ना हो, उसे क़ाबिले ऐतनाअ ना समझे और अपने फ़कार (फ़िक्र) व नज़रियात की बुनियाद ऐसे ठोस इल्मी हक़ाइक़ पर रखे जिनकी वो साइंटीफिक अंदाज़ में तौशीक़ व तस्दीक़ भी कर सकता हो। यह आयत इस लिहाज़ से बहुत अहम है कि उसने इल्मी मैदान में नौए इंसानी कि रहनुमाई उस रास्ते के तरफ़ की है जो इंसान के शायाने शान है।

यहाँ पर अरस्तू के इस्तख़राजी फ़लसफ़े का ज़िक्र करना भी ज़रुरी मालूम होता है। एक मुद्दत तक पूरी दुनिया में इस फ़लसफ़े का डंका बजता रहा। आलमे इस्लाम में भी यह फ़लसफ़ा बहुत मक़बूल रहा और कई सदियों के बाद जाकर कहीं इसकी गिरफ़्त ढीली हुई है। इस्तख़राजी मन्तिक़ (deductive knowledge) के मुताबिक़ सिर्फ़ दस्तयाब मालूमात से ही नतीजे अख़ज़ किए जाते थे। चुनाँचे किसी मौज़ू पर जो थोड़ी बहुत मालूमात दस्तयाब होती थीं, वक़्त के फ़लसफ़ी और हकीम उन्हीं में से बाल की खाल उतार-उतार कर नतीजे अख़ज़ करते रहते थे। इसके मुक़ाबले में क़ुरान ने इस्तक़राई मन्तिक़ (inductive knowledge) का फ़लसफ़ा मुताअ’रिफ़ कराया और इंसान को मुशाहिदे

(observation) और तजुर्बे की मदद से मुसलसल इल्म हासिल करने की राह दिखाई: {اَفَلَا یَنۡظُرُوۡنَ اِلَی الۡاِبِلِ کَیۡفَ خُلِقَتۡ} {وَ اِلَی السَّمَآءِ کَیۡفَ رُفِعَتۡ} {وَ اِلَی الۡجِبَالِ کَیۡفَ نُصِبَتۡ} {وَ اِلَی الۡاَرۡضِ کَیۡفَ سُطِحَتۡ} (अल् गाशियह:17-20) "क्या यह लोग देखते नहीं ऊँट की तरफ़ कि कैसे पैदा किया गया है। और आसमान की तरफ़ कि कैसे बुलंद किया गया है। और पहाड़ों की तरफ़ कि कैसे नस्ब किए गये हैं। और ज़मीन की तरफ़ कि कैसे हमवार की गई है!" अल्लामा इक़बाल ने इस फ़िक्रे क़ुरानी की तर्जुमानी यूँ की है:

खोल आँख, ज़मीन देख, फ़लक देख, फ़िज़ा देख
मशरिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख!

फ़ितरत और मज़ाहिर फ़ितरत के बारे में हम मुसलमानों का अक़ीदा है कि इनके क़वानीन बहुत मज़बूत और मुस्तहकम होने के बावजूद अल्लाह के हुक्म के ताबेअ हैं। अल्लाह जब चाहे फ़ितरत के इन क़वानीन को मौतल (suspend) कर सकता है या बदल सकता है। लेकिन इसके बावजूद असल हक़ीक़त यही है कि इस कायनात का अमूमी निज़ाम बहुत मज़बूत, मोहकम और अटल तबई उसूल व क़वानीन पर चल रहा है और इन क़वानीन को मौतल करने के मौअज़्ज़ात रोज़-रोज़ रूनुमा नहीं होते। समुद्र हज़रत मूसा अलै. के लिए नौए इंसानी की तारीख़ में एक ही दफ़ा फटा था और आग ने एक ही दफ़ा हज़रत इब्राहीम अलै. को जलाने से इंकार किया था। बहरहाल दुनिया में तबई साइंस (physical science) की मुख़्तलिफ़ टेकनालॉजीज़ का वजूद फ़ितरत के अटल क़वानीन का ही मरहूने मिन्नत है और इसी वजह से आज तरह-तरह की साइंसी तरक्क़ी मुमकिन हुई है। इसी बुनियाद पर क़ुरान इन मज़ाहिर

फ़ितरत को अल्लाह तआला की निशानियाँ क़रार देता है और इंसान को दावते फ़िक्र देता है कि वो अल्लाह की इन निशानियों को गौर से देखे, इनके अंदर कारफ़रमाँ क़वानीन का तजज़ियाती मुताअला करके नताइज अख़ज़ करे और फिर इन नतीजों को काम में लाकर अपनी ज़िन्दगी में तरक़्क़ी की नई मंज़िलें तलाश करे।

अल्लामा इक़बाल ने इसी हवाले से अपने खुत्बात में फ़रमाया है: The inner core of the western civilization is Quranic” कि मौजूदा मग़रबी तहज़ीब का अंदरूनी महवर (axis) ख़ालिस क़ुरानी है, क्योंकि उसकी बुनियाद साइंस पर है और साइंसी उलूम की तरफ़ इंसान की तवज्जोह क़ुरान ने मब्ज़ूल (आकर्षित) करवाई है। बहरहाल क़ुरान इंसान को हर क़िस्म के तोहमात, रमल, नजूम पामिस्ट्री वग़ैरह से बेज़ार करके अपने मामलात और नज़रियात की बुनियाद ठोस इल्मी हक़ाइक़ पर रखने की हिदायत करता है।

इंसानी ज़िन्दगी के सफ़र में तवाज़ुन रखने के लिए मज़कूरा दोनों क़िस्म के उलूम (इकतसाबी और इल्हामी) अपने-अपने दायरा-ए-अमल में निहायत अहम हैं। दोनों की अहमियत इससे भी वाज़ेह होती है कि हज़रत आदम अलै. की पैदाइश के फ़ौरन बाद आपको इल्मुल अस्माअ (यह वही इल्म है जिसका ताल्लुक़ इंसानी हवास से है और वक़्त के साथ-साथ जिसका दायरा वसीअ होता जा रहा है) से भी नवाज़ दिया गया था और आपको ज़मीन पर भेजते वक़्त इल्हामी इल्म की इत्तेबाअ (following) की हिदायत भी कर दी गई थी: {فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ} (बक़रह:38) “फिर अगर आये तुम्हारे पास मेरी

तरफ़ से कोई हिदायत, तो जिसने पैरवी की मेरी हिदायत की तो उनको ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना ही वो ग़मगीन होंगे।"

यूरोपी मआशरा इस सिलसिले में बहुत बड़ी कोताही का मुरतकिब हुआ है कि उस मआशरे में सारी तवज्जोह इकतसाबी इल्म पर मरकूज़ करके इल्हामी इल्म से बिल्कुल ही सर्फ़े नज़र कर लिया गया। गोया अल्लाह तआला ने इंसान को दो आँखें दी थीं, उनमें एक इकतसाबी इल्म की आँख थी और दूसरी इल्हामी इल्म की। यूरोप में एक आँख को मुकम्मल तौर पर बंद करके हर चीज़ को देखने और परखने के लिए दूसरी अकेली आँख पर ही इन्हसार कर लिया गया। नतीजतन ना तो इंसान की सोच में ऐतदाल रहा ना अमल में तवाज़ुन, और यूँ इस पूरे मआशरे ने यक चश्मी दज्जालियत की शक्ल इख़्तियार कर ली।

आयत 37

وَلَا تَمۡشِ فِى الۡاَرۡضِ مَرَحًا‌ ۚ اِنَّكَ لَنۡ تَخۡرِقَ الۡاَرۡضَ وَلَنۡ تَبۡلُغَ الۡجِبَالَ طُوۡلًا ۝۳۷

"और ज़मीन में अकड़ कर ना चलो, ना तो तुम ज़मीन को फाड़ सकोगे और ना ही पहाड़ों की बुलंदी को पहुँच सकोगे।"

तुम जिस क़द्र चाहो ताक़तवर हो जाओ, और हमारी ज़मीन पर जितना भी अकड़-अकड़ कर और पाँव मार-मार कर चल लो, तुम अपनी ताक़त से ज़मीन को फाड़ नहीं सकते, और जिस क़द्र चाहो गर्दन अकड़ा लो और तुर्रा व दस्तार से

सर बुलंद कर लो, तुम क़द में हमारे पहाड़ों के बराबर तो नहीं हो सकते।

आयत 38

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾

"इन सब बातों की बुराई (का पहलु) तेरे रब को बहुत ना पसंद है।"

यानि यह जितने भी अहकाम हैं इनमें अवामिर (Do's) भी हैं और नवाही (Don'ts)भी। जहाँ किसी काम के करने का हुक्म है वहाँ उसे ना करना बुराई है और जहाँ किसी काम से रोका गया है वहाँ उसमें मुलव्विस होना बुराई है। और नाफ़रमानी और बुराई अल्लाह तआला को हर सूरत में ना पसंद है।

आयत 39

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ

"यह है जो (ऐ मुहम्मद صلى الله عليه وسلم!) आपके रब ने आपकी तरफ़ वही की है हिकमत में से।"

यह अहकाम नौए इंसानी के लिए ख़जाना-ए-हिकमत हैं। इंसानी तहज़ीब व तमद्दुन, सक़ाफ़त और इज्तमाइयत के इन उसूलों पर कारबंद होकर इंसान इसी दुनिया में अपनी इज्तमाई ज़िन्दगी को जन्नत बना सकता है।

وَلَا تَجۡعَلۡ مَعَ اللّٰہِ اِلٰـہًا اٰخَرَ فَتُلۡقٰی فِیۡ جَہَنَّمَ مَلُوۡمًا مَّدۡحُوۡرًا ﴿۳۹﴾

"और मत ठहराओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा मअबूद, वरना तुम झोंक दिये जाओगे जहन्नम में मलामत ज़दा, धुत्कारे हुए।"

यहाँ क़ाबिले गौर नुक्ता यह है कि इन अहकाम में अव्वल व आख़िर तौहीद का हुक्म दिया गया है। आगाज़ में {وَقَضٰی رَبُّکَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِیَّاہُ} के अल्फाज़ आये थे, जबकि आख़िर में इसी मज़मून को {وَلَا تَجۡعَلۡ مَعَ اللّٰہِ اِلٰـہًا اٰخَرَ} के अल्फाज़ में फिर दोहराया गया है।

आयत 40

اَفَاَصۡفٰکُمۡ رَبُّکُمۡ بِالۡبَنِیۡنَ وَ اتَّخَذَ مِنَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ اِنَاثًا ؕ

"तो क्या तुम्हें तो मुन्तख़ब कर लिया है तुम्हारे रब ने बेटों के साथ और अपने लिए बना ली हैं फरिश्तों में से बेटियाँ?"

यह अहले अरब के उस अक़ीदे का जवाब है कि फरिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं। यह लोग बेटों पर फ़ख्र करते थे और बेटियों को अपने लिए बाइसे आर समझते थे। उनकी इसी सोच की बुनियाद पर उनसे सवाल किया गया है कि जिस चीज़ को अपने लिए आर (शर्म) समझते हो उसे आख़िर किस मन्तिक़ के मुताबिक़ अल्लाह से मन्सूब करते हो?

اِنَّكُمۡ لَتَقُوۡلُوۡنَ قَوۡلًا عَظِيۡمًا ۝٤٠

"यह तो तुम बहुत बड़ी (गुस्ताख़ी की) बात कहते हो!"

आयात 41 से 52 तक

وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا فِىۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لِيَذَّكَّرُوۡا ؕ وَمَا
يَزِيۡدُهُمۡ اِلَّا نُفُوۡرًا ۝٤١ قُلْ لَّوۡ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا
يَقُوۡلُوۡنَ اِذًا لَّابۡتَغَوۡا اِلٰى ذِى الۡعَرۡشِ سَبِيۡلًا ۝٤٢
سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوۡلُوۡنَ عُلُوًّا كَبِيۡرًا ۝٤٣ تُسَبِّحُ
لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبۡعُ وَالۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِيۡهِنَّ‌ ؕ وَاِنۡ مِّنۡ
شَىۡءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهٖ وَلٰـكِنۡ لَّا تَفۡقَهُوۡنَ
تَسۡبِيۡحَهُمۡ‌ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيۡمًا غَفُوۡرًا ۝٤٤ وَاِذَا قَرَاۡتَ
الۡقُرۡاٰنَ جَعَلۡنَا بَيۡنَكَ وَبَيۡنَ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ
بِالۡاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسۡتُوۡرًا ۝٤٥ۙ وَّجَعَلۡنَا عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ
اَكِنَّةً اَنۡ يَّفۡقَهُوۡهُ وَفِىۡۤ اٰذَانِهِمۡ وَقۡرًا‌ ؕ وَاِذَا ذَكَرۡتَ
رَبَّكَ فِى الۡقُرۡاٰنِ وَحۡدَهٗ وَلَّوۡا عَلٰٓى اَدۡبَارِهِمۡ نُفُوۡرًا
۝٤٦ نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا يَسۡتَمِعُوۡنَ بِهٖۤ اِذۡ يَسۡتَمِعُوۡنَ اِلَيۡكَ

وَاِذۡ هُمۡ نَجۡوٰۤى اِذۡ يَقُوۡلُ الظّٰلِمُوۡنَ اِنۡ تَتَّبِعُوۡنَ اِلَّا
رَجُلًا مَّسۡحُوۡرًا ﴿۴۷﴾ اُنۡظُرۡ كَيۡفَ ضَرَبُوۡا لَكَ
الۡاَمۡثَالَ فَضَلُّوۡا فَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ سَبِيۡلًا ﴿۴۸﴾
وَقَالُوۡۤا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ
خَلۡقًا جَدِيۡدًا ﴿۴۹﴾ قُلۡ كُوۡنُوۡا حِجَارَةً اَوۡ حَدِيۡدًا ﴿۵۰﴾ اَوۡ
خَلۡقًا مِّمَّا يَكۡبُرُ فِىۡ صُدُوۡرِكُمۡ‌ۚ فَسَيَقُوۡلُوۡنَ مَنۡ
يُّعِيۡدُنَا‌ؕ قُلِ الَّذِىۡ فَطَرَكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ‌ ۚ فَسَيُنۡغِضُوۡنَ
اِلَيۡكَ رُءُوۡسَهُمۡ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هُوَ‌ؕ قُلۡ عَسٰٓى اَنۡ
يَّكُوۡنَ قَرِيۡبًا ﴿۵۱﴾ يَوۡمَ يَدۡعُوۡكُمۡ فَتَسۡتَجِيۡبُوۡنَ
بِحَمۡدِهٖ وَتَظُنُّوۡنَ اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿۵۲﴾

आयत 41

وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا فِىۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لِيَذَّكَّرُوۡا‌ؕ

"और हमने फेर-फेर कर बयान किया है इस क़ुरान में (अपनी आयात को) ताकि यह सबक़ हासिल करें।"

इनकी नसीहत के लिए हमने क़ुरान में असलूब बदल-बदल कर हक़ को वाज़ेह किया है। इस सूरह मुबारक के बारे में एक ख़ास बात यह है कि इसमें क़ुरान का लफ्ज़ और ज़िक्र बार-बार आया है। गोया इस सूरत के मज़ामीन का ताना-

बाना क़ुरान से मुताल्लिक़ है। इससे पहले आयत 9 में फ़रमाया गया: {اِنَّ ھٰذَا الْقُرْاٰنَ یَھْدِیْ لِلَّتِیْ ھِیَ اَقْوَمُ} आयत ज़ेरे नज़र में भी क़ुरान का ज़िक्र है और यह ज़िक्र इस अंदाज़ में आइंदा आयात में भी बार-बार आयेगा।

وَمَا یَزِیْدُھُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۝۴۱

"मगर यह नहीं बढ़ाता इन्हें मगर नफ़रत ही में।"

यह उन लोगो की बदबख़्ती है कि क़ुरान में गोना-गों असलूबों में हक़ वाज़ेह हो जाने के बावजूद उनकी बेज़ारी और नफ़रत ही में इज़ाफ़ा हो रहा है और वो हक़ से और ज़्यादा दूर भागे जा रहें हैं।

आयत 42

قُلْ لَّوْ کَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ کَمَا یَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰی ذِی الْعَرْشِ سَبِیْلًا ۝۴۲

"आप ﷺ कहिए कि अगर उसके साथ कुछ दूसरे मअबूद भी होते, जैसा कि ये कहते हैं, तब तो वो ज़रूर तलाश करते साहिबे अर्श की तरफ़ कोई रास्ता।"

अगर वाक़ई अल्लाह के साथ-साथ दूसरे मअबूदों का भी कोई वजूद होता तो वो ज़रूर सरकशी और बग़ावत करते हुए उसके मुक़ाबले में आने की कोशिश करते। जिस तरह छोटे-छोटे राजाओं की फ़ितरी ख़्वाहिश होती है कि वो किसी ना किसी तरह कोशिश करके महाराजा की कुर्सी तक

पहुँच जायें, और अपनी इस ख़्वाहिश की तक्मील के लिए वो बग़ावत तक का ख़तरा मोल ले लेते हैं, इसी तरह अगर अल्लाह के भी शरीक होते तो वो भी अल्लाह के मुक़ाबले में ज़रूर मुहिम जोई करते और अगर ऐसा होता तो इस कायनात का सारा निज़ाम दरहम-बरहम होकर रह जाता।

आयत 43

سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوۡلُوۡنَ عُلُوًّا كَبِيۡرًا ۝٤٣

"वो पाक है और बहुत ही बुलंद व बरतर है उन बातों से जो ये कह रहे हैं।"

आयत 44

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبۡعُ وَالۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِيۡهِنَّ ؕ

"उसकी तस्बीह में लगे हुए हैं सातों आसमान और ज़मीन और (वो तमाम मख्लूक़ भी) जो उनमें है।"

इस कायनात की एक-एक चीज़, चाहे जानदार हो या बज़ाहिर बेजान, वो अल्लाह की तस्बीह करती है। तस्बीह की एक सूरत तो यह है कि कायनात की हर चीज़ अपने वजूद से गोया अपने ख़ालिक़ की खल्लाक़ी और अपने सानेअ (बनाने वाले) की सन्नाई का ऐलान कर रही है। जैसे एक तस्वीर अपने मुसव्विर के मैयार-ए-फ़न का इज़हार करती है, लेकिन तमाम मख़्लूक़ात का एक तर्ज़ तस्बीह क़ौली भी

है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ को ज़बान अता कर रखी है और वो अपनी ज़बान ख़ास से अल्लाह की तस्बीह में मसरूफ़ है।

وَاِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمۡدِهٖ وَلٰکِنۡ لَّا تَفۡقَهُوۡنَ تَسۡبِیۡحَهُمۡ ؕ

"और कोई चीज़ नहीं मगर यह कि वो तस्बीह करती है उसकी हम्द के साथ, लेकिन तुम नहीं समझ सकते उनकी तस्बीह को।"

اِنَّهٗ کَانَ حَلِیۡمًا غَفُوۡرًا ﴿۴۴﴾

"यक़ीनन वो बहुत तहम्मुल वाला, बहुत बख़्शने वाला है।"

हर चीज़ का यही अंदाज़े तस्बीह है जिसका इदराक इंसान नहीं कर सकते। सूरह हामीम सज्दा की आयत 21 में अल्लाह की इस क़ुदरत का ज़िक्र है कि उसने हर चीज़ को क़ुव्वते नात्क़ा (भाषा) अता की है। रोज़े महशर जब इंसानों के अपने अज़ाअ उनके ख़िलाफ़ शहादत देंगे तो वो हैरान होकर अपनी खालों से पूछेंगे कि यह सब क्या है? {قَالُوۡۤا اَنۡطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِیۡۤ اَنۡطَقَ کُلَّ شَیۡءٍ} "उनके चमड़े जवाब में कहेंगे कि हमें उस अल्लाह ने क़ुव्वते गोयाई अता की है जिसने हर चीज़ को बोलना सिखाया है।"

आयत 45

وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٥﴾

"और जब आप ﷺ क़ुरान पढ़ते हैं तो हम आपके और उन लोगों के दरमियान जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, एक मख़्फ़ी पर्दा हाइल कर देते हैं।"

इस आयत में एक दफ़ा फिर क़ुरान का ज़िक्र आया है। यहाँ एक ग़ैर मरई परदे का ज़िक्र है जो मुन्करीने आख़िरत और हिदायत के दरमियान हाइल हो जाता है। इसलिए कि ऐसे लोगों के हर अमल का मैयार व मक़सूद सिर्फ़ और सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी है। वो ना तो आख़िरत की ज़िन्दगी के क़ायल हैं और ना ही वहाँ के अज्रो सवाब के बारे में संजीदा। दुनिया में वो "बाबर बा ऐश कोश कि आलम दोबारा नीस्त" के नज़रिये पर ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं और क़ुरान को या हिदायत की किसी भी बात को तवज्जोह से नहीं सुनते। ऐसे लोगों को उनके इसी रवैय्ये की बिना पर हिदायत से मुस्तक़लन महरूम कर दिया जाता है। और चूँकि यह अल्लाह का क़ानून है इसलिए आयत ज़ेरे नज़र में अल्लाह तआला ने इसे अपनी तरफ़ मन्सूब किया है कि जब आप ﷺ उन्हें क़ुरान पढ़ कर सुनाते हैं तो उनके ग़ैर-संजीदा रवैय्ये की बिना पर हम आप ﷺ के और उनके दरमियान एक ग़ैर मरई पर्दा हाइल कर देते हैं।

आयत 46

وَّجَعَلْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ

“और उनके दिलों पर भी हम पर्दे डाल देते हैं कि वो इसे समझ ना सकें, और उनके कानों में सक़ल (पैदा कर देते हैं)।”

وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓي اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ؀

“और जब आप ﷺ क़ुरान में तन्हा अपने रब ही का ज़िक्र करते हैं तो यह अपनी पीठें मोड़ कर चल देते हैं नफ़रत के साथ।”

यह लोग अपने तअस्सुब की वजह से अकेले अल्लाह का ज़िक्र बतौर मअबूद बर्दाश्त ही नहीं कर सकते। वो चाहते हैं कि अल्लाह के साथ-साथ उनके मअबूदों का भी कभी कभार ज़िक्र हुआ करे और ऐसा ना होने की सूरत में वो अकेले अल्लाह का ज़िक्र सुनने को तैयार नहीं हैं। चुनाँचे वो बिदक कर नफ़रत के साथ पीठ मोड़ कर चले जाते हैं।

आयत 47

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ

“हम ख़ूब जानते हैं जिस गर्ज़ से वो तवज्जोह से सुनते हैं इस (क़ुरान) को जब वो कान लगाए बैठे होते हैं आप ﷺ की तरफ़”

क़ुरैशे मक्का की इस चाल का ज़िक्र पहले भी हो चुका है। उनके बाज़ बड़े सरदार अपने अवाम को धोखा देने के लिए रसूल अल्लाह ﷺ की मजलिस में आते और बज़ाहिर बड़े

इन्हाक से सब कुछ सुनते। फिर वापस जाकर कहते कि लो जी हम तो बड़े ख़ुलूस और इश्तयाक़ के साथ गये थे मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) की महफ़िल में कि वो जो कलाम पेश करते हैं उसको सुनें और समझें, मगर अफ़सोस कि हमें तो वहाँ से कुछ भी हासिल नहीं हुआ। इस तरह वो कोशिश करते कि उनके अवाम भी उनके हमनवा बन जायें और उनमें भी यह सोच आम हो जाये कि यह बड़े-बड़े सरदार आखिर समझदार हैं, बात की तह तक पहुँचने की सलाहियत रखते हैं, मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) की बात सुनने और समझने के लिए मुख्लिस भी हैं और इसी इख़्लास में वो ख़ुसूसी तौर पर आप (صلی اللہ علیہ وسلم) की मजलिस में भी जाते हैं। अगर इस नए कलाम में कोई ख़ास बात होती तो वो ज़रूर इनकी समझ में आ जाती। अब जब ये लोग वहाँ जाकर और उस कलाम को सुन कर कह रहे हैं कि उसमें कुछ भी ख़ास बात नहीं है तो यक़ीनन ये लोग सच ही कह रहे हैं।

وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝۴۷

“और जब वो अलैहदगी में सरगोशियाँ करते हैं, जब यह ज़ालिम (एक दूसरे से) कह रहे होते हैं कि तुम नहीं पैरवी कर रहे हो मगर एक सहरज़दा शख़्स की।”

उनमें से किसी के दिल पर जब क़ुरान की कोई आयत असर करती है और वो उसका इज़हार अपने साथियों के साथ करता है कि हाँ भई मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) ने आज जो फलाँ बात की है उसमें बहुत वज़न है, इस पर हमें संजीदगी से ग़ौर करना चाहिए तो ऐसी सूरत में वो फ़ौरन उसका तोड़ करने के लिए अपने उस साथी को समझाना शुरु कर देते हैं कि

जी छोड़ो! तुम कहाँ एक सहरज़दा आदमी के पीछे चल पड़े। उन (صلی اللہ علیہ وسلم) की बातों पर कोई संजीदा तवज्जोह देने की ज़रुरत नहीं।

आयत 48

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ

"देखिए कैसे बयान करते हैं ये लोग आप صلی اللہ علیہ وسلم के लिए मिसालें"

कभी वो आपको सहरज़दा आदमी कहते हैं, कभी काहिन और कभी शायर! देखें कैसी-कैसी बेहूदा बातें करते हैं और उसमें भी किसी एक राय पर इत्तेफ़ाक़ नहीं कर सकते।

فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝۴۸

"चुनाँचे वो भटक गये हैं और अब राहयाब नहीं हो सकेंगे।"

आयत 49

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۝۴۹

"और वो कहते हैं कि क्या जब हम हो जायेंगे हड्डियाँ और चूरा-चूरा, तो क्या हम उठाये जायेंगे एक नई तख़्लीक़ में?"

यह लोग आप से बड़ी हैरत से सवाल करते हैं कि आप (صلی اللہ علیہ وسلم) जो इंसानों की दोबारा ज़िन्दगी की बात करते हैं यह कैसे मुम्किन है? जब हमारी हड्डियाँ रेज़ा-रेज़ा हो

जायेंगी और गोश्त गल-सड़ जायेगा, तो उसके बाद हमें फिर से नई ज़िन्दगी कैसे मिल सकती है? गोया उनकी सोच के मुताबिक़ ऐसा होना बिल्कुल महाल और नामुम्किन है।

आयत 50

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۝٥٠

"(उनसे) कहिए कि ख़्वाह तुम पत्थर बन जाओ या लोहा।"

आयत 51

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ

"या ऐसी मख़्लूक़ (बन जाओ) जो तुम्हारे दिलों में इनसे भी सख़्त हो।"

ऐ नबी ﷺ इनसे कहिए कि आप तो हड्डियों की बात करते हो और अपने जिस्मों के रेज़ा-रेज़ा होकर ख़त्म हो जाने का तसव्वुर लिए बैठे हो। तुम अगर पत्थर और लोहा भी बन जाओ या अपनी सोच के मुताबिक़ इससे भी बढ़ कर किसी अजीब मख़्लूक़ का रूप धार लो, तब भी तुम्हें अज़ सरे नौ उठा लिया जायेगा।

فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ۭ

"फिर कहेंगे कि कौन हमें दोबारा लौटायेगा?"

قُلِ الَّذِىۡ فَطَرَكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ‌ ۚ

"आप ﷺ कहिए कि वही जिसने पहली मर्तबा तुम्हें पैदा किया था।"

فَسَيُنۡغِضُوۡنَ اِلَيۡكَ رُءُوۡسَهُمۡ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هُوَ‌ ؕ

"फिर वो आपके सामने अपने सरों को मटकायेंगे और कहेंगे कि यह कब होगा?"

लाजवाब होकर अपने सरों को मटकाते हुए बोलेंगे कि चलो मान लिया कि यह सब कुछ मुम्किन है, मगर यह तो बताइये कि ऐसा होगा कब?

قُلۡ عَسٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنَ قَرِيۡبًا ۝۵۱

"आप ﷺ कहिए कि हो सकता है (इसका वक़्त) क़रीब ही हो।"

अजब नहीं कि तुम्हारी शामत की वो घड़ी आया ही चाहती हो, ज़्यादा दूर ना हो।

आयत 52

يَوۡمَ يَدۡعُوۡكُمۡ فَتَسۡتَجِيۡبُوۡنَ بِحَمۡدِهٖ

"जिस दिन वो तुम्हें पुकारेगा तो तुम (उसकी पुकार पर) लब्बैक कहोगे उसकी हम्द करते हुए"

जब वो घड़ी आयेगी और तुम्हारा ख़ालिक़ तुम्हें क़ब्रों से बाहर आने के लिए बुलायेगा तो तुम्हारी हड्डियाँ और तुम्हारे

जिस्मों के बिखरे ज़र्रात सब सिमट कर फिर से ज़िन्दा इंसानों का रूप धार लेंगे और तुम उसकी हम्द करते हुए उसकी पुकार की तामील में भागे चले जा रहे होगे।

وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۝۵۲

"और तुम गुमान करोगे कि तुम नहीं रहे मगर बहुत थोड़ा (अरसा)।"

उस वक़्त तुम्हें दुनिया और आलमे बरज़ख़ (क़ब्र) में अपना बीता हुआ ज़माना ऐसे लगेगा जैसे कि चंद घड़ियाँ ही तुम वहाँ गुज़ार कर आये हो।

आयात 53 से 60 तक

وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا
مُّبِيْنًا ۝۵۳ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ
اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝۵۴
وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ
فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ
زَبُوْرًا ۝۵۵ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا
يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ۝۵۶ اُولٰۗىِٕكَ

الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ يَبۡتَغُوۡنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الۡوَسِيۡلَةَ اَيُّهُمۡ
اَقۡرَبُ وَيَرۡجُوۡنَ رَحۡمَتَهٗ وَيَخَافُوۡنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ
عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحۡذُوۡرًا ﴿۵۷﴾ وَاِنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ اِلَّا
نَحۡنُ مُهۡلِكُوۡهَا قَبۡلَ يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ اَوۡ مُعَذِّبُوۡهَا عَذَابًا
شَدِيۡدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الۡكِتٰبِ مَسۡطُوۡرًا ﴿۵۸﴾ وَمَا
مَنَعَنَاۤ اَنۡ نُّرۡسِلَ بِالۡاٰيٰتِ اِلَّاۤ اَنۡ كَذَّبَ بِهَا
الۡاَوَّلُوۡنَ ؕ وَاٰتَيۡنَا ثَمُوۡدَ النَّاقَةَ مُبۡصِرَةً فَظَلَمُوۡا بِهَا ؕ
وَمَا نُرۡسِلُ بِالۡاٰيٰتِ اِلَّا تَخۡوِيۡفًا ﴿۵۹﴾ وَاِذۡ قُلۡنَا لَكَ اِنَّ
رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلۡنَا الرُّءۡيَا الَّتِىۡۤ
اَرَيۡنٰكَ اِلَّا فِتۡنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الۡمَلۡعُوۡنَةَ فِى
الۡقُرۡاٰنِ ؕ وَنُخَوِّفُهُمۡ ۙ فَمَا يَزِيۡدُهُمۡ اِلَّا طُغۡيَانًا كَبِيۡرًا
﴿۶۰﴾

आयत 53

وَقُلۡ لِّعِبَادِىۡ يَقُوۡلُوا الَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ ؕ

“और आप मेरे बंदों से कह दीजिए कि वही बात कहें जो बहुत अच्छी हो।”

यहाँ वो नुक़्ता ज़हन में ताज़ा कर लीजिए जिसके क़ब्ल अज़े वज़ाहत हो चुकी है कि मक्की सूरतों में अहले ईमान को बराहेरास्त मुख़ातिब नहीं किया गया। उनसे बराहेरास्त तख़ातब का सिलसिला {या अय्युहल्लाज़ीना आमनु} तहवीले क़िब्ला के बाद शुरु हुआ, जब उन्हें बाक़ायदा उम्मते मुस्लिमा के मन्सब पर फ़ायज़ कर दिया गया। उससे पहले अहले ईमान को रसूल अल्लाह ﷺ की वसातत से ही मुख़ातिब किया जाता रहा। चुनाँचे इसी उसूल के तहत यहाँ भी हुज़ूर ﷺ से फ़रमाया जा रहा है कि आप मेरे बंदों (मोमिनीन) को मेरी तरफ़ से यह बता दें कि वो हर हाल में ख़ुश अख्लाक़ी का मुज़ाहरा करें और गुफ़्तगू में भी तरशी और तल्खी ना आने दें। इस तरह आपस में भी शीर व शक्कर बन कर रहें और मुख़ालफ़ीन के सामने भी बेहतर अख्लाक़ का नमूना पेश करें। अक़ामते दीन के इस मिशन को आगे बढ़ाने के लिए मोमिनीन के सामने बहुत ज़्यादा रुकावटें हैं। उनके मुख़ातबीन जहालत की दलदल में फंसे हुए हैं। उनके जाहिलाना ऐतक़ादात नस्लों से चले आ रहें हैं। इसी तरह उन्हें अपने रस्मों रिवाज, सियासी व मआशी मफ़ादात और ग़ैरत व हमीयत के जज़्बात बहुत अज़ीज़ हैं। उन्हें इस सब कुछ का दिफ़ा करना हैं और इसके लिए वो हर तरह की क़ुर्बानियाँ देने को तैयार हैं। इन हालात में दाईयाने हक़ व तहम्मुल, बुर्दबारी और बर्दाश्त का मुज़ाहिरा करना चाहिए। ऐसा ना हो कि वो इश्तआल में आकर (उत्तेजित होकर) आला अख्लाक़ का दामन हाथ से छोड़ बैठें।

اِنَّ الشَّيۡطٰنَ يَنۡزَغُ بَيۡنَهُمۡ‌ ؕ اِنَّ الشَّيۡطٰنَ كَانَ لِلۡاِنۡسَانِ عَدُوًّا مُّبِيۡنًا ﴿۵۳﴾

"यक़ीनन शैतान उनके दरमियान झगड़ा डालेगा। यक़ीनन शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।"

आयत 54

رَبُّكُمۡ اَعۡلَمُ بِكُمۡ‌ ؕ اِنۡ يَّشَاۡ يَرۡحَمۡكُمۡ اَوۡ اِنۡ يَّشَاۡ يُعَذِّبۡكُمۡ‌ ؕ

"तुम्हारा रब तुमसे ख़ूब वाक़िफ़ है। अगर वो चाहेगा तो तुम पर रहम फ़रमायेगा, या अगर चाहेगा तो तुम्हें अज़ाब देगा।"

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ عَلَيۡهِمۡ وَكِيۡلًا ﴿۵۴﴾

"और (ऐ नबी ﷺ) हमने आपको उन पर दरोगा बना कर नहीं भेजा।"

हिदायत को क़ुबूल करना या ना करना हर शख़्स का ज़ाती मामला और ज़ाती इन्तख़ाब है। आप ﷺ उन तक पैग़ाम पहुँचाने के ज़िम्मेदार हैं, उन्हें हिदायत पर लाने के मुकल्लफ़ नहीं।

आयत 55

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

“और आपका रब खूब जानता है उसको जो कोई है आसमानों और ज़मीन में।”

وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ

“और हमने बाज़ अम्बिया को बाज़ पर फ़ज़ीलत बख़्शी है”

यहाँ इस फिक्रे के सयाक़ व सबाक़ को अच्छी तरह समझने की ज़रुरत है। सूरह बनी इस्राईल मक्की दौर के आखरी बरसों में नाज़िल हुई और उसका आग़ाज़ भी बनी इस्राईल की तारीख़ से हुआ। इस सूरह के नुज़ूल से पहले नबी अखिरुज्ज़मान ﷺ की बेअसत और क़ुरान के बारे में तमाम ख़बरें मदीना पहुँच चुकी थीं और यहूदे मदीना एक-एक बात और एक-एक ख़बर का बारीक बीनी से जायज़ा ले रहे थे। फिर अनक़रीब हुज़ूर ﷺ ख़ुद भी मदीना तशरीफ़ लाने वाले थे। इन हालात में जब मुसलमानों का यहूदियों के साथ अक़ाइद व नज़रियात के बारे में तबादला ख़्यालात होना था तो अम्बिया किराम के फ़ज़ाइल के बारे में सवालात का उठना नागुज़ीर था, कि अगर मुहम्मद (ﷺ) नबी हैं तो आप ﷺ और मूसा अलै. में से अफ़ज़ल कौन हैं? या यह मसला कि मुहम्मद ﷺ अफ़ज़ल हैं या ईसा अलै.? चुनाँचे इस हवाले से यहाँ एक बुनियादी और उसूली बात बयान फ़रमा दी गई कि अल्लाह तआला ज़मीन व आसमान में मौजूद अपनी तमाम मख़्लूक़ के अहवाल व कैफ़ियात से खूब वाक़िफ़ हैं और उसने अपने बाज़ अम्बिया को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है। सूरतुल बक़रह की आयत 253

में यही बात यूँ बयान फ़रमाई गई है: {تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ} "यह रसूल हैं इनमें से हमने बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है।" ऐसा ना हो कि इस बहस में पड़ कर आप लोग अपने नबी ﷺ की फ़ज़ीलत इस तरह बयान करें कि मुख़ालफ़ीन के मन्फ़ी जज़्बात को हवा मिले और वो तअस्सुब से मग़लूब होकर आपकी बात ही सुनने से इंकार कर दें।

यह बहुत नाज़ुक मसला है और इसकी नज़ाकत को समझने की ज़रुरत है। हम मुसलमानों का अक़ीदा है कि हमारे नबी ﷺ तमाम अम्बिया किराम से अफ़ज़ल हैं और इसमें कोई शक नहीं कि आप ﷺ सबसे अफ़ज़ल हैं, मगर मौक़ा व महल देखे बग़ैर अपने इस अक़ीदे का इस तरह से चर्चा करना दुरुस्त नहीं कि इससे दूसरे मुश्तइल (उग्र) हों और उनके मुख़ालफ़ाना जज़्बात व ख़्यालात को इन्गख़ैत मिले। इस ज़िमन में हुज़ूर ﷺ की वाज़ेह हदीस है कि ((لَا تُفَضِّلُوْا بَيْنَ اَنْبِيَاءِ اللهِ))[20] "अल्लाह के नबियों के माबैन दर्जाबंदी ना किया करो।" आपने मज़ीद फ़रमाया: ((لَا يَنْبَغِیْ لِعَبْدٍ اَنْ يَقُوْلَ اَنَا خَيْرٌ مِنْ يُوْنُسَ بْنِ مَتّٰى))[21] "किसी शख़्स के लिए रवा नहीं है कि वो यूँ कहे कि मैं (मुहम्मद ﷺ) युनुस बिन मत्ता से अफ़ज़ल हूँ।" आप ﷺ ने यहाँ हज़रत युनुस का ज़िक्र शायद इसलिये फ़रमाया कि हज़रत युनुस अलै. वाहिद नबी हैं जिनकी अल्लाह तआला के यहाँ कुछ गिरफ्त हुई है। बहरहाल आप ﷺ ने वाज़ेह तौर पर इससे मना फ़रमाया है कि दूसरे अम्बिया पर आप ﷺ की फ़ज़ीलत का प्रचार किया जाये।

وَّاٰتَيۡنَا دَاوٗدَ زَبُوۡرًا ۝۵۵

"और हमने दाऊद को ज़बूर अता की थी।"

इस सयाक़ व सबाक़ की मुनास्बत से यहाँ बनी इस्राईल के एक नबी का तज़किरा फ़रमा दिया और आपकी फ़ज़ीलत भी बयान फ़रमा दी कि हज़रत दाऊद अलै. को हमने ज़बूर जैसी जलीलुल क़द्र किताब अता फ़रमाई थी। यहाँ पर यह इशारा मिलता है कि मौक़ा व महल के मुताबिक़ अल्लाह तआला अपने अम्बिया व रुसुल के फ़ज़ाइल और आला मरातिब के ज़िक्र से उनकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई करता है।

आयत 56

قُلِ ادۡعُوا الَّذِيۡنَ زَعَمۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ فَلَا يَمۡلِكُوۡنَ كَشۡفَ الضُّرِّ عَنۡكُمۡ وَلَا تَحۡوِيۡلًا ۝۵۶

"आप कहिए कि उनको पुकार देखो जिनको तुमने उसके सिवा (मअबूद) गुमान कर रखा है, तो ना उन्हें कुछ इख़्तियार हासिल है तुमसे कोई तकलीफ़ दूर करने का और ना ही (तुम्हारी हालत) बदलने का।"

आयत 57

اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ يَبۡتَغُوۡنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الۡوَسِيۡلَةَ اَيُّهُمۡ اَقۡرَبُ

"वो लोग जिन्हें ये पुकारते हैं वो तो ख़ुद अपने रब के क़ुर्ब के मुतलाशी हैं कि उनमें से कौन (उसके) ज़्यादा क़रीब है"

लफ़्ज "वसीला" बमायने क़ुर्ब इससे पहले हम सूरतुल मायदा (आयत 35) में पढ़ चुके हैं। मुराद यह है कि जिस तरह इस दुनिया में अल्लाह के बंदे अल्लाह के यहाँ अपने दर्जात बढ़ाने की फ़िक्र में रहते हैं उसी तरह आलमे ग़ैब या आलमे अम्र मे भी तक़र्रुब इलल्लाह की यह दर्जाबंदी मौजूद है। जैसे फ़रिश्तों में तबक़ा-ए-असफ़ल के फरिश्ते, फिर दर्जा-ए-आला के फ़रिश्ते और फिर मलाइका-ए-मुक़र्रबीन हैं।

अल्लाह की शरीक ठहराई जाने वाली शख़्सियात में से कुछ तो ऐसी हैं जो बिल्कुल ख़्याली हैं और दरहक़ीक़त में उनका कोई वुजूद नहीं। लेकिन उनके अलावा हर ज़माने में लोग अम्बिया, औलिया अल्लाह और फ़रिश्तों को भी अल्लाह तआला के इख़्तियारात में शरीक समझते रहे हैं। ऐसी ही शख़्सियात के बारे में यहाँ फ़रमाया जा रहा है कि वो चाहे अम्बिया व रुसुल हों, या औलिया अल्लाह, या फ़रिश्ते, वो तो आलमे अम्र में ख़ुद अल्लाह की रज़ाजोई के लिए कोशाँ और उसके क़ुर्ब के मुतलाशी हैं। इसके अलावा क़ुरान हकीम में मुतअद्दिद बार ज़िक्र हुआ है कि ऐसी तमाम शख़्सियात जिन्हें दुनिया में मुख्तलिफ़ अंदाज़ में अल्लाह के सिवा पुकारा जाता था क़यामत के दिन अपने अक़ीदतमंदो के मुशरिकाना नज़रियात से इज़हारे बेज़ारी करेंगी और साफ़ कह देंगी कि अगर यह लोग हमारे पीछे हमें अल्लाह शरीक ठहराते रहे थे तो हमें इस बारे कुछ ख़बर नहीं।

وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۭ اِنَّ

"और वो उम्मीदवार हैं उसकी रहमत के और डरते रहते हैं उसके अज़ाब से। वाक़िअतन आप صلی اللہ علیہ وسلم के रब का अज़ाब चीज़ ही डरने की है।"

عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ
مَحْذُوْرًا ۝٥٧

आयत 58

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ

"और नहीं है कोई बस्ती मगर हम उसे हलाक करके रहेंगे रोज़े क़यामत से क़ब्ल या हम अज़ाब देंगे उसे बहुत ही शदीद अज़ाब।"

यह इशारा है उस बहुत बड़ी तबाही की तरफ़ जो क़यामत से पहले इस दुनिया पर आने वाली है। सूरतुल कह्फ़ की दूसरी आयत में इसका ज़िक्र इस तरह किया गया है: {لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ}। सूरह बनी इस्राईल और सूरह कह्फ़ का आपस में चूँकि ज़ौजियत का ताल्लुक़ है इसलिए यह मज़मून इन दोनों आयात को मिला कर पढ़ने से वाज़ेह होता है। अहादीस में "मल्हमातुल उज़मा" के नाम से एक बहुत बड़ी जंग की पेशनगोई की गई है जो क़यामत से पहले दुनिया में बरपा होगी। आयत ज़ेरे नज़र में उसी तबाही का ज़िक्र है जिससे रुए ज़मीन पर मौजूद कोई बस्ती महफ़ूज़ नहीं रहेगी। सूरतुल कह्फ़ में ज़्यादा सराहत के साथ इसका तज़किरा आयेगा।

इस वक़्त दुनिया में एटमी जंग झिड़ने का इम्कान हर वक़्त मौजूद है। अगर ख़ुदा ना ख्वास्ता किसी वक़्त ऐसा

सानेहा (युद्ध) रूनुमा हो जाता है तो एटमी हथियारों की वजह से दुनिया पर जो तबाही आयेगी उसको तसव्वुर में लाना भी मुश्किल है। इन हालात में मल्हमातुल उज़मा के बारे में पेशनगोईयाँ आज मुज्जसम सूरत में सामने खड़ी नज़र आती हैं।

كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾

"यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है।"

यानि यह तयशुदा अमूर में से है। एक वक़्ते मुअय्यन पर यह सब कुछ होकर रहना है।

आयत 59

وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۭ

"और हमें नहीं रोका (किसी और बात ने) कि हम निशानियाँ भेजें, सिवाय इसके कि उनको झुठला दिया था पहले लोगों ने।"

अल्लाह तआला ने हिस्सी मौअज्ज़ात दिखाने सिर्फ़ इसलिए बंद कर दिये हैं कि साबक़ा क़ौमों के लोग ऐसे मौअज्ज़ात को देख कर भी कुफ़्र पर डटे रहे और ईमान ना लाये। यह यही मज़मून है जो सूरतुल अन्आम और उसके बाद नाज़िल होने वाली मक्की सूरतों में तसलसुल से दोहराया जा रहा है।

وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ۭ

"और हमने क़ौमे समूद को ऊँटनी दी आँखें खोल देने वाली निशानी (के तौर पर) तो उन्होंने उसके साथ भी ज़ुल्म किया।"

क़ौमे समूद को उनके मुतालबे पर ऊँटनी का बसीरत अफ़रोज़ मौअज्ज़ा दिखाया गया मगर उन्होंने इस वाज़ेह मौअज्ज़े को देख लेने के बाद भी हज़रत सालेह अलै. पर ईमान लाने के बजाय उस ऊँटनी ही को मार डाला। इसी तरह हज़रत ईसा अलै. को मिट्टी से ज़िन्दा परिंदे बनाने और "क़ुम बिइज़्निल्लाह" कह कर मुर्दों को ज़िन्दा करने तक के मौअज्ज़ात दिये गये, मगर क्या उन्हें देख कर वो लोग ईमान ले आये?

وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۵۹

"और हम नहीं भेजते निशानियाँ मगर सिर्फ़ डराने के लिए।"

निशानियाँ या मौअज्ज़े भेजने का मक़सद तो लोगों को खबरदार करना होता है, सो यह मक़सद क़ुरान की आयात बख़ूबी पूरा कर रही हैं। इसके बाद अब और कौनसी निशानियों की ज़रुरत बाक़ी है? अगली आयत में यही बात तीन मिसालों से मज़ीद वाज़ेह की गई है कि यह लोग किस तरह क़ुरान की आयात के साथ बहस बराए बहस और इंकार का रवैय्या अपनाए हुए हैं और यह कि अल्लाह ने हिस्सी मौअज्ज़ात दिखाना क्यों बंद कर दिये हैं।

आयत 60

وَاِذۡ قُلۡنَا لَکَ اِنَّ رَبَّکَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ

“और जब हम आप ﷺ से कहते हैं कि आप ﷺ के रब ने लोगों का अहाता किया हुआ है।”

क़ुरान हकीम की बहुत सी ऐसी आयात हैं जिनमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि वो लोगों का अहाता किए हुए है, मसलन: {وَّاللّٰہُ مِنۡ وَّرَآئِہِمۡ مُّحِیۡطٌ} (अल् बुरूज:20) “और अल्लाह इनका हर तरफ़ से अहाता किए हुए है।” यह लोग जब ऐसी आयात सुनते हैं तो डरने की बजाय फ़ज़ूल बहस पर उतर आते हैं कि इसका क्या मतलब है? कहाँ है अल्लाह? हमारा अहाता क्योंकर हुआ है?

अगर फ़लसफ़ियाना पहलु से देखा जाये तो इस आयत में “हक़ीक़त व माहियते वजूद” के मौज़ू से मुताल्लिक़ इशारा पाया जाता है जो फ़लसफ़े का मुश्किल तरीन मसला है और आसानी से समझ में आने वाला नहीं है, यानि एक वजूद ख़ालिक़ का है, वो हर जगह, हर आन मौजूद है, और एक वजूद मख़्लूक़ यानि इस कायनात का है। अब ख़ालिक़ व मख़्लूक़ के माबैन रब्त क्या है? इस सिलसिले में कुछ लोग “हमाऊस्त” (Pantheism) के क़ायल हो गये। उनके ख़्याल के मुताबिक़ यह कायनात ही ख़ुदा हैं, ख़ुदा ने ही कायनात का रूप धार लिया है, जैसे ख़ुदा ख़ुद ही इंसानों का रूप धार कर “अवतार” की सूरत में ज़मीन पर आ जाता है। यह बहुत बड़ा कुफ़्र और शिर्क है। दूसरी तरफ़ अगर यह समझे कि अल्लाह का वजूद इस कायनात में नहीं है तो इसका मतलब यह होगा कि उसका वजूद कहीं अलग है और वो नऊज़ुबिल्लाह कहीं महदूद होकर रह गया है। बहरहाल यह मसला आसानी से समझ में नहीं आता। हमें बस इस क़द्र

समझ लेना चाहिए कि अल्लाह का वजूद मुत्लक़ (absolute) है। वो हदूद व क़ुयूद, ज़मान व मकान, किसी सिम्त या जहत के तसव्वुर से मा-वराअ, वराउल वराअ, सुम्मा वराउल वराअ है।

وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ

"और नहीं बनाया हमने इस मुशाहिदे को जो हमने आप ﷺ को दिखाया था मगर एक फ़ितना लोगों के लिए"

यहाँ पर लफ़्ज़ "रुअया" ख़्वाब के मायने में नहीं आया बल्कि इससे रुइयत बसरी मुराद है। इंसान अपनी आँखों से जो कुछ देखता है उस पर भी "रुअया" का इत्लाक़ होता है। अल्लाह तआला ने शबे मेराज में हुज़ूर ﷺ को जो मुशाहिदात कराए थे और जो निशानियाँ आप ﷺ को दिखाई थीं उनकी तफ़्सील जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने सुनी तो यह मामला उनके लिए एक फ़ितना बन गया। वो ना सिर्फ़ ख़ुद इसके मुन्किर हुए, बल्कि इसकी बुनियाद पर वो मुसलमानों को उनके दीन से बरगश्ता करने की कोशिश में लग गये। इस वाक़िये को बुनियाद बना कर उन्होंने पूरी शद्दो-मद से यह प्रचार शुरू कर दिया कि मुहम्मद ﷺ पर जुनून के असरात हो चुके हैं (मआज़ अल्लाह, सुम्मा मआज़ अल्लाह)। उस ज़माने में जब मक्के से बैतुल मुक़द्दस पहुँचने में पन्द्रह दिन लगते थे, यह दावा इन्तहाई ना-क़ाबिले यक़ीन मालूम होता था कि कोई शख़्स रातों-रात ना सिर्फ़ बैतुल मुक़द्दस से हो आया है बल्कि आसमानों की सैर भी कर आया है। चुनाँचे उन्होंने मौक़ा गनीमत समझ कर इस मौज़ू को ख़ूब उछाला और मुसलमानों से बढ़-चढ़ कर बहस मुबाहिसे

किए। इस तरह ना सिर्फ़ यह बात कुफ्फ़ार के लिए फ़ितना बन गई बल्कि मुसलमानों के लिए भी एक आज़माईश क़रार पाई।

जब यही ना-क़ाबिले यक़ीन बात उन लोगों ने हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. से की और आपसे तबसरा चाहा तो आपने बिला तौक़फ़ जवाब दिया कि अगर वाक़ई हुज़ूर ﷺ ने ऐसा फ़रमाया है तो यक़ीनन सच फ़रमाया है, क्योंकि जब मैं यह मानता हूँ कि आप ﷺ के पास आसमानों से हर रोज़ फ़रिश्ता आता है तो मुझे आप ﷺ का यह दावा तस्लीम करने में आख़िर क्यों कर ताम्मुल होगा कि आप ﷺ रातों-रात आसमानों की सैर कर आये हैं! इसी बिला ताम्मुल तस्दीक़ की बिना पर उस दिन से हज़रत अबुबक्र रज़ि. का लक़ब "सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ि." क़रार पाया।

وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ

"और उस दरख़्त को भी जिस पर क़ुरान में लानत वारिद हुई है।"

इसी तरह जब क़ुरान में ज़क्कूम के दरख़्त का ज़िक्र आया और उसके बारे में यह बताया गया कि इस दरख़्त की जड़ें जहन्नम की तह में होंगी (अस्सफ़ात 64) और वहाँ से यह जहन्नम की आग में परवान चढ़ेगा तो यह बात भी उन लोगों के लिए फ़ितने का बाइस बन गई। बजाय इसके कि वो लोग इसे अल्लाह की क़ुदरत समझ कर तस्लीम कर लेते, उलटे इस बात पर तमस्ख़र और इस्तेहज़ा करने लगे कि आग के अंदर भला दरख़्त कैसे पैदा हो सकते हैं? उन्हें क्या मालूम कि यह उस आलम की बात है जिसके तबई क़वानीन इस

दुनिया के तबई क़वानीन से मुख़्तलिफ़ होंगे और जहन्नम की आग की नौइयत और कैफ़ियत की भी हमारी दुनिया की आग से मुख़्तलिफ़ होगी।

وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ
اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾

"और (इन बातों से) हम तो उन्हें तम्बीह करते हैं मगर यह तम्बीह उनकी सरकशी ही में इज़ाफ़ा किए जा रही है।"

क़ुरान में यह सब बातें उन्हें खबरदार करने के लिए नाज़िल हुई हैं, मगर यह उन लोगों की बदबख़्ती है कि अल्लाह की आयात सुन कर डरने और ईमान लाने के बजाय वो मज़ीद सरकश होते जा रहे हैं और उनकी सरकशी में रोज़-बरोज़ मज़ीद इज़ाफ़ा होता जा रहा है।

आयात 61 से 65 तक

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿٦١﴾ قَالَ
اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ۡ لَىِٕنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ
اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاۗؤُكُمْ جَزَاۗءً
مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ
بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ

وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا
يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ
لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۚ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾

आयत 61

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ

“और याद करो जब हमने कहा था फ़रिश्तों से कि सज्दा करो आदम अलै. को तो उन सबने सज्दा किया मगर इब्लीस ने (नहीं किया)।”

قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿٦١﴾

“उसने कहा कि क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तूने पैदा किया है मिट्टी से?”

हज़रत आदम अलै. और इब्लीस का यह क़िस्सा यहाँ चौथी मर्तबा बयान हो रहा है। इससे पहले सूरतुल बक़रह रुकूअ 4, सूरतुल आराफ़ रुकूअ 12 और सूरतुल हिज्र रुकूअ 3 में इस क़िस्से का ज़िक्र हो चुका है।

आयत 62

قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ۡ لَىِٕنْ

“उसने (मज़ीद) कहा कि ज़रा देख तो उसको जिसको तूने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है, अगर तू मुझे मोहलत दे दे क़यामत के दिन

اَخَّرۡتَنِ اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَةِ لَاَحۡتَنِكَنَّ ذُرِّیَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِیۡلًا ﴿۶۲﴾

तक, तो मैं उसकी पूरी नस्ल को क़ाबू में करके छोडुँगा, सिवाय बहुत थोड़े से लोगों के।”

आयत 63

قَالَ اذۡهَبۡ فَمَنۡ تَبِعَكَ مِنۡهُمۡ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمۡ جَزَآءً مَّوۡفُوۡرًا ﴿۶۳﴾

“अल्लाह ने फ़रमाया: जाओ (दफ़ा हो जाओ!) उनमें से जो भी तेरी पैरवी करेंगे तो यक़ीनन तुम सबकी सज़ा जहन्नम होगी, वाफ़र सज़ा।”

आयत 64

وَاسۡتَفۡزِزۡ مَنِ اسۡتَطَعۡتَ مِنۡهُمۡ بِصَوۡتِكَ

“और तू फ़िसला ले जिस पर तेरा बस चलता है उनमें से अपनी आवाज़ से”

अरबी में बकरी के ऐसे नवजात बच्चे को “फ़ज्ज़” कहते हैं जो अभी ठीक से चलने के क़ाबिल ना हुआ हो और खड़ा होने की कोशिश में उसकी टाँगें लड़खड़ाती हों। इस मुनास्बत से यह लफ़्ज़ मुहावरतन उस शख़्स के लिए बोला जाता है

जिसकी टाँगें किसी मामले में लड़खड़ा जायें, क़दम डगमगा जायें और हिम्मत जवाब दे दे।

وَاَجۡلِبۡ عَلَيۡهِمۡ بِخَيۡلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكۡهُمۡ فِى الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَوۡلَادِ وَعِدۡهُمۡ‌ؕ

"और चढ़ा ला उन पर अपने सवारों और प्यादों को और शरीक बन जा उनका मालों में और औलाद में, और उनसे (जो चाहे) वादे कर!"

وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيۡطٰنُ اِلَّا غُرُوۡرًا ﴿۶۴﴾

"और नहीं वादा करता उनसे शैतान मगर धोखे का।"

आयत 65

اِنَّ عِبَادِىۡ لَيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ‌ؕ

"यक़ीनन मेरे बंदों पर तुझे कोई इख़्तियार नहीं होगा।"

तुम इंसानों को बहकाने और फिसलाने के लिए जो कुछ कर सकते हो कर लो, उनके दिलों में वसवसे डालो, उनसे झूठे-सच्चे वादे करो और उन्हें सब्ज़ बाग दिखाओ। यह तमाम हरबे तो तुम इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन तुम्हें यह इख़्तियार हरगिज़ नहीं होगा कि तुम मेरे किसी बंदे को उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ गुमराही के रास्ते पर ले जाओ।

وَ كَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾

"और काफ़ी है तेरा रब बतौर कारसाज़।"

वो बन्दे जो शैतान से बचना चाहेंगे अल्लाह उनकी मदद करेगा, और जिस किसी का मददगार और कारसाज़ अल्लाह हो उसे किसी और सहारे की ज़रुरत नहीं रहती, वही उसके लिए काफ़ी होता है।

आयात 66 से 72 तक

رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا
مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ
الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا
نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾
اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ اَمْ
اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ
لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ
اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰي كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا

۝٧٠ يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ
كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا
يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝٧١ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٧٢

आयत 66

رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ۭ

"तुम्हारा रब वो है जो चलाता है तुम्हारे लिए कश्तियों को समुद्र में ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश कर सको।"

اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝٦٦

"यक़ीनन वो तुम पर बहुत ही ररहीम है।"

आयत 67

وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ

"और जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है समुद्र में"

जब कश्ती तूफ़ान में घिर जाती है और मौत सामने नज़र आने लगती है तो:

ضَلَّ مَنۡ تَدۡعُوۡنَ اِلَّاۤ اِیَّاہُ ۚ

"गुम हो जाते हैं वो सब जिन्हें तुम पुकारते हो, सिवाय उस (एक अल्लाह) के।"

उस वक़्त तुम्हें अपने उन मअबूदों में से कोई भी याद नहीं रहता जिन्हें तुम आम हालात में अपना मददगार समझते हो। उस आड़े वक़्त में तुम सिर्फ़ अल्लाह ही को मदद के लिए पुकारते हो। यह मज़मून क़ुरान में मुतअद्दिद बार आ चुका है।

فَلَمَّا نَجّٰىکُمۡ اِلَی الۡبَرِّ اَعۡرَضۡتُمۡ ؕ وَ کَانَ الۡاِنۡسَانُ کَفُوۡرًا ﴿۶۷﴾

"फिर जब वो तुम्हें बचा लाता है ख़ुश्की की तरफ़ तो तुम मुहँ मोड़ लेते हो। और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है।"

आयत 68

اَفَاَمِنۡتُمۡ اَنۡ یَّخۡسِفَ بِکُمۡ جَانِبَ الۡبَرِّ

"तो क्या तुम इस बात से बेख़ौफ़ हो गये हो कि वो धँसा दे तुम्हें कहीं ख़ुश्की में ही?"

जब तुम जान बचा कर समुद्र से ख़ुश्की पर आते हो तो फिर अल्लाह की नाशुक्री करते हुए उससे मुँह मोड़ लेते हो। क्या तुम्हें इस बात से ख़ौफ़ नहीं आता कि अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हें ख़ुश्क ज़मीन ही के अंदर धँसा दे? क्या ख़ुश्की पर लोगों को मौत नहीं आती?

आसूदा साहिल तू है मगर शायद यह तुझे मालूम नहीं

साहिल से भी मौजें उठती हैं, खामोश भी तूफ़ान होते हैं!

اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾

"या वो तुम पर भेज दे कंकर बरसाने वाली तेज़ हवा, फिर तुम ना पाओ अपने लिए कोई बचाने वाला!"

तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह चाहे तो संगरेज़ों वाली ख़ौफ़नाक आँधी से भी तुम्हें हलाक कर सकता है।

आयत 69

اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ

"या तुम बेख़ौफ़ हो गये हो इससे कि वो फिर ले जाये तुम्हें उसी (समुद्र) में दूसरी मर्तबा, फिर भेज दे तुम पर हवा का ज़ोरदार झटका"

فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾

"सो तुम्हें गर्क़ कर दे तुम्हारे कुफ़्र की पादाश में, फिर तुम ना पाओ अपने लिए हमारे खिलाफ़ उसकी वजह से कोई तअक्क़ुब करने वाला!"

फिर ऐसा नहीं कि कोई हमसे बाज़पुर्स कर सके कि हमने उन लोगों के साथ ऐसा मामला क्यों किया?

आयत 70

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ

"और हमने बड़ी इज्ज़त बख्शी है औलादे आदम अलै. को"

यह आयत बहुत वाज़ेह अंदाज़ में उस हक़ीक़त का इज़हार कर रही है कि अल्लाह तआला की तख़्लीक़ की मेराज (climax) इंसान है। इस फ़लसफ़े की वज़ाहत सूरतुल नहल की आयत 40 की तशरीह के ज़िमन में हो चुकी है। वहाँ मैंने बहुत तफ़सील से कायनात और इंसान की तख़्लीक़ के बारे में अपनी राय का इज़हार किया है। इस तफ़सील का खुलासा यह है कि इस कायनात का नुक़्ता-ए-आग़ाज़ अल्लाह तआला का अमर-ए-कुन है। हरफ़े कुन से ख़नक नूर का ज़हूर हुआ, इस नूर से मलाइका और इंसानी अरवाह की तख़्लीक़ हुई, फिर बिग-बैंग के नतीजे में हरारत का गोला वजूद में आया, जिसके मुतहर्रिक ज़र्रात से कहकशाएँ, सितारे और सय्यारे बने। इसी दौर में इस हरारत से जिन्नात की तख़्लीक़ हुई। दूसरे बेशुमार सितारों और सय्यारों की तरह हमारी ज़मीन भी इब्तदा में बहुत गर्म थी। यह आहिस्ता-आहिस्ता ठंडी हुई। फिर इस पर हज़ारों बरस मुसलसल बारिश बरसती रही, जिससे ज़मीन पर हर तरफ़ पानी फैल गया। उसके बाद ज़मीन पर नबाताती और हैवानी हयात का आग़ाज़ हुआ। इसके बाद फिर तमाम मख्लूक़ के बादशाह "इंसान" की तख़्लीक़ अमल में आई। इस पूरे फ़लसफ़े को मिर्ज़ा बैदिल ने अपने इस शेर में बड़ी ख़ूबसूरती से ब्यान किया है:

हर दो आलम ख़ाक शुद ता बस्त नक़्शे आदमी
ऐ बहारे नीस्ती अज़ क़द्रे ख़ुद होशयार बाश

इस ख़ूबसूरत शेर का मफ़हूम व मतलब भी सूरतुल नहल की मज़कूरा आयत की तशरीह के तहत बयान किया गया है।

وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ

"और हम उठाए फिरते हैं उन्हें ख़ुश्की और समुन्दर में"

यहाँ "हम" से अल्लाह तआला का निज़ामे क़ुदरत मुराद है, जिसके तहत बहरो-बर में इंसानों की मुख्तलिफ़ नौइयत की सरगर्मियाँ मुमकिन बना दी गई हैं और यूँ लगता है जैसे यह मआवन और दोस्ताना माहौल इंसान को अपनी गोद में उठाए हुए है।

وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝٧٠

"और हमने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ अता किया और उन्हें फ़ज़ीलत दी अपनी बहुत सी मख्लूक़ पर, बहुत बड़ी फ़ज़ीलत।"

आयत 71

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍ بِاِمَامِهِمْ ۚ

"जिस दिन हम बुलायेंगे तमाम इंसानों को उनके सरदारों के साथ।"

फिर ज़रा उस दिन का ख़्याल करो जिस दिन तमाम इंसानों को अल्लाह तआला के हुज़ूर पेशी के लिए इस तरह बुलाया

जायेगा कि हर गिरोह अपने रहनुमा या लीडर के साथ हाज़िर होगा। पिछली आयात में तमाम मख्लूक़ पर इंसान की फ़ज़ीलत का ज़िक्र किया गया है। चुनाँचे जब इंसान को इस कायनात में इस क़द्र आला मक़ाम और मर्तबे से नवाज़ा गया है तो फिर इसका मुहासबा भी होना चाहिए: "जिनके रुतबे हैं सवा, उनकी सवा मुश्किल है!"

فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝71

"तो जिसको दिया जायेगा उसका आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में तो ऐसे लोग पढ़ेंगे अपने आमाल नामा को (ख़ुशी के साथ) और उन पर ज़ुल्म ना किया जायेगा धागे के बराबर भी।"

आयत 72

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝72

"और जो कोई इस दुनिया में अँधा रहा वो आख़िरत में भी अँधा होगा, और राहेरास्त से बहुत दूर भटका हुआ।"

जिस शख़्स ने इस दुनिया में अपनी पूरी ज़िन्दगी हैवानों की तरह गुज़ार दी, जिसका देखना और सुनना हैवानों का सा देखना और सुनना था, जिसने ना तो अनफ़ुस व आफ़ाक़ में बिखरी हुई अल्लाह तआला की अनगिनत निशानियों को चश्मे बसीरत से देखा ना उनके ज़रिये से अपने ख़ालिक़ व मालिक को पहचाना, उसने अपनी ज़िन्दगी गोया अंधेपन

में गुज़ार दी। ऐसे शख़्स को क़यामत के दिन ऐसी हालत में उठाया जायेगा कि वो अँधा होगा। इसी अंधेपन से बचने के लिए अल्लामा इक़बाल ने क्या ख़ूब नसीहत की है: दीदन दीगर आमोज़, शनीदन दीगर आमोज़!

आयात 73 से 84 तक

وَاِنۡ كَادُوۡا لَيَفۡتِنُوۡنَكَ عَنِ الَّذِىۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ
لِتَفۡتَرِىَ عَلَيۡنَا غَيۡرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوۡكَ خَلِيۡلًا ﴿۷۳﴾
وَلَوۡلَاۤ اَنۡ ثَبَّتۡنٰكَ لَقَدۡ كِدْتَّ تَرۡكَنُ اِلَيۡهِمۡ شَيۡـًٔـا
قَلِيۡلًا ۙ ﴿۷۴﴾ اِذًا لَّاَذَقۡنٰكَ ضِعۡفَ الۡحَيٰوةِ وَضِعۡفَ
الۡمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيۡنَا نَصِيۡرًا ﴿۷۵﴾ وَاِنۡ كَادُوۡا
لَيَسۡتَفِزُّوۡنَكَ مِنَ الۡاَرۡضِ لِيُخۡرِجُوۡكَ مِنۡهَا وَاِذًا لَّا
يَلۡبَثُوۡنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿۷۶﴾ سُنَّةَ مَنۡ قَدۡ اَرۡسَلۡنَا
قَبۡلَكَ مِنۡ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحۡوِيۡلًا ﴿۷۷﴾ اَقِمِ
الصَّلٰوةَ لِدُلُوۡكِ الشَّمۡسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيۡلِ وَقُرۡاٰنَ
الۡفَجۡرِ ؕ اِنَّ قُرۡاٰنَ الۡفَجۡرِ كَانَ مَشۡهُوۡدًا ﴿۷۸﴾ وَمِنَ الَّيۡلِ
فَتَهَجَّدۡ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰۤى اَنۡ يَّبۡعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا
مَّحۡمُوۡدًا ﴿۷۹﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدۡخِلۡنِىۡ مُدۡخَلَ صِدۡقٍ

وَّاَخۡرِجۡنِىۡ مُخۡرَجَ صِدۡقٍ وَّاجۡعَلۡ لِّىۡ مِنۡ لَّدُنۡكَ
سُلۡطٰنًا نَّصِيۡرًا ﴿۸۰﴾ وَقُلۡ جَآءَ الۡحَـقُّ وَزَهَقَ الۡبَاطِلُ‌ؕ
اِنَّ الۡبَاطِلَ كَانَ زَهُوۡقًا ﴿۸۱﴾ وَنُنَزِّلُ مِنَ الۡقُرۡاٰنِ مَا
هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحۡمَةٌ لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ‌ۙ وَلَا يَزِيۡدُ الظّٰلِمِيۡنَ اِلَّا
خَسَارًا ﴿۸۲﴾ وَاِذَاۤ اَنۡعَمۡنَا عَلَى الۡاِنۡسَانِ اَعۡرَضَ وَنَاٰ
بِجَانِبِهٖ‌ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـــُٔوۡسًا ﴿۸۳﴾ قُلۡ كُلٌّ
يَّعۡمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖؕ فَرَبُّكُمۡ اَعۡلَمُ بِمَنۡ هُوَ اَهۡدٰى
سَبِيۡلًا ﴿۸۴﴾

आयत 73

وَاِنۡ كَادُوۡا لَيَفۡتِنُوۡنَكَ عَنِ الَّذِىۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ لِتَفۡتَرِىَ عَلَيۡنَا غَيۡرَهٗ‌ۖ

“और (ऐ नबी ﷺ) यह लोग तो इस बात पर तुले हुए थे कि आपको फितने में डाल कर उस चीज़ से हटा दें जो हमने आपकी तरफ़ वही की है ताकि आप उसके अलावा कोई और चीज़ गढ़ कर हमसे मन्सूब कर दें”

यह आयत उस बेपनाह दवाब की तरफ़ इशारा कर रही है जिसका जिसका सामना रसूल ﷺ को क़ुरैश की तरफ़ से मक्के में था। एक तरफ़ तो क़ुरैश मक्का आप ﷺ पर मुसलसल दबाव डाल रहे थे कि आप ﷺ क़ुरान के ग़ैर लचकदार अहकाम में कुछ नर्मी पैदा करें, इस कलाम में कुछ

तरमीम कर लें, कुछ अपनी बात मनवाएं और कुछ हमारी मानें। यह मज़मून इससे पहले सूरह युनुस आयत 15 में भी आ चुका है: {ائۡتِ بِقُرۡاٰنٍ غَیۡرِ ھٰذَاۤ اَوۡ بَدِّلۡہُ} "(ऐ मोहम्मद ﷺ) आप इसके अलावा कोई दूसरा क़ुरान पेश करें या फिर इसमें कुछ रद्दो-बदल कर लें।"

दूसरी तरफ़ वो मुसलसल यह मुतालबा भी किए जाते थे कि अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो निशानी के तौर पर हमें कोई मौअज्ज़ा दिखाएँ। उनका यह मुतालबा उनके आवाम तक में बहुत मक़बूल हो चुका था। यही वजह थी कि हुज़ूर ﷺ की अपनी ख़्वाहिश भी यही थी कि उन्हें कोई मौअज्ज़ा दिखा दिया जाये, मगर इस बारे में अल्लाह तआला का फ़ैसला था कि इन्हें कोई हिस्सी मौअज्ज़ा नहीं दिखाया जायेगा। इससे पहले सूरतुल अन्आम (आयत 35) में हम अल्लाह तआला का दो टूक फ़ैसला बायें अल्फ़ाज़ पढ़ आये हैं: {وَاِنۡ کَانَ کَبُرَ عَلَیۡکَ اِعۡرَاضُھُمۡ فَاِنِ اسۡتَطَعۡتَ اَنۡ تَبۡتَغِیَ نَفَقًا فِی الۡاَرۡضِ اَوۡ سُلَّمًا فِی السَّمَآءِ فَتَاۡتِیَھُمۡ بِاٰیَۃٍ} "और अगर आप पर उनकी ये बे ऐतनाई गिराँ गुज़रती हैं तो अगर आप ﷺ इस्तताअत रखते हैं तो ज़मीन में कोई सुरंग खोदें या आसमान में कोई सीढ़ी लगायें और ले आयें उनके लिए कोई मौअज्ज़ा!" चुनाँचे इन दोनो पहलुओं से हुज़ूर ﷺ को शदीद दबाव का सामना था, और इसी दबाव का इज़हार इस आयत में नज़र आ रहा है।

وَاِذًا لَّاتَّخَذُوۡكَ خَلِیۡلًا ﴿۷۳﴾

"और अगर आप ﷺ ऐसा करते तब तो यह लोग आपको अपना गाढ़ा दोस्त बना लेते।"

तारीख के सफ़हात गवाह हैं कि इस नौइयत की मदाहनत (compromise) के एवज़ वह लोग आप ﷺ को अपना बादशाह भी तस्लीम करने के लिए तैयार थे।

आयत 74

وَلَوۡلَاۤ اَنۡ ثَبَّتۡنٰكَ لَقَدۡ كِدۡتَّ تَرۡكَنُ اِلَيۡهِمۡ شَيۡـًٔا قَلِيۡلًا ۙ﴿۷۴﴾

"और अगर हम आपको साबित क़दम ना रखते तो ऐन मुम्किन था कि आप ﷺ उनकी तरफ़ कुछ ना कुछ झुक ही जाते।"

यह बहुत नाज़ुक और अहम मज़मून है। हज़रत युसुफ़ अलै. के बारे में सूरह युसुफ़ में इसी तरह फ़रमाया गया था: {وَلَقَدۡ هَمَّتۡ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوۡلَاۤ اَنۡ رَّاٰ بُرۡهَانَ رَبِّهٖ} (आयत 24) यानि अज़ीज़ मिस्र की बीवी ने तो क़सद कर ही लिया था, और युसुफ़ अलै. भी क़सद कर लेते अगर वो अल्लाह की बुरहान ना देख लेते। यानि यह इम्कान था कि बरबनाए तबअ बशरी वो भी इरादा कर बैठते, मगर अल्लाह ने उन्हें इससे महफ़ूज़ रखने का अहतमाम फ़रमाया। हुज़ूर ﷺ के लिए भी यहाँ इसी तरह फ़रमाया कि अगर हमने आपके पाँव जमा कर आप ﷺ के दिल को अच्छी तरह मज़बूत ना कर दिया होता तो क़रीब था कि आप ﷺ किसी ना किसी हद तक उनकी तरफ़ माइल हो जाते। बहरहाल इन अल्फ़ाज़ से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि रसूल अल्लाह ﷺ पर इस दौर में क़ुरैश मक्का की तरफ़ से किस क़द्र शदीद दबाव था।

आयत 75

إِذًا لَّأَذَقْنَٰكَ ضِعْفَ الْحَيَوٰةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ

"(अगर ऐसा हो जाता) तब हम आप ﷺ को दुगनी सज़ा देते ज़िन्दगी में और दुगनी सज़ा देते मौत पर"

اَلرَّبُّ رَبٌّ وَاِنْ تَنَزَّلَ وَالْعَبْدُ عَبْدٌ وَاِنْ تَرَقّٰى

"रब तो आखिर रब है जितना भी तनज़्ज़ुल फ़रमा ले और बंदा बहरहाल बंदा ही है जिस क़द्र भी तरक्क़ी पा ले!"

ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

"फिर ना पाते आप ﷺ अपने लिए हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार।"

आयत का मज़मून बहुत नाज़ुक है। बहरहाल मैंने अल्फ़ाज़ के मुताबिक़ तर्जुमा करने की कोशिश की है, लेकिन मौक़ा-महल और सयाक़ व सबाक़ की नज़ाकत को देखते हुए असल मफ़हूम को दक़्क़त नज़री से समझने की ज़रुरत है। अगरचे यह ख़िताब नबी अकरम ﷺ से है मगर सख़्ती का रुख़ उन लोगों की तरफ़ है जिन्होंने अपनी ज़िद्द और हठधर्मी से आप ﷺ के मुक़ाबले में ऐसे हालात पैदा कर रखे थे। इन अल्फ़ाज़ में उन लोगों को सुनाया जा रहा है कि बदबख्तों! तुम जो चाहो कर लो, हमारे नबी (ﷺ) तुम्हारे इस दबाव में आकर तुम्हारे मुतालबात मानने वाले नहीं हैं।

आयत 76

وَاِنۡ كَادُوۡا لَيَسۡتَفِزُّوۡنَكَ مِنَ الۡاَرۡضِ لِيُخۡرِجُوۡكَ مِنۡهَا وَاِذًا لَّا يَلۡبَثُوۡنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيۡلًا ۝٧٦

“और यह तुले हुए हैं कि आप ﷺ के क़दम उखाड़ दें इस ज़मीन से, ताकि आप ﷺ को यहाँ से निकाल बाहर करें, और (अगर ऐसा हुआ तो) तब वो ख़ुद भी नहीं ठहरेंगे आप ﷺ के बाद मगर थोड़ा अरसा।”

यह मक्की दौर के आखरी अय्याम के उन हालात की झलक है जब इस कशमकश की शिद्दत इन्तहा को पहुँच चुकी थी और हालात बेहद नाज़ुक रुख़ इख़्तियार कर चुके थे। यहाँ पर रसूल अल्लाह ﷺ को (मआज़ अल्लाह) मक्के से निकालने के लिए क़ुरैश की मन्सूबाबन्दी का सिर्फ़ ज़िक्र किया गया है, मगर इसकी नफ़ी करने के बजाय यह पेशनगोई की गई है कि अगर ऐसा हुआ तो आप ﷺ के बाद वो ख़ुद भी यहाँ पर ज़्यादा अरसा नहीं रह सकेंगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। क़ुरैश के अक्सर सरदार तो हिजरत के दूसरे बरस ही जंगे बदर में क़त्ल हो गये जबकि सिर्फ़ आठ साल बाद मक्का शहर पर आप ﷺ का बाक़ायदा तसल्लुत भी क़ायम हो गया।

आयत 77

سُنَّةَ مَنۡ قَدۡ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنۡ رُّسُلِنَا

“यही (हमारा) तरीक़ा रहा उनके बाब में जिन्हें हमने आप ﷺ से पहले भेजा अपने रसूलों में से”

यानि आप ﷺ से पहले जितने भी रसूल आये उनके बारे में हमारा क़ायदा और क़ानून यही रहा है कि रसूल की हिजरत के बाद मुतालक़ा क़ौम पर से अल्लाह की अमान उठा ली जाती है और उसके बाद वह क़ौम बहुत जल्द अज़ाब की गिरफ्त में आ जाती है।

وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ﴿٧٧﴾

"और आप हमारे तरीक़े में कोई तब्दीली नहीं पायेंगे।"

आयत 78

أَقِمِ الصَّلَوٰةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْءَانَ الْفَجْرِ

"नमाज़ क़ायम रखिये सूरज के ढलने से लेकर रात के तारीक होने तक, और क़ुरान का पढ़ा जाना फ़ज्र के वक़्त।"

यह हुक्म पँचगाना नमाज़ के बारे में है। सूरज के ढलने के साथ ही ज़ौहर की नमाज़ का वक़्त हो जाता है। फिर अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ों का एक सिलसिला है जो रात गये तक जारी रहता है। पाँचवीं नमाज़ यानि फ़ज्र को यहाँ पर "क़ुरानुल फ़ज्र" से ताबीर किया गया है, क्योंकि इसमें तवील क़िरात की जाती है। वाज़ेह रहे कि नमाज़ पँचगाना के अवक़ात के बारे में यह हुक्म अमूमी नौइयत का है, जबकि हर नमाज़ के वक़्त की ख़ुसूसियत के साथ निशानदेही बाद में हज़रत जिब्रील अलै. ने की जिसकी तफ़सील कुतुब अहादीस में मिलती है।

إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ۝٧٨

"यक़ीनन फ़जर के वक़्त क़ुरान का पढ़ा जाना मशहूद है।"

गोया फ़ज़र का वक़्त नमाज़ और क़िरात के ऐतबार से ख़ुसूसी अहमियत का हामिल है। रात भर जिस्मानी और ज़हनी आराम के बाद फ़ज्र के वक़्त इंसान ताज़ा दम होता है। इस वजह से नमाज़ में उसकी हुज़ूरी-ए-क़ल्ब की कैफ़ियत भी बेहतर होती है। इसके अलावा फ़जर का वक़्त फ़रिश्तों की हाज़री के ऐतबार से भी अहम है। दुनिया के मामलात की निग़रानी करने वाले फ़रिश्तों की ड्युटियाँ सुबह और अस्र के अवक़ात में तब्दील होती हैं। चुनाँचे इन दोनों नमाज़ों में दोनो जमाअतों के फ़रिश्ते मौजूद होते हैं। ड्युटी से फ़ारिग होकर जाने वाले फ़रिश्ते भी और आइंदा ड्युटी का चार्ज लेने वाले भी। लिहाज़ा फ़रिश्तों की इस हाज़री की वजह से भी नमाज़े फ़ज्र ख़ुसूसी अहमियत की हामिल है।

आयत 79

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ

"और रात के एक हिस्से में आप ﷺ जागिये इस (क़ुरान) के साथ"

यहाँ लफ्ज़ "बिही" में वही अंदाज़ है जिसकी तकरार इससे पहले हम सूरतुल अन्आम में देख चुके हैं। (اَنْذِرْ بِهٖ، ذَكِّرْ بِهٖ) यानि इन्ज़ार, तज़कीर, तब्शीर, तब्लीग़ सब क़ुरान के ज़रिये से हो। चुनाँचे यहाँ पर रसूल अल्लाह ﷺ को

तहज्जुद का हुक्म दिया गया तो फ़रमाया गया कि रात का एक हिस्सा आप क़ुरान के साथ जागिये। तहज्जुद की नमाज़ आप क़ुरान के साथ पढ़ें। गोया तहज्जुद का मक़सद और उसकी असल रूह यही है कि इसमें ज़्यादा से ज़्यादा क़ुरान पढ़ा जाये। छोटी-छोटी सूरतों के साथ रकअतों की मखसूस तादाद पूरी कर लेने से यह मक़सद पूरा नहीं होता।

نَافِلَةً لَّكَ ﷺ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾

“यह इज़ाफ़ी चीज़ है आपके लिए, उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ायज़ फ़रमायेगा।”

“मक़ामे महमूद” बहुत ही आला और अरफ़ा मक़ाम है जिस पर आँ हुज़ूर ﷺ को मैदाने हश्र में और जन्नत में फ़ायज़ किया जायेगा। हम इस मक़ाम की अज़मत और कैफ़ियत का अंदाजा अपने तसव्वुर से नहीं कर सकते।

आयत 80

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ

“और दुआ कीजिए कि ऐ मेरे रब मुझे दाख़िल कर इज्ज़त का दाख़िल करना और मुझे निकाल इज्ज़त का निकालना”

यह हिजरत की दुआ है। जब हिजरत का इज़्न आया तो साथ ही यह दुआ भी तालीम फ़रमा दी गई कि ऐ अल्लाह! तू मुझे जहाँ भी दाखिल फ़रमाए यानि यस्रिब (मदीने) में, इज्ज़त व तकरीम के साथ दाखिल फरमा, वहाँ पर मेरा दाखिला

सच्चा दाखिला हो, और यहाँ मक्के से मुझे निकालना है तो बाइज़्ज़त तरीक़े से निकाल। याद कीजिए कि सूरह युनुस की आयत 93 में बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना अता किए जाने का ज़िक्र भी "مُبَوَّاَ صِدْقٍ" के अल्फ़ाज़ से हुआ है।

وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝۸۰

"और मुझे ख़ास अपने पास से मददगार क़ुव्वत अता फरमा।"

यानि मदीने में जिस नए दौर का आगाज़ होने वाला है उसमें अपने दीन के गलबे के अस्बाब पैदा फरमा, और मुझे वो ताक़त, क़ुव्वत और इक़तदार अता फ़रमा जिससे दीन की अमली तन्फ़ीज़ का काम आसान हो जाये। इस दुआ में रसूल अल्लाह ﷺ को बिल्कुल वही कुछ माँगने की तलक़ीन की जा रही है जो अन्क़रीब आप ﷺ को मिलने वाला था। चुनाँचे तारीख़ गवाह है कि मदीने में आपका इस्तक़बाल एक बादशाह की तरह हुआ। औस और ख़ज़रज के क़बाइल ने आपको अपना हाकिम तस्लीम कर लिया। यहूदियों के तीनों क़बाइल एक मुआहिदे के ज़रिए आप ﷺ की मर्ज़ी के ताबेअ हो गये और यूँ आप ﷺ मदीने में दाख़िल होते ही वहाँ के बेताज बादशाह बन गये।

आयत 81

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ

"और आप कह दीजिए कि हक़ आ गया और बातिल भाग गया।"

बज़ाहिर तो अभी इस इन्क़लाब के आसार नमुदार नहीं हुए थे, अभी आठ साल बाद जाकर कहीं मक्का फ़तह होने वाला था, लेकिन आलमे अम्र में चूँकि इसका फैसला हो चुका था लिहाज़ा अभी से आप ﷺ की ज़बान मुबारक से हक़ की आमद और बातिल के फ़रार का ऐलान कराया जा रहा है।

اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝٨١

"यक़ीनन बातिल है ही भाग जाने वाला।"

बातिल को सबात नहीं। जब भी इसका हक़ के साथ मआरका होगा तो हक़ के मुक़ाबले में बातिल हमेशा पसपाई इख़्तियार करने पर मजबूर हो जायेगा।

आयत 82

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاۗءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ

"और हम क़ुरान से वो कुछ नाज़िल करते हैं जो शिफ़ा और रहमत है अहले ईमान के हक़ में।"

यहाँ पर फिर क़ुरान का लफ़्ज़ मुलाहिज़ा हो। नोट कीजिए कि ख़ुद क़ुरान का ज़िक्र इस सूरत में जितनी मर्तबा आया है किसी और सूरत में नहीं आया। इस आयत में क़ुरान के अहकाम को अहले ईमान के लिए शिफ़ा और रहमत क़रार दिया गया है। इससे क़ब्ल यही मज़मून सूरह युनुस में इस तरह बयान हुआ है: {يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَاۗءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ڏ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ} "ऐ लोगो! आ गई है तुम्हारे

पास नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से और तुम्हारे सीनों (के अमराज़) की शिफ़ा और अहले ईमान के लिए हिदायत और रहमत।" यानि क़ुरान एक मोमिन के सीने को तमाम आलाईशों और बीमारियों (मसलन कुफ़्र, शिर्क, तकब्बुर, हसद, हुब्बे माल, हुब्बे जान, हुब्बे औलाद वगैरह) से साफ़ और पाक कर देता है।

وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾

"लेकिन यह ज़ालिमों को नहीं बढ़ाता मगर ख़सारे ही में।"

जैसा कि सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 56 में फ़रमाया गया है: {يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ۭ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ}।

आयत 83

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ

"और जब हम इंसान को नेअमतों से नवाज़ते हैं तो वो ऐराज़ करता है और (हमसे) कन्नी कतराने लगता है।"

وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَــُٔوْسًا ﴿٨٣﴾

"और जब उस पर कोई तकलीफ़ आ पड़ती है तो मायूस होकर रह जाता है।"

आयत 84

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ

“आप कह दीजिए कि हर शख़्स काम करता है अपने शाकिला के मुताबिक़।”

“शाकिला” से मुराद हर इंसान की शख़्सियत का मखसूस साँचा है, जैसे आपको किसी धातु से कोई शय बनानी है तो पहले उसका एक साँचा (pattern) बनाते हैं और उस धात को पिघला कर उसमें डाल देते हैं तो वो धातु वही मख़सूस शक्ल इख़्तियार कर लेती है। इंसानी शख़्सियत के मख़सूस साँचे की तश्कील में इंसान की मौरूसी genes और उसका ख़ारजी माहौल बुनियादी किरदार अदा करते हैं। गोया मौरूसी अवामिल और माहौलयाती अवामिल के हासिल ज़र्ब से इंसान की शख़्सियत का जो ह्यूला बनता है वही उसका शाकिला है। किसी शख़्स ने नेकी और बुराई के लिए जो भी मेहनत और कोशिश करनी है वो अपने इस शाकिले के अन्दर रह कर ही करनी होगी। गोया किसी इन्सान का शाकिला उसके दायरा-ए-अमल की हुदूद का तअय्युन करता है। वो ना तो इन हुदूद से तजावुज़ कर सकता है और ना ही इनसे बढ़ कर अमल करने का वह मुकल्लफ़ है। जैसे अँग्रेज़ी में कहा जाता है: One cannot grow out of his skin यानि किसी ने मोटा होने की जितनी भी कोशिश करनी है अपनी खाल के अंदर रह कर ही करनी है। वह अपनी खाल से बाहर बहरहाल नहीं निकल सकता। चुनाँचे हर शख़्स अपने शाकिला के मुताबिक़ अमल करता है और अल्लाह को खूब इल्म है कि उसने किसको किस तरह का शाकिला दे रखा है। और वो हर शख़्स से उसके शाकिला की मुनास्बत

से ही हिसाब लेगा। (इस मज़मून की मज़ीद वज़ाहत के लिए मुलाहिज़ा हो बयानुल क़ुरान, जिल्द अव्वल, सूरतुल बक़रह, तशरीह आयत 286)

فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝۸۴

"पस आपका रब खूब जानता है उसे जो ज़्यादा सीधे रास्ते पर है।"

इस मज़मून की वज़ाहत करते हुए रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ((اَلنَّاسُ مَعَادِنُ))(22) कि इंसान मादनियात की तरह हैं। मादनियात में से हर एक की अपनी-अपनी ख़ुसूसियात (properties) होती है। सोने की ore चाँदी की ore से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ ख़ुसूसियात की हामिल है। इसी तरह हर इंसान की अपनी-अपनी ख़ुसूसियात हैं और अल्लाह तआला हर एक की ख़ुसूसियात से खूब वाक़िफ़ है।

आयात 85 से 93 तक

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۭ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ
وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ۝۸۵ وَلَىِٕنْ شِئْنَا
لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ
عَلَيْنَا وَكِيْلًا ۝۸۶ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ
عَلَيْكَ كَبِيْرًا ۝۸۷ قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلٰٓي اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ

كَانَ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ ظَهِيۡرًا ﴿۸۸﴾ وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا
لِلنَّاسِ فِيۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ ۫ فَاَبٰۤى اَكۡثَرُ
النَّاسِ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۸۹﴾ وَقَالُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰى
تَفۡجُرَ لَنَا مِنَ الۡاَرۡضِ يَنۡۢبُوۡعًا ﴿۹۰﴾ۙ اَوۡ تَكُوۡنَ لَكَ
جَنَّةٌ مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الۡاَنۡهٰرَ خِلٰلَهَا تَفۡجِيۡرًا
﴿۹۱﴾ۙ اَوۡ تُسۡقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمۡتَ عَلَيۡنَا كِسَفًا اَوۡ
تَاۡتِىَ بِاللّٰهِ وَالۡمَلٰۤٮِٕكَةِ قَبِيۡلًا ﴿۹۲﴾ۙ اَوۡ يَكُوۡنَ لَكَ بَيۡتٌ
مِّنۡ زُخۡرُفٍ اَوۡ تَرۡقٰى فِى السَّمَآءِ ؕ وَلَنۡ نُّؤۡمِنَ لِرُقِيِّكَ
حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيۡنَا كِتٰبًا نَّقۡرَؤُهٗ ؕ قُلۡ سُبۡحَانَ رَبِّىۡ هَلۡ
كُنۡتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوۡلًا ﴿۹۳﴾ؑ

आयत 85

وَيَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ الرُّوۡحِ ؕ

"(ऐ नबी ﷺ) यह लोग आपसे पूछते हैं रूह के बारे में।"

قُلِ الرُّوۡحُ مِنۡ اَمۡرِ رَبِّیۡ وَمَاۤ اُوۡتِیۡتُمۡ مِّنَ الۡعِلۡمِ اِلَّا قَلِیۡلًا ﴿۸۵﴾

“आप फ़रमा दीजिए कि रूह मेरे रब के अम्र में से है और तुम्हें नहीं दिया गया इल्म मगर थोड़ा सा।”

रूह के बारे में यह सवाल उन तीन सवालात में से था जो एक मर्तबा मदीने के यहूदियों ने क़ुरैशे मक्का के ज़रिए रसूल अल्लाह ﷺ से पूछ भेजे थे। उनमें से एक सवाल अस्हाबे कह्फ़ के बारे में था और दूसरा ज़ुलक़रनैन के बारे में। इन दोनों सवालात के तफ़सीली जवाबात सूरह कह्फ़ में दिए गये हैं, मगर रूह के मुताल्लिक़ सवाल का इन्तहाई मुख़्तसर जवाब इस सूरत में दिया गया है।

इस बारे में यहाँ सिर्फ़ इतना बताया गया है कि रूह का ताल्लुक़ आलमे अम्र से है और आलमे अम्र चूँकि आलमे ग़ैब है इसलिए उसके बारे में तुम लोग कुछ नहीं जान सकते। इंसान के इल्म का ज़रिया उसके हवास हैं और अपने इन हवास के ज़रिए वो सिर्फ़ आलमे ख़ल्क़ की चीज़ों के बारे में जान सकता है, आलमे ग़ैब (आलमे अम्र) तक उसका इल्म रसाई हासिल नहीं कर सकता। चुनाँचे आलमे ग़ैब की बातों को उसे वैसे ही मानना होगा जैसे क़ुरान और रसूल के ज़रिए से बताई गई हों। इसी का नाम ईमान बिल् ग़ैब है, जिसका ज़िक्र क़ुरान मजीद के आग़ाज (सूरह बक़रह, आयत 3) में ही कर दिया गया है: {الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَیۡبِ وَیُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَمِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ} क़ब्ल अज़े सूरतुल आराफ़ की आयत 154 और सूरह नहल की आयत 40 की तशरीह के ज़िमन में आलमे ख़ल्क़ और आलमे अम्र के बारे में तफ़सीली बहस की जा

चुकी है। वहाँ यह भी बताया जा चुका है कि फ़रिश्तों, इंसानी अरवाह और वही का ताल्लुक़ आलमे अम्र से है।

आयत 86

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ۝٨٦

"और (ऐ नबी ﷺ!) अगर हम चाहें तो ले जायें इस (क़ुरान) को जो हमने वही किया है आपकी तरफ़, फिर आप ना पायेंगे अपने लिए इस पर हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार।"

आयत 87

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ۝٨٧

"मगर यह तो रहमत है आप ﷺ के रब की तरफ़ से। इसमें कोई शक नहीं कि उसका फ़ज़्ल आप ﷺ पर बहुत बड़ा है।"

यह क़ुरान का ख़ास असलूब है जिसके मुताबिक़ बज़ाहिर ख़िताब तो हुज़ूर ﷺ से है मगर असल में लोगों को यह बावर कराना मक़सूद है कि आप ﷺ का असल मक़ाम मर्तबा क्या है। इसी मक़सद के लिए आप ﷺ से बार-बार اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ का ऐलान कराया गया है कि ऐ लोगो! मैं तुम्हारी तरह एक इंसान हूँ, मुझ पर अल्लाह की तरफ़ से वही आती है। यहाँ इसी बात की ताकीद के लिए यह असलूब इख़्तियार किया गया है कि यह हमारी अता और मेहरबानी

है कि हमने ब-ज़रिया-ए-वही आप पर यह अज़ीमुश्शान कलाम नाज़िल किया है। अग़रचे इसका हरग़िज़-हरग़िज़ कोई इम्कान नहीं था, मगर महज़ एक उसूली बात समझाने के लिए फ़रमाया गया कि जिस तरह हमने यह कलाम नाज़िल किया है इसी तरह हम इसे वापस भी ले सकते हैं, इसे सल्ब भी कर सकते हैं। यह कलाम ना तो आप ﷺ का खुदसाख्ता है और ना ही आप ﷺ इसे अपने पास रखने पर क़ादिर हैं। यह तो सरासर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रहमत का मज़हर है और वही इसे आप ﷺ के सीने में जमा करके महफ़ूज़ फ़रमा रहा है।

आयत 88

قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ۝۸۸

"आप ﷺ कह दीजिए कि अगर जमा हो जायें तमाम इंसान और तमाम जिन्न इस बात पर कि वो इस क़ुरान की मानिंद ले आयें तो वो नहीं ला सकेंगे इसकी मानिंद, अग़रचे वो एक-दूसरे के मददगार भी बन जायें।"

इस मौज़ू पर क़ुरान का अपने मुख़ातबीन से यह सबसे पहला मुतालबा है जिसमें उनसे पूरे क़ुरान का जवाब देने को कहा गया है।

आयत 89

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

“और हमने फेर-फेर कर बयान की हैं लोगों के लिए इस क़ुरान में हर तरह की मिसालें”

فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾

“लेकिन अक्सर लोग इंकार (और कुफ़्राने नेअमत) ही पर अड़े हुए हैं।”

आयत 90

وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ

“और उन्होंने कहा कि हम हरग़िज आप ﷺ की बात नहीं मानेगें”

حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾

“यहाँ तक कि आप ﷺ जारी कर दें हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा।”

मुशरिकीने मक्का की तरफ़ से इस तरह के मुतालबात बार-बार किये जाते थे कि जब तक आप ﷺ हमें कोई मौअज्ज़ा नहीं दिखायेंगे हम आप ﷺ को रसूल नहीं मानेंगे।

आयत 91

اَوۡ تَكُوۡنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الۡاَنۡهٰرَ خِلٰلَهَا تَفۡجِيۡرًا ۙ﴿۹۱﴾

"या आप ﷺ के लिए बन जाये खजूरों और अंगूरों का एक बाग, फिर आप जारी कर दें उसके अंदर नहरें।"

आयत 92

اَوۡ تُسۡقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمۡتَ عَلَيۡنَا كِسَفًا

"या आप ﷺ गिरा दें आसमान हम पर टुकड़े-टुकड़े करके जैसा कि आप दावा करते हैं"

यानि आप ﷺ हमें क़यामत के हवाले से ख़बरें सुना-सुना कर जो डराते रहते हैं कि उस वक़्त आसमान फट जायेगा और पहाड़ रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगे, तो आप ﷺ आसमान का कोई टुकड़ा अभी हम पर गिरा कर दिखा दें।

اَوۡ تَاۡتِىَ بِاللّٰهِ وَالۡمَلٰٓئِكَةِ قَبِيۡلًا ۙ﴿۹۲﴾

"या आप ले आयें अल्लाह को और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने।"

आयत 93

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ۭ

"या आप ﷺ के लिए सोने का एक महल (तामीर) हो जाये, या आप आसमान में चढ़ जायें"

وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ۭ

"और हम आप ﷺ के (आसमान में) चढ़ने को भी नहीं मानेंगे यहाँ तक कि आप ﷺ उतार लायें एक किताब जिसे हम ख़ुद पढ़ें।"

उन लोगों के इन तमाम मुतालबात के जवाब में सिर्फ़ एक बात फ़रमाई गई:

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ ع

"आप ﷺ कह दीजिए कि मेरा रब पाक है, मैं नहीं हूँ मगर एक बशर रसूल।"

यानि मैं भी तुम्हारी तरह का एक इंसान हूँ। मैं भी उसी तरह पैदा हुआ हूँ जिस तरह तुम सब लोग पैदा हुए हो। मैं तुम्हारी ही तरह खाता-पीता हूँ, दुनिया के काम-काज करता हूँ, बाज़ारों में चलता-फिरता हूँ और मैंने हर सतह पर कारोबार भी किया है। मैं तुम्हारे दरमियान एक उम्र गुज़ार चुका हूँ और मेरी सीरत और अख़्लाक़ व किरदार रोज़े रौशन की तरह तुम्हारे सामने है। मुझमें और तुम में बुनियादी फ़र्क़ यह है कि मेरे पास अल्लाह की तरफ़ से वही

आती है, और अल्लाह का वह पैग़ाम जो ब-ज़रिया-ए-वही मुझ तक पहुँचता है वो मैं तुम लोगों तक पहुँचाने पर मामूर हूँ।

अगरचे सीरत व किरदार और मर्तबा-ए-रिसालत व नुबुवत के ऐतबार से आम इंसानों से नबी अकरम ﷺ की कोई मुनास्बत नहीं, मगर आम बशरी तक़ाज़ों के हवाले से उन्हें यह जवाब दिया गया कि मैं भी एक इंसान ही हूँ।

आयात 94 से 100 तक

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنۡ یُّؤۡمِنُوۡۤا اِذۡ جَآءَهُمُ الۡهُدٰۤی اِلَّاۤ
اَنۡ قَالُوۡۤا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوۡلًا ﴿۹۴﴾ قُلۡ لَّوۡ کَانَ فِی
الۡاَرۡضِ مَلٰٓئِکَۃٌ یَّمۡشُوۡنَ مُطۡمَئِنِّیۡنَ لَنَزَّلۡنَا عَلَیۡهِمۡ
مِّنَ السَّمَآءِ مَلَکًا رَّسُوۡلًا ﴿۹۵﴾ قُلۡ کَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیۡدًۢا
بَیۡنِیۡ وَبَیۡنَکُمۡ ؕ اِنَّهٗ کَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِیۡرًۢا بَصِیۡرًا ﴿۹۶﴾
وَمَنۡ یَّهۡدِ اللّٰهُ فَهُوَ الۡمُهۡتَدِ ۚ وَمَنۡ یُّضۡلِلۡ فَلَنۡ تَجِدَ
لَهُمۡ اَوۡلِیَآءَ مِنۡ دُوۡنِهٖ ؕ وَنَحۡشُرُهُمۡ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ عَلٰی
وُجُوۡهِهِمۡ عُمۡیًا وَّبُکۡمًا وَّصُمًّا ؕ مَاۡوٰىهُمۡ جَهَنَّمُ ؕ کُلَّمَا
خَبَتۡ زِدۡنٰهُمۡ سَعِیۡرًا ﴿۹۷﴾ ذٰلِکَ جَزَآؤُهُمۡ بِاَنَّهُمۡ
کَفَرُوۡا بِاٰیٰتِنَا وَقَالُوۡۤا ءَاِذَا کُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا

لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ خَلۡقًا جَدِیۡدًا ﴿۹۸﴾ اَوَلَمۡ یَرَوۡا اَنَّ اللّٰہَ
الَّذِیۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ قَادِرٌ عَلٰۤی اَنۡ یَّخۡلُقَ
مِثۡلَہُمۡ وَجَعَلَ لَہُمۡ اَجَلًا لَّا رَیۡبَ فِیۡہِ ؕ فَاَبَی
الظّٰلِمُوۡنَ اِلَّا کُفُوۡرًا ﴿۹۹﴾ قُلۡ لَّوۡ اَنۡتُمۡ تَمۡلِکُوۡنَ خَزَآئِنَ
رَحۡمَۃِ رَبِّیۡۤ اِذًا لَّاَمۡسَکۡتُمۡ خَشۡیَۃَ الۡاِنۡفَاقِ ؕ وَکَانَ
الۡاِنۡسَانُ قَتُوۡرًا ﴿۱۰۰﴾

आयत 94

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنۡ یُّؤۡمِنُوۡۤا اِذۡ جَآءَہُمُ الۡہُدٰۤی اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوۡۤا اَبَعَثَ اللّٰہُ بَشَرًا رَّسُوۡلًا ﴿۹۴﴾

"और नहीं रोका लोगों को ईमान लाने से जबकि उनके पास हिदायत आ गई, मगर इस बात ने कि उन्होंने कहा: क्या अल्लाह ने भेजा है एक बशर को रसूल बना कर!"

उनका कहना था कि इस काम के लिए उनकी तरफ़ कोई फ़रिश्ता भेजा जाता तो भी कोई बात थी। अब वो अपनी ही तरह के एक इंसान को आख़िर क्योंकर अल्लाह का रसूल मान लें? उनके इस ऐतराज़ के जवाब में जो दलील दी जा रही है वह बहुत अहम है:

आयत 95

قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾

"आप ﷺ फ़रमायें कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते (आबाद होते और वो) इत्मिनान से चलते-फिरते होते तो हम ज़रुर उन पर आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को रसूल बना कर भेजते।"

रसूल का काम है अल्लाह के पैग़ाम को इंसानों तक पहुँचाना, उसकी एक-एक बात को समझाना और फिर अल्लाह के अहकाम के मुताबिक़ अमल करके अपनी ज़िन्दगी को उनके सामने बतौर नमूना पेश करना। अब ज़ाहिर है इंसानों के लिए तो नमूना तो एक इंसान ही हो सकता है, फ़रिश्ता तो उनके लिए नमूना नहीं बन सकता। चुनाँचे अगर उनके पास एक फ़रिश्ता रसूल बन कर आ जाता तो यही लोग कहते कि यह तो फ़रिश्ता है, इसकी कोई ख़्वाहिश है ना ज़रुरत, ना रिश्ता है ना नाता, ना जज़्बात है ना अहसासात, हमारी इससे क्या निस्बत? हमारी तो घर गृहस्थी है, अहलो अयाल हैं, मजबूरियाँ हैं, ज़रुरतें हैं, तरह-तरह के जंजाल हैं, हम इसकी सीरत और इसके किरदार की पैरवी कैसे कर सकते हैं? अलबत्ता अगर ज़मीन में फ़रिश्ते बसते होते और उनकी तरफ़ रसूल भेजना होता तो ज़रुर किसी फ़रिश्ते ही को इस काम पर मामूर किया जाता, मगर अब मामला चूँकि इंसानों का है लिहाज़ा उन पर हुज्जत कायम करने के लिए लाज़िमन किसी इंसान

ही को बतौर रसूल भेजा जाना चाहिए था, सो ऐसा ही हुआ।

आयत 96

قُلۡ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًۢا بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكُمۡ‌ؕ

"आप कह दीजिए कि अल्लाह काफ़ी है गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान।"

रद्दो-क़दह बहुत हो चुकी। अब मैं यह मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द करता हूँ, जो मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह है। अब वही फ़ैसला करेगा।

اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيۡرًۢا بَصِيۡرًا ﴿۹۶﴾

"यक़ीनन वो अपने बंदों से बा-ख़बर और उन पर नज़र रखने वाला है।"

आयत 97

وَمَنۡ يَّهۡدِ اللّٰهُ فَهُوَ الۡمُهۡتَدِ‌ۚ

"और जिसे अल्लाह हिदायत देता है बस वही हिदायत याफ़्ता होता है"

وَمَنۡ يُّضۡلِلۡ فَلَنۡ تَجِدَ لَهُمۡ اَوۡلِيَآءَ مِنۡ دُوۡنِهٖ‌ؕ

"और जिसे वो गुमराह कर दे तो हरगिज़ नहीं पायेंगे आप ऐसे लोगों के लिए कोई मददगार उसके सिवा।"

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۭ

"और हम उन्हें जमा करेंगे क़यामत के दिन उनके मुँहों के बल (चलाते हुए), अंधे, गूंगे और बहरे।"

مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۹۷

"उनका ठिकाना जहन्नम है। जब भी उसकी आग धीमी होने लगेगी हम उसे उनके लिए मज़ीद भड़का दिया करेंगे।"

आयत 98

ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا

"यह सज़ा है उनकी इस बिना पर कि उन्होंने हमारी आयात के साथ कुफ़्र किया"

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۹۸

"और उन्होंने कहा कि क्या जब हो जायेंगे हम हड्डियाँ और चूरा-चूरा, तो क्या हम दोबारा उठा लिए जायेंगे एक नई मख्लूक़ की सूरत में?"

आयत 99

اَوَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنۡ يَّخۡلُقَ مِثۡلَهُمۡ

"क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि वो अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वो इस पर क़ादिर है कि उन जैसे फिर पैदा कर दे"

जब तुम्हें उसने एक दफ़ा पैदा किया है तो अब तुम्हारी तरह के इंसानों को दोबारा पैदा करना उसके लिए क्योंकर मुश्किल होगा?

وَجَعَلَ لَهُمۡ اَجَلًا لَّا رَيۡبَ فِيۡهِ‌ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوۡنَ اِلَّا كُفُوۡرًا ۝٩٩

"और उसने मुक़र्रर किया है कि उनके लिए एक वक़्ते मुअय्यन जिसमें कोई शक नहीं, मगर इन ज़ालिमों ने इंकार ही किया सिवाय कुफ़्र (और कुफ़्राने नेअमत) के।"

उन्होंने अल्लाह के हर हुक्म और उसकी हर आयत से कुफ़्र और इंकार की रविश अपनाए रखी।

आयत 100

قُلْ لَّوۡ اَنۡتُمۡ تَمۡلِكُوۡنَ خَزَآئِنَ رَحۡمَةِ رَبِّىۡۤ

"आप ﷺ कहिये कि अगर तुम्हें इख़्तियार होता मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों पर"

إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۚ

"तब भी तुम ज़रूर रोक रखते (उन्हें) खर्च हो जाने के डर से।"

अगर अल्लाह की रहमत के बेहिसाब ख़ज़ाने तुम्हारे इख़्तियार में होते तो तुम लोग अपने फ़ितरी बुख्ल के सबब उनके दरवाज़े भी बंद कर देते कि कहीं ख़र्च होकर ख़त्म ना हो जाये।

وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

"और इंसान बहुत ही तंग दिल है।"

आयात 101 से 111 तक

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ فَاسْأَلْ بَنِي
إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ
يَا مُوسَىٰ مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزَلَ
هَٰؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ وَإِنِّي
لَأَظُنُّكَ يَا فِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾ فَأَرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ
مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾ وَقُلْنَا
مِنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا

جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَةِ جِئۡنَا بِكُمۡ لَفِيۡفًا ؕ﴿۱۰۴﴾ وَبِالۡحَقِّ
اَنۡزَلۡنٰهُ وَبِالۡحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا
وَّنَذِيۡرًا ۘ﴿۱۰۵﴾ وَقُرۡاٰنًا فَرَقۡنٰهُ لِتَقۡرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى
مُكۡثٍ وَّنَزَّلۡنٰهُ تَنۡزِيۡلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلۡ اٰمِنُوۡا بِهٖۤ اَوۡ لَا
تُؤۡمِنُوۡا ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ مِنۡ قَبۡلِهٖۤ اِذَا يُتۡلٰى
عَلَيۡهِمۡ يَخِرُّوۡنَ لِلۡاَذۡقَانِ سُجَّدًا ۙ﴿۱۰۷﴾ وَّيَقُوۡلُوۡنَ سُبۡحٰنَ
رَبِّنَاۤ اِنۡ كَانَ وَعۡدُ رَبِّنَا لَمَفۡعُوۡلًا ﴿۱۰۸﴾ وَيَخِرُّوۡنَ
لِلۡاَذۡقَانِ يَبۡكُوۡنَ وَيَزِيۡدُهُمۡ خُشُوۡعًا ۩ ﴿۱۰۹﴾ قُلِ ادۡعُوا
اللّٰهَ اَوِ ادۡعُوا الرَّحۡمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدۡعُوۡا فَلَهُ الۡاَسۡمَآءُ
الۡحُسۡنٰى ۚ وَلَا تَجۡهَرۡ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتۡ بِهَا وَابۡتَغِ
بَيۡنَ ذٰلِكَ سَبِيۡلًا ﴿۱۱۰﴾ وَقُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ لَمۡ
يَتَّخِذۡ وَلَدًا وَّلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ شَرِيۡكٌ فِى الۡمُلۡكِ وَلَمۡ
يَكُنۡ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرۡهُ تَكۡبِيۡرًا ﴿۱۱۱﴾

आयत 101

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ

“और हमने मूसा को वाज़ेह निशानियाँ अता की थीं”

इनमें से तो दो निशानियाँ वो थीं जो आपको इब्तदा में अता हुई थीं, यानि असा का अज़दाह बन जाना और यदे बैयज़ा (सफ़ेद हाथ)। इनके अलावा सात निशानियाँ वो थीं जिनका ज़िक्र सूरतुल आराफ़ की आयत 130 और 133 में हुआ है। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अज़ाब थे (क़हत साली, फ़लों और फ़सलों का नुक़सान, तूफ़ान, टिड्डी दल, चीटियाँ, मेंढक और खून) जो मिस्र में क़ौमे फ़िरऔन पर मुख्तलिफ़ औक़ात में आते रहे। जब वो लोग अज़ाब की तकालीफ़ से तंग आते तो उसे टालने के लिए हज़रत मूसा अलै. से दुआ की दरख्वास्त करते और हज़रत मूसा अलै. की दुआ से वो अज़ाब टल जाता।

यहाँ यह नुक़्ता लायक़-ए-तवज्जोह है कि सूरत के आग़ाज़ में भी हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र हुआ था और अब आखिर में भी आपका ज़िक्र होने जा रहा है। यह असलूब हमें क़ुरान हकीम की उन सूरतों में मिलता है जो एक ख़ुत्बे के तौर पर एक ही तंज़ील में नाज़िल हुई हैं। ऐसी सूरतों की इब्तदाई और आख़री आयात ख़ुसूसी अहमियत और फ़ज़ीलत की हामिल होती हैं और इनके मज़ामीन में एक ख़ास रब्त पाया जाता है। सूरत के आग़ाज़ (सूरह बनी इस्राइल आयत नम्बर 2) में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की हयाते मुबारका के उस दौर का ज़िक्र किया गया है जब आप मिस्र से निकल कर सहराए सीना में आ चुके थे और वहाँ से आपको कोहे तूर पर बुला कर तौरात अता की गई थी: {

{وَكِيلًا وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ}
"और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और हमने उसे बना दिया हिदायत बनी इस्राईल के लिए, कि तुम मत बनाओ मेरे सिवा किसी को कारसाज़।" अब आखिर में बनी इस्राईल के ज़माना-ए-मिस्र के हालात के हवाले से फिर हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र किया जा रहा है:

فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾

"तो ज़रा पूछें बनी इस्राईल से (उस ज़माने का हाल) जबकि मूसा उनके पास आये तो फ़िरऔन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मैं तो तुम्हें एक सहरज़दा आदमी समझता हूँ।"

देखिए जो अल्फ़ाज़ फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहे थे ऐन वही अल्फ़ाज़ हुज़ूर ﷺ के लिये आपके मुख़ालफ़ीन की तरफ़ से इस्तेमाल किए गये हैं। इसी सूरत में हम पढ़ आये हैं कि क़ुरैश मक्का आप ﷺ के बारे में कहते थे: {اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا} (आयत 47) "तुम नहीं पैरवी कर रहे मगर एक सहरज़दा शख़्स की।"

आयत 102

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ

"मूसा अलै. ने कहा: तुझे ख़ूब मालूम है कि नहीं नाज़िल किया इन (निशानियों) को मगर आसमानों और ज़मीन के रब ने आँखें खोल देने के लिए।"

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
بَصَآىِٕرَ

وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾

"और ऐ फ़िरऔन! मैं तो तुम्हें हलाकत ज़दा समझता हूँ।"

एक तो हज़रत मूसा अलै. का मिज़ाज जलाली था, दूसरे आप बचपन से उस फ़िरऔन के साथ पले-बढ़े थे, इस तरह उसकी हैसियत आपके छोटे भाई की सी थी। चुनाँचे आपने बड़े बा-रौब अंदाज़ में बिला झिझक जवाब दिया कि तुम्हें तो मुझ पर जादू के असर का गुमान है मगर मैं समझता हूँ कि तू रब्बे कायनात की बसीरत अफ़रोज़ वाज़ेह निशानियों को झुठला कर अपनी हलाकत और बर्बादी को यक़ीनी बना चुका है।

आयत 103

فَاَرَادَ اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

"तो उसने इरादा किया कि उन्हें उखाड़ फेंके ज़मीन से"

फ़िरऔन बाक़ायदा मन्सूबा बंदी के तहत बनी इस्राईल की नस्लकशी कर रहा था। वो उनके लड़कों को क़त्ल करवा देता और लड़कियों को ज़िन्दा रहने देता था। और किसी भी क़ौम के मुकम्मल इस्तेसाल का इससे ज़्यादा मुअस्सर तरीक़ा भला और क्या हो सकता है!

فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿١٠٣﴾

"लेकिन हमने ग़र्क़ कर दिया उसको और जो उसके साथ थे सबको।"

आयत 104

وَّقُلْنَا مِنْ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ

"और उसके बाद हमने बनी इस्राईल को हुक्म दिया कि तुम लोग ज़मीन में आबाद हो जाओ"

فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿١٠٤﴾

"फिर जब आयेगा पिछले वादे का वक़्त तो हम ले आयेंगे तुम सबको समेट कर।"

अक्सर व बेशतर मुफ़स्सरीन ने وَعْدُ الْاٰخِرَةِ से आख़िरत यानि क़यामत मुराद ली है। यानि जब क़यामत आयेगी तो तुम लोग जहाँ कहीं भी होगे सबको इकट्ठा करके हम मैदाने हश्र में ले आयेंगे। लेकिन मेरे ख़्याल में इन अल्फ़ाज़ में यह इर्शाद भी मौजूद है कि जब आख़िरत का वक़्त करीब आयेगा तो बनी इस्राईल को हर कहीं से इकट्ठा करके एक जगह जमा कर लिया जायेगा। यह लोग हज़रत ईसा अलै. की तकज़ीब करके बहुत बड़े जुर्म के मुरतकिब हो चुके थे। उसके बाद नबी आखिरुज्ज़मान ﷺ की रिसालत को झुठला कर इन्होंने अपने इस जुर्म की मज़ीद तौशीक़ भी कर दी। चुनाँचे अब अल्लाह तआला के नज़दीक इस क़ौम की हैसियत उस

क़ैदी की सी है जिसको उसके जुर्म की सज़ा सुनाई जा चुकी हो, मगर उस सज़ा की तामील (execution) अभी बाक़ी हो।

इस सूरत के नुज़ूल के वक़्त बनी इस्राईल के दौरे इन्तशार (Diaspora) यानि फ़लस्तीन से बेदख़ल हुए साढ़े पाँच सौ साल हो चुके थे। पिछली सदी तक भी इनकी कैफ़ियत यह थी कि ये लोग पूरी दुनिया में बिखरे हुए थे। चूँकि किसी इज्तमाई सज़ा या अज़ाब के लिए उनका एक जगह इकठ्ठा होना ज़रुरी था इसलिए क़ुदरत की तरफ़ से इस्राईल की रियासत का क़याम अमल में लाया गया और आयत ज़ेरे नज़र के अल्फ़ाज़ के ऐन मुताबिक़ दुनिया के कोने-कोने से तमाम यहूदियों को इकठ्ठा करके यहाँ आबाद किया गया। अपने ज़अम में तो इन लोगों ने अज़ीम तर इस्राईल (Greater Israel) का मन्सूबा और नक़्शा तैयार कर रखा है और ऐन मुम्किन है इनका यह मन्सूबा पूरा भी हो जाये, मगर बिल्‌आख़िर यह अज़ीम तर इस्राईल इनके लिए अज़ीमतर क़ब्रिस्तान साबित होगा (वल्लाहु आलम!) आख़री ज़माने में हज़रत ईसा अलै. दोबारा इस दुनिया में तशरीफ़ लायेंगे और आप ही के हाथों इस क़ौम की हलाकत होगी।

अब आख़री आयात में फिर से क़ुरान मजीद का ज़िक्र बड़े अज़ीमुश्शान अंदाज़ में आ रहा है:

आयत 105

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ

"और इस (क़ुरान) को हमने हक़ के साथ नाज़िल किया है और यह हक़ के साथ नाज़िल हुआ है।"

यहाँ "हक़" का लफ़्ज़ ख़ुसूसी अहमियत का हामिल है और इस लफ़्ज़ की मायनवी तासीर को वाज़ेह करने के लिए ज़रुरी है कि इसे दोनों दफ़ा ख़ास तौर पर ज़ोर देकर और वाज़ेह करके पढ़ा जाये। इस आयत का अंदाज़ बिल्कुल वही है जो सूरह अत्तारिक़ की आयात में पाया जाता है: {اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ} {وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ} (आयत 13,14) "यक़ीनन यह (क़ुरान) क़ौले फ़ैसल है और यह कोई हसी मज़ाक़ नहीं है।" इस मफ़हूम की वज़ाहत हमें हज़रत उमर रज़ि. से मरवी इस हदीसे नबवी में मिलती है: ((اِنَّ اللّٰهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ اَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهٖ آخَرِيْنَ))(23) "यक़ीनन अल्लाह इस किताब की बदौलत कई क़ौमों को उठायेगा और कई दूसरी क़ौमों को गिरायेगा।" चुनाँचे क़ुरान की बरकत से अल्लाह तआला ने मुसलमानों को उरूज बख़्शा और जब हम इसके तारिक (छोड़ने वाले) हुए तो इसी जुर्म की पादाश में हमें ज़मीन पर पटक दिया गया:

ख्वार अज़ महजूरी क़ुराँ शुदी
शिकवा संजे गर्दिशे दौराँ शुदी
ऐ चूँ शबनम बर ज़मीं इफ़तन्दा-ए
दर बगल दारी किताबे ज़िन्दा-ए

(इक़बाल)

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۝۱۰۵

"और (ऐ नबी ﷺ) नहीं भेजा हमने आप ﷺ को मगर बशारत देने वाला और ख़बर-दार करने वाला।"

आयत 106

وَقُرۡاٰنًا فَرَقۡنٰهُ لِتَقۡرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكۡثٍ

"और क़ुरान को हमने टुकड़े-टुकड़े (करके नाज़िल) किया है, ताकि आप ﷺ इसे लोगों को ठहर-ठहर कर सुनाएँ।"

وَّنَزَّلۡنٰهُ تَنۡزِيۡلًا ۝۱۰۶

"और हमने इसको उतारा है थोड़ा-थोड़ा करके!"

क़ुरान के मुख़्तलिफ़ अहकाम हालात के ऐन मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर नाज़िल किए जाते रहे ताकि जिन आयात या अहकाम की जिस वक़्त ज़रुरत हो वही लोगों को पढ़ कर सुनाये जायें। जैसे-जैसे रसूल अल्लाह ﷺ की तहरीक और दावत आगे बढ़ती गई वैसे-वैसे क़ुरान के अहकाम के ज़रिए उसके लिए फ़िक्री रहनुमाई मुहैया की जाती रही। यही वजह है कि पूरा क़ुरान यकबारगी (एक बार में) नाज़िल नहीं किया गया।

आयत 107

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ

“आप कह दीजिए कि तुम इस पर ईमान लाओ या ना लाओ!”

اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۝١٠٧

“यक़ीनन वो लोग जिन्होंने इससे पहले इल्म दिया गया था जब यह (क़ुरान) उनको पढ़ कर सुनाया जाता है तो वो अपनी ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं।”

इस आयत में यहूद के बाज़ उल्मा की तरफ इशारा है।

आयत 108

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۝١٠٨

“और वो कहते हैं कि पाक है हमारा रब, यक़ीनन हमारे रब का वादा तो पूरा होना ही था।”

जब क़ुरान कह रहा है तो इसका मतलब है कि उल्माए यहूद में लाज़िमन कुछ लोग ऐसे होंगे जो इस तरह के ख़्यालात के हामिल होंगे। हिजरत से क़ब्ल रसूल अल्लाह ﷺ की नुबूवत के बारे में इत्तलाआत तो यहूदे मदीना को मिलती रहती थीं। उसके साथ ही क़ुरान की कुछ आयात भी उन तक ज़रूर पहुँच चुकी होंगी। इस पसमंज़र में हो सकता है कि उनके बाज़ अहले इल्म ना सिर्फ़ क़ुरान को पहचान कर

अल्लाह के हुज़ूर सज्दे में गिरे हों बल्कि उनकी ज़बानों पर बे-इख़्तियार यह अल्फ़ाज़ भी आ गये हों कि अल्लाह ने जो आख़री नबी भेजने का वादा कर रखा था वो तो आख़िर पूरा होना ही था। यह अल्लाह तआला के उस वादे की तरफ़ इशारा है जो बाइबिल की किताब इस्तसना के अठ्ठारहवें बाब की आयत 18 और 19 में इन अल्फ़ाज़ में आज भी मौजूद है कि ऐ मूसा मैं इनके भाईयों (बनी इस्राईल के भाई यानि बनु इस्माईल) में तेरी मानिन्द एक नबी उठाउँगा और उसके मुँह में अपना कलाम डालूँगा और वो लोगों से वही कुछ कहेगा जो में उसे बताउँगा।

आयत 109

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۩ ﴿١٠٩﴾

"और वो गिर पड़ते हैं अपनी ठोड़ियों के बल रोते हुए और यह (क़ुरान) इज़ाफ़ा करता है उनके ख़ुशूअ में।"

अब वो दो आख़री आयात आ रही हैं जिनके मुताल्लिक़ आग़ाज़ में बताया गया था कि वो मआरफ़ते खुदावंदी और तौहीदे रब्बानी के अज़ीम ख़ज़ाने हैं। इसके बाद सूरतुल कह्फ़ के आख़िर में भी दो आयात आयेंगी जो इन आयात की तरह बहुत अज़ीम हैं।

आयत 110

قُلِ ادۡعُوا اللّٰهَ اَوِ ادۡعُوا الرَّحۡمٰنَ ؕ

"आप ﷺ कह दीजिए कि तुम अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर।"

اَیًّا مَّا تَدۡعُوۡا فَلَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰی ۚ

"जिस नाम से भी तुम पुकारो सब अच्छे नाम उसी के हैं।"

हर ख़ैर, हर ख़ूबी, हर भलाई, हर हुस्न, हर कमाल, हर जमाल, जिसका तुम तसव्वुर कर सकते हो, वह ब-तमाम व कमाल अल्लाह तआला की ज़ात में मौजूद है।

وَلَا تَجۡهَرۡ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتۡ بِهَا وَابۡتَغِ بَیۡنَ ذٰلِكَ سَبِیۡلًا ﴿۱۱۰﴾

"और मत बुलंद करो आवाज़ अपनी नमाज़ में और ना ही बहुत पस्त रखो उसमें, बल्कि उसके बैन-बैन रविश इख़्तियार करो।"

तुम्हारी नमाज़ें और दुआएँ ना तो बहुत ज़्यादा जेहरी हों ना बिल्कुल ही सिर्री, बल्कि इनके बैन-बैन की राह इख़्तियार करो।

आयत 111

وَقُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ

"और कह दीजिए कि कुल हम्द और कुल शुक्र अल्लाह ही के लिए है"

यह आयत अपने मज़मून के ऐतबार से सूरह इख़्लास की हमवज़्न है। इसमें पाँच मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में अल्लाह

तआला की अज़मत और तौहीद का बयान है। इस ज़िमन में ये पहली बात है, यानि हुज़ूर ﷺ की ज़बान मुबारका से यह ऐलान कि तमाम तारीफ़ें और हर क़िस्म का शुक्र अल्लाह ही के लिए है।

"जिसने नहीं बनाई कोई औलाद" الَّذِىۡ لَمۡ يَتَّخِذۡ وَلَدًا

यह दूसरी बात है, जिसे सूरह इख़्लास में {لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ} के अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है।

"और नहीं है उसका कोई शरीक बादशाही में" وَّلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ شَرِيۡكٌ فِى الۡمُلۡكِ

तीसरी बात इक़तदार व इख़्तियार से मुताल्लिक़ है। अल्लाह तआला तन्हा हर चीज़ का मालिक व मुख़्तार और मालिकुल मुल्क है। उसके अलावा किसी के पास किसी क़िस्म का कोई इख़्तियार नहीं।

"और ना ही उसका कोई दोस्त है कमज़ोरी की वजह से" وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ

यह चौथी बात है कि अल्लाह तआला की दोस्ती को अपनी दोस्तियों पर क़यास ना करो। तुम तो दोस्तियाँ इसलिए पालते हो कि तुम अपने दोस्तों के मोहताज होते हो। इंसान दोस्त इसलिए बनाता है कि वो ज़रुरत के वक़्त काम आयेगा। बाज़ दफ़ा इंसान अपने किसी दोस्त की इन्तहाई नाजायज़ बात सिर्फ़ इसलिए मानने पर मजबूर होता है कि कल वो मेरी भी कोई ज़रुरत पूरी करेगा। इंसान की यही

कमज़ोरी उसे दोस्त बनाने और दोस्ताना ताल्लुक़ निभाने पर मजबूर करती है, मगर अल्लाह तआला की ज़ात ऐसी तमाम कमज़ोरियों से पाक है। वो किसी का मोहताज नहीं बल्कि सब उसके मोहताज हैं। चुनाँचे अल्लाह की दोस्ती किसी ज़रुरत की बुनियाद पर नहीं होती और ना ही अल्लाह का कोई दोस्त उससे अपनी कोई बात ज़बरदस्ती मनवा सकता है। पाँचवी और आख़री बात बहुत अहम है:

وَ كَبِّرۡهُ تَكۡبِيۡرًا ﴿۱۱۱﴾

“उसकी तकबीर करो जैसे कि तकबीर करने का हक़ है।”

यह तर्जुमा (तकबीर करो) बहुत अहम और तवज्जोह तलब है। सिर्फ़ ज़बान से “अल्लाहु अकबर” कह देने से अल्लाह की तकबीर नहीं हो जाती, इसके लिए अमली तौर पर भी बहुत कुछ करने की ज़रुरत है। ज़बान से अल्लाहु अकबर कहना तो तकबीर का पहला दर्जा है कि किसी ने ज़बान से इक़रार कर लिया कि अल्लाह सबसे बड़ा है। उसके बाद अहम और कठिन मरहला अपने तमाम इंफरादी और इज्तमाई मामलात में अल्लाह को अमली तौर पर बड़ा करने का है। यह मरहला तब तय होगा जब हमारे घर में भी अल्लाह बड़ा तस्लीम किया जायेगा और घर के तमाम मामलात में उसी की बात मानी जायेगी, जब हमारी पारलियामेंट में भी उसकी बड़ाई को तस्लीम किया जायेगा और कोई क़ानून उसकी शरीयत के ख़िलाफ़ नहीं बन सकेगा, जब हमारी अदालतों में भी उसकी बड़ाई का डंका बजेगा और तमाम फ़ैसले उसी के अहकामात की रौशनी में किए जायेंगे। गर्ज़ जब तक हर छोटे-बड़े मामले में और हर कहीं उसका हुक्म आख़री हुक्म के तौर पर तस्लीम नहीं किया जायेगा, अल्लाह की तकबीर का हक़ अदा नहीं होगा। अल्लाह के

अहकाम को अमली तौर पर नाफ़िज़ करने वालों के लिए सूरतुल मायदा का यह हुक्म बहुत वाज़ेह है: {وَمَنۡ لَّمۡ يَحۡكُمۡ بِمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡكٰفِرُوۡنَ} {....فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ} {فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ....} आज हमने अल्लाह को (नऊज़ु बिल्लाह) अपने तैं मस्जिदों में बंद कर दिया है कि ऐ अल्लाह आप यहीं रहें, यहीं पर आकर आपकी तकबीर के तराने गायेंगे, आप की तस्बीह व तहमीद करेंगे। लेकिन मस्जिद से बाहर हमारी मजबूरियाँ हैं। क्या करें मार्केट में माली मफ़ादात के हाथों मजबूर हैं, घर में बीवी बड़ी है, किसी और जगह कोई और बड़ा है। ऐसे हालात में हमारे यहाँ अल्लाह की तकबीर का मफ़हूम ही बदल कर रह गया है और अब तकबीर फ़क़त दो अल्फ़ाज़ (अल्लाहु अकबर) पर मुश्तमिल एक कलमा है, जिसे ज़बान से अदा कर दें तो गोया अल्लाह की बड़ाई का हक़ अदा हो जाता है।

بارک اللہ لی ولکم فی القرآن العظیم ونفعنی وایاکم بالآیات والذکر الحکیم۔

❀ ❀ ❀

सूरतुल कहफ़

तम्हीदी कलिमात

सूरतुल कहफ़ और सूरह बनी इसराइल का आपस में जोड़े और ज़ौजियत का ताल्लुक़ है। दोनों सूरतों के बारह-बारह रुकूअ हैं और आयात की तादाद भी तक़रीबन बराबर है। दोनों के ऐन वस्त में हज़रत आदम अलै. और इब्लीस का वाक़िया बयान हुआ है और इस ज़िमन में इस हद तक मुशाबेहत है कि ना सिर्फ़ दोनों सूरतों के सातवें रुकूअ का आग़ाज़ इस वाक़िये से होता है बल्कि दोनों जगहों पर वाक़िये की इब्तदा भी एक ही आयत से हो रही है। इनकी निस्बते ज़ौजियत से मुताल्लिक़ अहम निकात का ज़िक्र सूरह बनी इसराइल के आग़ाज़ में भी हो चुका है, जबकि मेरी किताब “क़ुरान हकीम ले सूरतों के मज़ामीन का इज्माली तजज़िया” में इस मज़मून को मज़ीद जामियत के साथ पेश करने की कोशिश की गई है। सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत और सूरतुल कहफ़ की इब्तदाई आयत में एक ख़ास रब्त व ताल्लुक़ है, जिससे ज़ाहिर होता है कि दोनों सूरतें एक साथ क़ुरान में वारिद हुई हैं और रेल के डिब्बों की तरह बाहम inter locked हैं। सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत का आग़ाज़ {وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ....} के अल्फ़ाज़ से हो रहा है, यानि इसमें अल्लाह तआला की हम्द का हुक्म दिया जा रहा है, जबकि सूरतुल कहफ़ का आग़ाज़ {اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ.... }

के अल्फ़ाज़ से हो रहा है। गोया यहाँ इस हुक्म की तामील हो रही है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आयात 1 से 8 तक

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰي عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ
لَّهٗ عِوَجًا ۜ ۝١ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ
وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ
لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ ۝٢ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ ۝٣ وَّيُنْذِرَ
الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۤ ۝٤ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ
وَّلَا لِاٰبَاۗىِٕهِمْ ۭ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ
يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝٥ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓي
اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝٦ اِنَّا
جَعَلْنَا مَا عَلَي الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ
اَحْسَنُ عَمَلًا ۝٧ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا
جُرُزًا ۭ ۝٨

आयत 1

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰي عَبْدِهِ الْكِتٰبَ

"कुल हम्द व सना और कुल शुक्र अल्लाह ही के लिये है जिसने नाज़िल की अपने बन्दे पर किताब"

रसूल अल्लाह ﷺ को अल्लाह तआला के साथ जो ताल्लुक़ और निस्बत है उसे यहाँ लफ्ज़ "अब्द" से नुमायाँ फ़रमाया गया है।

وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۜ Ǽ

"और इसमें उसने कोई कजी नहीं रखी।"

आयत 2

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ

"(ये किताब) बिल्कुल सीधी है, ताकि वह ख़बरदार करे एक बहुत बडी आफ़त से उसकी तरफ़ से"

यानि नबी अकरम ﷺ पर नुज़ूले क़ुरान के मक़ासिद में से एक मक़सद यह भी है कि आप लोगों को एक बहुत बड़ी आफ़त के बारे में ख़बरदार कर दें। यहाँ लफ्ज़ بَاْسًا बहुत अहम है। यह लफ्ज़ वाहिद हो तो इसका मतलब जंग होता है और जब बतौर जमा आए तो इसके मायने सख्ती, मुसीबत, भूख, तकलीफ़ वगैरह के होते हैं। जैसे सूरतुल बक़रह में यह लफ्ज़ बतौर वाहिद भी आया है और बतौर जमा भी: {وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ۭ} (आयतुल बिर्र, 177) चुनाँचे वहाँ दोनों सूरतों में इस लफ्ज़ के मायने

मुख्तलिफ़ हैं: "الْبَأْسَاۗءِ" के मायने फक़्र व तंगदस्ती और मसाएब (मुसीबतें) व तकालीफ़ के हैं जबकि "وَحِيْنَ الْبَاْسِ" से मुराद जंग का वक़्त है।

बहरहाल आयत ज़ेरे नज़र में "بَاْسًا شَدِيْدًا" से एक बड़ी आफ़त भी मुराद हो सकती है और बहुत शदीद क़िस्म की जंग भी। आफ़त के मायने में इस लफ्ज़ का इशारा उस दज्जाली फ़ितने की तरफ़ है जो क़यामत से पहले ज़ाहिर होगा। हदीस में है कि कोई नबी और रसूल ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी क़ौम को दज्जाल के फ़ितने से ख़बरदार ना किया हो, क्योंकि यह फ़ितना एक मोमिन के लिये सख्त तरीन इम्तिहान होगा और पूरी इंसानी तारीख़ में इस फ़ितने से बड़ा कोई फ़ितना नहीं है।

दूसरी तरफ़ इस लफ्ज़ (بَاْسًا شَدِيْدًا) को अगर ख़ास तौर पर जंग के मायने में लिया जाए तो इससे "अल मलहमतुल उज़मा" मुराद है और इसका ताल्लुक़ भी फ़ितना-ए-दजाल ही से है। कुतुब अहादीस (किताबुल फ़ितन, किताब आसारुल क़ियामत, किताबुल मलाहिम वगैरह) में इस खौफ़नाक जंग का ज़िक्र बहुत तफ़सील से मिलता है। ईसाई रिवायात में इस जंग को "हर मजदौन" (Armageddon) का नाम दिया गया है। बहरहाल हज़रत मसीह अलै. के तशरीफ़ लाने और उनके हाथों दज्जाल के क़त्ल के बाद इस फ़ितने या जंग का ख़ात्मा होगा।

बहुत सी अहादीस में हमें यह वज़ाहत भी मिलती है कि दज्जाली फ़ितने के साथ सूरतुल कहफ़ की एक ख़ास मुनासबत है और इस फ़ितने के असरात से महफ़ूज़ रहने के लिये इस सूरत के साथ ज़हनी और क़ल्बी ताल्लुक़ क़ायम

करना बहुत मुफ़ीद है। इस मक़सद के लिये अहादीस में जुमे के रोज़ सूरतुल कहफ़ की तिलावत करने की तल्क़ीन फ़रमाई गई है, और अगर पूरी सूरत की तिलावत ना की जा सके तो कम अज़ कम इसकी इब्तदाई और आख़री आयात की तिलावत करना भी मुफ़ीद बताया गया है।

यहाँ पर दज्जाली फ़ितने की हक़ीक़त के बारे में कुछ वज़ाहत भी ज़रूरी है। 'दजल' के लफ़्ज़ी मायने धोखा और फ़रेब के हैं। इस मफ़हूम के मुताबिक़ "दज्जाल" ऐसे शख्स को कहा जाता है जो बहुत बड़ा धोखेबाज़ हो, जिसने दूसरों को धोखा देने के लिये झूठ और फ़रेब का लिबादा ओढ़ रखा हो। इसलिये नबुवत के झूठे दावेदारों को भी दज्जाल कहा गया है। चुनाँचे नबी अकरम ﷺ ने जिन तीस दज्जालों की पैदाइश की ख़बर दी है उनसे झूठे नबी ही मुराद हैं।

दज्जालियत के इस अमूमी मफ़हूम को मद्देनज़र रखा जाए तो आज के दौर में माद्दापरस्ती भी एक बहुत बड़ा दज्जाली फ़ितना है। आज लोगों के अज़हान व क़ुलूब, नज़रियात व अफ़कार और अख्लाक़ व अक़दार पर माद्दियत का इस क़दर ग़लबा हो गया है कि इंसान अल्लाह को भूल चुका है। आज वह मुसब्बबुल असबाब को भूल कर माद्दी असबाब पर तवक्कुल करता है। वह क़ुरान (आले इमरान:185) के इस फ़रमान को यकसर फ़रामोश कर चुका है कि: {وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ} यानि दुनियवी ज़िंदगी महज़ धोखे का सामान है, जबकि असल ज़िंदगी आख़िरत की ज़िंदगी है। आख़िरत की ज़िंदगी पर पड़े हुए दुनिया और उसकी माद्दियत के परदे से धोखा खाकर इंसान ने दुनियवी ज़िंदगी ही को असल समझ लिया है, लिहाज़ा

इसकी तमाम दौड़-धूप इसी ज़िंदगी के लिये है। इसी ज़िंदगी के मुस्तक़बिल को सँवारने की इसको फ़िक्र है, और यूँ वह माद्दापरस्ती के दज्जाली फ़ितने में गिरफ्तार हो चुका है।

इसके अलावा दज्जाल और दज्जाली फ़ितने का एक ख़ुसूसी मफ़हूम भी है। इस मफ़हूम में इससे मुराद एक मख्सूस फ़ितना है जो क़रीब क़यामत के ज़माने में एक ख़ास शख्सियत की वजह से ज़हूर पज़ीर होगा। इस बारे में कुतुबे अहादीस में बड़ी तफ़सीलात मौजूद हैं, लेकिन बाज़ रिवायात में कुछ पेचीदगियाँ भी हैं और तज़ादात भी। इनको समझने के लिये आला इल्मी सतह पर गौर व फ़िक्र की ज़रूरत है, क्योंकि ज़ाहिरी तौर पर नज़र आने वाले तज़ादात में मुताबक़त के पहलुओं को तलाश करना अहले इल्म का काम है। बहरहाल यहाँ उन तफ़ासील का ज़िक्र और उन पर तबसिरा करना मुमकिन नहीं। इस मौज़ू के बारे में यहाँ सिर्फ़ इस क़दर जान लेना ही काफ़ी है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने क़रीब क़यामत के ज़माने में दज्जाल के ज़ाहिर होने और एक बहुत बड़ा फ़ितना उठाने के बारे में ख़बरें दी हैं। जो हज़रात इस हवाले से तफ़सीली मालूमात चहाते हों वह मौलाना मनाज़िर अहसन गिलानी की किताब “तफ़सीर सूरतुल कहफ़” का मुताअला कर सकते हैं। इस मौज़ू पर “दुनिया की हक़ीक़त” के उन्वान से मेरी एक तक़रीर की रिकॉर्डिंग भी दस्तयाब है, जिसमें मैंने सूरतुल कहफ़ के मज़ामीन का ख़ुलासा बयान किया है।

وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۝۲

"और (ताकि) वह बशारत दे उन अहले ईमान को जो नेक अमल करते हों कि उनके लिये होगा बहुत अच्छा बदला।"

आयत 3

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۝۳

"वह उसमें रहेंगे हमेशा-हमेशा।"

आयत 4

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۝۴

"और ख़बरदार कर दे उन लोगों को जिन्होंने कहा कि अल्लाह ने बेटा बनाया है।"

दौरे हाज़िर की दज्जालियत की असल जड़ मौजूदा मसीहियत है जिसकी बुनियाद तसलीस पर रखी गई है और अब इसे मसीहियत के बजाय Paulism कहना ज़्यादा दुरुस्त है। इसमें सबसे पहले हज़रत मसीह अलै. को अल्लाह का बेटा क़रार दिया गया। फ़िर इसमें कफ्फ़ारे का अक़ीदा शामिल किया गया कि जो कोई भी हज़रत मसीह अलै. पर ईमान लाएगा उसे तमाम गुनाहों से पेशगी माफ़ी मिल जाएगी। इसके बाद शरीअत को साक़ित करके इस सिलसिले में तमाम इख़्तियारात पॉप को दे दिये गए, कि वह जिस

चीज़ को चाहे हलाल क़रार दे और जिसको चाहे हराम। इन तहरिफ़ात की वजह से यूरोप में आम लोगों को लफ्ज़ "मज़हब" से ही शदीद नफ़रत हो गई। फ़िर जब हस्पानिया में मुसलमानों के ज़ेरे असर जदीद उलूम को फ़रोग़ मिला तो फ्रांस, इटली, जर्मनी वगैरह के बेशुमार नौजवानों ने क़रतबा, गरनाता और तलियतला की यूनिवर्सिटियों में दाखला लिया। ये नौजवान हुसूल तालीम के बाद जब अपने-अपने मुमालिक में वापस गए तो यूरोप में इनकी नई फ़िक्र की वजह से इस्लाहे मज़हब (Reformation) और अहयाए उलूम (Renaissa-nce) की तहरीकात शुरू हुईं। इनकी वजह से यूरोप के आम लोग जदीद उलूम की तरफ़ रागिब तो हुए मगर मआशरे में पहले से मौजूद मज़हब मुखालिफ़ जज़्बात की वजह से मज़हब दुश्मनी खुद-ब-खुद इस तहरीक में शामिल हो गई। नतीजतन जदीद उलूम के साथ मज़हब से बेज़ारी, रुहानियत से ला-ताल्लुक़ी, आख़िरत से इन्कार और ख़ुदा के तस्सवुर से बेगानगी जैसे ख़यालात भी यूरोपी मआशरे में मुस्तक़िलन जड़ पकड़ गए, और यह सब कुछ ईसाईयत में की जाने वाली मज़कूरा तहरिफ़ात का रद्दे अमल था। आयत ज़ेरे नज़र में उन्हीं लोगों की तरफ़ इशारा है जिन्होंने ये अक़ीदा ईजाद किया था कि मसीह अलै. (नाउज़ुबिल्लाह) अल्लाह का बेटा है।

आयत 5

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآىِٕهِمْ ؕ

"इन्हें इसके बारे में कुछ भी इल्म नहीं और ना ही इनके आबा व अजदाद को था।"

इन्होंने ये जो अक़ीदा ईजाद किया है इसकी ना तो इनके पास कोई इल्मी सनद है और ना ही इनके आबा व अजदाद के पास थी।

كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ

"बहुत बुरी बात है जो इनके मुँहों से निकल रही है।"

ये लोग अल्लाह तआला से औलाद मंसूब करके उसकी शान में बहुत बड़ी गुस्ताखी का इरतकाब कर रहे हैं।

اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝۵

"वह नहीं कहते मगर सरासर झूठ।"

आयत 6

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝۶

"तो (ऐ नबी ﷺ!) आप शायद अपने आपको गम से हलाक कर लेंगे उनके पीछे, अगर वह ईमान ना लाये इस बात (क़ुरान) पर।"

तसलीस जैसे ग़लत अक़ाइद के जो भयानक नताइज मुस्तक़बिल में नस्ले इंसानी के लिये मुतवक्क़ो थे उनके तस्सवुर और इदराक से रसूल अल्लाह ﷺ पर शदीद दबाव था। आप खूब समझते थे कि अगर ये लोग क़ुरान पर ईमान ना लाए और अपने मौजूदा मज़हब पर ही क़ायम रहे

तो इनके ग़लत अक़ाइद के सबब दुनिया में दज्जालियत का फ़ितना जन्म लेगा, जिसके असरात नस्ले इंसानी के लिये तबाहकुन होंगे। यही गम था जो आपकी जान को घुलाए जा रहा था।

आयत 7

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا

"यक़ीनन हमने बना दिया है जो कुछ ज़मीन पर है उसे उसका बनाव सिंघार"

यहाँ ये नुक्ता ज़हन नशीन कर लीजिये कि लफ्ज़ "ज़ीनत" और दुनियवी आराइश व ज़ेबाइश का मौज़ू इस सूरत के मज़ामीन का अमूद है। यानि दुनिया की रौनक़, चमक-दमक और ज़ेब व ज़ीनत में इन्सान इस क़दर खो जाता है कि आख़िरत का उसे बिल्कुल ख्याल ही नहीं रहता। दुनिया की ये रंगीनियाँ अमेरिका और यूरोप में इस हद तक बढ़ चुकी हैं कि उन्हें देख कर अक़्ल दंग रह जाती है और इंसान इस सब कुछ से मुतास्सिर हुए बगैर नहीं रह सकता। यही वजह है कि आज हम अमेरिकी और यूरोपी अक़वाम की इल्मी तरक्क़ी से मुतास्सिर और उनके माद्दी असबाब व वसाइल से मरऊब हैं। अपनी इसी मरऊबियत के बाइस हम उनकी ला-दीनी तहज़ीब व सक़ाफ़त के भी दिलदादाह हैं और उनके तर्ज़े मआशरत को अपनाने के भी दर पे हैं।

لِنَبۡلُوَهُمۡ اَیُّهُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ۝۷

"ताकि उन्हें हम आज़मायें कि उनमें कौन बेहतर है अमल में।"

दुनिया के ये ज़ाहिरी ठाठ-बाठ दरअसल इंसान की आज़माइश के लिये पैदा किये गए हैं। एक तरफ़ दुनिया की यह सब दिलचास्पियाँ और रंगीनियाँ हैं और दूसरी तरफ़ अल्लाह और उसके अहकाम हैं। इंसान के सामने ये दोनों रास्ते खुले छोड़ कर दरअसल यह देखना मक़सूद है कि वह इनमें से किसका इंतखाब करता है। दुनिया की रंगीनियों में खो जाता है या अपने खालिक़ व मालिक को पहचानते हुए उसके अहकाम की तामील को अपनी ज़िंदगी का असल मक़सूद समझता है। इस सिलसिले में किसी शायर का ये शेर अगरचे शाने बारी तआला के लायक़ तो नहीं मगर इस मज़मून की वज़ाहत के लिये बहुत ख़ूब है:

रुख-ए-रौशन के आगे शमा रख कर वह यह कहते हैं
इधर आता है देखें या उधर परवाना जाता है!

अब जिस परवाने (इंसान) को इस शमा की ज़ाहिरी रौशनी और चमक अपनी तरफ़ खींच ले गई तो वह {فَقَدۡ خَسِرَ خُسۡرَانًا مُّبِیۡنًا} (निसा:119) के मिस्दाक़ तबाह व बरबाद हो गया और जो इसकी ज़ाहिरी और वक़्ती चकाचौंद को नज़रअंदाज़ करके हुस्ने अज़्ली और अल्लाह के जलाल व कमाल की तरफ़ मुतवज्जह हो गया वह हक़ीक़ी कामयाबी और दाइमी नेअमतों का मुस्तहिक़ ठहरा।

आयत 8

وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا
صَعِيْدًا جُرُزًا ۝۸

“और यक़ीनन हम बना कर रख देंगे जो कुछ इस (ज़मीन) पर है उसे एक चटियल मैदान।”

क़यामत बरपा होने के बाद इस ज़मीन की तमाम आराइश व ज़ेबाइश ख़त्म करके इसे एक साफ़ हमवार मैदान में तब्दील कर दिया जाएगा। ना पहाड़ और समुन्दर बाक़ी रहेंगे और ना यह हसीन व दिलकश इमारात। उस वक़्त ज़मीन की सतह एक ऐसे खेत का मंज़र पेश कर रही होगी जिसकी फ़सल कट चुकी हो और इसमें सिर्फ़ बचा-खुचा सूखा चूरा इधर-उधर बिखरा पड़ा हो।

आयात 9 से 16 तक

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ
اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝۹ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا
رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا
رَشَدًا ۝۱۰ فَضَرَبْنَا عَلٰٓي اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ
عَدَدًا ۝۱۱ ۙ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا
لَبِثُوْٓا اَمَدًا ۝۱۲ ۧ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ
اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ۝۱۳ ۖ ق

وَّرَبَطۡنَا عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ اِذۡ قَامُوۡا فَقَالُوۡا رَبُّنَا رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ لَنۡ نَّدۡعُوَا۟ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدۡ
قُلۡنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰٓؤُلَاۤءِ قَوۡمُنَا اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ
اٰلِهَةً ؕ لَوۡلَا يَاۡتُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ بِسُلۡطٰنٍۢ بَيِّنٍ ؕ فَمَنۡ اَظۡلَمُ
مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿ؕ۱۵﴾ وَاِذِ اعۡتَزَلۡتُمُوۡهُمۡ
وَمَا يَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاۡوٗۤا اِلَى الۡكَهۡفِ يَنۡشُرۡ لَكُمۡ
رَبُّكُمۡ مِّنۡ رَّحۡمَتِهٖ وَيُهَيِّئۡ لَكُمۡ مِّنۡ اَمۡرِكُمۡ مِّرۡفَقًا ﴿۱۶﴾

आयत 9

اَمۡ حَسِبۡتَ اَنَّ اَصۡحٰبَ الۡكَهۡفِ وَالرَّقِيۡمِ ۙ كَانُوۡا مِنۡ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾

“क्या तुम समझते हो कि ग़ार और रक़ीम (तख्ती) वाले असहाब हमारी बहुत अजीब निशानियों में से थे?”

अब असहाबे कहफ़ के मुताल्लिक़ उस सवाल के जवाब का आग़ाज़ हो रहा है जो यहूदे मदीना ने क़ुरैशे मक्का के ज़रिये हुज़ूर ﷺ से पूछा था। कहफ़ के मायने ग़ार के हैं और रक़ीम से मुराद वह तख्ती है जिस पर असहाबे कहफ़ के हालात लिख कर उसे ग़ार के दहाने पर लगा दिया गया था। इस निस्बत से उन्हें असहाबे कहफ़ भी कहा जाता है और असहाबे रक़ीम भी। मुराद यह है कि तुम लोग असहाबे

कहफ़ के वाक़िये को एक बहुत ग़ैर मामूली वाक़िया और हमारी एक बड़ी अजीब निशानी समझते हो, मगर तुम्हें मालूम होना चाहिये कि हमारी तख्लीक़ और सन्नाई में तो इससे भी बड़े-बड़े अजाइबात मौजूद हैं।

इस क़िस्से के बारे में अब तक जो ठोस हक़ाइक हमारे सामने आए हैं उनका ख़ुलासा यह है: हज़रत मसीह अलै. की फ़लस्तीन में बेअसत के वक़्त बज़ाहिर यहाँ एक यहूदी बादशाह की हुक्मरानी थी मगर उस बादशाह की हैसियत एक कठपुतली से ज़्यादा ना थी और अमली तौर पर यह पूरा इलाक़ा रोमन एम्पायर ही का हिस्सा था। रोमी हुक्मरान मज़हबी बुतपरस्त थे जबकि फ़लस्तीन के मक़ामी बाशिंदे अहले किताब (यहूदी) थे। हज़रत मसीह अलै. के रफ़अ-ए-समावी का वाक़िया 30 और 33 ईस्वी के लगभग पेश आया। इसके बाद यहूदियों की एक बग़ावत के जवाब में रोमी जनरल टाईटस ने 70 ईस्वी में येरुशलम पर हमला करके इस शहर को बिल्कुल तबाह व बरबाद कर दिया, हेकले सुलेमानी मस्मार कर दिया गया, यहूदियों का क़त्ले आम हुआ और जो यहूदी क़त्ल होने से बच गए उन्हें मुल्क बदर कर दिया गया। मक़ामी ईसाइयों को अगरचे इलाक़े से बेदख़ल तो ना किया गया मगर हज़रत ईसा अलै. के पेरोकार और मुवह्हिद होने की वजह से उन्हें रोमियों की तरफ़ से अक्सर ज़ुल्म व सितम का निशाना बनाया जाता रहा। इसी हवाले से रोमी बादशाह दक़यानूस (Decius) के दरबार में चंद रासिखुल अक़ीदा मुवह्हिद नौजवानों की पेशी हुई। बादशाह की तरफ़ से उन नौजवानों पर वाज़ेह किया गया कि वह अपने अक़ाइद को छोड़ कर बुतपरस्ती

इख्तियार कर लें वरना उन्हें सूली पर चढ़ा दिया जाएगा। बादशाह की तरफ़ से उन्हें इस फ़ैसले के लिये मुनासिब मोहलत दी गई। इसी मोहलत के दौरान उन्होंने शहर से निकल कर किसी ग़ार में पनाह लेने का फ़ैसला किया। जब यह लोग ग़ार में पनाह गुज़ी हुए तो अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से उन पर ऐसी नींद तारी कर दी कि वह तक़रीबन तीन सौ साल तक सोते रहे। (सूरतुल बक़रह आयत 259 में भी इसी नौइयत के एक वाक़िये का ज़िक्र है कि हज़रत उज़ेर अलै. को उनकी मौत के सौ साल बाद ज़िन्दा कर दिया गया) और उनकी नींद के दौरान उनकी करवटें बदलने का भी बाक़यदा अहतमाम रहा। जिस ग़ार में असहाबे कहफ़ सो रहे थे वह ऐसी जगह पर वाक़ेअ थी जहाँ लोगों का आना-जाना बिल्कुल नहीं था। उस ग़ार का दहाना शिमाल की जानिब था जिसकी वजह से उसके अंदर रौशनी मिनअक्स होकर तो आती थी, लेकिन बराहेरास्त रौशनी या धूप नहीं आती थी। इस तरह के गारों का एक सिलसिला अफ़सस शहर (मौजूदा तुर्की) के इलाक़े में पाया जाता है जबकि हिन्दुस्तान में (अजन्ता) में भी ऐसे ग़ार मौजूद हैं।

बादअज़ा क़ुस्तन्तीन (Constantine) नामी फ़रमानरवा ने ईसाइयत क़ुबूल कर ली और उसकी वजह से पूरी रोमन एम्पायर भी ईसाई हो गई। फ़िर 400 ईस्वी के लगभग Theodosius के अहदे हुकूमत में अल्लाह तआला ने असहाबे कहफ़ को जगाया। जागने के बाद उन्होंने अपने एक साथी को चाँदी का एक सिक्का देकर खाना लेने के लिये शहर भेजा और साथ हिदायत की कि वह मोहतात रहे,

ऐसा ना हो उनके ग़ार में छिपने की ख़बर बादशाह तक पहुँच जाए। (वह अपनी नींद को मामूल की नींद समझ रहे थे और उनके वहम व गुमान में भी नहीं था कि वह तीन सौ साल तक सोये रहे थे।) बहरहाल खाना लाने के लिये जाने वाला उनका साथी अपनी तीन सौ साल पुरानी वज़अ-क़तअ और करन्सी की वजह से पकड़ा गया और यूँ उनके बारे में तमाम मालूमात लोगों तक पहुँच गईं। जब लोगों को हक़ीक़त हाल का इल्म हुआ तो हम मज़हब होने की वजह से ईसाई आबादी की तरफ़ से उनकी बहुत इज्ज़त अफ़ज़ाई की गई। इसके बाद वह लोग ग़ार में फ़िर से सो गए या अल्लाह तआला ने उन पर मौत तारी कर दी। उन लोगों की तबई मौत के बाद ग़ार के दहाने को बंद कर दिया गया और एक तख्ती पर उन लोगों का अहवाल लिख कर उसे उस जगह पर नसब कर दिया गया। असहाबे कहफ़ का यह क़िस्सा गबन की किताब The Decline and fall of Roman Empire में भी Seven Sleepers के उन्वान से मौजूद है। इस क़िस्से का ज़िक्र चूँकि रोमन लिटरेचर में था और यहूदी इन तमाम तफ़सीलात से आगाह थे, इसलिए उन्होंने यह सवाल हुज़ूर ﷺ से इम्तेहानन पूछ भेजा था।

आयत 10

اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ

"जबकि उन नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली और उन्होंने कहा: ऐ हमारे रब! तू हमें अता फ़रमा अपने पास से रहमत और आसान फ़रमा दे हमारे लिये हमारे

اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ⑩

मामलात में आफ़ियत का रास्ता।"

अपने ख़ास ख़ज़ाना-ए-फ़ज़्ल से हमारे लिये रहमत का बंदोबस्त फ़रमा दे।

आयत 11

فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ⑪

"तो हमनी थपकी दे दी उनके कानों पर ग़ार में कई साल के लिये।"

यानि हमने ग़ार के अंदर मुतअद्दिद साल तक उन्हें सुलाए रखा। यहाँ पर यह बहस नहीं छेड़ी गई कि कितने साल तक उन्हें नींद की हालत में रखा गया।

आयत 12

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ⑫

"फ़िर हमने उन्हें उठाया ताकि हम देखें कि दो गिरोहों में से किसको बेहतर मालूम है कि कितना अरसा वह वहाँ रहे थे।"

इन दो गिरोहों से कौन लोग मुराद हैं, इसका ज़िक्र आगे आएगा।

आयत 13

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ

"हम सुना रहे हैं आपको उनका क़िस्सा हक़ के साथ।"

यह वाक़िया जैसे वक़ुअ पज़ीर हुआ था बिल्कुल वैसे ही हम आपको बिला कम व कास्त सुनाने जा रहे हैं।

اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ڰ ؀

"वह चंद नौजवान थे जो ईमान लाए अपने रब पर और हमने ख़ूब बढ़ाया था उन्हें हिदायत में।"

आयत 14

وَّرَبَطْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا

"और हमने मज़बूत कर दिया उनके दिलों को जब वह (बादशाह के सामने) खड़े हुए"

فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ

"तो उन्होंने कहा कि हमारा रब तो वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है, हम हरगिज़ नहीं पुकारेंगे उसके सिवा किसी और को मअबूद, (अगर ऐसा

نَّدۡعُوَاۡ مِنۡ دُوۡنِہٖۤ اِلٰـہًا لَّقَدۡ قُلۡنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾

हुआ) तब तो हम बहुत गलत बात कहेंगे।"

जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलै. ने नमरूद के दरबार में डट कर हक़ बात कही थी वैसे ही इन नौजवानों ने भी अलल ऐलान कहा कि हम रब्बे कायनात को छोड कर किसी देवी या देवता को अपना रब मानने को तैयार नहीं हैं।

आयत 15

هٰۤؤُلَآءِ قَوۡمُنَا اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِہٖۤ اٰلِـہَۃً ؕ

"हमारी इस क़ौम ने बना लिये हैं उसके सिवा दूसरे मअबूद।"

لَوۡلَا یَاۡتُوۡنَ عَلَیۡہِمۡ بِسُلۡطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ

"तो क्यों नहीं पेश करते वह उनके बारे में कोई वाज़ेह दलील?"

अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल शुदा कोई दलील या सनद वह अपने इस दावे के साथ क्यों पेश नहीं करते?

فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا ﴿ؕ۱۵﴾

"तो उस शख्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा!"

शाही दरबार में इस तुंद व तेज़ मकालमे के बाद जब उन्हें चंद दिन की मोहलत के साथ अपना दीन छोड़ने या मौत

का सामना करने के बारे में फ़ैसला करने का इख्तियार दे दिया गया तो वह आपस में यूँ मशवरा करने लगे:

आयत 16

وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَأْوٗا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾

"और अब जबकि तुमने ख़ुद को उन लोगों से और जिनकी वह अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हैं, उनसे अलैहदा कर लिया है तो अब किसी ग़ार में पनाह ले लो, तुम्हारा रब फैला देगा तुम्हारे लिये अपनी रहमत और तुम्हारे मामले में तुम्हारे लिये सहुलत का सामान पैदा फ़रमा देगा।"

आयात 17 से 26 तक

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۭ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ڰ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ
الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ڰ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ
بِالْوَصِيْدِ ۭ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا
وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ
لِيَتَسَاۗءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۭ قَالَ قَاۗىِٕلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۭ
قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ
بِمَا لَبِثْتُمْ ۭ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى
الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ
مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ
اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ
مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا
عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا
رَيْبَ فِيْهَا ڔ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا
ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۭ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ
غَلَبُوْا عَلٰٓي اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ
سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ
وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۭ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا
يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ڣ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَاۗءً ظَاهِرًا ۠
وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ٢٢ وَلَا تَقُوْلَنَّ
لِشَايْءٍ اِنِّىْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ٢٣ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۡ
وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ
لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ٢٤ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ
مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ٢٥ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ
وَاَسْمِعْ ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ
حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ٢٦

आयत 17

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ

"और तुम सूरज लो देखते कि जब वह तुलूअ होता तो उनकी ग़ार से दाहिनी तरफ़ हट जाता"

وَإِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

"और जब वह गुरूब होता तो बाएँ जानिब उनसे कन्नी कतरा जाता"

यानि उस ग़ार का मुँह शिमाल की तरफ़ था जिसकी वजह से सूरज की बराहेरास्त रौशनी या धूप उसमें दिन के किसी वक़्त भी नहीं पड़ती थी। हमारे यहाँ भी धूप और साए का यही असूल कारफ़रमा है। सूरज किसी भी मौसम में शिमाल की तरफ़ नहीं जाता। इसी असूल के तहत कारखानों वगैरह की बड़ी-बड़ी इमारात में यहाँ north light shells का अहतमाम किया जाता है ताकि ऐसे shells से रौशनी तो बिलडिंग में आए मगर धूप बराहेरास्त ना आए।

وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۭ

"और वह उसकी खुली जगह में (लेटे हुए) थे।"

यानि ग़ार अंदर से काफ़ी कुशादा थी और असहाबे कहफ़ उसके अंदर खुली जगह में सोए हुए थे।

ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ

"यह अल्लाह की निशानियों में से है।"

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿17﴾

“जिसे अल्लाह हिदायत देता है वही हिदायत याफ़ता होता है, और जिसे वह गुमराह कर दे तो उसके लिये तुम नहीं पाओगे कोई मददगार राह पर लाने वाला।”

आयत 18

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ڰ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ڰ

“और (अगर तुम उन्हें देखते तो) तुम समझते कि वह जाग रहे हैं हालाँकि वह सो रहे थे, और हम उनकी करवटें भी बदलते रहे दायें और बायें”

गोया अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को उनकी देख-भाल के लिये नर्सिंग ड्यूटी पर मामूर कर रखा था, जो वक़्फ़े-वक़्फ़े से उनकी करवटें बदलते रहे ताकि सालहा-साल तक एक ही पहलु पर लेटे रहने से वह bed sores जैसी किसी तक़लीफ़ से महफ़ूज़ रहें।

وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۭ

“और उनका कुत्ता अपने दोनों हाथ फैलाए हुए (बैठा) था देहलीज़ पर”

इस दौरान उनका कुत्ता अपनी अगली दोनों टाँगें सामने फैला कर कुत्तों के बैठने के मखसूस अंदाज़ में ग़ार के दहाने पर बैठा रहा।

لَوِ اطَّلَعۡتَ عَلَيۡهِمۡ لَوَلَّيۡتَ مِنۡهُمۡ فِرَارًا وَّلَمُلِئۡتَ مِنۡهُمۡ رُعۡبًا ۝١٨

"अगर तुम उन पर झाँकते तो उनसे पीठ फ़ेर कर भाग जाते और तुम पर उनकी तरफ़ से हैबत तारी हो जाती।"

एक वीराने में अँधेरी ग़ार और उसके सामने अपने बाज़ू फैलाए बैठा हुआ एक खौफ़नाक कुता! यह एक ऐसा मंज़र था जिसे जो भी देखता डर के मारे वहाँ से भागने में ही आफ़ियत समझता।

आयत 19

وَ كَذٰلِكَ بَعَثۡنٰهُمۡ لِيَتَسَآءَلُوۡا بَيۡنَهُمۡ ؕ

"और इसी तरह हमने उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक-दूसरे से पूछें।"

قَالَ قَآئِلٌ مِّنۡهُمۡ كَمۡ لَبِثۡتُمۡ ؕ

"उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि तुम कितना अरसा यहाँ रहे होगे?"

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ

"कुछ बोले कि हम रहे हैं एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा। कुछ (दूसरे) बोले कि तुम्हारा रब ख़ूब जानता है तुम कितना अरसा रहे हो!"

जब कुछ साथियों ने अपनी राय का इज़हार किया कि उन्होंने एक दिन या उससे कुछ कम वक़्त नींद में गुज़ारा है तो उनके जवाब पर कुछ दूसरे साथी बोल पड़े कि इस बहस को छोड़ दो, अल्लाह को सब पता है कि तुम लोग यहाँ कितना अरसा सोए रहे हो।

فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ

"अब तुम भेजो अपने में से एक (साथी) को अपने इस चाँदी के सिक्के के साथ शहर की तरफ़"

فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ

"तो वह देखे कि शहर के किस हिस्से से ज़्यादा पाकीज़ा खाना मिलता है और वह वहाँ से तुम्हारे लिये कुछ खाना ले आए।"

ज़ाहिर है कि अपने ऐतक़ाद और नज़रिये के मुताबिक़ उन्हें पाकीज़ा खाना ही चाहिए था।

وَلْيَتَلَطَّفْ

"और वह नरमी का मामला करे"

यानि जो साथी खाना लेने के लिये जाए वह लोगों से बात-चीत और लेन-देन करते हुए ख़ुसूसी तौर पर अपना रवैय्या नरम रखे। ऐसा ना हो कि वह किसी से झगड़ पड़े और इस तरह हम सबके लिये कोई मसला खड़ा हो जाए।

यहाँ पर नोट कर लीजिए कि क़ुरान के हुरूफ़ की गिनती के ऐतबार से लफ्ज़ وَلْيَتَلَطَّفْ की "ت" पर क़ुरान का निस्फ़े अव्वल पूरा हो गया है और इसके बाद लफ्ज़ "ل" से निस्फ़े सानी शुरू हो रहा है।

وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ⑲

"और वह आगाह ना कर दे तुम्हारे बारे में किसी को।"

आयत 20

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ⑳

"क्योंकि अगर उन्होंने तुम पर क़ाबू पा लिया तो वह तुम्हे संगसार कर देंगे या तुम्हें वापस ले जायेंगे अपने दीन में, और तब तो तुम कभी भी फ़लाह नहीं पा सकोगे।"

अगर उन्होंने तुम्हें मजबूर कर दिया कि तुम फ़िर से उनका दीन क़ुबूल कर लो तो ऐसी सूरत में तुम हमेशा के लिये हिदायत से दूर हो जाओगे।

आयत 21

"और इस तरह हमने मुत्तलाअ कर दिया (लोगों को) उन पर" وَكَذٰلِكَ اَعۡثَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ

चुनाँचे असहाबे कहफ़ का एक साथी जब खाना लेने के लिये शहर गया तो अपने लिबास, हुलिये और करन्सी वगैरह के बाइस फ़ौरी तौर पर पहचान लिया गया कि वह मौजूदा ज़माने का इंसान नहीं है। फ़िर जब उससे तफ़तीश की गई तो सारा राज़ खुल गया। उस वक़्त अगरचे इस वाक़िये को तीन सौ साल से ज़ाएद का अरसा गुज़र चुका था मगर इसके बावजूद यह बात अभी तक लोगों के इल्म में थी कि फलां बादशाह के डर से इस शहर से सात आदमी कहीं रूपोश हो गए थे और पूरी ममलिकत में तलाश बसयार के बावजूद कहीं उनका सुराग ना मिल सका था। इसी तरह यह बात भी लोगों के इल्म में थी कि इस पूरे वाक़िये को एक तख्ती पर लिख कर रिकॉर्ड के तौर पर शाही खज़ाने में महफ़ूज़ कर लिया गया था। लिहाज़ा असहाबे कहफ़ के साथी से मिलने वाली मालूमात की तस्दीक़ के लिये जब मज़कूरह तख्ती रिकॉर्ड से निकलवाई गई तो उस पर इस वाक़िये की तमाम तफ़सीलात लिखी हुई मिल गईं और यूँ ये वाक़िया पूरी वज़ाहत के साथ लोगों के सामने आ गया।

لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ

"ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़यामत के बारे में हरगिज़ कोई शक नहीं।"

ये वाक़िया गोया बाअसे बाद अल मौत के बारे में एक वाज़ेह दलील था कि जब अल्लाह तआला ने तीन सौ साल तक इन लोगों को सुलाए रखा और फ़िर उठा खड़ा किया तो उसके लिये मुर्दों का दोबारा ज़िन्दा करना क्यों कर मुमकिन नहीं होगा?

اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ

"जब वह लोग आपस में झगड़ रहे थे उनके मामले में"

इसके बाद असहाबे कहफ़ तो अपनी ग़ार में पहले की तरह सो गए और अल्लाह तआला ने उन पर हक़ीक़ी मौत वारिद कर दी, लेकिन लोगों के दरमियान इस बारे में इख्तलाफ़ पैदा हो गया कि उनके बारे में हतमी तौर पर क्या मामला किया जाए।

فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۭ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۭ

"चुनाँचे कुछ लोगों ने कहा कि तामीर कर दो इन पर एक इमारत (बतौर यादगार), इनका रब इनसे बेहतर वाक़िफ़ है।"

कुछ लोगों ने राय दी कि इस मामले की अहमियत के पेशे नज़र यहाँ एक शानदार यादगार तामीर की जानी चाहिये।

قَالَ الَّذِيۡنَ غَلَبُوۡا عَلٰٓى اَمۡرِهِمۡ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيۡهِمۡ مَّسۡجِدًا ۝٢١

"जो लोग ग़ालिब आए अपनी राय के ऐतबार से उन्होंने कहा कि हम बनाएँगे इन (की ग़ार) पर एक मस्जिद।"

आयत 22

سَيَقُوۡلُوۡنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ‌ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ خَمۡسَةٌ سَادِسُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ رَجۡمًۢا بِالۡغَيۡبِ‌ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ سَبۡعَةٌ وَّثَامِنُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ‌ؕ

"अब यह लोग कहेंगे कि वह तीन थे, उनका चौथा उनका कुत्ता था, और कुछ लोग कहेंगे कि वह पाँच थे, उनका छठा उनका कुत्ता था, ये सब तीर तुक्के चला रहे हैं अँधेरे में, और कुछ लोग कहेंगे कि वह सात थे और उनका आठवाँ उनका कुत्ता था।"

قُلۡ رَّبِّىۡۤ اَعۡلَمُ بِعِدَّتِهِمۡ مَّا يَعۡلَمُهُمۡ اِلَّا قَلِيۡلٌ ۖ

"आप कहिये: मेरा रब बेहतर जानता है उनकी तादाद को, नहीं जानते (उनके मामले) को मगर बहुत थोड़े लोग।"

क़ुरान मजीद में उनकी तादाद के बारे में सराहत तो नहीं की गई मगर अक्सर मुफ़स्सरीन के मुताबिक़ बैनुल सतूर में आख़री राय के दुरुस्त होने के शवाहिद मौजूद हैं। इसमें एक नुक्ता तो ये है कि पहले फिक़रे {ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ} और दूसरे फिक़रे {خَمۡسَةٌ سَادِسُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ} के दरमियान में "و" नहीं है, जबकि तीसरे फिक़रे में {سَبۡعَةٌ وَّثَامِنُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ} के दरमियान में "و" मौजूद है। चुनाँचे पहले दो कलिमात के मुक़ाबले में तीसरे कलमे के बयान में "و" की वजह से ज़्यादा ज़ोर है।

इस ज़िमन में दूसरा नुक्ता यह है कि जब वह लोग जागे थे तो उनमें से एक ने सवाल किया था: {كَمۡ لَبِثۡتُمۡ} (आयत 19)कि तुम यहाँ कितनी दर सोए रहे हो? इस सवाल का जवाब क़ुरान हकीम में बा-अल्फ़ाज़ नक़ल हुआ है: {قَالُوۡا لَبِثۡنَا يَوۡمًا اَوۡ بَعۡضَ يَوۡمٍ} (आयत 19) उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से कुछ कम अरसा तक सोए रहे हैं। यहाँ पर قَالُوۡ चूँकि जमा का सीगा है इसलिये यह जवाब देने वाले कम अज़ कम तीन लोग थे, जबकि इस सवाल के जवाब में उनके जिन साथियों ने दूसरी राय दी थी वह भी कम अज़ कम तीन ही थे, क्योंकि उनके लिये भी قَالُوۡ जमा का सीगा ही इस्तेमाल हुआ है: {قَالُوۡا رَبُّكُمۡ اَعۡلَمُ بِمَا لَبِثۡتُمۡ}। इस तरह उनकी तादाद सात ही दुरुस्त मालूम होती है। यानि एक पूछने वाला, तीन लोग एक राय देने वाले और उनके जवाब में तीन लोग दूसरी राय का इज़हार करने वाले।

इसके अलावा क़दीम रोमन लिट्रेचर में भी जहाँ इनका ज़िक्र मिलता है वहाँ इनकी तादाद सात ही बताई गई है। क़ब्ल अज़ गबन की किताब का हवाला भी दिया जा चुका

है जिसमें Seven Sleepers का ज़िक्र है। लेकिन यहाँ जिस बात की तरफ़ ख़ास तौर पर तव्वजो दिलाई गई है वह यह है कि इस मामले में बहस करने और झगड़ने की ज़रूरत ही नहीं है:

فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۖ وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾

"तो ऐ (नबी ﷺ!) आप इनके बारे में झगड़ा मत करें सिवाय सरसरी बहस के, और ना ही आप पूछिए इनके बारे में इनमें से किसी से।"

यानि जो बात दावते दीन और इक़ामते दीन के हवाले से अहम ना हो उसमें बे-मक़सद छान-बीन करना और बहस व नज़ाअ में पड़ना, गोया वक़्त ज़ाया करने और अपनी जद्दो-जहद को नुक़सान पहुँचाने के मुतरादिफ़ है।

आयत 23

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

"और किसी चीज़ के बारे में कभी ये ना कहा करें कि मैं ये काम कल ज़रूर कर दूँगा।"

इस आयत में एक बहुत अहम वाक़िये का हवाला है। जब अहले मक्का ने रसूल अल्लाह ﷺ से सवालात किए तो आपने फ़रमाया कि मैं आप लोगों को इन सवालात के जवाबात कल दे दूँगा। इस मौक़े पर आप ﷺ ने सहवन

"इंशा अल्लाह" नहीं फ़रमाया। इसके बाद कई रोज़ तक वही ना आई। ये सूरते हाल आपके लिए इन्तहाई परेशान कुन थी। मुखालफ़ीन खुशी में तालियाँ पीट रहे होंगे, आपको नाकामी के ताने दे रहे होंगे और आपको ये सब कुछ बरदास्त करना पड़ रहा होगा। इससे अंदाज़ा होता है कि अल्लाह तआला अपने महबूब को कैसी-कैसी सख्त आज़माइशों से दो-चार करता है: "*जिनके रुतबे हैं सवा उनकी सवा मुश्किल है!*"

आम लोग अपनी रोज़मर्रा की गुफ्तगू में कैसी-कैसी ला-यानि बातें करते रहते हैं लेकिन अल्लाह के यहाँ उनकी पकड़ नहीं होती, इसलिये कि वह अल्लाह की यहाँ अहम नहीं होते, मगर यहाँ एक इन्तहाई मुक़र्रब हस्ती से सहवन एक कलमा अदा होने से रह गया तो बावजूद इसके कि मामला बेहद हस्सास था, वहि रोक ली गई। बिलआख़िर कई रोज़ के बाद जब अल्लाह को मंज़ूर हुआ तो हज़रत जिब्राइल अलै. सवालात के जवाबात भी लेकर आए और साथ ये हिदायत भी कि कभी किसी चीज़ के बारे में यूँ ना कहें कि मैं कल ये करूँगा:

आयत 24

"मगर ये कि अल्लाह चाहे!"

اِلَّآ اَنۡ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۫

यानि मुस्तक़बिल के बारे में जब भी कोई बात करें तो "इन्शा अल्लाह" ज़रूर कहें कि अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं यूँ करूँगा। अल्लाह तआला का मुसलमानों पर ये ख़ुसूसी फ़ज़ल है कि उन्हें अपनी मआशरती ज़िंदगी में रोज़मर्रा के

मामुलात के लिये ऐसे कलिमात सिखाए गए जिनमें तौहीद कूट-कूट कर भरी हुई है। आपने कोई खूबसूरत चीज़ देखी जिससे आपका दिल खुश हुआ, आपने कहा: सुब्हान अल्लाह! गोया आपने इक़रार किया कि ये इस चीज़ का कमाल नहीं और ना ही ये चीज़ ब-ज़ाते खुद लायक़-ए-तारीफ़ है बल्कि तारीफ़ तो अल्लाह की है जिसने ये खूबसूरत चीज़ बनाई। आपकी कोई तकलीफ़ दूर हुई तो मुँह से निकला: अल्हम्दुलिल्लाह! यानि जो भी मुश्किल आसान हुई अल्लाह की मदद, उसकी मेहरबानी और उसके हुक्म से हुई, लिहाज़ा शुक्र भी उसी का अदा किया जाएगा। आप अपने घर में दाख़िल हुए, अहलो अयाल को खुश व ख़ुर्रम पाया, आपने कहा: माशा अल्लाह! कि इसमें मेरा या किसी और का कोई कमाल नहीं, ये सब अल्लाह की मर्ज़ी और मशीयत से है। इसी तरह मुस्तक़बिल में किसी काम के करने के बारे में इज़हार किया तो साथ इंशाअल्लाह कहा। यानि मेरा इरादा तो यूँ है मगर सिर्फ़ मेरे इरादे से क्या होता है, हक़ीक़त में ये काम तभी होगा और मैं इसे तभी कर पाउँगा जब अल्लाह को मंज़ूर होगा, क्योंकि अल्लाह की मशीयत और मर्ज़ी के बगैर कुछ नहीं हो सकता। गोया इन कलिमात के ज़रिये क़दम क़दम पर और बात-बात में हमें तौहीद का सबक़ याद दिलाया जाता है। अल्लाह के इल्म, उसके हुक्म, उसके इख्तियार व इक़तदार, उसकी क़ुदरत, उसकी मशीयत के मुताल्लिक़ और फ़ाएक़ होने के इक़रार की तरगीब दी जाती है। इनमें से ज़्यादा तर कलिमात (अल्हम्दुलिल्लाह, इंशाअल्लाह, माशा अल्लाह) इस सूरत में मौजूद हैं।

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ

“और अपने रब को याद कर लिया कीजिये जब आप भूल जायें”

अगर किसी वक़्त भूल जायें तो याद आने पर दोबारा अल्लाह की तरफ़ अपना ध्यान लगा लीजिये।

وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۲۴

“और कहिये: हो सकता है कि मेरा रब मेरी रहनुमाई करदे इससे बेहतर भलाई की तरफ़।”

यानि किसी भी काम के लिये कोशिश करते हुए इंसान को “तफ़वीज़ुल अम्र इलाल्लाह” की कैफ़ियत में रहना चाहिये कि अगर अल्लाह को मंज़ूर हुआ तो मैं इस कोशिश में कामयाब हो जाऊँगा, वरना हो सकता है मेरा रब मेरे लिये इससे भी बेहतर किसी काम के लिये अस्बाब पैदा फ़रमा दे। गोया इंसान अपने तमाम मामलात हर वक़्त अल्लाह तआला के सुपुर्द किये रखे:
सुपुर्दम बतो माया-ए-ख्वीश रा, तू दानी हिसाबे कम व बेशरा!

आयत 25

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝۲۵

"और वह रहे अपनी ग़ार में तीन सौ बरस और इसके ऊपर नौ बरस।"

यानि ग़ार में उनके सोने की मुद्दत शम्सी कैलेंडर में तीन सौ साल जबकि क़मरी कैलेंडर के मुताबिक़ तीन सौ नौ साल बनती है।

आयत 26

قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ

"आप कहिये कि अल्लाह बेहतर जानता है उसमें जितना (अरसा) वह रहे"

यानि इस बहस में भी पड़ने की ज़रूरत नहीं कि वह ग़ार में कितना अरसा सोए रहे। इसका जवाब भी आप इनको यही दें कि इस मुद्दत के बारे में भी अल्लाह ही बेहतर जानता है।

لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ

"उसी के लिये है आसमानों और ज़मीन का गैब। क्या ही ख़ूब है वह उसको देखने वाला और क्या ही ख़ूब है वह सुनने वाला!"

مَا لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ وَّلِیٍّ ۫ وَّلَا یُشۡرِكُ فِیۡ حُكۡمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾

"उसके सिवा उनका कोई मददगार नहीं, और वह शरीक़ नहीं करता अपने हुक्म में किसी को भी।"

उसके सिवाए उनका कोई साथी, कारसाज़, मददगार, हिमायती और पुश्त पनाह नहीं है। लफ्ज़ "वली" इन सब मायनों का इहाता करता है।

वह अपने इख्तियार और अपनी हाकिमियत के हक़ में किसी दूसरे को शरीक नहीं करता। यह तैहिदे हाकिमियत है। इस बारे में सूरह युसुफ़ (आयत 40, 67) में इस तरह इरशाद हुआ: {اِنِ الۡحُكۡمُ اِلَّا لِلّٰهِ} "इख्तियारे मुतलक़ तो सिर्फ़ अल्लाह ही का है।" जबकि सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत में यूँ फ़रमाया गया: {وَّلَمۡ یَكُنۡ لَّهٗ شَرِیۡكٌ فِی الۡمُلۡكِ} "और उसका कोई शरीक नहीं है बादशाहत में।"

आयात 27 से 31 तक

وَاتۡلُ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡكَ مِنۡ كِتَابِ رَبِّكَ ۚؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ۫ وَلَنۡ تَجِدَ مِنۡ دُوۡنِهٖ مُلۡتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصۡبِرۡ نَفۡسَكَ مَعَ الَّذِیۡنَ یَدۡعُوۡنَ رَبَّهُمۡ بِالۡغَدٰوةِ وَالۡعَشِیِّ یُرِیۡدُوۡنَ وَجۡهَهٗ وَلَا تَعۡدُ عَیۡنٰكَ عَنۡهُمۡ ۚ تُرِیۡدُ زِیۡنَةَ

الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ وَلَا تُطِعۡ مَنۡ اَغۡفَلۡنَا قَلۡبَهٗ عَنۡ ذِكۡرِنَا
وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمۡرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَقُلِ الۡحَقُّ مِنۡ
رَّبِّكُمۡ ۖ فَمَنۡ شَآءَ فَلۡيُؤۡمِنۡ وَّمَنۡ شَآءَ فَلۡيَكۡفُرۡ ۙ اِنَّاۤ
اَعۡتَدۡنَا لِلظّٰلِمِيۡنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمۡ سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنۡ
يَّسۡتَغِيۡثُوۡا يُغَاثُوۡا بِمَآءٍ كَالۡمُهۡلِ يَشۡوِى الۡوُجُوۡهَ ؕ
بِئۡسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتۡ مُرۡتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ
اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيۡعُ اَجۡرَ مَنۡ
اَحۡسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ جَنّٰتُ عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ
مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ يُحَلَّوۡنَ فِيۡهَا مِنۡ اَسَاوِرَ مِنۡ
ذَهَبٍ وَّيَلۡبَسُوۡنَ ثِيَابًا خُضۡرًا مِّنۡ سُنۡدُسٍ
وَّاِسۡتَبۡرَقٍ مُّتَّكِـِٕيۡنَ فِيۡهَا عَلَى الۡاَرَآئِكِ ؕ نِعۡمَ
الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتۡ مُرۡتَفَقًا ﴿۳۱﴾

आयत 27

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ

"और (ऐ नबी ﷺ!) आप तिलावत कीजिये जो आपकी तरफ़ वहि की गई है आपके रब की किताब में से।"

यानि इस वक़्त आप बहुत मुश्किल सूरते हाल का सामना कर रहे हैं। इस कैफ़ियत में आपको सब्र व इस्तक़ामत की सख्त ज़रूरत है: {وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ} (सूरह नहल: 127) "और (ऐ नबी ﷺ!) आप सब्र कीजिये और आपका सब्र तो अल्लाह के सहारे पर ही है।" यह सहारा आपको अल्लाह के साथ अपना क़ल्बी ताल्लुक़ और ज़हनी रिश्ता अस्तवार करने से मयस्सर होगा और ये ताल्लुक़ मज़बूत करने का सबसे मौअस्सर ज़रिया क़ुरान मजीद की तिलावत है। तमस्सक बिल क़ुरान का ये मज़मून सूरतुल अनकबूत में (इक्कीसवें पारे के आग़ाज़ में) दोबारा आएगा। हक़ व बातिल की कशमकश में जब भी कोई मुश्किल वक़्त आया तो रसूल अल्लाह ﷺ को ख़ुसूसी तौर पर तमस्सक बिल क़ुरान की हिदायत की गई, और आपकी वसातत से तमाम मुसलमानों को हुक्म दिया गया कि वह क़ुरान की तिलावत को अपना मामूल बनायें, क़ुरान के साथ अपना ताल्लुक़ मज़बूत बनाने के लिये ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त इसके साथ सर्फ़ करें। इसी तरह वह मुश्किलात व शदाइद को बरदाश्त करने और अपने दुश्मनों का मुक़ाबला करने के क़ाबिल हो सकेंगे।

لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

"उसकी बातों को बदलने वाला कोई नहीं है, और आप नहीं पायेंगे उसके सिवा कोई जाए पनाह।"

यक़ीनन यह रास्ता बहुत कठिन है और इस रास्ते के मुसाफिरों ने सख्तियों को बहरहाल बरदाश्त करना है। ये अल्लाह का क़ानून है जो किसी के लिये तब्दील नहीं किया जाता। इस मुहिम में वाहिद सहारा अल्लाह की मदद और नुसरत है। चुनाँचे अगर आपको कहीं पनाह मिलेगी तो अल्लाह ही के दामन में मिलेगी, उस दर के सिवा कोई जाए पनाह नहीं है। अल्लामा इक़बाल ने इसी मज़मून की तर्जुमानी अपने इस शेर में की है:

ना कहीं जहाँ में अमाँ मिली, जो अमाँ मिली तो कहाँ मिली
मेरे जुर्मे खाना ख़राब को, तेरे अफ़व बन्दा नवाज़ में!

आयत 28

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

"और अपने आपको रोके रखिये उन लोगों के साथ जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह व शाम"

यह बिलाल हब्शी, अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम, अम्मार बिन यासिर और खब्बाब रज़ि. जैसे लोग अगरचे मुफ़लिस और नादार हैं मगर अल्लाह की नज़र में बहुत अहम हैं। आप इन लोगों की रफ़ाक़त तो गनीमत समझिये, और अपने दिल को इन लोगों की मईयत (साथ) पर मुतमईन कीजिये।

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

"वह अल्लाह की रज़ा के तालिब हैं और आपकी निगाहें उनसे हटने ना पायें, (जिससे लोगों को ये गुमान होने लगे कि) आप दुनियवी ज़िंदगी की आराईश व ज़ेबाईश चाहते हैं!"

इन गुलामों और बे-आसरा लोगों से आपकी तवज्जो हट कर कहीं मक्का के सरदारों और अमराअ की तरह ना होने पाए, जिससे लोगों को ये गुमान हो कि आप भी दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत ही को अहमियत देते हैं। लिहाज़ा वलीद बिन मुगीराह बज़ाहिर कितना ही बा-असर और साहिबे सरवत सही, आप अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम रज़ि. को नज़रअंदाज़ करके उसे हरगिज़ अहमियत ना दें। तर्जुमे के ऐतबार से ये आयत मुश्किल आयात में से है। यहाँ अल्फ़ाज़ के ऐन मुताबिक़ तर्जुमा मुमकिन नहीं। हुज़ूर ﷺ की ये शान हरगिज़ ना थी कि आप ﷺ की नज़रें गुरबाअ से हट कर अमराअ की तरफ़ उठतीं। चुनाँचे इन अल्फ़ाज़ से यही मफ़हूम समझ में आता है कि दरअसल आपको ये बताना मक़सूद है कि आप दावत व तबलीग की गर्ज़ से भी इन अमराअ की तरफ़ इस अंदाज़ में इलतफ़ात ना फ़रमाएँ

जिससे किसी को मुगालता हो कि आप ﷺ की निगाह में दुनियवी माल व असबाब की भी कुछ वक़्अत और अहमियत है। सूरतुल हिज्र में यही मज़मून इस तरह बयान हुआ है: {لَا تَمُدَّنَّ عَيۡنَيۡكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعۡنَا بِهِۦٓ أَزۡوَٰجٗا مِّنۡهُمۡ وَلَا تَحۡزَنۡ عَلَيۡهِمۡ وَٱخۡفِضۡ جَنَاحَكَ لِلۡمُؤۡمِنِينَ} "आप आँख उठा कर भी ना देखें उस माल व मताअ की तरफ़ जो हमने इनके मुख्तलिफ़ गिरोहों को दे रखा है और आप इन (अमराअ) के बारे में फ़िक्रमंद ना हों और अहले ईमान के लिये अपने बाज़ू झुका कर रखें!"

किसी भी दाई-ए-हक़ के लिये ये मामला बहुत नाज़ुक होता है। मआशरे के ऊँचे तबक़े के लोगों का बहरहाल अपना एक हल्क़ा असर होता है। उनमें से अगर कोई अहले हक़ की सफ़ में शामिल होता है तो वह अकेला बहुत से अफ़राद के बराबर शुमार होता है और उसकी वजह से कई दूसरे लोग खुद-ब-खुद खिंचे आते हैं और पहले से मौजूद लोगों के लिये भी ऐसे शख्स की शमूलियत तक़वियत और इत्मिनान का बाइस होती है। जैसे हुज़ूर ﷺ ने अल्लाह तआला से अपनी इस ख्वाहिश का इज़हार किया था कि उमर बिन खत्ताब रज़ि. या उमर बिन हश्शाम (अबु जहल) में से किसी एक को ज़रूर मेरी झोली में डाल दे! इस दोनों में से कोई एक ईमान ले आए। ज़ाहिर है कि इन जैसी बा-असर शख्सियात में से किसी का ईमान लाना इस्लाम के लिये बाइसे तक़वियत होगा और उसकी रफ़ाक़त से इन कमज़ोर मुसलमानों को सहारा मिलेगा जिन पर क़ाफ़िया-ए-हयात तंग हुआ जा रहा है। और फिर वाक़िअतन ऐसा हुआ भी कि हज़रत उमर और हज़रत हमज़ा रज़ि. के ईमान लाने के बाद

मक्का में कमज़ोर मुसलमानों पर क़ुरैश के ज़ुल्म व तअदी में काफ़ी हद तक कमी आ गई।

बहरहाल इस सिलसिले में मअरूज़ी हक़ाएक़ (objective truth) किसी भी दाई को इस तरफ़ रागिब करते हैं कि मआशरे के मतमूल तबक़ों और अरबाबे इख्तियार व इक़तदार तक पैग़ामे हक़ तरजीही बुनियादों पर पहुँचाया जाए और उन्हें अपनी तहरीक में शामिल करने के लिये तमाम मुमकिना वसाइल बरवेकार लाए जाएँ। मगर दूसरी तरफ़ इस हिकमते अमली से तहरीक के नादार और आम अरकान को ये तअस्सुर मिलने का अंदेशा होता है कि उन्हें कम हैसियत समझ कर नज़र अंदाज़ किया जा रहा है और इस तरह उनकी हौसला शकनी होने का इम्कान पैदा होता है। इस मामले का एक पहलु ये भी है कि जब कोई दाई-ए-हक़ असर व रसूख़ के हामिल अफ़राद की तरफ़ तरजीही अंदाज़ में मुतवज्जा होगा तो अवाम में उसकी ज़ात उसकी तहरीक के बारे में ये तअस्सुर उभरने का अंदेशा होगा कि ये लोग भी अमराअ और अरबाबे इख्तियार से मरऊब हैं और इनके यहाँ भी दुनियवी ठाठ-बाठ को ही तरजीह दी जाती है। चुनाँचे दौलत मंद और असर व रसूख के हामिल अफ़राद तक दीन की दावत को फ़ैलाने की कोशिश के साथ-साथ इस सिलसिले में मज़कूरा बाला दो अवामिल के मनफ़ी असरात से बचना भी निहायत ज़रूरी है। चुनाँचे हुज़ूर ﷺ को इस आयत में हुक्म दिया जा रहा है कि आप इस सिलसिले में अहतियात करें, कहीं लोग ये तअस्सुर ना ले लें कि मोहम्मद (ﷺ) के यहाँ भी दौलतमंद लोगों ही को ख़ुसूसी अहमियत दी जाती है।

وَلَا تُطِعۡ مَنۡ اَغۡفَلۡنَا قَلۡبَهٗ عَنۡ ذِكۡرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمۡرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾

"और मत कहना मानिये ऐसे शख्स का जिसका दिल हमने अपनी याद से ग़ाफिल कर दिया है और जो अपनी ख्वाहिशात के पीछे पड़ा है और उसका मामला हद से मुतजाविज़ हो चुका है।"

ये बात मुतअद्दिद बार बयान हो चुकी है कि कुफ्फ़ारे मक्का रसूल अल्लाह ﷺ के साथ मदाहनत पर असर थे और वह आपके साथ कुछ दो और कुछ लो कि बुनियाद पर मुज़ाकरात करना चाहते थे। इस सिलसिले में सरदाराने क़ुरैश की तरफ़ से आप पर शदीद दबाव था। इस पसमंज़र में यहाँ फ़िर मुतनब्बा (ख़बरदार) किया जा रहा है कि जिन लोगों के दिलों को हमने अपनी याद से गाफिल और महरूम कर दिया है आप ऐसे लोगों की बातों की तरफ़ ध्यान भी मत दीजिए।

आयत 29

وَقُلِ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّكُمۡ ۚ فَمَنۡ شَآءَ فَلۡيُؤۡمِنۡ وَّمَنۡ شَآءَ فَلۡيَكۡفُرۡ ۙ

"और आप कह दीजिये कि यही हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से, तो अब जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे।"

कुफ्फ़ारे मक्का की तरफ़ से कोई दरमियानी रास्ता निकालने की कोशिशों के जवाब में यहाँ हुज़ूर ﷺ की ज़बाने

मुबारक से वाज़ेह और दो टूक अंदाज़ में ऐलान कराया जा रहा है कि तुम्हारे रब की तरफ़ से जो हक़ मेरे पास आया है वह मैंने तुम लोगों के सामने पेश कर दिया है। अब तुम्हारे सामने दो ही रास्ते हैं, इसे मन-व-अन क़ुबूल कर लो या इसे रद्द कर दो। लेकिन याद रखो इसमें कुछ लो और कुछ दो के असूल पर तुमसे कोई सौदेबाज़ी मुमकिन नहीं। ये वही मज़मून है जो सूरतुल दहर (आयत नम्बर 3) में इस तरह बयान हुआ है: {اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا} यानि हमने इंसान के लिये हिदायत का रास्ता वाज़ेह कर दिया है और उसको इख्तियार दे दिया है कि अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने और चाहे नाशुक्रा।

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ

"हमने ज़ालिमों के लिये आग तैयार कर रखी है, उसकी क़नातें उनका अहाता कर लेंगी।"

ज़हन्नम की आग़ क़नातों की शक्ल में होगी और वह अल्लाह के मुनकरीन और मुशरिकीन को घेरे में ले लेगी।

وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَاۗءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۭ

"और अगर वह पानी के लिये फ़रयाद करेंगे तो उनकी फ़रयादरसी ऐसे पानी से की जाएगी जो (खौलते हुए) तेल की तलछट जैसा होगा, जो चेहरों को भून डालेगा।"

بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ۝۲۹

"बहुत ही बुरी चीज़ होगी पीने की, और वह (जहन्नन) बहुत ही बुरी जगह है आराम की!"

"مُهْل" का तर्जुमा तेल की तलछट के अलावा लावा भी किया गया है और पिघला हुआ ताँबा भी। सूरह इब्राहीम की आयत 16 में जहन्नमियों को पिलाये जाने वाले पानी को "مَآءٍ صَدِیْدٍ" कहा गया है जिसके मायने ज़ख्मों से रिसने वाले पीप के हैं। बहरहाल ये सयाल माद्दा जो उन्हें पानी के तौर पर दिया जाएगा इस क़दर ग़रम होगा कि उनके चेहरों को भून कर रख देगा। अब आइन्दा आयात में फ़ौरी तक़ाबुल के लिये अहले जन्नत का ज़िक्र आ रहा है।

आयत 30

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ۝۳۰

"यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किये तो हम नहीं ज़ाया करेंगे अज्र उस शख्स का जिसने अच्छा अमल किया।"

आयत 31

اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ جَنّٰتُ عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ

"उन्हीं लोगों के लिये हैं रहने के ऐसे बाग़ात जिनके दामन में नदियाँ बहती होंगी"

يُحَلَّوۡنَ فِيۡهَا مِنۡ اَسَاوِرَ مِنۡ ذَهَبٍ وَّيَلۡبَسُوۡنَ ثِيَابًا خُضۡرًا مِّنۡ سُنۡدُسٍ وَّاِسۡتَبۡرَقٍ

"उन्हें पहनाए जायेंगे उसमें सोने के कंगन और वह पहनेंगे सब्ज़ रंग के कपड़े बारीक रेशम के और मोटे रेशम के"

यानि उनका ऊपर का लिबास बारीक रेशम का होगा जबकि नीचे का लिबास मोटे रेशम का होगा।

مُّتَّكِـئِيۡنَ فِيۡهَا عَلَى الۡاَرَآئِكِ‌ؕ

"टेक लगाए बैठे होंगे तख़्तों पर।"

نِعۡمَ الثَّوَابُ‌ؕ وَحَسُنَتۡ مُرۡتَفَقًا ۝۳۱

"क्या ही अच्छा बदला होगा (उनके लिये) और क्या ही ख़ूब आरामगाह होगी!"

आयात 32 से 44 तक

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا
جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا
بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۭ ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ
تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾ ۙ وَّكَانَ لَهٗ
ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ
مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ
لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ﴿٣٥﴾ ۙ وَّمَآ
اَظُنُّ السَّاعَةَ قَاۗىِٕمَةً ۙ وَّلَىِٕنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ
خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ
اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ
سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ ۭ لٰكِنَّا۟ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ
اَحَدًا ﴿٣٨﴾ وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۙ
لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا
﴿٣٩﴾ ۚ فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ
عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا

﴿۴۰﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا
﴿۴۱﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ
اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿۴۲﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ
يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿۴۳﴾
هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا
﴿۴۴﴾

इस रुकूअ में दो अश्खास के बाहमी मकालमे की तफ़सील बयान हुई है। इनमें से एक शख्स को अल्लाह तआला ने माल व दौलत और बहुत सी दूसरी दुनियवी नेअमतों से नवाज़ रखा था। वह शख्स अपनी खुशहाली में इस क़दर मग्न हुआ कि उसकी निगाह अल्लाह से हट कर माद्दी वसाएल पर ही जम कर रह गई और उन्हीं असबाब व वसाएल को वह अपने तवक्कुल और भरोसे का मरकज़ बना बैठा। उसके साथ एक दूसरा शख्स था जो दुनियवी लिहाज़ से ख़ुशहाल तो नहीं था मगर उसे अल्लाह की मअरफ़त हासिल थी। उसने उस दौलतमंद शख्स को नसीहत की कि अल्लाह ने तुम्हें बहुत सी नेअमतों से नवाज़ा है मगर तुम उसे बिल्कुल ही भूले हुए हो। तुम्हें चाहिये कि तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो। दौलतमंद शख्स ने घमंड में आकर उसकी नसीहत का बहुत तल्ख़ जवाब दिया और कहा

कि मुझे तो ये सारी नेअमतें इसलिये मिली हैं कि मैं अल्लाह का चहेता हूँ जबकि मेरे मुक़ाबले में तुम्हारी कोई हैसियत नहीं। अल्लाह के इस बन्दे ने उसे फ़िर समझाया कि देखो अपने दुनियवी माल व असबाब पर मत इतराओ, क्योंकि अल्लाह अगर चाहे तो तुम्हारे ये सारे ठाठ-बाठ पल भर में ख़त्म करके रख दे। वह चाहे तो तुम्हारी सारी दौलत और माल व असबाब को ज़ाया कर सकता है। उसने जवाबन कहा कि ये कैसे हो सकता है? मैंने अपने माल व असबाब की हिफ़ाज़त का ख़ूब बंदोबस्त कर रखा है। अलगर्ज़ इन तमाम नसीहतों का उस शख्स पर कुछ भी असर ना हुआ। दुनियवी असबाब के नशे ने उसको इस क़दर अँधा कर रखा था कि उसे हक़ीक़ी मुसब्बबुल असबाब की क़ुदरत का कुछ अंदाज़ा ही ना रहा। बिलआख़िर उसके इस रवैय्ये का नतीजा ये निकला कि अल्लाह तआला ने उसका सब कुछ बरबाद करके रख दिया और वह अपने रवैय्ये पर कफ़ अफ़सोस मलता रह गया। अपनी बरबादी के बाद जब उस शख्स की आँखे खुलीं तो तब बहुत देर हो चुकी थी।

यहाँ उस दौलतमंद शख्स का वह फ़िक़रा ख़ासतौर पर क़ाबिले गौर है जो अपनी बरबादी के बाद पछताते हुए उसकी ज़बान से निकला था कि “काश मैंने अपने रब के साथ शिर्क ना किया होता!” देखा जाए तो इस सारे वाक़िये में किसी ज़ाहिरी शिर्क का इरतकाब नज़र नहीं आता। किसी देवी या देवता की पूजा-पाट का भी कोई हवाला यहाँ नहीं आया, अल्लाह के सिवा किसी दूसरे मअबूद का भी ज़िक्र नहीं हुआ, तो फिर सवाल पैदा होता है कि वह कौनसा अक़दाम था जिस पर वह शख्स पछताया कि काश मैंने अपने

रब से शिर्क ना किया होता! इस पहलु से आगे इस सारे वाक़ियै का बारीक-बीनी से जायज़ा लिया जाए तो ये नुक्ता समझ में आता है कि यहाँ जिस शिर्क का ज़िक्र हुआ है वह "माद्दा परस्ती" का शिर्क है। उस शख़्स ने अपने माद्दी असबाब व वसाएल को ही अपना सब कुछ समझ लिया था। जो भरोसा और तवक्कुल उसे हक़ीक़ी मुसब्बबुल असबाब पर करना चाहिये था वह भरोसा और तवक्कुल उसने अपने माद्दी वसाएल पर कर लिया था और इस तरह उन माद्दी वसाएल को मअबूद का दर्जा दे दिया था। यही रवैय्या और यही सोच माद्दा परस्ती है और यही मौजूदा दौर का सबसे बड़ा शिर्क है।

मौजूदा दौर सितारा परस्ती और बुत परस्ती का दौर नहीं। आज का इंसान सितारों की असल हक़ीक़त जान लेने और चाँद पर क़दम रख लेने के बाद इनकी पूजा क्योंकर करेगा? चुनाँचे आज के दौर में अल्लाह को छोड़ कर इंसान ने जो मअबूद बनाए हैं उनमें माद्दा परस्ती और वतन परस्ती सबसे अहम हैं। आज दौलत को मअबूद का दर्जा दे दिया गया है और माद्दी वसाएल और ज़राए को मुसब्बबुल असबाब समझ लिया गया है। यह मौजूदा दौर का बहुत ख़तरनाक शिर्क है और इससे महफ़ूज़ रहने के लिये इसे बहुत बारीक-बीनी से समझने की ज़रूरत है।

आयत 32

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ

“(ऐ नबी ﷺ!) आप बयान कीजिये इनके लिये दो अश्खास की मिसाल”

جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ

“उनमें से एक को हमने दिये थे दो बाग़ अंगूरों के और उन दोनों का घेर दिया था हमने खजूरों के दरख्तों के साथ”

अंगूरों की बेलों के गिर्दा-गिर्द खजूरों के दरख्तों की बाड़ थी ताकि नाज़ुक बेलें आँधी, तूफ़ान वगैरह से महफ़ूज़ रहें।

وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

“और हमने इन दोनों (बागों) के दरमियान खेती का इंतेजाम भी कर रखा था।”

बुनियादी तौर पर वह अंगूरों के बाग़ात थे। उनके ऐतराफ़ में खजूरों के दरख़्त थे, जिनकी दोहरी अफ़ादियत थी। इन दरख्तों से खज़ूरें भी हासिल होती थीं और हिफ़ाज़ती बाड़ का काम भी देते थे। दरमियान में कुछ ज़मीन काश्तकारी के लिये भी थी, जिससे अनाज वगैरह हासिल होता था। गोया हर लिहाज़ से मिसाली बाग़ात थे।

आयत 33

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ

"दोनों बाग़ात अपना फ़ल ख़ूब देते और उसमें से कुछ भी कम ना करते थे"

वह दोनों बाग़ात हर साल मौसम के मुताबिक़ ख़ूब फलते थे और उनकी पैदावार में कभी कोई कमी नहीं आती थी। उन बागों का मालिक शख्स सालहा-साल से उनकी पैदावार से मुसलसल फ़ायदा उठाते-उठाते उन्हें दाइमी समझ बैठा और वह बिल्कुल ही भूल गया कि ये सब कुछ अल्लाह की मशीयत और इजाज़त ही से मुमकिन है।

وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۙ﴿۳۳﴾

"और हमने जारी कर दी थी उनके दरमियान एक नहर।"

उन दोनों बागों के बीचो-बीच एक नहर बहती थी। गोया उनकी आबपाशी का निज़ाम भी मिसाली था।

आयत 34

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ

"और उसके लिये फ़ल भी था।"

इसका एक मफ़हूम तो यही है कि जब उन दोनों का आपस में मुकालमा हो रहा था उस वक़्त वह दोनों बाग़ात फलों से ख़ूब लदे हुए थे, जबकि दूसरा मफ़हूम जो मेरे नज़दीक राजेह है, ये है कि उस शख्स को अल्लाह ने औलाद भी ख़ूब दे रखी थी। इसलिये कि इंसान के लिये उसकी औलाद की

वही हैसियत है जो किसी दरख़्त की लिये उसके फ़ल की होती है।

فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝٣٤

“तो कहा उसने अपने साथी से, और वह आपस में गुफ़्तगू कर रहे थे, कि मैं तुमसे बहुत ज़्यादा हूँ माल में और बहुत बढ़ा हुआ हूँ नफ़री में।”

यहाँ जिस फ़ख्र से उस शख्स ने अपनी नफ़री का ज़िक्र किया है उसके इस अंदाज़ से तो {وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ} का यही तर्जुमा बेहतर महसूस होता है कि उस शख्स को औलाद ख़ुसूसन बेटों से भी नवाज़ा गया था।

आयत 35

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ

“और वह दाख़िल हुआ अपने बाग़ में इस हाल में कि वह अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहा था।”

قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۝٣٥

“उसने कहा: मैं नहीं समझता कि ये (बाग़) कभी भी बरबाद हो सकता है।”

यानि मेरा यह बाग़ हर लिहाज़ से मिसाली है। इसे मैंने बाक़ायदा मंसूबा बंदी के तहत हर क़िस्म के ख़तरात से महफ़ूज़ बना रखा है। अंगूरों की नाज़ुक बेलों के गिर्दा-गिर्द खजूरों के बुलंद व बाला दरख़्त संतरियों की तरह खड़े हर क़िस्म के तूफ़ान और बाद-ए-सरसर के थपेड़ों से इसकी

हिफ़ाज़त कर रहे हैं। आबपाशी के लिये नहर का वाफ़र पानी हर वक़्त मौजूद है। लिहाज़ा मैं नहीं समझता कि इसे कभी किसी क़िस्म का ख़तरा लाहक़ हो सकता है।

आयत 36

وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ

"और मैं यह गुमान नहीं करता कि क़यामत क़ायम होने वाली है"

यह क़यामत वगैरह बातें बातें सब ढ़कोसले हैं। मैं नहीं समझता कि ऐसा कोई वाक़िया हक़ीक़त में रूनुमा होने वाला है।

وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝۳۶

"और अगर मुझे लौटा ही दिया गया अपने रब की तरफ़ तो मैं लाज़िमन पाऊँगा इससे भी बेहतर पलटने की जगह।"

क़यामत व आख़िरत का अव्वल तो मैं क़ायल ही नहीं, लेकिन क़यामत अगर हुई भी तो मैं बहरहाल वहाँ इससे भी बेहतर ज़िंदगी पाउँगा। इन अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर होता है कि ये शख्स अल्लाह का मुन्किर नहीं था मगर दुनियवी माल व दौलत और माद्दी असबाब व ज़राए पर भरोसा करके शिर्क का इरतकाब कर रहा था। ये शख्स यहाँ पर जो फ़लसफ़ा बयान कर रहा है वह अक्सर माद्दा परस्त लोगों के यहाँ बहुत मक़बूल है। यानि अगर मुझे दुनिया में अल्लाह तआला

ने खुशहाली व फ़ारिगुल बाली से नवाज़ रखा है तो इसका मतलब ये है कि अल्लाह मुझसे खुश है। इसी लिये उसने मुझे ख़ुसूसी सलाहियतें अता की हैं जिनकी वजह से मैंने ये असबाब व वसाएल इकठ्ठे किये हैं। चुनाँचे वह आख़िरत में भी ज़रूर अपनी नेअमतों से मुझे नवाज़ेगा। और जो लोग यहाँ दुनिया में जूतियाँ चटकाते फ़िर रहे हैं वह आख़िरत में भी इसी तरह बेयार-ओ-मददगार होंगे।

आयत 37

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ

"उसके साथी ने उससे कहा और वह उससे गुफ्तगू कर रहा था"

اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝۳۷

"क्या तूने कुफ़्र किया उस हस्ती का जिसने पैदा किया तुझे मिट्टी से, फिर गंदे पानी की बूंद से, फिर तुझे सही सलामत इंसान बना दिया?"

यहाँ ये नुक्ता बहुत अहम है कि वह शख्स बज़ाहिर अल्लाह का मुन्किर नहीं था मगर फ़िर भी उसे अल्लाह से कुफ़्र का मुरतकिब बताया गया है। वह इसलिये कि इससे पहले वह आख़िरत का इन्कार कर चुका था और आख़िरत का इन्कार दरअसल अल्लाह का इन्कार है। गोया जो शख्स आख़िरत का मुन्किर हो उसका ईमान बिल्लाह का दावा भी क़ाबिले क़ुबूल नहीं।

आयत 38

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝۳۸

"लेकिन (मैं तो मानता हूँ कि) वह अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक़ नहीं ठहराता।"

आयत 39

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ

"और जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ तो तूने यूँ क्यों ना कहा: माशा अल्लाह! (यानि ये सब अल्लाह के फ़ज़ल व करम से है।) अल्लाह के बदून किसी को कोई ताक़त हासिल नहीं।"

तुझे बाग़ में हर तरफ़ खुशकुन मनाज़िर देखने को मिले और पूरा बाग़ फलों से लदा हुआ नज़र आया तो तेरी ज़बान से "माशा अल्लाह" क्यों ना निकला और तूने ये क्यों ना कहा कि ये मेरा कमाल नहीं है बल्कि अल्लाह की देन है जो असल ताक़त और इख्तियार का मालिक है, उसकी इजाज़त और मर्ज़ी के बगैर कुछ नहीं हो सकता। ये "माशा अल्लाह" वह कलमा है जिसमें तौहीद कूट-कूट कर भरी है, कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, किसी और के चाहने से या असबाब व वसाएल के होने से कुछ नहीं होता।

اِنۡ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنۡكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝۳۹

"मगर तू मुझे देखता है कि मैं तुमसे माल व औलाद में कम हूँ।"

आयत 40

فَعَسٰى رَبِّىۡۤ اَنۡ يُّؤۡتِيَنِ خَيۡرًا مِّنۡ جَنَّتِكَ

"तो उम्मीद है कि मेरा रब तेरे बाग़ से बेहतर बाग़ मुझे दे दे"

मुझे यक़ीन है कि मेरा रब अगर चाहे तो तुम्हारे इन बागों से बेहतर नेअमतों से मुझे नवाज़ दे।

وَيُرۡسِلَ عَلَيۡهَا حُسۡبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصۡبِحَ صَعِيۡدًا زَلَقًا ۝۴۰

"और वह भेज दे इस (तेरे बाग़) पर कोई आफ़त आसमान से तो वह साफ़ चटियल मैदान होकर रह जाए।"

यह भी मुमकिन है कि तुम्हारे इस कुफ़्र व तकब्बुर के बाइस अल्लाह तआला तुम्हारे बागों पर कोई ऐसी आफ़त नाज़िल कर दे कि इस क़तअ ज़मीन पर किसी दरख़्त या किसी बेल वगैरह का नामो निशान तक ना रहे।

आयत 41

أَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾

"या इसका पानी गहराई में उतर जाए, फ़िर तुम इस (पानी) को किसी तरह हासिल ना कर सको।"

अल्लाह तुम्हारे बाग़ पर कोई आसमानी आफ़त ना भी भेजे तो यूँ भी हो सकता है कि उसके हुक्म से इसका ज़ेरे ज़मीन पानी ग़ैर मामूली गहराई में चला जाए। इसके नतीजे में तुम्हारा बनाया हुआ निज़ाम आबपाशी ख़त्म होकर रह जाए और इस तरह पानी के बगैर ये बाग़ खुद-ब-खुद ही उजड़ जाए। यानि हक़ीक़ी मुसब्बबुल असबाब तो अल्लाह ही है। उसी मुख्तलिफ़ असबाब मुहैय्या कर रखे हैं जिससे ये कारोबारे दुनिया चल रहा है। वह जब चाहे किसी सबब को सल्ब करले या उसकी हैइयत को बदल दे और उसकी वजह से ये सारा निज़ाम दरहम-बरहम होकर रह जाए। ये मामला तो गोया शीश महल की तरह का है कि एक ही पत्थर इसको चकना चूर करके रख देगा।

आयत 42

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ

"और उसका सारा समर (फ़ल) समेट लिया गया"

उस शख्स को अल्लाह तआला की तरफ़ से जो नेअमतें दी गई थीं वह सब उससे सल्ब कर ली गईं। बाग़ भी उजड़ गया और औलाद भी छिन गई। इससे अंदाज़ा होता है कि दूसरा शख्स अल्लाह का ख़ास मुक़र्रब बंदा था। मालदार शख्स ने

उसे उसकी नादारी का ताना दिया था: {اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا} कि माल व दौलत में भी मुझे तुम पर फ़ौक़ियत हासिल है और नफ़री में भी मैं तुमसे बढ़ कर हूँ। इस ताने से अल्लाह के उस नेक बन्दे का दिल दुखा होगा, जिसकी सज़ा उसे फ़ौरी तौर पर मिली और अल्लाह ने उससे सब कुछ छीन लिया। इस सिलसिले में एक हदीस क़ुदसी है: ((مَنْ عَادٰی لِیْ وَلِیًّا فَقَدْ آذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ)) "जो शख्स मेरे किसी वली के साथ दुश्मनी करे तो मेरी तरफ़ से उसके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग है।"(24) किसी शायर ने इस मज़मून को इस तरह अदा किया है:

तादले साहिब दिले नालद ब दर्द, हैच क़ौमे राख़ुदा रुसवा ना कर्द!

यानि किसी साहिबे दिल वली अल्लाह के दिल को जब ठेस लगती है तो उसके बदले में अल्लाह तआला की तरफ़ से पूरी क़ौम गिरफ़्त में आ जाती है।

فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا

"तो वह हाथ मलता रह गया उस पर जो कुछ उसने उसमें ख़र्च किया था"

यक़ीनन उन बागों की मंसूबा बंदी करने, पौदे लगाने और उनकी नशो-नुमा करने में उसने ज़रे केसर ख़र्च किया था, मुसलसल मेहनत की थी और अपना क़ीमती वक़्त उसमें खपाया था। इसका ये तमाम सरमाया आन की आन में नेस्तो नाबूद हो गया और वह उसकी बरबादी पर कफ़े अफ़सोस मलने के अलावा कुछ ना कर सका।

وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا

"और वह (बाग़) गिर पड़ा था अपनी छतरियों पर"

अंगूरों की बेलें जिन छतरियों पर चढ़ाई गई थीं वह सबकी सब औंधी पड़ी थीं।

وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝۴۲

"और वह कह रहा था: हाय मेरी शामत, काश मैंने अपने रब के साथ किसी को शरीक ना ठहराया होता।"

उस मालदार शख्स के मकालमे से ये हक़ीक़त पूरी तरह वाज़ेह हो जाती है कि उस शख्स ने अल्लाह तआला की क़ुदरत और उसके इख्तियार को भुला कर ज़ाहिरी असबाब और माद्दी वसाएल पर तवक्कुल कर लिया था, और यही वह शिर्क था जिसका खुद उसने यहाँ ऐतराफ़ किया है। आज की माद्दा परस्ताना ज़ेहनियत का मुकम्मल नक़्शा इस रुकूअ में पेश कर दिया गया है। यह शिर्क की जदीद क़िस्म है जिसको पहचानने और जिससे मोहतात रहने की आज हमें अशद ज़रूरत है। (इस हवाले से मेरी किताब "हक़ीक़त व अक़साम-ए-शिर्क" का मुताअला मुफ़ीद रहेगा, जिसमें शिर्क और उसकी अक़साम को तफ़सील से बयान किया गया है।)

आयत 43

وَلَمۡ تَكُنۡ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنۡصُرُوۡنَهٗ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنۡتَصِرًا ؕ﴿۴۳﴾

"और ना हुई उसके लिये कोई जमाअत जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद को आती और ना वह खुद ही इन्तेक़ाम लेने वाला बन सका।"

अल्लाह के मुक़ाबले में भला कौन उसकी मदद कर सकता था और इस सूरते हाल में वह किससे इंतेक़ाम ले सकता था?

आयत 44

هُنَالِكَ الۡوَلَايَةُ لِلّٰهِ الۡحَقِّ ؕ

"यहाँ तो तमाम इख्तियार अल्लाह ही का है जो अल हक़ है।"

वलायत के मायने यहाँ हुकूमत और इक़तदार के हैं। "वाली" किसी मुल्क या इलाक़े के मालिक या हुक्मरान को कहते हैं और इसी से ये लफ्ज़ वलायत (वाव की ज़बर के साथ) बना है। इस लिहाज़ से आयत के अल्फ़ाज़ का मफ़हूम ये है कि कुल का कुल इक़तदार व इख्तियार अल्लाह के लिये है जो "अल हक़" है। इसी माद्दे से लफ्ज़ "वली" भी है जिसके मायने दोस्त और पुश्तपनाह के हैं। इसी माद्दे से विलायत (वाव की ज़ेर के साथ) बना है और ये दोस्ती और मोहब्बत के मायने देता है। दर्जा ज़ेल आयात में इसी विलायत का ज़िक्र है: {اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا يُخۡرِجُهُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ ؕ} (अल बक़रह 257) और {اَلَاۤ اِنَّ اَوۡلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ} (युनुस :62)

هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ
عُقْبًا ﴿٤٤﴾

"वही बेहतर है ईनाम देने में और वही बेहतर है आक़बत के ऐतबार से।"

ईनाम वही बेहतर है जो वह बख्शे और अंजाम वही बखैर है जो वह दिखाए।

आयात 45 से 49 तक

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ
هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ
اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ
بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾
وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾
وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ

وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ
صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا
حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾

आयत 45

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

“और बयान कीजिये इनके लिये मिसाल दुनिया की ज़िंदगी की”

كَمَاۗءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَاۗءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ

“जैसे पानी कि हमने उसे उतारा आसमान से, फ़िर उसके साथ मिल-जुल कर निकल आया ज़मीन का सब्ज़ा”

فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۭ

“फ़िर वह हो गया चूरा-चूरा, उड़ाए फिरती हैं उसे हवाएँ।”

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

“और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।”

सब्ज़े के उगने, उसके नशो-नुमा पाने और फ़िर खुश्क होकर खसो-खाशाक की शक्ल इख्तियार कर लेने के अमल को

इन्सानी ज़िन्दगी की मुशाबहत की बिना पर यहाँ बयान किया गया है। बारिश के बरसते ही ज़मीन से तरह-तरह के नबातात निकल आते हैं। फ़िर देखते ही देखते ज़मीन सरसब्ज़ व शादाब हो जाती है। जब ये सब्ज़ा अपने जोबन (यौवन) पर होता है तो बड़ा खुश कुन मंज़र पेश करता है। मगर फ़िर ज़ल्द ही उस पर ज़र्दी छाने लगती है और चंद ही दिनों में लहलहाता हुआ सब्ज़ा खसो-खाशाक का ढेर बन जाता है और ज़मीन फ़िर से चटियल मैदान की सूरत इख्तियार कर लेती है। सब्ज़े या किसी फ़सल के उगने, बढ़ने और खुश्क होने का ये दौरानिया चंद हफ़्तों पर मुहीत हो या चंद महीनों पर, इसकी असल हक़ीक़त और कैफ़ियत बस यही है।

इस मिसाल को मद्दे नज़र रखते हुए देखा जाए तो बिल्कुल यही कैफ़ियत इन्सानी ज़िंदगी की भी है। जिस तरह नबाताती ज़िंदगी का आग़ाज़ आसमान से बारिश के बरसने से होता है इसी तरह रूह के नुज़ूल से इन्सानी ज़िंदगी का आग़ाज़ होता है। इंसानी रूह का ताल्लुक़ आलमे अम्र से है: {قُلِ الرُّوۡحُ مِنۡ اَمۡرِ رَبِّیۡ} (बनी इसराइल 85) शक्कम मादर में जसद-ए-खाक़ी के अन्दर रूह फूँकी गई, बच्चा पैदा हुआ, खुशियाँ मनाई गईं, जवान और ताक़तवर हुआ, तमाम सलाहियतों को उरूज मिला, फ़िर अधेड़ उम्र को पहुँचा, जिस्म और उसकी सलाहियतें रोज़-ब-रोज़ ज़वाल पज़ीर होने लगीं, बालों में सफ़ेदी आ गई, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गईं, मौत वारिद हुई, क़ब्र में उतारा गया और मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो गया। इस cycle का दौरानिया मुख्तलिफ़ अफ़राद के साथ मुख्तलिफ़ सही मगर इन्सानी ज़िंदगी के

आग़ाज़ व अंजाम की हक़ीक़त बस यही कुछ है। चुनाँचे इन्सान को ये बात किसी वक़्त नहीं भूलनी चाहिये कि दुनिया का अरसा-ए-हैयात एक वक़्फ़ा-ए-इम्तिहान है जिसे हर इन्सान अपने-अपने अंदाज़ में गुज़ार रहा है।

आयत 46

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

"माल और बेटे दुनियवी ज़िंदगी की ज़ीनत हैं"

इस सूरत में दुनियवी ज़िन्दगी की ज़ेबो-ज़ीनत का ज़िक्र यहाँ तीसरी मर्तबा आया है। इससे पहले हम आयत सात में पढ़ आए हैं कि रुए ज़मीन की आराईश व ज़ेबाईश और तमाम रौनक़े इन्सानों के इम्तिहान के लिये बनाई गई हैं: {اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا} फिर आयत 28 में रसूल अल्लाह ﷺ को मुखातिब करके फ़रमाया गया: {تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا} कि ऐ नबी (ﷺ) कहीं इन लोगों को ये गुमान ना हो कि आपका मतलूब व मक़सूद भी दुनियवी ज़िंदगी की आराईश व ज़ेबाईश ही है (मआज़ अल्लाह!)। गोया ये मौज़ू इस सूरत के मज़ामीन का अमूद है। लिहाज़ा ये हक़ीक़त हर वक़्त हमारे ज़हन में मुस्तहज़र रहनी चाहिये कि ये ज़िंदगी और दुनियवी माल व मताअ सब आरज़ी हैं। यहाँ के रिश्ते नाते और तमाम ताल्लुक़ात भी इसी चार रोज़ा ज़िंदगी तक महदूद हैं। इंसान की आँख बंद होते ही तमाम रिश्ते और ताल्लुक़ात मुन्क़तअ (disconnect) हो जाएँगे और अल्लाह की अदालत में हर इन्सान को तन-तन्हा

पेश होना होगा: {وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا} (सूरह मरियम 95) वहाँ ना बाप औलाद की मदद करेगा, ना बेटा वालिदैन को सहारा देगा, और ना बीवी शौहर का साथ देगी। उस दिन के मुहासबे का सामना हर शख्स को अकेले ही करना होगा।

وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۝۴۶

"और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ बहुत बेहतर हैं तेरे रब के नज़दीक, सवाब के लिहाज़ से भी और उम्मीद के ऐतबार से भी।"

इस मुख़्तसर ज़िन्दगी की कमाई में अगर किसी चीज़ को बक़ा हासिल है तो वह नेक आमाल हैं। आख़िरत में सिर्फ़ वही काम आयेंगे। चुनाँचे दुनियवी माल व असबाब से उम्मीदें ना लगाओ, औलाद से तवक्क़ुआत मत वाबस्ता करो। ये सब आरज़ी चीज़ें हैं जो तुम्हारी मौत के साथ ही तुम्हारे लिये बे-वक़अत हो जाएँगी। आख़िरत का सहारा चाहिये तो नेक आमाल का तौशा जमा करो और इसी पूंजी से अपनी उम्मीदें वाबस्ता करो।

आयत 47

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ

"और जिस दिन हम चलायेंगे पहाड़ों को और तुम देखोगे ज़मीन को साफ़ चटियल"

अब क़यामत का नक्शा खींचा जा रहा है कि उस दिन पहाड़ अपनी जगह छोड़ देंगे, ज़मीन के तमाम नशेबो-फ़राज़ ख़त्म हो जायेंगे और पूरा कुर्रा-ए-अर्ज़ एक साफ़ चटियल मैदान की शक्ल इख्तियार कर लेगा।

وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾

"और हम सबको जमा कर लेंगे और उनमें से किसी एक को भी नहीं छोड़ेंगे।"

हज़रत आदम अलै. से लेकर आख़री इन्सान तक पैदा होने वाले नौए इन्सानी के तमाम अफ़राद को उस दिन इकट्ठा कर लिया जायेगा।

आयत 48

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ۭ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۢ

"और वह पेश किये जायेंगे आपके रब के सामने सफें बाँधे हुए। (तब उन्हें कहा जाएगा) आ गए हो ना हमारे पास, जैसे हमने तुम्हें पहली मरतबा पैदा किया था!"

यहाँ "पहली मरतबा" पैदा करने से मुराद आलमे अरवाह में इन्सानी अरवाह की तख्लीक़ है, जबकि इस ज़मीन पर जिस्म और रूह के मिलाप से की जाने वाली इन्सानी तख्लीक़ दरअसल तख्लीक़-ए-सानी है। फ़र्ज़ करें इस दुनिया की उम्र पन्द्रह हज़ार बरस है, तो इन पन्द्रह हज़ार बरसों में वह तमाम इन्सान इस दुनिया में आ चुके हैं जिनकी अरवाह अल्लाह तआला ने पैदा की थीं। इन तमाम इन्सानों को

क़यामत के दिन फ़िर से इकठ्ठा कर लिया जाएगा। चुनाँचे आयत का मफ़हूम ये है कि तमाम इन्सान जैसे आलमे अरवाह में ब-यक वक़्त एक जगह इकट्ठे थे, इसी तरह क़यामत के दिन भी मैदाने हश्र में सबके सब बयक वक़्त मौजूद होंगे।

بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝٤٨

"बल्कि तुमने तो समझ रखा था कि हम तुम्हारे लिये वादे का कोई वक़्त मुक़र्रर ही नहीं करेंगे।"

ये उन लोगों का ज़िक्र है जो क़ुरान के अल्फ़ाज़ में {اَلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا} (वह लोग जिन्हें हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं) के ज़ुमरे में आते हैं। ऐसे लोग जब अल्लाह के हुज़ूर पेश होंगे तो उन्हें उनका वादा-ए-अलस्त {اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ} (आराफ़ 172) भी याद दिलाया जाएगा, कि तुम लोगों ने मुझे अपना रब तस्लीम किया था, फिर तुम दुनिया की ज़िंदगी में इस हक़ीक़त को बिल्कुल ही भूल गए कि तुमने वापस हमारे पास भी आना है। तुम्हें गुमान तक नहीं था कि हम तुम्हारे लिये अपने सामने पेशी का कोई वक़्त मुक़र्रर करेंगे।

आयत 49

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ

"और रख दिया जाएगा आमाल नामा"

ये पूरी नौए इन्सानी के एक-एक फ़र्द की ज़िन्दगी के एक-एक लम्हे और एक-एक अमल की तफ़सील पर मुश्तमिल

रिकॉर्ड होगा। गोया एक बहुत बड़ा कंप्यूटर सिस्टम है जो किसी जगह पर नस्ब किया गया है और वहाँ से लाकर मैदाने हश्र में रख दिया जाएगा। आज से सौ बरस पहले तो ऐसी तफ़सीलात को तस्लीम करने के लिये सिर्फ़ ईमान बिल गैब का ही सहारा लेना पड़ता था मगर आज के दौर में इस सब कुछ पर यक़ीन करना बहुत आसान हो गया है। आज हम इन्सान के बनाए हुए कंप्यूटर के कमालात अपनी आँखों से देख रहे हैं और अपने मामलाते ज़िंदगी में इनसे इस्तफ़ादा कर रहे हैं। आज जब हम एक बटन जितनी जसामत की चिप में मुफ़स्सल मालूमात पर मुश्तमिल रिकॉर्ड अपनी आँखों से देखते हैं तो हमें अल्लाह तआला की वज़अ करदा डेटा बेस (अल किताब) के बारे में कोई शक नहीं रह जाता कि उसमें किसी तरह एक-एक फ़र्द की एक-एक हरकत की रिकॉर्डिंग महफ़ूज़ होगी और पलक झपकने की देर भी नही लगेगी कि उसका प्रिंट मुतअलक़ा फ़र्द के हाथ में थमा दिया जाएगा।

فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ

"चुनाँचे तुम देखोगे मुजरिमों को कि डर रहे होंगे उससे जो कुछ उसमें होगा"

मुजरिम लोग अपनी किताबे ज़िंदगी के अंदर अजात से लरज़ा व तरसाँ होंगे।

وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ

"और कहेंगे: हाए हमारी शामत! ये कैसा आमाल नामा है? इसने तो ना किसी छोटी चीज़ को छोड़ा है और ना किसी बड़ी को,

صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ	*मगर उसको महफ़ूज़ कर रखा है।"*
وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ۴۹	*"और वह पायेंगे जो अमल भी उन्होंने किया होगा उसे मौजूद। और आपका रब ज़ुल्म नहीं करेगा किसी पर भी।"*

आयात 50 से 53 तक

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ
اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ
عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۵۰ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ
مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ۵۱ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا
شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا
لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۵۲ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ

النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝٥٣

आयत 50

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ

"और याद करो जबकि हमने फ़रिश्तों से कहा था कि सज्दा करो आदम को, तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस ने (ना किया)।"

यहाँ सूरह बनी इसराइल और सूरतुल कहफ़ की मुशाबेहत के सिलसिले में ये अहम बात नोट कीजिये कि सूरतुल कहफ़ के सातवें रुकूअ की पहली आयत के अल्फ़ाज़ बैयन ही वही हैं जो सूरह बनी इसराइल के सातवें रुकूअ की पहली आयत के हैं। हज़रत आदम अलै. और इब्लीस का ये क़िस्सा क़ुरान में सात मक़ामात पर बयान हुआ है। बाक़ी छ: मक़ामात पर तो इसका ज़िक्र नहीं मगर यहाँ ये हक़ीक़त वाज़ेह की गई है कि इब्लीस जिन्नात में से था:

كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ

"वह जिन्नात में से था, चुनाँचे उसने ना-फ़रमानी की अपने रब के हुक्म की।"

यहाँ पर "فَ" इल्लत को ज़ाहिर कर रहा है कि चूँकि वह जिन्नात में से था इसलिये नाफ़रमानी का मुरतकिब हुआ। वरना फ़रिश्ते कभी अपने रब के हुक्म से सरताबी नहीं

करते: {لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ} (सूरह तहरीम 6) "वह (फ़रिश्ते) अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते वह जो भी हुक्म उन्हें दे और वह वही कुछ करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।"

اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ

"तो क्या तुम बनाते हो उसे और उसकी औलाद को दोस्त मेरे सिवा, दर हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं?"

ऐ औलादे आदम! ज़रा सोचो, तुम मुझे छोड कर उस इब्लीस को अपना वली और कारसाज़ बनाते हो जिसने यूँ मेरी नाफ़रमानी की थी। तुम्हारा खालिक़ और मालिक मैं हूँ, मैंने तुम्हे अशरफ़ुल मख्लूक़ात के मरतबे पर फ़ाइज़ किया, मैंने फ़रिश्तों को तुम्हारे सामने सर-नगों किया, तुम्हें खिलाफ़ते अर्ज़ी से नवाज़ा, और तुम हो कि मेरे मुक़ाबले में इब्लीस और उसकी सल्बी व मअन्वी औलाद से दोस्तियाँ गाँठते फ़िरते हो, जबकि फ़िलवाक़ेअ वह तुम्हारे दुश्मन हैं।

بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝

"क्या ही बुरा बदल हैं इन ज़ालिमों के लिये!"

अल्लाह को छोड़ कर अपने दुश्मन शैतान और उसके चेलों की रफ़ाक़त इख्तियार करके इन ज़ालिमों में अपने लिये किस क़दर बुरा बदल इख्तियार कर रखा है।

आयत 51

مَآ اَشۡهَدۡتُّهُمۡ خَلۡقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَلَا خَلۡقَ اَنۡفُسِهِمۡ

"मैंने इन्हें गवाह नहीं बनाया था आसमानों और ज़मीन की तख्लीक़ का और ना ही इनकी अपनी तख्लीक़ का"

وَمَا كُنۡتُ مُتَّخِذَ الۡمُضِلِّيۡنَ عَضُدًا ﴿۵۱﴾

"और मैं बहकाने वालों को अपना मददगार बनाने वाला ना था।"

ये जो तुम शैतान और उसके गिरोह को मेरे बराबर ला रहे हो और मुझे छोड़ कर उन्हें अपना दोस्त बना रहे हो तो तुम्हें मालूम होना चाहिये कि वह ज़मीन व आसमान की तख्लीक़ और ख़ुद अपनी तख्लीक़ के मौक़े के गवाह नहीं हैं।

आयत 52

وَيَوۡمَ يَقُوۡلُ نَادُوۡا شُرَكَآءِىَ الَّذِيۡنَ زَعَمۡتُمۡ

"और जिस दिन वह कहेगा कि पुकारो मेरे उन शरीकों को जिनका तुम्हे ज़अम था"

فَدَعَوۡهُمۡ فَلَمۡ يَسۡتَجِيۡبُوۡا لَهُمۡ

"तो वह उन्हें पुकारेंगे मगर वह उन्हें कोई जवाब नहीं देंगे और हम इनके दरमियान हलाकत (की घाटी) हाइल कर देंगे।"

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

ये शरीक ठहराई जाने वाली शख्सियात चाहे अंबिया हों, औलिया अल्लाह हों या फ़रिश्ते, रोज़े क़यामत इनके और इन्हें शरीक मानने वालों के दरमियान हलाकत खैज़ खलीज हाइल कर दी जाएगी ताकि इन्हें मालूम हो जाए कि वह इनकी मदद को नहीं आ सकते।

आयत 53

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

"और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और जान जायेंगे कि वह उसमें डाले जाने वाले हैं और वह नहीं पायेंगे उससे बचने की कोई जगह।"

आयात 54 से 59 तक

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا

رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿۵۵﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا
مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ
اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿۵۶﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ
فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي
قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ
تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۷﴾ وَرَبُّكَ
الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ
لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ
مَوْىِٕلًا ﴿۵۸﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا
وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿۵۹﴾ ع

आयत 54

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ

"और हमने फ़ेर-फ़ेर कर बयान कर दी हैं इस क़ुरान में लोगों (की हिदायत) के लिये हर क़िस्म की मिसालें।"

अल्फ़ाज़ के मामूली फ़र्क़ के साथ ये आयत सूरह बनी इसराइल में भी (आयत 89) मौजूद है।

وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا 54

"लेकिन इन्सान तमाम मख्लूक़ से बढ़ कर झगलाड़ू है।"

सूरह बनी इसराइल की आयत 89 के पहले हिस्से के अल्फ़ाज़ ज्यों के त्यों वही हैं जो इस आयत के पहले हिस्से के हैं, सिर्फ़ लफ़्ज़ों की तरतीब में मामूली सा फ़र्क़ है। अलबत्ता दोनों आयात के आख़री हिस्सों के अल्फ़ाज़ मुख्तलिफ़ हैं। सूरह बनी इसराइल की मज़कूरा आयत (नम्बर 89) का आखरी हिस्सा यूँ है: {فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا} "मगर अक्सर लोग कुफ्राने नेअमत पर ही अड़े रहते हैं।"

आयत 55

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ

"और नहीं रोका लोगों को (किसी चीज़ ने) जब उनके पास हिदायत आ गई कि वह ईमान लायें और अपने रब से मगफिरत माँगें"

الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا

رَبَّهُمْ

इस आयत की मुशाबेहत सूरह बनी इसराइल की आयत 94 के साथ है। दोनों आयात के पहले हिस्सों के अल्फ़ाज़ हू-ब-हू एक जैसे हैं।

اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ

"मगर ये कि उनसे पहलों का तरीक़ बरता जाए"

ये लोग जो हिदायत आ जाने के बाद भी ईमान नहीं ला रहे और अल्लाह के हुज़ूर अस्तगफार नहीं कर रहे हैं तो इसकी वजह सिवाय इसके और कुछ नहीं कि इनके लिये भी पहली क़ौमों का सा अंजाम लिखा जा चुका है।

اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

"या अज़ाब उनके सामने आ मौजूद हो।"

आयत 56

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ

"और हम नहीं भेजते रसूलों को मगर खुश ख़बरी देने वाले और ख़बरदार करने वाले (बनाकर)"

ये मज़मून जो यहाँ सब रसूलों के मुताल्लिक़ जमा के सीगे में आया है, सूरह बनी इसराइल (आयत 105) में हुज़ूर ﷺ के लिये सीगा-ए-वाहिद में यूँ आया है: {وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا} "और (ऐ मोहम्मद ﷺ!) हमने नहीं भेजा आपको मगर मुब्बशिर और नज़ीर बना कर।"

وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ

"और ये काफ़िर लोग झगड़ते हैं झूठ की तरफ़ से ताकि बिचला दे इसके साथ हक़ को"

ये लोग बातिल के साथ खड़े होकर हक़ को शिकस्त देने के लिये मनाज़रे और कट-हुज्जतियाँ कर रहे हैं।

وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

"और इन्होंने मेरी आयात को और (उस चीज़ को) जिसके साथ इन्हें ख़बरदार किया गया था मज़ाक़ बना लिया है।"

आयत 57

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۭ

“और उस शख्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे नसीहत की गई हो उसके रब की आयात के ज़रिये, तो उसने ऐराज़ किया उनसे और वह भूल गया कि क्या आगे भेजा है उसके दोनों हाथों ने।”

बजाए ईमान लाने के और अपने साबक़ा गुनाहों से तौबा करने के उसने अल्लाह की आयात से रूगरदानी की रविश अपनाए रखी। इस ज़िद और हठधर्मी में वह अपने आमाल के उस झाड़-झंकाड़ को भी भूल गया जो उसने अपनी आख़िरत के लिये तैयार कर रखा था।

اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ

“यक़ीनन हमने इनके दिलों पर परदे डाल दिये हैं कि वह इस (क़ुरान) को समझ ना पायें और इनके कानों में बोझ (डाल दिया है)।”

ये मज़मून सूरह बनी इसराइल (आयत नम्बर 45) में इस तरह आ चुका है: {وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا} “और जब आप क़ुरान पढ़ते हैं तो हम आपके और आख़िरत पर ईमान ना रखने वाले लोगों के दरमियान पर्दा हाइल कर देते हैं।”

وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ۝٥٧

“और अगरचे आप बुलायें उन्हें हिदायत की तरफ़ तब भी वह कभी हिदायत नहीं पायेंगे।”

क्योंकि हक़ वाज़ेह हो जाने के बाद इनकी मुसलसल हठधर्मी के सबब इनके दिलों पर मोहरें लग चुकी हैं और इस तरह वह अल्लाह के क़ानूने हिदायत व ज़लालत की आख़री दफ़ा की ज़द में आ चुके हैं जिसके तहत जान-बूझ कर हक़ से ऐराज़ करने वाले को हमेशा के लिये हिदायत से महरूम कर दिया जाता है।

आयत 58

وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ

“और आपका रब बहुत बख्शने वाला, बहुत रहमत वाला है। अगर वह मुआख्ज़ा करता इनका ब-सबब इनके आमाल के तो बहुत जल्दी भेज देता इन पर अज़ाब।”

ये मज़मून सूरतुल नहल आयत 61 और सूरह फ़ातिर आयत 45 में भी बड़ी वज़ाहत से बयान हुआ है कि अगर अल्लाह तआला लोगों के ज़ुल्म और बुरे आमाल के सबब उनका मुआख्ज़ा करता तो रुए ज़मीन पर कोई मुतनफ्फिस ज़िन्दा ना बचता।

بَلۡ لَّهُمۡ مَّوۡعِدٌ لَّنۡ يَّجِدُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖ مَوۡىِٕلًا ۝٥٨

"बल्कि इनके लिये वादे का एक वक़्त मुअय्यन है और वह हरगिज़ नहीं पायेंगे उसके सिवा बचने की कोई जगह।"

जब किसी के वादे की मुक़र्रर घड़ी (अज्ल) आ पहुँचेगी तो उसे कोई जाए पनाह नहीं मिलेगी और उसके लिये उससे सरक कर इधर-उधर होने की कोई गुंजाईश नहीं होगी: {فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ لَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ} (नहल 61) "फ़िर जब आ जाता है उनका वक़्ते मुअय्यन तो ना वह पीछे रह सकते हैं एक लम्हा और ना आगे बढ़ सकते हैं।"

आयत 59

وَتِلۡكَ الۡقُرٰٓى اَهۡلَكۡنٰهُمۡ لَمَّا ظَلَمُوۡا

"और ये हैं वह बस्तियाँ जिन (के वासियों) को हमने हलाक कर दिया जब उन्होंने ज़ुल्म इख्तियार किया"

अहक़ाफ़ में आबाद क़ौमे आद के अफ़राद हों या इलाक़ा-ए-हिज्र के बाशिंदे, अस्हाबुल एयका हों या आमूरा और सदुम के वासी, सब इसी क़ानूने इलाही के मुताबिक़ हलाकत से दो-चार हुए।

وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝٥٩

"और हमने मुक़र्रर कर दिया था उनकी हलाकत के लिये वादे का एक वक़्त।"

वादे के इस तयशुदा वक़्त से पहले किसी क़ौम या बस्ती पर कभी कोई अज़ाब नहीं आया।

आयात 60 से 82 तक

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ
الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ۝٦٠ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا
نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝٦١ فَلَمَّا
جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَاۗءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ
سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝٦٢ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى
الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۡ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا
الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ڰ عَجَبًا
۝٦٣ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ڰ فَارْتَدَّا عَلٰٓي اٰثَارِهِمَا
قَصَصًا ۝٦٤ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝٦٥ قَالَ لَهٗ

مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا
﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ
تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ
اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ
فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ
لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي
السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۭ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ
جِئْتَ شَيْـًٔـا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ
تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا
نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ
نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔـا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾
قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ
بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ

اَهْلَ قَرْيَةِ ۨ اسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا
فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ
لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿۷۷﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ
بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ
عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۷۸﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ
وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿۷۹﴾ وَاَمَّا
الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا
طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ ﴿۸۰﴾ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا
مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿۸۱﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ
لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا
وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا
وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ
عَنْ اَمْرِيْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۸۲﴾ ع

इन दो रुकुओं में हज़रत मूसा अलै. के एक सफ़र का ज़िक्र है। इस वाक़िये का ज़िक्र अहादीस में भी मिलता है

और क़दीम इसराइली रिवायात में भी, जिनमें से बहुत सी रिवायात क़ुरान के बयान से मुताबक़त भी रखती हैं। बहरहाल इन रिवायात से जो मालूमात हासिल होती हैं उनके मुताबिक़ अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलै. को हुक्म दिया कि आप फ़लाँ जगह जायें, वहाँ पर आपको हमारा एक साहिबे इल्म बंदा मिलेगा, आप कुछ अरसा उसके साथ रह कर उसके इल्म से इस्तफ़ादा करें। मुम्किन है ये हज़रत मूसा अलै. की नबूवत का इब्तदाई ज़माना हो और इस तरीक़े से आपकी तरबियत मक़सूद हो, जिस तरह बाज़ रिवायात से साबित है कि हुज़ूर ﷺ की तरबियत लिये एक फ़रिश्ता तीन साल तक मुसलसल आपके साथ रहा।

इस वाक़िये में अलाह तआला ने अपने जिस बन्दे का ज़िक्र किया है उनके बारे में क़तई मालूमात दस्तयाब नहीं। इस ज़िमन में एक राय तो ये है कि वह एक फ़रिश्ता थे, जबकि एक दूसरी राय के मुताबिक़ वह इंसान ही थे जिन्हें अल्लाह तआला ने बहुत लम्बी उम्र दे रखी है। जैसे जिन्नों में से इब्लीस को अल्लाह तआला ने तवील उम्र अता कर रखी है ऐसे ही उसने इंसानों में से अपने एक नेक और बरग़ज़ीदा बन्दे को भी बहुत तवील उम्र से नवाज़ा है और उनका नाम हज़रत खिज़र है। (वल्लाह आलम!)

रिवायात से ये भी मालूम होता है कि हज़रत मूसा अलै. को किसी वक़्त ये ख़याल आया कि अल्लाह तआला ने शायद मुझे रुए ज़मीन के तमाम इंसानों से बढ़ कर इल्म अता फ़रमाया है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने आप पर ये वाज़ेह करने के लिये कि {وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ} आपको हिदायत फ़रमाई कि आप फ़लाँ जगह हमारे एक बंदा-ए-ख़ास से

मुलाक़ात करें और कुछ अरसा उसके साथ रह कर उससे इल्म व हिकमत सीखें। इस हुक्म की तामील में आप अपने नौजवान साथी हज़रत यूशा बिन नून को साथ लेकर सफ़र पर रवाना हो गए।

आयत 60

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

"और याद करो जब मूसा ने अपने नौजवान (साथी) से कहा कि मैं (चलना) नहीं छोड़ूँगा, यहाँ तक कि दो दरियाओं के मिलने के मक़ाम पर पहुँच जाऊँ या मैं बरसों चलता ही रहूँगा।"

इससे मालूम होता है कि आपको बताया गया था कि वह शख्स मज्मअ-अल-बहरीन (दो दरियाओं के संगम) पर मिलेगा। मज्मअ-अल-बहरीन के इस मक़ाम के बारे में भी मुफ़स्सरीन के यहाँ इख्तिलाफ़ पाया जाता है। इस सिलसिले में एक राय तो ये है कि बहरा-ए-अहमर (red sea) के शुमाली कोने से निकलने वाली दो खाड़ियों (खलीज स्वेज़ और खलीज उक़बा) के मुक़ामे इत्तेसाल को मज्मअ-अल-बहरीन कहा गया है, जबकि एक दूसरी राय के मुताबिक़ (और ये राय ज़्यादा सही मालूम होती है) ये मक़ाम दरिया-ए-नील पर वाक़ेअ है। दरिया-ए-नील दो दरियाओं यानि अलनील अल अज़रक़ और अल नील अल बैज़ से मिल कर बना है। ये दोनों दरिया सूडान की तरफ़ से मिस्र में दाख़िल

होते हैं। एक दरिया के पानी का रंग नीला है और जबकि दूसरे का सफ़ेद है (पाकिस्तान में भी अटक के मक़ाम पर दरिया-ए-सिंध के साफ़ पानी और दरिया-ए-काबुल के गदले पानी का मिलाप ऐसा ही मंज़र पेश करता है)। चुनाँचे इस राय के मुताबिक़ जिस मक़ाम पर ये दोनों दरिया मिल कर एक दरिया (मिस्र के दरिया-ए-नील) की शक्ल इख्तियार करते हैं उस मक़ाम को मज्मअ-अल-बहरीन कहा गया है और ये मक़ाम खर्तूम की सरहद के आस-पास है।

आयत 61

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا

"फिर जब वह दोनों पहुँच गए दो दरियाओं के मिलने के मक़ाम पर"

نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

"तो वह अपनी मछली को भूल गए और उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया था दरिया में सुरंग की तरह।"

ये भुनी हुई मछली थी जिसको वह खाने की गर्ज़ से अपने साथ लेकर आए थे। इस मछली को अलाह तआला की तरफ़ से निशानी बनाया गया था और उन्हें हिदायत की गई थी के जिस मक़ाम पर ये मछली ज़िन्दा होकर दरिया में चली जाएगी उसी जगह मतलूबा शख्सियत से उनकी मुलाक़ात होगी। चुनाँचे मज्मअ-अल-बहरीन के क़रीब पहुँच कर वह मछली ज़िन्दा होकर उनके तोशेदान से बाहर आई और

उसने सुरंग सी बना कर दरिया में अपनी राह ली। इस मंज़र को हज़रत यूशा बिन नून ने देखा भी मगर हज़रत मूसा अलै. से इसका तज़किरा करना भूल गए।

आयत 62

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَاۗءَنَا ۡ لَقَدۡ لَقِيۡنَا مِنۡ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝۶۲

"फिर जब वह दोनों (वहाँ से) आगे निकल गए तो मूसा ने अपने साथी से कहा कि अब हमारा नाश्ता ले आओ, अपने इस सफ़र से तो हमें बहुत थकान हो गई है।"

यहाँ मुफ़स्सरीन ने एक बहुत अहम नुक्ता बयान किया है कि आपको थकावट इस वजह से महसूस हुई कि आप मतलूबा मक़ाम से आगे निकल गए थे। वरना इस मक़ाम तक पहुँचने में आपको किसी क़िस्म की थकावट का अहसास नहीं हुआ था।

आयत 63

قَالَ اَرَءَيۡتَ اِذۡ اَوَيۡنَاۤ اِلَى الصَّخۡرَةِ فَاِنِّىۡ نَسِيۡتُ الۡحُوۡتَ ۡ

"उस (नौजवान) ने कहा: देखिये, जब हम ठहरे थे चट्टान के पास तो मैं भूल गया मछली को (निगाह में रखना)"

وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ۝٦٣

"और नहीं मुझे भुलाए रखा मगर शैतान ने कि मैं (आपसे) इसका ज़िक्र करूँ, और उसने तो बना लिया था अपना रास्ता दरिया में अजीब तरह से।"

यानि उस जगह वह मछली ज़िन्दा होकर अजीब तरीक़े से दरिया में चली गई थी।

आयत 64

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ

"मूसा ने कहा: यही तो था जिसकी हमें तलाश थी!"

यही तो हमें निशानी बताई गई थी कि जिस जगह मछली ज़िन्दा होकर दरिया में चली जाएगी उस जगह पर अल्लाह के उस बन्दे से हमारी मुलाक़ात होगी। चुनाँचे चलो अब वापस उसी जगह पर पहुँचे।

فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۝٦٤

"पस वह दोनों वापस लौटे अपने नक़्शे पा (पैरों के निशान) को देखते हुए।"

वापस अपने क़दमों के निशानात पर चलते हुए वह ऐन उसी जगह पर आ गए जहाँ चट्टान के पास मछली ज़िन्दा होकर दरिया में कूद गई थी।

आयत 65

فَوَجَدَا عَبۡدًا مِّنۡ عِبَادِنَآ اٰتَيۡنٰهُ رَحۡمَةً مِّنۡ عِنۡدِنَا وَعَلَّمۡنٰهُ مِنۡ لَّدُنَّا عِلۡمًا ۝٦٥

"तो पाया उन्होंने (वहाँ) हमारे बन्दों में से एक बन्दे को जिसे हमने रहमत अता की थी अपनी तरफ़ से और उसे सिखाया था एक इल्म ख़ास अपने पास से।"

यानि अल्लाह तआला ने अपने पास से, अपने ख़ास खज़ाना-ए-फैज़ से उसे ख़ुसूसी इल्म अता कर रखा था। "इल्मे लदुन्नी" की इस्तलाह यहीं से अखज़ की गई है। लदुन के मायने क़रीब या नज़दीक के हैं। चुनाँचे इल्मे लदुन्नी से मुराद वह इल्म है जो अल्लाह तआला अपनी ख़ास रहमत से किसी को अता कर दे। यानि एक इल्म तो वह है जो इन्सान अपने हवासे खम्सा के ज़रिये से बा-क़ायदा मेहनत व मशक्क़त के अमल से गुज़र कर हासिल करता है, जैसे मदारिसे अरबिया में सर्फ़ व नह्व, तफ़सीर व हदीस और फ़िक़्ह वगैरह उलूम हासिल किये जाते हैं, या स्कूल व कॉलेज में मुतदावल उमरानी व साइन्सी उलूम सीखे जाते हैं, लेकिन इल्म की एक क़िस्म वह भी है जो अल्लाह तआला बराहेरास्त किसी इन्सान के दिल में डाल देता है और उसको उसकी तहसील के लिये कोई मशक्क़त वगैरह भी नहीं उठानी पड़ती।

आयत 66

قَالَ لَهٗ مُوۡسٰی هَلۡ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤی اَنۡ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمۡتَ رُشۡدًا ﴿۶۶﴾

"मूसा ने उससे कहा: क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त पर कि आप मुझे सिखायें उसमें से जो भलाई आपको सिखाई गई है?"

मुझे अल्लाह तआला ने बताया है कि उसने आपको ख़ास हिकमत और दानाई अता कर रखी है। अगर आप इजाज़त दें तो मैं कुछ अरसा आपके साथ रहूँ और आप मुझे भी उस इल्मे ख़ास में से कुछ सिखा दें।

आयत 67

قَالَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِیَ صَبۡرًا ﴿۶۷﴾

"उसने कहा: मेरे साथ (रह कर) आप हरगिज़ सब्र नहीं कर सकेंगे।"

आयत 68

وَ كَيۡفَ تَصۡبِرُ عَلٰی مَا لَمۡ تُحِطۡ بِهٖ خُبۡرًا ﴿۶۸﴾

"और आप कैसे सब्र करेंगे उस चीज़ पर जिसकी आपको पूरी-पूरी ख़बर नहीं!"

मेरे साथ रह कर आपको मेरे काम बड़े अजीब लगेंगे और आप सब्र नहीं कर पायेंगे, क्योंकि उन कामों की हक़ीक़ी गर्ज़ व ग़ायत के बारे में आपको पूरी तरह आगाही हासिल नहीं

होगी। जो बातें आपके दायरा-ए-इल्म से बाहर होंगी उन पर आप कैसे सब्र कर पायेंगे!

आयत 69

قَالَ سَتَجِدُنِيٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

“मूसा ने कहा: आप मुझे इंशाअल्लाह साबिर पायेंगे, और मैं ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करूँगा आपके किसी हुक्म की।”

यहाँ पर एक अहम नुक्ता लायक़-ए-तवज्जो है कि जब सब्र करने की बात हुई तो इसके साथ हज़रत मूसा ने इंशाअल्लाह कहा, लेकिन नाफ़रमानी ना करने के वादे के साथ ‘इंशाअल्लाह’ नहीं कहा। चुनाँचे बाद में हम देखेंगे कि इसी वादे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी आपसे हुई जिसके साथ इंशाअल्लाह नहीं कहा गया था। इस हवाले से इसी सूरत का वह हुक्म भी ज़हन में रखिये जिसमें हुज़ूर ﷺ को मुख़ातिब करके फ़रमाया गया है: {وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا} (आयत 23) {اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا} (आयत 24) “और किसी चीज़ के बारे में ये कभी ना कहा करें कि मैं कल ये करने वाला हूँ मगर ये कि अल्लाह चाहे, और अपने रब को याद कर लिया कीजिये जब आप भूल जायें और कहिये कि मुमकिन है मेरा रब मेरी रहनुमाई कर दे इससे ज़्यादा भलाई की राह की तरफ़।”

आयत 70

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعۡتَنِیۡ فَلَا تَسۡـَٔلۡنِیۡ عَنۡ شَیۡءٍ حَتّٰۤی اُحۡدِثَ لَکَ مِنۡہُ ذِکۡرًا ﴿٧٠﴾

"उसने कहा: अगर आप मेरे साथ चलना चाहते हैं तो किसी चीज़ के बारे में मुझसे खुद ना पूछना यहाँ तक कि मैं खुद ही आपको उसके बारे में बता दूँ।"

बस आप मेरे साथ-साथ रहें और मैं जो कुछ करूँ या मेरे साथ जो कुछ हो आप खामोशी से उसका मुशाहेदा करते रहें, मगर किसी चीज़ के बारे में मुझसे सवाल ना करें। मैं जब मुनासिब समझूँगा उन तमाम चीज़ों की हक़ीक़त और तफ़सील आपको बता दूँगा जो आपके मुशाहिदे में आई होंगी।

आयत 71

فَانۡطَلَقَا ٝ حَتّٰۤی اِذَا رَکِبَا فِی السَّفِیۡنَۃِ خَرَقَہَا ؕ

"फ़िर वह दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि जब वह दोनों सवार हुए एक कश्ती में, तो उसने उस (कश्ती) में शगाफ़ डाल दिया।"

हज़रत मूसा अलै. ने उनकी सवाल ना करने वाली शर्त तस्लीम कर ली और यूँ वह दोनों सफ़र पर रवाना हो गए। जब वह दरिया पार करने के लिये एक कश्ती में सवार हुए तो उन्होंने (उनको साहिबे मूसा कहें या हज़रत खिज़र कहें) बैठते ही कश्ती का एक तख्ता उखाड़ दिया। हज़रत मूसा ने

जब ये देखा तो आप कहाँ ख़ामोश रहने वाले थे, फ़ौरन उनको टोक दिया।

قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾

"मूसा ने कहा: आपने इसे फाड़ डाला है ताकि गर्क़ कर दें इसके तमाम सवारों को? ये तो आपने बहुत ही गलत काम किया है।"

आयत 72

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾

"उसने कहा: मैंने कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे?"

इस क़िस्से में मज़कूरा तीन वाक़िआत के हवाले से एक अहम बात समझने की ये है कि अल्लाह के जिन अहकाम के मुताबिक़ इस कायनात का निज़ाम चल रहा है, उनकी हैसियत तशरीई (शरीअत के मुताल्लिक़) नहीं बल्कि तकवीनी (कायनात के इंतेज़ामी अमूर से मुताल्लिक़) है। इन अहकाम की तन्फीज़ के लिये फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। इस सिलसिले में शाह वलीउल्लाह रह. की राय ये भी है कि इस मक़सद के लिये औलिया अल्लाह की अरवाह को भी मलाएका के तबक़ा-ए-असफ़ल में शामिल कर दिया जाता है और वह भी फ़रिश्तों के साथ मिल कर अल्लाह तआला के अहकाम की तन्फीज़ में हिस्सा लेते हैं। बहरहाल इन तकवीनी अहकाम की तामील के नतीजे में जो वाक़िआत रूनुमा होते हैं हम उनके सिर्फ़ ज़ाहिरी पहलुओं को ही देख

सकते हैं। किसी वाक़िये के पीछे अल्लाह की मशीयत क्या है? इसका इदराक हम नहीं कर सकते। ज़रूरी नहीं कि कोई वाक़िया या कोई चीज़ बज़ाहिर जैसे दिखाई दे उसकी हक़ीक़त भी वैसी ही हो। मुमकिन है हम किसी चीज़ को अपने लिये बुरा समझ रहे हों मगर उसके अन्दर हमारे लिये खैर हो और जिस चीज़ को अच्छा समझ रहे हों, वह हक़ीक़त में अच्छी ना हो। सूरतुल बक़रह में हम ये आयत पढ़ चुके हैं: {وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَـيْـــًٔـا وَّھُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَـيْـــًٔـا وَّھُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ} (आयत 216) "हो सकता है तुम किसी चीज़ को बुरा समझो और वह तुम्हारे लिये बेहतर हो और हो सकता है तुम किसी चीज़ को पसन्द करो और वह तुम्हारे लिये बुरी हो, अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।" चुनाँचे एक बंदा-ए-मोमिन को तफ़वीज़ुल अम्र का रवैया अपनाना चाहिये कि ऐ अल्लाह! मेरा मामला तेरे सुपर्द है, मेरे लिये जो तू पंसद करेगा मैं उसी पर राज़ी रहूँगा, क्योंकि तेरे हाथ में खैर ही खैर है: {بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ} (आले इमरान 26)

आयत 73

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ۝ 73

"मूसा ने कहा: आप मेरा मुआख्ज़ा ना कीजिये मेरे भूल जाने पर और ना ही मेरे मामले में ज़्यादा सख्ती कीजिए।"

मैं भूल गया था कि आपसे मैंने सवाल ना करने का वादा किया है, लिहाज़ा आप मेरी इस भूल की वजह से मेरा मुआख्ज़ा ना करें और दरगुज़र से काम लें।

आयत 74

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ

“फ़िर वह दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि उनकी मुलाक़ात हुई एक लड़के से तो उस (खिज़र) ने उसको क़त्ल कर दिया”

قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ

“मूसा ने कहा: क्या आपने क़त्ल कर दिया एक मासूम जान को बगैर किसी जान के (बदले के)?”

उसने कोई गुनाह नहीं किया था, किसी का खून नहीं बहाया था, फ़िर भी आपने उसे क़त्ल कर दिया।

لَقَدْ جِئْتَ شَيْـــًٔا نُّكْرًا ۝74

“ये तो आपने बहुत ही नामाक़ूल हरकत की है।”

आयत 75

قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا ﴿۷۵﴾

"उस (खिज़र) ने कहा: क्या मैंने आपसे कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे?"

आयत 76

قَالَ اِنۡ سَاَلۡتُكَ عَنۡ شَىۡءٍۢ بَعۡدَهَا فَلَا تُصٰحِبۡنِىۡ‌ۚ

"मूसा ने कहा: अगर मैं आपसे सवाल करूँ किसी चीज़ के बारे में इसके बाद तो आप मुझे अपने साथ ना रखियेगा।

एक दफ़ा फ़िर आप मेरी इस भूल को नज़रअंदाज़ कर दें, लेकिन अगर तीसरी मर्तबा ऐसा हुआ तब बेशक आप मुझे अपने साथ रखने से इन्कार कर दें।

قَدۡ بَلَغۡتَ مِنۡ لَّدُنِّىۡ عُذۡرًا ﴿۷۶﴾

"आप पहुँच चुके हैं मेरी तरफ़ से हद-ए-उज़्र को।"

यानि आपकी तरफ़ से मुझ पर हुज्जत क़ायम हो चुकी है। लिहाज़ा इसके बाद आप मुझे साथ ना रखने के बारे में उज़्र कर सकते हैं।

आयत 77

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِۨ اسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا

"फ़िर वह दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि जब पहुँचे एक बस्ती के लोगों के पास तो उन्होंने खाना माँगा बस्ती वालों से"

कि हम मुसाफिर हैं, भूखे हैं, हमें खाना चाहिए।

فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا

"तो उन्होंने इन्कार कर दिया उन दोनों की मेहमान नवाज़ी से"

उस बस्ती के बाशिंदे कुछ ऐसे कठोर दिल थे कि पूरी बस्ती में से किसी एक शख्स ने भी उन्हें खाना खिलाने की हामी ना भरी।

فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ۭ

"तो उन दोनों ने वहाँ एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो उस (खिज़र) ने उसे सीधा कर दिया।"

قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ۝77

"मूसा ने कहा: अगर आप चाहते तो इस पर कुछ उजरत ले लेते।"

ये ऐसे नाहंजार लोग हैं कि इन्होंने हमें खाना तक खिलाने से इन्कार कर दिया था और आपने बगैर किसी मुआवज़े के इनकी दीवार मरम्मत कर दी है। बेहतर होता अगर आप

इस काम की कुछ उजरत तलब करते और इसके एवज़ हम खाना ही खा लेते।

आयत 78

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝٧٨

"उस (खिज़र) ने कहा: बस अब ये जुदाई (का वक़्त) है मेरे और आपके दरमियान, अब मैं आपको बताए देता हूँ असल हक़ीक़त उन चीज़ों की जिन पर आप सब्र ना कर सके।"

आयत 79

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ

"जहाँ तक उस कश्ती का मामला है तो वह ग़रीब लोगों की (मिलकियत) थी जो मेहनत करते थे दरिया में"

वह बहुत ग़रीब और नादार लोग थे, सिर्फ़ वह कश्ती ही उनके मआश का सहारा थी। उसके ज़रिये वह लोगों को दरिया के आर-पार ले जाते और इस मज़दूरी से अपना पेट पालते थे।

فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ۝٧٩

“तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, और उनके आगे एक बादशाह था जो पकड़ रहा था हर कश्ती को ज़बरदस्ती।”

बादशाह हर उस कश्ती को अपने क़ब्ज़े में ले लेता था जो सही व सालिम होती थी। उन नादार लोगों की कश्ती भी अगर बे-ऐब होती तो बादशाह उनसे ज़बरदस्ती छीन लेता। चुनाँचे मैंने उसका एक तख्ता तोड़ कर उसे ऐबदार कर दिया। अब जब बादशाह उस ऐबदार कश्ती को देखेगा तो उसे छोड़ देगा और इस तरह उनकी रोज़ी का वाहिद सहारा उनसे नहीं छिनेगा। पूरी कश्ती छिन जाने के मुक़ाबले में एक तख्ते का टूट जाना तो मामूली बात है। उस तख्ते की वह लोग आसानी से मरम्मत कर लेंगे और यूँ वह कश्ती उनकी रोज़ी का ज़रिया बनी रहेगी। लिहाज़ा वह तख्ता उन लोगों की भलाई के लिये तोड़ा गया था ना कि किसी को नुक़सान पहुँचाने के लिये।

आयत 80

وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ

“रहा वह लड़का! तो उसके वालिदैन दोनों मोमिन थे, तो हमें यह खदशा हुआ कि वह सरकशी

يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾

और नाशुक्री से उन पर ताअदि करेगा।"

हज़रत खिज़र को अपने ख़ास इल्म की बिना पर मालूम हुआ होगा कि उस बच्चे के genes अच्छे नहीं हैं और बड़ा होकर अपने वालिदैन के लिये सोहाने रूह साबित होगा और सरकशी और नाशुक्री की रविश इख्तियार करके उनको आजिज़ कर देगा।

आयत 81

فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

"पस हमने चाहा कि उन दोनों को बदले में दे उनका रब इससे बेहतर (औलाद) पाकीज़गी में और क़रीबतर शफ़क्क़त में।"

बच्चे के वालिदैन चूँकि नेक और सालेह लोग थे इसलिये उनके रब ने चाहा कि उस बच्चे की जगह उन्हें एक ऐसा फ़रज़न्द अता फ़रमाए जो पाकीज़ा नफ्सी व परहेज़गारी में उससे बेहतर और मुरव्वत व दर्दमंदी में उससे बढ कर हो। चुनाँचे वक़्ती तौर पर तो बच्चे के फौत होने से वालिदैन पर गम का पहाड़ टूट पड़ा होगा लेकिन हक़ीक़त में ये सब कुछ उनकी बेहतरी के लिये ही किया गया था।

आयत 82

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ

"और रही वह दीवार! तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी, और उसके नीचे ख़ज़ाना था उन दोनों के लिये, और उनका बाप नेक आदमी था।"

बाप ने जब देखा होगा कि मेरा आख़री वक़्त क़रीब आ लगा है और मेरे बच्चे अभी बहुत छोटे हैं तो उसने अपनी सारी पूँजी इकठ्ठी करके दीवार की बुनियाद में दफ़न कर दी होगी, इस उम्मीद पर कि जब वह बड़े होंगे तो निकाल लेंगे। लेकिन अगर वह दीवार वक़्त के पहले ही गिर जाती तो इस बस्ती के नाहन्जार लोग जो किसी मुसाफ़िर को खाना खिलाने के भी रवादार नहीं, उन यतीमों का दफ़ीना लूट कर ले जाते।

فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ

"लिहाज़ा आपके रब ने चाहा कि वह दोनों अपनी जवानी को पहुँच जायें और निकाल लें अपना ख़जाना"

बाप चूँकि नेक आदमी था इसलिये अल्लाह तआला की तरफ़ से दीवार की मरम्मत का अहतमाम करके उसके कमसिन यतीम बच्चों की भलाई का सामान किया गया।

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۭ

"(ये सब अमूर) आपके रब की रहमत से (तय हुए) थे, और मैंने अपनी राय से इन्हें सर अंजाम नहीं दिया।"

यानि ये तमाम अमूर अल्लाह की रहमत का मज़हर थे। ये अल्लाह ही के फ़ैसले थे और उसी के हुक्म से इनकी तन्फीज़ व तामील की गई। मैंने अपनी मर्ज़ी से इनमें से कुछ भी नहीं किया। इन अमूर के सिलसिले में अल्लाह के अहकाम की तन्फीज़ करने वाले अल्लाह के वह बन्दे हज़रत खिज़र थे, कोई और वली अल्लाह थे, या कोई फ़रिश्ता थे, इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता। इस सारे वाक़िये में असल बात जो समझने की है वह ये है कि अल्लाह के ऐसे तमाम बन्दे कारकुनाने क़ज़ा व क़द्र की फौज़ के सिपाही हैं और वह लोग अल्लाह तआला के जिन अहकाम की तन्फीज़ कर रहे हैं उनका ताल्लुक़ शरीअत से नहीं बल्कि तकवीनी अमूर से है। दुनिया में जो वाक़िआत व हादसात रूनुमा होते हैं हम सिर्फ़ उनके ज़ाहिरी पहलु को देख कर ही उन पर खुशी का इज़्हार करते हैं या दिल गिरफ़्ता होते हैं। बहरहाल हमें यक़ीन होना चाहिये कि अल्लाह तआला की तरफ़ से जो कुछ होता है उसमें खैर और भलाई ही होती है। लिहाज़ा हमें अपने तमाम मामलात में "तफ़वीज़ुल अम्र" का रवैय्या अपनाते हुए राज़ी ब-रज़ा-ए-रब रहना चाहिये कि: "हरचे साक़ी मारेख्त ऐन अल्ताफ़ अस्त!"

ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۸۲﴾

“ये है असल हक़ीक़त उन बातों की जिन पर आप सब्र ना कर सके।”

आयात 83 से 101 तक

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِی الْقَرْنَيْنِ ۭ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ
مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿۸۳﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِی الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ
كُلِّ شَیْءٍ سَبَبًا ﴿۸۴﴾ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۸۵﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ
مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِیْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ
وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۬ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ
تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿۸۶﴾ قَالَ اَمَّا
مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ
عَذَابًا نُّكْرًا ﴿۸۷﴾ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ
جَزَاۗءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿۸۸﴾ ثُمَّ

اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا
تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾
كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا
﴿٩٢﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا
قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا يٰذَا
الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى
الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا
وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ
فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾
اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ
قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْۤ اُفْرِغْ
عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾ فَمَا اسْطَاعُوْۤا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا
اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا
جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا ﴿٩٨﴾
وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى

الصُّوۡرِ فَجَمَعۡنٰهُمۡ جَمۡعًا ﴿۹۹﴾ وَّعَرَضۡنَا جَهَنَّمَ یَوۡمَئِذٍ
لِّلۡکٰفِرِیۡنَ عَرۡضَا ﴿۱۰۰﴾ الَّذِیۡنَ کَانَتۡ اَعۡیُنُهُمۡ فِیۡ غِطَآءٍ
عَنۡ ذِکۡرِیۡ وَ کَانُوۡا لَا یَسۡتَطِیۡعُوۡنَ سَمۡعًا ﴿۱۰۱﴾

इस रुकूअ में ज़ुल्क़रनैन के बारे में यहूदे मदीना के सवाल का जवाब दिया गया है। बीसवीं सदी के आग़ाज़ तक अक्सर मुफ़स्सरीन ज़ुल्क़रनैन से ना वाक़िफ़ थे। चुनाँचे तेरह सौ साल तक आम तौर पर सिकंदर-ए-आज़म ही को ज़ुल्क़रनैन समझा जाता रहा। इसकी वजह ये थी कि क़ुरान में ज़ुल्क़रनैन की फ़तुहात का ज़िक्र जिस अंदाज़ में हुआ है ये अंदाज़ सिकंदर-ए-आज़म की फ़तुहात से मिलता-जुलता है, लेकिन हक़ीक़त ये है कि ज़ुल्क़रनैन की सीरत का वह नक़्शा जो क़ुरान ने पेश किया है उसकी सिकंदर-ए-आज़म की सीरत के साथ सिरे से कोई मुनासिबत ही नहीं।

बहरहाल जदीद तहक़ीक़ से मालूम हुआ है कि ज़ुल्क़रनैन क़दीम ईरान के बादशाह कैखोरस या साएरस का लक़ब था। ये उस ज़माने की बात है जब ईरान के ईलाक़े में दो अलग-अलग खुद मुख्तार मम्लिकतें क़ायम थीं। एक का नाम पारस था जिससे "फ़ारस" का लफ्ज़ बना है और दूसरे का नाम "मादा" था। कैखोरस या साएरस ने इन दोनों मम्लिकतों को मिला कर एक मुल्क बना दिया और यूँ सल्तनते ईरान के सुनहरे दौर का आग़ाज़ हुआ। दो मम्लिकतों के फ़रमाँरवा होने की अलामत के तौर पर उसने

अपने ताज में दो सींग लगा रखे थे और इस तरह उसका लक़ब ज़ुल्क़रनैन (दो सींगो वाला) पड़ गया।

आयत 83

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۭ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۝83

"और ये लोग आपसे ज़ुल्क़रनैन के बारे में पूछते हैं। आप कहिये कि अभी मैं आप लोगों को उसका हाल बताता हूँ।"

ज़ुल्क़रनैन के बारे में जदीद तहक़ीक़ को अहले इल्म के हल्के में मुतारिफ़ कराने का सेहरा मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह. के सिर है। उन्होंने अपनी तफ़सीर "तर्जुमानुल क़ुरान" में इस मौज़ू पर बहुत तफसील से बहस की है और साबित किया है कि क़दीम ईरान का बादशाह कैखोरस या साएरस ही ज़ुल्क़रनैन था। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह. की तहक़ीक़ की बुनियाद उन मालूमात पर है जो शहंशाह-ए-ईरान रज़ा शाह पहलवी के दौर में एक खुदाई के दौरान दस्तयाब हुई थीं। इस खुदाई के दौरान उस अज़ीम फ़ातेह बादशाह का एक मुजस्समा भी दरयाफ्त हुआ था और मक़बरा भी। इस खुदाई से मिलने वाली मालूमात की बुनियाद पर रज़ा शाह पहलवी ने उसकी ढाई हज़ार साला बरसी मनाने का ख़ुसूसी अहतमाम किया था। दरयाफ्त शुदा मुजस्समे के सिर पर जो ताज था उसमें दो सींग भी मौजूद थे जिससे ये साबित हो गया कि ईरान का यही बादशाह

(कैखोरस या साएरस) था जो तारीख़ में ज़ुल्क़रनैन के लक़ब से मशहूर है।

अब ये सवाल पैदा होता है कि यहूदियों ने ख़ुसूसी तौर पर ये सवाल क्यों पूछा था और ज़ुल्क़रनैन की शख्सियत में उनकी इस दिलचस्पी का सबब क्या था? इस सवाल का जवाब हमें बनी इसराइल की तारीख़ से मिलता है। जब 87 क़ब्ल मसीह के लगभग ईराक़ के बादशाह बख्तनसर ने फ़लस्तीन पर हमला करके येरुशलम को तबाह किया तो उस शहर की अक्सरियत को तहे तैग़ (सर क़लम) कर दिया गया और ज़िन्दा बच जाने वालों को वह अपनी फौज़ के साथ बाबुल (Babilonia) ले गया, जहाँ ये लोग डेढ़ सौ साल तक असीरी की हालत में रहे।

जब ईरान के बादशाह कैखोरस या साएरस (आइन्दा सतूर में इन्हें "ज़ुल्क़रनैन ही लिखा जायेगा) ने ईरान को मुत्तहिद करने के बाद अपनी फ़तुहात का दायरा वसीअ किया तो सबसे पहले ईराक़ को फ़तह किया। मशरिक़े वुस्ता के मौजूदा नक़्शे को ज़हन में रखा जाए तो फ़लस्तीन, इसराइल, शरक़ उरदन, मगरबी किनारा और लेबनान के मुमालिक पर मुश्तमिल पूरे इलाक़े को उस ज़माने में शामे अरब या शाम और इससे मशरिक़ में वाक़ेअ इलाक़े को ईराक़े अरब या ईराक़ कहा जाता था, जबकि ईराक़ के मज़ीद मशरिक़ में ईरान वाक़ेअ था। ईराक़ पर क़ब्ज़ा करने के बाद ज़ुल्क़रनैन ने बाबुल में असीर यहूदियों को आज़ाद कर दिया और उन्हें इजाज़त दे दी कि वह अपने मुल्क वापस जाकर अपना तबाहशुदा शहर येरुशलम दोबारा आबाद कर लें। चुनाँचे हज़रत उज़ैर अलै. की क़यादत में यहूदियों का

क़ाफिला बाबुल से वापस येरुशलम आया। उन्होंने अपने इस शहर को फ़िर से आबाद किया और हेकल सुलेमानी को भी अज़सर नौ तामीर किया। इस पसमंज़र में यहूदी ज़ुल्क़रनैन को अपना मोहसिन समझते हैं और इसी सबब से उनके बारे में उन्होंने हुज़ूर ﷺ से ये सवाल पूछा था।

ज़ुल्क़रनैन की फ़तुहात के सिलसिले में तीन मुहिम्मात (जंगों) का ज़िक्र तारीख़ में भी मिलता है। इन मुहिम्मात में ईरान से मगरिब में बहरा-ए-रोम (Mediterranian) तक पूरे इलाक़े की तस्ख़ीर, मशरिक़ में बलोचिस्तान और मकरान तक लश्कर कशी और शिमाल में बहरा-ए-खज़र (Caspian Sea) और बहरा-ए-असवद (Black Sea) के दरमियानी पहाड़ी इलाक़े की फ़तुहात शामिल हैं। ज़ुल्क़रनैन का ये सिलसिला-ए-फ़तुहात हज़रत उमर रज़ि. के दौरे ख़िलाफ़त की फ़तुहात के सिलसिले से मुशाबेह है। हज़रत उमर रज़ि. के दौर में भी जज़ीरा नुमाए अरब से मुख्तलिफ़ सिम्तों में तीन लश्करों ने पेशक़दमी की थी, एक लश्कर शाम और फ़िर मिस्र गया था, दूसरे लश्कर ने ईराक़ के बाद ईरान को फ़तह किया था, जबकि तीसरा लश्कर शिमाल में कोह क़ाफ़ (Caucasus) तक जा पहुँचा था।

क़दीम रिवायात में ज़ुल्क़रनैन के बारे में कुछ ऐसी मालूमात भी मिलती हैं कि इब्तदाई उम्र में वह एक छोटी सी ममलिकत के शहज़ादे थे। उनके अपने मुल्क में कुछ ऐसे हालात हुए कि कुछ लोग उनकी जान के दरपे हो गए। वह किसी ना किसी तरह वहाँ से बच निकलने में कामयाब हो गए और कुछ अरसा सहरा में रूपोश रहे। इसी अरसे के दौरान उन तक किसी नबी की तालीमात पहुँची। ये भी

मुमकिन है कि ज़रतश्त ही अल्लाह के नबी हों और उन्हीं की तालीमात से उन्होंने इस्तफ़ादा किया हो। बहरहाल क़ुरान ने ज़ुल्क़रनैन का जो किरदार पेश किया है वह एक नेक और सालेह बंदा-ए-मोमिन का किरदार है और इस किरदार की ख़ुसूसियात तारीख़ी ऐतबार से उस ज़माने के किसी और फ़ातेह हुक्मरान पर मुन्तबिक़ नहीं होतीं।

आयत 84

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾

"हमने उसे ज़मीन में तमक्कुन अता किया था और उसे हर तरह के असबाब व वसाएल मुहैय्या किये थे।"

आयत 85

فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

"तो उसने एक (मुहिम का) सरो सामान किया।"

आयत 86

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ

"यहाँ तक कि जब वह सूरज के गुरूब होने की जगह तक पहुँचा"

ये ज़ुल्क़रनैन की मगरबी इलाक़ों पर लश्कर कशी का ज़िक्र है, जब वह पेश क़दमी करते हुए बहरा-ए-रोम (Mediterranian Sea) के साहिल तक जा पहुँचे। चूँकि उस ज़माने में उन लोगों को पूरी दुनिया का नक़्शा मालूम नहीं था इसलिये वह यही समझ रहे होंगे कि हम इस सिम्त में दुनिया या ज़मीन की आखरी सरहदों तक पहुँच गए हैं और इससे आगे बस समन्दर ही समन्दर है। वहाँ साहिल पर खड़े होकर उन्हें सूरज बज़ाहिर समन्दर में गुरूब होता हुआ नज़र आया और इस तरह वह इस जगह को مَغْرِبَ الشَّمْسِ (सूरज के गुरूब होने की जगह) समझे।

وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ

"उसने उसे गुरूब होते हुए पाया एक गदले चश्मे में"

इससे Aegean Sea मुराद है जिसका पानी बहुत गदला है।

وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۥ

"और उसने पाया वहाँ एक क़ौम को।"

यानि उस इलाक़े को जब उन्होंने फ़तह कर लिया तो वहाँ बसने वाली क़ौम उनकी रिआया बन गई।

قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

"हमने कहा: ऐ ज़ुल्क़रनैन! तुम चाहो तो इन्हें सज़ा दो और चाहो तो इन (के बारे) में हुस्ने सुलूक का मामला करो।"

यानि आपने इस इलाक़े को ब-ज़ोर-ए-बाज़ू फ़तह किया है, अब यहाँ के बाशिंदे आपके रहमो-करम पर हैं, आपको इन पर मुकम्मल इख्तियार है। आप चाहें तो इन पर सख्ती करें और आप चाहें तो इनके दरमियान हुस्ने सुलूक की रिवायत क़ायम करें। आयत के अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर होता है कि ये बात अल्लाह तआला ने बराहेरास्त ज़ुल्क़रनैन को मुखातिब करके फ़रमाई, लेकिन ज़रूरी नहीं कि हक़ीक़त में ऐसा ही हुआ हो। अगर तो वह नबी थे (वल्लाह आलम) तो ये मुमकिन भी है, वरना इससे मुराद अलक़ाअ या इल्हाम भी हो सकता है। जैसे सूरतुल नहल (आयत 68) में शहद की मक्खी की तरफ़ वही किये जाने का ज़िक्र है।

आयत 87

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨٧

"उसने कहा: जिसने ज़ुल्म किया हम उसे सज़ा देंगे, फ़िर वह लौटाया जायेगा अपने रब की तरफ़ और वह उसे बहुत सख्त अज़ाब देगा।"

यहाँ ज़ुल्म से मुराद कुफ़्र और शिर्क भी हो सकता है।

आयत 88

وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ࣙالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

"और जो कोई ईमान लाया और उसने नेक आमाल किये तो उसके लिये है अच्छी जज़ा, और उससे हम बात करेंगे अपने मामले में नरमी से।"

यानि इस मफ़तूहा इलाक़े में अपनी रिआया के अहले ईमान नेक लोगों से हम तमाम मामलात में नरमी से काम लेंगे और खराज वगैरह की वसूली के सिलसिले में उन पर सख्ती नहीं करेंगे।

आयत 89

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾

"फ़िर उसने एक (और मुहिम का) सरो सामान किया।"

मगरबी मुहिम से फ़ारिग होने के बाद ज़ुल्क़रनैन ने मशरक़ी इलाक़ों की तरफ़ पेश क़दमी का मंसूबा बनाया।

आयत 90

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ

"यहाँ तक कि वह सूरज के तुलूअ होने की जगह पर पहुँच गया"

इस मुहिम के सिलसिले में तारीख़ी तौर पर मकरान के इलाक़े तक ज़ुल्क़रनैन की पेश क़दमी साबित है। (वल्लाह

आलम!) मुमकिन है साहिल मकरान पर खड़े होकर भी उन्होंने महसूस किया हो कि वह इस सिम्त में भी ज़मीन की आख़री हद तक पहुँच गए हैं।

وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۝۹۰

"उसने उसको तुलूअ होते पाया एक ऐसी क़ौम पर जिसके लिये हमने इस (सूरज) के मुक़ाबिल कोई ओट नहीं रखी थी।"

उस ज़माने में ये इलाक़ा Gedrosia कहलाता था। यहाँ ऐसे वहशी क़बाइल आबाद थे जो ज़मीन पर सिर्फ़ दीवारें खडी करके अपने घर बनाते थे और उस ज़माने तक उनके तमद्दुन (civilization) में घरों पर छतें डालने का कोई तसव्वुर मौजूद नहीं था।

आयत 91

كَذٰلِكَ ؕ

"(फिर) ऐसा ही हुआ।"

फिर यहाँ भी वैसा ही मामला हुआ जैसा कि पहली मुहिम के सिलसिले में हुआ था कि अल्लाह तआला ने उन्हें मुकम्मल फ़तह अता फ़रमाई और इलाक़े में आबाद क़बाइल के मामलात में नरमी या सख्ती करने का पूरा इख्तियार दिया। यहाँ भी ज़ुल्क़रनैन ने ज़ालिम और शरीर (बद) लोगों के साथ सख्ती जबकि नेक और शरीफ़ लोगों के साथ नरमी का रवैय्या इख्तियार करने के अज़्म का इज़हार किया।

وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

"और हम पूरी तरह बाख़बर थे उसके अहवाल से।"

जो कुछ ज़ुल्क़रनैन के पास था और जिन हालात से उसको साबक़ा पेश आया हम उससे पूरी तरह बाख़बर थे।

आयत 92

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾

"फिर उसने एक (और मुहिम का) सरो सामान किया।"

आयत 93

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

"यहाँ तक कि जब वह दो दीवारों के दरमियान पहुँचा"

"सद" दीवार को कहते हैं। दो दीवारों से मुराद यहाँ दो पहाड़ी सिलसिले हैं। दाहिनी तरफ़ मशरिक़ में बहीरा-ए-कैस्पियन था और दूसरी तरफ़ बहीरा-ए-असवद। इन दोनों समुन्दरों के साहिलों के साथ-साथ दो पहाड़ी सिलसिले मुतवाज़ी (बराबर-बराबर) चलते हैं। और इन पहाड़ी सिलसिलों की दरमियानी गुज़रगाह से शिमाली इलाक़ों के वहशी क़बाइल (याजूज माजूज) इस इलाक़े पर हमलावर होते थे।

وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾

"उसने पाया उन दोनों से परे एक क़ौम (के अफ़राद) को जो कोई बात समझ नहीं सकते थे।"

गोया ये भी एक ग़ैर-मुत्मद्दिन (uncivilized) क़ौम थी। इस क़ौम के अफ़राद ज़ुल्क़रनैन और उसके साथियों की ज़बान से क़तअन नाआशना थे और हमलावर लश्कर के लोग भी इस मफ़तूहा क़ौम की ज़बान नहीं समझ सकते थे। मगर फिर भी उन्होंने किसी ना किसी तरह से ज़ुल्क़रनैन के सामने अपना मुद्दा बयान कर ही दिया:

आयत 94

قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ

"उन्होंने कहा: ऐ ज़ुल्क़रनैन! याजूज और माजूज ज़मीन में बहुत फ़साद मचाने वाले लोग हैं"

فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓي اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

"तो क्या हम आपको कुछ खराज अता करें कि उसके एवज़ आप हमारे और उनके दरमियान एक दीवार बना दें?"

यानि आप इन पहाड़ों के दरमियान वाक़ेअ इस वाहिद क़ुदरती गुज़रगाह को बंद कर दें ताकि याजूज व माजूज हम पर हमलावर ना हो सकें। ये वही तस्सवुर या असूल था जिसके तहत आज-कल दरियाओं पर डैम तामीर किये जाते हैं। यानि दो मुतवाज़ी पहाड़ी सिलसिलों के दरमियान अगर दरिया की गुज़रगाह है तो किसी को मुनासिब मक़ाम पर मज़बूत दीवार बना कर पानी का रास्ता रोक दिया जाए ताकि दरिया एक बहुत बड़ी झील की शक्ल इख्तियार कर ले।

ये याजूज माजूज कौन हैं? इनके बारे में जानने की लिये नस्ले इन्सानी की क़दीम तारीख़ का मुताअला ज़रूरी है। क़दीम रिवायात के मुताबिक़ हज़रत नूह अलै. के बाद नस्ले इन्सानी आपके तीन बेटों साम, हाम और याफ़िस से चली थी। इनमें से सामी नस्ल तो बहुत मारूफ़ है। क़ौमे आद, क़ौमे समूद और हज़रत इब्राहीम अलै. सब सामी नस्ल में से थे। हज़रत याफ़िस की औलाद के लोग वस्ती एशिया के पहाड़ी सिलसिले को अबूर करके शिमाल की तरफ़ चले गए। वहाँ से उनकी नस्ल बढ़ते-बढ़ते शिमाली एशिया और यूरोप के इलाक़ों में फ़ैल गई। चुनाँचे मशरिक़ में चीन और हिन्द चीनी की yellow races, मगरिब में रूस और सेकंड यूनियन मुमालिक की अक़वाम, मगरबी यूरोप के एंग्लो सक्सोंस, मशरिक़ी यूरोप में ख़ुसूसी तौर पर शिमाली इलाक़ों और सहरा-ए-गोबी के इलाक़ों की तमाम आबादी हज़रत याफ़िस की नस्ल से ताल्लुक़ रखती है। तौरात में हज़रत याफ़िस के बहुत से बेटों के नाम मिलते हैं। इनमें Mosc, Tobal, Gog & Magog वगैरह क़ाबिले ज़िक्र हैं

(मुमकिन है रूस का शहर मास्को, हज़रत याफ़िस के बेटे मास्क ने आबाद किया हो)। इसी तरह Baltic Sea और Baltic States का नाम गालिबन Tobal के नाम पर है। बहरहाल यूरोप की एंग्लो सैक्सन अक़वाम और तमाम Nordic Races याजूज माजूज ही की नस्ल से हैं। बुनियादी तौर पर ये ग़ैर-मुतमद्दिन और वहशी लोग थे जिनका पेशा लूट-मार और क़त्ल व ग़ारतगिरी था। वह अपने मल्हक़ा (आस-पास के) इलाक़ो पर हमलावर होते, क़त्ल व ग़ारत का बाज़ार गर्म करते और लूट-मार करके वापस चले जाते। उनकी इस गारत-गिरी की झलक मौजूदा दुनिया ने भी देखी जब Anglo Saxons ने एक सैलाब की तरह यूरोप से निकल कर देखते ही देखते पूरे एशिया और अफ्रीक़ा को नौ-आबादयाती निज़ाम (न्यू वर्ल्ड आर्डर) के शिकंजे में जकड़ लिया। बाद अज़ा मुख्तलिफ़ अवामिल की बिना पर उन्हें इन इलाक़ों से बज़ाहिर पसपा तो होना पड़ा मगर हक़ीक़त में दुनिया के बहुत से मुमालिक पर बिल्वास्ता अब भी उनका क़ब्ज़ा है। आई एम एफ और वर्ल्ड बैंक जैसे इदारे उनकी इसी बिल्वास्ता हुक्मरानी को मज़बूत करने में उनकी मदद करते हैं।

क़रीब-ए-क़यामत में इन क़ौमों की एक और यलगार होने वाली है। इसकी तफ़सीलात अहादीस और रिवायात में इस तरह आई हैं कि क़यामत से क़ब्ल दुनिया एक बहुत होलनाक जंग की लपेट में आ जाएगी। इस जंग को अहादीस में "अल मलहमातुल उज़मा" जबकि बाइबिल में Armageddon का नाम दिया गया है। मशरिक़े वुस्ता का इलाक़ा इस जंग का मरकज़ी मैदान बनेगा। इस जंग में एक

तरफ़ इसाई दुनिया और तमाम यूरोपी अक़वाम होंगी और दूसरी तरफ़ मुसलमान होंगे। इसी दौरान अल्लाह तआला मुसलमानों को एक अज़ीम लीडर इमाम मेहदी की सूरत में अता करेगा। इमाम मेहदी अरब में पैदा होंगे और वह मुजद्दिद होंगे। फिर किसी मरहले पर हज़रत ईसा अलै. का नुज़ूल होगा। खुरासान के इलाक़े से मुसलमान अफ़वाज उनकी मदद को जाएँगी। फिर इस जंग का ख़ात्मा इस तरह होगा कि हज़रत ईसा अलै. दज्जाल को क़त्ल कर देंगे, यहूदियों का ख़ात्मा हो जाएगा और तमाम इसाई मुसलमान हो जायेंगे। यूँ इस्लाम को उरूज मिलेगा और दुनिया में इस्लामी हुकूमत क़ायम हो जाएगी। (अल्लाह तआला मुसलमाने पाकिस्तान को तौफ़ीक़ दे कि इससे पहले वह यहाँ निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त क़ायम कर लें और हमसाया इलाक़ा खुरासान से जो फ़ौजें इमाम मेहदी की मदद के लिये रवाना हों उनमें हमारे लोग भी शामिल हों।)

जब हौलनाक जंग अपने अंजाम को पहुँच जाएगी तो इसके बाद याजूज माजूज की बहुत बड़ी यलगार होगी। मेरे ख्याल में ये लोग चीन और हिन्द चीनी वगैरह इलाक़ों की तरफ़ से हमलावर होंगे। ये लोग Armageddon में हिस्सा नहीं लेंगे बल्कि इसके बाद इस इलाक़े पर यलगार करके तबाही मचाएँगे। सूरतुल अंबिया की आयत 94, 97 और 98 में उनकी इस यलगार का ज़िक्र क़रीबे क़यामत के वाक़िआत के हवाले से किया गया है।

आयत 95

قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ

"उसने कहा: जो कुछ मुझे दे रखा है उसमें मेरे रब ने वह बहुत बेहतर है"

कि मुझे तुम्हारे ख़राज वगैरह की कोई ज़रूरत नहीं। इससे बेहतर माल तो मेरे रब ने मुझे पहले ही अता कर रखा है। बहरहाल तुम्हारे इस मसले को मैं हल किये देता हूँ। इस जुमले से ज़ुल्क़रनैन के किरदार की अकासी (reflection) होती है।

فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝٩٥

"अलबत्ता तुम लोग मेरी मदद करो क़ुव्वत (मेहनत) के ज़रिये से, मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक मज़बूत दीवार बना दूँगा।"

दीवार बनाने के लिये जो माद्दी असबाब व वसाएल दरकार हैं वह मैं मुहैय्या कर लूँगा। आप लोग इस सिलसिले में मेहनत व मशक्क़त और अफ़रादी क़ुव्वत (manpower) के ज़रिये मेरा हाथ बटाओ।

आयत 96

اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ

"लाओ मेरे पास तख्ते लोहे के।"

حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ

"यहाँ तक कि जब उसने बराबर कर दिया दोनों ऊँचाइयों के दरमियान (की जगह) को"

जब लोहे के तख्तों को जोड़ कर उन्होंने दोनों पहाड़ों के दरमियानी दर्रे में दीवार खडी कर दी तो:

قَالَ انْفُخُوْا ؕ

"उसने कहा: अब आग दहकाओ!"

उसने बड़े पैमाने पर आग जला कर उन तख्तों को गरम करने का हुक्म दिया।

حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ

"यहाँ तक कि जब बना दिया उसने उसको आग (की मानिन्द)"

जब लोहे के वह तख्ते गर्म होकर सुर्ख हो गए तो:

قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ؕ﴿۹۶﴾

"उसने कहा: लाओ मेरे पास मैं डाल दूँ इस पर पिघला हुआ ताँबा।"

और यूँ ज़ुल्क़रनैन ने लोहे के तख्तों और पिघले हुए तांबे के ज़रिये से एक इन्तहाई मज़बूत दीवार बना दी। इस दिवार के आसार बहीरा-ए-कैस्पियन के मगरबी साहिल के साथ-साथ दारयाल और दरबन्द के दरमियान अब भी मौजूद हैं। ये दीवार पचास मील लम्बी, उनत्तीस फीट ऊँची और दस फीट चौड़ी थी। आज से सैंकड़ों साल पहले लोहे और तांबे की इतनी बड़ी (मिस्र के असवान डैम से भी बड़ी जिसे

असद्दुल आला कहा जाता है) दीवार तामीर करना यक़ीनन एक बहुत बड़ा कारनामा था।

आयत 97

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ۝۹۷

"अब ना तो वह (याजूज माजूज) इसके ऊपर चढ़ सकेंगे, और ना ही इसमें नक़ब (सेंध) लगा सकेंगे।"

आयत 98

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ

"उसने कहा कि ये रहमत है मेरे रब की"

इतना बड़ा कारनामा सरअंजाम देने के बाद भी ज़ुल्क़रनैन कोई कलमा-ए-फ़ख्र ज़बान पर नहीं लाए, बल्कि यही कहा कि इसमें मेरा कोई कमाल नहीं, ये सब अल्लाह की मेहरबानी से ही मुमकिन हुआ है।

فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّاۗءَ ۚ

"और जब आ जाएगा वादा मेरे रब का तो वह कर देगा इसको रेज़ाह-रेज़ाह।"

चुनाँचे इम्तदादे ज़माना (समय गुज़रने) के सबब ये दीवार अब ख़त्म हो चुकी है, सिर्फ़ इसके आसार मौजूद हैं, जिनसे इसके मक़ाम और साइज़ वगैरह का पता चलता है।

وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾

"और मेरे रब का वादा सच्चा है।"

आयत 99

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَىِٕذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ

"और हम छोड़ देंगे इनको उस दिन वह एक-दूसरे में गुत्थम-गुत्था हो जाएँगे"

ये क़यामत से पहले रूनुमा होने वाले जंगी वाक़िआत की तरफ़ इशारा है। क़रीबे क़यामत के वाक़िआत में से एक अहम वाक़िया याजूज व माजूज का ज़हूर भी है। अहादीस में इनके बारे में ऐसी ख़बरें हैं कि वह दरियाओं और समुन्दरों का पानी पी जाएँगे और हर चीज़ को हड़प कर जाएँगे। ऐन मुमकिन है वह आदमखोर भी हों और ज़रूरत पड़ने पर इन्सानों को भी खा जाएँ। जैसे आज हम चीनी क़ौम को देखते हैं कि वह साँप, बिच्छु, कुत्ता, बिल्ली हर चीज़ को हड़प कर जाते हैं। कसरत-ए-आबादी के लिहाज़ से भी याजूज व माजूज की बेशतर अलामात का तताबुक़ (मेल) चीनी क़ौम पर होता नज़र आता है।

याजूज व माजूज की यलगार का नक़्शा सूरतुल अम्बिया में इस तरह खींचा गया है: {وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ} (आयत 96) "और वह हर पहाड़ की ढलान से उतरते हुए नज़र आएँगे।" 1962 ई० में चीन-भारत जंग के दौरान अखबारों ने चीनी अफ़वाज के हमलों की तफ़सीलात बताते हुए भी कुछ ऐसी ही तस्वीर कशी की थी: Waves after

waves of Chinese soldiers were coming down the slopes.” बहरहाल जिस तरह याजूज व माजूज आज से ढ़ाई हज़ार साल पहले अपने मल्हक़ा इलाक़ों की महज़ब आबादियों को ताख्त व ताराज करते थे, इसी तरह क़यामत से पहले एक दफ़ा फिर वह दुनिया में तबाही मचाएँगे और उनका ज़हूर अपनी नौइयत का एक बहुत अहम वाक़िया होगा।

وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

“और सूर में फूँका जाएगा, पस हम इन सबको जमा कर लेंगे।”

आयत 100

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

“और उस रोज़ हम जहन्नम को काफ़िरों के सामने ले आएँगे।”

कि देख लो अपनी आँखों से, इसे हमने तुम्हारे अंजाम के लिये तैयार कर रखा है।

आयत 101

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ

“वह लोग जिनकी निगाहें परदे में थीं मेरे ज़िक्र से, और वह सुन भी नहीं सकते थे।”

وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
سَمْعًا ﴿١٠١﴾

वह लोग जो अंधे और बहरे होकर दुनिया समटने में लगे हुए थे, हक़ीक़ी मुसब्बबुल असबाब को बिल्कुल फ़रामोश कर चुके थे, सिर्फ़ दुनियवी अस्बाब व वसाएल पर भरोसा करते थे और दुनिया में उनकी सारी तगो-दो (struggle) माद्दी मनफ़अत के हसूल के लिये थी। यही मज़मून अगले (आख़री) रुकूअ में बहुत तीखे अंदाज़ में आ रहा है।

आयात 102 से 110 तक

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ
دُوْنِيْٓ اَوْلِيَاۗءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾ قُلْ
هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ۭ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ
سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ
يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ
رَبِّهِمْ وَلِقَاۗىِٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا
وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتۡ لَهُمۡ جَنّٰتُ الۡفِرۡدَوۡسِ
نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا لَا يَبۡغُوۡنَ عَنۡهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلۡ
لَّوۡ كَانَ الۡبَحۡرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّىۡ لَنَفِدَ الۡبَحۡرُ قَبۡلَ
اَنۡ تَنۡفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّىۡ وَلَوۡ جِئۡنَا بِمِثۡلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلۡ
اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ
فَمَنۡ كَانَ يَرۡجُوۡا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا
يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

इस आखरी रुकूअ में बहुत वाज़ेह अल्फ़ाज़ में बता दिया गया है कि अल्लाह की नज़र में कौन लोग हक़ीक़ी गुमराही और कुफ़्र व दज्ल में मुबतला हैं। अगरचे क़रीबे क़यामत के ज़माने में एक शख्से मुअय्यन "दज्जाले अकबर" का फ़ितना और उसका ज़हूर अपनी जगह एक हक़ीक़त है (ये उसकी तफ़सील का मौक़ा नहीं) मगर अमूमी तौर पर दज्जालियत का फ़ितना यही है कि इंसान हसूले दुनिया में मशगूल होकर इस हद तक ग़ाफिल हो जाए कि उसे ना तो अपने दारे आख़िरत की कोई फ़िक्र रहे और ना ही अपने खालिक़ व मालिक की मर्ज़ी व मंशा का कुछ होश रहे। वह इस "उरूसे हज़ार दामाद" की ज़ुल्फ़े गिरहगीर का ऐसा असीर हो कि इसकी ज़ाहिरी दिलफ़रेबियों और चमक-दमक ही में खोकर रह जाए।

आयत 102

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَاۗءَ ۭ

"क्या काफ़िरों ने ये समझ रखा है कि वह मेरे ही बन्दों को मेरे मुक़ाबले में अपने हिमायती बना लेंगे।"

ये लोग जिन अम्बिया व रुसुल, मलाएका और सालेहा को मेरे शरीक़ ठहराते हैं और अपना कारसाज़ समझते हैं वह सब मेरे बन्दे हैं। क्या इनका ख्याल है कि मेरे ये बन्दे मेरे मुक़ाबले में इनकी मदद और हिमायत करेंगे? ख्वाह हज़रत ईसा अलै. हो या अब्दुल क़ादिर जीलानी रहि., मेरे ये बन्दे मेरे मुक़ाबले में इनके हामी व मददगार और हाजत रवां साबित होंगे?

اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ١٠٢

"यक़ीनन हमें तैयार कर रखा है जहन्नम को ऐसे काफ़िरों की मेहमानी के लिये।"

आयत 103

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ١٠٣ ۭ

"आप कहिये! क्या हम तुम्हें बतायें कि अपने आमाल के ऐतबार से सबसे ज़्यादा ख़सारे में कौन है?

ये है वह मज़मून जिसे इब्तदा में इस सूरत का अमूद क़रार दिया गया था, यानि दुनिया और इसकी ज़ेब व ज़ीनत! इस मज़मून के सायबान का एक खूंटा सूरत के आग़ाज़ में नस्ब है, जबकि दूसरा खूंटा यहाँ इन आयात की सूरत में। इब्तदाई आयात में वाज़ेह तौर पर बताया गया था कि दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत और रौनक़ों पर मुश्तमिल ये ख़ूबसूरत महफ़िल सजाई ही इंसानों की आज़माईश के लिये गई है। इसके ज़रिये से इंसानों के रवैय्यों की परख पड़ताल करना और उनकी जद्दो-जहद की ग़र्ज़ व गायत का तअय्युन करना मक़सूद है: {اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا} अब यहाँ आयत ज़ेरे नज़र में उन लोगों की निशानदेही की जा रही है जो अपने आमाल, अपनी मेहनत व मशक़्क़त, भाग-दौड़ और सई व जहद में सबसे ज़्यादा घाटा खाने वाले हैं। और ये वह लोग हैं जो इस आज़माईश में नाकाम होकर दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत ही में खो गए हैं।

जहाँ तक मेहनत और मशक़्क़त का ताल्लुक़ है वह तो हर शख्स करता है। जैसे हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: ((كُلُّ النَّاسِ يَغْدُو فَبَاءِعٌ نَفْسَهُ، فَمُعْتِقُهَا اَوْ مُوْبِقُهَا))(25) "हर इंसान जब सुबह करता है तो खुद को बेचना शुरू करता है, फिर या तो वह उसे आज़ाद करा लेता है या (गुनाहों) से हलाक कर देता है।" चुनाँचे हर कोई अपने आपको बेचता है। कोई अपनी ताक़त व क़ुव्वत बेचता है, कोई अपनी ज़हानत और सलाहियत बेचता है और कोई अपना वक़्त और हुनर बेचता है। गोया ये दुनिया मेहनत, अमल और कोशिश की दौड़ का मैदान है और हर इंसान अपने मफ़ाद के लिये ब-क़द्रे हिम्मत दौड़ में शामिल है। मगर बदक़िस्मती से कुछ ऐसे लोग भी

हैं जो अपनी पूरी कोशिश और मेहनत के बावजूद घाटे में रहते हैं। उनके लिये खुद को बेचने के इस अमल में कुछ भी नफ़ा नहीं बल्कि नुक़सान ही नुक़सान है, ख़सारा ही ख़सारा है। तो अल्लाह की नज़र में सबसे ज़्यादा ख़सारे में रहने वाले ये कौन लोग हैं?

आयत 104

ٱلَّذِينَ ضَلَّ سَعۡيُهُمۡ فِى ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا

"वह लोग जिनकी सई व जोहद दुनिया ही की ज़िंदगी में गुम होकर रह गई"

ऐसे लोग जिन्हें आख़िरत मतलूब ही नहीं, उनकी सारी तगो-दो और सोच-विचार दुनिया कमाने के लिये है। आख़िरत के लिये उन्होंने ना तो कभी कोई मंसूबा बंदी की और ना ही कोई मेहनत। बस बराए नाम और मौरूसी मुस्लमानी का भ्रम रखने के लिये कभी कोई नेक काम कर लिया, कभी नमाज़ भी पढ़ ली, और कभी रोज़ा भी रख लिया। मगर अल्लाह को असल में उनसे मक़सूद व मतलूब क्या है? इस बारे में उन्होंने कभी संजीदगी से सोचने की ज़हमत ही गवारा नहीं की। ऐसे लोगों को उनकी मेहनत का सिला हस्बे मशियते इलाही दुनिया ही में मिल जाता है, जबकि आख़िरत में उनके लिये सिवाय जहन्नम के कुछ नहीं। इस मज़मून का ज़रवा-ए-सनाम (चोटी) सूरह बनी इसराइल की ये आयात हैं:

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ
جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ اَرَادَ
الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ
مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾

"जो कोई तलबगार बनता है जल्दी वाली (दुनिया) का तो हम उसको जल्दी दे देते हैं उसमें जो कुछ हम चाहते हैं, जिसके लिये चाहते हैं, फिर हम मुक़र्रर कर देते हैं उसके लिये जहन्नम, वह दाख़िल होगा उसमें मलामत ज़दा, धुत्कारा हुआ। और जो कोई आख़िरत का तलबगार हो, और कोशिश करे उसके लिये उसकी सी कोशिश और वह मोमिन भी हो, तो वही लोग होंगे जिनकी कोशिश की क़दर की जाएगी।" चुनाँचे निजाते उखरवी का उम्मीदवार बनने के लिये हर बंदा-ए-मुसलमान को वाज़ेह तौर पर अपना रास्ता मुत'अय्यन करना होगा कि वह तालिबे दुनिया है या तालिबे आख़िरत? जहाँ तक दुनिया में रहते हुए ज़रूरियाते ज़िंदगी का ताल्लुक़ है वह तो अल्लाह की तरफ़ से नेक व बद सबकी पूरी हो रही हैं: (बनी इसराइल:20) {كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا} "हम सबको मदद पहुँचाये जा रहे हैं, इनको भी और उनको भी, आपके रब की अता से, और आपके रब की अता रुकी हुई नहीं है।" लिहाज़ा इंसान को अपनी ज़रूरियाते ज़िंदगी के हसूल के सिलसिले में अल्लाह तआला पर तवक्कुल रखना चाहिये। उसने इंसान को दुनिया में ज़िन्दा रखना है तो वह उसके खाने-पीने का

बंदोबस्त भी करेगा: {وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ} (तलाक़:3) "वह उसको वहाँ से रिज़्क़ देगा जहाँ से उसे गुमान भी ना होगा।" चुनाँचे एक बंदा-ए-मोमिन को चाहिये कि फ़िक्र-ए-दुनिया से बेनियाज़ होकर आख़िरत को अपना मतलूब व मक़सूद बनाए, और उन लोगों के रास्ते पर ना चले जिन्होंने सरासर घाटे का सौदा किया है, जिनकी सारी मेहनत और तगो-दो दुनिया की ज़िंदगी ही में गुम होकर रह गई है:

وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

"और वह समझते हैं कि वह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।"

ऐसे लोग अपने कारोबार की तरक्क़ी, जायदादों में इज़ाफ़े और दीगर माद्दी कामयाबियों को देखते हुए समझते हैं कि इनकी मेहनतें रोज़-ब-रोज़ नतीजा खेज़ और कोशिशें बारआवर हो रही हैं।

आयत 105

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَاۗىِٕهٖ

"यही वह लोग हैं जिन्होंने इन्कार किया अपने रब की आयात और उसकी मुलाक़ात का"

ऐसे लोग बेशक इक़रार करते हैं कि वह अल्लाह को और क़ुरान को मानते हैं, लेकिन हक़ीक़तन वह आख़िरत को भुला कर दिन-रात दुनिया समेटने ही में मसरूफ़ हैं तो अपने अमल से गोया वह अल्लाह की आयात और आख़िरत में उससे होने वाली मुलाक़ात का इन्कार कर रहे हैं। अल्लाह

का फ़ैसला तो ये है: {وَاِنَّ الدَّارَ الۡاٰخِرَةَ لَهِىَ الۡحَيَوَانُ} (अन्कबूत:29) “यक़ीनन आख़िरत की ज़िंदगी ही असल ज़िंदगी है।” लेकिन तालिबाने दुनिया का अमल अल्लाह की इस बात की तस्दीक़ करने के बजाय इसको झुठलाता है। इसलिये फ़रमाया गया कि यही वह लोग हैं जिन्होंने अल्लाह की आयात को और उसके सामने रोज़े महशर की हाज़री को अमली तौर पर झुठला दिया है।

فَحَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ فَلَا نُقِيۡمُ لَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَزۡنًا ۝١٠٥

“तो बरबाद हो गए इनके आमाल और हम क़ायम नहीं करेंगे इनके लिये क़यामत के दिन कोई वज़न।”

क़यामत के दिन ऐसे लोगों के आमाल का वज़न नहीं किया जाएगा। अगर इन्होंने अपने दिल की तसल्ली और ज़मीर की ख़ुशी के लिये भलाई के कुछ काम किए भी होंगे तो ऐसी नेकियाँ जो ईमान और यक़ीन के खाली होंगी उनकी अल्लाह के नज़दीक़ कोई हैसियत नहीं होगी। चुनाँचे इनकी ऐसी तमाम नेकियाँ ज़ाया कर दी जाएँगी और मीज़ान में इनका वज़न करने की नौबत ही नहीं आएगी। इस भयानक अंजाम की बुनियादी वजह यही है कि दुनिया की आराईश व ज़ेबाईश में ग़ुम होकर इंसान को ना अल्लाह का ख्याल रहता है और ना आख़िरत की फ़िक्र दामनगीर होती है। वाज़ेह रहे कि दुनिया की ज़ेबो-ज़ीनत के हवाले से ये मज़मून इस सूरत में बार-बार दोहराया गया है (मुलाहिज़ा हो: आयत 7, 27 और 46)।

आयत 106

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

"इनका बदला जहन्नम है बसबब इसके कि इन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयात और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया।"

अल्लाह की आयात और रसूलों के फ़रमूदात के मुताबिक़ तो असल ज़िंदगी आख़िरत की ज़िंदगी है और दुनियवी ज़िंदगी की कुछ अहमियत नहीं, मगर इन तालिबाने दुनिया ने समझ रखा था कि असल कामयाबी इसी दुनियवी ज़िंदगी की ही कमयाबी है। चुनाँचे इसी कामयाबी के हसूल के लिये इन्होंने मेहनत और कोशिश की और इसी ज़िंदगी को सँवारने के लिये वह खुद को हल्कान करते रहे। आख़िरत को लायक़-ए-ऐतनाअ (negligence) समझा और ना ही इसके लिये इन्होंने कोई संजीदा तगो-दो (भाग-दौड़) की। आख़िरत का ख़याल कभी आया भी तो ये सोच कर खुद को तसल्ली दे ली कि हमने फ़लाँ-फ़लाँ भलाई के काम भी तो किये हैं और फिर हम हुज़ूर ﷺ के उम्मती भी तो हैं। आप ﷺ हमारी शफ़ाअत फ़रमाएँगे और हम कामयाब व कामरान होकर जन्नत में पहुँच जाएँगे। ये अक़ीदा यहूदियों के अक़ीदे से मिलता-जुलता है। वह भी दावा करते थे कि हम अल्लाह के बेटों की मानिन्द हैं, उसके लाड़ले और चहेते हैं।

इन आयात के हवाले से एक अहम नुक्ता ये भी है तवज्जो तलब है कि यहाँ कुफ्फ़ार से मुराद इस्तलाही (शर्तिया) कुफ्फ़ार नहीं, बल्कि ऐसे लोग हैं जो क़ानूनी तौर पर तो मुसलमान ही हैं, मगर अल्लाह और उसके रसूल के अहकाम को पसे पुश्त डाल कर सरतापा (पूरे के पूरे) दुनिया के तालिब बने बैठे हैं। इस सिलसिले में ये बात याद रखनी चाहिए कि मज़कूरा मफ़हूम में जो शख्स भी आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया का तालिब है वही इन आयात का मिस्दाक़ है, बज़ाहिर चाहे वह मुसलमान हो, मुसलमानों का लीडर हो, मज़हबी पेशवा हो या कोई बहुत बड़ा आलिम हो। इसी मज़मून को किसी बुज़ुर्ग ने “जो दम ग़ाफिल सो दम काफ़िर” के अल्फ़ाज़ में बयान किया है। चुनाँचे आख़िरत की निजात के सिलसिले में ये बात तय करना इन्तहाई ज़रूरी है कि बुनियादी तौर पर इंसान तालिबे दुनिया है या तालिबे आख़िरत!

आखरी रुकूअ की इन आयात का सूरत की इब्तदाई आयात के साथ एक ख़ास ताल्लुक़ है और दज्जाली फ़ितने से हिफ़ाज़त के लिये इनकी ख़ुसूसी अहमियत है, चुनाँचे हदीस में इनको फ़ितना-ए-दज्जाल से हिफ़ाज़त का ज़रिया क़रार दिया गया है। इसलिये बेहतर है कि इब्तदाई दस आयात और इन आखरी आयात को हिफ्ज़ कर लिया जाए और कसरत से इनकी तिलावत की जाए। और अगर अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे तो जुमे के रोज़ पूरी सूरतुल कहफ़ की तिलावत को भी मामूल बनाया जाए।

आयत 107

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتۡ لَهُمۡ جَنّٰتُ الۡفِرۡدَوۡسِ نُزُلًا ۝۱۰۷

"(इसके बरअक्स) वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किये उनकी मेहमानी के लिये फ़िरदौस के बाग़ात होंगे।"

जिन लोगों ने ईमान के तक़ाज़े भरपूर तौर पर पूरे किये और नेक आमाल करते रहे उनके लिये ठंडी छाँव वाले बाग़ात होंगे। आज हम तस्सवुर भी नहीं कर सकते कि वह बाग़ात कैसे होंगे और कहाँ होंगे। इस कायनात की वुसअत बेहद-ओ-हिसाब है और जन्नत की वुसअत भी हमारे अहाता-ए-ख्याल में नहीं समा सकती। इस कायनात में अनगिनत कहकशायें हैं और ना मालूम अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये कहाँ-कहाँ जन्नतें बना रखी हैं। हदीस में आता है कि निचले दर्जे वाला जन्नती ऊपर वाले जन्नती को ऐसे देखेगा जैसे आज हम ज़मीन से सितारों को देखते हैं। बहरहाल मालूम होता है कि अहले जन्नत की इब्तदाई मेहमान नवाज़ी (नुज़ुल) यहीं इसी ज़मीन पर होगी। यानि "क़िस्सा-ए-ज़मीन बर सर ज़मीन" ही तय किया जाएगा।

आयत 108

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝۱۰۸

"वह उसमें हमेशा-हमेश रहेंगे, वहाँ से वह जगह बदलना नहीं चाहेंगे।"

यानि जन्नत ऐसी जगह नहीं है कि जहाँ रहते-रहते किसी का जी उकता जाए। दुनिया में इंसान हर वक़्त तगय्युर (परिवर्तन) व तब्दीली का ख्वाहाँ (इच्छुक) है। तब्दीली की इसी ख्वाहिश के तहत बुरी से बुरी जगह पर भी कुछ देर के लिये इंसान का दिल बहल जाता है जबकि अच्छी से अच्छी जगह पर भी मुस्तक़िल तौर पर रहना पड़े तो बहुत जल्द उसे उकताहट महसूस होने लगती है। हम कश्मीर और स्विट्ज़रलैंड को "फ़िरदौस बर रुए ज़मीं" गुमान करते हैं, लेकिन वहाँ के रहने वाले वहाँ की ज़मीनी व आसमानी आफ़ात से तंग हैं। अहले जन्नत मुस्तक़िल तौर पर एक ही जगह रहने के बाइस उकाताएँगे नहीं, और वहाँ से जगह बदलने की ज़रूरत महसूस नहीं करेंगे।

अब इस सूरत की आख़री दो आयात आ रही हैं जो गोया तौहीद के दो बहुत बड़े खज़ाने हैं।

आयत 109

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ

"(ऐ नबी ﷺ!) आप कहिये कि अगर समुन्दर रौशनाई बन जाए मेरे रब (के कलिमात को लिखने) के लिये तो यक़ीनन समुन्दर ख़त्म हो जाएगा इससे पहले कि मेरे रब के कलिमात ख़त्म हों अगरचे उसी की तरह और (समुन्दर) भी

تَنۡفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيۡ وَلَوۡ جِئۡنَا بِمِثۡلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾

हम (उसकी) मदद के लिये ले आएँ।"

यहाँ पर सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत से पहले की आयत को दोबारा ज़हन में लाएँ: {قُلِ ادۡعُوا اللّٰهَ اَوِ ادۡعُوا الرَّحۡمٰنَ‌ؕ اَيًّا مَّا تَدۡعُوۡا فَلَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰى‌ۚ} "आप कह दीजिये कि तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर), जिस (नाम) से भी तुम पुकारो, उसी के हैं तमाम नाम अच्छे।" सूरह बनी इसराइल की इस आयत में अल्लाह तआला के असमाअ (नामों) का ज़िक्र है, जबकि यहाँ आयत ज़ेरे नज़र में अल्लाह तआला के कलिमात का ज़िक्र है। अल्लाह के कलिमात से मुराद उसकी मुख्तलिफ़ अल नौअ मख्लूक़ात (types of creation) हैं, और उसकी हर मख्लूक़ उसके एक कलमा-ए-कुन का ज़हूर है। चुनाँचे अल्लाह तआला की जुमला-ए-मख्लूक़ात का अहाता करना किसी के बस की बात नहीं। सूरह लुक़मान में यही मज़मून इस तरह बयान हुआ है:

وَلَوۡ اَنَّ مَا فِى الۡاَرۡضِ مِنۡ شَجَرَةٍ اَقۡلَامٌ وَّالۡبَحۡرُ يَمُدُّهٗ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ سَبۡعَةُ اَبۡحُرٍ مَّا نَفِدَتۡ كَلِمٰتُ اللّٰهِ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ﴿۲۷﴾

"और अगर ज़मीन के तमाम दरख़्त क़लमें बन जाएँ और समुन्दर स्याही हो, इसके बाद सात समुन्दर और हों तब भी

अल्लाह के कलिमात ख़त्म नहीं होंगे। यक़ीनन अल्लाह ग़ालिब, हिकमत वाला है।"

आयत 110

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ

"(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये कि मैं तो बस तुम्हारी ही तरह का एक इंसान हूँ, मुझ पर वही की जाती है कि तुम्हारा मअबूद बस एक ही मअबूद है।"

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَاۗءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝١١٠

"पस जो कोई भी उम्मीद रखता हो अपने रब से मुलाक़ात की तो उसे चाहिये कि नेक आमाल करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी शरीक़ ना करे।"

यानि इबादत खालिस अल्लाह की हो। ये तौहीदे अमली है। इस बारे में सूरह बनी इसराइल आयत 23 में यूँ फ़रमाया गया है: {وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ} "और फ़ैसला कर दिया है आपके रब ने कि तुम लोग नहीं इबादत करोगे किसी की सिवाय उसके।" सूरतुल कहफ़ की इस आख़री आयत और सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत का भी आपस में मअनवी रब्त व ताल्लुक़ है। मवाज़ना (तुलना) के लिये सूरह बनी इसराइल की आयत मुलाहिज़ा कीजिये: {وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

الَّذِیۡ لَمۡ یَتَّخِذۡ وَلَدًا وَّلَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ شَرِیۡکٌ فِی الۡمُلۡکِ وَلَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَ کَبِّرۡہُ تَکۡبِیۡرًا} "और कह दीजिये कि कुल हम्द और कुल शुक्र अल्लाह के लिये है जिसने नहीं बनाई कोई औलाद, और नहीं है उसका कोई शरीक़ बादशाही में, और ना ही उसका कोई दोस्त है कमज़ोरी की वजह से और उसकी तकबीर करो जैसे कि तकबीर करने का हक़ है।" इस आयत में अल्लाह तआला का बुलंद मक़ाम और उसकी शान बयान करके शिर्क की नफ़ी की गई है। दरअसल अल्लाह के साथ शिर्क की दो सूरतें हैं। या तो अल्लाह को मरतबा-ए-अलवहियत से नीचे उतार कर मख्लूक़ात के साथ खड़ा कर दिया जाता है या फिर मख्लूक़ात की सफ़ में से किसी को उठा कर अल्लाह के बराबर बैठा दिया जाता है। चुनाँचे सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत में अल्लाह की किबरियाई का ऐलान करने का हुक्म देकर शिर्क की पहली सूरत का इब्ताल (रद्द) किया गया है जबकि सूरतुल कहफ़ की आख़री आयत में शिर्क की दूसरी सूरत यानि मख्लूक़ात में से किसी को अल्लाह के बराबर करने की नफ़ी की गई है।

देखा जाए तो अल्लाह की मख्लूक़ में से उसके शरीक़ बनाने की रिवायत हर ज़माने में रही है। ईसाइयों ने हज़रत मसीह अलै. को ख़ुदा का दर्जा दे दिया और अहले अरब ने फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ क़रार दे दिया। हमारे यहाँ भी बाज़ लोगों ने हुज़ूर ﷺ को (नाउज़ू बिल्लाह) ख़ुदा बना दिया:

वही जो मस्तवी-ए-अर्श था ख़ुदा होकर
उतर पड़ा वह मदीने में मुस्तफ़ा होकर!

और किसी ने हज़रत अली रज़ी. को ख़ुदा की ज़ात से मिला दिया:

हर चंद अली की ज़ात नहीं है ख़ुदा की ज़ात
लेकिन नहीं है ज़ाते ख़ुदा से जुदा अली!

और मिर्ज़ा ग़ालिब तो इस सिलसिले में यहाँ तक कह गए:

ग़ालिब नदीम दोस्त से आती है बू-ए-दोस्त
मशगूल-ए-हक़ हूँ बंदगी बू तुराब में!

यानि जब मैं अबु तुराब (हज़रत अली रज़ि.) की बंदगी करता हूँ तो दर हक़ीक़त अल्लाह ही की बंदगी कर रहा होता हूँ। इसी तरह आगा खानियों के यहाँ हज़रत अली रज़ि. को "दशम अवतार" क़रार दिया गया। हिन्दुओं के यहाँ नौ (9) अवतार तस्लीम किये जाते थे, उन्होंने हज़रत अली रज़ि. को "दसवाँ अवतार" मान लिया। عاذنااللہ من ذٰلک!!

بارك الله لى ولكم فى القرآن العظيم ونفعنى وايا كم بالآيات والذكر الحكيم۔

❀ ❀ ❀

फुटनोट्स

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानुल ईमान वल इस्लाम वल अहसान। (पेज 23)

(2) रवाहू तिरमिज़ी, मिश्कातुल मसाबीह, किताबुल रिक़ाक़, बाबुल बकाअ वल खौफ़, अल फ़सल सानी। (पेज 36)

(3) रवाहू रज़ीन, ब-हवाला मिशकातुल मसाबीह, किताबुल दावात, बाबुल दावात फ़िल औक़ात। (पेज 54)

(4) अल सुननुल कुबरा लिल बयहक़ी 105/2, अन उम्मे सलामा हिन्द बिन्ते अबी उमैय्या। (पेज 59)

(5) सही बुखारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुहू अज्ज़ व जल्ल व नबाअहुम अन ज़ैफ़ इब्राहीम। व सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब ज़्यादतु तमानियतुल क़ल्ब बितज़ाहिरुल अद्ल। (पेज 61)

(6) अल जामेअल सगीर लिल स्यूती, ह. 1483। अन अब्दुल्लाह बिन अबी तालिब। (पेज 102)

(7) सहीह मुस्लिम, किताबुल ज़ौहद वर्रिक़ाक़, बाबुल मोमिन अमरुहू कुल्लुहू खैर। (पेज 129)

(8) सही मुस्लिम, किताबुल ज़कात, बाबुल हिस अलल सदक़ा वलव बिशक ताम्र अव कलिमतु तय्यबा। (पेज 136)

(9) इन अल्फ़ाज़ में यह हदीस अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब रहि. ने "किताबुल तौहीद" में निसाई के हवाले से दर्ज की है। मसनद अहमद में अल्फ़ाज़ वारिद हुए हैं: ((أَجَعَلْتَنِي وَاللّٰهَ عَدْلًا)) "क्या तूने मुझे और अल्लाह को बराबर कर दिया?" (मुरत्तब) (पेज 138)

(10) इस आयत का यह तर्जुमा "وَإِنۡ كَانَ مَكۡرُهُمۡ" में "إِنۡ" को नाफ़िया मान कर किया गया है और यह हज़रत शैखुल हिन्द रहि. के तर्जुमे के मुवाफ़िक़ है। बाज़ मुफ़स्सरीन ने "إِنۡ" शर्तिया और वाव असलिया मान कर तर्जुमा यूँ किया है: "अगरचे उनकी यह चालें ऐसी (ज़बरदस्त) थीं कि इनसे पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाते।" (इज़ाफ़ा अज़ मुरत्तब) (पेज 143)

(11) मसनद अहदम, ह. 20728, रावी हज़रत अबुदरदा रज़ि. (पेज 148)

(12) अबु लहब के इस क़ौल के जवाब में अल्लाह तआला ने एक पूरी सूरत "सूरतुल लहब" नाज़िल फ़रमाई, जिसकी पहली आयत में ही फ़रमाया: {تَبَّتۡ يَدَآ أَبِي لَهَبٖ وَتَبَّ} "अबु लहब के हाथ टूटें और वह हलाक हो।" (मुरत्तब) (पेज 167)

(13) शरह अल मुवाफ़िक़ लिल स्यूती:12 (पेज 182)

(14) सही मुस्लिम, किताबुल ज़िक्र वल दुआ वत्तौबा वल इस्तगफ़ार, बाब फ़ज़लुल इज्तमाअ अला तिलावतुल क़ुरान व अला ज़िक्र। (पेज 182)

(15) हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: ((لَيۡسَ الۡغِنٰى عَنۡ كَثۡرَةِ الۡعَرَضِ، وَلٰكِنَّ الۡغِنٰى غِنَى النَّفۡسِ)) "दौलतमन्दी अस्बाबे दुनियवी की कसरत से नहीं होती, बल्कि असल दौलतमन्द (ग़नी) तो वह है जिसका दिल ग़नी है।" (सही बुखारी, किताबुल रिक़ाक़, बाबुल ग़नीउल नफ्स। व सही मुस्लिम, किताबुल ज़कात, बाब लय्सल ग़नी अन कसरतुल अर्ज़) (पेज 201)

(16) सुनन तिरमिज़ी, अबवाबुल दावात। व मसनद अहमद, ह.: 21995 (पेज 211)

(17) सुनन तिरमिज़ी, अब्वाबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ी इफ़तराक़ हज़िहिल आमा (पेज 211)

(18) यहाँ यह भी मल्हूज़ खातिर रहे कि मिस्र के मौजूदा इन्तखाबात (2012-13 ई.) में इख्वानुल मुस्लिमून वाज़ेह अक्सरियत के साथ बरसर इक़तदार आ चुकी है। (मुरत्तब) (पेज 219)

(19) सही बुख़ारी, किताबुल दावात, बाब अद् दुआ इन्दल इस्तख़ारा। व सुनन अल् तिरमिज़ी, अबवाबुस्सलात, बाब मा जाअ फ़ी सलातुल इस्तख़ारा। (पेज 220)

(20) सही बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौल अल्लाह तआला وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ व सही मुस्लिम, किताबुल फ़जाइल, बाब मिन फ़जाइल मूसा अलै.। (पेज 236)

(21) सही बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौल अल्लाह तआला وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ व सही मुस्लिम, किताबुल फ़जाइल, बाब फ़ी ज़िक्र युनुस अलै. व क़ौलुन्नबी ﷺ لا ينبغي لعبد ان يقول انا خير من يونس بن متى (पेज 236)

(22) सही बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया व किताबुल मनाक़ब। व सही मुस्लिम, किताबुल बिर्रे वस्स्लात वल आदाब, बाबुल अरवाह जुनूद मुजन्नद। (पेज 246)

(23) सही मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सरहा, बाब फ़ज़ल मिन यक़ूम बिल क़ुरान व यअलमुहू। व सुनन इब्ने माजा, अल मुक़दमा, बाब फ़ज़ल मिन तालीमुल क़ुरान व इस्मुहू। व सुनन दारमी, किताब फज़ाइलुल क़ुरान, बाब इन्नल्लाहा यरफ़आ बिहाज़ल क़ुरान अक़वामा व व यज़ाअ आखरीन। (पेज 253)

(24) सही बुख़ारी, किताबुल रिक़ाक़, बाबुल तवाज़अ। (पेज 273)

(25) सही मुस्लिम, किताबुल तहारत, बाब फ़ज़लुल वुज़ू। व सुनन तिरमिज़ी, अब्वाबुल दावात। (पेज 294)

بارك الله لی ولكم فی القرآن العظيم ونفعنی وايا كم بالآيات والذكر الحكيم۔

❀ ❀ ❀